।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री-घासीलालजी-महाराज-
विरचितया जनसाधारणोपकारिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं
हिन्दी-गुर्जर-भाषानुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

SHREE GNĀTĀDHARAMA KATHĀNGA SOOTRAM

(द्वितीयो भागः)

विषेचकः

संस्कृत-प्राकृत-जैनागमनिष्णात-भिषग्व्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीघेवरचन्दजी-महाराजः

प्रकाशकः

दिल्लीनिवासी—लालाजी—किशनचंदजी—सा.-
जौहरी-प्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्ठि-
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः
मु० राजकोट

प्रतयः	वीर-संवत्	विक्रम-संवत्	ईसवीसन्
प्रति १२००	२४८९	२०२०	१९६३

मूल्यम्-रू. २५-००

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज
विरचितया अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं
हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

SHREE GNĀTĀDHARMA KATHĀNGA SOOTRAM

द्वितीयो भागः

नियोजकः

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः

प्रकाशकः

दिल्लीनिवासि — लालाजी — किशनचंदजी — सा.-
जौहरी- प्रदत्त- द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्ठि-
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः
मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्तिः	वीर-संवत्	विक्रम-संवत्	ईसवीसन
प्रति १२००	२४८९	२०२०	१९६३

मूल्यम्-रू० २५-०-०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

મળવાનું ઠેકાણું :
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર).

Published by :
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W. Ry, India.

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥

हरिगीतच्छन्दः

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥

મૂલ્યઃ ૩. ૨૫=૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત્ : ૨૪૮૯
વિક્રમ સંવત્ : ૨૦૧૯
ઈસવીસન : ૧૯૬૩

: મુદ્રક :
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
ચીકાંટા રોડ : : અમદાવાદ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिल्लीनिवासी श्रीमान् लालाजी किशनचंदजी सा, जौहरीजी के वंश का संक्षिप्त जीवन

परिचय

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में श्री नेमीचंदजी चौरड़िया का जन्म हुआ। आप बहुत होनहार व्यवसायी और धर्मप्रेमी थे। आप बत्तीसों शास्त्र के ज्ञाता थे। आप जैन एवं वैदिक साहित्यके भी ज्ञाता थे। आपके पास अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त धार्मिक साहित्य का विशाल भंडार था। अल्प वय में ही आप स्वर्गारोहण कर गये। आपके सब से छोटे पुत्र श्री कपूरचंदजी चौरडिया भी आप ही की भांति निर्भीक उत्साही कर्मशील एवं धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले थे। बीमारी की अवस्था में भी आपने सामायिक जो कि आप का नित्य नियम था, कभी नहीं छोडा। मृत्यु के अंतिम दिन तक आपने सामायिक व्रत की आराधना की थी। लाला कपूरचंदजी ने अपने व्यापार को बहुत बढाया था। दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों में आपका नाम था। अनेक वर्षों तक आप समाज के प्रेसीडेन्ट रहे। आपके नेतृत्व में दिल्ली श्री संघ ने बहुत उन्नति की।

आपके सुपुत्र श्री किशनचंदजी चौरडिया भी आप ही की भांति उद्योगी, विवेकवान एवं श्रद्धालु श्रावक हैं। प्रतिदिन सामायिक, व हर सप्ताह आयंबिल अथवा उपवास का तप करते हैं और अनेक प्रकार के धार्मिक नियम पालते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में सदा दिलचस्पी से भाग लेते हैं। स्थानीय संघ की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।

लाला किशनचंदजीकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवी चौरडिया प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, एवं अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से संबंध रखनेवाली हैं और बड़ी श्राविका हैं, आपका धार्मिक ज्ञान बहुत गंभीर है। आप विचक्षण बुद्धिवाली एवं साहित्यप्रेमी हैं। आपके निजी पुस्तकालय में अनेक अमूल्य हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग पांच हजार पुस्तकों का संग्रह है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना आपका दैनिक नियम है। अनेक महासतीजी महाराज भी आपके धार्मिक ज्ञान का लाभ उठाते हैं।

श्रीमती नगीना देवी के पिता लाला धन्नोमल सुजंती दिल्ली के प्रसिद्ध रईसों में से थे। किंतु धर्म के प्रति निष्ठा एवं समाज सेवाकी लगन आपमें कूट २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कैर भरी हुई थी। अनेक दीक्षाएँ आपने कराईं। तन, मन, धन से साधु-सतियों की सेवा करने में आपको अपूर्व आनंद मिलता था। आपका स्वर्गवास जल्दी ही हो गया था।

स्व. लाला धन्नोमलजी की धर्मपत्नी एवं श्रीमती नगीनादेवीजी की माता श्री फूलमतीजी महाराज साहब को जैनदीक्षा अंगीकार किये हुए ३१ वर्ष हो गये हैं। आप वयोवृद्ध, सरलस्वभावी, घोरसंयमी (कठिन संयम पालने वाले) हैं, मानो चौथे आरे की बानगी ही हो। अनेक वर्षों से आप दिल्ली में स्थिरवास किये हुए हैं। आपके सदुपदेश से दिल्ली के अनेक व्यक्ति अपनी शास्त्रोद्धारसमिति के सदस्य बने हैं।

श्रीमती नगीना देवीकी भांति उनकी पुत्री सुश्री विनयकुमारी बड़ी निर्भीक प्रत्युत्पन्नमति, एवं धार्मिक रुचि वाली हैं। आपके सुपुत्र सरलस्वभाव विनयशील श्री महताबचंद भी बड़े धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, विनयवान एवं सुशिक्षित नवयुवक हैं।

श्रीमती नगीनादेवीके दो पुत्रियाँ और भी हैं। एक-सुश्री विनयकुमारी, जिसका विवाह जोधपुरनिवासी श्रीमान् हुक्मचंदजी साहब जैन एडवोकेटके सुपुत्र श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट से हुआ है। वि० अनिलकुमार जैन, जिनका चित्र इस पुस्तक में है-इन्हीं के सुपुत्र हैं। श्री अनिलकुमार अपनी समिति के सदस्य हैं। दूसरी पुत्री सुश्री विमलकुमारी का विवाह दिल्लीनिवासी प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता स्व० श्री मुकुन्दलालजी जौहरी "कोमीनारा" (यह उपनाम प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें दिया था) के सुपुत्र श्री हुक्मचंदजी जौहरीके साथ हुआ है। श्रीमती विमलकुमारी भी अपनी समितिकी सदस्या हैं।

परंपरा से ही चौरडिया परिवार धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि रखनेवाला रहा है और चुस्तस्थानकवासी हैं। तन मन व धन से समाज व धर्म की खूब सेवा करता आया है, यही सदा से इस परिवार का कर्तव्य रहा है।

॥ ॐ शांतिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के दूसरा भाग की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठ
	अध्ययन-५	
१	पांचवे अध्ययन की अवतरणिका	१
२	द्वारावति नगरी का वर्णन	२-७
३	नंदनवन-उद्यानका वर्णन	७-८
४	कृष्णवासुदेवका वर्णन	९-१०
५	स्थापत्यापुत्र गाथापतिका वर्णन	११-१२
६	अरिष्टनेमीअर्हंतप्रभुका समवसरण	१४-१६
७	समवसरणमें कृष्णका आगमन आदिका वर्णन	१७-२३
८	स्थापत्यापुत्र गाथापतिके निष्क्रमणका वर्णन	२४-५८
९	शैलकराजका वर्णन	५८-६२
१०	सुदर्शनसेठका वर्णन	६३-१११
११	शुकपरिव्राजकके दीक्षाग्रहणका वर्णन	११२-११५
१२	स्थापत्यापुत्रके निर्वाणका निरूपण	११६-११७
१३	शैलकराजके चरित्रका वर्णन	११८-१६७
	छट्ठा अध्ययन	
१४	महावीरस्वामीका समवसरण	१६८-१६९
१५	इन्द्रभूतिका जीवकेविषयमें प्रश्न	१७०-१७७
	सातवां अध्ययन	
१६	धन्य सार्थवाहके चरित्रका वर्णन	१७८-२३४
	अठवां अध्ययन	
१७	आठवे अध्ययनका अवतरण	२३५
१८	बलराजके चरित्रका वर्णन	२३६-२४०
१९	बलराजके दीक्षाग्रहणका वर्णन	२४०-२४२
२०	महाबल आदिछह राजाओंके=चरित्रका वर्णन	२४३-२८२
२१	प्रभावतीदेवीके दोहदका वर्णन	२८३-२८८
२२	तीर्थंकरके जन्मनिमित्त दिशाकुमारि आदिका उत्सवकरनेका वर्णन	२८९-२९२
२३	मोहगृहके निर्माणका वर्णन	२९३-२९६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२४	मणिनिर्मितपुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७–३००
२५	कोसलाधिपति के स्वरूपका वर्णन	३००–३२०
२६	अङ्गराजके चारित्रका वर्णन	३२१–३३४
२७	अङ्गराज चरित्रमें तालपिशाचका वर्णन	३३४–३५०
२८	अङ्गराजके चरित्रमें अरहन्नक श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०–३७२
२९	अङ्गराजके चरित्रका वर्णन	३७२–३८५
३०	कुणालाधिपति रुक्मी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५–३९६
३१	काशिराज "शंख" राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७–४१०
३२	अदीनशत्रु राजके चारित्रका वर्णन	४१०–४३५
३३	जितशत्र राजाके चरित्रका वर्णन	४३५–४५७
३४	छहराजाओंके युद्धका वर्णन	४५७–४६५
३५	कुंभकराज केयुद्धका वर्णन	४६६–४७१
३६	मिथिलानगरीके निरोधका वर्णन	४७१–४८०
३७	सुवर्ण निर्मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०–४९१
३८	छओं राजाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१–५०१
३९	मल्लीभगवानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२–५१५
४०	मल्लीभगवान् के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५–५३९
४१	जितश आदि छहों राजाओके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०–५५२
	नववां अध्ययन	
४२	माकंदीदारकके चरित्रका वर्णन	५५३–६५५
	दशवां अध्ययन	
४३	जीवोंके वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६–६६७
	ग्यारहवां अध्ययन	
४४	जीवोंके आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८–६७८
	बारहवां अध्ययन	
४५	खातोदकके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत	६७९–७२७
	तेरहवां अध्ययन	
४६	तेरह अध्ययनके संबन्धका निरूपण	७२८–७३०
४७	नन्दमणिकारभवका निरूपण	७३१–७४८
	समाप्तः	

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आद्यमुरब्बी श्री–



बीचमें बैठे हुए

लालाजी किशनलालजी सा. जौहरी

खडे हुए इनके सुपुत्र—

वि. महेताबचन्दजी सा. जैन

छोटे–अनिलकुमार जैन (दोयत्ता)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

આદમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ
વીરાણી રાજકોટ.



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી
દીક્ષા લીધા પહેલાં શાસ્ત્રઅભ્યાસ



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી ધારશીભાઈ જીવનલાલ
બારસી.



(સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર
અમદાવાદ.

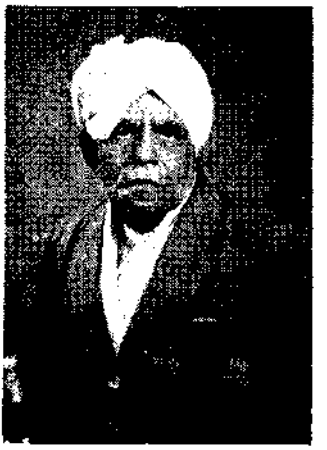
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

આધમુરબ્બીશ્રીઓ



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.



ઝવેરી હરગોવિંદભાઈ જેચંદ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા.



(સ્વ.) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



સ્વ. શ્રીમાન્ શેઠશ્રી મુકનચંદજી સા.
બાલિયા પાલી મારવાડ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિઆ
ભાણવડ.



(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઇ શ્રીમાન મૂલચંદજી
જવાહીરલાલજી બરડિયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા ભાઈ મિશ્રીલાલજી બરડિયા
૩ ઉભેલા સૌથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ બરડિયા



શેઠશ્રી [illegible] ચમનલાલભાઈ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

*

ગરેડીયાકૂવા રોડ

રાજકોટ.

*

દાતાઓની નામાવલી

*

શરૂઆત તા. ૧૮-૧૦-૪૪થી તા. ૩૧-૧૦-૧૨ સુધીમાં

દાખલ થયેલ મેમ્બરોનાં સુબારક નામો.

*

લાઈફ મેમ્બરોનું ગ્રામવાર કકાવારી લિસ્ટ.

*

(નાની છેટની રકમો આપનારનું, તથા રૂા. ૨૫૦થી ઓછી રકમ લખનારનું નામ આ યાદીમાં સામેલ કરેલ નથી.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ—૨૩

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા. શેઠ લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ, વ્રજલાલભાઇ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કોઠારી જેચંદ અજરામર હા. હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઇ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવણભાઈ	બારસી	૫૦૦૧
૫	સ્વ. પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હા. શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઇ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	સ્વ. શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ કાંતિલાલ મણીલાલ જેશીંગભાઇ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હ. શેઠ ચીમનલાલભાઇ શાંતિલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઇ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. માતુશ્રી કડવીબાઇ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોપાલાલ પીતાંબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રંગજીભાઇ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હ. શેઠ દુર્લભજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૩	શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હ. શ્રીમતિ મણી કુંવરબેન દુર્લભજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ. માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હ. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ અને કુટુંબીજનો.	અમદાવાદ	૫૦૦૦

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૬	શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવંતરાજજી લુણીયા ચંડાવલવાળા	અમદાવાદ	૫૫૦૨
૧૭	શેઠ રામજીભાઈ શામજી વીરાણી અને સમરતબેન રામજી વીરાણી ટ્રસ્ટ	રાજકોટ	૫૦૦૧
૧૮	એક જૈન ગૃહસ્થ	અમદાવાદ	૫૪૨૫
૧૯	શેઠ મુળચંદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૨૦	શેઠ મુકુંદચંદજી બાલીયાના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ મોહનલાલજી બાલીયા (પાલીવાળા)	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૨૧	બા. બ્ર. શ્રી વિનોદમુનિના સ્મરણાર્થે હા. શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ	રાજકોટ	૫૦૦૦
૨૨	શ્રી શામજી વલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શ્રી કેશવલાલ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૨૩	શ્રીમતિ મણીબાઇ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા. પારેખ વૃજલાલ હુલંભજી	રાજકોટ	૫૨૫૧

નોટઃ—ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ. મહેતા તરફની અમદાવાદમાં પાલડી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ નં. ૨૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો. વાર જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે. અને જેનું રજીસ્ટર તા. ૨૩-૩-૬૦ ના રોજ થઇ ગયેલ છે.

મુરબ્બીશ્રીઓ—૨૮

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા. કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઇ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૯।।–।।
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સંઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ હા. શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઇ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૮	શેઠ લહેરચંદ કુંવરજી હા. શેઠ ન્યાલચંદ લહેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા. મોહનભાઈ તથા મોતીલાલભાઇ	મુંબઇ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંદ્રકાન્ત વીકમચંદ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મ્હેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ. મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	જામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૩	દોશી કપુરચંદ અમરશી હા. કલપતરામભાઈ	જામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૬	શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા	૧૦૦૧
૧૭	મ્હેતા સોમચંદ નેણસીભાઇ (કરાંચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧
૧૮	શાહ હરીલાલ અનોપચંદ	ખંભાત	૧૦૦૧
૧૯	મોદી કેશવલાલ હરિશ્ચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુંબઇ	૧૦૦૧
૨૧	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨	શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ. સૌ. સમરતબેન	અમદાવાદ	૧૦૦૩
૨૩	શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમૈયા હા. અ. સૌ. સાકરબેન	મુંબઈ	૧૦૦૦
૨૪	શેઠ પોપટલાલ ચત્રભુજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫	શ્રી સ્થા. જૈન લીંબડી સંપ્રદાયના ક્ષમાગુણ નિધિ પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રખર પંડિત રત્ન શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે પૂજ્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હા. શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
૨૬	શ્રીમતિ આશાબેન હંસરાજ સુરાણા	મુંબઇ	૧૦૦૧
૨૭	શાહ શાંતિલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૮	શ્રીયુત વીકુમાર C/o મહેતાબચંદ જૈન	દિલ્હી	૧૦૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સહાયક મેમ્બરો--૧૩૨

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. ઝુંઝાભાઈ વેલશીભાઇ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓધડભાઇ	જોરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા. ગોરધનભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	બાટવીયા ગીરધર પરમાણંદ હા. અમીચંદભાઇ	બાબરીઝાળીયા	૫૨૭
૫	મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમનાં ધર્મપત્ની બા. સૌ. મણીબાઇ તરફથી હા. મુળચંદ દેવચંદ સંઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચંપાબેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ મનહરલાલ પ્રાણજીવનદાસ	મુંબઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઇ (કરાંચીવાળા)	લીંબડી	૫૦૧
૧૨	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૩	મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,,	૫૦૦
૧૪	શેઠ ગોવિંદજીભાઇ પોપટભાઇ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૫	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	સ્વ. પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા. વેણીચંદ શાંતિલાલ (જાંબુઆવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૧૭	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૮	શેઠ તારાચંદ પુખરાજજી	ઔરંગાબાદ	૫૦૦
૧૯	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	,,	૫૦૦
૨૦	મ્હેતા મુળચંદ રાઘવજી હા. મગનલાલભાઇ તથા દુર્લભજીભાઈ ખારૂ		૭૫૦
૨૧	શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા. ઈન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૨	શેઠ કેસરીમલજી વસ્તીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૩	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઇ બાબરીઝાળીયા		૫૫૧
૨૪	શ્રી ખીમજીભાઇ બાવાભાઇ કુલચંદભાઇ ગુલાબચંદભાઈ નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઇ	મુંબઈ	૫૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૨૫	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા. મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ	મુંબઇ	૫૦૧
૨૬	સ્વ. કાંતિલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાલચંદ સાકરચંદ	,,	૫૦૧
૨૭	કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	,,	૫૦૧
૨૮	શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૨૯	વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,,	૫૦૧
૩૦	શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા. ભાઈ અનોપચંદ	ખારેડ	૫૦૧
૩૧	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મહેતા	પ્રાકા	૫૭૧
૩૨	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	પ્રાકા	૫૦૧
૩૩	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૪	શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ. સૌ. નંદકુંવરબેન	જામનગર	૫૦૩
૩૫	શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૬	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૭	વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાંહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૮	મહેતા શાન્તિલાલ મણીલાલ હા. કમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૩૯	શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ. સૌ. ધીસાબેન	,,	૫૦૧
૪૦	શેઠ મોહનરાજજી મુકુનચંદજી બાલીયા	,,	૫૦૧
૪૧	સ્વ. શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા. મરઘાબેન તથા મંગુબેન	અમદાવાદ	૫૦૧
૪૨	પારેખ જયંતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હ. વિનુભાઇ	,,	૫૦૧
૪૩	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	વાંકાનેર	૫૦૧
૪૪	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	બોટાદ	૫૦૧
૪૫	શેઠ ગુલાબમલજી શેષમલજી જોવર (બરાર)	પીપળગાંવ	૫૦૧
૪૬	સ્વ. તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા. ભાઇ જયંતીલાલ તથા પુનમચંદભાઈ	વડોદરા	૫૦૧
૪૭	શાહ અચલદાસ શુકનરાજજી હા. શુકનરાજજી	અમદાવાદ	૫૦૧
૪૮	ભાવસાર બોડીદાસ ગણેશભાઈ	ધંધુકા	૫૦૧
૪૯	અ. સૌ. હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા	ઘાટકોપર	૫૦૧
૫૦	મહેતા શાંતિલાલ મગનલાલ તથા અ. સૌ. પદમાવતી શાંતિલાલ મહેતા	અમદાવાદ	૫૦૦
૫૧	શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કટારીયા	હુણલી	૫૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૫૨ શેઠ છોટુભાઇ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુંબઇ ૫૦૧
૫૩ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરબીવાળા તરફથી તેમના પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. વસંત બહેનના અઠ્ઠાઇતપ નિમિત્તે હા. ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
૫૪ સ્વ. શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની શીવકુંવરબાઇ તરફથી હા. રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
૫૫ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ (ભાટુંગા) ૫૦૧
૫૬ શ્રી લીંબડી સંપ્રદાયના ગચ્છાધિપતિ પૂ આચાર્ય મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજ શ્રી છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૫૭ સ્વ. શ્રી વિનયમુર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ જેશીંગભાઇ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
૫૮ બા. બ્ર. પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જૈનવાળા તરફથી તેમની દીક્ષા પ્રસંગે. વીરમગામ ૫૫૧
૫૯ શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયચંદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
૬૦ શેઠ પોપટલાલ હંસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
૬૧ અ. સૌ લીલાવંતીબેન ઇશ્વરલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
૬૨ હેમાણી પ્રભુદાસ ભાણજી કલકત્તા ૫૫૧
૬૩ શેઠ લક્ષ્મણદાસ સેજરામ અમદાવાદ ૫૦૧
૬૪ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ રાજકોટ ૫૦૧
૬૫ શેઠ ચાંદમલ ખીરધીચંદ નાસિક સીટી ૫૦૧
૬૬ ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છજલાણી હા. ધનવંતીબેન તથા કિરણબેન દિલ્હી ૫૦૧
૬૭ શેઠ હંસરાજજી પૂર્ણમલજી કાંકરીયા ગોગેાળાવ ૫૦૧
૬૮ શ્રી શ્વે. સ્થા જૈન સભા કલકત્તા ૫૦૧
૬૯ શેઠ તેજસિંહજી કૃતેલાલજી છાજેડ ઉદેપુર ૫૦૧
૭૦ શેઠ રતનચંદ લક્ષ્મીચંદ મુંબઇ ૫૦૦

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૭૧	શાહ ઉમરશી ભીમશીભાઇ (સ્વ. પિતાશ્રી ભીમશીભાઇ તથા માતુશ્રી પાલાબાઈતથા ધર્મપત્ની પાનબાઇના સ્મરણાર્થે)	મલાડ	૫૫૨
૭૨	શાહ શામલાલભાઇ અમરસીભાઇ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭૩	મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નૌતમલાલ	મુંબઇ	૫૦૧
૭૪	શેઠ ભીખચંદ્ર લાલચંદ્ર	પીપલગામ	૫૦૧
૭૫	મેન મોહનીબેન મહેતા	મુંબઇ	૫૦૧
૭૬	શ્રીમતી મોંઘીબેન નવલચંદ શાહ હા. મોતીબેન	લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર)	૫૦૧
૭૭	શ્રીમતી વિમલાજી સૂરજમલ મહેતા	બેલગામ	૫૦૧
૭૮	ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચંદ્ર વકીલ બી. એ. એલ. એલ. બી.	રાજકોટ	૫૦૧
૭૯	સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની રાજકુંવરબેન	સતારા	૭૫૧
૮૦	શેઠ મોહનલાલજી મંછાલાલજી હા રમણીકલાલ (પૂ. મુનિશ્રી ફતેચંદ મ. ના શિષ્ય પં. મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ. ના ઉપદેશથી)	જયપુર	૫૦૧
૮૧	શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા	ધારડી	૫૦૧
૮૨	શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચંદજી સાંઢેરાવાળા (પૂજ્ય ફતેચંદજી મ. ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ. ના શિષ્ય ચાંદમલજી મ. ના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ	૫૦૧
૮૩	શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી સમન્દરલાલજી	બડોત	૫૦૧
૮૪	શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચંદજી સાંકરિયા (પૂ. મ. શ્રી સ્વામીદાસજીના સંપ્રદાય પૂ. મ. શ્રી ફતેચંદજી મ. ના શિષ્ય પં. મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ. ના ઉપદેશથી	સાંઢેરાવ	૫૦૧
૮૫	સ્વ. ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેસાઇના સ્મરણાર્થે હા. ભૂપતલાલ ગૌરીશંકર	ઇદોર	૫૦૧
૮૬	શેઠ શ્રી નરભેરામભાઇ હંસરાજભાઇ કમાણી	જમશેદપુર	૫૦૧
૮૭	સ્વ. મહાસતીજી શ્રી ધનદેવીજી મ સા. ના સ્મરણાર્થે સ્વ. ખૂબચંદજી સંખલાલનાં ધર્મપત્ની શ્રીમતી જયદેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનાબાઇજી તથા કુલબતીજીના ઉપદેશથી)	દિલ્હી	૫૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૮૮ શ્રીમાન લાલાજી કપુરચંદજીના બોથરાના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી વસંતદેવી હા. લાલા રાજમલજી હેમચંદજી
તરફથી (મહાસતી શ્રી સુદર્શનાબાઈજી તથા ફૂલ-
મતિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧

૮૯ સ્વ. મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ. સા. ના સ્મરણાર્થે
શ્રી એસ. એસ. જૈન મહિલા સંઘ તરફથી (અનેક ગુણાલંકૃત
મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી) દિલ્હી ૫૦૧

૯૦ સ્વ. લક્ષ્મીચંદજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજંતીના તરફથી
હા. સંઘવી હેમંતકુમાર જૈન દિલ્હી ૫૦૧

૯૧ સ્વ. પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘતનોમલજી સુજન્તીના સ્મરણાર્થે
હા. શ્રીમતી નગીનાદેવી દિલ્હી ૫૦૧

૯૨ લાલાજી કસ્તુરચન્દજી ખુશાલચન્દજી સંચેતી હા. જ્ઞાનચંદ્રજી અલવર ૫૦૧

૯૩. સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સોમચંદ દફ્તરી
હા. ગૌરીશંકર દુર્લભજી દફ્તરી મુંબઈ ૫૦૦

૯૪ શેઠ સોમચંદ જેઠાલાલ ઘોલાણી
હા. ચુનીલાલભાઇ જોડીયાવાળા મુંબઇ ૫૦૬

૯૫ શેઠ ફોજલમલ્લજી સુલતાનસિંહજી બોરદીયા અમદાવાદ ૫૦૧

૯૬ શેઠ છગનલાલ શામજી વીરાણી તથા
શ્રીમતી વૃજકુંવરબેન છગનલાલ વીરાણી ટ્રસ્ટફંડ
તરફથી શેઠ છગનલાલભાઇના સ્મરણાર્થે રાજકોટ ૫૦૧

૯૭ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ
હા. પ્રમુખ બંસીલાલ કટારીયા હિંગણઘાટ ૫૦૧

૯૮ લાલાજી રામલાલજી રોશનલાલજી (અનેક ગુણાલંકૃત
મહાસતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧

૯૯ સ્વ. મહેતા મંગળજી મણીલાલના સ્મરણાર્થે
હા. તેમના ધર્મપત્ની ગુણવંતીબેન મહેતા પાંડેચેરી ૫૫૧

૧૦૦ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ (મહાવીર ટેક્ષટાઇલ સ્ટોર્સ) બેંગલોર ૫૫૩

૧૦૧ શ્રીયુત તારાચંદ ગેલડા ટ્રસ્ટ મદ્રાસ ૫૦૧

૧૦૨ શેઠ ગુલરાજજી પુનમચંદજી મહેતા કીસનગઢ ૫૫૧

૧૦૩ શેઠ અગરમલ્લજી ત્રીકમચંદજી ઈંદોર સીટી ૫૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૦૪ કાનુગા ધીંગડમલ્લજી મુલતાનમલજી કંવાડ ગઢસીંયાણાવાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૫ લાલાજી નવરતનચંદજી ચોરડીયાનાં ધર્મપત્ની શ્રીમતી રાજકુમારીબેન	દિલ્હી	૫૦૧
૧૦૬ શેઠ ચીમનલાલ ઋષભચંદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૭ શેઠ કાનજી ભીમાણી ટ્રસ્ટ	કલકત્તા	૫૦૧
૧૦૮ શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી	,,	૫૦૧
૧૦૯ અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી સ્વધર્મી બંધુઓ તરફથી	દિલ્હી	૫૦૧
૧૧૦ સ્વ. વિનચંદજી પારેખના સ્મરણાર્થે લાલા પૂનમચંદજી રતનચંદજી પારેખની વતી હ. શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાંત સ્વભાવી મહાસતીજી કુલકુંવરબાઇના ઉપદેશથી)	દિલ્હી	૫૦૧
૧૧૧ શ્રીમતી બદામબાઇ મીશ્રીલાલજી લુણિયા ચંડાવલવાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૨ શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ	,,	૫૫૧
૧૧૩ શાહ હરખચંદ અમરચંદ	,,	૫૦૧
૧૧૪ શાહ જગજીવનદાસ વન્દ્રાવનદાસ	,,	૫૦૧
૧૧૫ શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી જૈનભુવન	કલકત્તા	૫૦૧
૧૧૬ પૂ. દાદાજી સ્વ. કપુરચંદજી તથા દાદીજી કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે હા. લાલા કુલચંદજી અને શ્રીમતી વીમલકુંવરી ઝવેરીની વતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી કુલમતીજીના ઉપદેશથી)	દિલ્હી	૫૦૧
૧૧૭ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૮ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ ગણેશમલ ગુલાબચંદ	બરોરા	૫૦૧
૧૧૯ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	ભદેસર	૫૦૧
૧૨૦ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય	કુમારડી	૫૦૧
૧૨૧ ગાંધી ભુરાલાલ નાનચંદ	મુંબઇ	૫૦૧
૧૨૨ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગલુંડીયા એડીસનલ કમિશ્નર અજમેર ડીવીઝનવાળાના ધર્મપત્ની અ. સૌ. માણેકકુંવરબેન તરફથી હા. ખુશાલસિંહજી ગલુંડીયા	જયપુર	૫૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૨૩	શેઠ ઝુમરલાલજી સીરોયા	ઉદેપુર ૫૦૧
૧૨૪	શેઠ મનસુખલાલ ત્રીભોવનદાસ	કોઇમ્બતુર ૫૦૧
૧૨૫	શ્રી દશા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન સંઘ	જમશેદપુર ૫૦૧
૧૨૬	શ્રી જૈન રત્ન પુસ્તકાલય	જોધપુર ૫૦૧
૧૨૭	શેઠ અજીતમલ કનૈયાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૦
૧૨૮	શેઠ વસ્તીમલજી જોરાવરમલજી ભુરટ	હુબલી ૫૦૧
૧૨૯	શેઠ ચાંદમલજી હરખચંદજી કોઠારી હા. ખમાબેન મુળચંદજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૩૦	બાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર	બાબરીયાધાર ૫૦૨
૧૩૧	બેન લક્ષ્મીબાઇ પુર્વભલ મહેતા	પાલનપુર ૫૦૧
૧૩૨	શ્રીવીર વર્ધમાન પુસ્તકાલય હા. શેઠ હીરાલાલજી ગણેશલાલજી	કુંવારીયા ૫૦૧

૫૮૨-લાઇફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાંઓ

નંબર	નામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા. ફકીરચંદભાઇ	૨૫૧
૩	શાહ કાંતિલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ સાંકરચંદ	૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઇ મંગળદાસ	૨૫૧
૮	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે, હા. કાનજીભાઇ અમૃતલાલ દેસાઇ	૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૩ શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઇ મહાસુખલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી	૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી. શેઠ હા. ડૉ. કુ. સરસ્વતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ કાંતિલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પોચાલાલ પિતાંબરદાસ	૨૫૧
૨૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદાસ ઉમેચંદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ	૨૫૧
૨૭ સંઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાંગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ. સૌ. બેન રતનબેન નાદેચા હા. શેઠ ધુલજી ચંપાલાલજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ. પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા. મુળચંદ જવાહરલાલજી બરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ. ભાવસાર બબાભાઇ (મંગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ. પિતાશ્રી રવજીભાઇ તથા સ્વ. માતુશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. કકલભાઇ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ ભાખડાવાળા હા. પાર્વતીબેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ મણીલાલભાઈ ૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ ૨૫૧
૪૨ અ. સૌ. બેન જીવીબેન રતિલાલ હા. ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા ૨૫૧
૪૪ સંઘવી બાલુભાઇ કમળશી તથા તેમનાં ધર્મપત્નીઓ અ. સૌ.
ચંપાબેન તરફથી તથા વસંતબેન તરફથી ૨૫૧
૪૫ અ. સૌ. વિદ્યાબેન વનેચંદ દેસાઇ વર્ષિતપ તથા અઠાઇ પ્રસંગે
હા. ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેસાઇ ૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ ૨૫૧
૪૭ અ. સૌ. સરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૪૮ અ. સૌ. કંકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની) ૩૦૯
૪૯ અ. સૌ. સવિતાબેન (જયંતીલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૦ અ. સૌ. સુનંદાબેન (રમણલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૧ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા. વાગમલજી રૂગનાથજી ૩૦૧
૫૨ શેઠ મણીલાલ બોઘાભાઇ ૨૫૧
૫૩ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા ૩૦૧
૫૪ સ્વ. માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે
હા. રમણલાલ માણેકલાલ ૨૫૧
૫૫ સ્વ. શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે
હા. કનૈયાલાલ ધનરાજજી ૩૦૧
૫૬ શ્રી સારંગપુર દ. આ. કો. સ્થા. જૈન સંઘ
હા. શાહ રમણલાલ ભગુભાઇ ૨૫૧
૫૭ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઇ લહેરચંદના
સ્મરણાર્થે હા. દોશી મનહરલાલ ફરશનદાસ મુળીવાળા ૨૫૧
૫૮ શાહ પુનમચંદ ફતેચંદ ૨૫૧
૫૯ શ્રીયુત ચતુરભાઈ નંદલાલ ૫૨૧
૬૦ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા ૨૫૧
૬૧ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઇ ૨૫૧
૬૨ અ. સૌ. બેન લાભુબેન મગનલાલ
હા. શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઇ વઢવાણ શહેરવાળા ૩૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૬૩ અ. સૌ. બેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૪ દોશી કુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. દોશી છબીલદાસ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
૬૫ લાલાજી રામકુંવરજી જૈન ૨૫૧
૬૬ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
૬૭ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
૬૮ સંઘવી સુર્યકાન્ત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે
હા. સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૬૯ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
૭૦ મહેતા મુળચંદ મગનલાલ ૨૫૧
૭૧ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્ની રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે
હા. હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
૭૨ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હા. હસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
૭૩ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
૭૪ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ. જશવંતલાલ લલ્લુભાઇ ૩૦૧
૭૫ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૬ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ. કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા
(ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૭ કુમારી નલીનીબેન જયંતીલાલ ૨૫૧
૭૮ સ્વ. ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસનાં ધર્મપત્ની કાશીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૯ સ્વ. ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની દીવાળીબાઇનાં
સ્મરણાર્થે હ. રતીલાલ માણેકલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૦ મહેતા દેવીચંદજી ખુબચંદજી ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના
સ્મરણાર્થે હ. મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
૮૧ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કોઠારી કે. લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ૨૫૧
૮૨ સ્વ. શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઇ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે પુનાબેન
તરફથી હ. કરશનભાઇ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૩ શાહ મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૮૪ ભાવસાર જયંતીલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧
૮૫ ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૮૬ ભાવસાર કનુભાઈ સાકરચંદ ૨૫૧
૮૭ શેઠ ભેરૂમલજી સાહેબ જોધપુરવાળા ૨૫૧
૮૮ સ્વ. બેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઇ કુંદણીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. શાંતિલાલ વર્ધમાન ૨૫૧
૮૯ સ્વ. કચરાભાઈ લહેરભાઇના સ્મરણાર્થે
હ. શાંતિભાઇ કચરાભાઇ ૨૫૧
૯૦ એક સ્વધર્મી બન્ધુ હ. શાહ રીખભદાસજી જયંતીલાલજી ૨૫૧
૯૧ અ. સૌ. સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ
(સદાનંદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૯૨ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરીયાપુરી સંપ્રદાયના પૂ. તપસ્વી
મહારાજશ્રી માણેકચંદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૯૩ બેન જેકુંવર વ્રજલાલ પારેખ ૨૫૧
૯૪ શેઠ પુનમચંદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
૯૫ અ. સૌ. લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા
ઠે ડો. ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા ૩૦૧
૯૬ શેઠ રાજમલજી ઘાસીલાલજી કોઠારી કોશીથલવાળા ૨૫૧
૯૭ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી ઠે. રતીલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૯૮ ભાગ્યવતી અરવીંદકુમાર ઠે. અરવીંદકુમાર સકરાભાઇ ભાવસાર ૨૫૧
૯૯ અ. સૌ. ચંચળબેન મનસુખલાલ
હા. મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા ૨૫૧
૧૦૦ સ્વ. આસીબાઈ તથા વસતીમલજી ભોમાજીના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચંદજી ઓસવાલ કેરૂવાળા ૨૫૨
૧૦૧ સ્વ. શેઠ કીશનમલજી માંડોતના સ્મરણાર્થે
હા. શીરેમલજી કીશનમલજી સોજતવાલા ૨૫૧
૧૦૨ સ્વ. શેઠ વકતારમલજીના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ ધીસાલાલજી મુકનરાજજી શીયારીયા (જોધપુરવાલા) ૨૫૧
૧૦૩ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનંદી પંડિત મુનિશ્રી
છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૧૦૪ અ. સૌ. કાન્તાબેન કાળીદાસ ઠે. કુમાર બુકબાઈન્ડીંગ વર્કસ ૨૫૧
૧૦૫ સ્વ. હિંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે
તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૦૬ અ. સૌ. કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે
હા. ભાવસાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૧૦૭ શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી ઠે. યુ. ટી. ગોપાણી એન્ડ સન્સ ૩૫૧
૧૦૮ પૂ. માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૧૦૯ શાહ શાંતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
૧૧૦ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા. પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧
૧૧૧ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા. શાહ ભુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧
૧૧૨ સ્વ. પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે
હા. મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
૧૧૩ શેઠ પરસોતમદાસ અમરચીનાં ધર્મપત્ની સ્વ. કુસુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ. સૌ સવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે
હા. શેઠ સોમચંદ પરસોતમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા) ૩૦૧
૧૧૪ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદ્રજી ડુંગરવાલ
રાજી. કાકેરડાવાળા (મુનિશ્રી માંગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૧૧૫ ડા. ધનજીભાઈ પરસોતમદાસ ૨૫૧
૧૧૬ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧
૧૧૭ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧
૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧
૧૧૯ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
૧૨૦ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા ૨૫૨
૧૨૧ કામદાર વાડીલાલ રતીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨
૧૨૨ કુમારી ચંપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦
૧૨૩ કુમારી ઉષાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧
૧૨૪ કુમારી ચંદ્રાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧
૧૨૫ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧
૧૨૬ શાહ ડાહ્યાભાઇ અંબાલાલ ૩૫૧
૧૨૭ બરડીયા ચાંદમલજી જવાહીરલાલજી ૨૫૧
૧૨૮ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા ૩૫૧
૧૨૯ શેઠ પાનાચંદ ઝવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ
હ. વકીલ ભાણુભાઈ હીંમતલાલ ૩૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાધજીભાઇ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. ગાંડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ કુંગરવાલ ૨૫૧

અલવર

૧ શ્રીમતી ચંપાદેવી કે. બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ શેઠ ચાંદમલ્લજી મહાવીરપ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત ઋષભકુમાર સુમતિકુમાર જૈન ૨૫૧

આસનસોલ

૧ આવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
મણીબાઈ તરફથી હા. રસિકલાલ, અનિલકાંત, તથા વિનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

૧ મંહેતા ચુનીલાલ નારણજી ૩૦૧

આણંદ

૧ શેઠ રમણીકલાલ એ. કપાસી હા. મનસુખલાલભાઈ ૨૫૧

આકોલા

૧ શેઠ કંચનમલ્લ રાયવજી અજમેરા કે. મેસર્સ અજમેરા ગ્રુપસ્ જીન્ડ
કું. (પૂ. સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઈંગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ જૈન ૨૫૧

ઇન્દોર

૧. અ. સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઇ જેતપુરવાળા
(અ. સૌ. બેન વિદ્યાબેનનાવધીતપ નિમિત્તે)
હા. અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૨૫૧

ઉદયપુર

૧ શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી સોહિનીબાઇ કે રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૩ અ. સૌ. બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહેાતલાલજી નાહરનાં
ધર્મપત્ની હા. શેઠ રણજીતલાલજી મેાતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૪ શેઠ છગનલાલજી બાગ્રેચા ૨૫૧
૫ શેઠ મગનલાલજી બાગ્રેચા ૨૫૧
૬ સ્વ. શેઠ કાળુલાલજી લેાઢાના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ દેાલતસિંહજી લેાઢા ૨૫૧
૭ સ્વ. શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે
હા. પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા ૨૫૧
૮ શેઠ ભીમરાજજી થાવરચંદજી બાફણા ૨૫૧
૯ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મહેતા ૨૫૧
૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૧૧ શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લેાઢા ૨૫૧
૧૨ શેઠ કસ્તુરચંદજી નાથમલજી ૨૫૧
૧૩ શ્રી. યુ. એલ. કેાઠારી ૩૦૧
૧૪ બાબુ પરશુરામ છગનલાલજી શેઠ ૨૫૦
૧૫ શેઠ કનૈયાલાલ કાશ્મલાલજી જૈન ૨૫૧
૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ આમડ ૩૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગેારધનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ. જૈન સંતેાકબેન કચરા હા. એાતમચંદભાઈ, છેાટાલાલભાઇ
તથા અમૃતલાલભાઇ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧
૩ શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
૪ દેાશી વીઠ્ઠલજી હરખચંદ ૨૫૧
૫ સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઇના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પુત્રેા
જયંતીલાલ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧

ઉમરગાંવ રેાડ

૧ શાહ મેાહનલાલ પેાપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા. રાયચંદભાઈ, પેાપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરસોતમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે. સ્થા. (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો. મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા. ડો. રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા. શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા. મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ. શ્રીયુત વાડીલાલ પરસોતમદાસના સ્મરણાર્થે
હા. ઘેલાભાઇ તથા આત્મારામભાઇ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઇ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા. દરિયાપુરી જૈન સંઘ
હા. ભાવસાર દામોદરદાસભાઇ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન ઠે. જેસીંગભાઈ ઈશ્વરલાલભાઇ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ મીયાંગામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા. જૈન સંઘ જેસીંગભાઇ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હા. ઠાકોરભાઇ રાયચંદ્ર ૨૫૧

કન્નાસગઢ

૧ શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઇ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સંઘવી હાકરશીભાઇ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ હીંમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુંદણી–(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી (તેમના સ્વ. સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ. શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધ્રાફાવાળાના સ્મરણાર્થે હ. તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ ધ્રાફાવાળા ૨૫૧

કુશળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

કોલ્હાપુર

૧ વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઈ હા. હરીલાલભાઈ ૨૫૧

ખારાઘોડા

૧. સ્વ. પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા સ્વ. અ. સૌ. બેન જમકુબાઈ તથા લીલાબાઈના સ્મરણાર્થે હા. નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ સ્વ. શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીસનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ ૩૫૨

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી બેંડપવાળા ૩૦૦

૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાંતિલાલજી ભોરલાવાળા (મુનિશ્રી ચાંદમલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ખંભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ	૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીભોવનદાસ મંગળદાસ	૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ	૨૫૧
૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ	૨૫૧
૫ શાહ સાંકળચંદ મોહનલાલ	૨૫૧
૬ શાહ શકરાભાઈ ઠેવચંદ	૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ	૨૫૧
૮ ગાંધી બાપુલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૯ જૈન લલિતા માણેકલાલ	૨૫૧

ગાંધીધામ

૧ શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કંપની	૨૫૧

ગુંદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ	૨૫૧

ગુલાબપુરા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન વર્ધમાન સંઘ હ. માંગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા	૨૫૧
૨ શ્રી ઓસવાલ પંચાયત હ. ગુલાબચંદજી ચોરડીયા	૨૫૧

ગોંડલ

૧ સ્વ. ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસનાં ધર્મપતિ કમલબાઇ તરફથી હા. માણેકચંદભાઈ તથા કુસુમચંદભાઈ	૨૫૧
૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ. લીલાવતી સાકરચંદ કોઠારીના બીજા વર્ષીતપની ખુશાલીમાં	૩૦૧
૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા. હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર	૩૦૧
૪ સ્વ. કોઠારી કૃપાશંકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની પ્રભાકુંવરબેન	૨૫૧
૫ કોઠારી ગુલાબચંદ રાયચંદ રંગુનવાળા	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૬ જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા. નીલાચુલભાઇ ૨૫૧
૭ માસ્તર હકમીચંદ દીપચંદ શેઠ ૨૫૧

ગોંદીયા

૧ સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ પ્રેમચંદ ઠોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી) ૨૫૦

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીલોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧
૨ સ્વ. પ્રેમચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા. શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૧

ઘટકણ

૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

ઘોડવડ (થાણા)

૧ મહેતા ગુલાબચંદ ગંભીરમલજી ૩૦૦

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચંદ્રભાણ શોભાચંદ ગાદીયા ૨૫૧

ચુડા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. રતીલાલ મગનલાલ ગાંધી ૨૫૧

ચોટીલા

૧ શાહ વનેચંદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘને ભેટ ૩૦૧

ચારભુજારોડ

૧ શેઠ માંગીલાલજી હીરાચંદજી બાબેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

૧ કોશી ઝવેરચંદ વલમજી ૨૫૧

જલેસર (બાલાસોર)

૧ સંઘવી નાનચંદ પોપટભાઇ થાનગઢવાળા ૨૫૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવંતગઢ

શ્રીમાન સુન્દરલાલજી નેમીચંદતલેસર ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

જામખંભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. મહેતા રણછોડદાસ પરમાણંદ	૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઇ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડો. સાહેબ પી. પી. શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનાદેવ

૧ ચેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા. હરીલાલભાઇ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ ભાવનજી જેઠાભાઇ	૨૫૧
૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨. અ. સૌ. જૈન સુરજકુંવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા. નરભેરામભાઇ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની જબકબેન તરફથી હા. શાંતિલાલભાઈ ગોંડલવાળા	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

જોધપુર

૧ શેઠ નવરતમલજી ધનવંતસિંહજી ૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા ૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજજી પદમારાજજી ભંડારી ૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા ૨૫૧

જેરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઇ ૨૫૧

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ કનૈયાલાલ બી. મોદી ૨૫૧

ડોંડાયચા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ ૨૫૦

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્થા. જૈન સંઘ હા. એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બગડિયા નરભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જંકશન) ૨૫૧

તાસગાંવ

૧ સ્વ. ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
ગેંદુબાઈ તરફથી હા. શેઠ રામચંદજી ૩૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઇ કરશનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઇ પાશવીરભાઈ હા. સુખલાલભાઇ ૨૫૧
૪ હંસાબેન અરવીંદ હા. ભાઇ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૫૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓધડ બંધાર (કરાંચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઇ ખેંગારજી ૨૫૧

દીલ્હી

૧ લાલાજી પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૨ શ્રીયુત કીશનચંદજી મહેતાબચંદજી ચોરડીયા
હા. શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાબચંદ જૈન ૨૫૧
૩ અ. સૌ. સજ્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧
૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૫ લાલાજી ગુલશનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૬ બેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે. મહેતાબચંદ જૈન
(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીજી મહાસતીજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧
૭ શ્રીમાન લાલાજી રતનચંદજી જૈન ઠે. આઇ. સી. ઓફીસરી ૨૫૧
૮ સ્વ. શ્રી લાલાશ્રીચંદજી ડુંગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી
હુકમચંદજી જૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર
તરફથી ભેટ હા. વિનયકુમારી ૩૫૧
૯ સ્વ. લાલાજી ચંપાલાલજી ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાભચંદજી
તથા હીરાલાલજી તરફથી હા. શાંતાદેવી ૩૫૧
૧૦ એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી હા. મહેતાબચંદજી જૈન ૩૦૧
૧૧ એક સ્વધર્મી બંધુ તરફથી હા. વિજયાકુમારીબેન ૩૦૧
૧૨ બાબુ નિરંજનસિંહજી જૈન ૨૫૧

ધ્રાફા

૧ શેઠ મણીલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

ધ્રાંગધ્રા

૧ ભાવદીક્ષિત અ. સૌ. રૂપાળીબેન હિંમતલાલ સંઘવીની તપશ્ચર્યાર્થે
સંઘવી ચીમનલાલ પુરસોતમદાસ સંઘવી તરફથી ૬૦૧
૨ સંઘવી નરસિંહદાસ વખતચંદ ૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ હા. મંગળજી જીવરાજ ૨૫૧
૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૫ કોઠારી કપુરચંદ મંગળજી ૨૫૧

ધોરાજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૩૫૧
૨ અ. સૌ. બચીબેન બાબુભાઇ ૩૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૪ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા. લીમીટેડ ૨૫૧
૪ સ્વ. રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ ૩૦૧
૫ ગાંધી ચોપટલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૦
૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હા. કુમારી હસુમતી ૨૫૧
૭ એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા ૨૫૧
૯ સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઈના તથા ચિ. હંસાના સ્મરણાર્થે હા. પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી ૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ જામખંભાળીયાવાળા ૨૫૧

ધંધુકા

૧ શેઠ ચોપટલાલ ધારશીભાઇ ૨૫૧
૨ સ્વ. ગુલાબચંદભાઇના સ્મરણાર્થે હા. વોરા ચોપટલાલ નાનચંદ ૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી ૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા. શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ ૨૫૧

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઇ ૨૫૧

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા ઓશીવાળા ૨૫૧

નંદુરબાર

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ ૨૫૧

નાગોર

૧ શ્રીપાલભાઇ એન્ડ કું. સાગરમલજી લુંકડ ડેરવાળા તરફથી ૨૫૧

નાગપુર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ ૨૫૧

પાલનપુર

૧ લોંકાગચ્છ સ્થા. જૈન પુસ્તકાલય હા. કેશવલાલ જી. શાહ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

પાણુસણા

૧ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ છોટાલાલ પુનાભાઇ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પ્રાંતીજ

૧ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શ્રીયુત અંબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદજી કેવળચંદજી ધોકા ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજજી હસ્તીમલજી સાદડીવાલા ૪૦૧
૨ મહેતા કુંદનમલજી અમરચંદજી સાદડીવાલા ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા
હા. માનસંઘ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧
૨ સ્વ. માતુશ્રી જબકબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. દેસાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા–ધેલાશા

૧. સ્વ. મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હા. તેમનાં ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ હા. મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણુસારી ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઇ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

બીકાનેર

૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠીયા ૩૫૪

બેરાજા

૧ શેઠ ગાંગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેલારી

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ હજારીમલજી હસ્તીમલજી રાંકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા. જૈન સંઘ હ. મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેંગલોર

૧ શેઠ કીશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ ૨૫૧
૨ સ્વ. મજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૨૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ. વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા. તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૧

બોરેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીણાભાઇ ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફેાફરીયા ૨૫૧
૬ ફેાફરીયા ગાંડાલાલ કાનજીભાઈ હા. ચ. સૌ. શાંતાબેન વસનજી ૨૫૧
૭ સ્વ. મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં
ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (શુંદ્રાવાળા) ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ભાવનગર

૧ સ્વ. કુંવરજી આવાભાઇના સ્મરણાર્થે હા. શાહ લક્ષ્મીચંદ કુંવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ ધુલાભાઇ ઝવેરભાઇ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા. ચાંદમલજી માનમલજી સંઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચંપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા. શેઠ છોગામલજી માંગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નંદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજય

૧ જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા. છઠ્ઠોટી સ્થા. જૈન સંઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચંદજી જશવંતગઢવાળા
હા. પૂનમચંદજી શેરમલજી ભોલ્યા. ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ. મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની
કુંવરબાઇ હરખચંદ (માનકુવા સ્થા. જૈન સંઘ માટે) ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

માંડવી

૧ શ્રી સ્થા. છકોટી જૈન સંઘ હા. મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા

૧ શ્રી માંડવા સ્થા. જૈનન સંઘ
હ. અ. સૌ. કંચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાંવ

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. ફતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

માંગરોલ

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ નાનજી ૨૫૦
૨ દોશી ગીરધરલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦

મુંબઈ તથા પરાંઓ

૧ શાહ શ્રી પિતાશ્રી કુંદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ મોતીલાલજી જુઅરમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
૨ વર્ધમાન સ્થા. જૈન સંઘ હ. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી) ૨૫૧
૩ અ. સૌ. કમળાબેન કામદાર હ. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી) ૨૫૧
૪ સ્વ. માતુશ્રી કડવીબાઇના સ્મરણાર્થે હ. તેમના પૌત્ર
હકમીચંદ તારાચંદ દોશી (અંધેરી) ૨૫૧
૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ. સૌ. કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
૭ સંઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૮ વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હ. ત્રંબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
૯ શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧
૧૦ સ્વ. જટાશંકર દેવજીભાઇ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ. રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી ૩૦૧
૧૧ ઘેલાણી વલભજી નરભેરામ હ. નરસીંહદાસ વલભજી ૨૫૧
૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૩ ત્રીભોવનદાસ માનસિંગભાઈ ઢોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. શાહ હરખચંદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડિયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૧૫ સ્વ. પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોંડલવાળાના સ્મરણાર્થે હા. વૃજલાલ શામળજી બાવીસી		૩૦૧
૧૬ શાહ રવિચંદ સુખલાલભાઇ (દાદર)		૩૫૧
૧૭ સ્વ. આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા. શાંતિલાલ આશારામ વતી જશવંતલાલ શાંતિલાલ		૨૫૧
૧૮ ગાંધી કાંતીલાલ માણેકચંદ		૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઇલાલભાઇની કુાં. (કાંદીવલી)		૨૫૧
૨૦ અ. સૌ. લાછુબેન હા. રવજીભાઇ શામજી		૨૫૧
૨૧ સ્વ. માતુશ્રી માણેકબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ વલભદાસ નાનજી		૩૦૧
૨૨ એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા. શેઠ સુંદરલાલ માણેકલાલ		૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઇ ખેંગારભાઇ		૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા		૨૫૧
૨૫ સ્વ. માતુશ્રી ગોમતીબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ		૨૫૧
૨૬ કોટેચા જયંતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા		૨૫૧
૨૭ વોરા ઠાકરશી જસરાજ		૨૫૧
૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારેડ)	૨૫૧
૨૯ અ. સૌ. બેન કુંદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી	,,	૨૫૧
૩૦ કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચંદભાઇ		૨૫૧
૩૧ દેશાઇ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા. દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઇ		૨૫૧
૩૨ સ્વ. ત્રીભોવનદાસ વજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે હા. હરગોવિંદદાસ ત્રીભોવનદાસ અજમેરા		૨૫૧
૩૩ તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચંદ		૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાલા)		
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખંભાતવાળા હા. ભાઇ જેઠાલાલ નેમચંદ		૨૫૧
૩૬ શાહ કોરશીભાઇ હીરજીભાઇ		૩૦૧
૩૭ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર)	૨૫૧
૩૮ દોશી ચત્રભુજ સુંદરજી	,,	૪૦૧
૩૯ દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	,,	૪૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૪૦	દોશી પ્રવિણચંદ્ર ચત્રભુજ	(ઘાટકોપર)	૩૮૧
૪૧	શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા. ઝાટકીયા નરભેરામ મોરારજી	,,	૨૫૧
૪૨	શાહ કાંતીલાલ મગનલાલ	,,	૨૫૧
૪૩	શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર	૨૫૧
૪૪	શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ		૨૫૧
૪૫	શાહ શીવજી માણેકભાઇ		૨૫૧
૪૬	મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કું. હા. શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૪૭	શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી (વેરાવળવાળા)		૨૫૧
૪૮	મહેતા રતીલાલ ભાઈચંદ		૨૫૧
૪૯	શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા		૨૫૧
૫૦	બેન કેશરબાઇ ચંદુલાલ જેશીંગભાઈ શાહ		૨૫૧
૫૧	પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ. સૌ. ચંચળબાઈના સ્મરણાર્થે હા. સારાભાઇ ચીમનલાલ		૨૫૧
૫૨	ધી મરીના મોર્ડન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ડાકરશી		૨૫૧
૫૩	મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા. અનોપચંદ ડી. મહેતા		૨૫૧
૫૪	શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમનાં માતુશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે		૩૦૧
૫૫	શ્રીયુત જસવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા		૨૫૦
૫૬	શાહ કુંવરજી હંસરાજ		૨૫૧
૫૭	દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી		૨૫૧
૫૮	મોદી અમેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા. ડોસાલાલ અમેચંદ		૨૫૧
૫૯	શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધ્રાંગધ્રાવાળા હા. શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ		૨૫૦
૬૦	સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે હા. લક્ષ્મીચંદભાઇ તથા કેશવલાલભાઈ		૩૫૧
૬૧	સ્વ. પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે હા શાહ બાપાલાલ અંબાલાલ		૨૫૧
૬૨	સ્વ. કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ મશરીયા (ચુડાવાળા)		૨૫૧
૬૩	શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા		૨૫૧
૬૪	શાહ રતનશી મોણશીની કું.		૨૫૧
૬૫	શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા		૨૫૧
૬૬	શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ		૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૬૭ સ્વ. પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ, શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
૬૮ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧
૬૯ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન સંઘ
હા. કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા (મલાડ) ૨૫૧
૭૦ સ્વ. પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ કાનજી પતુભાઈ ,, ૨૫૧
૭૧ અ. સૌ. પાનબાઈ હા. શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ ,, ૨૫૧
૭૨ સ્વ. નાગશીભાઇ સેજપાલના સ્મરણાર્થે રામજી નાગશી ,, ૩૦૧
૭૩ સ્વ. ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસઈવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. જગજીવન વણારશી ગોડા ,, ૨૫૧
૭૪ સ્વ. કાનજી મુળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા. જયંતિલાલ કાનજી ,, ૨૫૧
૭૫ શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર ,, ૨૫૧
૭૬ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની
સ્વ. નાનબાઇના સ્મરણાર્થે ,, ૩૦૧
૭૭ સ્વ. પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ દામજી રાયશીભાઇ ,, ૩૦૧
૭૮ શાહ વરજાંગભાઇ શીવજીભાઇ ,, ૨૫૧
૭૯ શાહ ખીમજી મુળજી પુંજા ,, ૨૫૧
૮૦ અ. સૌ. સમતાબેન શાંતિલાલ હ. શાંતિલાલ ઉજમશી શાહ ૨૫૧
૮૧ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સુરજબેન તરફથી
હા. તનસુખલાલભાઇ ,, ૨૫૧
૮૨ સ્વ. પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે
હા. દેવશી હંસરાજ કચ્છ ખીદડાવાળા ,, ૨૫૧
૮૩ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી) ૨૫૨
૮૪ શેઠ ત્રંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર શાસ્ત્રભંડારને ભેટ (ભાટુંગા) ૨૫૧
૮૫ અ. સૌ. બેન રંજનગૌરી હે. શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ ,, ૨૫૧
૮૬ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની
અ. સૌ. સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમાં ,, ૨૫૧
૮૭ દોશી ભીખાલાલ વ્રજલાલ પાળીયાદવાળા ,, ૨૫૧
૮૮ શાહ ગોપાળજી માનસંગ ,, ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૮૯ દોશી કુલચંદ માણેકચંદ	માકુંગા	૨૫૬
૯૦ શેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદભાવાળા	,,	૨૫૧
૯૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ હ. શાહ રવિચંદ સુખલાલ	(દાદર)	૨૫૧
૯૨ શાંતીલાલ ડુંગરશી અદાણી	,,	૨૫૧
૯૩ શાહ કરશન લધુભાઇ	,,	૨૫૧
૯૪ કીસનલાલ સી. મહેતા	(શીવ)	૨૫૧
૯૫ માતુશ્રી જીવીબાઇના સ્મરણાર્થે હ. શામજી શીવજી કચ્છ ગુંદાળાવાળા	(ગોરેગાંવ)	૨૫૧
૯૬ સ્વ. શાહ રાયશી કચરાભાઇના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની નેચુબાઈની વતી હ. જેઠાલાલ રાયશી	મુંબઇ	૨૫૧
૯૭ સુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે. નવીનચંદ્ર વસંતલાલ શાહ	(વીલેપાર્લે)	૨૫૧
૯૮ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા		૨૫૧
૯૯ સ્વ. કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે હ. સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા)		૩૦૧
૧૦૦ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ. સૌ. બેન કસુંબા ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા)	(શીવ)	૨૫૧
૧૦૧ અ. સૌ. શાંતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	(દાદર)	૨૫૧
૧૦૨ ભાવસાર દીનુભાઈ ભોગીલાલ	,,	૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉજમશી વીરપાળ હ. શેઠ કેશવલાલ ઉજમશી	૩૦૧

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ સુંદરજી	૩૫૧

મોમ્બાસા

૧ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી. મહેતા	૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ	૨૫૦

મહેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ. શીવલાલ પદમશી	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી–બેંકર્સ ૨૫૧

રતલામ

૧ અનેક ભક્તજનો તરફથી હ. શ્રીમાન કેશરીમલજી ૬૬
(શ્રી કેવળચંદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હ. ડો. નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
૨ સ્વ. પિતાશ્રી લહેરાભાઇ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હ. શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઇ વસાણી ૨૫૧

રાણાવાસ

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા. બાબુ રીખબચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ. માતુશ્રી મોંઘીબાઇના સ્મરણાર્થે
હ. શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
૨ કાળુરામજી ચાંદમલજી સંચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ ડાઇંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીત્તલીયા ૨૫૧
૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જીનીયર સાહેબ) ૨૫૧
૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમનાં ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ–પ્રસંગે ૨૫૧
૫ શેઠ પ્રભુરામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
૬ બેન સયુંબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની બ. સૌ.
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧
૯ શેઠ મોતીચંદ ધારશીભાઇ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

૧૦ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (ધ્રાંગધ્રાવાળા) ૨૫૦
૧૧ હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૨ દફ્તરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૧૩ સ્વ. મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
હેમકુંવરબાઇ તરફથી હ. જયંતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
૧૪ પારેખ શીવલાલ ઝુંઝાભાઇ મોમ્બાસાવાળા હ. અ. સૌ. કંચનબેન ૨૫૨

રાપર

૧ પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઇ ૨૫૧

રામપુરા

૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેંકર ૩૫૧

રાવટી

૧ શેઠ મીયાચંદજી જુહારમલજી કટારિયા ૩૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે ૨૫૧
હ. ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
હ. ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓધડભાઇના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
સમરતબેન તરફથી હ. જયંતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ નેમચંદ સવજી મોદી હ. ભાઇ મગનલાલ ૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ તથા જેસીંગભાઈ ૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી. લાકડીયા સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ રતનસી કરમણ ૨૫૧

લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચકુભાઇ ગુલાબચંદ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

લીંબડી (પંચમહાલ)

૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ	૨૫૧
૨ છાજેડ ધાસીરામ ગુલાબચંદ	૨૫૧
૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ	૨૫૧
૪ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ શાંતિલાલ ગુલાબચંદ	૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા	૨૫૧

લુધીયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દીલ્હીવાળા	૨૫૧

વઢવાણ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઇલાલ ઠે. શાહ સવાઈલાલ ત્રંબકલાલ	૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હ. રતીલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઇ હ. જીવણલાલ ગફલદાસ	૨૫૧
૪ શેઠ કાંતિલાલ નાગરદાસ	૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૬ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઇ	૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઇ દેવકરણ	૨૫૧
૮ વોરા ડાસાભાઈ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ	૨૫૧
હ. વોરા નાનચંદ શીવલાલ	૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઇ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ	
હા. વોરા પાનાચંદ ગોબરદાસ	૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી	૨૫૧
૧૧ સ્વ. વોરા મણીલાલ મગનલાલ હ. વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઇ	૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલનાં ધર્મપત્ની	
અ. સૌ. કમળાબેન રંગુનવાલા	૨૫૧
૧૪ શ્રી વ્રજલાલ સુખલાલ	૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર	૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૩ સ્વ. પિતાશ્રી ફકીરચંદ પુંજાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ રમણુલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

વડિયા

૧ શેઠ જીવાનભાઇ કાળાભાઇ પંચમીયા ૨૫૧

વલસાડ

૧ શાહ ખીમચંદ મુલજીભાઇ ૨૫૧

વણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની સ્વ. ચંચળબેન
તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા. મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

વટામણ

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ ડાહ્યાભાઈ હલુભાઇ ૨૫૧

વડગાંવ

૧ શેઠ માણેકચંદજી રાજમલજી બાફણા ૨૫૧

વાંકાનેર

૧ ખંઢેરીયા કાંતીલાલ ત્રંબકલાલ ૨૫૧
૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરબીવાળા
હા. પ્રાણુલાલ ચુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

વીંછીયા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. અજમેરા રાયચંદ વજપાળ ૨૫૧

વીરમગામ

૧ માસ્તર વીઠલભાઇ મોદી ૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ ૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. જૈન લીલાવતીના
વર્ષિતપ નિમિત્તે હા. શાહ કાંતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
૫ સ્વ. શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે
હા. ચુનીલાલ નાનચંદ ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૬ સ્વ. શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ ખારાઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમનાં પુત્રો તરફથી હ. ખીમચંદભાઇ ૨૫૧
૭ સ્વ. શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા. અનુભાઈ ૨૫૧
૮ સંઘવી જેચંદભાઇ નારણદાસ ૨૫૧
૯ સ્વ. શાહ વેલશીભાઇ સાકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. ચીમનલાલભાઈ ૨૫૧
૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોડીબેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઇના પુત્ર વાડીલાલભાઈનાં ધર્મપત્ની
અ. સૌ. નારંગીબેનના વર્ષિતપ નિમિત્તે હ. શાંતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૧૨ સ્વ. છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
કમળાબેન તરફથી હ. મંજુલાકુમારી ૨૫૧
૧૩ શ્રી સ્થા. જૈન શ્રાવિકા સંઘ હ. રંભાબેન વાડીલાલ ૨૫૧
હ. ડૉ. હિમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હ. શાહ નાગરદાસ ઓઘડભાઇ ૨૫૧
૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિતાંબરદાસ હ. ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ ૨૫૧
૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઇના વર્ષિતપ નિમિત્તે
હ. નથુભાઇ નાનચંદ શાહ ૭૦૧
૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૯ સ્વ. મણીયાર પરસોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે
હ. સાકરચંદ પરસોતમદાસ શાહ ૨૫૧
૨૦ સ્વ. મોહનદાસ ધુલાભાઇના સ્મરણાર્થે હ. તેમનાં ધર્મપત્ની
નાથીબાઈ તરફથી હ. શંકરલાલ તથા શાંતિલાલ ૨૫૧

વિજયનગર

૧ શ્રી વર્ધમાન શ્વે સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ
હ. છોટુમલ અજીતસિંહ ૨૫૧

વેરાવળ

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઇ ૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. શેઠ મદનજી જેચંદભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
લાડકુંવરબાઈ તરફથી હ. ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૪ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ શોભેચંદ કરશનજી ૨૫૧
૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચંદ કાનપુરવાળા ૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા. જૈન સંઘ હ. દોશી પાનાચંદ સોમચંદ ૨૫૧

સાણંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હ. શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ. સૌ. ચંપાબેન હા. દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસાભાઇ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. વાડીલાલ મોહનલાલ ઠોકારી ૨૫૧
૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા જયંતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૮ શાહ કસ્તુરચંદ હ. હરજીવનદાસ ૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાંધી ચુડાવાળા તરફથી
તેમનાં ધર્મપત્ની મંછાબેન લલ્લુભાઈના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચંદ ૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ ૨૫૧

સાલબની

૧ દોશી ચુનીલાલ લચંદ ૨૫૦

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. રંગુબાઈ મુથા તરફથી
હા. અમરચંદજી મુથા ૨૫૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સિંગાપુર

૧ [illegible]શી વનેચંદ વછરાજ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧
૩ શ્રી [illegible]પુરા છકેડી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાબુલાલ જેશંગલાલ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ અંપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. કેશવલાલ મુળજીભાઇનાં ધર્મપત્ની અમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧
૬ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ ૩૦૧

સુવઈ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદ્ગતની જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઈ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાન ભંડારને ભેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઇ
હા. એન્જીનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ ૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીસાબેન લાલચંદ મહેતા (ફતેહનગર સંઘને ભેટ) [illegible]

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ હા. પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઇ ૩૦૧
૨ સ્વ. બેન ચંદ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા. શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

હાટીના માણીવા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઇ ૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે
હા. તેમનાં નાનાબેન અ. સૌ. મંજુલાબેન ભગવાનદાસ ૨૫૧

*

તા. ૧-૧-૧૨ થી તા. ૧૫-૩-૧૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરબ્બીશ્રી

મા. ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ જૈન દિલ્હી

મુરબ્બીશ્રી

મા. ૧૦૦૧ શેઠ ત્રીકોવનદાસ જગજીવનદાસ મુંબઈ
,, ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ ચોરડીયા તથા
વિજયાકુમારી બહેન દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૧૩ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી
૩૦	મુરબ્બીશ્રી
૧૩૨	સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪	લાઇફ મેમ્બરો
૫૧	બીજા કલાસના જુના મેમ્બરો.
૮૨૧	

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનું છું.

બી. સેવક,
ઝાકરચંદ ભાઇચંદ શેઠ
મંત્રી.

કોબા તા. ૧૫-૩-૧૩

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતી

રાજકોટ.

શાસ્ત્રોની ટૂંકી માહિતી.

ગયા સત્તરમા વાર્ષિક રિપોર્ટમાં બતાવેલ ૨૧ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં પછી નીચે મુજબ વધુ કામકાજ થયેલ છે.

૧. હાલમાં ભગવતી ભાગ બીજો, સમવાયંગ સૂત્ર તથા પ્રશ્ન વ્યાકરણ એમ ત્રણ સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં છે.

૨. ભગવતી ભાગ ૩ જો બહાર પડવાની તૈયારીમાં છે.

૩. ભગવતી ભાગ ૪ થો તથા ૫ મો હાલમાં છપાય છે.

૪. જ્ઞાતા સૂત્ર ભાગ ૧ લો, ૨ જો તથા ૩ જો છપાય છે.

૫. કુલ્લે લગભગ ૩૦ સૂત્રો પૂજ્ય ગુરુદેવે લખીને પૂરાં કરેલાં છે. તેમાનાં છપાયા વગરનાં જે સૂત્રો બાકી છે તેનું અનુવાદનું તેમજ સંશોધનનું કેટલુંક કામ ચાલુ છે. અને કેટલુંક બાકી છે.

૬. નિશીથ સૂત્ર, સૂર્ય પન્નતી તથા ચંદ્ર પન્નતી સૂત્ર જે બાકી રહેલાં ત્રણ સૂત્રો લખવાનું કામ અત્યારે ચાલે છે.

આવા આગમ શાસ્ત્રોના મહદ્ કાર્યમાં જ્ઞાનદાનના શોખીનો, દાનવીરો તરફથી મદદ મોકલાવે તેમ વિનંતિ કરવામાં આવે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સમિતિને ગ્રાહક ઠરવા તથા મેમ્બર થવાના

નિયમો

૧. રૂા. ૫૦૦૧) પાંચ હજાર એક ભરનાર સદ્‌ગૃહસ્થ આદ્યમુરબ્બીશ્રી તરીકે દાખલ થઈ શકે છે. તેમના નામથી એક સૂત્ર પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે. તેમજ તેઓશ્રીનું જીવનચરિત્ર અને ફોટો શાસ્ત્રમાં છપાય છે. તેમને બબે કોપી દરેક શાસ્ત્રની મળે છે.

૨. રૂા. ૧૦૦૧) એક હજાર એક ભરનાર વ્યક્તિ મુરબ્બી તરીકે ગણાય છે. અત્યારે ફક્ત ૮૦ આવા મેમ્બરો દાખલ કરવાનો ગઈ કમીટીએ ઠરાવ કરેલ છે, પાછળથી મેમ્બરો દાખલ કરી શકાય તેમ નથી. રૂા. ૧૦૦૧) ભરનારને રૂા. ૧૨૦૦) ની કિંમત ઉપરના શાસ્ત્રો ભેટ મળે છે. માટે જેમને દાખલ થવું હોય તેમણે ઢીલ ન કરવી.

૩. ૨૫૧) વાળા તથા ૫૦૧) વાળા મેમ્બરો હવે લેવાનું બંધ છે.

૪. દાખલ થયેલા મેમ્બરોની ફીમાંથી, શાસ્ત્રો ભેટ આપતાં સમિતિને જે નુકશાની બેઠવી પડે છે તે બાબ પૂરી કરવા માટે મેમ્બરો પાસેથી તેમજ અન્ય વ્યક્તિ તરફથી પાંચ વર્ષ સુધી ભેટની રકમ મેળવવામાં આવે છે. જે રકમ ઓછામાં ઓછી રૂા. ૨૫) ની હોવી જોઈએ, અને તે રકમ પાંચ વર્ષ સુધી દર વર્ષે હપ્તાથી મોકલી શકાય છે.

રાજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩
મંગળમાસ

સાકરચંદ ભાયચંદ શેઠ
મંત્રી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवीतरागाय नमः
जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रति-विरचितया
अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

(द्वितीयो भागः)

॥ अथ शैलकाख्यं पञ्चमाध्ययनम् ॥

अभिहितं कूर्मकाख्यं चतुर्थमध्ययनं तत्रागुप्तेन्द्रियस्य नरकादिप्राप्तिः गुप्तेन्द्रियस्य तु निर्वाणादि प्राप्तिर्भवतीत्युक्तम् । इह पञ्चमाध्ययने तु-पूर्वमप्रतिसंलीनेन्द्रियोऽपि यः पश्चात् संलीनेन्द्रियो भवति स आराधको भवतीत्युच्यते, इत्येवं पूर्वेण सहास्य सम्बन्धः । जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिनं पृच्छति-'जइ णं भंते !' इ०

पाँचवाँ अध्ययन प्रारम्भ ।

कूर्मक (कच्छप) नामका चतुर्थ अध्ययन कह दिया गया है । उस में अगुप्तेन्द्रियवाले साधु साध्वी आदि के नरकादि की प्राप्ति तथा गुप्तेन्द्रियवाले साधु साध्वी आदि के लिये निर्वाण आदि की प्राप्ति होती है यह कहा गया है । अब इस पंचम अध्ययन में यह कहा जायगा की जो पहिले अप्रतिसंलीन इन्द्रियवाला (अगुप्तइन्द्रिय) होता है और बाद में फिर नही संलीनइन्द्रियवाला (गुप्तइन्द्रियवाला) बन जाता है तो वह आराधक होता है इस तरह पूर्व अध्ययन के साथ इसका संबन्ध है । जंबू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि—

—પાંચમું અધ્યયન—પ્રારંભ.—

કૂર્મક (કાચબો) નામે ચોથું અધ્યયન પુરું થઈ ગયું છે, તે અધ્યયનમાં અગુપ્તેન્દ્રિયવાળા સાધુ સાધ્વી વગેરે ને નરક વગેરેની પ્રાપ્તિ તેમજ ગુપ્તેન્દ્રિય વાળા સાધુ સાધ્વીઓને નિર્વાણ વગેરેની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ વાત કહેવામાં આવી છે. પાંચમા અધ્યયન માં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવશે કે જે પહેલાં અપ્રતિ સંલીન ઇન્દ્રિયવાળો (અગુપ્તેન્દ્રિય) હોય છે, અને ત્યારબાદ તે સંલીન ઇન્દ્રિય વાળો (ગુપ્તેન્દ્રિયવાળો) થઈ જાય છે ત્યારે તે આરાધક હોય છે, આ રીતે ચોથા અધ્યયનનો સંબંધ છે. જંબૂ સ્વામી, સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે-' जयाणं भंते ! ઇત્યાદિ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ सू० १ ॥

टीका—' जइ णं ' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्थस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=उक्तरूपः, अर्थः प्रज्ञप्तः, पञ्चमस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः इति । सर्वं सुगमम् ॥ १ ॥

श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामिनमाह—

मूलम्--एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समयेणं बारवई नामं नयरी होत्था, पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिन्ना नवजोयणवित्थिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमइनिम्मिया चामीयरपवरपागारणाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोयभूया ॥सू०२॥

टीका—' एवं खलु ' इत्यादि । ' एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन्

' जइणं भंते ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(जइणं भंते !) हे भदंत ! यदि (समणेणं भगवया महावीरेणं) श्रमण भगवान महावीर ने (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते) चतुर्थ ज्ञाताध्ययन का यह उक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त (प्ररूपित) किया है तो—(पंचमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते) पंचम ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? " १ "

' एवं खलु जंबू ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एवं खलु जंबू) हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार

ટીકાર્થ–(जइणं भंते !) હે ભદન્ત ! જો (समणेणं भगवया महावीरेणं) શ્રમણભગવાન મહાવીરે (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते) ચોથાજ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે, ત્યારે (पंचमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते) પાંચમા અધ્યયનનો શો અર્થ બતાવ્યો છે ? ।. "सू.१"॥

एवं खलु जंबू, ? इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આપ્રમાણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समये 'बारवई' द्वारावतीनाम द्वारकाऽपरनाम्नी नगर्यासीत्, सा कीदृशी इत्याह-'पाईणपडीणायया' प्राची प्रतीच्यायता प्राचीतः प्रतीच्यामायता पूर्वस्या दिशः समारभ्य पश्चिमायां दिशि दीर्घेत्यर्थः। 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' उदग-दक्षिणविस्तीर्णा उत्तरस्यां दिशः समारभ्य दक्षिणस्यां दिशि विस्तीर्णा, 'नवजोयणवित्थिन्ना' नवयोजनविस्तीर्णा, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजनायामा=द्वादशयोजनदीर्घा, 'धणवइमइनिम्मिया' धनपतिमतिनिर्मिता धनपतिः=कुबेरस्तस्य मत्या=बुद्ध्या निर्मिता, 'चामीयर-पवर-पागार-णाणामणि-पंचवन्न-कवि-सीसग-सोहिया' चामीकरप्रवरप्राकारनानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षक शोभिता,चामीकरस्य प्रवरः प्राकारस्तस्य यानि नानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षकानि तैः शोभिता, सुवर्णमयप्रकृष्टप्राकारस्य यानि चन्द्रकान्तादिविविधमणिमयानि पञ्चवर्णानि कपिशीर्षकाणि 'कंगुरा' इति भाषाप्रसिद्धानि, तैः शोभिता 'अलयापुरि-

है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईनामं नयरी होत्था) उस समय और उस काल में द्वारावती नामकी नगरी थी (पाईण परीणायया) यह नगरी पूर्व दिशासे पश्चिम दिशा तक लंबी थी और (उदीणदाहिण वित्थिन्ना) उत्तरदिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक विस्तर्ण थी। (नवजोयणवित्थिन्ना) नौ योजन का इसका विस्तार था (दुवालसजोयणायामा) १२ बारह योजन की यह लंबी थी। (धणवइमइ निम्मिया) धनपति— कुबेर ने इसे अपनी बुद्धि से बनाया था (चामीयर पवर पागारणाणामणि पंचवन्न कविसीसग सोहिया) इसका जो प्राकार (दिवार) था वह सुवर्ण से निर्मित हुआ था। तथा इसके जो कंगूरे थे वे पंचवर्णवाले नाना मणियों से बनाये गये थे। अतः प्राकार और उसके कंगूरों से यह नगरी बड़ी सुहावनी लगती थी। (अलयापुरी संकासा)

છે, (तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था) તે કાળે અને તે સમયે દ્વારાવતી નામે નગરી હતી. (पाईण परीणायया) આ નગરી પૂર્વથી માંડીને પશ્ચિમ દિશા સુધી લાંબી અને (उदीण दाहिण वित्थिन्ना) ઉત્તર દિશાથી માંડીને દક્ષિણ દિશા સુધી પહોળી હતી. (नव जोयणवित्थिन्ना) નવ યોજન સુધી તે નગરીનો વિસ્તાર હતો. (दुवालसजोयणायामा) બાર યોજન લગી તે લાંબી હતી. (धणवइमइनिम्मिया) ધનપતિ-કુબેરે આ નગરી ને પોતાની બુદ્ધિથી બનાવી હતી (चामीयरपवरपागार - णाणामणि - पंचवन्नकविसीसगसोहिया) તે શહેરનો કોટ (પ્રાકાર) સોનાથી બનાવવામાં આવેલો હતો. તેના કાંગરાઓ પાંચ રંગના અનેક મણિઓ વડે બનાવવામાં આવ્યા હતા. કોટ અને કાંગરાઓથી તે નગરી શોભતી હતી. (अलयापुरीसंकासा) અલકાપુરી (કુબેરનગરી)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकासा ' अलकापुरीसंकाशा = कुबेरनगरीसदृशी ' पमुइयपक्कीलिया ' प्रमुदित-प्रक्रीडिता ' पमुइय ' प्रमुदिताः=प्रमोदयुक्ताः, ' पक्कीलिया ' प्रक्रीडिताः विविध-क्रीडनपराः लोका यत्र सा, पच्चक्खं देवलोयभूया ' प्रत्यक्षं देवलोकभूता प्रत्यक्षी-भूतदेवलोकवत् प्रतीयमानेत्यर्थः ॥ २ ॥

मूलम्–तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए हंसमिगमयूर-कोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए अणेगतडकडग-वियरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारण-विज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने निच्छच्चणए दसारवरवीरतेल्लोक्कबल-वगाणं, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए ॥ सू०३॥

टीका—' तीसे णं ' इत्यादि । तस्याः खलु द्वारावत्या नगर्या बहिरुत्तर-पौरस्त्ये दिग्भागे 'रेवतगे' रैवतको नाम ' पव्वए ' पर्वतः ' होत्था ' आसीत्, स

अलकापुरी (कुबेर की नगरी जैसी सुन्दर होती है ठीक वैसी ही यह भी सुन्दर थी (पमुइयपक्कीलिया) इस में निवास करनेवाले जन सदा हर्षित रहते थे और विविध प्रकार की क्रीड़ाओ में तत्पर रहते थे (पच्चक्खं देवलोयभूया) इसलिये प्रत्यक्ष में यह नगरी देवलोक के समान प्रतीत होती थी । सूत्र " २ "

' तीसेणं बारवईए ' इत्यादि

टीकार्थ–(तीसेणं बारवईए नयरीए बहिया) उस द्वारावती नगरी के बाहिर (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था) उत्तर

જેવી સુંદર હોય છે તેવી જ તે નગરી પણ સુંદર હતી. (पमुइयपक्कीलिया) તેમાં રહેનારા નાગરિકો હમેશાં પ્રસન્ન રહેતા હતા, અને જાત જાતની રમતો (ક્રીડાઓ) માં વ્યસ્ત રહેતા હતા. (पच्चक्खं देवलोयभूया) તેથી આ નગરી પ્રત્યક્ષ દેવલોક જેવી લાગતી હતી. ॥ સૂત્ર "૨" ॥

' तीसे णं बारवईए ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया) તે દ્વારવતી નગરીની બહાર (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगनामपव्वए होत्था) ઉત्तर પૂર્વ દિશામાં એટલે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, 'गगणतलमणुलिहंतसिहरे' गगनतलमनुलिहच्छिखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्गं यस्येत्यर्थः 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए' नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगतः=नानाविधागुच्छादयः परिगताः=सर्वतः समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतावल्लीशब्दाः पूर्वं व्याख्याताः, 'हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए' हंसमृगमयूरक्रोञ्चसारसचक्रवाकमदनसालकोकिलकुलोपपेतः हंसादि-कोकिलान्तानां कुलैः वृन्दैः उपपेतः=युक्तः। अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेषः, अन्ये प्रसिद्धाः। 'अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे' अनेकतटकटक विवरोज्झरकप्रपातप्राग्भारशिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च, उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधारस्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

---

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था (तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था। इस की चोटी आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए) नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से. लताओं से और वल्लियों से यह सर्व प्रकार से युक्त था। इन गुच्छादि शब्दो का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है। (हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइल्ल कुलोववेए) हंस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मैना और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था। (अणेग तडक डगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कटकों (मेखला) से, अनेक कंदराओं से, अनेक उज्झरको से, निर्झरनों से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

કે ઈશાન કોણમાં રૈવતક નામે પર્વત હતો. (तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे) તે બહુજ ઉંચો હતો. તેના શિખરો આકાશને સ્પર્શતા હતા. (णाणाविहगुच्छ गुम्मलयावल्लिपरिगए) અનેક જાતના ગુચ્છો, ગુલ્મો, લતાઓ અને વલ્લીઓ થી તે ઢંકાએલો હતો. ગુચ્છ વગેરે શબ્દોના અર્થો પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યાં છે. (हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए) હંસ, હરણ, મોર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક મેના અને કોયલોના સમૂહોથી તે યુક્ત હતો. (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) અનેક તટો મેખલાઓ (કટકો) અનેક કંદરાઓ, અનેક ઉજ્ઝરકો-(ઝરણાઓ) પર્વતો ઉપરથી નીચે વહેતા પાણીના પ્રવાહો, અનેક પ્રપાતો-તટ વગરના નિરાધાર સ્થાનો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः। ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-संविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसंघ-चारण-विद्याधरमिथुन-संविचीर्णः-अप्सरसां गणाश्च, देवसंघाश्च, चारणाः गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषाः, विद्याधराणां मिथुनानि च तैः संविचीर्णः=आसेवितः, ' निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं ' नित्य क्षणकः दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषाः ते चामी-त्रैलोक्यादपि बलवन्तः, अतुलबल-नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषां - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषां सर्वे उत्सवा स्तत्र भवन्तीति भावः। दशदशार्हाणां नामानि यथा-

" समुद्दविजयो[1] अक्खोभो[2] थिमिओ[3] सागरो[4] हिमवं[5]।
अयलो[6] धरणो[7] पूरणो[8] अभिचंदो[9] वसुदेवो[10]त्ति " ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे। (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने) अप्सराओं के गणों से, देवसंघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से यह सदा सेवित रहता था। (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाणं) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था। उन के समस्त उत्सव यहीं होते रहते थे। दश दशार्हों के नाम इस प्रकार हैं— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

અથવા ગતો. થોડા આગળના ભાગથી નમતા અનેક પર્વત ભાગો તેમજ ઘણાં શિખરોથી તે પ્રચુરરૂપથી યુક્ત હતો. એટલે કે તટ, કટક વગેરે તે પર્વતમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતા. (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने) અપ્સરાઓના ગણોથી, દેવસંઘોથી ગગન માર્ગે ગમન કરતા મુનિ વિશેષોથી, અને વિદ્યાધરોના યુગલોથી તે પર્વત સદા સેવિત રહેતો હતો. (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाणं) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોમાં ઉત્તમ ધીર વીર પુરુષોનો-કે જેઓ અતુલ બળશાળી નેમિનાથથી યુક્ત હોવાને કારણે ત્રણે લોકથી બળવાન હતા-આ નિત્યોત્સવ માટેનું સ્થાન હતું તેમના બધા ઉત્સવો અહીં જ થતા હતા દશ દશાર્હોના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ સમુદ્રવિજય, ૨ અક્ષોભ ૩ સ્તિમિત, ૪ સાગર, ૫ હિમવાન, ૬ અચલ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुनरसौ पर्वतः ? कीदृशः ? इत्याह—' सोम्मे ' सौम्यः=मनोहरः, सुभगः=आनन्दजनकः प्रियदर्शनः=दृष्टिसुखदः, सुरूपः=शोभनाकृतिकः, प्रासादीयः—अत्र—प्रासादीय इत्यनन्तरं दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूप इति त्रयाणां पदानां संग्रहः प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=नयनानन्दजनकत्वेन पुनः पुनः प्रेक्षणीयः अभिरूपः=सुन्दराकृतिकः । यद्वा—अभि=प्रतिक्षणं नवं नवमिवरूपं यस्य सोऽभिरूपः । प्रतिरूपः—प्रतिविशिष्टम् असाधारणं रूपं यस्य स प्रतिरूपः, उत्कृष्टरूपवानित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ ॥ सू०४ ॥

५, हिमवान ६ अचल, ७ धरण, ८ पूरण ९, अभिचंद, १० वसुदेव ! (सोम्मे) यह पर्वत बड़ा मनोहर था (सुभगे, पियदंसणे, सुरूवे, पासाईए) सुभग था—आनन्दजनक था, प्रिय दर्शन था दृष्टि को सुखप्रद था, सुरूप था—शोभन आकृति से संपन्न था, प्रासादीय था, दर्शनीय था, अभिरूप था प्रतिरूप था । दर्शकजन के मन को मोदित करनेवाला होने से प्रासादीय, नयनों को आनन्दजनक होने से दर्शनीय, सुन्दर आकृतिवाला होने से अभिरूप अथवा इसको रूप हर एक क्षण में नवीन नवीन जैसा प्रतीत होता था इसलिये अभिरूप और असाधारणरूप संपन्न होने के कारण प्रतिरूप था । सूत्र " ३—"

૭ ધારણ, ૮ પૂરણ, અભિચંદ, ૧૦ વસુદેવ, (सोम्मे) આ પર્વત અત્યંત રમણીય હતો. (सुभगे, पियदंसणे, सुरूवे, पासाइए) સુભગ હતો, પ્રિયદર્શી હતો. એટલે કે આંખોને ગમે એવો હતો સુરૂપ હતો, પ્રાસાદીય હતો, દર્શનીય હતો અભિરૂપ હતો, પ્રતિરૂપ હતો. જોનારાઓના મનને પ્રસન્ન કરનાર હોવાથી પ્રાસાદીય, આંખોને આનન્દ આપનાર હોવાથી દર્શનીય, સુંદર આકારવાળો હોવાથી અભિરૂપ અથવા તો તેનું રૂપ દરેક ક્ષણે નવું નવું લાગતું હતું તેથી તે અભિરૂપ હતો, અસાધારણ રૂપ સંપન્ન હોવાને કારણે તે પ્રતિ રૂપ હતો. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—' तस्स णं ' इत्यादि । तस्य खलु रैवतकस्य अदूरसामंते अत्र खलु नन्दनवनं नामोद्यानमासीत् तत् कीदृशमित्याह–'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे ' सर्वर्तु-कपुष्पफलसमृद्धम् सर्वेषाम् ऋतूनां पुष्पैः फलैश्च समृद्धं = समन्वितम् , ' रम्मे ' रम्यं=रमणीयं ' नंदनवनप्रकाशं' नन्दनवनतुल्यम् , प्रासादीयम् ४, तस्य खलूद्या-नस्य ' बहुमज्झदेसभाए ' बहुमध्यदेशभागे ' सुरप्पिए नामं ' सुरप्रियं नामं, ' जक्खाययणे ' यक्षायतनम् ' होत्था ' आसीत् तत् कीदृशमित्याह—' दिव्वे ' दिव्यं=रम्यं, वर्णकः=वर्णनग्रन्थोऽन्यत्राभिहितः । अन्यत् सुगमम् ॥ सू० ४ ॥

मूलम्–तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे

' तस्सणं रेवयगस्स '–इत्यादि ।

टीकार्थ–(तस्स णं रेवयगस्स) उस रैवतक पर्वतके (अदूरसामंते) न बहुत दूर और न पास किन्तु उचित स्थान पर (एत्थणं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था) यहाँ एक नंदन वन नाम का उद्यान था (सव्वो उय पुप्फफलसमिद्धे) यह समस्त ऋतुओं संबन्धी पुष्पों और फलों से समृद्ध रहता था । (रम्मे णंदणवणप्पगासे) नंदनवन के जैसा था । (पासाइए ४) दर्शक जन के मन को प्रमोदित करने वाला था । सुभग प्रियदर्शन आदि और भी विशेषण इसमें लगा लेना चाहिये यही बात " पासाईए " के साथ रहे हुए यह ४ पद सूचित करता है । (तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ) उस उद्यान के ठीक बीचो बीच के स्थान में सुरप्रिय नाम का यक्षायतन था । यह दिव्य था । इसका और वर्णन दूसरी जगह किया हुआ है । सूत्र " ४ "

(तस्सणं रेवयगस्स) इत्यादि ।

टीकार्थ–(तस्स णं रेवयगस्स) રૈવતક પર્વતથી (अदूर सामंते) અત્યંત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (एत्थणं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था) ત્યાં ' નંદનવન' નામે એક ઉદ્યાન હતું; (सव्वोउय पुप्फफलसमिद्धे) તે બધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (रम्मे णंदण-वणप्पगासे) નંદનવન જેવું હતું. (पासाइए) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરનાર હતું. (पासाइए ४) પદની આગળ ચાર નો આંકડો મૂકયો છે તે એમ સૂચવે છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા જોઇએ. (तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणं होत्था दिव्वे वन्नओ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનું આયતન હતું. તે દિવ્ય હતું. તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂ. "૪" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुइंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं इसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढ गिरिसायरपेरंतस्स दाहिणड्ढभरहस्स य बारवईए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू०-५॥

टीका—' तत्थ णं ' इत्यादि । तत्र तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ' कण्हे नामं ' कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिखण्डाधिपतिः परिवसति । स खलु तत्र ' समुद्दविजयपामोक्खाणं ' समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां ' दसाराणं ' दशार्हाणां बलदेवप्रमुखानां ' पंचण्हं ' पञ्चानां महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखानां षोडशानां

' तत्थ णं बारवईए नयरीए ' इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ णं बारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खंड के अधिपति राजा रहते थे (से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं) वे वहां समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाणं

' तत्थणं बारवईए नयरीए ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(तत्थणं बारवईए नयरीए) તે દ્વારાવતી નગરીમાં (कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ) કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે ત્રણે ખંડના અધિપતિ રાજા રહેતા હતા. (से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं) ત્યાં સમુદ્ર વિજય વગેરે દશાર્હોનો (बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं) બળ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजसहस्राणां=षोडशसहस्रप्रमितानां राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां कुमारकोटीनां=सार्धत्रिकोटिसंख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां षष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणां=षष्टिसहस्रसंख्यकानां शाम्बादीनां दुर्दान्तानाम् । वीरसेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणां=एकविंशतिसहस्रप्रमाणानां वीरसेनादीनां वीराणाम् । महासेनप्रमुखानां षट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणां=षट्पञ्चाशत् सहस्रप्रमितानां महासेनादीनां बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखानां द्वात्रिंशतो महिलासाहस्रीणां=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेनाप्रमुखानामनेकासां गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसंख्यासमितानां गणिकानाम् अन्येषां च बहूनां राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां, यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां वैताढ्यगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्यं यावत् – अत्र यावच्छब्दा-

---

पंचण्हं महावीराणं) બલદેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોંકા ઉગ્રસેન પ્રમુખ ૧૬ સોલહ હજાર રાજાઓં કા પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ ૩॥, સાઢે તીન કરોડ યાદવ કુમારોં કા (संब पामोक्खाणं सट्ठीए दुदंत साहस्सीणं) ૬૦સાઠ હજાર દુર્દાન્ત શામ્બ આદિકોં કા (वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं) ૨૧ઇક્કીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોંકા (महासेना पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवग साहस्सीणं) ૫૬છપ્પન હજાર બલિષ્ઠ મહાસેન આદિકોં કા (रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिला साहस्सीणं) ૩૨ બત્તીસ હજાર રુક્મિણી પ્રમુખ મહિલાઓં કા (अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणिया साहस्सीणं) અનંગસેના પ્રમુખ અનેક હજાર ગણિકાઓં કા નિવાસ થા । (अन्नेसिंच बहूणं इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणंवेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स य बारवइए नयरीए

દેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોનો, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓનો, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોનો (संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुदंतसाहस्सीणं) સાઠિ હજાર દુર્દાન્તસાંબ વગેરે નો (वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं) એકવીશ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોનો (महासेन पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवग साहस्सीणं) છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેનો (रुप्पिणी पामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं) બત્રીસ હજાર રુકિમણી પ્રમુખ મહિલાઓનો (अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासहास्सीणं) અને અનંગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓનો નિવાસ હતો. (अन्नेसिंच, बहूणं इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढ भरहस्स य बारवइए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दयं पाठोऽनुसन्धेयः-' पोरेवच्चं ' पालयन् विहरति = आस्तेस्म । पौरपत्यं पुरवासिनामग्रेसरत्वं, ' सामित्तं ' स्वामित्वं, ' भत्तित्तं ' भर्तृत्वं, महत्तरगत्तं ' महत्तरकत्वं, 'आणाईसरसेणावच्चं' आज्ञेश्वर सैनापत्यं 'करेमाणे' कुर्वन् इति ॥५॥

मूलम्-तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा णामं गाहावइणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, तीसेणं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तएणं सा थावच्चागाहावइणी तं दारयं सातिरेगअट्ठवासजाययं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेह्णावेइ बत्तीसओ दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूववन्ने गंधे जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ ६॥

टीका—' तत्थणं इत्यादि । तत्र=तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ' थावच्चा-

आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ) अन्य और भी अनेक राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठीसेनापतियों का यावत् सार्थवाह आदिकों का, वैताढय गिरिएवं सागर पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत का तथा द्वारका नगरी का आधिपत्य, पौरपत्य, स्वमित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व, आज्ञेश्वर सेनापत्य करते हुए रहते थे अर्थात् द्वारका नगरीमें कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे । सूत्र " ५ "

'तत्थ बारवईए नयरीए ' इत्यादि ।

टीका-(तत्थणं बारवईए नयरीए) उस द्वारका नगरी में (थावच्चा-

नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणं विहरइ) અને બીજા પણ ઘણા રાજેશ્વરો, तलवरो, भांडलिको, कौटुंबिको श्रेष्ठी सेनापतिओ सार्थवाह वगेरे उपर वैताढय गिरि अने समुद्र सुधीना दक्षिण भारतनुं, नगरीनुं आधिपत्य पौरपत्य, भर्तृत्व महत्तरकत्व आज्ञेश्वर सेनापतित्व करता रहेतां हता. એટલેકે દ્વારકા नगरीमां कृष्ण वासुदेव राज्य करता हता. ॥ सूत्र ५ ॥

(तत्थणं बारवईए नयरीए इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थणं बारवईए नयरीए) ते द्वारका नगरीमां (थावच्चा णामं गाहा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णामं ' स्थापत्या नाम ' गाहावइणी ' गाथापत्नी परिवसति । सा कीदृशीत्याह– आढ्या=धनधान्यादि परिपूर्णा, यावत् अपरिभूता=अन्यैः पराभवितुमशक्या, तस्याः खलु स्थापत्यायाः गाथापत्न्याः पुत्रः ' थावच्चापुत्ते णामं ' स्थापत्यापुत्रो नाम सार्थवाहदारकोऽभूत् । स कीदृश इत्याह–सुकुमारपाणिपादः यावत् सुरूपः अत्र यावच्छब्दकरणादयंपाठोऽनुसन्धेयः—' अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, लक्खण वंजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे, ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे इति एतानि पदानि प्रागेव व्याख्यातानि ततः खलु सा स्थापत्या गाथापत्नी तं दारकं ' सातिरेगअट्ठवासजायगं ' सातिरेकाष्टवर्ष-

णामं गाहावइणी परिवसइ) स्थापत्य नामकी गाथा पत्नी रहती थी। (अड्ढाजाव अपरिभूया) यह धन धान्य आदि से परिपूर्ण यावत् अपरिभूत अन्य व्यक्तियों द्वारा परीभवित अशक्य थी। (तीसेणं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चा पुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था) उस स्थापत्य गाथापत्नी का पुत्र था जिस का नाम स्थापत्य पुत्र था। वह सार्थवाहदारक कहलाता था। (सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे) इसके हाथपैर सुकुमार थे। यावत् यह अच्छे रूपवाले थे। यहां यावत् शब्द से " अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, लक्खणवंजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाण पडिपुण्णसुजायसव्वंग सुंदरंगे ससि सोमाकारे कंते, पियदंसणे " इस पाठ का संग्रह हुआ है। इनपदों का अर्थ इहिले कहा जा चुका है (तएणं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारयं सातिरेग अट्ठवासजायगं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि)

वइणी परिवसइ) સ્થાપત્ય નામે એક ગાથાપત્ની રહેતી હતી. (अड्ढाजावअपरिभूया) તે ધનધાન્ય વગેરેથી પરિપૂર્ણ તેમજ બીજી કોઈ વ્યક્તિથી પરાભૂત ન થાય એવી હતી. (तीसेणं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था) સ્થાપત્ય ગાથાપત્નીને એક પુત્ર હતો તેનું નામ સ્થાપત્ય પુત્ર હતું. તે સાર્થવાહ દારક નામે પણ પંકાયેલો હતો. (सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे) તેના હાથ પગ સુકુમાર હતા તે રૂપાળો હતો, અહીં (यावत्) શબ્દથી (अहिणपडिपुण्ण) पंचिन्द्रिय सरीरे लक्खणवंजणगुणोववेए माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंग सुंदरंगे ससिसोमाकारेकंतेपियदंसणे) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ સર્વનો અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. (तएणं सा थावच्चागाहावइणी तं दारयं सातिरेग अट्ठवासजायगं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि) સ્થાપત્ય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातकं किंचिदधिकाष्टवर्षजातं ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते 'कलायरियस्स' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वाः कलाः शिक्षयति मेघकुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशयः। भोगसमर्थं यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्नं ज्ञात्वा द्वात्रिंशता 'इब्भकुलबालियाणं' इभ्यकुलबालिकानाम् महाधनाढ्यसार्थवाहानां द्वात्रिंशत्संख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहणं कारयति। द्वात्रिंशद्दायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्यः द्वात्रिंशत् सुवर्णकोटयः इत्यादिरूपो मेघकुमारवद्दायोऽवगन्तव्यः। यावत् तदनन्तरं स्थापत्यापुत्रः द्वात्रिंशता इभ्यकुलबालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्शरसरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जानः अनुभवन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एवं मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२बहत्तर कलाओं को सीखलिया। यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद में उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित संस्कार एकही दिनमें ३२ महाधनाढय सार्थवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया। (बत्तीसं ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगंधे जाव भुंजमाणे विहरइ) ३२बत्तीस हिरण्य कोटि३२ बत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला। इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इभ्यकुल बालिकाओं के साथ

ગાથા પત્નીએ પોતાના પુત્રને આઠવર્ષ થી થોડો મોટો થયેલો જાણીને શુભ તિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર અને મુહૂર્ત્તમાં (कलायरियस्स) કલાચાર્યની પાસે (उवणेइ) મોકલ્યો. (जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ) મેઘકુમારની જેમ તે સ્થાપત્ય પુત્રે પણ બોંતેર કલાઓ શીખીલીધી. જ્યારે તે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈને વિષયોપભોગને લાયક થયો ત્યારે ગાથાપત્નીએ એકજ દિવસમાં તેનું લગ્ન બત્રીસ મહાધનાઢય સાર્થવાહોની કન્યાઓની સાથે કરાવડાવ્યું (बत्तीसं ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगंधे जाव भुंजमाणे विहरइ) બત્રીસ હિરણ્ય કોટિ, બત્રીસ સુવર્ણ કોટિ વગેરે દહેજ મેઘકુમારની જેમજ તેને પણ મળી. ત્યાર પછી સ્થાપત્ય પુત્ર બત્રીસ ઇભ્યકુળ બાળાઓની

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संयमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ परिसा निग्गया धम्मो कहिओ ॥ ७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमिर्द्वाविंशतितमस्तीर्थंकरः समवसृत इति भावः, स एव वर्णकः = अन्यतीर्थकराणां यो वर्णकः ' आइगरे तित्थगरे ' इत्यादि रूपः कथितः स एवारिष्टनेमिभगवतोऽपि वर्णको बोध्य इत्यर्थः, नवरं–' दसधणुस्सेहे ' दशधनुरुत्सेधः=दश-

---

विपुल शब्द रूप गंधरस और स्पर्श पांचों इन्द्रियों के विषयों को यावत् भोगते हुए अपना समय आनन्द के साथ व्यतीत करदिया ॥सूत्र "६"

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (अरिहा अरिट्ठनेमी) उस द्वारावती नगरी में बावीसवें तीर्थंकर अर्हंत नेमीनाथ भगवान् आये (सो चेव वण्णओ) अन्यतीर्थंकरों का जैसा "आइगरे तित्थगरे" इत्यादिरूप से वर्णन किया गया है उसी प्रकार का वर्णन

સાથે પુષ્કળ શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ વર્ણ અને ગંધ રૂપ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયો ને ભોગવતાં પોતાનો વખત સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો. ॥ સૂત્ર "૬" ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (अरिहा अरिट्ठनेमी તે દ્વારકા નગરીમાં બાવીસમાં તીર્થંકર અર્હંત નેમીનાથ ભગવાન પધાર્યા (सो चेव वण्णओ) "आइगरे तित्थगरे" ના રૂપમાં જેમ બીજા તીર્થંકરોનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અરિષ્ટનેમિ પ્રભુનું વર્ણન પણ જાણી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनुः परिमित उत्सेध उच्छ्रायो यस्य सः, पुनः कथं भूतोऽसावित्याह-'नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे' नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशः नीलोत्पलं = नीलकमलं, गवलं=माहिषं शृङ्गं, गुलिका=नीली, यद्वा-गवलगुलिका =माहिषशृङ्गस्य स्वग्भागेऽपसारिते सति तदन्तरालवर्तिनी गुलिका 'अतसी' अलसी नाम्नाप्रसिद्धो धान्यविशेषस्तस्य कुसुमं=पुष्पं, तेषां प्रकाश इव प्रकाशो वर्णो यस्य स तथा, अष्टादशभिः श्रमणसाहस्रीभिः अष्टादशसहस्रपरिमितैः श्रमणैः मुनिभिः सार्धं संपरिवृतः चत्वारिंशता आर्यिकासाहस्रीभिः=चत्वारिंशत्सहस्रपरिमिताभिरार्यिकाभिः साध्वीभिः सार्धं संपरिवृतः, पूर्वानुपूर्वीं=पूर्व्यानुपूर्व्या तीर्थंकरपरंपरया चरन्=विहरन् यावत् यत्रैव द्वारावती नगरी वर्तते यत्रैव रैवतकपर्वतः यत्रैव नन्दनवनं नामोद्यानमस्ति, यत्रैव सुरप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतनं, यत्रैव,

---

इन अरिष्टनेमि प्रभुका भी जानना चाहिये। परन्तु उनके वर्णन की अपेक्षा इनके वर्णन में इतनी विशेषता है कि ये (दसधणुस्सेहे, नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे) इनके शरीर की ऊँचाई दश धनुष की थी। शरीर का वर्ण नीलकमल के गवल-माहिष के शृंग के अन्दरभाग जैसा गुलिका-नील के जैसा अथवा गवल गुलिका-स्वग्भाग के दूर करने पर तदन्तरालवर्तिनी महिष शृंग की गुलिका के-अलसी के पुष्प के वर्ण के समान था। (अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) ये अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु १८अढारह हजार श्रमणों के साथ और ४०चालीस हजार आर्यिकाओं के साथ २ पुर्वानुपूर्वी से-तीर्थंकर

લેવું જોઇએ. ફક્ત અરિષ્ટનેમિ ભગવાન ની વિષે આટલું વિશેષ સમજવું જોઇએ કે-(दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसि कुसुमप्पगासे :) તેમનું શરીર દશ ધનુષ જેટલું ઊંચું હતું. તેમના શરીરનો રંગ નીલ કમળ ગવલમહિષના શીંગડાના મધ્યભાગ જેવો, ગુલિકા-નીલ જેવો, અથવાતો ગવલ ગુલિકા-ઉપર ની ચામડીને ઉપાડી લીધાપછી તેની અંદરના મહિષના શીંગડાની ગુલિકા અને અલસીના પુષ્પના રંગ જેવો હતો. (अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुविं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ અઢાર હજાર શ્રમણોની સાથે અને ચાલીસ હજાર આર્યિકા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अशोकवरपादपः=अशोकनामा महावृक्षः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' अहापडिरूवं ' यथाप्रतिरूपं=मुनिजनकल्पानुसारम् अवग्रहं=स्थित्यर्थं वसतेराज्ञां अवगृह्य =गृहीत्वा संयमेन तपसा चात्मानं भावयन् वासयन् विहरति=आस्तेस्म । तदा वनपालकः समागत्य कृष्णाय वासुदेवाय वर्धापनिका प्रदत्ता । परिषन्निर्गता= द्वारावती नगरी निवासिनां जनानां परिषत् समूहः निर्गता अरिष्टनेमिर्भगवन् समागत इति श्रुत्वा तं वन्दितुं द्वारावतीनगरीतो निःसृतेत्यर्थः । सा परिषद् भगवन्तं वन्दित्वा धर्मं श्रोतुं भगवतः पुरोऽवस्थिता धर्मः कथितः अरिष्टनेमिना भगवता धर्मकथा कथिता ॥ सू-७ ॥

परंपरा के अनुसार-विहार करते हुए यावत् जहां वह द्वारावती नगरी थी उसमें जहां रैवतक पर्वत था-नंदवन नामका उद्यान था। उसमें भी जहां सुरप्रिययक्ष का यक्षायतन था और उस में भी जहां अशोक का उत्तम वृक्ष था, वहां पधारे (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) आकर के उन्हों ने मुनिजन के कल्पानुसार वनपाल से वसति की आज्ञा प्राप्त की-और प्राप्त कर वे वहां तप और संयम से आत्मा को भावित करते हुए विराजमान हो गये उस समय वनपालकने आकर के कृष्ण वासुदेवको वधाई दी।(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ) द्वारावतीनगरी के समस्त जनों का समूह-(अरिष्टनेमि भगवान आये हुए है) ऐसा सुनकर उनको वंदना करने के लिये द्वारावती नगरी से निकले।

એની સાથે પૂર્વાનુ પૂર્વીથી-એટલે કે તીર્થંકર પરંપરા ને અનુસરતાં વિહાર કરતાં જ્યાં તે દ્વારવતી નગરી હતી, જ્યાં રૈવતક પર્વત હતો, જ્યાં નંદનવન નામે ઉદ્યાન હતું, અને તેમાં જ્યાં સુરપ્રિય યક્ષનું યક્ષાયતન હતું અને તેમાં પણ જ્યાં અશોકનું શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું ત્યાં પધાર્યા. (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) ત્યાં પધારીને મુનિ જનોચિત પ્રણાલિકા મુજબ વનપાલક પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને આજ્ઞા મેળવીને ત્યાં તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં વિરાજ્યા. તે વખતે વનપાલકે કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે જઈને તેમને શુભ સમાચારો આપ્યા (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ) દ્વારાવતી નગરીના બધા નાગરીકોએ "અરિષ્ટનેમિ ભગવાન અત્રે પધાર્યા છે" એવું સાંભળીને તેમની વંદના કરવામાટે નગરીની બહાર નીકળ્યા. બધા નાગરિકો ભગવાનને વંદન કરીને ધર્મકથા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुदीयं भेरिं तालेह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु-एवं सामी ! तहत्ति जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदियं भेरिं तालेंति । तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारएइणं बलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ॥सू०८॥

टीका–'तएणं' इत्यादि। ततः=तदनन्तरं, खलु स कृष्णो वासुदेवोऽनया भगवानरिष्टनेमिः समागत इत्येवं रूपया कथया = वनपालकथितया कथया 'लद्धट्ठे' लब्धार्थः लब्धः=प्राप्तः, भगवदागमनरूपोऽर्थो येन स तथा, सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवा-

---

भगवान को वंदना कर वे सब धर्म सुनने की अभिलाषा से भगवान के सामने बैठ गये। प्रभुने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। "सूत्र "७"

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे) वनपाल के मुख से अरिष्ट नेमि प्रभुका आगमन रूप अर्थ विदित कर (कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक

સાંભળવાની ઇચ્છાથી તેમની સામે બેસી ગયા. પ્રભુએ પણ તેમને ઉપદેશ આપ્યો. ॥ સૂત્ર "૭" ॥

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि. ॥

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યાર બાદ (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણ વાસુદેવે (इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे) વનપાલકના મોંથી અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પધરામણીની વાત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीत्- भो देवानुप्रियाः ' खिप्पामेव ' क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव सुधर्मायां सभायांगत्वा ' मेघोघरसियं ' मेघौघरसितां=मेघौघानां मेघसमूहानां रसितमिव रसितं ध्वनिरिव ध्वनिर्यस्यारतां गम्भीरां=सान्द्रां ' महुरसद्दं ' मधुरशब्दां ' कोमुइयं ' कौमुदिकां उत्सवसूचनासमये वादनीया कौमुदिका नाम्नी श्रीकृष्णवासुदेवस्य भेरी तां, भेरिं= दुन्दुभिं 'तालेह' ताडयत=वादयत। ततः=तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टाः यावत् हर्षवशविसर्पद् हृदया मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ' एवं स्वामिन् तथेति ' यावत् ' हे स्वामिन् एवमेव तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। प्रतिश्रुत्य आज्ञां स्वीकृत्य कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिकात्=समीपात् ' पडिनिक्खमंति ' प्रतिनिष्क्रामन्ति=निःसरन्ति। प्रति-

पुरूषोंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा- (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया सभाए सुहम्माए) भो देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्र ही सुधर्मा नाम की सभा मे जाकर (मेघोघरंसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुदीयं भेरिं तालेह) मेघोके समूह जैसी सान्द्र मधुर शब्दवाली कौमुदिक नामकी भेरी को कि जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती है बजाओ। (तएणं ते कौडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति जाव पडिसुणेंति) कृष्णवासुदेव की इस प्रकार आज्ञा सुनकर वे कौटुम्बिक पुरूष अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हूए और मस्तक पर अंजलि रखकर हे स्वभिन्! जैसी आपकी आज्ञा है हम वैसा ही करेंगे ऐसा कहकर उन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली (पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति) आज्ञा स्वीकार कर

સાંભળીને (कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમણે કહ્યું-(खिप्पमेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए) હે દેવાનુપ્રિયો! સત્વરે તમે સુધર્મા નામની સભામાં જઈને (मेघोघ रंसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुदीयं भेरिं तालेह) મેઘસમૂહના ગર્જન જેવી સાન્દ્ર મધુર શબ્દવાળી તેમજ ઉત્સવના વખતે વગાડવામાં આવતી કૌમુદિક નામની ભેરી ને વગાડો (तएणं ते कौडुंबिय पुरिसा कण्हेणं वासुदेवे णं एवं वुत्तासमाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति जाव पडिसुणेंति) કૃષ્ણ વાસુદેવની આવી આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષો ખૂબજ હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થયા, તથા મસ્તકે અંજલિ રાખીને કહેવા લાગ્યા,-" હે સ્વામિન્! આપની જેવી આજ્ઞા છે, તે પ્રમાણેજ અમે કરીશું આમ કહીને તેઓએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. " पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्ख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निष्क्राम्य यत्रैव सुधर्मासभा, यत्रैव कौमुदिका भेरी, विद्यते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तां मेघौघरसितां=गम्भीरां मधुरशब्दां कौमुदिकां भेरीं ताडयन्ति=वादयन्ति। ततः = तदनन्तरं ' निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणंपिव ' स्निग्धमधुरगम्भीर प्रतिश्रुतेनैव–स्निग्धं=हृदयहर्षजनकं मधुरं गम्भीरं प्रतिश्रुतं=प्रतिध्वनिर्यस्य स तथा, तेनैव केन ? ' सारइएणं ' शारदिकेन शरत्कालसमुद्भूतेन ' बलाहएणं पिव ' बलाहकेनैव=मेघेनेव ' अणुरसियं ' अनुरसितम्–अनुगर्जितं भेर्या, शारदिकमेघगर्जितवद् भेरीध्वनिर्जात इत्यर्थः ॥ सू०८ ॥

मूलम्–तएणं तीसे कोमुइयाए भेरियाए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरी विवरकुहरगिरिसिहर नगरगोउरपासायदुवारभवणदेउलपडिसुयसयसहस्स संकुलं करेमाणे बारवइं नयरिं सब्भिंतर बाहिरियं सव्वओ समंता से

फिर वे कृष्ण वासुदेव के पास से चलदिये। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी–तेणेव उवागच्छंति) चलकर वे उस सुधर्मा सभा में जहां वह कोमुदिक नामकी भेरी रखी हुई थी वहां गये (उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरंमहुरसद्दंकोमुदियं भेरिं तालेंति) वहां जाकर उन्होंने उस मेघो के समूह जैसी सान्द्र गंभीर मधुर शब्द वाली कौमुदिक भेरी को बजाया (तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारइणं बलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए) बजते ही उस भेरी की ध्वनी शरत्कालीन मेघ की गर्जना के समान हुई। ॥सू–८॥

मंति" આજ્ઞા કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણની પાસેથી બહાર નીકળ્યા." " पडिनिक्ख मित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति " અને ત્યાંથી તેઓ સુધર્મા સભામાં જ્યાં કૌમુદિક નામની ભેરી મૂકેલી હતી ત્યાં ગયાં. " उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदियं भेरिं तालेंति" ત્યાં જઈને તેમણે મેઘસમૂહના જેવી સાન્દ્ર ગંભીર અને મધુર શબ્દવાળી કૌમુદિક ભેરીને વગાડી "तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारइणं बलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए " તે ભેરીમાંથી શરદ ઋતુના મેઘની જેમ ગંભીર સાન્દ્ર ધ્વનિ ચોમેર પ્રસરી ગયો. ॥ સૂ ૮ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्दे विप्पसरित्था । तएणं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणिया सहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सद्दं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० जाव ण्हाया आविद्ध वग्घारियमल्लदामकलावा अहतवत्थचंदणोक्खिन्नगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रहसीया संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दसदसारे जाव अंतियं पाउब्भमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरंगिणी सेणं सज्जेह, विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह । ते वि तहत्ति उवट्ठवेंति, जाव पज्जुवासंति ॥सू०९॥

टीका–' तएणं तीसे ' इत्यादि । ततः खलु तस्यां कौमुदिकायां भेर्यां ताडितायां सत्यां द्वारावत्या नगर्या नवयोजनविस्तीर्णाया द्वादशयोजनायामायाः ' सिंघाडगतियचउक्कचच्चर कंदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउर पासाय दुवार

' तएणं तीसे कोमुइयाए ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (तीसे को मुइयाए) उस कौमुदी (भेरियाए ताडियाए समाणीयाए) भेरी के बजने पर (बारवइए नयरीए न वजोजन वित्थिन्नाए) द्वारावती नगरी के कि जो नव ९ योजन विस्तीर्ण (चौडी) तथा (दुवालसजोयणायामाए) १२ बारह योजन लंबी थी–(सिंघाडगतिय चउक्क चच्चरकंदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

---

" त एणं तीसे कोमुइयाए " इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–"तएणं" ત્યાર બાદ " तीसे कोमुइयाए " તે કૌમુદી " भेरियाए ताडियाए समाणीए" ભેરીને " बारवइए नयरीए नवजोजन वित्थिन्नाए " નવ યોજન વિસ્તાર પામેલી તેમજ " दुवालसजोयणाए " બાર યોજન લાંબી "सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभवण-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवणदेउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं ' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरकन्दरादरीविवर-कुहरगिरिशिखरनगरगोपुरप्रासादद्वारभवनदेवकुलप्रतिश्रुतशतसहस्रसंकुलां शृङ्गाटकादि देवकुलान्ताः शब्दाः प्रसिद्धाः, तेषु प्रतिश्रुतानां प्रतिध्वनीनां यानि शतसहस्राणि तैः संकुला = परिपूर्णां तां तथाविधां कुर्वन् द्वारावतीं नगरीं ' सब्भितरबाहिरियं ' साभ्यन्तरबाह्यां सर्वतः-समन्तात् स शब्दः=भेरी शब्दः ' विप्पसरित्था ' विप्रासत्=विशेषेण प्रसृतः ।

ततः खलु द्वारावत्यां नगर्यां नवयोजनविस्तीर्णायां द्वादशयोजनयामायां समुद्रविजयप्रमुखाः दशदशार्हा-यावत् गणिकासहस्राणि अत्र यावच्छब्दादयमर्थोऽवगम्यते--बलदेवप्रमुखा पञ्च महावीराः, उग्रसेनादयः षोडशसहस्रप्रमिता राजानः सार्धत्रिकोटिसंख्यका यादवकुमाराः, षष्टिसहस्रसंख्यकाः शाम्बादयो दुर्दान्ताः, वीरसेनप्रमुखा एकविंशति सहस्रप्रमितावीराः, महाबलसेनादयः षट्पञ्चाशत् सहस्रप्रमाणा बलवन्तः, तथा-रुक्मिणीप्रमुखा द्वात्रिंशत्सहस्रपरिमितामहिला अनङ्गसेनादयोऽनेकसहस्रसंख्यका वाराङ्गनाश्चेति । कौमुदीकायामेर्याः शब्दं श्रुत्वा

वण देउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं करे माणे बारवइं नयरिं सब्भितरबाहिरियं सव्वओ समंता से सद्दे विप्पसरित्था) शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, कंदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरीशिखर, नगर, गोपुर, प्रसादद्वार, भवन, देवकुल, इन सब स्थानों में लाखों प्रति ध्वनियां उठी उन लाखों प्रतिध्वनियों से उस द्वारावती नगरी को भीतर बाहिर सब प्रकार से सब तरफ से परिपूर्ण करता हुआ वह भेरी का शब्द बहुत जल्दी इधर उधर फैल गया। (तएणं बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जावण्हाया) इस के बाद ९ नव योजन चौड़ी और १२ बारह योजन लंबी उस द्वारावती नगरी में समुद्रविजय आदि दश दशार्हों

देउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं करेमाणे बारवइं नयरिं सब्भितरबाहिरियं सव्वओ समंता से सद्दे विप्पसरित्था " द्वारावती नगरीना शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, કંદરા, દરી વિવર, કુહર, ગિરિશિખર, નગર, ગોપુર, પ્રાસાદ દ્વાર, ભવન દેવકુળ આ બધાં સ્થાનોમાં લાખો પડઘાઓ પડયા. ભેરીનો ધ્વનિ સેંકડો પડઘાઓથી દ્વારાવતી નગરીની અંદર બહાર ચોમેર પૂર્ણ રૂપે પ્રસરીને બધે વ્યાપ્ત થઈ ગયો. " तएणं बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव ण्हाया " ત્યાર બાદ નવ યોજન પહોળી અને બાર યોજન લાંબી દ્વારાવતી નગરીમાં સમુદ્ર વિજય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निशम्य=हृदयेऽवधार्य हृष्टास्तुष्टा यावत् स्नाताः 'आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा' आविद्धवग्घारियमाल्यदामकलापा आविद्धः परिधृतः 'वग्घारियमल्लदामकलावा' प्रलम्बित पुष्पमाल्यमुक्तादि हाराणां कलापो यैस्ते प्रलम्बितपुष्पमालामुक्तादि हारधारिण इत्यर्थः। 'वग्घारिय' इति देशीशब्दः प्रलम्बितार्थकः। अहतवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा' अहतवस्त्रचन्दनोत्क्लिन्नगात्रशरीरा-अहतवस्त्राणि चन्दनोत्क्लिन्नगात्राणि येषु तानि तथाभूतानि शरीराणि येषां ते तेषां शरीराणि नूतनवसनयुक्तानि चन्दनानुलिप्तावयवकानि आसन्नित्यर्थः। नूतनवसनचन्दनानुलेपधारिण इति यावत्। अप्येकके=अप्येके=केचन हयगताः अश्वारूढाः एवं=एके

ने यावत् गणिका साहस्र ने भेरी के शब्द को सुनकर और उसे हृदय में अवधारित कर बहुत ही अधिक हर्ष से एवं संतोष से युक्त हो स्नान किया-स्नान कर (आविद्धवग्घारियदामकलावा) उन्हों ने लंबी २ पुष्प मालाओ से युक्त मुक्तादि हारो को पहिरा "वग्घारिय" शब्द प्रलम्बित अर्थ का वाचक देशीय शब्द है। (अहतवत्थ चंदणोक्किन्नगायसरीरा) नवीन २ वस्त्रों से एवं चंदन के लेप से शरीर को सज्जित किया। "जाव गणियासहस्साइं" में जो (यावत्) पद आया है-वह इस बात को कहता है कि समुद्र विजय आदि दश दशार्हों के साथ (बलदेव प्रमुख, पांचमहावीरों ने उग्रसेन आदि १६सोलह हजार राजाओंने, ३॥ सढे तीन करोड यदव कुमारोंने, ६०साठ हजार दुर्दान्त शाम्बादिकोंनें २१इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरों ने, ५६छप्पन हजार बलवंत महासेनादिकोने तथा रुक्मिणी प्रमुख ३२ बत्तीस हजार महिलाओंने

વગેરે દશ દશાર્હોએ અને ગણિકા સાહસ્રોએ ભેરીનો અવાજ સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં અવધારિત કરીને બહુજ હર્ષ તેમજ સંતોષ યુક્ત થઈને સ્નાન કર્યું, સ્નાન કરીને "आविद्धवग्घारियदामकलावा" તેમણે લાંબી લાંબી પુષ્પમાળાઓ વાળાં મોતી વગેરેના હારો ધારણ કર્યા વાગ્ઘારિય શબ્દ પ્રલમ્બિત (લટકતી) અર્થને સૂચવનાર દેશીય શબ્દ છે. "अहतवत्थ चंदणोक्किन्नसरीरा" નવાં નવાં વસ્ત્રો તેમજ ચંદનના લેપોથી પોતાના શરીરને તેમણે શણગાર્યું. "जाव गणियासहस्साइं" માં જે "यावत्" શબ્દ છે, તે એમ સૂચવે છે કે સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હોની સાથે બળદેવ પ્રમુખ પાંચમહાવીરોએ, ઉગ્રસેન વગેરે સોળ હજાર રાજાઓએ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોએ, છ હજાર દુર્દાંત શાંબાદિકોએ એકવીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોએ, છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેએ તેમજ રુકિમણી પ્રમુખ બત્રીસ હજાર મહિલાઓએ પણ તેમની જેમ હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થઈને સ્નાન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केचिद् गजगताः गजारूढाः, रहसीयासंदमाणीगया' रथशिबिकास्यन्दमानीगताः केचिद् रथारूढाः, केचित् 'संदमाणीगया' स्यन्दमानीगताः स्यन्दमानी=पालखीनाम्ना प्रसिद्धो वाहनविशेषः, तामारूढाः, अप्येकके=केचित् पादविहारचारेण 'पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता' पुरुषवागुरापरिक्षिप्ताः पुरुषवृन्देन युक्ताः संभूय कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिके प्रादुर्बभूवुः समागताः। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः समुद्रविजयप्रमुखान् दशदशार्हान् यावत् अन्तिकं प्रादुर्भवतः समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयेन प्रमुदितः कृष्णवासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा चैवं वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-भो देवानुप्रियाः! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, चतुरङ्गिणीं

भी उनके जैसा ही हर्षित एवं संतुष्ट हो सब कुछ किया। (अप्पेगइया हय गया एवं गयगया रहसिया संदमाणीगया) इनमें कितनेक घोडों पर बैठकर कितनेक हाथियोंपर बैठकर, कितनेक रथोंपर बैठकर कितनेका शिबिका, स्यन्दमनी-पालखी-पर बैठकर (अप्पेगइयापायविहरचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता) कितनेक अनेक पुरुषो से युक्त होकर पाद विहार चारीगण-पैदल ही (कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था) कृष्ण वासुदेव के पास प्रादुर्भूत हुए-आ गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसार जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ) इस तरह जब उन कृष्ण वादेवने समुद्रविजय आदि दश दशार्हों को यावत् अपने पास में प्रादुर्भूत हुआ देखा तो (पासित्ता) देखकर (हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) हर्षित हो यावत् कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा

કર્યું', અને સ્નાન પછી પોતાના શરીરને વસ્ત્રો, લેપો તેમજ હાર વગેરેથી થી શણગાર્યા अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रहसीया संदमणीगया" આમાંથી કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર સવાર થઈને કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને કેટલાક રથોમાં બેસીને કેટલાક શિબિકા, અને પાલખીમાં બેસીને "अप्पेगइया पायविहरचारेणं पुरिसवग्गुरा परिक्खिता" કેટલાક અનેક માણુસોની સાથે પગે ચાલીનેજ "कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था" કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે હાજર થયા. "तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दसदसार जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ" આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવે સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો વગેરે તે પોતાની પાસે ઉપસ્થિત થયેલા જોયા અને "पासित्ता" જોઈને "हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ" હર્ષિત થઈને કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા "सद्दावित्ता एवं वयासी" બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યું. "खिप्पा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गजाश्वरथपदातियुक्तां सेनां सज्जयत, विजयं = विजयनामानं च गन्धहस्तिनम् ' उवट्ठवेह ' उपस्थापयत=मण्डनादिना सुसज्जीकृत्य समानयत । तेऽपि=कौटुम्बिन पुरुषा अपि, कृष्णवासुदेवाज्ञां श्रुत्वा ' तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा तथैवोपस्थापयन्ति=आनयन्ति, यावत् पर्युपासते ॥ सू० ९ ॥

मूलम्–थावच्चापुत्ते वि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहा मेहस्स तहा चेव णिवेयणा, जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा ४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था ।

तएणं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गिण्हित्ता मित्त जाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवार-

---

(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चाउरंगिणी सेणं सज्जेह) भो देवानुप्रियों । तुम लोग शीघ्र ही चतुरंगिणी सेना को सज्जित करो (विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह) और विजय नाम के गंध हस्ती को वेष भूषा से मंडित कर उपस्थित करो (ते वि तहत्तिउवट्ठवेंति) उन कौटुम्बिकपुरुषों ने भी कृष्ण वासुदेव की आज्ञा सुन (तथास्तु) ऐसा कहकर वैसा ही किया यावत् उनकी पर्युपासना की ॥ सू–९ ॥

मेव भो देवाणुप्पिया ! चउरंगिणी सेणं सज्जेह " हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वरे चतुरंगिणी सेना तैयार करो. " विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह " अने विजय नामक गंध हाथीने सुंदर वेषमां सजज करीने उपस्थित करो. " ते वि तहत्ति उवट्ठवेंति जाव पज्जुवासंति " ते कौटुंबिक पुरुषोओ कृष्ण वासुदेवनी आज्ञा सांभळीने (तथास्तु) आम कहीने तेमनी आज्ञा मुजब कर्युं अने तेमनी पर्युपासना करी ॥ सूत्र ९ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी ॥ १० ॥

टीका—' थावच्चापुत्ते वि ' इत्यादि । अथ स्थापत्यापुत्रोऽपि निर्गतः = भगवन्तमरिष्टनेमिं वंदितुं स्वगृहान्निःसृत इत्यर्थः । यथा मेघः=मेघकुमारः, तथैव धर्मं श्रुत्वा निशम्य, यत्रैव स्वजननी स्थापत्या गाथापत्नी वर्तते, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पादग्रहणं करोति मातुश्चरणयोः पततिस्मेत्यर्थः। यथा मेघस्य=मेघकुमारस्य प्रव्रज्यार्थं निवेदना प्रार्थनाऽभूत् तथैव स्थापत्यापुत्रस्य निवेदना मातुरन्तिकेऽभवदित्यर्थः ।

' थावच्चापुत्ते वि णिग्गए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(थावच्चापुत्ते वि णिग्गए) स्थापत्यापुत्र भी भगवान अरिष्टनेमि प्रभुके वंदना करनेके लिये अपने घरसे निकला (जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहामेहस्स तहा चेव णिवेयणा) जिस प्रकार मेघकुमार ने धर्म का श्रमण किया था उसी प्रकार स्थापत्या पुत्र ने प्रभु अरिष्टनेमी भगवानके पास धर्मोपदेश सुना और सुनकर जहां अपनी माता स्थापत्या गाथापत्नी थी वहां गया। जाकर उसने उसके दोनो चरण पकड लिये-उसके दोनो चरणोंमें वह गिर गया-और जिस प्रकार प्रव्रज्या के लिये मेघ कुमार ने प्रार्थना की थी उसी

" थावच्चापुत्ते वि णिग्गए " ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-"थावच्चापुत्ते वि णिग्गए" સ્થાપત્યા પુત્ર પણ ભગવાન અરિષ્ટનેમિને વંદન કરવા માટે પોતાને ઘેરથી નીકળ્યો. "जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहामेहस्स तहाचेव णिवेयणा" મેઘ કુમારે જેમ ધર્મનું શ્રવણ કર્યું હતું તેમજ સ્થાપત્ય પુત્રે પણ પ્રભુને અરિષ્ટનેમિ ભગવાનની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો. અને સાંભળ્યા પછી ત્યાં તેની માતા સ્થાપત્યા ગાથા હતી ત્યાં ગયો જઈને તેણે માતાના બંને પગ પકડી લીધા તે તેના પગોમાં ઓળોટી ગયો અને જેમ મેઘકુમારે પ્રવજ્યા માટે પોતાના માતાપિતાને વિનંતી કરી હતી તેમજ તેણે પણ કરી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्रं 'नो संचाएइ' नो शक्नोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभिः = विषयानुकूलाभिः-वाग्भिश्च, तथाहि – विषयभोग एव मनुष्यलोके सारांशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

" यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।
तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे किमाधिक्यम् ॥ १ ॥ "

तथा—विषयप्रतिकूलाभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलास्तत्प्रतिषेधेन सद्भाविनस्तपः संयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः संयमादिकं खलु वालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारोपरिगमनमिव सिक्थकदन्तैलौहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्करं भुजाभ्यां समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येवं तपः संयमभयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । बहीभिराख्यापनाभिः = बहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, संज्ञापनाभिः संबोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहे णो संचाएइ विसयाणुलोमाहिं य पडीकूलाहि य बहूहिं आघवणाहिं य पन्नवणाहिं य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानो द्वारा-सामान्य कथनों द्वारा-प्रज्ञापनाओ द्वारा विशेष कथनों द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा -संबोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये संज्ञापित करने के लिये समर्थ नही हुई-

---

"जाहे णो संचाएइ बिसयाणुलोभाहि य पडिकूलाहिय, बहूहिं आयवणाहिं य पन्नवणाहिय सन्नवणाहि य विन्नवणाहिय आघवित्तए वा" ४ स्थापत्य गाथा पत्नीએ પોતાના પુત્ર વિષયાનુકૂળ તેમજ વિષયોને પ્રતિકૂળ એવી ઘણી વાતો કહીને ખૂબ સમજાવ્યો, પણ તે વિષયાનુકૂળ વિષયપ્રતિકૂળ અનેક આખ્યાનો વડે, સામાન્ય કથનો વડે, પ્રજ્ઞાપનાઓ વડે, વિશેષ કથનો વડે, સંજ્ઞાપનાઓ વડે, સંબોધન પૂર્વક કથનો વડે, વિજ્ઞાપનાઓ વડે, (તમેજ આ વૃદ્ધપણામાં મારો આધાર છો) વગેરે પ્રેમયુક્તદીન વચનો વડે પોતાના પુત્રને તે સામાન્ય રૂપથી સમજાવવા માટે, વિશેષ રૂપથી સમજાવવાને માટે, વિજ્ઞાપિત કરવાને માટે સંજ્ઞાપિત કરવા માટે સમર્થ થઈ શકી નહિ. એટલે કે આખ્યાન વગેરે ચાર જાતના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संबोध्य कथनैश्च, विज्ञापनाभिः त्वमेव ममास्यां वृद्धावस्थायामाधारोऽसि अवलम्बनमसीत्यादि रूपेण सप्रेमदीनवचनेन पुनः पुनर्विज्ञप्तिपूर्वककथनैः, अत्र-विषयानुकूलाभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिस्तथा विषयप्रतिकूलाभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिरिति भावः। 'आघवित्तए वा' आख्यातुं वा, प्रज्ञापयितुं वा, विज्ञापयितुं वा संज्ञापयितुं वा। यदा स्थापत्या स्वपुत्रमाख्यानादिभिः प्रतिबोधयितुं प्रव्रज्यातो निवर्तयितुं न शक्नोति स्मेति संक्षिप्तार्थः। तदा सा 'अकामिया चेव' अकामिकैव=अनिच्छावत्येव स्थापत्यापुत्रस्य-स्थापत्यापुत्रनाम्नः स्वतनयस्य निक्खमणमणुमन्नित्था' निष्क्रमणमन्वमन्यत = अनिच्छया प्रव्रज्याग्रहणार्थमाज्ञां प्रदत्तवतीत्यर्थः।

ततः=तदनन्तरं खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय, 'महत्थं' महार्थं=महाप्रयोजनकं, 'महग्घं' महार्घं=बहुमूल्यकं, 'महरिहं' महार्हं=महतां श्रेष्ठपुरुषाणां योग्यं, 'रायरिहं' राज्ञां योग्यं, 'पाहुडं' प्राभृतम्=उपहारं 'भेट' इति भाषा प्रसिद्धं गृह्णाति, गृहीत्वा मित्र-यावत् संपरिवृता=अत्र यावच्छब्देन-ज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनैरित्यस्य संग्रहः यत्रैव

अर्थात् आख्यान आदि चतुर्विधवचनों द्वारा जो कि विषयानुकूलता तथा विषयप्रतिकूलता के प्रदर्शक थे जब वह स्थापत्या गाथापत्नी उसे समझाने एवं प्रव्रज्या से निवर्तित करने के लिये असमर्थ हुई (तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था) तब उसने विना इच्छा के ही स्थापत्यापुत्र को प्रव्रज्या गृहण करनेकी आज्ञा दे दी (तएणं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ) बाद में वह स्थापत्या अपने आसन से स्थान से- उठी- (अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुणं गेण्हइ) उठकर उसने महार्थसाधक, श्रेष्ठ पुरुषों के, तथा राजाओं के योग्य बहुत कीमती- उपहार लिया- (गिण्हित्ता) लेकर वह (मित्तजाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र आदि परिजनों

વચનો દ્વારા કે જેઓ વિષયને અનુકૂળ તેમજ વિષયને પ્રતિકૂળ હતા સ્થાપત્ય પત્ની સમજાવીને પ્રવ્રજ્યા લેતા પોતાના પુત્રને અટકાવવામાં સમર્થ થઈ શકી નહિ "तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था" ત્યારે તેણે ઇચ્છા ન હોવા છતાં પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવાની તેને આજ્ઞા આપી. ત્યારે સ્થાપત્યા પછી પોતાના આસનેથી ઉભી થઈ (अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुणं गेण्हइ) ઉભી થઈને મહાર્થસાધક, ઉત્તમ પુરૂષોને તેમજ રાજાઓને યોગ્ય બહુ કિંમતી ભેટ લીધી (गिण्हित्ता) લઈને તે (मित्तजाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) મિત્ર વગેરે પરિજનોની સાથે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृष्णवासुदेवस्य 'भवणवरपडिदुवारदेसभाए' भवनवरप्रतिद्वारदेशभागः भवनवरस्य प्रधानप्रासादस्य प्रतिद्वारं बृहद् द्वारान्तरालवर्तिलघुद्वारं तस्य देशभागोऽस्ति, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सा प्रतीहारदेशितेन द्वारपालप्रदर्शितेन मार्गेण यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सा करतलपरिगृहीतदशनखा मस्तके अञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन च वर्धापति, वर्धापयित्वा तन्महार्थं महार्घं महार्हं राजार्हं प्राभृतम् उपनयति=कृष्णवासुदेवस्याभिमुखे स्थापयति, उपनीय = उपहारं कृष्णवासुदेवस्याग्रे निधाय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् = उक्तवती ॥ सू० १० ॥

से युक्त होकर जहां कृष्ण वासुदेव के (भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ) प्रधान प्रासाद का बडे दरवाजे अन्दर लघुद्वार का देश भाग था वहां गई (उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहां जाकर द्वारपाल द्वारा प्रदर्शित मार्ग से होकर वह जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां गई (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेइ) वहां जाकर उसने दोनों हाथो को अंजलि रूप में जोड़कर और उस मस्तक पर रख कर जय विजय शब्दों का उच्चारण करते हुए उन्हें वधाई दी (वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं उवणेइ) वधाई देकर उसने फिर महार्थसाधक महार्घ महतां योग्य एवं राजाओं के लायक उस भेट को राजाके समक्ष रख दिया । (उवणित्ता एवं वयासी) रख कर फिर उनसे ऐसा कहा— सूत्र " १० "

કૃષ્ણ વાસુદેવના (भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ) જ્યા પ્રધાન મહેલ ના મુખ્ય દરવાજાની અંદરના લઘુદ્વારનો દેશ ભાગ હતો ત્યાં ગઈ. (उवागच्छित्ता, पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં જઈને તે દ્વારપાલવડે બતાવવામાં આવેલા માર્ગથી જ્યાં કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા ત્યાં ગઈ. (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेइ) ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથોને અંજલીના આકારે બનાવીને તેમને જય વિજય શબ્દો બોલતા કૃષ્ણ વાસુદેવને વધાવ્યા. (वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं उवणेइ) વધાવ્યા પછી સ્થાપત્યાએ મહાર્થસાધક મહાર્થ-મોટા માણસોને યોગ્ય-અને રાજાઓને લાયક તે ભેટને તેમની સામે મૂકી. (उवणित्ता एवं वयासी) મૂકીને તેણે તેમને કહ્યું. ॥ સૂ-૧૦ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए इट्ठे जाव से णं संसारभयउव्विग्गे इच्छइ, अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए, अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ, तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा गाहावइणीं एवं वयासी–

अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी– मा णं तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि ॥११॥

टीका–'एवं खलु' इत्यादि। एवम् = अमुना प्रकारेण, खलु निश्चये हे देवानुप्रिय ! ममैकः=एक एव पुत्रः स्थात्यापुत्रो नाम दारकः अङ्गजातः, इष्टः

'एस खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि।

टीकार्थ–(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! (एवं खलु) मैं आप के पास इसलिये आई हूँ– कि (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नामं दारए) मेरा

(एस खलु देवाणुप्पिया इत्यादि) ।

ટીકાર્થ–(देवाणुप्पिया !) હે દેવાનુપ્રિય ! (एवं खलु) હું, આપની પાસે મોટલા માટે આવી છું–કે (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नामं दारए) મારો સ્થા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लभः यावत्=अत्र यावच्छब्देनायं पाठोऽनुसन्धेयः-कान्तः=कमनीयः, प्रियः= प्रीतिकारकः, मनोज्ञः = हृदयावस्थितः, उदुम्बरपुष्पदर्शनमिव दुर्लभः, वर्तते, स मम पुत्रः खलु संसारभयोद्विग्नः सन् इच्छति अर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपे यावत् प्रव्रजितुम् । अहं खलु निष्क्रमणसत्कारं दीक्षोत्सवं करोमि, हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन् ! अहमिच्छामि खलु स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रामतः = दीक्षाग्रहणं कुर्वतः छत्रचामराणि=छत्रचामरमुकुटादीनि वितीर्णानि भवद्भिः प्रदत्तानि भवन्तु इति, अहमेतदर्थं भवतां समीपे समागता यत् तस्मै छत्रचामरादीनि भवन्तो वितरन्तु इति भावः ।

ततः खलु कृष्णवासुदेवः स्थापत्यागाथापत्नीमेवमवादीत् । हे देवानुप्रिये ! त्वं खलु सुनिर्वृता=स्वस्था, विस्वस्था=विशेषतः स्वस्था, सुधीरा, आस्स्व=तिष्ठ,

---

एक ही अङ्गजात स्थापत्य पुत्र नाम का पुत्र है। वह (इट्ठे जाव सेणं संसारभयउव्विग्गे) मुझे वल्लभ हैं। यावत् शब्द से इस पाठ का यहां संग्रह हुआ है- वह बहुत अधिक कमनीय है प्रीतिकारक है, मनोज्ञ है, मेरे हृदय में स्थान किये हुए है। और उदम्बर पुष्प के दर्शन के समान दुर्लभ है। वह मेरा पुत्र संसारभय से उद्विग्न होकर (इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए) अहत अरिष्ट नेमि प्रभु के पास दीक्षित होना चाहता है (अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तम उडचामराओ य वि दिन्नाओ) सो मैं उसका दीक्षोत्सव करना चाहती हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं आपसे यह चाहती हूँ कि आप मुझे उस निमित्त-निष्क्रमण स्थापत्य पुत्र की दीक्षोत्सव के निमित्त छत्र, चामर और मुकुट आदि दे देवें। (तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा

પત્યાપુત્ર નામે એકનો એક પુત્ર છે. તે (इट्ठे जाव सेणं संसार भय उव्विग्गे) મને પ્રિય છે. અહીં (यावत्) શબ્દથી આપાઠનો સંગ્રહ થયો છે-તે ખૂબજ કમનીય (ઇચ્છવાયોગ્ય) છે, પ્રીતિકારક છે, મનોજ્ઞ છે, મારા હૃદયમાં તે સ્થાન પામેલો છે. તેમજ ઉમરડાના પુષ્પના દર્શનની જેમ તે દુર્લભ છે. તે સંસારના ભયથી વ્યાકુળ થઇ (इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए) અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુથી દીક્ષિત થવા ચાહે છે. (अहंण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत मउडचामराओ य विदिन्नओ) હું તેનો દીક્ષાનો ઉત્સવ ઉજવવા ઇચ્છું છું. એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! આપ મને તે ઉત્સવ નિમિત્ત નિષ્ક્રમણ-સ્થાપત્યાપુત્રના દીક્ષોત્સવ માટે છત્ર ચામર અને મુકુટ વગેરે આપો. (तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति सम्बन्धः । अहं खलु स्वयमेव स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमण सत्कारं करिष्यामि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवश्चतुरङ्गिण्या सेनया सह विजयं=विजयनामानं गन्धहस्तिरत्नं यस्य गन्धं समाघ्राय पलायन्ते गजाः परे । दूरूढः=समारूढः सन् यत्रैव स्थापत्यायाः गाथापत्न्या भवनं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च स्थापत्यापुत्रम् एवं = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—देवानुप्रिय ! त्वं मुण्डो भूत्वा मा खलु प्रव्रज, दीक्षाग्रहणं मा कुरु इति संबन्धः। हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु विपुलान् =बहुतरान् मानुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् = शब्दादिविषयानुभवान्

गाहावइणीं एवं वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी की इस बात को सुनने के बाद कृष्णवासुदेव ने स्थापत्यागाथापत्नी से इस प्रकार कहा— (अच्छा ही णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तुम इस विषय में निश्चिन्त होकर- स्वस्थ और विश्वस्थ होकर- बैठो, मैं स्वयं स्थापत्या पुत्र का निष्क्रमण सत्कार करूँगा। (तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ऐसा कहने के बाद वे कृष्ण वासुदेव चतुरंगिणी सेना के साथ विजय नामके हस्ति रत्न पर आरूढ हो कर जहां स्थापत्यागाथापत्नी का भवन था वहां गये। (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी) जाकर उन्होंने स्थापत्या पुत्र से इस प्रकार कहा- (माणं तुमें देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! तुम मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण मत करो

गाहावइणीं एवं वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी आवातने सांभળીને કૃષ્ણવાસુદેવે સ્થાપત્યાગાથાપત્નીને કહ્યું (अच्छा ही णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि) હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ વિષે નિશ્ચિંત, સ્વસ્થ અને વિશ્વસ્થ રહો હું જાતે સ્થાપત્યાપુત્રનો નિષ્ક્રમણ ઉત્સવ કરીશ. (तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हात्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાર પછી કૃષ્ણવાસુદેવ ચતુરંગિણી સેનાની સાથે વિજયનામના ઉત્તમ હાથી ઉપર સવાર થઈ તે જ્યાં સ્થાપત્યગાથાપત્નીનું ભવન હતું ત્યાં ગયા. (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी) ત્યાં જઈને તેમણે સ્થાપત્યાપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું-(माणं तुमें देवाणुप्पिया ! भवित्ता पव्वयाहि) હે દેવાનુપ્રિય ! મુંડિત થઈ ને તમે દીક્ષા સ્વીકારો નહિ. (भुंजाहि णं देवाणुप्पिया !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मम बाहुच्छाया परिगृहीतः=बाहुच्छायां समाश्रितः सन् 'भुंजाहि' भुङ्क्ष्व, आसेवस्व पुनः पुनर्विषयास्वादसुखेन विहरन् गृहे तिष्ठेत्यर्थः। केवलं तव देवानुप्रियस्याहं नो शक्नोमि वायुकायमुपरितो गच्छन्तं निवारयितुम्, वायुरपर्याप्त्यतिरेकेण प्रतिकूलतया तव शरीरस्य स्पर्शने कोऽपि समर्थो नास्तीति भावः। अन्यः खलु देवानुप्रियस्य यत् किंचिदपि आबाधां वा ईषत् पीडां वा व्याबाधां वा विशेषपीडां वा उत्पादयति, तत्सर्वं निवारयिष्यामीत्यर्थः। मम राज्ये तव किमपि दुःखं नो भविष्यति, साहाय्यं ते करिष्यामि, अलं परमकष्टसाध्येन दीक्षा ग्रहणेनेति भावः ॥ सू-१२ ॥

(भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए) हे देवानुप्रिय ! मेरी बाहुच्छाया में रहते हुए तुम तो विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगो को भोगो। (केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वायुकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए) हे देवानुप्रिय ! प्रतिकूल होकर तुम्हारे शरीर को मेरी छत्रच्छाया में रहते हुए कोई स्पर्श तक भी नहीं कर सकता है- परन्तु वायुकाय को तुम्हारे ऊपर से जाते हुए मुझ में रोकने की शक्ति नहीं है। अर्थात् वायु के सिवाय और किसी प्राणी में ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी छत्रच्छाया में रहे हुए तुम्हें विरुद्ध बन कर स्पर्श तक भी कर सके। (अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि) वायुकाय के सिवाय यदि कोई दूसरी व्यक्ति देवानुप्रिय तुम्हारे लिये थोड़ी सी भी किसी भी प्रकार की पीड़ा या विशेष पीड़ा उत्पन्न करेगा तो वह सब मैं निवारित करता रहूँगा।

विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिग्गहिए) હે દેવાનુપ્રિય ! મારી બાહુચ્છાયા માં રહેતા તમે મનુષ્યભવના પુષ્કળ કામ ભોગ ભોગવો. (केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वायुकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए) હે દેવાનુપ્રિય ! મારી છત્ર છાયામાં રહેતા તમને પ્રતિકૂળ થઈને કોઈ સ્પર્શવાની પણ હિમ્મત કરશે નહિ. ફક્ત વાયુકાયને કે જે તમારી ઉપર થઈને પસાર થાય છે-રોકવાની તાકાત મારામાં નથી. એટલે કે પવન સિવાય બીજા કોઇ પણ પ્રાણી ની એવી હિમ્મત નથી કે મારી છત્ર છાયામાં રહેતા, પ્રતિકૂળ થઈને તમારો સ્પર્શ પણ કરી શકે. (अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किं चि विआबाहं वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि) વાયુકાયના સિવાય બીજી વ્યક્તિ તમને થોડી કે વધારે પીડા આપશે તો તેને હું મટાડીશ. મારા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणं निवारेसि, तएणं अहं तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि ॥ सू० १३ ॥

टीका—' तएणं से थावच्चापुत्ते ' इत्यादि । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्वं मम " जीवियंतकरणं " जीवितान्तकरणं जीवनविनाशकारकं, ' मच्चुं ' मृत्युं=मरणदुःखं, ' एज्जमाणं ' एजमानम्=आगच्छन्तं, निवारयसि, ' जरं वा '

कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा। मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। क्यों व्यर्थ में परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो– छोड़ो इसे। सूत्र " ११ "

' तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हे णं ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे णं वासुदेवेणं) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा–(जइणं तुमं देवाणुप्पिया मम जीवियंतकरणमच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणि सरीरंवा अइवलमाणं निवारेसि) हे देवानुप्रिय? यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

રાજ્યમાં રહેતા તમને કોઇ પણ જાતની તકલીફ થશે નહિં હંમેશા હું તમારી મદદ માટે પડખે ઉભોછું શું કામ વ્યર્થ કષ્ટ સાધ્ય–કઠણ–દીક્ષા ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયા છો છોડી આ લપને! સૂત્ર " ૧૧ "

(तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं इत्यादि) ।

ટીકાર્થ–(त एणं) ત્યાર પછી (से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं) કૃષ્ણવાસુદેવ વડેઆ રીતે કહેવાએલા સ્થાપત્યા પુત્રે, (कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું-(जइणं तुमं देवाणुप्पिया मम जीवियंतकरणमच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरंवा सरीररूवविणासिणि सरीरं वा अइवयमाणं निवारेसि) હે દેવાનુપ્રિય! જો તમે મારા જીવન નો નાશ કરનાર મૃત્યુ તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जरां वा=वृद्धावस्थां वा शरीररूपविनाशिनीं, शरीरं वा (वर्तमानशरीरं) 'अइवयमाणं' अतिपतन्तम्=आत्मनः सकाशात् सर्वथा वियुज्यमानं निवारयसि; ततस्तदा खलु अहं तव बाहुच्छाया-परिगृहीतः भुजबलमाश्रितः सन विपुलान् मानुष्यान् काम-भोगान् भुञ्जानो विहरामि=गृहे वत्स्यामीत्यर्थः ।

संसाराऽऽसक्तस्य जरामरणादि दुःखक्षयो न भवतीति संसारस्वरूपमिह संक्षेपेण निरूप्यते-आत्मकल्याणार्थी जनः खल्वेवं विभावयति—

एतत् खलु संसारसुखं तुच्छम्, अस्मिन् संसारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिनः केवलं मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

कर सकते हों तथा शरीर के स्वरूप को विनाश करनेवाली आती हुई जरावस्था को निवारण कर सकते होवें या नियमतः आत्मा के साथ सर्वथा वियुज्यमान इस शरीर को आप रोक सकते होवें (तएणं अहं तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि) तो मैं आपकी भुजच्छाया का सहारालेकर विपुल मनुष्यभव-सम्बन्धी कामभोगों को भोगता हुआ घर में रह सकता हूँ। संसार में आसक्त हुए प्राणी के जरा मरण आदि के दुःखो का क्षय नहीं होता है इसलिये संसार का स्वरूप संक्षेप से यहां निरूपित कियाजाता है जो आत्मकल्याण के अर्थी मोक्षाभिलाषी जन होते हैं वे इस प्रकार से विचार करते हैं-यह सांसारिक सुख तुच्छ है। इस संसार में कर्म-वशवर्ती हुए प्राणी केवल मरण प्राप्त करने के लिये ही जन्मते हैं और जन्म धारण-करने के लिये ही मरते है। जितने भी कामभोग

મારાથી દૂર કરી શકો છો, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને મટાડી શકો છો, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા નહિ દો (तएणं अहं तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि) તે હું તમારી બાહુઓની છાયામાં રહીને પુષ્કળ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતાં ઘરમાં જ રહી શકું તેમ છું. સંસારમા આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુઃખો નો ક્ષય થતો નથી તેથી અહીં ટૂંકમાં સંસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામાં આવે છે. જે આત્મ કલ્યાણ ને ઝંખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સંસારનું સુખ નગણ્ય છે. આ સંસારમાં કર્મ વશ થઈને જીવ નારા પ્રાણીઓ ફક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે. સંસાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आस्रवरूपा विपदां पदानि सन्ति । लोकवर्तिनः सर्वेऽपि पदार्थाः सिकताकणवत् परस्परमसंबद्धाः, तेषां भोगोऽपि जीवस्य बन्धनाय पुनः पुनर्मोहजननाय भवति । मोहः खलु महागर्तस्तत्राज्ञानिनो जीवा निरर्थकमेव निपतन्ति । एतस्मिन् सुखाभासे संसारे ममकः सम्बन्धः । अज्ञानरजन्यां विवेकदृष्टौ मोहवृतायां सत्यां पञ्चेन्द्रियत्रयो विंशति विषय तदीय शतद्वयाधिकचत्वारिंशद्विकाररूपास्तस्करा आत्मगुणरूपाणि धनान्यपहरन्ति । यथा पथिकेभ्यो न रोचते निर्जला भूमिस्तथा ममेदं संसारसुखं प्रमोदाय न प्रभवति । यथा वा-शैलशिखरावस्थितपादपानां मूलानि वायुर्विशीर्णयति, तथोन्मूलयति भोगोऽपि जीवानां मनांसि, यथा

हैं-वे सब क्षणभंगुर हैं तथा इसकेद्वारा ही जीव नवीन कर्मों का आस्रव करता है-इसलिये ये आस्रवरूप हैं-विपदाओं के स्थानभूत हैं । इस लोक में जितने भी पदार्थ हैं वे सब बालु के कण के समान परस्पर में असंबद्ध हैं । इनका भोग भी जीव के लिये नवीन नवीन कर्मों का बंधदाता होता है और बार २ मोहका जनक होता है । मोह एक बड़ा भारी गर्त (खड्डा) है । इसमें आत्मज्ञान से रहितहुए प्राणी निरर्थक ही गिरते रहते हैं । इस असारसंसार में मेरा किस से क्या नाता है । अज्ञान रात्रि में विवेकदृष्टि के मोहाच्छादित होने पर पांचो इन्द्रियों के २३, विषय और इन विषयों के भी २४०, विकार रूप तस्कर (चौर) आत्म गुण रूप धन का अपहरण करते रहते हैं । जिस तरह पथिक जनों के लिये निर्जल भूमि नहीं रुचती है उसी प्रकार मुझे यह संसार सुख नहीं रुचता है । अथवा जैसे पर्वत की चोटी पर रहे हुए वृक्षों की जड़ों

સર્વે ક્ષણુ ભંગુર છે, તેમજ એમના વડે જ જીવ કર્મોનો આસ્રવ (કર્મનું આત્મામાં દાખલ થવું) કરે છે. એટલા માટે આ બધા આસ્રવરૂપ છે અને વિપત્તિઓનું સ્થાન છે. આ જગતમાં જેટલાં પદાર્થો છે તેઓ સર્વે રેતીના કણાની જેમ પરસ્પર અસંબદ્ધ છે. એમનો ઉપભોગ પણ નવા નવા કર્મોના બંધનમાં પ્રાણીને ફસાવનાર છે. તે વારંવાર મોહજનક હોય છે. મોહ (અજ્ઞાન) જાને એક મોટો ખાટો (ગર્ત) છે. આત્મજ્ઞાન વગરના પ્રાણીઓ વ્યર્થઆમાં પડયા કરે છે. આ નિઃસાર જગતમાં મારો કોની સાથે કેવો સંબંધ છે ? અજ્ઞાન રાત્રિમા જ્યારે વિવેકની દૃષ્ટિ અજ્ઞાનથી ઢંકાઈ જાય છે ત્યારે પાંચ ઈન્દ્રિયોના તેત્રીશ વિષયો અને આ વિષયોના પણ બસો ચાલીશ વિકાર રૂપી ચોર (તસ્કર) આત્મગુણ રૂપી ધન ને ચોરતા રહે છે. જેમ મુસાફરોને નિર્જળ પ્રદેશ ગમતો નથી તેમ જ મને પણ આ સંસાર સુખ સારું લાગતું નથી. જેમ પર્વતો પર રહેલાં વૃક્ષોના શિખરો મૂળ પવન વિશીર્ણ (છિન્નવિચ્છિન્ન) કરી નાખે છે તેમજ સંસાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरातनास्तरवः स्वकोटरस्थानलेन दह्यमाना अन्ते निपतन्ति तद्वदिह जीवाः कषायानलेन परितप्ता अशान्ता अन्ते नरकादौ निपतन्ति । अहमपि संसारदावानलेन परितप्तान्तःकरणः क्वापि विषयसुखे शान्तिं न पश्यामि । संप्रति मामकीनमन्तःकरणं जन्मजरामरणदुःखपाषाणैः परिपूर्णं वर्तते, तस्मात् साश्रुमुक्तकण्ठं च रोदनं कर्तुकामोऽपि न रोदिमि, इमे हि स्वजना रुदन्तं मामवलोक्य रोदिष्यन्ति । तस्मादसारेऽस्मिन् संसारे प्रव्रज्यैव मम शरणम् । अपरं चैवमसौ मृत्युजरास्वभावं विभावयति—

को वायु विशीर्ण कर देती है उसी तरह सांसारिक भोग भी जीवोंके मन को विशीर्ण करदिया करता है अपने कोटर में अवस्थित अग्नि से जैसे पुराने वृक्ष जलकर अन्त में जमीन पर गिर पड़ते हैं उसी तरह इस संसार में कषायरूपअग्निसे परितप्त होकर अशान्त हुए ये जीव भी अन्त में नरकादि दुर्गतियों में जाकर गिरजाते हैं। मैं भी संसार दावानल से परितप्त अन्तःकरण होकर किसी भी वैषयिकसुख में शान्ति नहीं देख रहा हूँ। इस समय मेरा अन्तःकरण जन्म जरा और मरण के दुःख रूप पाषाणों से परिपूर्ण बना हुआ है। अतः मैं चाहता हूँ कि मैं गला फाड २ कर खूब जोर २ से रोऊँ परन्तु नहीं रो सकता हूँ। कारण ये मेरे पीछे लगे हुए जो जन हैं वे मुझे रोता देखकर रोने लग जावेंगे। इस लिये सार विहीन इस संसार में कोई शरण भूत मेरे लिये है तो वह एक प्रव्रज्या ही है। मृत्यु और जराके स्वभाव को यह आत्म कल्याणार्थी इस प्रकार से विचारता है—

ना झोंगेा પણ જીવેાના મનને વિશીર્ણ (જીર્ણ) કરી નાખે છે. પેાતાની બખેાલમાં સળગતેા અગ્નિ જેમ જુનાં વૃક્ષેાને બાળીને છેવટે જમીન દોસ્ત કરી નાખે છે, તેમજ આ સંસારમાં કષાય રૂપ અગ્નિમાં સંતપ્ત થઇને અશાન્ત થયેલા જીવેા પણ અન્તે નરક વગેરે દુર્ગતિએામાં જઈને પડે છે. સંસાર દાવાનળથી સંતપ્ત થયેલું મારૂં મન કેાઇ પણ વિષય સુખમાં શાંતિ જોતુ નથી. અત્યારે મારૂ મન જન્મ જરા (ઘડપણ) અને મરણના દુઃખ રૂપી પથ્થરેાથી પરિપૂર્ણ થઇ ગયું છે. એથી મને તેા એમ થાય છે કે હું મેાટેથી મૂમેા પાડી પાડીને ખૂબ. રડું પણ મારાથી રડાતું પણ નથી કેમકે મારા સ્વજનેા મને રડતેા જોઇને પેાતે પણ રડવા માંડશે. એટલે નિઃસાર જગતમાં મારેા કેાઇ આધાર છે તેા તે પ્રવજ્યા જ કહી શકાય મૃત્યું અને ઘડપણની ભયંકરતા વિષેનેા વિચાર તે સ્થાપત્યાપુત્ર કહે છે. " લાકડામાં ઊધઇ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काष्ठं घुण इव मृत्युः शरीरमुत्खनति । मृत्युतक्षाः श्वासोच्छ्वासक्रकचेन शरीरवृक्षं छिनत्ति । मृत्युः खलु रागद्वेषविषज्वालाव्याकुलतया तृषार्त इवाऽऽयुष्यजलं पिबति । यथा तैलयन्त्रं तिलान् निष्पीडयति, तथा मृत्युः प्राणिनां शरीराणि निष्पीड्य नाशयति । स लोकत्रयवर्तिनः प्राणिनः क्षोभयति । मृत्योपरागमनं प्रागेव षण्मासतः सुराणामपि कल्पतरुपुष्परचितमालां मुकुलयति, चेतांसि तेषां शोकसागरे निमज्जयति । मूर्छान्धकारं पश्यन् मृत्युरूप उलूको धावन् समायाति ।

हिमानीव कमलवनानि जरा पञ्चेन्द्रियाणि विकृतानि कुर्वती शिथिलयति । सा भक्षितविषवत् त्वरितमेव शरीरं संहरति । भार्याऽपि जरावस्थं पुरुषम्–' अय-

---

काष्टको घुन की तरह मृत्यु मेरे शरीर को घुना रही है । मृत्युरूपी बढई श्वासोच्छ्वासरूप आरे से इस शरीररूप वृक्ष को रात दिन काट रहा है । यह मृत्यु रागद्वेषरूप विषकी ज्वाला से व्याकुल जैसी बना हुआ तृषार्त की तरह आयुरूपीजल को पी रहा है जैसे तैल यंत्र-कोल्हू-तिलों को पेल डालता है उसी प्रकार मृत्यु प्राणियोंके शरीर को निष्पीडित कर डालता है । ऐसा तीन लोक में कोई भी प्राणि नही है जो इस मृत्युसे क्षुभित न हो रहा हो । मृत्युके आगमन के छहमास के पहिले से देवताओं की भी कल्पवृक्षों के पुष्पों की रचित माला कुम्हला जाती है उनका मन शोक सागर में इस कारण से डूब जाता है । मूर्च्छारूपी अंधकार को देखकर मृत्युरूपी उलूक दौड़ता हुआ आ जाता है । हिम संतति (हिम समूह) जिसतरह कमल वनो को विकृतकर शिथिलकर देती है उसी तरह जरावस्था भी पंचेन्द्रियों को विकृत कर शिथिल कर

ની જેમ મૃત્યુ મારા શરીરને નષ્ટ કરી રહ્યાં છે. મૃત્યુ રૂપી સુથાર શ્વાસોચ્છ્વાસ રૂપી કરવત વડે શરીર રૂપી વૃક્ષને રાત દિવસ કાપી રહ્યો છે. આ મૃત્યુ રાગદ્વેષ રૂપી વિષની જવાળા થી વ્યાકુળ થઇને તરસ્યાની પેઠે આયુષ્ય જળને પી રહ્યું છે. જેમ ઘાણી તલોને પીલી નાખે છે તેમજ મૃત્યુ પ્રાણીઓના શરીરોને નિષ્પ્રાણ બનાવીને નષ્ટ કરીનાખે છે. ત્રણે લોકમાં એવું કોઈ પ્રાણી મને દેખાતું નથી કે જે મૃત્યુથી ક્ષોભ પામતું ન હોય. મૃત્યુના છ મહિના પૂર્વે દેવોની પણ કલ્પ વૃક્ષના પુષ્પોની માળાઓ ચીમળાઈ જાય છે. તેમનુ મન શોક સાગરમાં ડૂબી જાય છે. મૂર્છા રૂપી અંધારાને જોઇને મૃત્યુ રૂપી ઘુવડ દોડતો આવે છે. ઝાકળો જેમ કમળ વનોને નષ્ટ કરી નાખે છે, શિથિલ બનાવીદે છે તેમજ ઘડપણ પાંચે ઇન્દ્રિયોને વિકૃત કરીને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुष्टू ' इति मन्यते, पुत्रादयोऽपि नादियन्ते । जराज्वाला-श्वासकासधूमैर्जीवं व्याकुलयन्ती यस्मिन् शरीरे प्रज्वलति, तद् भस्मसाद् करोति। जरा खलु सर्वापदामास्पदं प्रबलानलशिखेव सकलसुखमनोरथ विनाशिनी । अलमधिकेन मृत्युजरादि संसारस्वभावचिन्तनेन । मृत्युजरानलप्रतप्तस्य मम निष्क्रमणमेव शरणं भविष्यति, यतः—

संसारमहारण्ये मनुष्यदेहः खलु समाधिरूपस्य कल्पतरोः क्षेत्रम्। तच्च विशिष्ट पुण्यपुञ्जरूपहलेन कृष्टम् । निष्क्रमणं तस्य वृक्षस्य बीजम् । वैराग्यजलाभिषेकेण

डालता है । भक्षित विष की तरह तुरत ही शरीर को नष्ट कर देती है भार्या भी जरावस्थापन्नपुरुष को " यहउष्ट्र है " ऐसा मानने लगती है। पुत्रादिक उसका अपमान करने लगजाते है। वे इसका जरा भी सन्मान नही करते। यह जरारूपी ज्वाला श्वास कासरूपी धूम से जीव को व्याकुल करती हुई जिस शरीर मे प्रज्वलित होजाती है उसे भस्मसात ही कर डालती है। यह जरावस्था समस्त आपत्तियो का एक स्थान है। प्रबल अग्नि की ज्वाला के समान समस्त सुखों के मनोरथों को नाश करने वाली है। मृत्यु, जरा, आदि रूप संसार के स्वाभाव के चिन्तवन से अब बस रहो। मृत्यु तथा जरा रूप वह्नि की शिखा से प्रतप्त हुए मुझे तो अब निष्क्रमण (दीक्षा) ही एक शरण भूत होगा। कारण संसाररूप इस गहनवन में यह मनुष्य देह समाधि रूप कल्पवृक्ष का क्षेत्र है। यह विशिष्ट पुण्य पुंजरूप हल से जोता गया है। निष्क्रमण (दीक्षा) उस वृक्ष का बीज है वैराग्यरूप जल के सिंचन से

શિથિલ કરીનાખે છે. ખાધેલા વિષની જેમ તે શરીરને જલ્દી નષ્ટ કરે છે. પત્ની પણ ઘરડા પુરુષને 'આ ઉંટ છે' એમ માને છે. પુત્ર વગેરે પણ તેમને તિરસ્કારે છે. તેઓ થોડુપણ તેમનું સન્માન કરતા નથી. આ ઘડપણની જવાળા શ્વાસ, કાસરૂપી ધુમાડાથી જીવને વ્યાકુળ કરીને જે શરીરમાં સળગી ઉઠે છે તેને ભસ્મીભૂત કરી નાખે છે. ઘડપણ બધી આફતોનું એકમાત્ર સ્થાન છે. વિકરાળ અગ્નિની જવાળાઓની પેઠે બધાં સુખોનો તેમજ મનોરથોનો મૃત્યુ નાશ કરનારુ છે. મૃત્યુ, ઘડપણ વગેરે ના સ્વભાવ વાળા આ જગત વિષે મારે હવે કંઈ વિચાર કરવો નથી. મૃત્યુ તેમજ ઘડપણ રૂપી અગ્નિની જવાળાઓથી સંતપ્ત થયેલા મારામાટેતો હવે નિષ્ક્રમણ એટલે કે દીક્ષાગ્રહણ કરવી-જ શરણ ભૂત થશે કેમકે સંસારરૂપી ભયંકર વનમાં આ મનુષ્ય શરીર સમાધિ રૂપી કલ્પવૃક્ષનું ક્ષેત્ર છે. આ વિશિષ્ટ પ્રકારના ઉત્તમ પુણ્યરૂપી હળથી ખેડવામાં આવ્યું છે. નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) તે વૃક્ષનું (કલ્પવૃક્ષનું) બી છે. વૈરાગ્યરૂપી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाधिरूपः कल्पतरुरुत्पद्यते च । वैराग्यजलाऽऽगमनमार्गरूपा नालिका तत्र सद्भावना । ज्ञानदर्शनरूपाणि तत्र पुष्पाणि, स्वर्गापवर्गरूपाणि फलानि । देवलोके यत् सुखं, यच्च सिद्धावस्थां प्राप्तस्थानन्तसुखं, तदेव तत्फलरसः, इति ॥ सू० १२ ॥

मूलम्–तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे थावच्चापुत्तं एवं वयासी–एएणं देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-जइणं एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्तं अविरइकसायसंचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥ सू० १३ ॥

टीका—' तएणं से कण्हे ' इत्यादि । ततः=तदनन्तरं खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणैवमुक्तः सन् स्थापत्यापुत्रम् एवं=वक्ष्माणप्रकारेण अवादीत्–

समाधि रूप कल्पतरू उत्पन्न होता है और बढता है । वैराग्यरूप जल के आने के लिये मार्गरूप नाली के समान वहां सद्भावना है । ज्ञान रूप वहां पुष्प हैं । स्वर्ग एवं अपवर्ग (मोक्ष रूप इसके फल है देवलोक में जो सुख है तथा सिद्धावस्था प्राप्त जीव को जो अनन्त सुख है वही सब इसके फलों का रस है ॥ सू० १२ ॥

' तएणं से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे उन कृष्ण वासुदेव ने (थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्र के इस प्रकार कहने पर (एवं वयासी) उससे ऐसा कहा–(एएणं देवाणुप्पिया !

જળના સિંચનથી સમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી પાણીને લાવવામાટે સદ્ભાવનાઓરૂપી નાળી છે. જ્ઞાન દર્શન જ ત્યાં પુષ્પ છે. દેવલોકમાંનું સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવને જે અનંત સુખ છે તેજ આ બધા ફળોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

(तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥)

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યાર પછી (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણ વાસુદેવે (थावच्चा पुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे) સ્થાપત્યા પુત્રની આ વાત સાંભળીને (एवं वयासी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे देवानुप्रिय ! एते मृत्युजरादयः खलु दुरतिक्रमणीयाः=दुःपरिहरणीया, दुर्निवारा इत्यर्थः । एयमेवार्थं स्पष्टीकुर्वन्नाह—' णो खलु सक्का ' इत्यादि । नो खलु शक्याः सुबलिकेन अनन्तबलवता देवेन=तीर्थंकरेणाऽपि, यद्वा—महाबलवता केनापि देवेन, दानवेन वा निवारयितुं निवर्तयितुं नो खलु शक्याः, मृत्युजरादय इत्यन्वयः । देवो वा दानवो वा मृत्युजरादीन् रिपून् वारयितुं समर्थो नास्तीत्यर्थः । नान्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण आत्मसंचितसकलकर्मक्षयं विनाऽन्योपायेन मृत्युजरादि परिहारो नैव भविष्यतीति भावः ।

ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवमेवमवादीत्—यदि खलु एते दुरतिक्रमणीया नो खलु शक्याः—यावत्—यावत्करणादत्र—' सुबलिकेन देवेन दान-

---

दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थं अप्पणो कम्मक्खएणं) हे देवानुप्रिय ! ये मृत्यु जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं दुःपरिहरणीय हैं । इसका निवारण करना संसारावस्था जीव के लिये सर्वथा अशक्य है । इसी अर्थ को सूत्रकार स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि सुबलिक अनन्त बल के स्वामी तीर्थंकर देव भी अथवा महाबलवान कोई भी देव या दानव इन मृत्यु जरा आदि कों को निवारण करने के लिये सामर्थ्य शाली नहीं हो सके हैं । केवल आत्म संचित सकल कर्मों का क्षय ही एक ऐसा उपाय है जो इनका निवारण कर सकता है । इनके सिवाय और कोई दूसरा उपाय नहीं है । (तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) कृष्ण वासुदेव की इस बात को सुनकर स्थापत्यापुत्र ने तब उन से इस प्रकार कहा— (जइणं एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव न-

---

તેમણે કહ્યું (एए णं देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणा वि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं) હે દેવાનુપ્રિય ! આ મૃત્યુ વગેરે દુરતીક્રમણીય છે. સંસારમાં રહેતા પ્રાણીને માટે તેનું નિવારણ અશક્ય છે. " સૂત્રકાર અહીં એજ અર્થને સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે કે સુબલિક એટલે કે અનન્ત બળશાળી તીર્થંકર દેવ અથવા તો મહાબળવાન કોઇ દેવ કે દાનવ પણ આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ને દૂર કરવાનું સામર્થ્ય ધરાવી શકયા નથી. ફકત આત્મ સંચિત સકળ કર્મોનો ક્ષયજ એક માત્ર ઉપાય છે કે જે આ મૃત્યુ, ઘડપણ વગેરેનું નિવારણ કરી શકે. એના સિવાય બીજા કોઇ ઉપાય અમને દેખાતા નથી (तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યા પુત્રે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (जइणं एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नन्नत्थ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेन वा निवारयितुम् ' इति पूर्वोक्तपाठस्य संग्रहः । अन्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण, तद्=तस्मात्, हे देवानुप्रिय ! ' अन्नाणमिच्छत्त अविरइ-कसायसंचियस्स ' अज्ञानमिथ्यात्वाविरतिकषायसञ्चितस्य=अज्ञानम्—ज्ञानावरणीयोदयजनितात्मपरिणामरूपं संशयविपर्ययादिलक्षणं मिथ्याज्ञानं, मिथ्यात्वं=मिथ्यात्वमोहनीयोदयजनितात्मपरिणामरूपं तत्त्वार्थाश्रद्धानं कुदेवादिषु सुदेवादिबुद्धिर्वा, अविरतिः=विरतेर्विपरीताऽविरतिः, अनिवृत्तिः हिंसादि पापस्थानेभ्यो परिणामाभावः, सावद्य प्रवृत्तिरित्यर्थः । कषायाः=क्रोधमानादयः, तैः संचितस्य युक्तस्य आत्मनः कर्मक्षयं ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्मणां नाशं कर्तुमिच्छामि खलु इत्यन्वयः ॥ सू० १३ ॥

अत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसाय संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए) यदि ये जन्म जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं इन्हें दूर करने के लिये सुबलिक देव दानव भी समर्थ नही हैं केवल कर्म क्षय ही इनकी निवृत्ति का उपाय है- जब ऐसी बात है तो हे देवानुप्रिय ! मैं ज्ञानावरणीय के उदय से जनित आत्म परिणामरूप अज्ञान से-संशय विपर्यय आदि रूप मिथ्या ज्ञान से-मिथ्यात्व मोहनीय के उदय से जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धा न रूप आत्मपरिणाम से-अथवा कुदेव आदि मे सुदेव आदि की विपरीताभि निवेश रूप बुद्धि से हिंसादिक पापस्थानो से अनिवृत्ति रूप परिणाम से सावद्य कार्यों मे प्रवृत्ति से क्रोध मान आदि रूप कषायों से संचित किये गये इन ज्ञानावरणीय आदि रूप आठ प्रकार के कर्मों को क्षय करने की इच्छा कर रहा हूँ । सूत्र " १३ "

અપ્પણો કમ્મક્ખએણં તં ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરઇ કસાય સંચિયસ્સ અત્તણો કમ્મક્ખયં કરિત્તએ) જો એ જન્મ જરા (ઘડપણ) વગેરે દુરતી ક્રમણીય છે, એમનાથી મુક્તિ મેળવવાની સુબલિક દેવ દાનવ પણ સામર્થ્ય ધરાવતા નથી. ફક્ત કર્મ-ક્ષય જ એમની નિવૃત્તિનો ઉપાય છે, ત્યારે હે દેવાનુપ્રિય ! હું જ્ઞાનાવરણીયના ઉદયથી જનિત આત્મપરિણામરૂપ અજ્ઞાનથી સંશય વિપર્યય વગેરેના મિથ્યા જ્ઞાનથી, મિથ્યાત્વ મોહનીયના ઉદયથી જનિત તત્ત્વાર્થ અશ્રદ્ધાન રૂપ આત્મ પરિણામથી, અથવા તો કુદેવ વગેરેમાં સુદેવ વગેરેની વિપરીતાભિનિવેશરૂપ બુદ્ધિથી, હિંસાવગેરે પાપનાં સ્થાનોથી, અનિવૃત્તિરૂપ પરિણામથી, સાવદ્ય કામોમાં પ્રવૃત્તિથી ક્રોધ, માન વગેરે કષાયોથી સંચિત કરવામાં આવેલા જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ના આઠ પ્રકારના કર્મોનો ક્ષય ચાહું છું. ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया! बारवइए नयरीए सिंघाडगतियग चउक्कचच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए तं जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय माडंबिय इब्भसेट्ठि--सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयंति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्सविय से मित्तनाइ । नियगसंबंधि परिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति ॥सू०१४॥

टीका—' तएणं से कण्हे ' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या पुत्रेणैवमुक्तः सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रियाः । यूयं गच्छत द्वारवत्या नगर्यां

' तएणं से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब(थावच्चा पुत्तेणं) स्थापत्या पुत्र के द्वारा (एवं वुत्ते समाणे) इस प्रकार कहने पर उन्हों ने (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएणं से कण्हे वासुदेवे) ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएणं) त्यारबाद (से कण्हे वासुदेवे) ते કૃષ્ણ વાસુદેવને જ્યારે (थावच्चापुत्तेणं) स्थापत्या પુત્રે (एवं वुत्ते समाणे) આ રીતે કહ્યું ત્યારે તેમણે (कौडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા, (सद्दावित्ता,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु=राजमार्गेषु 'हत्थिकंधवरगया' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धारूढाः महता महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ ब्रुवन्तः उद्घोषणं कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह-'एवं खलु' इत्यादि ।

एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अयं स्थापत्यापुत्रः संसारभयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी=राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तलवरो वा कौटुम्बिकमाडम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति-

(गच्छह णं देवाणुप्पिया बारवइए नयरी ए सिंघाडग तियग चउक्कचच्चरजावहत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा२ उग्घोसणं करेह) हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृंगाटक, त्रिक,चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमें-राजमार्गोंमें- हाथी के स्कन्ध पर चढे हुए तुम सब लोग बडे जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एवं खलु देवानुप्पिया ! थावच्चा पुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्ममरणा णं इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे देवानुप्रियों ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र संसार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुंडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा हैं-(तं जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय माडंबिय इब्भसेट्ठिसेणावइ सत्थवाहे व थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एवं वयासी) अने બોલાવીને તેમને કહ્યું-(गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवइए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને દ્વારવતી નગરીના શૃંગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપથોમાં, રાજમાર્ગોમાં હાથી ઉપર સવાર થયેલા તમે બધા મોટા સાદે આમ ઘોષિત કરો-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्ममरणाणं इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए) હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો આ સ્થાપત્યાપુત્ર સંસારભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ અને મૃત્યુથી ભયત્રસ્ત થઇને અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે મુંડિત થઇને દીક્ષાગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે (तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवरा या वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरेवा कोडुंबिय माडंबिय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहेवा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) તો હે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सार्थवाहा स्थापत्यापुत्रं प्रव्रजन्तमनुप्रव्रजति स्थापत्यापुत्रेण सह यः कोऽपि निष्क्रमणं कर्तुमिच्छति तस्मै खलु कृष्णवासुदेवः 'अणुजाणइ' अनुजानाति, आज्ञां ददाति। 'पच्छाउरस्सवियं' पश्चादातुरस्यापि च-पश्चात् आतुरस्य=द्रव्याद्यभावाद् दुःखितस्य तस्य=तत्सम्बन्धिनः मित्रज्ञातिनिजकसम्बन्धिपरिजनस्य 'जोगखेमं' योगक्षेमं अलब्धलाभो योगः लब्धपरिरक्षणं क्षेमं तयोः समाहारद्वन्द्वः योगक्षेमं वर्तमानं प्रतिवहति ये प्रव्रज्यायां प्रवृत्ता भविष्यन्ति, तत्सम्बन्धिमित्रादीनां यत् खलु योगक्षेमरूपकार्यं कर्तव्यतया वर्तते, तत् सर्वं कृष्णवासुदेवः संपादयिष्यतीत्यर्थः। इति कृत्वा इत्येवं विज्ञापनं मनसि निधाय घोषणां=वार्तारूपां, घोषयत यथेयं वार्ता द्वारावतीनगरी निवासिनां सर्वेषां कर्णगता भवेत्,

युवराज, देवी, राज्ञी, राजकुमार ईश्वर, तलवर, कौडुम्बिक, माण्डविक, इभ्यश्रेष्ठी, सेनापति अथवा सार्थवाह स्थापत्यापुत्र के साथ दीक्षा लेना चाहते हो उसलिये कृष्णवासुदेव आज्ञा प्रदान करते हैं (पच्छातुरस्स वि य से मित्तनाईनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहति त्ति कट्टुघोसणं घोसेह जाव घोसंति) जो दीक्षा लेनेवाले के कुटुंबी जन किसी भी प्रकार से दुःखी होंगे तो उनके संबंधी मित्र, ज्ञाति, निजक, संबंधी परिजन के योग क्षेम को भी कृष्ण वासुदेव करेंगे तात्पर्य इसका यह है कि जो जन प्रव्रज्या में प्रवृत्त होंगे उनके सम्बन्धी मित्रादिकों का जो कर्तव्यतया योग-अलब्ध का लाभ, क्षेम-लब्ध का परिरक्षण रूप कार्य होगा वह सब कृष्ण वासुदेव संपादित करेगा" इस प्रकार की इस घोषणा को हे देवानुप्रियों! तुम अपने चित्त में अच्छी तरह धारण कर जिस प्रकार यह बात द्वारावती नगरी

દેવાનુપ્રિયો ? જે કોઇ રાજા, યુવરાજ, દેવી, રાજકુમાર, ઈશ્વર, તલવર કૌટુંબિક, માડંબિક ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ કે સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ચાહે છે તેમના માટે કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા સ્વીકારવાનિ આજ્ઞા પ્રદાન કરે છે. (पच्छातुरस्स वि य से मित्तनाईनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहति त्ति कट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति) દીક્ષાલેનાર કુટુંબીઓ જો તેમની દીક્ષાબાદ ગમેતે પ્રકારે દુઃખી હશે તો તેમના સંબંધી, મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક સંબંધી પરિજનોનું યોગક્ષેમ પણ કૃષ્ણ વાસુદેવ કરશે આનો ભાવાર્થ એ પ્રમાણે છે કે જે માણસો પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરશે તેમના સંબંધી મિત્ર વગેરેનું જે કર્તવ્યતાયોગ-અલબ્ધનો લાભ, ક્ષેમ-લબ્ધનું પરિરક્ષણરૂપ કાર્ય થશે-તે બધું કૃષ્ણ વાસુદેવ પુરૂં કરશે. હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોષણાને તમે સારીપેઠે ચિત્તમાં ધારણ કરો જેથી દ્વારાવતી નગરીના દરેકે દરેક માણસ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथोच्चैः स्वरेण दुन्दुभ्यादिवाद्यैः सह भाषणं कुरुतेत्यर्थः । यावद् घोषयन्ति । कृष्णवासुदेवस्यादेशानुसारेण आदेशकारिणः पुरुषाः द्वारावत्यां नगर्यां घोषणां कृतवन्त इत्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तएणं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढं समाणं मित्तणाइपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं, तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं (कलसेहिं) ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागातिपडागं पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । स्थापत्यापुत्रस्य अनुरागेण=स्नेहेन पुरुषसहस्रं निष्क्रमणाभिमुखं स्नातं सर्वालङ्कारविभूषितं प्रत्येकं प्रत्येकं पुरुषसहस्रवाहिनीषु

के समस्त मनुष्यों के कर्ण गोचर हो सके इस तरह से बडे २ जोर से दुंदुभि आदि बाजों के साथ करो । इस तरह कृष्णवासुदेव की इस आज्ञा को उन आदेश कारीपुरुषों ने प्रमाणभूत मान कर उसे द्वारावती नगरी में घोषित करके सुना दिया । सूत्र "१४"

'तएणं थावच्चा पुत्तस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं) स्थापत्य पुत्र के अनुराग से (पुरिससहस्सं) १ हजार पुरुष (निक्खमणाभि

સુધી આ વાત સારી રીતે પહોંચી શકે તમે મોટેથી દુંદુભિ વગેરે વાજાંઓ વગાડો અને આ વાતની ઘોષણા કરો કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞાને કૌટુંબિક પુરુષોએ સત્યપ્રમાણ માનીને દ્વારાવતી નગરીમાં તેની ઘોષણા કરી. ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

(तएणं थावच्चापुत्तस्स इत्यादि)

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રત્યે વિશેષ પ્રેમ હોવાને કારણે (पुरिस सहस्सं) એક હજાર પુરુષો (निक्ख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिबिकासु दुरूढं=समारूढं सत् मित्रज्ञातिपरिवृतं स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम्। ततः खलु स कृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउब्भवमाणं' प्रादुर्भवत् पुरुषसहस्रं पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान्आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिषेकः, तथैव 'सेयापीएहिं श्वेतपीतैः जलपूर्णैरूप्यसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुकं पुरुषसहस्रसहितं–स्थापत्यापुत्रं स्नपयति, स्नपयित्वा यावद्वर्षालङ्कारविभूषितं कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोह्य कृष्णवासुदेवः द्वारावतीनगरीमध्यभागेन गत्वा-अर्हतोऽरिष्टनेमेः छत्रोपरिच्छत्रं छत्रत्रयं, पताकातिपताकां=पताकोपरिपताकां पुरुषवृन्दैः सह पश्यति। 'विज्जाहरचारणे' विद्याधरचारणान् विद्याधरान्=

मुहं) निष्क्रमण के सन्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (ण्हायं) उन्होंनेस्नात करके (सव्वालंकरविभूसियं) सब प्रकार के अलंकारो से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तेयं २पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढं समाणं मित्तणाइपरिवुडं) बाद में मित्रा दि परिजनों से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेंसे १ हजार पुरूषों को वहन करनेवाली शिबिकापर आरूढ होकर (थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं) स्थापत्या पुत्र के पास आया। (तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा तो (पासित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) देखकर उन्होंने कौटुंबिक पुरूषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं पासइ – पासित्ता

मणाभिमुहं) નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) માટે તૈયાર થઈ ગયા. (ण्हायं) તેઓ નહાયા, (सव्वालंकरविभूसियं) બધી જાતનાં ઘરેણાંઓથી તેમને પોતાનાં શરીર શણગાર્યાં. (पत्तेयं २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढं समाणं मित्तणाई परिवुडं) ત્યાર બાદ મિત્ર વગેરે પરિજનોની સાથે તેઓમાંથી દરેક દીક્ષાર્થી એક હજાર પુરુષો વહન કરે એવી પાલખી ઉપર સવાર થઈને (थावच्चा पुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं) સ્થાપત્યા પુત્રની પાસે આવ્યો. (तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ) કૃષ્ણવાસુદેવે જ્યારે એકહજાર પુરુષોને સ્થાપત્યાપુત્રને ત્યાં આવેલા જોયા (पासित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) તેમણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને કહ્યું. (जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं पासइ पासित्ता विज्जा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारणश्रमणान् यावत्-अत्र 'जंभए य देवे ओवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्धेयः, जृम्भकदेवांश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकातः 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेसं सव्वं तं चेव आभरण० तएणं से थावच्चागाहावइणा हंसलक्खणेणं पडगसाडएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ, हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाति अंसूणि विणिम्मुंचमाणी २ एवं वयासी-

विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ) जिस प्रकार मेघ कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ था उसी प्रकार जलपूर्ण श्वेतपीतकलशो द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक किया। अभिषेक कर के फिर उन्होने उसे सर्व प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर आरूढ कराकर द्वारावती नगरी के ठीक बीचो बिच से होकर लेचले। चलते २ जब उन्हों ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के छत्रोपरिछत्र-तीन छत्रों को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दों के साथ देखा-तथा विद्याधरों को चारण श्रमणों को आकाश से उतरते हुए जृंभक देवों को देखा-तो देख कर वे शिबिका से नीचे उतरे ॥ सू० १५ ॥

हरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ) જેમ મેઘકુમારનો નિષ્ક્રમણાભિષેક થયો તેમજ જળથી પરિપૂર્ણ સફેદ પીળા કળશો વડે તેમજ ચાંદી સોનાના ઘડાઓ વડે કૃષ્ણવાસુદેવે દીક્ષાર્થી સ્થાપત્યા પુત્ર તેમજ તેની સાથેના એક હજાર પુરુષોનો અભિષેક કર્યો. અભિષેક પછી તેમણે તેને બધાં ઘરેણાંઓથી શણગાર્યો. શણગાર્યા બાદ તેઓ પુરુષ સહસ્ર વાહિની પાલખી ઉપર સ્થાપત્યા પુત્રને બેસાડીને દ્વારાવતી નગરીની બરાબર વચ્ચે ના માર્ગે થઈને ચાલ્યા. જતાં જતાં જ્યારે તેઓએ અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુના છત્ર ઉપર છત્ર આમ ત્રણ ઉપરા ઉપરી છત્રો, પતાકાની ઉપર પતાકાઓને તેમજ પુરુષ સમાજને જોયો અને વિદ્યાધરોને ચારણ શ્રમણોને આકાશમાંથી નીચે ઉતરતા, તે જ જૃંભકદેવોને જોયા ત્યારે જોઈને તેઓ પાલખી ઉપરથી નીચે ઉતરી પડયા ॥૧૫॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परिक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं जामेवादिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० १६ ॥

' तएणं से कण्हे ' इत्यादि ।

टीका—ततः खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रं पुरतः ' काउं ' कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः, तत्रैवोपागच्छति अवमुञ्चति । उपागत्य शेषं सर्वं तदेव शेषं=आदक्षिणप्रदक्षिणादिकं सर्वं चरितं यत् खलु मेघकुमारस्य, तदेवात्र वाच्यम् । स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपादीशानकोणदिग्भागे स्वयमेव ' आभरणम ल्लालंकारे ' आभरणमाल्यालङ्कारान् ' ओमुयइ ' अवमुञ्चति अवतारयति । ततः खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी हंसलक्षणेन हंसस्वरूपेण शुक्लवर्णेन ' पडगसाडए णं ' पटशाटकेन पृथुलवस्त्रेण आभरणमाल्यालङ्कारान् प्रतीच्छति प्रतिगृह्णाति ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्णवासुदेव (थावच्चा पुत्तं) स्थापत्या पुत्र को (पुरओकाउं) आगे करके (जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागच्छइ) जहां अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु थे वहां गये (उवागच्छित्ता सेसं सव्वं तं चेव आभरण०) वहां जाकर उन्हों ने प्रभु की आदक्षिण प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की। मेघकुमार ने दीक्षा अंगीकार करते समय जो कुछ किया वह सब वहां स्थापत्या पुत्र ने भी किया बाद में स्थापत्या पुत्रने अरिष्टनेमि प्रभु के पास से ईशानकोण में जाकर स्वयं ही अपने माला और अलंकारों को उत्तारा (तएणं से) इस समय वहां उपस्थित रही हुई उसकी माता गाथा पत्नी ने हंस के जैसी शुक्लवर्णवाली अपनी पटशाटिका में उनअवता-

(तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि) ॥

ટીકાર્થ—(तएणं) त्यारબાद (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણવાસુદેવ (थावच्चा पुत्तं) સ્થાપત્યા પુત્રને (पुरओ काउं) આગળ રાખીને (जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ હતા ત્યાં ગયા. (उवागच्छित्ता सेसं सव्वं तं चेव आभरण०) ત્યાં જઈને તેમણે પ્રભુની આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણની સાથે વંદના કરી મેઘકુમારે દીક્ષા વખતે જે કંઈ કર્યું હતું તે બધું સ્થાપત્યાપુત્રે પણ કર્યું. ત્યાર બાદ સ્થાપત્યાપુત્રે અરિષ્ટનેમી પ્રભુની પાસેથી ઈશાન કોણમાં જઈ ને જાતે જ માળા અને ઘરેણાંઓ ઉતાર્યા, (तएणं से) તે વખતે તેની માતા સ્થાપત્યાગાથાપત્ની ત્યાં હતી. તેમણે હંસ જેવી સ્વચ્છ સફેદ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं ' हारवारिधाराछिन्नमुक्तावली प्रकाशानि ' अंसूणि ' अश्रूणि ' विणिम्मुंचमाणी २, विनिर्मुञ्चन्ती २ मुक्ताहारजलधारा विकीर्णमुक्तावत्स्वच्छाश्रुबिन्दून् पुनः पुनर्निपातयन्तीत्यर्थः, एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत्-यतितव्यं जात !=हे पुत्र ! संयमाराधनार्थं यत्नं कुरु, घटितव्यं जात ! हे वत्स ! संयमे संलग्नोभव, पराक्रमितव्यं जात !=हे अङ्ग ! संयमप्रतिकूलान् आलस्यादीन वारयितुं कायादिबलं प्रदर्शय, अस्मश्च अर्थे ' णो पमाएयव्वं ' नो प्रमादितव्यम्=प्रमादस्य वशे कदापि मा भूः, इत्युक्त्वा = इति कथयित्वा, स्थापत्यापुत्रस्य माता स्थापत्या गाथापत्नी यस्यादृशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आयाता तस्यामेवदिशि प्रतिगता ॥ सू० १६ ॥

रित माला अलंकारों को लेकर रखलिया। रखते समय वह (हार वारिधार छिन्न मुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुंचमाणी २ एवं वयासी) हारवारिधारा और छिन्नमुक्तावली के समान आंसुओं को बार २ बहाती जाती थी। इसी स्थितिमें बनी हुई उस स्थापत्या गाथा पत्नी ने फिर अपने पुत्र से इस प्रकार कहा-(जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परिक्कमियव्वं जाया ! अस्सिंचणं अट्ठे णो पमाएयव्वं जामेव दिसिंपाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) हे पुत्र। संयम की आराधना के लिये तुम प्रयत्न शील रहना। हे पुत्र! तुम संयम में संलग्न रहना। हे पुत्र संयम के प्रतिकूल आलस्य आदिकों को निवारण करने के लिये अपने शारीरिक आदि बल को प्रस्फुरित करते रहना। इस संयम रूप अर्थमें हे बेटा? तुम कभी भी एकक्षण भी प्रमादके वशवर्ती मत होना। ऐसा कहकर वह माता स्थापत्यागाथा पत्नी जिस दिशा से आई थी उसी दिशा में वापिस चली गई ॥ सू० १६ ॥

સાડીમાં તે ઉતારેલી માળા અને ઘરેણાંઓ વગેરે લઈ લીધાં માળા એને ઘરેણાં ઓ સાડીમાં મૂકતી વખતે (हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुंच माणी २ एवं वयासी) તેની આંખોમાંથી નીકળતાં આસુંઓ હાર પાણીની ધારા અને છિન્ન મુક્તવળીની જેમ સતત ટપકી રહ્યા હતાં. આમ આંસુઓની આંખોથી સ્થાપત્યાગાથા પત્ની પોતાના પુત્રને કહેવા લાગી-(जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परिक्कमियव्वं जाया अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) હે પુત્ર! સંયમની સાધના માટે તમે સદા સાવધ રહેજો હેવત્સ! સંયમની સાધના માટે પ્રતિકૂળ આળસ્ય વગેરેના નિવારણ માટે પોતાના શારીરિક બળ પ્રસ્ફુરિત કરતા રહે જો આ સંયમની સાધનામાં તમે કોઇ પણ વખતે પ્રમાદ કરતા નહિ. આ પ્રમાણે સંબોધીને સ્થાપત્યાપત્ની ત્યાંથી પોતાને ઘેર પાછી વળી: સૂત્ર ॥ ૧૬ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ जाव पव्वइए। तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरति।

तएणं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं अब्भणुन्नाउ समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिआ! तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ सू० १७॥

'तएणं से थावच्चापुत्ते' इत्यादि।

टीका—ततः तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषसहस्रेण सार्धं स्वयमेव

'तएणं से थावच्चा पुत्ते' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पंचमुष्टी लोंच किया-(जाव पव्वइए) यावत्

(तएणं से थावच्चा पुत्ते) इत्यादि॥

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) दीक्षा पामेला એક હજાર પુરુષોની સાથે પોતાના વાળનું પાંચ મુષ્ઠી લુંચન કર્યું. (जाव पव्वइए) અનેર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति कृत्वा च यावत् प्रव्रजितः सहस्रपुरुषैः सह स्थापत्यापुत्रो ऽर्हदरिष्टनेमेः समीपे चत्वारिमहाव्रतानि उच्चारितवान्। ततस्तदनन्तरं स स्थापत्यापुत्रः ' अणगारे ' अनगारः द्रव्यतो भावतश्च मुनिर्जातः, स कीदृश इत्याह–'इरियासमिए ' ईर्यासमितः ईर्यासमितिः यतनापूर्वकं गमनं, तया समन्वितः, यथा कथमप्यन्यजीवविराधना न स्यात्तथोपयोगपूर्वकगमनवानित्यर्थः, ' भासासमिए ' भाषासमितः भाषासमितियुक्तः यावत् विहरति=यावच्छब्देन ' एषणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिया समिए " इत्यादि वाच्यम्। एषणासमितः=एषणासमितियुक्तः निर्दोषभिक्षाग्रहणशीलः, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः= भाण्डामात्रोपकरणानाम् आदाने ग्रहणे निक्षेपणायां स्थापने च या समितिस्तया युक्तः, उच्चारप्रस्रवण

प्रव्रजित होकर उसने सहस्र पुरुषोंके साथ अरिष्टनेमि प्रभुके समीप फिर पंचमहाव्रतोंका उच्चारण किया। इस तरह वे स्थापत्यापुत्र अब द्रव्य और भाव दोनों रूपसे अनगारावस्थापन्न बन गये। यही बात (तएणं से थावच्चा पुत्ते अणगारे जाए) इन पदों द्वारा व्यक्त की गई है। (ईरियासमिए, भासासमिए जाव विहरइ) वे यतना पूर्वक चलने लगे ईर्या समिति से युक्त बन गये– जिस तरह किसी भी अन्य जीव की विराधना न हो इस तरह उपयोग पूर्वक चलने लगे भाषा समिति आदि समिति से युक्त हो गये। यहां यावत् शब्द से एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेल्लजल्लसिंघाणपरिट्ठावणीया समिए " इन अवशिष्ट समितियों आदि का ग्रहण हुआ है। निर्दोष भिक्षा लेना एषणा समिति है। भाण्डामत्रादि उपकरणों के आदान में ग्रहण में और निक्षेपण में उपयोग पूर्वक प्रवृत्ति करना

પ્રવ્રજિત થઈ ને તેણે એક હજાર પુરુષોની સાથે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની સામે પંચ મહાવ્રતોનું ઉચ્ચારણ કર્યું. આ રીતે તે સ્થાપત્યા પુત્ર દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ અનગાર અવસ્થાપન્ન થઈ ગયા. આ વાત (तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए) આ પદો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે તેઓ કેવા અણગાર થયા તે નીચેના સૂત્રથી બતાવે છે (ईरिया समिए, भासा समिए, जाव विहरइ) ઈર્યાસમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા. એટલે કોઈપણ જીવને વિરાધના (કષ્ટ) થાયનહિ એવી રીતે જતનથી ચાલવા લાગ્યા. તે ભાષાસમિતિ વગેરે સમિતિથી યુકત થઈ ગયા. ' यावत् શબ્દથી (एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चार पासवण खेल्लजल्लसिंघाणपरिट्ठावणीया समिए) આ સમિતિઓ વગેરેનું ગ્રહણ થયું છે. નિર્દોષ ભિક્ષા સ્વીકારવી 'એષણા–સમિતિ' છે ભંડામત્રાદિ ઉપકરણોના આદાન એટલે ગ્રહણમાં અને નિક્ષેપણ મૂકવામાં ઉપયોગ પૂર્વક–પ્રવૃત્તિ થવી તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्लेष्मजल्लशिङ्घाणपरिष्ठापनिकासमितः उच्चारादीनां परिष्ठापनिकासमितः = उत्सर्जने शास्त्रोक्तविधिप्रवृत्तिः, तया युक्त इत्यर्थः । स मनः समितः वचः समितः कायसमितः, मनोगुप्तः वचनगुप्तः कायगुप्तः गुप्तेन्द्रियः इन्द्रियाणामसत्प्रवृत्तिनिवर्तनात् गुप्तब्रह्मचर्यः अक्रोधः अमानः अमायः अलोभ अतएव शान्तः, प्रशान्तः प्रशमभावसम्पन्नः, उपशान्तः, कषायकारणवर्जितः परिनिर्वृतः, योगत्रयसन्ताप-

इसका नाम भाण्डामत्रानिक्षेपणा समिति है तथा उभयकाल प्रतिलेखना करना उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्म, जल्ल शिङ्घाण इनके परिष्ठावन करने में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार प्रवृत्ति करना यह उच्चार प्रस्रवण श्लेष्म जल्ल शिंघाण परिष्ठापनिका समिति है। इसी तरह वे स्थापत्यानगार मनः समिति से, वचन समिति से कायसमिति से मनोगुप्ति से वचन गुप्ति से कायगुप्ति से युक्त हो गये तथा इन्द्रियों की असत् विषयो में प्रवृत्ति के निवर्तन से, गुप्तेन्द्रिय हो गये। मन, वचन और काय से पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले होने से गुप्त ब्रह्मचारी हो गये क्रोध कषाय से सर्वथा रहित होने से अक्रोध मान-कषाय के अभाव से अमान, मायाकषाय के अभाव से अमाय, लोभकषाय के अभाव होने से अलोभ परिणति वाले बन गये। इसी लिये वे शान्त प्रशान्त प्रशम भाव संपन्न, उपशान्त- कषायों के कारणों

ભાંડામત્રાનિક્ષેપણા સમિતિ છે, તેમજ બંને કાળમાં પ્રતિલેખના કરવી આ ચોથી સમિતિ છે ઉચ્ચાર, પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ, જલ્લ, શિંઘાણ એમનું પરિષ્ઠાવન કરવામાં શાસ્ત્રમાં કહ્યાં મુજબ પ્રવૃત્તિ કરવી આ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ જલ્લ શિંઘાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે. આ સમિતિથી પણ તેઓ યુક્ત હતા આ રીતે સ્થાપત્યા નગાર મનઃ સમિતિથી, વચન સમિતિથી, કાય સમિતિથી, મનોગુપ્તિથી કાયગુપ્તિથી યુકત થયા. તે ઈન્દ્રિયોની અસત વિષયોમાં પ્રવૃત્તિના નિવર્તનથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા. તે મન વચન અને કાય (શરીર) થી પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર હોવા બદલ ગુપ્ત-બ્રહ્મચારી થયા. તે સંપૂર્ણ રીતે ક્રોધ-કષાય વગર હોવા બદલ અક્રોધ માન કષાયના અભાવથી અમાન, માયા કષાયના અભાવથી અમાય, લોભ-કષાયના અભાવથી અલોભ પરિણતિવાળા થયા. અટલા માટે જ તે શાંત, પ્રશાંત પ્રશમભાવ સંપન્ન, તેમજ ઉપશાંત કષાયો ના કારણોથી વર્જિત થયા-પરિનિર્વૃત થયા-મન, વચન,અને કાયાએ ત્રણ યોગના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहित अनास्रवः, हिंसादिवर्जितः, अममः, ममत्वरहितः, अकिंचनः द्रव्यभावपरिग्रहवर्जितः छिन्नग्रन्थः, स्नेहरहितः, निरुपलेपः-द्रव्यभावलेपवर्जितः, कांस्यपात्रमिव मुक्ततोयः तोयरूपस्नेहरहितत्वात्, शङ्ख इव निरञ्जनः रागसम्बन्धरहितत्वात्, जीवइवाप्रतिहतगतिः सर्वदेशविहारित्वात्, जात्यकनकमिव जातरूपः निरतिचारसंयमवत्त्वात्, गगनमिव निरालम्बनः देशग्रामकुलाद्यालम्बनरहितत्वात्, आदर्शफलक इव प्रकटस्वभावः दर्पणवत् स्वच्छस्वभावत्वात्, वायुरिव अप्रतिबद्धः क्षेत्रादिषु प्रतिबन्धरहितत्वात्, शारदसलिलमिवशुद्धहृदयः=शरदृतुजलवन्निर्मलहृदयः

से वर्जित हुए-परिनिर्वृत हो गये-मनवचनकाय के सन्ताप से रहित बन गये। अनास्रव- हिंसादि पापों से रहित हो गये, ममता भाव से रहित हो गये, अकिंचन हो गये, द्रव्य और भावरूप परिग्रह से मुक्त बन गये। स्नेह रहित हो गये निरुपलेप हो गये द्रव्य भाव लेप से रहित हो गये। तोय जलरूप स्नेह से रहित होने के कारण कांस्य पात्र की तरह वे मुक्ततोय बन गये। राग के संबन्ध से रहित होने के कारण वे शंख की तरह निर्मल हो गये। सर्व देश में बिहारी होने के कारण वे जीव की तरह अप्रतिबंध विहारी बन गये। निरतिचार संयम के पालक होने के कारण वे शुद्धसुवर्ण की तरह वे जातरूप हो गये। देश, ग्राम आदि के आलंबन से रहित होने के कारण वे गगन की तरह निरालम्ब हो गये। दर्पण की तरह स्वच्छ स्वभाव से युक्त होने के कारण वे प्रकट स्वभाव हो गये। क्षेत्रादिकों में प्रतिबन्ध रहित

સંતાપથી રહિત થયા અનાસ્રવ–હિંસા વગેરે પાપકાર્યોથી રહિત થયા, મમતા ભાવથી રહિત થયા, અકિંચન થયા, તેમજ દ્રવ્ય ને ભાવના પરિગ્રહથી મુક્ત થયા, સ્નેહરહિત થયા, નિરુપલેપ થયા, દ્રવ્ય ને ભાવ લેપથી રહિત થયા, તોય (પાણી) રૂપ સ્નેહ વગર હોવાને કારણે તે કાંસ્યપાત્રની જેમ મુક્ત તોય ' થયા. રાગના સંબંધ થી રહિત હોવા બદલ તે શંખની જેમ નિર્મળ થયા. સર્વ દેશોમાં વિહાર કરનાર હોવાથી તે જીવની જેમ અપ્રતિહત ગતિવાળા (જેની ગતિ કયાંય રોકાય નહિ કે એવા) થયા. નિરતિચાર સંયમ ને પાળનારા હોવાથી તે શુદ્ધ સોનાની જેમ જાત રૂપ થયા, દેશ, ગામ વગેરે ના આલંબન થી રહિત હોવા બદલ તે આકાશની પેઠે નિરાલંબ થયાં, અરીસાની જેમ નિર્મળ સ્વભાવના હોવાથી તે ' પ્રકટ સ્વભાવ ' વાળા થયા, ક્ષેત્ર વગેરેમાં પ્રતિબંધ વગરના હોવાથી તે પવનની જેમ અપ્રતિ બદ્ધ વિહારી થયા, કષાયો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कषायोपशमितत्वात्, पुष्करपत्रमिवनिरुपलेपः=भोगाभिलाषरूपलेशवर्जितत्वात्, कूर्मइव गुप्तेन्द्रियः वशीकृतेन्द्रियत्वात्, खड्गिविषाणमिव एकजातः खड्गी= वन्य जन्तुविशेषः 'गेंडा' इतिभाषाप्रसिद्धः तस्य विषाणं शृङ्गं तद्वदेकजातः स्वात्मावलम्बितत्वात्, विहगइव विप्रमुक्तः पक्षिवत् संनिधिवर्जितत्वात्, भारण्डपक्षीव अप्रमत्तः=भारण्डपक्षिणो हि एकोदराः पृथग्ग्रीवा अन्योन्यफलभक्षिणो जीवद्वयरूपा भवन्ति, ते च सर्वदा चकितचित्तास्तिष्ठन्ति, तद्वत् प्रमादरहितत्वात् कुञ्जरइव शूरः कर्मशत्रुं पराजेतुं दृढोत्साहवत्त्वात्, चन्द्रइव सौम्यलेश्यः शुभपरिणामवत्त्वात्,

होने के कारण वे वायु की तरह अप्रतिबद्ध विहारी बन गये। कषायों के उपशमित हो जाने से शरत् काल के जल के समान वे निर्मल हृदय से युक्त हो गये। भोगाभिलाष रूप लेप से रहित होने के कारण वे पुष्कर (कमल) पत्र की तरह निरूपलेप हो गये। कच्छप की तरह वे अपनी इन्द्रियों को गुप्त करने वाले होने से गुप्तेन्द्रिय बन गये। केवल अपनी आत्मा के ही अवलम्बन करने वाले होने से वे गेंडाहाथी के विषाण की तरह एक जात हो गये। संनिधि से वर्जित होने के कारण पक्षी की तरह वे विप्रमुक्त हो गये। भारण्ड पक्षी की तरह वे अप्रमत्त रहने लगे। ये भारण्ड पक्षी एक उदरवाले होते हैं, ग्रीवा इसकी पृथक् होती हैं, अन्योन्य फल भक्षी होते हैं-दो जीव होते हैं। ये सर्वदा चकित चित्त रहा करते है। कर्मरूप शत्रु को पराजित करने के लिये दृढ उत्साह संपन्न होने के कारण ये कुंजर (हाथी) की तरह शूर बन गये। शुभपरिणामों से युक्त होने के कारण ये चन्द्रमण्डल की तरह सौम्य लेश्या

ના ઉપશમનથી શરદ ઋતુના પાણીની જેમ તે સ્વચ્છ હૃદયવાળા થયા, ભોગ વિલાસ રૂપ લેપથી રહિત હોવાથી પુષ્કર કમળપત્ર ની જેમ નિરુપલેપ થયા કાચબાની જેમ તે પોતાની ઇન્દ્રિયોને ગુપ્ત કરનાર હોવાથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા. કેવળ પોતાના આત્માને જ અવલંબ આપનાર હોવાથી તે ગેંડા હાથીના વિષાણ (શીંગડા) ની જેમ એક જાત થયા. સંનિધિ વગર હોવાથી પક્ષી ની જેમ તે વિપ્રમુક્ત થયા. ભારંડપક્ષીની જેમ તે અપ્રમત્ત (મદ વગર) રહેવા લાગ્યા, આ ભારંડ પક્ષી એક પેટ વાળાં હોય છે. તેમની ડોક પૃથક્ હોય છે. અન્યોન્ય ફળ ભક્ષી હોય છે-તેમજ બે જીવ હોય છે. તે હમેશાં ચકિતચિત્ત રહે છે. તે સ્થાપત્યાપુત્ર કર્મના શત્રુને પરજિત કરવા માટે દઢ ઉત્સાહ સંપન્ન હોવાથી કુંજર (હાથી) ની જેમ શૂર થયા. શુભ પરિણામોથી યુક્ત હોવાથી તે ચંદ્રમંડળ ની જેમ સૌમ્ય લેશ્યા વાળા થયા. બીજા જીવોને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूर्यइव दीप्ततेजाः परेषां क्षोभकत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दरइवाप्रकम्पः परीषहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभइव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेश्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति। प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदाच्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः-सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽरण्यादिषु, कालतः-समयावलिकादिषु, भावतः क्रोधभयहास्यादिषु। स

से युक्त हो गये। दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये! उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गंभीर हो गया। परीषह और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरुकी तरह अप्रकंप बन गये। गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये। उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतुं अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये। शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुंधरा (पृथिवि) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये। तेओ लेश्यादि लब्धि संपन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (अग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था। यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है। द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

ક્ષોભ પમાડનાર તેજથી યુક્ત હોવાથી તે સૂર્યની પેઠે દીપ્ત તેજ વાળા થયા. ઉદાર હતા તેથી સાગરની જેમ તેમનું હૈયું ગંભીર થઇ ગયું. પરીષહો અને ઉપસર્ગોના આકરા પ્રહારોથી પણ તે વિચલિત થતા નહિ તેથી સુમેરુ પર્વત ની જેમ તે અપ્રકંપ થયા. સ્વીકારેલા કર્તવ્યોના ભારને છેક સુધી પાર લઈ જવા માટે તે બળદ ની જેમ સવિશેષ શક્તિ શાળી થયા. ઉપસર્ગ રૂપી હરણો થી પરાજિત ન થવાથી તે સિંહની પેઠે દુર્ધર્ષ થયા. ઠંડી, ગરમી વગેરે બધું સહન કરવાથી તે વસુંધરા (પૃથિવી) ની જેમ સર્વ સ્પર્શ થયા. તેજો લેશ્યા વગેરેની સિદ્ધિ યુક્ત હોવાથી તે સળગતા અગ્નિ ની જેમ સવિશેષ તેજથી પ્રકાશિત થયા. સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રતિબંધ રહિત થયાં આ પ્રતિબંધ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ ચાર પ્રકારનો છે. દ્રવ્યનીઅપેક્ષાએ સચિત્ત, અચિત્ત તેમજ મિશ્ર વસ્તુઓમાં, ક્ષેત્રની દૃષ્ટિએ ગામ, નગર, અરણ્ય (વન)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समतृणमणिलोष्टकाञ्चनः, समसुखदुःखः, इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्धः, जीवित-मरणकाङ्क्षा वर्जितः, संसारपारगामी कर्मनिर्घातनार्थमभ्युत्थितः, एवं च खलु मोक्षमार्गे विहरति । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्थविराणान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते, अधीत्य च बहुभिर्यावच्चतुर्थेन=चतुर्थभक्तादिनाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ।

नगर, अरण्य आदिको में काल की अपेक्षा समय आवलिकआदिकों में भाव की अपेक्षा क्रोध, भय, तथा हास्यादिकों में, उन स्थापत्या पुत्र को किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था। उन की दृष्टि में तृण, मणि, लोष्ट और कांचन समान थे। सुख और दुःख समान थे। इह लोक और परलोक से वे अप्रतिबद्ध थे। जीविताशंसा और मरणा शंसा से वे रहित बन चुके थे। संसार से रहित हो चुके थे कर्मों के नाश करने में ही उनका पुरुषार्थ लगा हुआ था। इस तरह वे समिति आदि कों से समित हो कर मुक्ति के मार्ग में सावधान होकर विचरण करने लगे। (तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ) धीरे २ उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के तथा-रूप स्थविरो के पास सामयिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन भी कर लिया (अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरइ) उनका अध्ययन करके फिर उन्होंने चतुर्थ भक्तादि तपस्या से अपने को भावित किया

વગેરેમાં, કાળની અપેક્ષાએ સમય આવલિકા વગેરેમાં, ભાવની દૃષ્ટિએ ક્રોધ, ભય તેમજ હાસ્ય વગેરેમાં તે સ્થાપત્યા પુત્રને કોઈપણ જાતનો પ્રતિબંધ હતો નહિં તેના માટે તો તૃણ, મણિ, લોષ્ટ (માટીનું ઢેકું) અને કાંચન (સોનું) આ બધાં સરખાં જ હતાં. સુખ દુઃખ બંને સરખાં હતાં. ઇહ લોક અને પર-લોકથી તે અપ્રતિબદ્ધ (સ્વતંત્ર) હતા. જીવિતાશંસા તેમજ મરણાશંસાથી તે રહિત થયા. સંસારના વિષયોથી રહિત થઈને કર્મોના વિનાશમાંજ તેઓ પુરુષાર્થ સંલગ્ન હતા. આ પ્રમાણે તે સ્થાપત્યાપુત્ર સમિતિ વગેરેથી સમિત થઈને મુક્તિમાર્ગમાં સાવધાન થઈને વિચરણ કરવા લાગ્યા. (तएणं से थावच्चा-पुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ) ધીમે ધીમે સ્થાપત્યા-પુત્ર અનગારે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે થી તેમજ તથારૂપ સ્થવિરોની પાસેથી સામયિક વગેરે ચૌદપૂર્વોનું અધ્ય-યન પણ કર્યું. (अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरइ) અધ્યયન કર્યા બાદ સ્થાપત્યા પુત્રે ચતુર્થ ભક્ત વગેરે તપસ્યાથી પોતાના આત્માને ભાવિત કર્યો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु अर्हन्नरिष्टनेमिः स्थापत्यापुत्रस्यानगारस्य तं=सहागतं 'इब्भाइयं' इभ्यादिकम् इभ्यश्रेष्ठिसेनापतिप्रभृतिकम् अनगारसहस्रं शिष्यतया ददाति। स्थापत्यापुत्रेण सह ये सहस्रपुरुषा दीक्षां गृहीतवन्तस्ते सर्वे तस्यैव शिष्याः कृता इति भावः। ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित् अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते वाचा स्तौति, नमस्यति, कायेन प्रणमति वन्दित्वा नमस्कारं च कृत्वा एवं वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्—

इच्छामि खलु भदन्त! हे भगवन् युष्माभिः 'अब्भणुण्णाए' अभ्यनुज्ञातः सन् आज्ञां प्राप्य सहस्रेणानगारेण साधं बहिः द्वारावती नगरीतो बहिर्निःसृत्य जनपदविहारं देशे ग्रामानुग्रामविचरणं, विहर्तुं=कर्तुम्, भवदाज्ञया देशे विहारं कर्तुमिच्छामीत्यर्थः। हे देवानुप्रिय यथासुखं=विहरेत्यर्थः।

यावत् शब्द से उक्त अर्थ लिया गया है। (तएणं अरिहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयइ) इसके बाद अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु ने उन अनगार स्थापत्यापुत्र के लिये उनके साथ आये हुए उस, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति आदि अनगार सहस्र को शिष्यरूप से दे दिया। (तएणं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ) इसके बाद उन स्थापत्यापुत्र ने किसी समय अर्हंत अरिष्टनेमि को वंदना की और उन्हें नमस्कार किया– (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हों से उन्होंने ऐसा कहा– (इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाये समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए) भदंत! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं इन हजार अनगारों को साथ लेकर द्वारावती नगरी से बाहिर जनपद विहार करना चाहता हूँ।

'यावत्' शब्दथी उक्त अर्थ नो संग्रह थयो छे. (तएणं अरिहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयइ) त्यार पछी अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभुओ अनगार स्थापत्यापुत्रने तेमनी साथे आवेला अने प्रव्रज्या ग्रहण करेला इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति वगेरे अनगार सहस्र ने शिष्य रूपे आप्या (तएणं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ) त्यार बाद स्थापत्या पुत्रे कोइ वखत अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभुने वंदन तेमज नमस्कार कर्यां. (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वंदन अने नमस्कार करीने तेमणे तेमने विनंती करी–(इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाये समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए) हे भदंत! तमारी आज्ञा थाय तोहुं एक हजार अनगारो नी साथे द्वारावती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण सार्धं तेनोदारेण=प्रधानेन-षड्-जीवनिकायरक्षणपरत्वात्; उग्रेण=तीव्रेण परीषहोपसर्ग सहिष्णुत्वात्, प्रयत्नेन= यतनाप्रधानत्वात् बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ १७ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावइ देवी, मंडुए कुमारे जुवराया। तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच-मंतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणा-मियाए उववेया रज्जधुरं चिंतयंति, थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे राया णिग्गतो धम्मकहा, धम्मं सोच्चा जहाणं देवा-णुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव

(अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवय-विहारं विहरइ) प्रभु ने उनसे कहा-यथासुखं देवानुप्रिय! प्रभु की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर वे स्थापत्यापुत्र षट्जीवनिकाय की रक्षा करने में तत्पर होने के कारण उदार, परीषह और उपसर्गों को सहन करने के कारण उग्र, यतना प्रधान होने के कारण प्रयत्न और भग-वान् की आज्ञा को प्रधान रूप से अंगीकार करने के कारण प्रगृहीत ऐसे १ एक हजार शिष्यों को साथ लेकर वहां से बाहिर देशों में विहार किया। सूत्र "१७"

નગરીની બહાર જનપદ વિહાર કરવા ચાહું છું. (अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं से थावच्च अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहारं विहरइ) પ્રભુએ તેને કહ્યું-હેદેવાનુપ્રિય સુખેથી વિહાર કરો. આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્રે આજ્ઞા મેળવીને ષટ્જીવનિકાયના રક્ષણમાં સદા તૈયાર હોવાથી ઉદાર, પરીષહ અને ઉપસર્ગોને સહન કરવાથી ઉગ્ર, યતના પ્રધાન હોવાથી, પ્રયત્ન અને ભગવાનની આજ્ઞા પ્રધાન રૂપથી સ્વીકારવાથી પ્રગૃહીત એવા એક હજાર શિષ્યોની સાથે ત્યાં થી બહારના દેશોમાં વિહાર કર્યો.॥ સૂ-૧૭॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पव्वइया, तहाणं अहं नो संचाएमि पव्वइत्ताए, अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरामि। पंथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥सू०१८॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये शैलकपुरं नाम नगरमासीत्। नगराद् बहिः सुभूमिभागं नामोद्यानम्। तस्मिन् नगरे शैलको नाम राजाऽभूत्। पद्मावतीदेवी=पद्मावतीनाम्नीदेवी पट्टराज्ञो। मण्डूककुमारो युवराजोऽभवत्। तस्य खलु शैलकस्य राज्ञः पान्थकप्रमुखाः पञ्चशतानि मन्त्रिणः अमात्याः आसन्, कीदृशास्ते मन्त्रिण इत्याह-'उप्पत्तियाए' औत्पत्तिक्या शास्त्राभ्यासादि निमित्तं विनैव सद्भाविनी तथाविधक्षयोपशमजन्या मति रौत्पत्तिकी तया, 'वेणइयाए' वैनयिक्या=विनय-

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (सेलगपुरे नामं नगरं होत्था) शैलक पुर नाम का नगर था (सुभूमि भागे उज्जाणे सेलए राया पउमावइ देवी मुंडए कुमारे जुवराया) उस में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था। शैलक पुर राजा का नाम शैलक था। उसकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था। मंडूक नाम का इसका युवराज कुमार था। (तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसयहोत्था) इस शैलक राजा के पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्री थे। (उप्पत्तियाए वेणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, उववेया रज्जधुरं चिंत-

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (सेलगपुरे नामं नगरं होत्था) शैलक पुर नामे नगर हतुं. (सुभूमिभागे उज्जाणे सेलए राया पउमावइ देवी मुंडए कुमारे जुवराया) त्यां सुभूमि भाग नामे उद्यान हतुं शैलक पुरना राजानुं नाम शैलक हतुं. पद्मावती तेनी पटराणी हती. मंडूक नामे ते राजनो युवराज हतो. (तस्स णं सेलगस्स पंथग पामोक्खा पंचमंतिसय होत्था) आ शैलक राजाने पांथक प्रमुख पांचसो मंत्रीओ हता. (उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए परिणामियाए उववेया रज्जधुरं चिंतयंति) आ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लब्धबुद्धया, ' कम्मयाए ' कर्मजया-लेखनादि कर्माभ्यासतः समुत्पन्नया बुद्धया, 'पारिणामियाए' पारिणामिक्या दीर्घकालेऽनुभवादुद्भूतया वयः परिणामजन्यया-बुद्धया ' उववेया ' उपेताः बुद्धिचतुष्टयेन युक्ताः, ' रज्जधुरं ' राज्यधुरं राज्य-रक्षणवर्धनकार्यभारं चिन्तयन्ति = चिन्तयन्तः सन्ति ।

अथ स्थापत्यापुत्रोऽनगारो ग्रामाद् ग्रामान्तरं विहरन् शैलकपुरे शैलकपुर-नगरे ' समोसढे ' समवसृतः, ' राया णिग्गओ' राजा=शैलकनृपः ' णिग्गओ ' निर्गतः स्थापत्यापुत्रानगारस्यागमनं श्रुत्वा तं वन्दितुं निःसृतः । निर्गत्य स्था-पत्यापुत्रानगारं वन्दित्वा यथोचितस्थान आसीनः स्थापत्यापुत्रमनगारं पर्युपासते । धर्मकथा-श्रुतचारित्रलक्षणधर्मकथा-स्थापत्यापुत्रानगारेण कथिता । अथ शैलको नाम राजा धर्मं श्रुत्वा वदति हे भदन्त ! यथा खलु देवानुप्रियाणामन्तिके बहवः उग्राः उग्रवंश्याः भोगा भोगवंशीया राजानो यावत् हिरण्यादिकं त्यक्त्वा

यंति) ये समस्त मंत्री औत्पत्तिकी, वैनयिकी कार्मिकी और पारिणामि की इस प्रकार चार तरह की बुद्धि से राज्य के रक्षण का उस के संव-र्धन का कार्य किया करते थे । (थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे) विहार करते २ स्थापत्या पुत्र शैलक पुर नगरमें आये। (राया णिग्गओ धम्मकहा) स्थापत्यापुत्र अनगार का आगमन सुनकर उनको वंदन करनेके लिये शैलक राजा अपने नगरसे निकले। निकलकर वे स्थापत्या पुत्र अनगार के पास पहुँचे—वहां जाकर उन्होने उनके संविधि वन्दना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर वे यथोचित स्थान पर बैठ गये। स्थापत्यापुत्र अनगार ने श्रुतचारित्र लक्षणवाली धर्म कथा कही (धम्मं सोच्चा जहाणं देवाणुप्पियाणं अंते बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता,तहा अहं णो संचाएमि पव्वइए) धर्मका

બધા મંત્રીઓ ઔત્પત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પરિણામિકી આ રીતે ચાર જાતની બુદ્ધિથી રાજ્યનું રક્ષણ તેમજ સંવર્ધનનું કામ કરતા હતા. થાવચ્ચાપુત્તે सेलगपुरे समोसढे) વિહાર કરતાં કરતાં સ્થાપત્યા પુત્ર શૈલગપુરમાં આવ્યા.(राया-णिग्गओ धम्मकहा) સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારનું આગમન સાંભળીને શૈલક રાજા પોતાના નગરથી નીકળ્યા અને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારની પાસે પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને વિધિપૂર્વક વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ ઉચિતસ્થાને બેસી ગયા. સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શ્રુતચારિત્ર લક્ષણવાળી ધર્મકથાનો ઉપદેશ આપ્યો. (धम्मं सोच्चा जहाणं देवाणुप्पिया णं अंते बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता, तहा अहं णो संचाएमि पव्वइए) ધર્મકથા સાંભળીને શૈલક રાજાએ સ્થાપત્યા અનગારને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत् प्रव्रजिता भवन्ति, तथा खलु अहं नो शक्नोमि प्रव्रजितुम्, राज्यादिकं परित्यज्य प्रव्रज्यां ग्रहीतुमसमर्थोऽस्मीत्यर्थः। अहं खलु देवानुप्रियाणामन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावत् श्रमणोपासकः, अत्र यावच्छब्देन-सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं देशविरतिरूपं प्रतिपत्तुं=स्वीकर्तुमिच्छामि. तदा स्थापत्यापुत्रोऽवादीत् हे देवानुप्रिय ! यथासुखं भवेत् तथा कुरु इत्येवमभ्यनुज्ञातः सन् श्रमणो-

---

उपदेश सुनकर शैलक राजा ने स्थापत्या अनगार से निवेदन किया-कि हे भदन्त? जिसतरह आप देवानुप्रिय के पास इन अनेक उग्रवंशीय भोगवंशीय राजाओने यावत् हिरण्य आदिका परित्यागकर यावत् दीक्षा धारण करली है उस तरह मैं दीक्षा धरण करने के लिये समर्थ नही हूँ-राज्यादिक का परित्याग कर प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिये मैं असमर्थ हूँ (अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयंजाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे, जाव अहा परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) मै केवल देवानुप्रिय के पास पांचअणुव्रतो को धारण कर श्रमणोपासक बननेकी इच्छा करता हूँ। यहां यावत् शब्द से सात शिक्षा व्रतो का ग्रहण हुआ है। इस श्रावक का धर्मजो बारह अणुव्रत रूप है और जिसे देश विरत कहते है मैं उसे स्वीकार करनेकी इच्छा करता हूँ ऐसी अपनी इच्छा शैलक राजा ने स्थापत्या अनगार के पास अभिव्यक्त की। शैलक राजा की इच्छा जानकर स्थापत्या अनगार ने उन से कहा हे देवानुप्रिय! यथासुखं- अर्थात् जिस में तुम्हें सुख मालूम पडे वैसा तुम करो- इस प्रकार स्थापत्या अनगार

વિનંતિ કરી-' હે ભદંત ! આપ દેવાનુપ્રિયની પાસેથી જેમ આ અનેક ઉગ્રવંશીય ભોગવંશીય રાજાઓ એ દ્રવ્ય-વગેરે બધું ત્યાગીને ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી છે તેમ હું દીક્ષા સ્વીકારી શકું તેમ નથી, રાજ્ય વગેરે ત્યજીને પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવા માટે હું અસમર્થ છું. (अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजोवाजोवे जाव अहा परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) હું ફકત દેવાનુપ્રિયની પાસેથી પાંચ અણુવ્રતોને સ્વીકારીને શ્રમણોપાસક થવા ચાહું છું. અહીં યાવત્ શબ્દથી સાત શિક્ષા વ્રતોનું ગ્રહણ થયું છે. બાર વ્રતરૂપ જે શ્રાવકધર્મ છે તેને સ્વીકારવા ચાહું છું આ રીતે શૈલક રાજાએ પોતાની ઇચ્છા સ્થાપત્યાપુત્રની સામે પ્રકટ કરી. શૈલકરાજાની આ જાતનીઇચ્છા જાણીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિય ! યથાસુખં-એટલે કે જેમાં તમને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पासको जातः । श्रमणोपासकानां धर्मः सविस्तरमुपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवनी टीकायां वर्णितस्तत एव विज्ञेयः । यावत् 'अहिगयजीवाजीवे' अधिगत जीवाजीवः, जीवाजीवस्वरूपाविज्ञः, यावत् यथा परिगृही तैस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् विहरति । पान्थकप्रमुखाः पञ्चशत मन्त्रिणः श्रमणोपासका जाता द्वादशव्रतधारिणः श्रावका अभूवन् । स्थापत्यापुत्रः बहिः=शैलकपुर नाम्नो नगराद् बहिर्जनपदविहारं विहरति=करोति स्म ॥ १८ ॥

द्वारा अभ्यनुज्ञात होकर शैलक राजा ने १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया-वे श्रमणोपासक बन गये। श्रमणोपासकों के धर्म का विस्तार पूर्वक वर्णन हमने उपासकदशांग सूत्र की अगार धर्मसंजीवनी नाम की टीका में किया है। सो वहां से जान लेना चाहिये। जीव और अजीव का क्या स्वरूप है इस बात को भी वे जानने वाले बन गये। अनेक प्रकार की तपश्चर्या भी वे करने लगे। इस तरह यथा परिगृहीत तप कर्मों द्वारा वे अपने आपको भावित करते हुए रहने लगे। (पंथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया जाया-थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ) राजा के जो पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्री थे- वे भी श्रमणोपासक बन गये- १२ व्रत धारी हो गये - स्थापत्यापुत्र अनगार उस शैलकपुर नगर से बाहर जनपद में विहार कर गये। सूत्र " १८ "

સુખ થાય તેમ કરો. આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા. અને તેઓ શ્રમણોપાસક થયા. શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપાસકદશાંગસૂત્રની અગાર ધર્મ સંજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે. જિજ્ઞાસુ જન તેમાંથી જાણી શકે છે. જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયું. અનેક જાતની તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા. આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપઃ કર્મો વડે પોતાની જાતને ભાવિત કરતા રહેવા લાગ્યા. (पंथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया जाया थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ) રાજાના પાંથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રી હતા તેઓ પણ શ્રમણોપાસક તેમજ બાર વ્રત ધારી થઈ ગયા. ત્યાર બાદ સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર શૈલકપુર નગરથી બહાર બીજા જનપદોમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડયા. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नाम नयरी होत्था, वण्णओ, नीलासोए उज्जाणे वन्नओ, तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था, रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले संखसमए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए, तिदंडकुंडियछत्तछलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधियानयरी जेणेव परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संखसमणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तएणं सोगंधियाए णयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ। एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणो निग्गए, तएणं से सुए परिवायए तीसे परिसाए सुंदसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं धम्मं परिकहेइ–एवं खलु सुदंसणा अम्हं सोयमूलए धम्मं पन्नत्ते, सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते तं जहा–दव्वसोए य, उदएणं मट्टियाए य, भावसोए दव्वेहि य मंतेहि य, जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया किंचि असुइ भवामो, तं सव्वं सज्जो पुढ़वीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ तं असुई सुई भवइ, एवं खलु जीवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जलाभिसेय पूयरप्पाणे अविग्घेणं सग्गं गच्छंति, तएणं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठ सुयस्स अंतिए सोयमूलयं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता परिव्वायए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं पडिलाभेमाणे जाव विहरइ। तएणं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवय विहारंविहरइ ॥ सू० १९ ॥

" तेणं कालेणं " इत्यादि।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिका नाम नगरी आसीत् वर्णकः सौगन्धिकानगर्या वर्णनं औपपातिकसूत्रोक्त चम्पानगरीवद् वाच्यम्. नीलाशोकमुद्यानं=नीलाशोकनामकमुपवनं तत्रासीत्। वर्णकः-अस्योद्यानस्य वर्णनं पूर्ववद् बोध्यम्। तत्र खलु सौगन्धिकायां नगर्यां सुदर्शनो नाम नगर श्रेष्ठी प्रतिवसति।

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय मे (सोगंधिया नाम नगरी होत्था) सौगंधिका नाम की नगरी थी-(वन्नओ) इस नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में जिस प्रकर चंपानगरी का वर्णन किया गया है उसी तरह का जानना चहिये। (नीलासोए उज्जाणे) इस नगरी मे उद्यान था जिसका नाम नीलाशोक था। (वन्नओ) पूर्वकी तरह इस उद्यान का वर्णन जान लेना चाहिये। (तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परीवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए) उस सौगंधिका नगरी मे सुदर्शन नाम

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (सोगंधिया नाम नगरी होत्था) સૌગંધિકા નામે નગરી હતી. (वन्नओ) ઔપપાતિક સૂત્રમાં જે પ્રમાણે ચંપાનગરીનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અહીં પણ જાણી લેવું જોઈએ, (नीलासोए उज्जाणे) આ નગરીમાં એક ઉદ્યાન હતું જેનું નામ નીલાશોક હતું. (वन्नओ) પહેલાંની જેમ આ ઉદ્યાનનું વર્ણન પણ જાણી લેવું જોઈએ. (तत्थणं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए) તે સૌગંધિકા નગરીમાં સુદર્શન નામે નગર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स कीदृश इत्याह-आढ्यः विभवशाली, यावत् अपरिभूतः=केनापि पराभवितुमशक्यः।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुको नाम परिव्राजक आसीत्। सकीदृश इत्याह "रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले" ऋग्वेद यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदषष्ठितन्त्र-कुशलः सर्ववेदसर्वतन्त्रनिपुण इत्यर्थः,'संखसमये लद्धट्ठे' सांख्यसमये लब्धार्थः सांख्यशास्त्राभिमतसकलतत्त्वार्थाभिज्ञः' पञ्चयमपञ्च नियमयुक्त, तत्र=अहिंसा सत्यास्तेदब्रह्मचर्यापरिग्रहाः पञ्चयमाः, शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि-

---

का नगर सेठ रहता था। यह विशेष विभूतिशाली था और अपरिभूत था-कोई भी व्यक्ति इसका तिरस्कार (अपमान) नही कर सकता था। (तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए णामं परिव्वायए होत्था) उसी काल और उसी समयमें शुक नाम का परिव्राजक था (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सट्ठितंतकुसले, संख समए लद्धट्ठे पंचजम पंच नियमजुत्तं सोयमूलगं दसप्पयारपरिव्वायगधम्मं दाणधम्मंच सोयधम्मं च तित्थाभिसेयंच आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए) यह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद षष्ठितंत्र इनमें कुशल था-निपुण था। सांख्य सिद्धान्त प्रतिवादित सकल तत्त्वों के अर्थका ज्ञाता था। पंचयम और पंचनियम से युक्त तथा शौच मूलक दश प्रकारके परिव्राजक धर्मका दान रूपधम का शौच रूप धर्मका तीर्थाभिषेकका उपदेश देता था उसका प्रचार करता था। अहिंसा,सत्यअस्तेय ब्रह्मचर्य और परिग्रह ये पांच यम हैं। शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वरप्रणि-

---

શ્રેઠ રહેતો હતો. તે ખૂબજ ઐશ્વર્ય સંપન્ન અને અપરિભૂત હતો. કોઈ પણ વ્યક્તિ તેમનો તિરસ્કાર ન કરી શકતી હતી. (तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए णामं परिव्वायए होत्था) તે કાળે અને તે સમયે એક શુક નામે પરિવ્રાજક હતો. (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सट्ठितंतकुसले, संख समए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलगं दसप्पयारपरिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए) તે ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ તેમજ ષષ્ઠિતંત્રમાં કુશળ હતો, નિપુણ હતો. સાંખ્યસિદ્ધાન્તમાં કહેલા બધા તત્ત્વોનો તે જાણનાર હતો. તે પાંચ યમ તેમજ પાંચ નિયમ થી યુક્ત હતો. તે શૌચમૂલક દશ જાતના પરિવ્રાજક ધર્મનો, દાનરૂપ ધર્મનો શૌચરૂપ ધર્મનો તીર્થાભિષેક (તીર્થસ્નાન) નો ઉપદેશ આપતો હતો. અને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો હતો. અહિંસા, સત્ય અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય અને પરિગ્રહ એ પાંચ 'યમ' છે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धानानि पञ्चनियमाः तैर्युक्तम् शौचमूलकं दशप्रकारं=यमनियमसंमेलनेन दशविधं परिव्राजकधर्मं दानधर्मं=दानरूपं धर्मं च शौचधर्मं=मृद्वारिजनितं शौचरूपं धर्मं च तीर्थाभिषेकं=गङ्गादि तीर्थोदकस्नानं च आख्यापयन् प्रख्यापयन् [illegible]तयन् प्रज्ञापयन् बोधयन्' धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए' धातुरक्तवस्त्रप्रवरपरिहितः=गरिकधातुरक्तवस्त्र प्रवरपरिधानः, गैरिकरक्तवस्त्रधारीत्यर्थ, ' तिदंड-कुंडिय - छत्त - छन्नालयं - कुस-पवित्तय-केसरी हत्थगए ' त्रिदण्ड-कुण्डिका-छत्र-षड्ना-लकाङ्कुश-पवित्रक-केसरी हस्तगतः, त्रिदण्डादीनि सप्त हस्तगतानि यस्य स तथा, तत्र त्रिदण्डं=मनोवाक्कायदण्डत्रयपरिज्ञानार्थं दण्डत्रयं, कुण्डिका=कमण्डलुः, छत्रं, प्रसिद्धं, षड्नालकं = त्रिकाष्ठिका, अङ्कुशः - प्रसिद्धः-वृक्षपल्लवच्छेदनार्थं, पवित्रकं= ताम्रमयमङ्गुलीयकं, केसरी = चीवरखण्डं, परिव्राजकसहस्रेण सार्धं संपरिवृतः

धान ये पांच नियम हैं। मिट्टी और पानी से शुद्ध करना इसका नाम शौच है। गंगा आदि तीर्थके जलमें स्नान करना इसका नाम तीर्थाभिषेक है। इन बातों को आख्यान-कथन करता हुआ प्रख्यापन प्ररूपणा करता हुआ यह शुक जिन वस्त्रों को पहिरता था वे गैरिक धातु से रंगे हुए थे। अर्थात् गैरिक धातु से रंगे हुए वस्त्रों को ही यह पहिरता था। (तिदंडकुंडिय, छत्त छलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) मन, वचन और काय इन तीन दंडों के परिज्ञान के लिये यह दण्ड त्रय का धारी था। कमण्डलु, छत्र, त्रिकाष्टिका, अंकुश, ताम्रमय अंगुलीयक, (अंगूठी) और चीवर खंड ये सब उस के हाथ में थे। १ एक हजार साधु मंडल से यह परिवृत था। सो जहां वह सौगंधिका नगरी थी और उस में भी जहां परिव्राजकों का

શૌચ, સંતોષ, તપ, સ્વાધ્યાય, ઈશ્વરપ્રણિધાન એ પાંચ નિયમો છે. માટી અને પાણીથી શુદ્ધ કરવું તે શૌચ કહેવાય છે. ગંગા વગેરે તીર્થ જળોમાં નાહવું તે તીર્થાભિષેક કહેવાય છે. આ યમ નિયમોનું આખ્યા વચન તેમજ પ્રરૂપણા કરતો તે શુક પરિવ્રાજક ગૈરિક (ગેરુઆ) વસ્ત્રો પહેરતો હતો. એટલે કે ગેરુ થીરંગેલા વસ્ત્રો જ તે પહેરતો હતો. (तिदंड कुंडिय, छत्त, छलुयंकुसप वित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) મન, વચન અને કાય આ ત્રણ દંડોના પરિજ્ઞાન માટે તે દંડત્રય (ત્રણદંડ) ધારણ કરતો હતો. કમંડળુ છત્ર, ત્રિકાષ્ટિકા, અંકુશ તાંબાની વીંટી અને ચીવરખંડ આ બધાં તેના હાથ માં હતાં. એક હજાર સાધુઓ તેની સાથે હતા. તે ફરતો ફરતો જ્યાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डकनिक्षेपं करोति = त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा सांख्यसमयेन सांख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मानं भावयन् विहरति।

ततः खलु सौगन्धिकायां नगर्यां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राजपथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्–एवमाख्याति – कथयति, एवं खलु शुको नाम परिव्राजक इह अस्यां सौगन्धिकायां नगर्यां इव्यमागतः=समागतः यावदात्मानं भावयन् विहरति। परिषन्निर्गता। सुदर्शनोऽपि निर्गतः। ततः खलु स

आश्रम था वहां आया। (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि मंडलनिक्खेवं करेइ, करित्ता संख समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भांडों को रख दिया। और रख कर सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता हुआ ठहर गया। (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौगंधि का नगरी में श्रृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में अनेक जन परस्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) बंधुओ! शुक नाम का परिव्राजक इस अपनी सौगंधिका नगरी में अभी २ आया है। – वह सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परिव्राजकाश्रम में ठहरा हुआ है। इस बात से परिचित होकर (परिसा निग्गया, सुदंसणो, निग्गए, तएणं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स

સૌગંધિકાનગરી હતી અને જ્યાં પરિવ્રાજકોનો આશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો. (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि मंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संख समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) તે પરિવ્રાજકોના આશ્રમમાં પહોંચીને તેને પોતાની બધી વસ્તુઓ મૂકી દીધી અને ત્યાં સાંખ્યસિદ્ધાન્તને અનુસરીને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો રહેવા લાગ્યો (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) ત્યારબાદ સૌગંધિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક ચત્વર અને રાજમાર્ગમાં ઘણા માણસો આ રીતે વાતો કરવા લાગ્યા–(एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) મિત્રો ! આપણી આ નગરીમાં શુક નામે એક પરિવ્રાજક હમણાં જ આવ્યો છે. સાંખ્યસિદ્ધાંત અનુસાર તે પોતાની પ્રવૃત્તિઓ આચરતો પરિવ્રાજક આશ્રમમાં રોકાયો છે. આ વાતની જાણ થતાં જ (परिसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुकः परिव्राजकस्तस्याः परिषदः सुदर्शनस्य च अन्येषां च बहूनां जनानां पुरस्तात् सांख्यानां=सांख्यमतानुयायिनां धर्मं परिकथयति-हे सुदर्शन ! एवं वक्ष्यमाण प्रकारेण खलु अस्माकं शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, तदपि च शौचं द्विविधं प्रज्ञप्तं तद्यथा-द्रव्यशौचं च, भावशौचं च। द्रव्यशौचं च उदकेन=जलेन मृत्तिकया च भवति। भावशौचं 'दब्भे हि य' दर्भैश्च, 'मंते हि य' मन्त्रैश्च भवति। हे देवानुप्रिय ! यत् खलु अस्माकं किंचित्=करचरणकमण्डलु प्रभृति अशुद्धं भवति तत् सर्वं 'सज्जो पुढवीए' सद्यः पृथिव्या=शुद्धनवीनमृत्तिकया, आलिप्यते अनुलिप्तं क्रियते, ततः पश्चात् शुद्धेन=पवित्रेण, वारिणा=जलेन प्रक्षाल्यते ततस्तदशुद्धं उपहतं वस्तु शुद्धं भवति। एवं खलु जीवाः 'जलाभिसेयपूयप्पाणो' जला-

---

य अन्नेसिंच बहूणं संखाणं धम्मं परिकहेइ) नगर निवासी परिषद् उसके पास जाने के लिये अपने २ घर से निकली। सुदर्शन भी निकला इसके बाद उस शुक परिव्राजक ने उस आगत परिषद् को सुदर्शन सेठ को तथा और भी एकत्रित हुए अनेक मनुष्यों को सांख्यों के धर्म का उपदेश दिया। उसमें उस ने इस प्रकार कहा-(एवं खलु सुदंसणा अम्हं सोयमूले धम्मे पण्णत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते) वह शौच भी दो प्रकार का कहा हुआ है-(दव्वसोए य भावसोए य) १ द्रव्य शौच २ भाव शौच। (दव्वसोएय उदएणं मट्टियाए य) जल और मिट्टी से द्रव्य शौच होता है। (भावसोए दब्भेहिं य मंते हिं य) भावशौच दर्भ और मंत्रों से होता है। (जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुइ भवइ तं सव्वं

निग्गवा, सुदंसणो निग्गए तएणं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं धम्मं परिकहेइ) नागरीकोनी परिषद तेनी पासे जवा पोत पोताने घेरथी निकळी. सुदर्शन पण पोतना घेरथी त्यां जवा माटे बहार नीकळ्यो. त्यार पछी शुक परिव्राज के उपस्थित थयेली नगरीको नी परिषद सुदर्शन तेमज बीजा एकठा थयेला माणुसोनी सामे सांख्यधर्मनो उपदेश आप्यो. उपदेश आपतां शुक परिव्राजके आ प्रमाणे कहुं (एवं खलु सुदंसणा अम्हं सोयमूले धम्मे पण्ण) हे सुदर्शन ! अमारो धर्म शौचमूलक प्रज्ञप्त थयो छे. (सेविय सोए दुविहे पण्णत्ते) शौचना बे प्रकार छे. (दव्वसोए य भावसोए य) १, द्रव्य शौच, २, भाव शौच. (दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य) पाणी अने माटीथी द्रव्य शौच थाय छे. (भावसोए दब्भेहं य मंतेहिं य) भाव शौच दर्भ अने मंत्रोवडे थाय छे. (जन्नं अम्हं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नानं, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते, प्राणिनः ' अविग्घेणं ' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन ' सग्गं ' स्वर्गं गच्छन्ति । ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्मं= शौचमूलकं शुकोक्तधर्मं, श्रुत्वा ' हट्ठे , हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौच-मूलकं धर्मं गृह्णाति । सांख्यमतं स्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि-वसं विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम मांज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ तं असुई सुई भवइ, एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्घेणं सग्गं गच्छंति) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी विना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । (तएणं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतिए सोयमूलयं धम्मं गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म अंगीकार कर लिया । (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेणं असणपाणखाइम-साइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवाणुप्पिया ? किं चि असुइ भवइ तं सव्वं सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) હે દેવાનુપ્રિય ! અમારા હાથ, પગ કમં-ડળુ વગેરે અપવિત્ર થઇ જાય છે તો પહેલાં તેને નવીન માટીથી અમે ઉટકી એ છીએ. અને ત્યાર પછી શુદ્ધ પાણી થી સાફ કરી લઇએ છીએ. (तओ तं असुई सुई भवइ एवं खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्घेणं सग्गं गच्छंति) એ પ્રમ ; તે અપવિત્ર પદાર્થ પવિત્ર થઈ જાય છે. આ રીતે જીવ પણ પાણીથી સ્નાન કરી ; પવિત્રાત્મા થઇને સત્વરે કોઈ પણ જાતના અટ-કાવ કે મુશ્કેલી વગર સ્વર્ગે પહોંચી જાય છે. (तएणं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा ह सुयस्स अंतिए सोयमूलयं धम्मं गिण्हइ) આ રીતે તે સુદર્શન નગર શેઠ શુકની પાસેથી ધર્મનુ શ્રવણ કરીને ખૂબજ હર્ષ પામ્યા અને તેની પાસેથી તેમણે શૌચ મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभे माणे जाव विह-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिग्रहेण प्रतिलाभयन् सत्कारयन् संमानयन् यावद् विहरति=विचरति । ततस्तदनन्तरं खलु स शुकः परिव्राजकः सौगन्धिकाया नगर्या निर्गच्छति, निर्गत्य च बहिर्जनपदविहारं विहरति=करोतिस्म ॥ १९ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं, परिसा निग्गया सुदंसणो वि णिग्गओ, थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–तुम्हाणं किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी–सुदंसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते सेवि य विणए दुविहे पन्नत्ते तं जहा–अगारविणए अणगार विणए य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं चत्तारि अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं, एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थणं जे से अणगारविणए से णं चत्तारि महाव्वयाइं, तं जहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ

अंगीकार करके उन्होंने फिर अशन पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चारों प्रकार के आहार से और वस्त्र के प्रदान से उस शुक परिव्राजक को लाभान्वित किया सत्कारित किया, सन्मानित किया। (तएणं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) इसके बाद वह शुक परिव्राजक सौगंधिका नगरी से निकला और निकल कर बाहर अन्य देशों की ओर विहार कर गया। "सू-१९"

રહ) શૌચ મૂલક ધર્મ સ્વીકારીને તેમણે શુક પરિવ્રાજકને અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચારે પ્રકારના આહારો તેમજ વસ્ત્રો અર્પીને લાભાન્વિત કર્યો અને સન્માન કર્યું. (तएणं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજક સૌગંધિકા નગરીથી બહારના બીજા દેશો તરફ વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥સૂ૦૧૯॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥ सू० २० ॥

(तेणं कालेणं) इत्यादि

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिकायां नगर्यां यावच्चापुत्रस्य समवसरणमागमनमभूत्, तदा परिषन्निर्गता= सौगन्धिका नगरी निवासिनो लोकाः स्थापत्यापुत्रं वन्दितुं निर्गताः, सुदर्शनोऽपि=सुदर्शननाम्ना नगरश्रेष्ठी अपि, निर्गतः, तत्रागत्य यावच्चापुत्रं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नत्वा च एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे भगवान् ! युष्माकं किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः? ततस्त-

---

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस कल और उस समय में उस सौगन्धिकानगरी में विहार करते हुए (थावच्चापुत्तस्स समोसरणं) स्थापत्यापुत्र अनगार का आगमन हुआ। (परिसा निग्गया,सुदंसणो वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रका आगमन सुनकर सौगंधिका नगरीके निवासी जन उनको वंदना करनेके लिये चले सुदर्शनसेठ भी चला। (थावच्चापुत्तं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) उसने वहाँ पहुंचकर स्थापत्या पुत्र अनगारको वचन से स्तुति करने रूप वंदना की तथा काय से उन्हे नमन किया। वंदना नमस्कर करके फिर उसने उनसे इस प्रकार

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે તેજ સૌગંધિકા નગરીમાં વિહાર કરતાં (थावच्चा पुत्तस्स समोसरणं) स्थापत्यापुत्र अनगार આવ્યા (परिसा निग्गया सुदंसणो वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रने આવવાની ખબર થતા જ સૌગંધિકા નગરીના નાગરિકો તેમને વંદન કરવા નીકળી પડયા સુદર્શન શેઠ પણ તેમને વંદન કરવા નીકળ્યા. (थावच्चापुत्तं वंदइ, नमंसइ वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी) ત્યાં પહોંચીને તેમણે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર ના વચનથી સ્તુતિ કરીને વંદન કર્યા તેમજ કાયાથી નમીને તેમને નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને સુદર્શન શેઠે તેમને વિનંતી કરી (तुम्हाणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दनन्तरं खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनेनैवमुक्तः सन् सुदर्शनमेवमवादीत्-

हे सुदर्शन ! अस्माकं धर्मः दुर्गतौ पततो जन्तून् धरति रक्षति शुभस्थानं प्रापयति इति धर्मः आचारः, विनयमूलः=विनयति अपनयति नाशयति सकलक्लेशकारकमष्टविधं कर्म यः स विनयः कर्मापनयनसमर्थश्चारित्रलक्षणोऽनुष्ठान विशेषः स एव मूलं कारणं यस्य स तथा,-उक्तं च-

कर्मणां द्राग् विनयनाद् विनयो विदुषां मतः ।
अपवर्ग फलाढ्यस्य मूलं धर्मतरोरयम् ॥ १ ॥ इति ।

चारित्रमाश्रित्य लब्धस्थितिक इत्यर्थः, यद्वा विनयो विनीतता द्रव्यभावाभ्यां नम्रता तन्मूलकः, प्रज्ञप्तः=तीर्थकरैः प्ररूपितः । सोऽपि च विनयो द्विविधः तद्यथा-

---

कहा (तुम्हा णं किं मूलए धम्मे पन्नत्ते) हे भगवान? आपका धर्म किं मूलक प्रज्ञप्त हुआ हैं। (तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयसी) इस प्रकार सुदर्शन सेठ के द्वारा इस प्रकार पूछे गये स्थापत्या पुत्र अनगार ने उससे इस प्रकार कहा (सुदंसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म-विनय मूलक प्रज्ञप्त हुआ है। दुर्गतिमे जाने से जो प्राणियो को बचाता है और शुभ स्थान में उन्हे पहुँचाता है उसका नाम धर्म-आचार है। सकल क्लेशोंका दाता जो 'अष्ट प्रकार का कर्म है उसे जो नाश करता है उसका नाम विनय है। ऐसा विनय चारित्र रूप अनुष्ठान विशेष है। यह विनय ही धर्म का मूल कारण कहा गया है-कहा भि है जिसके द्वारा जीव झटिति कर्मों का नाश कर देता है तथा अपवर्ग रूप फल से युक्त हुए जो धर्मरूपी वृक्षका मूल है-वही विनय है। ऐसा विनय चारित्र रूप ही माना गया है

किं मूलए धम्मे पन्नत्ते) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શું છે. (तएणं थावच्चापुत्त सुदंसणेणं एवं वुत्त समाणे सुदंसणं एवं वयासी) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમાં તેમને કહ્યું (सुदंसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) હે સુદર્શન ! અમારા ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે. દુર્ગતિમાં જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમાં તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે. સમસ્ત કલેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનું નામ ' વિનય ' છે. એવું જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (से विय विणए दुविहे पण्णत्ते) તે વિનય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगारविनयोऽनगारविनयश्च। तत्र खलु यः सः अगारविनयः स खलु चतुवारिअणुव्रतानि, सप्त शिक्षाव्रतानि, एकादशोपासकप्रतिमाः। अगारविनयविषये सविस्तर वर्णनमुपासकदशाङ्गटीकायामगारधर्मसंजीवन्यां द्रष्टव्यम्, तत्र चतुर्विंशतितमतीर्थंकर श्री महावीरशासनत्वेन आनन्दगाथापतिवर्णने पञ्चाणुव्रतानि पञ्चमहाव्रतानि वर्णितानि। अत्रारिष्टनेमेर्द्वाविंशतितमतिर्थंकरशासनचतुर्थव्रतस्य परिग्रहविरमण-

(से वि य विणये दुविहे पण्णत्ते) वह विनय भी दो प्रकार का प्रज्ञप्त हुआ है। (तंजहा) वह इस प्रकार से-(अगारविणए अणगारविणए) १ अगार विनय-दूसरा अनगार विनय। ये दो भेद चारित्र पर विनय को लक्ष्य में रखकर किये गये है। जब विनय का अर्थ विनीतता-नम्रता होती है उस समय द्रव्य की अपेक्षा नम्रता और भाव की अपेक्षा नम्रता इस तरह भी उसके दो भेद हो जाते हैं (तत्थ णं जे से आगारविणए सेणं चत्तारि अणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं एक्कारसउवासगपडिमाओ) अगारविनय चार अणुव्रत सात शिक्षाव्रत तथा ११ उपासक प्रतिमा रूप है। इस विषयका विस्तृत वर्णन उपासक दशांगकी टीका अगारधर्म संजीवनी में किया गया है अतः यहविषय वहां से जानलेना चाहिये। विशेष केवल इतना ही है-वहां चौवीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का शासन होने से उपासक दशाङ्गसूत्र में आनन्दगाथापति के वर्णन में पांच अणुव्रत और पांच महाव्रत कहे गये हैं किन्तु यहां बाईसवें तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि भगवान के शासन में चौथे व्रत का

ના પણ બે પ્રકાર કહેવામાં આવ્યા છે. (तं जहा) તે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે (अगारविणए अणगारविणए) १, આગાર વિનય, २, અનગાર વિનય આ બન્ને વિનયના પ્રકારો ચારિત્ર ગત વિનયને અનુલક્ષીને જ કરવામાં આવ્યા છે જ્યારે વિનય શબ્દનો અર્થ 'विनीतता' (નમ્રતા) થાય છે ત્યારે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ નમ્રતા તેમજ ભાવની અપેક્ષાએ પણ નમ્રતા આ રીતે પણ તેના બે ભેદ થાય છે (तत्थ णं जे से अगारविणए से णं चत्तारि अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं, एक्कारसउपासगपडिमाओ) આગાર વિનય પાંચ અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તેમજ અગિયાર ઉપાસક પ્રતિમા રૂપ છે. આ વિષે સવિસ્તર માહિતી ઉપાસક દશાંગસૂત્રની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં આપેલી છે જિજ્ઞાસુ જનોએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઇએ. વિશેષ કેવળ એટલું જ છે કે ત્યાં ચોવીસમા તીર્થંકર શ્રી મહાવીર સ્વામીનું શાસન હોવાથી આનન્દ ગાથાપતીના વર્ણનમાં પાંચ અણુવ્રત અને પાંચ મહાવ્રત કહેલાં છે. પરંતુ અહીં બાવીસમાં તીર્થંકર શ્રી અરિષ્ટનેમી ભગવાનના શાસનમાં ચોથાવ્રતનો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रतेऽन्तर्भावात् चाउज्जामो धम्मो इति वचनात् चत्वारि अणुव्रतानि, चत्वारि महाव्रतानि आसन् इति विशेषः । तत्र खलु यः सोऽनगारविनयः स खलु पञ्च महाव्रतानि, तद्यथा-सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणं१, सर्वस्माद् मृषावादाद् विरमणं२, सर्वस्माद् अदत्तादानाद् विरमणं३, सर्वस्मात् परिग्रहाद् विरमणं। सर्वस्माद् रात्रिभोजनाद् विरमणं, यावन्मिथ्यादर्शनशल्याद् विरमणं, दशविधं प्रत्याख्यानं द्वादशभिक्षुप्रतिमाः, इत्येतेन द्विविधेन, विनयमूलकेन धर्मेण 'अणुपुव्वेणं' अनुपूर्व्येण क्रमेण 'अट्ठकम्मपगडीओ' अष्टकर्मप्रकृतीः ज्ञानावरणीयाद्यष्टकर्मप्रकृतीः 'खवेत्ता' क्षपयित्वा 'लोयग्गपइट्ठाणा' लोकाग्रप्रति-

---

पांचवें परिग्रहविरमणव्रत में अन्तर्भाव होने से 'चाउज्जामो धम्मो' इस वचन से चार अणुव्रत और चार महाव्रत कहे गये हैं।

(तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं चत्तारि महव्वयाइं तं जहा) इसी तरह जो अनगार विनय है वह चार महाव्रत रूप है जैसे (सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वाओ भोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं) समस्त प्राणातिपात से विरमण, समस्त मृषावाद से विरमण समस्त अदत्तादान से विरमण, समस्त परिग्रह से विरमण होना इन चार प्रकार के महाव्रतरूप तथा समस्त रात्रि भोजन से विरमण यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से विरमण होना इन रूप तथा (दसविहे पच्चक्खाणे बारसभिक्खुपडिमाओ दस विध प्रत्याख्यान रूप और १२ बारह भिक्षु प्रतिमा रूप है (इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता

પાંચમાં પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતમાં અન્તર્ભાવ હોવાથી "चाउज्जामो धम्मो" એ વચનથી ચાર અણુવ્રત અને ચારમહાવ્રત કહેયાં છે. (तत्थ णं जे से अणगार विणए से णं चत्तारिमहव्वयाइं तं जहा) આ રીતે જ અનગાર વિનય પણ ચાર મહાવ્રત રૂપ છે. જેમકે (सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिन्नदाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइ भोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं) સકળ પ્રાણાતિપાતથી વિરમવું સકળ મૃષાવાદ (અસત્યભાષણ) થી વિરમવું, સકળ અદત્તાદાનથી વિરમવું, અને સકળ પરિગ્રહોથી વિરમવું આ ચાર જાતના મહાવ્રત રૂપ છે. રાત્રિ ભોજનથી વિરમવું યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી વિરમિત થવું, (दसविहे पच्चक्खाणे बारसभिक्खुपडिमाओ) દશવિધ પ્રત્યાખ્યાનરૂપ અને બાર પ્રતિમારૂપ છે.(इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्ठानाः=मोक्षपदावस्थिता भवन्ति । लोकाग्रे सिद्धिपदे प्रतिष्ठानं स्थितिर्येषां ते तथा सिद्धा भवन्ति ॥ २० ॥

मूलम्–तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी–तुब्भेणं सुदंसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति, तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी–सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएणं सुदंसणा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव सुदंसणा ! तुब्भंपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही, सुदंसणा ! से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेइ आरुहित्ता उण्हं गाहेइ, गाहित्ता ततो पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा

लोयग्गपइट्ठाणा भवंति) इस प्रकार द्विविध विनयमूलक धर्म की की आराधना से जीव क्रम २ से अष्ट विध कर्मों की प्रकृतियों को खपाकर लोकके अग्र भागमें विराजमान हो जाते हैं ।–सिद्ध पदके भोक्ताबन जाते हैं । सूत्र॥२०॥

લોયગ્ગપઇટ્ઠાણા ભવંતિ) આ રીતે વિનયના બંને પ્રકારો જે ધર્મનાં મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ જાતની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને ભોગવનાર થાય છે, ॥ સૂ–૨૦ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ? हंता भवइ, एवामेव सुदंसणा ! अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही, तएणं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामिणं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ सू० २१ ॥

(तएणं थावच्चा०) इत्यादि ।

टीका– ततः खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनमेवमवादीत्–तत्र खलु सुदर्शनः किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः ? एवं स्थापत्यापुत्रेण पृष्टः सन् सुदर्शनो वदति–' अम्हाणं ' इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माकं शौचमूलो धर्मः प्रज्ञप्तः, यावत् स्वर्गं गच्छन्ति अत्र यावच्छब्देन–' सेऽवि य सोए दुविहे पन्नत्ते तं जहा दव्वसोए य भाव-

---

तएणं थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं थावच्चापुत्ते) इस प्रकार कहनेके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार ने पुनः (सुदंसणं एवं) सुदर्शन से इस प्रकार कहा–(तुब्भेणं सुदंसणा किं मूलए धम्मे पन्नत्ते हे सुदर्शन ! तुम्हारा धर्म किं मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) तब सुदर्शनने कहा हे देवनुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक प्रज्ञप्त हुआ है । (जाव सग्गं गच्छंति) इस सुदर्शन के कथन " में स्वर्ग जाते हैं " यहां तक का पाठ लगा लेना चाहिये-जैसे–"सोवियसोए दुविहे पन्नत्ते तंजहा

' तएणं थावच्चा पुत्ते ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–(तएणं थावच्चापुत्ते) (सुदंसणं एवं) આ રીતે ઉપદેશ આવતા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ફરી, (सुदंसणं एवं) સુદર્શનને સંબોધતા કહ્યું–(तुब्भेणं सुदंसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते)હે સુદર્શન તમારા ધર્મનું મૂળ શું પ્રજ્ઞપ્ત થયું છે ? (अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) જવાબ આપતાં સુદર્શને કહ્યું "હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનું મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે." એટલેકે મારો ધર્મ શૌચ મૂલક છે. (जाव सग्गं गच्छंति) 'यावत् स्वर्गमां पहोंचे छे " સુદર્શનના કથનમાં અહીં સુધી લેવું જોઇએ. જેમ " सो विय सोए दुविहे पन्नत्ते तं जहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोए य इत्यादि एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं ' इति पर्यन्तं वाच्यम् । ततः खलु स्थात्यापुत्रः सुदर्शनमेवमवादीत्–सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एकं महद् ' रुहिरकयं ' रुधिरकृतं शोणितलिप्तं वस्त्रं रुधिरेण चैव= शोणितेनैव 'धोवेज्जा' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधिः शुद्धिः निर्मलता, ' णो इणट्ठे समट्ठे ' नायमर्थः समर्थः=रुधिरलिप्तं वस्त्रं रुधिरेणैव प्रक्षालितं सत् पवित्रं भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकीं बुद्धिमुपगन्तुं न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भंपि ' तवापि ' पाणाइवाएणं ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन नास्ति शोधिः, सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

दव्वसोए य भावसोएय " इत्यादि से लेकर " एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं " (तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्थापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा–(सुदंसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बडे भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समार्थित नहीं होता–रुधिर से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ–शुद्ध होता है–जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा मान्य नही होता है (एवामेव सुदंसणाऽ तुब्भंपि पाणाइवाएणं जावमिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स-रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

दव्वसोए य भावसोए य " અહીંથી " एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं " અહીં સુધી સુદર્શનનું કથન સમજવું જોઇએ. (तएणं थावच्चा पुत्ते सुदंसणं एवं वयासी) આ રીતે સુદર્શનની શૌચ મૂલક ધર્મવિષેની વાત સાંભળીને સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું–(सुदंसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएणं सुदंसणा ? तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ?) હે સુદર્શન ! કોઇ પુરુષ લોહીભીનું મોટું લૂગડું લોહીથી જ સાફ કરે તો તે લોહીથી સાફ કરેલું લૂગડું શું શુદ્ધ થશે ! (णो इणट्ठे समट्ठे) જેમ લોહી ભીનું લૂગડું લોહીથી સ્વચ્છ થાય જ નહિ આ વાત પ્રામાણિક બુદ્ધિથી ગમે તેને કરીએતો પણ માન્ય થાય જ નહિ (एवामेव सुदंसणा ? तुब्भंपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही) તે રીતે સુદર્શન ! તારી પણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकं महद् रुधिरकृतं वस्त्रं ' साज्जियाखारेणं ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिंपइ ' अनुलिंपति अनुलिप्य ! ' पयणं ' पचनं पाकस्थानं ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्तं वस्त्रं क्षारमृत्तिकानुलिप्तं कृत्वा कर्कस्मिंश्चिम् मृन्मयादिपात्रे निधाय तत्पात्रं चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आरोह्य ' उण्हं गाहेइ' उष्णं ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा ततः पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत् , हे सुदर्शन ! स नूनं तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योष्णं ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र-

---

इसी तरह हे सुदंसण? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नही होती है। जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नही होती है। (सुदंसणा? से जहाणामए केइपुरिसे एगं महं रुहिरकयवत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं सुद्धेणं वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के बर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है-रखकर फिर उसे गर्म करता है-गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી. જેમ કે લોહીથી ખરડાએલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી. (सुदंसणा ? से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयवत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स ऊण्हं गाहियस्स सुद्धेणं सुद्धेणं वारिणापक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલાં લોહીલીનાં વસ્ત્રને માણસ સાજીખાર ના પાણીમાં બોળીને માટીના વાસણમાં મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊનું કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાજીખારમાં બોળવાથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षाल्यमानस्य 'सोही' शोधिर्भवति । हन्त ! भवति । एवमेव सुदर्शन ! अस्माकमपि 'पाणाइवायवेरमेणं' प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविरमणेनास्ति शोधिः, आत्मनः पवित्रता भवति, यथा वा तस्य रुधिरक्तस्य वस्त्रस्य यावत् शुद्धेन वारिणा प्रक्षाल्यमानस्यास्ति शोधिः । वस्त्ररूपोऽयमात्मा रुधिररूपप्राणातिपाताद्यष्टादशपापस्थानोपलिप्तः सम्यक्त्वरूपया क्षारमृत्तिकयाऽनुलेपं प्राप्य शरीरभाण्डं जिनकल्पस्थविरकल्परूपपचनस्थानोपरी संस्थाप्य तपोऽग्निना परितापितः संयमरूपशुद्धजलेन प्रक्षालितः सन निर्मलः स्वच्छदर्पणवत्प्रकाशमानो भवति नान्यथेत्यर्थः । ये तु प्राणातिपातादि परायणा जीवाः शुद्ध्यर्थं मृद्वारिजनितं शौचं जलाभिषेकं च कुर्वन्तः सन्ति, तान् प्रति दयन्ते खलु जीवाजीवतत्त्ववेदिनो विद्वांसः—अहो ! प्राणातिपातादि सेवनजनित ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्ममलनिरन्तरलेपानुलेपसंग्रहपरायणा अपि इमे जीवाः पुनः प्राणातिपातादिभिरेव शुद्धिमिच्छन्ति अहो ! कीदृशो मोहस्य महिमा वरीवर्ति ।

उस रुधिरलिप्त वस्त्र की सर्जिका खार से अनुलिप्त होने पर, पाकस्थान पर रखे जाने पर गर्म किये जने पर, और शुद्ध जल से प्रक्षालित हो जानेपर शुद्धि होती है? (हंता भवइ) हां होती है (एवामेव सुदंसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थि सोही) तो इसी तरह हे सुदर्शन ! हमारी भी प्राणातिपातविरमण से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से शुद्धि होती है अर्थात् आत्मा की परित्रता होती है। (जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) जैसे उस रुधिरलिप्त वस्त्र को यावत् शुद्ध जल से प्रक्षालित करने पर शुद्धि हो जाती है। (तएणं

ચૂલા ઉપર ચઢાવીને ગરમ, કરવાથી તેમજ શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરવા થી સ્વચ્છ થઇ જાય છે કે નહિ (हंता भवइ) સુદર્શને જવાબમાં કહ્યું " સ્વચ્છ થઇ જાયછે. " (एवामेव सुदंसणा ! अम्हेपि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थिसोही) તો આ પ્રમાણે જ પ્રાણાતિપાત વિરમણથી યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના વિરમણથી શુદ્ધિ થાય છે. એટલે કે એમનાથી આત્મા પવિત્ર થાય છે. (जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) જેમ કે લોહીભીનાં લૂગડાં સાબુથાર તેમજ શુદ્ધ પાણીથી શુદ્ધ થઇ જાય છે. (तएणं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) આ રીતે ઉપદેશ અપાએલા સુદર્શન શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગરને વિનંતી કરતાં કહ્યું ' હે ભગવાન ! શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મના આરાધક તમને ધન્ય છે. " આ રીતે કહીને તેમને વંદન તેમજ નમસ્કાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः स्थापत्यापुत्रवचनश्रवणानन्तरं खलु स सुदर्शनः संबुद्धः सम्यक्त्वमारूढः सन् स्थापत्यापुत्रं वन्दते श्रुतचारित्रलक्षणसद्धर्मसमाराधनेन धन्योऽसि भगवन्नित्यादिवाक्येन स्तौति-इत्यर्थः। नमस्यति स्वापकर्षं बोधयन् श्रद्धेयवचनतया गुरुभावेन विनयं प्रकटयन् कायेन प्रणमतीत्यर्थः। वन्दित्वा नत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्राकारेणावादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवान् ! धर्मं=विनयमूलकं भवदुक्तं श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा ज्ञातुम्, जीवाजीवपुण्यपापास्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षरूपाणितत्वानि सम्यक् सर्वथा वेत्तुमित्यर्थः यावत्-यावत् करणादत्र धर्मश्रवणजीवाजीवादितत्त्वज्ञानानन्तरं श्रावकधर्मस्वीकारेण, श्रमणोपासको जातः, स कीदृश इत्याह -अधिगतजीवाजीवो यावत् प्रतिलाभयन् सत्कारयन् संमानयन् विहरति ॥२१॥

से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चा पुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) इस प्रकार संबोधित हुए सुदर्शन सेठने स्थापत्यापुत्र अनगार की हे भगवान् श्रुतचारित्र रूप धर्म के आराधन करने वाले होने से आपको धन्य है इत्यादि बचनो द्वारा वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा (इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए-अहिगया जीवा जीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) हे भदंत ! विनय मूलक श्रुतचारित्र रूप धर्म को सुनकर मैं जीव, अजिव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा एवं मोक्ष इन तत्त्वों को जानना चाहता हूँ। इस प्रकार वह धर्मश्रवण और जीवाजीवादितत्त्वों के बाद श्रावक धर्म स्वीकार कर श्रमणोपासक बन गया। श्रमणोपासक बनकर फिर उसने स्थापत्यापुत्र अनगार का आहार आदि प्रदान कर सत्कार किया-सन्मान किया।

કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને વિનંતિ કરી -(इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) હે ભદંત ! વિનયમૂલક શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મની વાત સાંભળીને હું હવે જીવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્રવ, સંવર, નિર્જરા, બંધ અને મોક્ષ આ આ તત્ત્વોને સ્પષ્ટ રૂપે સમજવાની ઇચ્છા રાખુ છું. આ પ્રમાણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ના મોઢેથી આ બધાં જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વો વિષે સાંભળીને શેઠ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારીને શ્રમણોપાસક થઇ ગયા. શ્રમણોપાસક થઇને શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને આહાર વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો સન્માન કર્યું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दृष्टान्तकी योजनाइस प्रकार दार्ष्टान्तमे करनी चहिये-वस्त्र के जैसा यह आत्मा है रुधिरके जैसे प्राणातिपातादिक १८अठारह पापस्थान हैं। इन से यह मलीन हो रहा है। क्षार मृत्तिका जैसा सम्यक्त्व है। सो जब यह आत्मा इस सम्यक्त्व रूप क्षार मृत्तिका से अनुलिप्त हो जाता है और अपने शरीर रूप भांडको जिनकल्प तथा स्थविर कल्प रूप पचन स्थान पर स्थापित करता है तप, रूप अग्निसे अपने आपको तपाता है तब यह स्वच्छ दर्पणकी तरह प्रकाशमान होने लगता है। इस शुद्धि मार्ग के अतिरिक आत्माकी शुद्धि और किसी मार्ग से नही हो सकती है। जो प्राणातिपातादिकोंमें परायण बने हुए जीव शुद्धिके लिये मृत्तिका एवं जल का उपयोग करते हैं और उससे आत्माकी शुचिता मनते है गंगादि तीर्थोंमें स्नान करने से पापोंकी निवृत्त होना मानते हैं उनके प्रति जीव और अजीवके स्वरूपको जाननेवाले विद्वज्जन सदय हो कर कहते हैं की देखोतो सही यह कैसीमोह की प्रबल महिमा है जो प्राणातिपात आदि सेवन से जनित ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्ममल के निरन्तर लेपानुलेप के संग्रह करने में परायण बने हुए भी

આ ઉક્ત દૃષ્ટાન્ત દાષ્ટાન્તિક રૂપે આ રીતે સમજવું જોઈએ-આ આત્મા વસ્ત્ર રૂપે છે. પ્રાણાતિપાત વગેરે અઢાર પાપસ્થાનો લોહીની જેમ છે. એમનાથી આત્મા મલિન થઈ રહ્યો છે સાજીખારના રૂપમાં સમ્યકત્વ છે, જ્યારે આત્મા સમ્યકત્વ રૂપ સાજીખારથી અનુલિપ્ત થાય છે અને પોતાના શરીર રૂપી વાસણને જિનકલ્પ તેમજ સ્થાવિરકલ્પરૂપ પચન સ્થાન (ચૂલા) ઉપર મૂકે છે તપ રૂપ અગ્નિ વડે શરીર રૂપો વાસણને તપાવે છે ત્યારે તે સ્વચ્છ દર્પણ ના રૂપમાં પ્રકાશિત થાય છે. આત્માની શુદ્ધિનો આ કેવળ એકજ માર્ગ છે કે જેનાથી આત્મશુદ્ધિ ચોકકસ પણે સંભવિત થાય છે. એના સિવાય બીજા કોઈ ઉપાયથી આત્મ-શુદ્ધિ થવી અસંભવિત છે જે પ્રાણાતિપાત વગેરેમાં લીન થયેલા જીવો શુદ્ધિને માટે માટી અને પાણીનો ઉપયોગ કરેછે, અને તેમનાથી આત્મ શુદ્ધિ માને છે-ગંગા વગેરે તીર્થ સ્થાનોમાં સ્નાન કરવાથી પાપો નષ્ટ થાય છે એમ માને છે તેમના પ્રત્યે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપને જાણનારા વિદ્વાનો સદય થઈને કહેછે-જુઓ તો ખરા, અજ્ઞાનનો આ કેવો પ્રબળ મહિમા છે ? કે જેઓ પ્રાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી જનિત જ્ઞાનાવરણીય વગેરે આઠ પ્રકારના કર્મ રૂપી જળને હમેશાં લેપાનુ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ।

तएणं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ णो अढाइ नो परियाणाइ नो वंदइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं० पासित्ता एवं वयासी–तुमं णं सुदंसणा ! अन्नदा ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता तं कस्स णं तुमे जाव णो वंदसि सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ।

ये जीव पुनः उन्ही प्राणातिपातादिको के सेवन से अपनी शुद्धि की कामना कर रहे हैं ॥ सूत्र २१ ॥

લેપને સંગ્રહવામાં લીન થયેલા એ જીવો ફરી તેજ પ્રાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી પોતાની શુદ્ધિ ઇચ્છે છે. ॥ સૂત્ર " २१ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तएणं से सुदंसणे सुयेणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायगं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएणं इत्यादि–ततस्तदनन्तरं खलु तस्य शुकस्य परिव्राजकस्य 'इमीसे कहाए' अस्याः कथायाः 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमेयारूवे' अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः आत्मगतोविचारः, यावत् समुदपद्यत=प्रादुर्भूतः–एवं खलु सुदर्शनेन शौचमूलं धर्मं 'विप्पजहाय' विप्रजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्मः 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टिं=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धानं 'वामेत्तए' वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलकं धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल-

'तएणं तस्स सुयस्स' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह समाचार विदित हुआ सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया–यह खबर मिली–तब (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ (एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणय मूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मका परित्याग कर विनयमूलक धर्म कोस्वीकार लिया है, (तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलयं धम्मे आघवित्तए) सो अब मुझे

'तएणं तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

ટીકાર્થ (तएणं) ત્યાર બાદ (तस्स सुयस्स) શુક પરિવ્રાજકે જ્યારે (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) આ વાત સાંભળીકે સુદર્શન શેઠ શ્રમણોપાસક થઇ ગયાછે, ત્યારે (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) તેના મનમાં વિચાર કર્યો-(एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) કે સુદર્શન શેઠે શૌચ મૂલક ધર્મ ત્યજીને વિનય મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે (तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलयं धम्मे आघवित्तए) તો હવે મારે સુદર્શનની વિનય મૂલક ધર્મ ઉપરથી શ્રદ્ધા મટા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कधर्मविषयकं श्रद्धानं तदपनीय पुनरपितं शौचमूलके धर्मे स्थापयितुं ममोचितमित्यर्थः। 'त्तिकट्टु' इतिकृत्वा=इदं मनसि धृत्वा, एवम्=उक्तप्रकारेण 'संपेहेइ' संप्रेक्षते विचारयति, 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य इत्येवं मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण सार्धं यत्रैव सौगंधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रमः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकरागरञ्जितवस्त्रधारी प्रविरलपरिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति=निःसरति। प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्याः 'मज्झं मज्झेणं' मध्यमध्येन मध्यमध्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृहं, यत्रैव सुदर्शनस्तत्रैवोपागच्छति।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकी दृष्टिको हटाकर उसे समझाकर स्थापित करूँ। (त्तिकट्टुएवं संपेहेइ ऐसा मनमें धारण कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया-(संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के साथ जहां वह सौगंधिका नगरी और उस मे भी जहां परिव्राजकाश्रम था वहां आया। (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भांडोको रख दिया (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहीओ पडिनिक्खमई) रखकर फिर वह गैरिक धातु से रंगे हुए वस्त्रों को पहिरे हुए कुछेक परिव्राजकों के साथ २ उस परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला (पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए

ઠીને ફરી શૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઇએ. (त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) આ રીતે મનમાં વિચાર કરીને તેણે પહેલાંની જેમ તેને સમજાવવાનો વિચાર કર્યો (संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ્ર પરિવ્રાજકોની સાથે જ્યાં તે સૌગંધિકા નગરી અને તેમાં પણ જ્યાં પરિવ્રાજકાશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો. (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेइ) આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યાં મૂકી. (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमई) મૂકીને તે ગૈરિકધાતુથી રંગાએલાં વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિવ્રાજકોને સાથે લઇને આશ્રમની બાર નીકળ્યો. (पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु स सुदर्शनस्तं शुकमेजमानम् आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भुट्ठेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थानं न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्गच्छति अभिमुखं न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदरं न कुरुते 'नो' परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमनं नानुमोदयति; नो वन्दते न स्तौति, 'तुसिणीए संचिट्ठइ' तूष्णीकः संतिष्ठति।

ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शनमनभ्युत्थितं दृष्ट्वा एवमवादीत्–त्वं खलु सुदर्शन! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमानं दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्–

नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगंधिका नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर जहां सुदर्शन का घर और उसमें भी जहां सुदर्शन था वहां गया (तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ) सुदर्शन ने आते हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो आढाइ णो परियाणाइ नो वंदइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) परन्तु देखकर वह उठा नही उसके सामने नहीं गया, उसका आदर नहीं किया, उस के आगमन की उसने सराहना नहीं की। स्तुति भी नहीं की केवल चुपचाप बैठा रहा। (तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं० पासित्ता एवं वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नहीं उठा हुआ, सामने नहीं आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर उसने उससे इस प्रकार कहा– (तुमं णं सुदंसणा! अन्नया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं सुदंसणा! तुमं ममं

જેણેવ સુદંસણસ્સ ગિહે જેણેવ સુદંસણે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) બહાર નીકળીને સૌગંધિકા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને જ્યાં સુદર્શનનું ઘર અને તેમાં પણ જ્યાં સુદર્શન હતો ત્યાં ગયો. (તએણં સે સુદંસણે તં સુયં એજ્જમાણં પાસઇ) સુદર્શને પણ પરિવ્રાજકને આવતા જોયા. (પાસિત્તા નો અબ્ભુટ્ઠેઇ, નો પચ્ચુગ્ગચ્છઇ, णो आढाइ, णो परियाणाइ, नो वंदइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) પરંતુ જોઈને તે ઉભા થયા નહિં, સ્વાગત માટે તેની સામે ગયા નહિ, તેને આદર આપ્યો નહિં, તેના આગમનની તેમણે સરાહના કરી નહિં, તેની સ્તુતિ પણ કરી નહિ કિન્તુ તેઓ ચુપચાપ પોતાની જગ્યાએ બેસી જ રહ્યા. (तएणं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं० पासित्ता एवं वयासी) શુક પરિવ્રાજકે શેઠને સત્કાર માટે પોતાની સામે નહીં આવતાં જોઈને કહ્યું–(तुमं णं सुदंसणा! अन्नया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्र यावच्छब्देन-' पच्चुग्गच्छसि ' आढासि, परिजाणासि ' इति वाच्यम्, वन्दसे, इदानीं सुदर्शन ! त्वं मामेजमानं दृष्ट्वा यावद् नो वन्दसे, अभ्युत्थानादिकं करोषीत्यर्थः तत्कस्य खलु त्वया सुदर्शन! अयमेतद्रूपो विनयमूलधर्मः प्रतिपन्नः हे सुदर्शन ! मम धर्मं परित्यज्य त्वया करय धर्मः स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततः खलु स सुदर्शनः शुकेन परिव्राजकेनैवमुक्तः सन् आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय करतलपरिगृहीतं-शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा शुकं परिव्राजकमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाः ? अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तेवासी=शिष्यः स्थापत्यापुत्रनामाऽनगारः यावद्-पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं

एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि तं कस्स णं तुमे सुदंसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन ! जब तुम किसी समय मुझे आता हुआ देखते थे तो देखकर उठते थे- यावत् वंदना करते थे। परन्तु अब इस समय सुदर्शन ! तुम मुझे आता हुआ देखकर यावत् उठे नहीं तुमने मेरी वंदना नहीं की। तो हे सुदर्शन ! तुमने किसका यह इस रूप विनय मूलक धर्म स्वीकार कर लिया है। (तएणं से सुदंसणे सुकेणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायगं एवं वयासि) इस प्रकार शुक परिव्राजक के द्वारा कहा गया वह सुदर्शन अपने स्थान से उठा और उठकर उसने दोनों हाथों को अंजलि रूप में कर और उसे मस्तक पर रख उससे इस प्रकार कहा कि (एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चा पुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के

सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि तं कास णं तुमे सुदंसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) હે સુદર્શન ! પહેલાં તું મને આવતાં જોતો ત્યારે સ્વાગત માટે ઉભો થતો અને સામે આવીને વંદન વિગેરે કરતો હતો પણ અત્યારે મને જોઈને તું ઉભો થયો નથી તેમજ તેં મને વંદન પણ કર્યાં નથી. હે સુદર્શન ! તે આ કેવાપ્રકારનો વિનયમૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે ? (तएणं से सुदंसणे सुकेणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायगं एवं वयासी) શુક પરિવ્રાજકની વાત સાંભળીને સુદર્શન પોતાના સ્થાનેથી ઉભો થયો અને ઉભો થઈને બંન્ને હાથની અંજલીને મસ્તકે મૂકીને તેને કહ્યું-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इहचेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ) હે દેવાનુપ્રિય !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रवन् सुखं सुखेन विहरन् . इति संग्रहः । इह=सौगन्धिकानगर्यामागतोऽस्ति, इहैव अस्यामेव नगर्यां बहिर्भागे नीलाशोके नीलाशोकनाम्नि उद्याने विहरति, तस्य= स्थापत्यापुत्रस्य खलु अन्तिके=समीपे विनयमूलो धर्मः प्रतिपन्नः मया स्वीकृतः । यदा स्थापत्यापुत्र इहागतस्तदाऽहमपि वंदितुं तत्रगतस्तदा तदुपदिष्टधर्मकथां श्रुत्वा विनयमूलमार्हतधर्मं समीचीनं विज्ञाय स एव धर्मः स्वीकृतो मयेतिभावः ॥२२॥

मूलम्–तएणं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वयासी–तं गच्छामो सुदंसणा ! तव धम्मारियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो, तं जइणं मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरइ, तएणं अहं वंदामि नमंसामि अहमेसे इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वाकरेइ, तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि ॥ सू० २३ ॥

अंतेवासी स्थापत्या नाम के अनगार मुनि परंपरा के अनुसार चलते हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए सुख पूर्वक इस सौगंधिका नाम की नगरी में आये और अब वे नीलाशोक नाम के उद्यान में ठहरे हुए हैं। (तस्सणं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) उनके पास मैंने विनय मूल धर्म समीचीन समझ कर स्वीकार कर लिया है। तात्पर्य इसका यह है कि मैं भी उनको वंदना करने के लिये गया था। उन के मुख से जब मैंने धर्मकथा सुनी तब मुझे उनका सिद्धान्त निर्दोष युक्ति शास्त्र से अविरुद्ध प्रतीत हुआ अतः मैंने उनसे उनके उस धर्म को अंगीकार कर लिया है। सूत्र ॥ २२ ॥

અહંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુના અંતેવાસી (શિષ્ય) સ્થાપત્યાપુત્ર નામના અનગાર મુનિ પરંપરાને અનુસરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા સૌગંધિકા નગરીમાં સુખેથી આવ્યા. અને હમણાં નીલાશોક ઉદ્યાનમાં ઉતર્યા છે. (तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) તેમની પાસે મેં સારી પેઠે સમજીને વિનય મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે. તાત્પર્ય એ છે કે હું પણ તેમને વંદન કરવા ગયો હતો તેમના શ્રીમુખથી મેં ધર્મકથા સાંભળી. મને તેમના સિદ્ધાન્તો નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્ર સમ્મત લાગ્યા. એથી મેં તેમની પાસેથી આ ધર્મ સ્વીકાર્યો છે. ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'तएणं से सुए' इत्यादि ।

टीका-ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामकं श्रेष्ठिनम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छामः खलु सुदर्शन ! तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । 'इमाइं च' इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाणतया संनिकृष्टान् च शब्दादन्यांश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्=अर्थ्यमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थाः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञाप्यमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारणं तत्त्वाधकयुक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्रं तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=समर्थ्यमाणं व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि. पृच्छामः । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप-

'तएणं से सुए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजक ने (सुदंसणं एवं वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्माचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरइ, तएणं अहं वंदामि नमंसामि, अहमे से इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमे पूछूंगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

'तए णं से सुए इत्यादि'

टीकार्थ (तएणं) त्यार आद (से सुए) शुक (परिव्वायए) परिव्राजके (सुदंसणं एवं वयासी) सुदर्शनने आ प्रमाणे कह्युं-(तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) हे सुदर्शन ! तो हवे अहीं थी हुं सीधो तारा धर्मगुरु स्थापत्यापुत्रनी पासे जउं छुं (इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं, अट्ठाइं, जाव वागरइ तएणं अहं वंदामि, नमंसामि, अहमेसे इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) तेमनी साथे हुं अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो, कारणो, अने व्याकरणो ना विषे चर्चा करीश, जो ते मारा अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यापुत्रः इमान् अर्थान् यावद् व्याकरोति=मम प्रश्नानां समीचीनं समाधानं करिष्यति ततस्तदनन्तरं खलु अहं वन्दे=वन्दिष्ये, नमस्यामि=नमस्करिष्यामि। अथ मम स इमान् अर्थान् यावद् व्याकरणानि नो व्याकरोति=न स्पष्टीकरिष्यति, ततस्तदा खलु अहम् एतैरेव अर्थैर्हेतुभिः ' निप्पट्ठपसिणवागरणं ' निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणं=निः स्पष्टानि अव्याख्यातानि प्रश्नव्याकरणानि प्रश्नोत्तराणि येन स तथा तम्, प्रश्नोत्तरकरणासमर्थं करिष्यामि ॥ २३ ॥

मूलम्—तएणं से परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—जत्ता ते भंते! जवणिज्जं ते अव्वाबाहं पि तं, फासुयं विहारं ते ?।

तएणं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिवायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अव्वाबाहंपि मे फासुय विहारंपि मे, ॥

तएणं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी—किं भंते ! जत्ता! ॥

सुया ! जन्नं मम णाणदंसणचरित्ततवनियमसंजममाइएहिं जोएहिं जयणा से तं जत्ता ।

से किं तं भंते ! जवणिज्जं ?।

विशेषः का अच्छी तरह से समाधान कर देंगे तो मैं उन्हें नमस्कार करूँगा। यदि वे मेरे इन अर्थों से लेकर व्याकरणों तक की बातों का कोई ठीक २ स्पष्टी करण नहीं करेंगे। तो मैं उन्हें उसी समय इन्हीं अर्थ हेतुओं द्वारा प्रश्नोत्तर करने में असमर्थ कर दूंगा ॥ सू० २३ ॥

કારણો તેમજ વ્યાકરણો વિષેના પ્રશ્નો નાં સારી પેઠે સમાધાન કરશે તો હું તેમને વંદન કરીશ અને જો તે મારા અર્થો વ્યાકરણો વગેરે ના વિષે સારી રીતે સ્પષ્ટી કરણ નહિ કરી શકે તો હું તેમને તરત જ પ્રશ્નોત્તર કરવામાં અસમર્થ કરીશ ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पन्नत्त, तंजहा इंदियजवणिज्जे य नो इंदियजवणिज्जे य से किं तं इंदियजवणिज्जे ? ।

सुया ! जन्नं ममं सोइंदिय–चक्खिंदिय–घाणिंदिय–जिब्भिंदिय फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जं ।

से किं तं नो इंदियजवणिज्जं ? ।

सुया ! जन्नं कोहमाणमायालोभा खीणा उपसंता नो उदयंति से तं नो इंदियजवणिज्जे ।

से किं तं भंते ! अव्वाबाहं ?

सुया जन्नं मम वाइयपित्तिय सिंभिय सन्निवाइया विविहा रोगायंका णो उदीरेंति से तं अव्वाबाहं ।

से किं तं भंते फासुयविहारं ? ।

सुया ! जन्नं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा देवकुलेसु वा सभासु वा पव्वएसु वा इत्थीपसुंपडगविवज्जिएसु वसहीसु पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि,से त्तं फासुयविहारं ।

सरिसवया ते भंते ! किं भक्खेया अभक्खेया ? ।

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

सुया ! सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा--मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य, तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पन्नत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा सत्थपरिणया य असत्थ परिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा फासुगा य अफासुगा य, अफासुया णं सुया ! नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा--जाइया य अजाइया य, तत्थ णं जे ते अजाइया ते अभक्खेया. तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया, एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चंति—सरिसवया भक्खेया वि, अभक्खेया वि, एवं कुलत्था वि भाणियव्वा, नवरं इमं णाणत्तं—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य इत्थि कुलत्था तिविहा पन्नत्ता तं जहा—कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य, धन्नकुलत्था तहेव, एवं मासा वि, नवरं इमं नाणत्तं--मासा तिविहा पन्नत्ता, तं जहा--कालमासा य अत्थमासा य, धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पन्नत्ता तं जहा-सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया धन्नमासा तहेव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावभविएवि भवं ?।

सुया ! एगे वि अहं दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभाव भविएवि अहं ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगे वि अहं जाव अणेग-भूयभविएवि अहं !

जण्णं सुया! दव्वट्ठयाए एगे अहं नाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं अव्वएवि अहं अवट्ठिए वि अहं उवओगट्ठयाए अणेगभूयभाव भविएवि अहं।

एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए केवलि-पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा ॥सू० २४॥

'तएणं से सुए' इत्यादि-

टीका- ततस्तदनन्तरं स शुकः परिव्राजकसहस्रेण सुदर्शनेन श्रेष्ठिना च सार्धं यत्रैव नीलाशोकनामोद्यानं यत्रैव स्थापत्यापुत्र नामाऽनगार आसीत्, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्थापत्यापुत्रमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्- 'जत्ता ते

'तएणं से सुए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए) वह शुक परिव्राजक (परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चा पुत्तो अणगारे तेणेव उवागच्छइ) १ एक हजार परिव्राजकों के-और सुदर्शन के साथ जहां नीलाशोक उद्यान तथा उसमें जहां

'तएणं से' सुए' इत्यादि !'

टीकार्थ (तएणं) त्यार माद (से सुए) शुक परिव्राजक (परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ) એક હજાર પરિવ્રાજકો અને સુદર્શન શેઠની સાથે જ્યાં નીલાશોક ઉદ્યાન હતો અને તેમાં જ્યાં સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર હતા ત્યાં ગયો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भंते ! ' हे भदन्त ! ते तव यात्रा वर्तते ? ' जवणिज्जं ते ' यापनीयं ते तव वर्तते ?, ' अव्वाबाहं पि ते ' अव्याबाधमपि ते वर्तते ?, ' फासुयविहारं ते ' प्रासुक विहारस्ते तव वर्तते ? ।

ततस्तदनन्तरं स स्थापत्यापुत्रः शुकेन परिव्राजकेनैव मुक्तः सन् शुकं परिव्राजकमेवमवादीत्–हे शुक ! ' जत्ता वि मे ' यात्राऽपि मे ममाऽस्ति, ' जवणिज्जंपि मे ' यापनीयमपि मे ममाऽस्ति, ' अव्वाबाहंपि मे ' अव्याबाधमपि मे मम वर्तते, ' फासुयविहारं पि मे ' प्रासुक विहारोऽपि मे ममाऽस्ति ।

ततस्तदनन्तरं खलु स शुकः स्थापत्यापुत्रमेवमवादीत् ' किं भंते ! जत्ता ' का भदन्त यात्रा हे भदन्त ! का=किं स्वरूपा तव यात्रा ? ।

स्थापत्यापुत्र अनगार था वहां गया । (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी) वहां जाकरउसने स्थापत्यापुत्र से ऐसा कहा–(जत्ताते भंते ! जवणिज्जं ते अव्वाबाहं पि ते फासुयविहारं) तो हे भदंत ! आपकी यात्रा है क्या ? आपके यापनीय है क्या ? आपके अव्याबाध है क्या ? आपके प्रासुक विहार है क्या ? (तएणं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी) इस प्रकार शुक परिव्राजक से पूछे गये उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने उस-शुक परिव्राजक से ऐसा कहा–(सुया ! जत्ता वि मे, जवणिउजंपि में अव्वाबाहंपि में फासुयविहारंपि में) हे शुक हमारा यात्रा भी है, यापनीय भी है हमारा अव्याबाध भी है हमारे प्रासुक विहार भी है। (तएणं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी) जब स्थापत्यापुत्र अनगार ने शुक परिव्राजक से इस प्रकार कहा–तब उसने स्थापत्यपुत्र अनगार

(उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी) त्यां जईने तेणे स्थापत्यापुत्र ने कहुं–(जत्ता ते भंते ! जवणिज्जंते अव्वाबाहं पि ते फासुयविहारं) हे भदन्त ! शुं तमारी यात्रा छे ? यापनीय छे ? आव्याबाध छे ? तमारे प्रासुक विहार छे ? (तएणं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणेसुयं परिव्वायगं एवं वयासी) शुक परिव्राजकनी आ वात सांभळीने स्थापत्यापुत्र अनगारे शुक परिव्राजकने कहुं–(सुया ! जत्ता वि मे जवणिज्जंपि में अव्वाबाहंपि में फासुयविहारं पि में) हे शुक ! अमारी यात्रा पण छे, यापनीय पण छे, आव्याबाध पण छे. अने अमारे प्रासुक विहार पण छे. (तएणं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी) ज्यारे स्थापत्या पुत्र अनगारे शुक परिव्राजकने आ प्रमाणे कहुं, त्यारे स्थापत्या पुत्र अनगारे तेमने कहुं–(किं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुकस्य प्रश्नं श्रुत्वा स्थापत्यापुत्रो वदति–' सुया ' इत्यादि. । हे शुक ! 'जन्नं यत् खलु मम ' णाणदंसणचरित्ततवनियमसंजममाइएहिं ' ज्ञानदर्शनचारित्र तपोनियमसंयमादिकेषु ज्ञानं=ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा मादुर्भूतो जीवाजीवादि तत्त्वनिर्णयलक्षणआत्मपरिणामः, दर्शन=दर्शनमोहनीयस्य क्षयोप शमात् क्षयाद्वाऽऽविर्भूतस्तत्त्व श्रद्धानरूपआत्मपरिणामः, चारित्रं=चारित्रमोहनी-यस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा जातः स्थूलसूक्ष्मप्राणातिपातादि विरमणलक्षण आत्म-

से इस तरह पुनः पूछा (किं भंते जत्ता) हे भदन्त ! यात्रा शब्द का अर्थ क्या है ? (सुया जन्नं मम णाणदंसणचरित्त तवनियम संजमाइ एहिं जोएहिं जयणा से तं जत्ता) स्थापत्यापुत्र अनगार ने कहा है शुक ? ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, संयम, आदिकों में एवं मन वचन और काय इनके व्यापारो में जो हमारी यतनाचार पूर्वक प्रवृत्ति है वही यात्रा है–और ऐसी यात्रा हमारी आनंद के साथ हो रही है । अन्य शत्रुंजयादि तीर्थों की यात्रा वीतराग मार्ग में नही है । ज्ञानावर-णीय कर्म के क्षयोपशम से, अथवा क्षय से जीवअजीव आदि तत्त्वों के विषय में जो उनके स्वरूप आदि का निर्णय रूप आत्म परिणामउ-त्पन्न होता है वह ज्ञान है ।

दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से, जीव के जो तत्त्व श्रद्धान रूप आत्म परिणाम होता है वह दर्शन हैं।

भंते जत्ता) હે ભદંત ! યાત્રા સબ્દનો અર્થ શું છે. (सुया जन्नं मम णाण दंसणचरित्ततवनियमसंजममाइएहिं जोएहिं जयणा से तं जत्ता) સ્થાપ ત્યાપુત્ર અનગારે કહ્યું–હે શુક ! જ્ઞાન દર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સંયમ, વગેરે માં અને મન, વચન અને કાયાના વ્યાપારોમાં જે અમારી જતન પૂર્વક આચરણ કરવાની પ્રવૃત્તિ છે, તેજ યાત્રા છે, અને એ યાત્રા અમારી સુખેથી પસાર થઈ રહી છે, શત્રુંજય વગેરે તીર્થોની યાત્રા વીતરાગ માર્ગને અનુસરનારાઓ માટે નથી. જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવ અજીવ વગેરે વિષયમાં જે તેમના સ્વરૂપ વગેરેના નિર્ણય રૂપ આત્મ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે જ્ઞાન છે.

દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવતા જે તત્ત્વ શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મપરિણામ હોય છે તે દર્શન છે.

ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જે સ્થૂલ તેમજ સૂક્ષ્મ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिणामः, तपः=अनशनादिकं द्वादशविधम्, नियमः=द्रव्यक्षेत्रकालभावतोऽभिग्रह ग्रहणमुत्तरगुणरूपम्., संयमः=चारित्रग्रहणेनैव संयमे प्रतिबोधिते पुनःसंयम पदोपादानादुभयकालप्रतिलेखनरूपः, कालचतुष्टा ये स्वाध्यायादिकरणरूपश्च संयमो ग्राह्यः। आदिपदाद् ध्यानावश्यकादिः तत्र ध्यानं=धर्मध्यानादि, आवश्यकं षड्विधं तेषु, 'जोएहिं' योगेषु मनोवाक्कायव्यापारेषु, ' जयणा ' यतना प्रवृत्तिः, सैषा यात्रा मम वर्तते। नान्या शत्रुजयादियात्रा वीतरागमार्गे वर्तते इत्यर्थः।

एवमेव भगवतीसूत्रेऽष्टादशशतकस्य दशमोद्देशके भगवता सोमिल ब्राह्मणाय प्रोक्तम्—

शुको वदति–'से किं तं भंते जवणिज्जं' अथ किं तद् भदन्त ! यापनीयम् ?।

चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से जो स्थूल तथा सूक्ष्म प्राणातिपात आदि पापों सेनिवृत्ति रूप आत्मा का परिणाम होता है वह चारित्र है। तप–अनशन आदि के भेद से १२ प्रकार का है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव को लेकर उत्तर गुणरूप जो नाना प्रकार के नियम–अभिग्रह–ग्रहण से ही संयम भी ग्रहीत हो जाता है—फिर भी जो यहां संयम का स्वतंत्र ग्रहण किया गया है वह " उभय काल में प्रतिलेखना करना और काल चतुष्टय में स्वाध्याय करना इस रूप संयम है, यह वाक्य इस अर्थ को सूचित करता है। आदि पद से "ध्यान आवश्यक" ये ग्रहीत हुए हैं। धर्म ध्यान आदि का नाम ध्यान तथा आवश्य करने योग्य कर्तव्य का नाम आवश्यक है। यह आवश्यक छ प्रकार है। इन ज्ञानादिकों में तथा योगों में जो यतना है यही यात्रा है–अन्य कोई यात्रा नहीं है यह बात भगवती सूत्र में भगवान् ने अठारहमाँ शतक के

પ્રાણાતિપાત વગેરે પાપો થી નિવૃત્તિ રૂપે આત્મા નો પરિણામ થાય છે તે ચારિત્ર છે. તપ, અનશન વગેરેના ભેદથી બાર પ્રકારનું છે.

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની સાથે ઉત્તર ગુણ રૂપ જે અનેક જાતના નિયમ–(અભિગ્રહ) ગ્રહણથી જ સંયમનું પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે, છતાં એ અહીં જે સંયમનું સ્વતંત્ર રૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે, તે બંને વખત પ્રતિ લેખના કરવી અને કાલ ચતુષ્ટયમાં સ્વાધ્યાય કરવો તે ' સંયમ ' છે, આ વાક્ય એજ અર્થ અહીં સૂચવે છે, આદિપદ વડે " ધ્યાન આવશ્યક " પદોનું સૂચન થાય છે. ધર્મ વિષે ધ્યાન વગેરે ' ધ્યાન ' કહેવાય છે, તેમજ આવશ્યક રૂપે કરવા યોગ્ય કર્તવ્યનું નામ 'આવશ્યક' છે. આ આવશ્યકના છ પ્રકારો છે. અજ્ઞાનાદિકો વગેરેમાં તેમજ યોગોમાં જે યતના છે તેજ યાત્રા છે. બીજી કોઇપણ જાતની યાત્રા છે જ નહિ. આ વાત " ભગવતી સૂત્ર " ના અઢારમા શતકના દશમા ઉદ્દેશકમાં ભગવાને સોમિલ બ્રાહ્મણને કહી છે,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थापत्यापुत्रः कथयति-हे शुक ! यापनीयं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद् यथा इन्द्रिययापनीयं नोइन्द्रिय यापनीयं च. ।

शुको ब्रूते-अथ किं तद् इन्द्रिययापनीयम्. ? ।

स्थापत्यापुत्रः समाधत्ते-' सुया ! इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् कारणात् खलु मम श्रोत्रेन्द्रि-चक्षुरिन्द्रिय-घ्राणेन्द्रिय-जिह्वेन्द्रि-स्पर्शेन्द्रियाणि निरुपहतानि वशे वर्तन्ते, तद् इन्द्रिययापनीम्=इन्द्रियाणां वशीकरणं मम वर्तते. । ' तं ' इतिवाक्यालङ्कारे, एवमन्यत्रापि ।

दशमेंउद्देशक में सोमिल ब्राह्मण से कही है । (से किं तं भंते जवणिज्जं) हे भदंत! यापनीय शब्द का क्या अर्थ है ? (सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-इंदियजवणिज्जे य णो इंदियजवणिज्जे य) इस प्रकार शुक परिव्राजक के पूछने पर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उसे समझाया कि हे शुक ! यापनीय दो प्रकार का कहा हुआ है —जैसे १ इन्द्रि यापनीय २ नो इन्द्रिय यापनीय । (से किं तं इंदियजवणिज्जं) इन्द्रिय यापनीय का क्या स्वरूप है इस प्रकार शुक के पूछ ने पर स्थापत्या पुत्र ने कहा (सुया ! जन्नं ममं सोइंदिय चक्खिदिय जिब्भिदिय फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जं) शुक ! श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, जिह्वाइन्द्रिय, स्पर्शनइन्द्रिय निरुपहत बन कर जो मेरे वश में हो रही हैं यहीं इन्द्रिय यापनीय हैं अर्थात् विना किसी बाधा के अपने विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होने पर भी ये पांचो इन्द्रियां जो मेरे वश में वर्त रही हैं यही

(से किं तं भंते जवणिज्जं) હે ભદન્ત ! યાપનીય શબ્દનો અર્થ શું છે ? (सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते तं जहा इंदियजवणिज्जे य णो इंदिय जवणिज्जे य) શુકપરિવ્રાજકના પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેને સમજાવતાં કહ્યું કે-હે શુક ! યાપનીયના બે પ્રકારો કહ્યાં છે. (૧) ઇન્દ્રિય યાપનીય અને (૨) નો ઇન્દ્રિય યાપનીય (से किं तं इंदियजवणिज्जं) ઇન્દ્રિય યાપનીયનું સ્વરૂપ શું છે ? શુક પરિવ્રાજકના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં સ્થાપત્યા પુત્રે કહ્યું-(सुया ! जन्नं ममं सोइंदिय चक्खिंदिय जिब्भिंदियफासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जं) હે શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુ ઇન્દ્રિ ઘ્રાણ ઇન્દ્રિય, જિહ્વા ઇન્દ્રિય, સ્પર્શ ઇન્દ્રિય, નિરુપહત થઇને મારા વશમાં થઇને તેજ ઇન્દ્રિય યાપનીય છે. અટલે કે કોઇપણ જાતન વાંધા વગર વિષયોને ગ્રહણ કરવાની તાકત હોવા છતાં એ પાંચે ઇન્દ્રિયો મારે વશ થયેલી છે તેજ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुकः पृच्छति–'से किं' इत्यादि । अथ किं तद् नोइन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह–' सुया ' इत्यादि. । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोधमानमाया लोभाः क्षीणा क्षयं प्राप्ताः, उपशान्ताःउपशमं प्राप्ताःसन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रिययापनीयं नोइन्द्रियं मनस्तस्य विकाराः कषाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषां यापनीयं वशीकरणं ममास्ति ।

शुको वदति–' से किं ' इत्यादि. । अथ किं तद् भदन्त अव्याबाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह–' सुया ! ' इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिक पैत्तिक श्लेष्मिकसांनिपातिका= ! वातिकाः वातप्रकोपजनिताः पैत्तिकाः प्रकोपसमुद्भवाः, श्लैष्मिकाःकफप्रकोपसमवाः, सान्निपातिकाः=वातपित्त श्लेष्मणां समूहःसंनिपातः, तत्र भवाः विविधा ' रोगायंका ' रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति

इन्द्रिय यापनीय है । (से किं तं नो इंदियजवणिज्जे) भदंत ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्नं कोह माण माया लोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नो इंदियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषायें क्षयावस्थापन्न होकर या उपशम अवस्थावाली होकर उदय में नहीं आ रहीं हैं यही नो इन्द्रिय यापनीय है । नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषायें हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए हैं । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कषायें मेरे वश में हो रही हैं – यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है । (से किं भंते अव्वाबाहं) भदंत ! अव्याबाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्नं मम वाइयपित्तिय सिंभियसन्निवाइया

ઇન્દ્રિય યાપનીય છે. (से किं तं नो इंदियजवणिज्जे) હે ભદંત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થાય છે. (सुया जन्नं कोहमाण मायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नो इंदियजवणिज्जे) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કષાય ક્ષય પામીને અથવા તો ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય છે. નો ઇન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે. એથી આ બધાંનો ઇન્દ્રિય શબ્દથી ગૃહીત થયાં છે. યાપનીય શબ્દનો અર્થ વશ કરવું છે. આ બધા કષાયો મારે વશ થયેલા છે. એજ નોઇન્દ્રિય યાપનીયને હું વર્તી રહ્યો છું (से किं भंते अव्वाबाहं) હે ભદંત ! અવ્યાબાધ નો શો અર્થ છે ? (सुया जन्नं मम वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वन्द्वः रोगा दाहज्वरादयः, आतङ्काः शीघ्रघातिनः शूलादयः नो उदीर्यन्ते,तद् अव्याबाधं=व्याबाधानां शरीरपीड़ानामभावः मम वर्तते. ।

शुकः पृच्छति-'से किं ' इत्यादि । अथ कोऽसौ भदन्त' प्रासुक विहारः ।?

स्थापत्यापुत्रो वदति-'सुया ' इत्यादि । हे शुक ! यत् यस्मात् खलु आरामेषु=उपवनेषु, उद्यानेषु पुष्पप्रधानेषु राजवनेषु, देवकुलेषु व्यन्तरायतनेषु, सभासु परिषत्सु ' पव्वएसु ' पर्वतेषु, इदमुपलक्षणं तेनाष्टादशस्थानेषु इत्यर्थः । स्त्री-पशुपण्डकविवर्जितासु वसतिषु पातिहारिकं=पुनः समर्पणीयं, पीठफलकशय्यासं-

---

विविहा रोयायंका नो उदीरेंति से तं अव्वाबाहं से किं तं भंते फासुयविहारं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु, सभासु, पव्व-एसु, इत्थी पसुपंडग विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीठफलग संथारयं उग्गिण्हित्ता णं विहरामि सेत्तं फासुयविहारं) शुक ! जिस कारण से वात, पित्त और कफ से जनित तथा इन तीनों के सन्निपात से जनित जो विविध प्रकार के दाहज्वर आदि रोग शीघ्र घातक शूलादिक आतंक मुझे उदित नही हो रहे हैं यही अव्याबाध मेरे वर्त रहा है । व्याबाध शब्द का अर्थ शारीरिक पीडा है- और इस का अभाव इस समय मेरे में वर्त रहा है । यही अव्याबाध का स्वरूप है । हे भदन्त ! प्रासुक विहार का क्या स्वरूप है ? उत्तर-हे शुक ! जिस कारण मैं उपवनों में पुष्प प्रधान राजकीय वनों में देवघरों में अर्थात् व्यन्तरायतनों में परिषदों में पर्वतों में ऊपलक्षण से अठारह स्थानों में, स्त्री, पशु, पंडक-नपुंसकों से विहीन वसतिओं में मठों में

रोयायंका नो उदीरेंति से तं अव्वाबाहं से किं तं भंते फासुयविहारं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पव्वएसु इत्थी, पसुपंडगविविज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि से त्तं फासुयविहारं) હે શુક ! વાત, પિત્ત અને કફથી જન્મતા તેમજ આ ત્રણેના સન્નિ-પાતથી ઉદ્ભવતા અનેક દાહજ્વર વગેરે, રોગો શીઘ્રઘાતક શૂળ વગેરે આતંક મારા શરીરમાં ઉદ્ભવતા નથી એજ અવ્યાબાધ મારામાં વર્તી રહ્યો છે. અવ્યાબાધનું સ્વરૂપ એજ છે. શુકે સ્થાપત્યાપુત્રને બીજો પ્રશ્ન કર્યો -હે ભદંત ! પ્રાસુક વિહારનું સ્વરૂપ શું છે.? તેનો ઉત્તર આપતા સ્થાપત્યા પુત્ર કહે છે-હે શુક ! હું ઉપવનોમાં, પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનોમાં, દેવ ઘરોમાં એટલે કે વ્યંતરાયતનોમાં, પરિષદોમાં પર્વતોમાં-ઉપલક્ષણથી અઢાર સ્થાનોમાં સ્ત્રી, પશુ,પંડક, નપુંસક વગરની વસ્તીઓમા મઠોમાં પ્રાતિહારિક

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तारकमवगृह्य=याचित्वा विहरामि=विचरामि, स प्रासुकविहारः। 'तं' इति वाक्यालंकारे। शुकः पुनरप्युपहासार्थं पृच्छति-'सरिसवया' इत्यादि। हे भदन्त! 'सरिसवया' ते तव किं भक्ष्याः, उत अभक्ष्याः किम्? स्थापत्यापुत्रः समाधत्ते -'सुया!' इत्यादि। हे शुक! 'सरिसवया' सरिसवयशब्दार्थाः भक्ष्या अपि, अभक्ष्या अपि, 'सरिसवया' इति पदस्यार्थभेदाद् भक्ष्या अभक्ष्या भवन्तीति भावः। शुकः पुनराह-'से केणट्ठेणं' इत्यादि। भदन्त! हे भगवन् तत् केनार्थेन एवमुच्यते-'सरिसवया' भक्ष्या अपि, अभक्ष्या अपीति।

स्थापत्यापुत्रो वदति-'सुया!' इत्यादि। 'सरिसवया' सरिसवयशब्दवोध्या अर्था द्विविधा प्रज्ञप्ताः, तद् यथा 'मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य'

प्रातिहारिक- पुनः समर्पणीय- पीठ, फलक, शय्या संस्तारक को याचित कर विचरण करता हूँ- यही मेरा प्रासुक विहार है। उपहास करने के अभिप्राय से पुनः शुक परिव्राजक पूछता है कि (सरिसवया ते भंते किं भक्खेया अभक्खेया?) भदंत! "सरिसवय" तुम्हारे सिद्धान्तानुसार भक्ष्य हैं या अभक्ष्य हैं? (सुया सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) स्थापत्या पुत्र ने कहा- शुक! सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं। (से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) शुक ने उनसे पुनः पूछा भदंत! आप यह किस अर्थ की अपेक्षा लेकर ऐसा कहते हैं कि सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं। (सुया सरिसवया दुविहा पन्नत्ता तंजहा मित्त सरिसवया धन्नसरिसवया) स्थापत्यापुत्रने उसे समझाया कि शुक! सरिसवय

-એટલે કે યાચના કરેલી વસ્તુ કે જે પાછી અપાય જેમકે પીઠ, ફલક, શય્યા સંસ્તારકની યાચના કરી ને વિચરું છું. એજ મારો પ્રાસુક વિહાર છે. શુક પરિવ્રાજક ઉપહાસના અભિપ્રાયથી ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે (सरिसवया ते भंते किं भक्खेया अभक्खेया!) હે ભદંત! 'सरिसवय' તમારા શાસ્ત્ર પ્રમાણે ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય? (सुया सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) સ્થાપત્યા પુત્રે તેના ઉત્તરમાં કહ્યું-હે શુક! 'सरिसवय' ભક્ષ્ય પણ છે અને અભક્ષ્ય પણ છે. (से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सरिससवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) શુકે તેમને ફરી પ્રશ્ન કર્યો-કે હે ભદંત! તેમ 'सरिसवय' તે ભક્ષ્ય તેમજ અભક્ષ્ય કયા અર્થની અપેક્ષાએ કહી રહ્યા છો. (सुया सरिसवया दुविहा पन्नत्ता तं जहा मित्तसरिसवया: धन्नसरिसवया) સ્થાપત્યાપુત્રે તેને સમજાવતાં કહ્યું કે હે શુક! 'सरिसवय' શબ્દનો અર્થ બે રીતે થાય છે. ૧

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मित्र सदृशवयसः, धान्यसर्षपकाश्च । ' सरिसवया ' इत्यस्य द्विविधोऽर्थः सदृशवयसः सर्षपकाश्चेति । तत्र सदृशवयसो मित्ररूपाः सर्षपकास्तु धान्यरूपा इति भावः। तत्र खलु ये ते मित्र सदृशवयसः=मित्ररूपाः समानवयसस्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः प्रतिबोधिताः तद् यथा-' सहजया ' सहजातकाः समानकालजन्मानः, ' सहवड्ढियया' सह वर्धितकाः समानकाले वृद्धिं प्राप्ताः, 'सह पंसुकीलियया' सह पांसुक्रीडितकाः सहैव धूलिक्रीडाकारिणश्चेति । ते सर्वे मित्ररूपाः सदृशवयस्काः खलु श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः भक्तुं न कल्पन्ते । तत्र खलु ये ते धान्यसर्षप-

दो प्रकारसे प्रज्ञप्त हुआ है—१ मित्रसरिसवय दूसरा धान्य सरिसवय—। सरिसवय शब्द की " सदृशवय " और सर्षपक " इस प्रकार संस्कृत छाया होती है। जब सदृशवय—समान आयुवाले मित्रजन —ऐसा छायार्थक "सरिसवय" पद लिया जाता है—तब उस पक्ष के अनुसार सरिसवय अभक्ष्य है ऐसा अर्थ बोध होता है—तथा सर्षपक छायार्थक जब सरिसवय पद लिया जाता है तब " सरिसवय " भक्ष्य भी है ऐसा अर्थबोध होता है। इसी विषय को अधिक और स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि- (तत्थ णं जे तं मित्त सरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, जहा- सह जायया, सह संवड्ढियया, सहपंसुकीलियया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया) इनमें जो मित्र सरिसवय हैं वे तीन प्रकार के प्रज्ञप्त हुए हैं- जैसे सह जातक, सहवर्धितक, सह पांसुक्रीडितक अपने साथ जिनका जन्म हुआ हैं वे सहजातक हैं। अपने साथ२ जो वृद्धि को प्राप्त हुए हैं वे सहवर्धित हैं। तथा जो

મિત્ર, સરિસવય, ૨ ધાન્ય, ' સરિસવય.' શબ્દની સંસ્કૃત છાયા ૧, સદશવય, અને ૨, સર્ષપક બે રીતે થાય છે. જ્યારે સરિસવય નો 'શદશવય' (સરખી આયુષ્ય ધરાવનારા મિત્ર જન) આવો અર્થ ગ્રહણ કરવામાં આવે છે ત્યારે ' સરિસવય ' અભક્ષ્ય છે આવો અર્થ જણાય છે તેમજ ' સરિસય ' પદ સર્ષપક (સરશિયું) અર્થમાં લેવાય છે ત્યારે તે ભક્ષ્ય છે આવો પણ અર્થ થાય છે. એજ વાતને વિશેષ સ્પષ્ટ કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે (तत्थणं जे तं मित्त सरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-सहजायया, सहसंवड्ढियया, सहपंसुकीलियया तेणं समणाणंनिग्गंथाणं अभक्खेया) આમાં જ્યારે સરિસવય શબ્દનો અર્થ મિત્ર હોય છે, ત્યારે તેના ત્રણ પ્રકાર સમજવા જોઈએ જેમકે ૧, સહજાતક, ૨, સહવર્ધિતક, અને ૩, સહપાંસુક્રીડિતક. આપણી સાથે જન્મ લેનાર સહજાતક કહેવાય છે. આપણી સાથે મોટા થનાર સહવર્ધિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कास्ते द्विविधा=द्विप्रकाराः प्रज्ञप्ताः, तद् यथा शस्त्र परिणताश्च । तत्र खलु ये ते अशस्त्रपरिणताः सचित्तास्ते श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः अखाद्याः तत्र खलु ये शस्त्रपरिणताः शस्त्रपरिणत्याऽचित्तास्ते द्विविधा प्रज्ञप्ताः, तद् यथा–प्रासुकाश्च अप्रासुकाश्च । अप्रासुकाः खलु हे शुक ! नो भक्ष्याः=अखाद्याः । तत्र खलु ये ते प्रासुकास्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद् यथा–' जाइया य अजाइया य ' याचिताश्च, अयाचिताश्च । तत्र खलु–ये ते अयाचितास्ते अभक्ष्याः अखाद्या। तत्र खलु ये ते याचितास्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद् यथा एषणीयाश्च अनेषणीयाश्च । तत्र खलु

साथ २ धूलि में खेले हैं वे सह पांसु क्रीडितक हैं । ये सब श्रमण निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य हैं । (तत्थणं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सत्थ परिणया य असत्थ परिणया य) जो धान्य सरिसवय हैं वे दो प्रकार के हैं–जैसे १ शस्त्र परिणत २ अशस्त्र परिणत– (तत्थ णं जे ते असत्थ परिणया ते समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया तत्थणं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता तं जहा फासुगाय अफासुगाय) इन में जो अशस्त्र परिणत सचित्त- धान्यसरिसवय हैं वे श्रमण निर्ग्रन्थों को अभक्ष्य है– अखाद्य हैं । जो शस्त्र परिणत अचित्त हैं वे प्रासुक और अप्रासुक के भेद से दो प्रकार के हैं (अफासुयाणं सुया णो भक्खेया तत्थणं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता तं जहा जाइयाय अजाइया य तत्थणं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता तं जहा एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य) इन में जो अप्रासुक धान्य सरिसवय हैं वे हे शुक खाने

કહેવાય છે, તેમજ જેઓ એકી સાથે માટીમાં રમતાં રમતાં મોટા થયા છે તેઓ સહપાંસુક્રીડિતક મિત્ર કહેવાય છે. શ્રમણ નિર્ગ્રંથો માટે આ બધા અભક્ષ્ય છે. (तत्थणं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सत्थ परिणयाय असत्थ परिणयाय) ધાન્ય એટલે કે જે અનાજના રૂપમાં સરિસવય (सरशियुं) છે તેના બે પ્રકાર છે–૧ શસ્ત્ર પરિણત, ૨, અશસ્ત્ર પરિણત, (तत्थणं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया तत्थणं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णता तं जहा–फासुगाय अफासुगाय) આમાં જે અશસ્ત્ર પરિણત–' સચિત્ત ' ધાન્ય સરિસવય છે તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથો માટે અભક્ષ્ય છે, અખાદ્ય છે. તેમજ શસ્ત્રપરિણત–અચિત્ત છે તે પ્રાસુક અને અપ્રાસુક આમ બે પ્રકારના છે. (अफासुयाणं सुया णो भक्खेया–तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा जाइयाय अजाइयाय तत्थणं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा एसाणिज्जाय अणेसणिज्जाय) આમાંથી આ પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયું (સરિસવય) છે, તે અખાદ્ય છે પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયા (સરિસવય) ના બે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ये ते ' अणेसणिज्जा ' अनेषणीयास्ते खलु अभक्ष्याः । तत्र खलु ये ते ' एसणिज्जा ' एषणीयाः, ते द्विविधा प्रज्ञप्ताः-तद् यथा-लब्धाश्च अलब्धाश्च । तत्र खलु ये तेऽलब्धास्ते अभक्ष्याः । तत्र खलु ये ते लब्धास्ते श्रमणानां निर्ग्रन्थानां भक्ष्याः हे शुक ! एतेनार्थेन=उक्तरूपेण अर्थेन उक्तार्थमादायेत्यर्थः, एवमुच्यते ' सरिसवया ' सरिसवयशब्दवाच्या अर्था भक्ष्या अपि अभक्ष्या अपीति ।

' एवं कुलत्था वि भाणियव्वा ' एवं उक्तप्रकारेण कुलत्था अपि भणितव्याः, ' नवरं' विशेषः इदं नानात्वं स्त्रीकुलत्थाश्च धान्यकुलत्थाश्च । स्त्रीकुलत्था स्त्रिविधा

योग्य नही हैं। प्रासुक धान्य सरिसवय दो प्रकार के हैं जैसे याचित और अयाचित। इन में भी जो अयाचित हैं वे अभक्ष्य हैं- श्रमण निर्ग्रन्थों को खाने योग्य नही हैं। याचित एषणीय और अनेषणीय के भेद से दो प्रकार के हैं (तत्थणं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया) इन में जो अनेषणीय धान्य सरिसवय हैं वे अखाद्य हैं। (तत्थणं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता लद्धाय अलद्धाय, तत्थ णं जे ते अलद्धा, ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया) जो एषणीय सरिसवय हैं वे लब्ध और अलब्ध के भेद से दो प्रकार के हैं- अलब्ध अभक्ष्य और लब्ध श्रवण निर्ग्रन्थों को भक्ष्य हैं। (एएणं अट्ठेणं सुया एवं वुच्चति- सरिसवया- भक्खेया वि अभक्खेया वि एवं कुलत्था वि भाणियव्वा) हे शुक! सरिसवय पद के इन पूर्वोक्त अर्थों को लेकर ऐसा मैं कहता हूँ कि सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं। इसी तरह " कुलत्था " के विषय में भी ऐसा ही समझना चाहिये। (णवरं इमं नाणत्तं) परन्तु इस में इस तरह विशेषता

પ્રકાર છે-યાચિત અને અયાચિત, આમાં અયાચિત સરિસવય અભક્ષ્ય ગણાય છે. શ્રમણ નિર્ગ્રંથો આહારમાં અયાચિત સરિસવયનો પ્રયોગ કરતા નથી. (तत्थणं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता लद्धा य अलद्धाय, तत्थणं जे ते अलद्धा, ते अभक्खेया, तत्थणं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया) એષણીય (ઇચ્છનીય) સરિસવયના લબ્ધ અને અલબ્ધ બે પ્રકારો છે નિર્ગ્રંથોને માટે અલબ્ધ સરિસવય (સરશિયું) અભક્ષ્ય છે અને લબ્ધ સરિસવય ભક્ષ્ય છે. (एएणं अट्ठेणं सुया एवं वुच्चंति सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि एवं कुलत्था वि भाणियव्वा) હે શુક! આ પ્રમાણે સરિસવય ને પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કરતાં તેને ભક્ષ્ય અને અભક્ષ્ય આમ બંને રીતે કહી શકાય આ રીતે ' કુલત્થા ' ના વિષે પણ સમજી લેવું જોઇએ. (णवरं इमं नाणत्तं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रज्ञप्ताः,तद्यथा कुलवधूका इतिच कुलमातृका इतिच, कुल दुहितर इतिच । धान्य कुलत्थास्तथैव. ।

एवं मासाः माषा अपि, नवरं विशेषः–इदं नानात्वम्. मासा माषा स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–कालमासाश्च अर्थमाषाश्च धान्यमाषाश्च । तत्र खलु ये ते कालमासास्ते खलु द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–श्रावणो यावद् आषाढः, ते खलु अभक्ष्याः । अर्थमाषा द्विविधाः–हिरण्यमाषाश्च, सुवर्णमाषाश्च, ते खलु अभक्ष्याः धान्यमाषास्तथैव. ॥

है– (इत्थी कुलत्था य धन्न कुलत्था य) एक स्त्री कुलस्था दूसरी धान्य कुलस्था । तात्पर्य इसका– कुलत्था की छाया कुलस्था है– इसका अर्थ स्त्री कुलस्था और धान्य कुलस्था है । कुलथी जात का अन्न विशेष जो होता है वही यह धान्य कुलत्था से ग्रहण हुआ है । (इत्थी कुलत्था तिविहा पन्नत्ता तं जहा कुल वधूयाइ य कुल माउयाइ य, कुल धूयाइय) इन में जो कुलत्था का वाच्यार्थ स्त्री कुलस्था है वह तीन प्रकार का हैं जैसे– १ कुलवधू २ कुलमातृका ३ और कुल दुहिता (लड़की) (धन्न कुलत्था तहेव) धान्यकुलत्था अर्थ का निरूपण धान्य सरिसवय के समान जानना चाहिये। (एवं मासा वि नवरं इमं नाणत्तं– मासा तिविहा पन्नत्ता, तं जहा– काल मासाय, अत्थ मासाय, धन्न मासाय, तत्थ णं जे ते काल मासा ते णं दुवालसविहा पन्नत्ता, तं जहा– सावणे जाव आसाढे ते णं अभक्खेया, अत्थ मासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्ण मासा य तेणं अभक्खेया धन्न मासा तहेव) इसी तरह "मासा"

આનું સ્પષ્ટીકરણ એવી રીતે કે (इत्थी कुलत्थाय धन्नकुलत्थाय) એક સ્ત્રી કુલસ્થા અને બીજું ધાન્ય (અનાજ) કુલત્થા.ની છાયા ' કુલસ્થા ' થાય છે. તેના બે રીતે અર્થ સમજી શકાય છે. સ્ત્રી ને પણ કુલસ્થા કહેવાય છે અને કુલસ્થા એક જાતનું કઠોળ પણ હોય છે તેને ' કળથી ' કહે છે. (इत्थीकुलत्था तिविहा पन्नत्ता तंजहा कुलवधूयाइय कुलमाउयाइ य कुल धूयाइय) સ્ત્રી કુલસ્થાના ત્રણ પ્રકાર છે જેમ કે-(૧) કુળ વધૂ, (૨) કુળ માતૃકા, અને (૩) કુળ દુહિતા (દિકરી) (धन्नकुलत्था तहेव) ધાન્યાર્થવાચી કુલસ્થા શબ્દનું નિરૂપણ ધાન્ય સરિસવની જેમ સમજવું જોઇએ (एवं मासा वि नवरं इमं नाणत्तं मासा तिविहा पन्नता तंजहा-काल मासाय, अत्थमासाय, धन्नमासाय, तत्थणं जे ते कालमासा तेणं दुवालसविहा पन्नत्ता तंजहा सावणे जाव आसाढे तेणं अभक्खेया अत्थमासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्णमासाय तेणं अभक्खेया पन्नमासा तहेव) આ પ્રમાણે જ ' માસ ' શબ્દ વિષે પણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थापत्यापुत्रस्य तत्त्वज्ञानजिज्ञासया शुकः पृच्छति–' एगे भवं ' इत्यादि. । ' एगे भवं ' एको भवान् ? अयं भावः–आत्मान एकत्वस्वीकारे श्रोत्रादि विज्ञानानामवयवानां चात्मऽनेकतोपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीति. ।

' दुवे भवं ' द्वौ भवान्न् ? अयमाशयः– आत्मनो द्वित्वाभ्युपगमेऽहमित्येकत्वविशिष्टार्थस्य द्वित्वविरोधेन द्वित्वं दूषयिष्यामीति । ' अणेगे भवं ' अनेके भवान् ? आत्मानोऽनेकत्वस्वीकारेऽहमित्येकत्वविशिष्टार्थस्यानेकत्वविरोधेनानेकत्वं दूषयिष्यामीति भावः । ' अक्खएभवं ' अक्षयो भवान् ? ' अव्वएभवं ' अव्ययो भवान्, ' अवट्ठिए भवं' अवस्थितो भवान्, आत्मात्मित्य इति भवता स्वीक्रियते इतिपक्षत्रयाभिप्रायः ।

शब्दाभिधेय के विषय में भी जानना चाहिये । किन्तु विशेषता इस प्रकार है–मास तीन तरह के हैं–जैसे–कालमास,अर्थमाष,धान्यमाष इन में जो कालमास हैं वे १२बारह प्रकार हैं । जैसे श्रावण मास से लेकर आषाढ मास तक । ये सब अभक्ष्य हैं । हिरण्य माषा और सुवर्णमाषा के भेद से अर्थ माष दो प्रकार हैं । ये भी अभक्ष्य हैं । धान्यमाष के विषय में धान्यसरिसव के समान प्ररूपणा जाननी चाहिये । अब स्थापत्या पुत्र अनगार से शुक परिव्राजक तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा से प्रश्न करता है कि– (एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावभविए वि भवं ?) आप एक कैसे हैं ? अर्थात् आत्मा में यदि एकत्व माना जावे तो श्रोत्रादि विज्ञानों एवं अवयवों की अपेक्षा जो उसमें अनेकता की उपलब्धि होती है उस से उसमें एकता नहीं बनती है । यहां " भवं " आत्मा का बोधक है

વિશેષ અર્થો જાણવા જોઇએ. ' માસ ' શબ્દનો અર્થ ત્રણ રીતે થાય છે. જેમ કે કાળ માસ, (૧) અર્થ માષ, (૨) ધાન્ય માષ, (૩) કાળ વાચક માસ (મહિના) ના શ્રાવણ થી માંડીને આષાઢ સુધી બાર પ્રકારો છે. આ બધા અભક્ષ્ય છે. હિરણ્યમાષ અને સુવર્ણ માષ આ બંને અર્થમાષના બે પ્રકારો છે. એ પણ અભક્ષ્ય છે. અનાજના રૂપમાં જે ધાન્ય માષ (અડદ) છે તેના માટે ધાન્ય સરિસવની જેમજ નિરૂપણ સમજવું જોઇએ. શુક પરિવ્રાજક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસાથી તેમને પ્રશ્ન કરે છે કે (एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावभविए वि भवं ?) તમે એક છો, બે કેવી રીતે ? એટલે કે આત્મા માં જો એકત્વ મનાય તો શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનો અને અવયવોની અપેક્ષાએ તેમાં અનેકતા ઉપલબ્ધ હોય છે તેથી. આત્મામાં એકત્વ સિદ્ધ થતું નથી. અહીં ' भवं ' શબ્દ આત્મ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'अणेगभूयभावभविए वि भवं' अनेक भूतभावभविकोऽपि भवान् ? अनेके अंशा अवयवाभूताः=अतीताः, भावा वर्तमाना भविकाः=भाविनश्च यस्य स तथा, आत्मा अनित्य इति पक्षो भवता स्वीक्रियत इत्यर्थः। अवयोर्नित्यानित्यक्षयोरेकत-

आत्मा एक है- इस सिद्धान्त को लेकर शुक स्थापत्या पुत्र अनगार से कहता है कि यह आत्मा का एकत्व पक्ष युक्ति संगत नही बैठता है कारण श्रोत्रादि इन्द्रियों से जो भिन्न २ विज्ञान उत्पन्न हुए हैं एवं जो भिन्न अवयवों की उपलब्धि होती है उस से आत्मा में एकत्व बाधित होता है ! इसी तरह यदि आत्मा में द्वित्व माना जावे तो यह भी पक्ष युक्ति युक्त प्रतीत नही होता है कारण " अहं " अहं " इत्याकार-रूप जो आत्मा में एकत्व की प्रतीति होती है उससे एकत्व विशिष्ट अर्थ की ही प्रतीति होती है इसलिये इस प्रतीति से उस में द्वित्व (दो) का विरोध आता है। " अणेगे भवं " आत्मा को अनेक भी इसी-लिये मानना युक्ति संगत प्रतीति नही होता है कि उस में फिर ' अहं ' अहं ' इत्याकारक एकत्व प्रतीति नहीं बन सकती है। इस प्रतीति से उस में एकत्व (एकपन) का ही मान होता है अनेकता के साथ इस प्रतीति का विरोध है। इसलिये यह पक्ष भी दूषित ठहरता है। ' अक्ख-ए भवं' आत्मा अक्षय है 'अव्वए भवं' अव्यय है अवट्ठिए भवं आत्मा

ને માટે છે. આત્મા એક છે. આ સિદ્ધાન્તને વિષે શુક પરિવ્રાજક સ્થાપત્યા-પુત્ર અનગારને કહે છે કે આત્મા વિષે એકત્વપક્ષ યુક્તિ સંગત લાગતો નથી. કારણ કે શ્રોત્ર વગેરે ઇન્દ્રિયો થી જે જુદી જુદી જાતનાં વિજ્ઞાનો ઉત્પ-ન્ન થયાં છે અને જે જુદા જુદા અવયવોની ઉપલબ્ધિ થાય છે તેથી આત્મા માં એકત્વ બાધિત થાય છે. આ રીતે જ જો આત્મામાં દ્વિત્વ માનવામાં આવે તો આ વાત પણ ઉચિત લાગતી નથી, કેમકે ' અહં ' ' અહં ' આ રીતે જે આત્મામા એકત્વની પ્રતીતિ થાય છે તેથી આત્મા એકત્વ વિશિષ્ટ છે એ અર્થ જ સ્પષ્ટ થાય છે આ રીતે આત્મામાં દ્વિત્વ વિષે પણ વાંધો ઉભો થાય છે. " अणेगे भवं " આત્માને અનેક પણ માની ન શકાય કેમકે તેમાં પછી ' અહં ' ' અહં ' આ જાતની એકત્વની પ્રતીતિ સંભવિત થઈ શકતી નથી. એનાથી તેમાં એકત્વનીજ પ્રતીતિ થાય છે. આ રીતે અનેકતા ની સાથે આ પ્રતીતિ નો વાંધો ઉભો થાય છે. આ પ્રમાણે આ પક્ષ પણ સદોષ જ કહેવાય (अक्खए भवं) આત્મા અક્ષય છે. (अव्वए भवं) અવ્યય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रपक्षपरिग्रहोऽन्यतरं दूषयिष्यामीत्याशयः। स्थापत्यापुत्रो वदति–'सुया' इत्यादि। हे शुक ! एकोऽप्यहम्, द्वावप्यहम्, यावत्–अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम्। पुनः शुकः पृच्छति–' से केणट्ठेणं भंते !' इत्यादि। तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते –एकोऽप्यहं यावत्–अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम् ?

अवस्थित है, नित्य है ' अणेगभूयभावभविए वि भवं ' अनेक भूत, भाव और भविक पर्यायों वाला है अनित्य है भूत शब्द का अर्थ अतीत, भाव का अर्थ वर्तमान एवं भविक का अर्थ भविष्यत कालीन है अर्थात् आत्मा के भूत पर्याय रूप अंश वर्तमान पर्याय रूप अंश तथा भविष्यत काल में होने वाले पर्याय रूप अंश उस के अवयव रूप है। इससे आत्मा में अनित्यता सिद्ध होती है। इस तरह शुक ने स्थापत्या पुत्र अनगार के इन समस्त पक्षों को दूषित किया। नित्य पक्ष अनित्य पक्ष साथ विरूद्ध पड़ता है और अनित्य पक्ष नित्य पक्ष के साथ विरुद्ध पड़ता है इत्यादि। अब स्थापत्यापुत्र अनगार स्याद्वाद सिद्धान्त के अनुसार उत्तर देते हैं। (सुया एगे वि अहं दुवेवि अहं जाव अणेग भूयभाव भविएवि अहं) हे शुक ! मैं एक भी हूँ, मैं दो भी हूँ, यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायों वाला भी हूँ (से केण ट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ, एगे वि अहं जाव अणेगभूयभावभविए वि

છે. (अवट्ठिए भवं) આત્મા અવસ્થિત છે નિત્ય છે, (अणेगभूयभावभविए वि भवं) અનેક ભૂત, ભાવ અને ભાવિક પર્યાય વાળો છે અનિત્ય છે, ભૂત શબ્દનો અર્થ ભૂતકાળ છે. ભાવ શબ્દનો અર્થ વર્તમાનકાળ અને ભાવિક શબ્દનો અર્થ ભવિષ્ય કાળ થાય છે, એટલે કે આત્માના ભૂત પર્યાય અંશ, વર્તમાન પર્યાય અંશ તેમજ ભવિષ્યમાં થનારા પર્યાય રૂપ અંશ તેના (આત્માના) અવયવ રૂપ છે. એથી આત્મમાં અનિત્યતા સિદ્ધ થાય છે. આ રીતે શુક પરિવ્રાજકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના બધા પક્ષોને સદોષ સિદ્ધ કર્યા, આત્મા વિષે નિત્ય અને અનિત્ય આમ બંને પક્ષો એક બીજાથી વિરૂદ્ધ છે આ પ્રમાણે જ અનિત્યપક્ષ નિત્યપક્ષ ની સાથે વિરુદ્ધ છે. સ્થપત્યાપુત્ર અનગાર સ્યાદ્વાદ સિદ્ધાન્ત મુજબ શુકપરિવ્રાજકને જવાબ આપતાં કહે છે—(सुया एगे वि अहं दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभाविभाविएवि अहं) હે શુક ! હું એક પણ છું, હું બે પણ છું, અને હું અનેક ભૂત, ભાવ તેમજ ભવિક પર્યાય વાળો પણ છું (से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ, एगे वि अहं जाव अणेगभूय भावभविए वि अहं) શુકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને કહ્યું કે હે ભદન્ત !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ स्थापत्यापुत्रः स्याद्वादमवलम्ब्योत्तरं करोति 'जण्णं सुया !' इत्यादि। यत् खलु हे शुक ! 'दव्वट्ठयाए एगे अहं' द्रव्यार्थतया एकोऽहम्। द्रव्यत्वेनामेकोऽस्मि जीवद्रव्यस्य एकत्वात्, न तु प्रदेशाभिप्रायेण।

'नाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं' ज्ञानदर्शनार्थतया द्वावप्यहम्। ज्ञानदर्शनार्थद्वयाभिप्रायेण द्विस्वभावकोऽहमस्मीत्यर्थः। द्वावप्यहमित्यनेन अनेकोऽपि भवानितिमश्नस्याप्युत्तरं प्रदत्तम्, उक्तरीत्या द्विस्वभावकत्वाम् श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकत्वाच्च। यथा एको देवदत्त एकस्मिन्नेवकाले पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वादीननेकान् स्वभावान् प्राप्नोति।

अहं) सो भदंत! आप ऐसा किस अर्थ को लेकर कह रहे हैं कि मैं एक भी हूँ यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायों वाला भी हूँ हे शुक! ऐसा जो मैं कह रहा हूँ सो किस अर्थ की अपेक्षा को लेकर कह रहा हूँ यह सुनो (जण्णं सुया! दव्वट्ठयाए एगे अहं णाणदंसणट्ठयाए, दुवेवि अहं, पएसट्ठयाए, अक्खए वि अहं अव्वए वि अहं अवट्ठिए वि अहं उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं) मैं एक हूँ ऐसा जो मेरा कहना है वह हे शुक! द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा है। (द्रव्यार्थिक नय का विषय एक अखण्ड द्रव्य होता है। अतः उस दृष्टि से मैं द्रव्य को एक होने की वजह से एक हूँ। प्रदेशों की अपेक्षा से एक नहीं हूँ। ज्ञान, दर्शन की अपेक्षा से मैं दो रूप भी हूँ दो स्वभाववाला भी हूँ। आत्माका लक्षण उपयोग है। यह उपयोग ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा से दो प्रकार का है। इस दृष्टि से मैं एक होता हुआ भी दो रूप हूँ। इस कथन से मैं अनेक भी हूँ इस प्रश्न

તમે કયા આધારે કહી રહ્યા છોકે હું એક પણ છું અનેક પણ છું અને હું અનેક ભૂત, ભાવ અને ભવિક પર્યાય વાળો પણ છું? સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર શુક પરિવ્રાજક ને જવાબ આપતા કહેવા લાગ્યા કે—(जण्णं सुया! दव्वट्ठयाए एगे अहं णाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं अव्वए वि अहं अवट्ठिए वि अहं उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं) હે શુક! "હું એક છું" મારૂં આ કહેવું દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાઓથી છે. દ્રવ્યાર્થિક નયનો વિષય એક અખંડ દ્રવ્ય હોય છે, દ્રવ્ય એક હોવાથી, આ દૃષ્ટિએ હું એક છું, પ્રદેશોની અપેક્ષાથી હું એક નથી જ્ઞાન દર્શનની દૃષ્ટિએ મારા બે રૂપ પણ છે. હું બે જાતના સ્વભાવવાળો પણ છું. આત્માનું લક્ષણ ઉપયોગ છે. જ્ઞાન અને દર્શનની દૃષ્ટિએ ઉપયોગના બે પ્રકાર થાય છે. આમ હું એક હોવાં છતાં પણ બે રૂપ વાળોછું. આથી 'હું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं अव्वए वि अहं अवट्ठिए वि अहं' प्रदेशार्थतया-अक्षयोऽप्यहम् असंख्यातानामात्मप्रदेशानामेकस्यापि केनापि प्रकारेण क्षयाऽभावात्। अव्ययोऽप्यहम्-केनापि प्रकारेणैकस्याप्यात्मप्रदेशस्य नाशाभावात्।

का भी उत्तर हो जाता है। इस तरहसे मानने पर भी वहां अहं प्रत्यय होने में कोई बाधा नही आती है। और उक्तरीति से आत्मा में द्वित्व भावता आने पर उसमें श्रोत्रादि विज्ञानों की तथा अवयवो की अनेकता भी विरुद्ध नहीं पड़ सकती है। यह विरुद्धता तो आत्मा में एक स्वभावता मानने पर ही आती है। मूल में एक होने पर भी अनेक स्वभाव की मान्यता बाधित नही होती है। जैसे देवदत्त एक पदार्थ में पितृत्व, पुत्रत्व, भ्रातृत्व आदि अनेक स्वभाव एक ही काल में होते हुए प्रतीति होते हैं। एक आत्मा के असंख्यात प्रदेश शास्त्रकारों ने कहे हैं। इन में से कोई भी ऐसा प्रदेश नही है जिसका किसी भी प्रकार से क्षय हो सके अतः इस प्रदेश की अपेक्षा से मैं आत्मा अक्षय हूँ। इसी तरह एक भी आत्मा के प्रदेश का किसी भी तरह से नाश नही हो सक ने के कारण मैं आत्मा अव्यय हूँ। अव्यय शब्द का जो किन्हीं २ ने ऐसा अर्थ किया है कि कितनेक प्रदेशों का व्यय नहीं होना है सो वह आगम से विरुद्ध पड़ता है कारण इस

અનેક છું' એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પણ પુષ્ટ થાય છે. આ માન્યતાથી ત્યાં 'અહં'ની પ્રતીતિમાં કોઇપણ જાતનો વાંધો જણાતો નથી. અને આ રીતે આત્મામાં દ્વિત્વભાવની સ્થાપનાથી તેમાં શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનોની તેમજ અવયવોની અનેકતામાં પણ કોઇ પણ જાતનો વિરોધ જણાતો નથી. આત્મામાં એક સ્વભાવતા માનવામાંજ આ વાંધો ઊભો થાય છે. આ પ્રમાણે મૂળ રૂપે એક હોવાં છતાં પણ અનેક સ્વભાવની માન્યતા કોઇ પણ રીતે બાધિત થતી નથી. જેમકે દેવદત્ત આ એક પદાર્થમાં પિતૃત્વ પુત્રત્વ ભ્રાતૃત્વ વગેરે ઘણા સ્વભાવોની પ્રતીતિ એકજ કાળમાં થાય છે. એક આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો શાસ્ત્રકારો એ કહ્યા છે. આ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાંથી કોઇ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે જેનો કોઇપણ રીતે નાશ થઇ શકે. એથી આ પ્રદેશની અપેક્ષાએ હું 'આત્મા' અક્ષયછું. આ રીતે આત્માના એક પણ પ્રદેશનો ગમેતે સંજોગોમાં કોઇપણ રીતે નાશ નહિ થવાથી હું 'આત્મા અવ્યયછું. અવ્યય શબ્દનો અર્થ' કોઇ એ એવી રીતે કર્યો છે કે "કેટલાક પ્રદેશો નો વ્યય થતો ન હોય તે અવ્યય" તો આ અર્થ આગમથી વિરુદ્ધ છે. કારણકે આ અર્થને માનવાથી 'કેટલાક પ્રદેશોનો નાશ થાય છે' આવો અર્થ પણ નીકળે છે. ' ત્રિકાળમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यत्तु-अव्ययः कियतामपि च व्ययाभावादित्युक्तं, तदागमविरुद्धम्-कियतामपीत्युक्त्या कियतानां नाशोभवतीत्यर्थस्यापि बोधापत्तिसंभवात्। अवस्थितोऽप्यहम्-असंख्यातप्रदेशवत्त्वं कदाचिदपि न विनश्यति तेन मम स्वरूपमविचलं सदाऽवस्थायीत्यर्थः। तस्मान्नित्यस्वरूपोऽप्यहमस्मीति भावः। शिष्यबुद्धिनिर्मलीकरणार्थमेकस्मिन्नेवार्थेऽनेकपर्यायशब्दानां प्रयोगः।

'उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं' अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम्। अनेके विषयभेदाद् बहुविधा उपयोगा भूताः=अतीताः, भावाः वर्तमानाः, स्तथा भविकाः=भाविनश्च यस्य स तथा, अतीतकाले बहवः-उपयोगाः श्रोत्रादि-

प्रकार के कथन में "कितनेक प्रदेशों का नाश होता है" ऐसा अर्थ भी हो जाता है। असंख्यात प्रदेशों से युक्त पना आत्मा में त्रिकाल में भी नष्ट नहीं होता है अतः यह असंख्यात प्रदेशों से युक्त रहने रूप जो आत्मा का स्वरूप है उससे यह आत्मा अविचल है सदा अवस्थित है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मैं नित्य स्वरूप वाला हूँ। मैं अक्षय हूँ, अव्यय हूँ, अवस्थित हूँ ऐसे जो ये सब पर्याय शब्द एक ही आत्मा रूप अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं वे शिष्य की बुद्धि को निर्मल करने के लिये प्रयुक्त हुए हैं ऐसा जानना चाहिये। "उव ओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं" यहां अनेक शब्द विषय भेद की अपेक्षा अनेकविध उपयोगों का वाचक हैं ये अनेकविध उपयोग जिस के पहिले हो चुके हैं तथा वर्तमान में जिस में हो रहे है और भविष्य में जिस में होंगे अर्थात् अतीतकाल में श्रोत्रादि विज्ञान रूप उपयोग जिस में उत्पन्न हुए हैं, नष्ट हुए हैं, वर्तमान काल में भी जिस में

પણ આત્મામાં અસંખ્યાત પ્રદેશોનો યુક્ત ભાવ નષ્ટ થતો નથી. એટલા માટે અસંખ્યાત પ્રદેશોથી યુક્ત રહેનારૂં આત્માનું સ્વરૂપ છે તેનાથી આ આત્મા અવિચળ છે હંમેશાં અવસ્થિત છે. એનાથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે હું નિત્ય સ્વરૂપ વાળો છુ. હું અક્ષય છું. હું અવ્યય છું. હું અવસ્થિત છું. અને આ બધા એક અર્થ વાચક પર્યાય શબ્દો આત્મા રૂપ અર્થમાં પ્રયુક્ત કરવામાં આવ્યા છે, તે શિષ્યની બુદ્ધિને નિર્મળ બનાવવા માટેજ, આમ સમજી લેવું જોઇએ. (उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं) અહીં જે અનેક શબ્દ છે તે વિષય ભેદની અપેક્ષાથી અનેક વિધ ઉપયોગોનો વાચક છે. આ અનેકવિધ ઉપયોગો જેનાં પહેલાં થઈ ગયા છે, વર્તમાન કાળમાં જેમાં થઇ રહ્યા છે અને ભવિષ્યમાં જેમાં થશે એટલે કે શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાન રૂપ જેમાં ભૂતકાળમાં ઉત્પન્ન થયા છે, વર્તમાન કાળમાં પણ જેમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञानरूपा उत्पन्ना विनष्टाश्च वर्तमानकालेऽपि उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति च, तथा भविष्यत् काले उत्पत्स्यन्त विनशिष्यन्ति च, त उपयोगा आत्मनः=कथंचिदभिन्ना स्तेनानेकभूतभावभविकोऽप्यहमस्मीत्येवमनित्यपक्षोपि मम दोषाय नास्तीत्यर्थः। यत्तु–अत्रभावाः सत्ताः परिणामा वा इति व्याख्यातं तदयुक्तम्–

अतीतानां भाविनां च भावानामनेकान्वयितयाऽतीतार्थकभूतशब्दात् प्रागेव प्रयोक्तव्यस्य भावशब्दस्य तदनन्तरं प्रयोगो न संगच्छते अपि च–तन्मतेऽतीत भविकानां भावान्वयितया ततः पूर्वत्र वा सहैव प्रयोक्तव्ययोरतीतभविकशब्द-

---

उत्पन्न होते हैं नष्ट होते हैं तथा भविष्यत् काल में जिस में उत्पन्न होंगे और नष्ट होंगे वे उपयोग आत्मा से कथंचित् अभिन्न हैं। अतः इस उपयोग की अपेक्षा मैं आत्मा अनेक भूत, भाव, भविक वाला भी हूँ इस तरह आत्मा में अनित्यता भी आ जाती है सो यह अनित्यता का पक्ष भी हमारे लिये दोषावह नहीं होता है। यहां पर जो किन्हीं २ ने भाव शब्द का अर्थ सत्ता या परिणाम इस रूप से किया है वह ठीक नहीं है। भाव शब्द यहां वर्तमान कालार्थ का ही वाचक है सत्ता या परिणाम का वाचक नहीं। कारण जो अतीत और भावी भाव होते हैं वे अनेकार्थान्वयी होते हैं इसलिये अतितार्थक भूत शब्द से पहिले ही प्रयोक्तव्य भावशब्द का उस के बाद प्रयोग करना संगत प्रतीत नहीं होता।

अपिच– सत्ता या परिणामवादियों के मत में अतीत और भविष्यत भावों को भावान्वयी होने के कारण अतीत और भविष्यत्

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમાં પણ જેમાં ઉત્પન્ન થશે અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી કથંચિત અભિન્ન છે. એટલા માટે આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હું 'આત્મા' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભાવિક વાળો પણ છું આ રીતે આત્મામાં અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સદોષ કહી શકાય નહિં કેટલાક ભાવ શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી. અહીં ભાવ શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે. સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક નથી. કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય છે તે અનેકાર્થાન્વયી હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલાં જ પ્રયુક્ત કરવામાં આવેલા ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી. વળી સત્તા કે પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા બદલ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योर्भावशब्दव्यवधानेन प्रयोगो न संगच्छते, तस्माद् भावशब्दोऽत्र वर्तमानकालार्थपर इत्येव भगवदाशयोऽवगम्यते ।

अत्र:=अस्मिन् स्थाने स्थापत्यापुत्रस्य वचनानि श्रुत्वा स शुकः संबुद्धः सम्यग्बोधं प्राप्तः सन् स्थापत्यापुत्रमनगारं वन्दते स्तौति, नमस्यति प्रणमति, वंदित्वा नत्वा चैवमवादीत् हे भदन्त । इच्छामि खलु युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं निशामयतुं=श्रोतुम् ।

(भूत, भविक) ये दोनों शब्द भाव के पहिले या भाव के बाद साथ २ प्रयुक्त होने चाहिये भाव शब्द से व्यवहित होकर प्रयुक्त नहीं होने चाहिये परन्तु यहां तो वे दोनों शब्द भाव शब्द से व्यवहित होकर ही प्रयुक्त हुए हैं इसलिये भावशब्द यहां वर्तमान कालार्थ परक है ऐसा ही भगवान् का आशय ज्ञात होता है । (एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चा पुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, एवं वयासी, इच्छामिणं भंते ! तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा) इस स्थान में स्थापत्यापुत्र अनगार के वचनों को सुनकर वह शुक परिव्राजक सम्यक् बोध को प्राप्त हो गया और उसने फिर उन स्थापत्यापुत्र अनगार को वंदना की स्तुति की उन्हे नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगा हे भदंत ! मैं आप से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहता हूँ । शुक परिव्राजक की इस प्रकार प्रार्थना सुन कर स्थापत्या पुत्र ने उसे धर्म

અતીત અને ભવિષ્ય (ભૂત, ભાવિક) આ બંને શબ્દો ભાવ પહેલાં કે ભાવ પછી સાથે સાથે પ્રયુક્ત થવા જોઈએ ભાવ શબ્દથી વ્યવહિત (યુક્ત) થઈને પ્રયુક્ત થવા ન જોઈએ પણ અહીં તો તે બંને શબ્દો ભાવ શબ્દથી વ્યવહિત (યુક્ત) થઈને જ પ્રયુક્ત થયા છે. એથી અહીં ભાવ શબ્દ વર્તમાન કાળનો અર્થ બતાવે છે. ભગવાનનો અભિપ્રાય એવોજ જણાય છે. (एत्थणं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए,धम्मकहा भाणियव्वा) આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારનાં વચનો સાંભળીને શુક પરિવ્રાજકને સમ્યકત્વબોધ થયો અને તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને વંદન કર્યા સ્તુતિકરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યો. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમને કહ્યું કે હે ભદંત ! હું તમારા શ્રી મુખથી કેવલી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ ને સાંભળવાની ઈચ્છા રાખું છું. શુક પરિવ્રાજક ની આવી વિનંતી સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્રે તેને ધર્મકથા સંભળાવી સ્થા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ स्थापत्यापुत्रो धर्मकथा कथयतिस्म । ननु कीदृशी धर्मकथा भगवतोपदिष्टेति जिज्ञासायामाह–' धम्मकहा भाणियव्वा ' इति । धर्मकथा भणितव्या औपपातिकसूत्रोक्ता धर्मकथाऽत्र वाच्या सा चोपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवनीटीकायां मया विस्तरतो व्याख्याता ततोऽवगन्तव्या ॥ २४ ॥

मूलम्–तएणं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सामाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिज्जइ । तएणं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ । तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइय ॥ सू० २५ ॥

कथा सुनाई । किस प्रकार की धर्मकथा स्थापत्या पुत्र ने शुक परिव्राजक को सुनाई सो यह कथा औपपातिक सूत्र में वर्णित हुई है । वही कथा यह समझनी चाहिये । उपासकदशांगसूत्र की जो अगारधर्म संजीवनी टीका है उसमें मैंने इस कथा को विस्तार से व्याख्यात किया है । सूत्र ॥ २४ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું વર્ણન "ઔપપાતિક સૂત્ર" માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાંથી જાણી લેવી જોઇએ. " ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર " ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં પણ મેં આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે. ॥ સૂત્ર " ૨૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' तएणंसे इत्यादि. ।

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु स शुकः परिव्राजकः स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य एवं वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भदन्त ! परिव्राजकसहस्रेण सार्धं संपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षां ग्रहीतुमिच्छामीत्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुखं यावत्= ईप्सित कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विलम्बं मा कुरु, इत्येवमुक्तः सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएणं से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय मे अवधाँरित कर (एवं वयासी) उन से इस प्रकार कहा— (इच्छामिणं भंते । परिव्वायगसहस्से णं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदंत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्रजको के साथ २ मुंडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुहं जाव उत्तरापुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवाणुप्रिय । तुम्हे जैसे सुख हो वैसा करो— इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएणं से सुए परिव्वायए इत्यादि)

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યાર બાદ (से सुए) શુક (परिव्वायए) પરિવ્રાજકે (थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના શ્રી મુખ થી શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરીને (णिसम्म) તેને સારી પેઠે હૃદયમાં અવધારિત કરીને (एवं वयासी) તેમને આ રીતે કહ્યું– (इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए) હે ભદંત ! તમારી પાસેથી એક હજાર પરિવ્રાજકોની સાથે હું મુંડિત થઈને દીક્ષિત થવા ચાહું છું. (अहासुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) શુક પરિવ્રાજકની દીક્ષિત થવાની ઇચ્છા સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું 'હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરો. ઇચ્છિત કાર્યમાં એટલે કે દીક્ષાગ્રહણ કરવામાં મોડું કરો નહિ આ રીતે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गत्वा त्रिदण्डिकां यावत् त्रिदण्डादीनि सप्तोपकरणानि यावत् गैरिकधातुरक्तानि वस्त्राणि चैकान्ते एकान्तप्रदेशे ' एडेइ ' एडयति=त्यजति एडित्ता=त्यक्त्वा ' सयमेव सिहं उप्पाडेइ ' स्वयमेव स्वहस्तेनैव शिखां जटारूपात् उत्पाटयति=लुञ्चति ।

यत्तु-दीपिकाकारेण कस्तूरचन्द्रगणिना-यतिना ' सयमेव वसहिं उप्पाडेइ ' इति स्वकपोलकल्पितं मूलं प्रदर्श्य, दीपिकायां- स्वयमेव=स्वहस्ताभ्यामेव परिव्राजकवसतिः त्रिदण्डिकानां निवासार्हं यन्मठं तामुत्पाट्यतिस्म समूलं विनाशितवानित्यर्थः " इत्युक्तं, तदसमीचनम्-हस्तलिखितेषु मुद्रितेषु च प्राचीनपुस्तकेषु तदुक्तमूलपाठानवलोकनेन, सर्वत्र 'सिहं' इत्येव पाठस्य दर्शनेन च उत्सूत्र म-

विलम्ब मत करो-इस प्रकार स्थापत्यापुत्र के कहने पर उस शुक परिव्राजकने ईशान कोण मे जाकर अपने त्रिदंडिका आदि सात उपकरणो को तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को एकान्त स्थान मे रख दिया उन्हें छोड दिया—और छोडकरफिर अपने आप अपनी जटारूप शिखा का उत्पाटन किया। दीपिका कार कस्तूर चन्द्र जी गणिने (सयमेव वसहिं उप्पाडेइ " एसा कपोलकल्पित मूल पाठ दिखा कर दीपिका में जो ऐसा लिखा है कि उसने अपने हाथो से त्रिदण्डिकों के निवास योग्य मठ को समूल उखाड डाला " यह ठीक नहीं है कारण ऐसा पाठ हस्त लिखित एवं मुद्रित हुई प्राचीन प्रतियो में देखने में नहीं आता है। वहां तो "सिहं" यही पाठ लिखा हुआ मिलता है! इस तरह से अपनी कपोलकल्पना से पाठ को कल्पित कर रखना यह उत्सूत्र प्ररूपणा है अपनी शिखा को उत्पाटित कर—लुञ्चितकर-वह शुक परिव्राजक

સ્થાપત્યા પુત્રની આજ્ઞા સાંભળીને શુક પરિવ્રાજકે ઈશાન કોણમાં જઈ ને પોતાના ત્રિદંડ વગેરે સાત ઉપકરણો તેમજ ગેરૂ રંગના વસ્ત્રોને એક તરફ મૂકી દીધાં એટલે કે આ બધી વસ્તુઓનો તેણે સદાને માટે ત્યાગ કરી દીધો એના પછી તેણે જટા રૂપ પોતાની શિખાનું લુંચન કર્યું. દીપિકાકાર કસ્તૂર ચંદ્રજી ગણિએ " सयमेव वसहिं उप्पाडेइ " આવો કપોલકલ્પિત મૂળ પાઠ બતાવતાં દીપિકામાં એ પ્રમાણે લખ્યું છે કે તેણે (પરિવ્રાજકે) પોતાના હાથોથી ત્રિદંડિકોના નિવાસ (મઠ) ને સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યો હતો આ વાત ઠીક કહી શકાય નહિ કેમ કે આ જાતનો પાઠ હસ્તલિખિત તેમજ મુદ્રિત (છપાએલી) જૂની પ્રતોમાં જોવા મળતો નથી તે પ્રતોમાં તો ' सिहं ' પાઠજ લખેલો મળે છે. આવી રીતે પોતાની કપોલકલ્પના મૂલક અસત્ય વાતોથી પાઠકોને ભ્રમમાં મૂકવાના પ્રયાસો કરવા તે ખરેખર " ઉત્સૂત્રપ્ર-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपणा जनितानन्तसंसारित्वापत्तेः । उत्पाट्य यत्रैव स्थापत्यापुत्रोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मुण्डोभूत्वा यावत् प्रव्रजितः दीक्षां गृहीतवान् । सामायिकादीन्येकादशाङ्गानि चतुर्दशपूर्वाणि अधीतेस्म । तदा-शुकस्य सार्थभूताः सहस्रपरिव्राजका अपि दीक्षां गृहीतवन्तः । ततस्तदनन्तरं खलु स्थापत्यापुत्रोऽनगार सहस्रं तदानीं दीक्षितान् सहस्रमनगारान् शुकस्य शिष्यतया वितरति, दत्तवान् । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः सोगन्धिकाया नगर्याः नीलाशोकात् नीलाशोकनामकादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति, निर्गच्छतिस्म, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं देशमध्ये विहारं विहरति करोतिस्म. ॥ २५ ॥

जहां स्थापत्यापुत्र अनगार विराज मान थे वहां गया-(उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिज्जइ) जाकर वह मुंडित हो उनके पास दीक्षित हो गया । सामायिक आदि ग्यारह अङ्गो को और चतुर्दश पूर्वोंको उसने उनके पास पढा । शुक के साथ रहे हुए उन १ हजार परिव्राजकों ने भी भगवती दीक्षा धारण करली । (तएणं थावच्चा पुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ) स्थापत्यापुत्र अनगार ने इन १ एक हजार साधुओ को शुक परिव्राजक का शिष्य बना दिया । (तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधिओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ,पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) इसके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार उस सौगंधिका नगरी से, नीलाशोक उद्यान से निकले और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने लगे ॥ सू० २५ ॥

પણા " જ છે પોતાની શિષ્યાનું લુંચન કરીને શુક પરિવ્રાજક જ્યાં સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર હતા ત્યાં ગયા. (उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिज्जइ) ત્યાં જઈને મુંડિત થઈને તેમની પાસેથી દીક્ષા મેળવી લીધી. સામયિક વગેરે અગિયાર અંગો નો તેમજ ચતુર્દશ પૂર્વોનો તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર પાસે રહીને અભ્યાસ કર્યો. શુક ની સાથે રહેનારા એક હજાર પરિવ્રાજકોએ પણ ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી. (तएणं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તે એક હજાર સાધુઓને શુક પરિવ્રાજકના જ શિષ્યો બનાવ્યા. (तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) ત્યાર બાદ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સૌગંધિકા નગરી અને નીલાશોક ઉદ્યાનની બહાર થઈને બીજા જન પદ (દેશ) માં વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ, दुरूहित्ता मेघघणसंनिगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने, तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-'तएणं से' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण सार्धं संपरिवृतो ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकनामकः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहति–आरोहति, दूरुह्य 'मेघघणसंनिगासं' मेघघनसंनिकाशं मेघानां घनः समूहस्तद्वत् कालवर्णं 'देवस-

तएणं से थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) ईसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र अणगार सहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे) हजार अनगार के साथर ग्रामानुग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुंडरीए पव्वए) जहां पुंडरीक पर्वत था-(तेणेव उवागच्छइ) वहां आये (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) वहां आकर वे उस पुंडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरूहित्ता मेघघणसंनिगासं देवसंनिवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओव

'तएणं से थावच्चापुत्ते !' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यारબાદ(से थावच्चापुत्ते) स्थापत्यापुत्र (अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे) એક હજાર અણગારની સાથે એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતાં (जेणेव पुंडरीए पव्वए) જ્યાં પુંડરીક પર્વત હતો (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવ્યા (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) ત્યાં પહોંચીને તેઓ પુંડરીક પર્વતપર ધીમે ધીમે ચઢવા માંડયા. (दुरूहित्ता मेघघणसंनिगासं देवसंनिवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने) ચઢીને તેમણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तिवायं ' देवसंनिपातं=निर्वाणाद्युत्सवसमये यत्र देवाः समागत्य मिलन्ति, देवानां संनिपातः संमिलनं यत्र तं ' पुढविसिलापट्टयं ' पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेखयित्वा यावत् ' पाओवगमणं णुवन्ने ' पादपोपगमनमनुप्राप्तः सहस्रशिष्यैः सह पादपोपगमनसंस्तारकं कृतवान्। ततःखलु स स्थापत्यापुत्रो बहूनिवर्षाणि सामान्यपरियागं ' श्रामण्यपर्यायं=चारित्रपर्यायं ' पाउणित्ता ' पालयित्वा मासिक्या संलेखनया षष्टिभक्तानि अनशनेन छित्त्वा यावत् – केवलवरज्ञानदर्शने सति ' समुप्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञानं केवलदर्शनं च संप्राप्य ततः पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्तिं प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्तः सर्वदुःख प्रहीणः जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जातः ॥ २६ ॥

गमणं णुवन्ने) चढकर उन्हों ने मेघ समूह के समान कृष्ण वर्णवाले तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहां देव एकत्रित होते हैं ऐसे पृथिवी शिलापट्टक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोपगमन संथारा धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोपगमन संथारा ले लिया। (तएणं से थावच्चापुत्ते बहुणि वासाणि सामन्न परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे) इस तरह उन स्थपत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके एक मास की संलेखना से साठ भक्तों का अनशन द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय में केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध बन गये। यहां यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा मरणादि दुःख रहितो जाता " इन पदों का संग्रह हुआ है ।सू० २६॥

મેઘ સમૂહ જેવી કાળી તેમજ નિર્વાણ વગેરેના ઉત્સવના વખતે દેવો જ્યાં એકઠા થાય છે એવી શિલાપર પ્રતિલેખના કરીને પાદપોપગમન સંથારો સ્વીકાર્યો. તેમની સાથે એક હજાર સાધુઓએ પણ (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे) આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રાવણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક મહિનાની સંલેખનાથી સાઈઠ ભક્તોનું અનશન વડે છેદન કરીને છેવટે કેવળ જ્ઞાન કેવળ દર્શન મેળવ્યું. ત્યાર બાદ બધાં કર્મો ક્ષય થયાં ત્યારે તેમને સિદ્ધ પદ મળ્યું અહીં જે 'यावत्' શબ્દ આવ્યો છે તેથી (बुद्धः मुक्तः सर्वदुःखप्रहीणः जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जातः) આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે ॥ સૂ.૨૬ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए परिसा निग्गया सेलओ निग्गओ धम्मं सोच्चा देवाणुप्पिया! पंथगपामोक्खाइं पंचं मंतिसयाइं आपुच्छामि मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारयं पव्वयामि, अहासुहं, तए णं से सेलए राया सेलागपुरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मं णिसंते सेविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए अहंणं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भं णं देवाणुप्पिया! किं करेह किं ववसाह किं वा ते हियइच्छंति ?,

तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं रायं एवं वयासी—जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाण वि समणाणं बहुसु जाव चक्खुभूए ।

तएणं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जइणं देवाणु०तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवा० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्स वाहिणिओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति, तहेव पाउब्भवंति ।

तएणं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह० अभिसिंचइ जाव राया यावद् विहरइ ॥ सू० २७ ॥

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु स शुकोऽन्यदा=अन्यस्मिन् काले, कदाचित् कस्मिंश्चित् समये यत्रैव शैलकपुरं नाम नगरं यत्रैव सुभूमिभागं=सुभूमिभागनामकम् उद्यानं ' तेणेव समोसरिए ' तत्रैव समवसृतः समागतः । परिषन्निर्गता=शैलकपुर नगरनिवासिनां जनानांसंहतिः शुकनामाऽनगारं समागतं श्रुत्वा तं वन्दितुं शैलकपुरनगराद्बहिर्निःसृतेत्यर्थः । शैलकोऽपि निर्गतः शैलकनामा नृपोऽपि शुकमनगारं वन्दितुं नगराद्बहिर्निःसृतः । निर्गत्य यत्रैव शुकोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति। अथ

'तएणं से सुए' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से सुए)वे शुक अनगार(अन्नया कयाइं) किसी एक समय (जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए) जहां शैलकपुर नाम का नगर और उस में भी जहां सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां विहार करते २ आये (परिसा निग्गया सेलओ निग्गओ, धम्मं सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पंथगपामोक्खाइं पंचमंतिस

(तएणं से सुए इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपाछ (से सुए) शुक अनगार (अन्नया कयाइं) કોઇ એક વખતે (जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए) જ્યાં शैलક पुर नामे नगर अने तेमां पण જ્યાં सुभूमि भाग नामे उद्यान हतुं त्यां विहार करतां करतां आव्या. (परिसा निग्गया सेलओ निग्गओ धम्मं सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पंथगपामोक्खाइं पंचमंतिसयाइं आपु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुकनाम्नाऽनगारेण धर्मकथा कथिता। परिषत् प्रतिगता। ततः शैलको राजा-धर्मं श्रुत्वा यावत्-संबुद्धः शुकमेवमवादीत्-देवानुप्रिय ! पान्थकप्रमुखाणि पञ्च मन्त्रिशतानि पञ्चशतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिणः आपृच्छामि, मन्डूकं च कुमारं स्वपुत्रं राज्ये स्थापयामि, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डोभूत्वाऽगारादनगारतां प्रव्रजामि=स्वीकरोमि। शुक आह-यथासुखं=प्रव्रज्याग्रहणे विलम्बो न करणीय इत्यर्थः। ततः खलु स शैलको राजा शैलकपुरं नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव स्वकं=निजं गृहं यत्रैव बाह्या 'उवट्ठाणसाला' उपस्थानशाला=सभा

याइं आपुच्छामि मंडुयंच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारयं पव्वयामि) इनका आगमन सुनकर शैलकपुर नगर निवासी जनों का समूह उनके वंदना करने के लिये नगरसे बहार निकला। शैलकपुर राजा भी निकले। ये सब चलकर वहां आये जहां वे शुक अनगार विराज मान थे। शुक अनगार ने सब को धर्म कथा सुनाई। सुनकर सबलोग वापिस चले गये। शैलक राजा धर्म का उपदेश सुनकर यावत् प्रतिबुद्ध हो गया। उसने शुक अनगार से इस प्रकार कहा—देवानुप्रिय। मैं पांथक प्रमुख पांच सौ मंत्रियो से पूछलेता हूँ और अपने पुत्र मंडूक कुमार को राज्यमे स्थापित कर देता हूँ। बाद में मैं देवानुप्रिय आपके पास मुंडित होकर अगार अवस्था से अनगार अवस्था धारण करलूंगा। (अहासुहं तएणं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसइ, अणु

च्छामि मंडुयंच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारयं पव्वयामि) તેમનુ આગમન સાંભળીને શૈલક પુરના નાગરિકોના સમૂહો તેમની વંદના કરવા માટે બહાર નીકળ્યા. શૈલક પુરના રાજા પણ વંદન માટે બહાર જવા નીકળ્યા. તેઓ બધા જ્યાં શુક પરિવ્રાજક વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યાં. શુક પરિવ્રાજકે બધાને ધર્મકથા સંભળાવી. ધર્મકથા સાંભળી ને બધા પોત પોતાને સ્થાને જતા રહ્યા. ધર્મ કથા સાંભળીને શૈલક રાજા ને બોધ થયો. તેમણે શુક અનગારને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે-" દેવાનુપ્રિય ! હું મારા પાંચસો મંત્રીઓને પૂછી લઉં છું અને મારા પુત્ર મંડુક કુમારને રાજ્યસિંહાસને બેસાડી દઉં ત્યાર પછી તમારી પાસે મુંડિત થઈને હું અગાર અવસ્થા ત્યજીને અનગાર અવસ્થા ધારણ કરીશ (अहासुहं तएणं सेसेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसइ अणुपवि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानं, तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य सिंहासने 'सन्निसन्ने' संनिषण्णः=उपविष्टः ।- ततः खलु स शैलको राजा पान्थकप्रमुखाणि पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिणःशब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! मया शुकस्य=शुकनाम्नोऽनगारस्यान्तिके=समीपे धर्मः=श्रुतचारित्रलक्षणः ' णिसंते ' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्मः ' इच्छिए ' इष्टः=वाञ्छितः, ' पडिच्छिए ' प्रतीप्सितः=ग्रहीतुमभिलषितः ' अभिरुइए ' अभिरुचितः=प्रत्यात्मप्रदेशे रुचिविषयीभूतः, अहं खलु हे देवानुप्रियाः ! ' संसारभयउव्विग्गे ' संसारभयोद्विग्नः जन्मजरामरणेष्टवियोगानिष्टसंयोगादिभयोद्विग्नः सन् यावद् प्रव्रजामि=दीक्षां ग्रहिष्यामि । हे देवानुप्रियाः ! यूयं किं करिष्यथ किं व्यवसायिष्यथ=कीदृशं व्यवसायमुद्यमं करिष्यथ, किं वा युष्माकं हृदयेप्सित इति, भवतां मनोगतोविचारः कीदृशो वर्ततो इत्यर्थः । ततः खलु ते

पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए सद्दावेइ) शैलक राजा के इस प्रकार के विचार सुन कर शुक अनगार ने उनसे कहा-यथा सुखं-अर्थात् शुक-अनगार की इस तरह दीक्षा ग्रहण करने में अनुमति प्राप्त कर शैलक राजा वहां से शैलक पुर नगरमें आये। आकर वे जहां अपना घर और जहां अपनी बाहिर उपस्थानशाला सभास्थान-था वहां गये--वहां जाकर उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पांचसौ पांथक प्रमुख मंत्रियों को बुलाया-(सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते से विय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए, अभिरुइए अहं णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउविग्गे जाव पव्वयामि तुब्भे णं

सित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए सद्दावेइ) શૈલક રાજાના આ જાતના વિચારો સાંભળીને શુક અનગારે તેમને કહ્યું- "यथासुखं" એટલે કે તમને જેમાં સુખ મળે તે કરો. શુક પરિવ્રાજકની દીક્ષા ગ્રહણ કરવામાટેની અનુમતિ મેળવીને શૈલક રાજા ત્યાંથી શૈલકપુર નગરમાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ સીધા પોતાના મહેલની અંદર ઉપસ્થાન શાળા એટલે કે સભાસ્થાન હતું ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં જઈને તેમણે સિંહાસન ઉપર બેસીને પાંચસો પાંથક પ્રમુખ મંત્રીઓને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए अहं णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्व-

ज्ञा १६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान्थकप्रमुखाः पान्थकादयो मन्त्रिणः शैलकं राजानमेवमवदन् यदि खलु यूयं देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत=प्रव्रजिष्य, तर्हि अस्माकं हे देवानुप्रिय !=हे राजन् ! कोऽन्य आधारः=आश्रयो वा, आलम्बः=दुःखादौ प्रपततां-धारकः वा भविष्यति, यतोऽस्माकं भवानेवशरणम् , इत्यर्थः । वयमपि च खलु हे देवानुप्रिय ! संसारभयोद्विग्ना यावद् भवद्भिः सार्धमेव प्रव्रजामः=दीक्षां ग्रही-

देवाणुप्पिया ! किं करेह किंववसह, किं वा ते हियइच्छंति ?) बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवाणुप्रियो ? मैंने शुक अनगार के पास श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत अच्छा लगा है। मेरी इच्छा उसे ग्रहण करने की हो रही है हर एक आत्मप्रदेशमें वह मेरी रुचिका विषयभूत बन गया है। हे देवानुप्रियो ! मै संसार के भय से जन्म जरा मरण इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग आदि के डर से इस समय उद्विग्न हो रहा हूँ अतः मैं संयम धारण करूँगा। अतः हे देवानुप्रियो ! तुम क्या करोगे , कैसा उद्यम करोगे-आपलोगों का मनोगत विचार कैसा क्या हो रहा है ? (तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं रायं एवं वयासी) राजा की इस प्रकार वाणी सुनकर उन पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्रियों ने उस शैलक राजा से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलबे वा अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो) हे देवानुप्रिय ! यदि आप संसार भय से

यामि तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! किं करेह किं ववसह किंवाते हियइच्छंति !) બોલાવી ને રાજાએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં શુક અનગાર પાસેથી શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે. તેનાથી હું બહુજ પ્રભાવિત થયો છું. શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મને સ્વીકારવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે, મારા આત્માના પ્રત્યેક ભાગમાં શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ વ્યાપ્ત થઇ ગયો છે. હે દેવાનુપ્રિયો ! હું સંસારના ભયથી જન્મ જરા (ઘડપણ) ઇષ્ટજનનો વિયોગ, અનિષ્ટ સંયોગ વગેરેની બીકથી અત્યારે વ્યાકુળ થઇ રહ્યો છું. તેથી હું સંયમ ધારણ કરીશ હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શું કરશો ? તમે શો ઉદ્યોગ કરશો ? આ વિષે તમારા મનમાં કઇ જાતના વિચારો આવવા માંડ્યા છે ? (तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं रायं एवं वयासी) રાજાની વાણી સાંભળીને પાંથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રીઓએ શૈલકરાજને આ પ્રમાણે કહ્યું—(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलबेवा अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो)हे દેવાનુપ્રિય ! તમે જો સંસાર ભયથી ભય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्यामः। हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन् ! यथाऽस्माकं बहुषु कार्येषु=राज्याधिकृत-कार्येषु च कारणेषु=राज्यरक्षणोपायेषु च यावत्-तथा - खलु भवद्भिः सार्धं मव्रजितानामपि श्रमणानां बहुषु यावत् कार्यादिषु चक्षुर्भूतः। यथाऽस्माकमधिकृ-तेषु भवान् विश्रामस्थानं, राज्यकार्येषु भवानेव नेत्रतुल्यो नेताऽस्ति तथा चारित्र-पालनकार्येष्वपि भवानेव नेताभविष्यतीतिभावः।

उद्विग्न हो कर दीक्षित होना चाहते हैं तो हे देवानुप्रिय ! अब हमलोगों का और कौन आपके सिवाय दूसरा आधार हो सकेगा कौन दुःखा दिक के समय हमलोगों के लिये आलंबन देने वाला होगा, क्यों कि हमारे लिये तो आपही एक शरण भूत हैं। अतःजब आप दीक्षित होना चाहते है तो हम लोग भी संसार भय से उद्विग्न हो कर आप के साथ ही दीक्षा संयम धारण करेंगे। (जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहाणं पव्वतियणवि समणा णं बहुसु जाव चक्खुभूए) हे देवानुप्रिय ! जीस तरह आप हमलोगों के लिये अनेक राज्याधिकृत कार्यों में अनेक कारणों मे-राज्य संरक्षण के उपायों में-चक्षुभूत रहे हैं उसी तरह आपके साथ प्रव्रजित हुए हमलोगों के चारित्र पालन कार्य में भी आप ही नेता रहेंगे। (तएणं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी) मंत्रि मंडल की इस प्रकार बात सुनकर उस शैलक राजा ने उन पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्रियों से इस प्रकार कहाः-

ત્રસ્ત થઇને દીક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખોછો તો તમારા સિવાય અમારો બીજો કોણ આધાર થશે ? આકૃતના વખતે અમને આશ્રય આપનાર કોણ થશે ? અમારે માટે તો તમે જ શરણ રૂપ છો, એટલે જ્યારે તમે દીક્ષિત થવાની ઇચ્છા રાખો છો ત્યારે અમે લોકો પણ આસંસારથી કંટાળી ગયા છીએ તમારી સાથે અમે પણ ચોક્કસ દીક્ષા સંયમ ધારણ કરીશું (जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसुय जाव तहाणं पव्वतियाणवि समणाणं बहुसु जाव चक्खुभूए) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ અહીં અમારા માટે ઘણા રાજ્યવહીટના કામોમાં ઘણાં કારણોમાં-રાજ્ય સંરક્ષણ વિગેના ઉપા યોમાં ચક્ષુભૂત રહ્યા છે તેથી અમારી સાથે પ્રવ્રજિત થઇને પણ અમે લોકો ચારિત્રપાલન કાર્યમાં પણ તમે જ અમારા નેતા થશો એવી અમારી ઇચ્છા છે, (तएणं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी) મંત્રીઓ આ જાતના વિચારો સાંભળીને શૈલક રાજાએ તે પાંથક પ્રમુખ પાંચસો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु स शैलकः पान्थकप्रमुखं पञ्चमन्त्रिशतं=पञ्चशतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिणः, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्–यदि खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं संसारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत प्रव्रजिष्यथ दीक्षां ग्रहीष्यथ, तत् तर्हि गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः ! स्वकेषु स्वकेषु कुटुम्बेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् कुटुम्बमध्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः दुरूढाः आरूढाः सतो ममान्तिकं प्रादुर्भवतेति । तथैव प्रादुर्भवन्ति=ते पञ्चशतानि मन्त्रिणः स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बमध्ये स्वस्थाने स्थापयित्वा शिविकामारूढाः सन्तः शैलकनृपस्य समीपे उपस्थिता अभूवन्नित्यर्थः ।

ततः खलु स शैलक राजा पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतानि मन्त्रिणः प्रादुर्भवतः= समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टः कौटुम्बिकपुरुषान् = आज्ञाकारिणः पुरुषान्

(जइणं देवाणु० तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवाणु० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिसहस्सवाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तियं पाउब्भवहत्ति तहेव पाउब्भवंति) हे देवानुप्रिय ! यदि आप लोग संसार भय से उद्विग्न हैं और यावत् प्रव्रजित होना चाहते है तो जाओ और अपने २ कुटुम्बो में अपने २ स्थानों पर ज्येष्ट पुत्रों को स्थापित करके पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ हो कर फिर मेरे पास आजाओ इस प्रकार राजा के कथन को सुनकर उनसबने अपने २ कुटुम्बों में अपने २ स्थान पर अपने २ ज्येष्ट पुत्रों को स्थापित किया–और बाद मे फिर वे सबके सब शैलक राजा के पास में पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ हो कर उपस्थित हो गये। (तएणं से सेलए राया पंचमंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता

મંત્રીઓને આ પ્રમાણે કહ્યું–(जइणं देवाणु० तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवाणु० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्स वाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति तहेव पाउब्भवंति) હે દેવાનુપ્રિયો ! ખરેખર જો તમે સંસારભયથી સંત્રસ્ત હો તો જાઓ અને પોતપોતાના કુટુંબોમાં પોતાના સ્થાને જ્યેષ્ઠ પુત્રો ને મૂકીને પુરુષસહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં બેસીને મારી પાસે આવો. આ રીતે રાજાનું કથન સાંભળીને તેઓ બધા પોતપોતાને સ્થાને જ્યેષ્ઠ પુત્રોને મૂકીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં સવાર થઈ રાજાની પાસે આવ્યા. (तएणं से सेलए राया पंचमंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ पासित्ता तुट्ठतुट्ठे कोडुंबिय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दयति, आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्–क्षिप्रमेव =शीघ्रमेव भो ! देवानुप्रियाः ! मण्डूकस्य कुमारस्य महार्थं=महाप्रयोजनकं यावत्–राज्याभिषेकं 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत कुरुत । 'अभिसिंचंति' अभिषिञ्चन्ति, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः सुवर्णरजत कलशैर्मण्डूककुमारं स्नापयित्वा सर्वालङ्कार विभूषितं कृत्वा, तस्य राज्याभिषेकं कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः । यावद् मण्डूको राजा जातः विहरति=आस्ते ॥ सू० २७ ॥

मूलम्–तएणं से सेलए राया मंडुयं रायं आपुच्छइ, तएणं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नगरं आसित्त संमज्जिओवलित्तं गंधोदयसित्तं गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य,

एवं वयासी) इसके बाद उस शैलक राजा ने जब उन पांचसौ मंत्रियों को अपने समीप उपस्थित हुआ देखा–तो देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न एवं संतुष्ट हुआ और उसी समय उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया–बुलाकर उनसे कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह०, अभिसिंचइ जाव राया यावत् विहरइ) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही मंडुक कुमार का महार्थ साधक–महाप्रयोजन भूत–यावत् राज्याभिषेक करो । उन्हों ने उसका राज्याभिषेक किया अर्थात् सुवर्ण रजत के कलशों से मंडूक कुमार का अभिषेक कर और उसे समस्त अलंकारों से विभूषित कर राज्य पद में अभिषिक्त किया। इस तरह मंडूक कुमार राज्य पदासीन हो गया ॥ सूत्र २७ ॥

पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी) त्यार आद्द पोताना पांचसो मंत्रीओने आवेला जोईने राजा खूबज प्रसन्न थया अने संतुष्ट थया राजाओ तरत ज पोतानां कौटुंणिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने तेमने कहुं–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स–कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह अभिसिंचइए जाव राया यावद् विहरइ) हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वरे मंडूक राज कुमारनो महार्थसाधक महाप्रयोजन भूत–राज्याभिषेक करो कौटुंणिक पुरुषोओ राजानी आज्ञा प्रमाणे ज मंडूक राजकुमारनो राज्यभिष कर्यो एटले के तेओओ सोना रूपाना कळशोथी मंडूक कुमारनो अभिषेक कर्यो. अने बधा अलंकारोथी तेने शणगारीने राज्य सिंहासन उपर बेसाड्यो. ॥ सूत्र " २७ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं से मंडुए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावतीदेवी अग्गकेसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति, अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तएणं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ, तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

'तएणं से सेलए' इत्यादि ।

टीका–ततः स शैलको राजा मण्डूकं राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अहं दीक्षां ग्रहीष्यामीती । ततः खलु स मण्डूको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं वक्ष्यमाणप्रकारे-

'तएणं से सेलए राया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने (मंडुयं रायं आपुच्छइ) मंडूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय ! मैं दीक्षा संयम लूंगा (तएणं से मंडुए राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ)

(तएणं से सेलए राया) इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) त्यार आद (सेलएराया) शैलक राजाओ (मंडुयं रायं आपुच्छइ) मंडूक राजाने कह्युं-के हे देवानुप्रिय ! हुं दीक्षा स्वीकारीश. (तएणं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) त्यार पछी मंडूक राजाओ कौटुंबिक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णावादीत् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः शैलकपुरं नगरम् 'आसित्तसंमज्जिओवलित्तं' आसिक्त संमार्जितोपलिप्तं=आसिक्तम् जलेनाऽऽर्द्रीकृतं, संमार्जितं संमार्जन्या कचवराद्यपसारणेन संशुद्धः, उपलिप्तं गोमयादिना संलिप्तं, गन्धोदकसिक्तं पुनर्गन्धोदकेन प्रसिक्तं गन्धवर्तिभूतं अगरवर्तिरूपं सुगन्धमयं यूयं कुरुत, अन्यैश्च कारयत कृत्वा च कारयित्वा च 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकां=एतां ममाज्ञां प्रत्यर्पयत = भवदादिष्टं कार्यं सर्वं संपादितमस्माभिरित्यावेदयतेत्यर्थः। ततः खलु स मण्डूको राजा 'दोच्चंपि' द्वितीयमपि द्वितीयवारमपि कौटुम्बिक-पुरुषान्=आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति= आह्वति. शब्दयित्वा एवमवादीत्-

---

इसके बाद मंडुक राजा ने कौटुंबिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगपुरं नगरं आसित्त संमज्जिओवलित्तं गंधवट्टिभूत्तं करेहय कारवेहय) भो देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्र ही शैलकपुर नगर को जल से छिड़को- सिंचित करो, कचवर आदि के अपनयन से उसे साफ करो, गोमयादि से उसे लीपो गंधोदक से उसे बार २ सिक्त प्रसिक्त करो गंधवर्त्तिरूप करो- सुगंधमय करो, तथा दूसरों से कर बाओ। (करित्ता कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) कर के और करा के पीछे हमें इस आज्ञा के पालन की खबर दो हमने आप की आज्ञानुसार सब कार्य संपादित कर दिया है- ऐसा पीछे हमें समाचार दो (तएणं से मंडुए राया दोच्चंपि कौटुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) इसके बाद मंडूक राजा ने दुबारा भी

પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું- (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगपुरं नगरं आसित्तसंमज्जिओवलित्तं गंधवट्टिभूतं करेहय कारवेहय) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે શૈલકપુરને પાણીથી સત્વરે સિંચિત કરો કચરો વગેરે સાફ કરીને, છાણ વગેરેથી લીંપો તેમજ સુવાસિત પાણીથી વારંવાર તેને સિંચિત કરો અને તેને ગંધવર્તિ એટલે કે ધૂપસળીની જેમ સુવાસિત બનાવો તેમજ બીજાઓથી સુવાસમય બનાવડાવો (करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) આ પ્રમાણે જાતે કરીને અને બીજાઓની પાસેથી કરાવડાવીને કામ પુરૂં થયાનું અમને જણાવો. (तएणं से मुंडए राया दोच्चं पि कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યાર બાદ મંડૂક રાજાએ બીજી વખત કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. અને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षिप्रमेवभोः । शैलकस्य राज्ञो महार्थं=महाप्रयोजनकं मोक्षफलकं यावत् निष्क्रमणाभिषेकम्=दीक्षोत्सवम् उपस्थापयत=कुरुत, यथा मेघस्य मेघकुमारस्य प्रथमाध्ययने निष्क्रामणाभिषेको वर्णितः तथैव=तद्वदत्रापि वाच्य इत्यर्थः । मण्डूकनृपाऽऽज्ञया कौटुम्बिकपुरुषाः शैलकनृपस्य निष्क्रमणाभिषेकं मेघकुमारवत् कृतवन्त इति भावः नवरं तत्रैतावान् भेदः यत्-पद्मावती देवी पद्मावती नाम्नी राज्ञी शैलकनृपस्य स्वभार्या, अग्रकेशान् = अग्रभूतान् केशाग्रभागरूपान् चतुरङ्गुलवर्जितान् नापितकर्तितान् केशान् प्रतीच्छति=वस्त्राञ्चले गृह्णाति, मेघकुमारस्य तु स्वमाता धारिणीदेवी केशान् गृह्णातिस्मेतिभावः सच्चेत्था तदिव=तद्वत् = मेघकुमारवदित्यर्थः,

---

कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया, और बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव- णवरं पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ) तुम लोग शीघ्र ही शैलक राजा का मोक्षफल साधक यावत् निष्क्रमणाभिषेक दीक्षोत्सव- मेघकुमार के दीक्षोत्सव की तरह करो । मेघकुमार का दीक्षोत्सव जैसा प्रथम अध्ययन में वर्णित किया है वैसा ही यहां पर भी समझ लेना चाहिये । इस प्रकार मंडूक राजा की आज्ञा सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने शैलक राजा का दीक्षोत्सव मेघकुमार के दीक्षोत्सव की तरह अच्छी तरह से किया । उसमें और इसमें केवल इतना ही भेद रहा कि इस दीक्षोत्सव में पद्मावती देवी जो शैलक राजा की मुख्य रानी थी उसने उसके नापित कर्तित चतुरंगुलवर्जित अग्र केशों को अपने वस्त्राञ्चल में लिया और मेघकुमार के दीक्षोत्स में मेघकुमार के नापित कर्तित चतुरंगुलवर्जित केशों को उस की माता धारिणी देवी

બોલાવીને તેમને કહ્યું-કે (खिप्पामेव भो सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव णवरं पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ) તમે મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમ મોક્ષદાયક શૈલક રાજાનો દીક્ષોત્સવ ચોથે પ્રથમ અધ્યયનમાં મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવ વિષે જેમ વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેમ જ અહીં પણ સમજવું જોઇએ. આ રીતે મંડૂક રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કૌટુંબિક પુરુષોએ મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમજ સરસ રીતે દીક્ષોત્સવ ઊજવ્યો. મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવમાં અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં તફાવત આટલોજ સમજવો કે-મેઘરાજાના દીક્ષોત્સવ વખતે જ્યારે તેમનાં માતા ધરિણીદેવીએ ચાર આંગળ છોડીને બાકીના બધા નાપિત વડે કપાએલા વાળો પોતાના અંચળામાં લીધા હતા, અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં તેમનાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'पडिग्गहं' पतद्ग्रहं पात्रं गृहीत्वा शिबिकां दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधात्र्यादयः रजोहरणपात्रादिकं शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिबिकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अवशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमद्वीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्यां गृहीतवान् ' तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मंत्रिणोऽपि पञ्चशतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखास्तत्रैव प्रव्रज्यां गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुभिश्चतुर्थभक्तादिभिस्तपोभिः यावत्-आत्मानं भावयन् विहरति । तदनन्तरं स शुकः शैलकस्याऽनगारस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽनगारशतानि=तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशतसंख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने वस्त्राञ्चल में लिया था। (सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरुहंति अवसेसं तहेव, जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ) शैलक राजा उसके मंत्री तथा उसकी अम्बधात्रादि ये सब के सब रजोहरण एवं पात्रादिकों को लेकर शिबिका (पालखी) में आरूढ हो गये। जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की। नृपके साथ २ उस के पांथक प्रमुख पांच सौ मंत्रियोंने भी वहीं पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलकराज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अंगो का अध्ययन किया। (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तए णं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ) अध्ययन करने के बाद उन्हों ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद में शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

પટરાણી પદ્માવતી દેવીએ શૈલક રાજાના વાળો ચાર આંગળ છોડીને આગળના વાળોને પોતાના વસ્ત્રાંચળમાં લીધા. (सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरुहंति अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ) શૈલકરાજા તેમના મંત્રીઓ તેમજ શૈલક રાજાની અમ્બધાત્રી વગેરે બધાં રજોહરણ અને પાત્રો વગેરે લઈને પાલખીમાં સવાર થઈ ગયાં. ભગવાન મહાવીરની પાસે જેમ મેઘકુમારે પ્રવ્રજ્યા લીધી હતી તેમજ શુક અનગારની પાસે શૈલક રાજાએ પ્રવ્રજ્યા સ્વીકારી. રાજાની સાથે તેમના પાંચસો પાંથક પ્રમુખ મંત્રીઓ એ પણ ત્યાં જ દીક્ષા લીધી , દીક્ષા લીધા બાદ શૈલક રાજાએ સામયિક વગેરે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું. (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तएणं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरई) અધ્યયન પછી તેમણે અનેક જાતના ચતુર્થભક્ત વગેરેની તપસ્યા કરી શુક અનગારે શૈલક અનગારને પાંથક પ્રમુખ પાંચસો અન-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु स शुकः शुकनामानगारः अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् 'काले शैलकपुरान्नगरात् सुभूमिभागादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति=प्रतिनिर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य=प्रतिनिर्गत्य बहिः= बाह्ये जनपदविहारं विहरति । ततस्तदनन्तरं खलु स शुकोऽनगारोऽन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले तेन=पूर्वोक्तेन स्वशिष्येण अनगारसहस्रेण सार्धं संपरिवृतःपूर्वानुपूर्व्या तीर्थंकरगणधरपरंपरया चरन् ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीक=पुण्डरीकनाम्नापसिद्धः पर्वतः यावत् तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं पर्वतमारुह्य पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख्य

लिये पांथक प्रमुख आदि ५०० सौ अनगारों को शिष्य रूप से वितरित कर दिया। (तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ,) इस के बाद किसी एक समय वे शुक अनगार शैलक पुर नगर से और उस सुभूमिभाग नाम के उद्यान से निकले और निकल कर उन्हों ने वहां से बाहर जनपदों की ओर विहार कर दिया। (तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपडिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु गामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) ग्रामानुग्राम विहार करते २ वे किसी एक समय उस अपने शिष्य अनगार सहस्र के साथ तीर्थंकर, गणधर परंपरा के अनुसार चारित्र की आराधना करते हुए जहां पुंडरीक नाम का प्रसिद्ध पर्वत था वहां आये वहां आकर उन्हों ने वहां के पृथिवी शीलापट्टक की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर के फिर उन्हों ने उस

ગારોને શિષ્ય રૂપે આપ્યા. (तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) ત્યાર બાદ કોઈ એક વખતે શુક અનગાર શૈલકપુરના સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી બહાર નીકળીને ત્યાંથી બહારના બીજા જનપદોમાં વિહાર કર્યો. (तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपडिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) શુક પરિવ્રાજક એક ગામની બીજે ગામ વિહાર કરતાં કરતાં કોઈ વખતે પોતાના એક હજાર અનગાર શિષ્યોની સાથે તીર્થંકર, ગણધરોની પરંપરાને અનુસરતાં ચારિત્રની આરાધના કરતાં કરતાં જ્યાં પુંડરીક નામે પ્રસિદ્ધ પર્વત હતો ત્યાં ગયા. પહોંચીને તેમણે ત્યાં પૃથિવી શિલાપટ્ટકની પ્રતિલેખના કર્યા પછી તેમણે તેના ઉપર પોતાના એક હજાર શિષ્યોની સાથે પાદપોગમન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहस्रशिष्यैःसह पादपोपगमनसंस्तारकं कृतवान्, ततः खलु स शुको बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा केवलवरज्ञानदर्शने समुत्पाद्य सकलकर्मक्षये सति सिद्धः -मुक्तिं प्राप्त इत्यर्थ ॥ २८ ॥

मूलम्-तएणं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहिं य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहिय उण्हेहि य कालातिक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य णिच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया, उज्जला जाव दुरहिया सा कंडुयदाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहरइ, तएणं से सेलए तेणं रोयायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था, तएणं से सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ, परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ सेलयं अणगारं जाव वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पज्जुवासइ, तएणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-अहं णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टावेमि, तुब्भे णं भंते मम जाणसालासु समोसरह फासुअं

पर अपने सहस्र शिष्यों के साथ २ पादपोपगमन संथारा किया। इस तरह उन शुक अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का परिपालन कर के अन्त समय में केवलज्ञान केवल दर्शन प्राप्तकर सकल कर्मों के क्षय होने पर मुक्ति को प्राप्तकर लिया। ॥ सू० २८ ॥

સંથારો કર્યો. આ રીતે તે શુક પરિવ્રાજકે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પરિપાલન કરીને છેવટે કેવળજ્ઞાન કેવળ દર્શન મેળવીને બધાં કર્મો જ્યારે નાશ પામ્યાં ત્યારે મુક્તિ મેળવી ॥ સૂત્ર " ૨૮ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरइ, तएणं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—' तएणं तस्स ' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेस्तैः=अनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ' अंतेहि ' अन्तैः=वल्लचणकादिभिः, ' पंतेहि, प्रान्तैः=पर्युषितैः, ' तुच्छेहिय ' तुच्छैः अल्पैश्च ' लूहेहिय ' रूक्षैः अस्नि-

' तएणं तस्स सेलगस्स ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं)इसके बाद (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) उस शैलक राजाऋषि के (सरीरगंसि) शरीर में (तेहिं अंतेहिं य पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहिं अरसेहिं य विरसेहि य सीएहिं य, उण्हेहिं य कालाइक्कंतेहिं य पमाणाइक्कंतेहिं य, णिच्चं पाणभोयणेहिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रूक्ष, अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय में) नित्य पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई। वल्ल चणक आदि का नाम अंत हैं। पर्युषित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है। अल्प आहार का नाम तुच्छ है। स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएणं तस्स सेलगस्स इत्यादि)

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર બાદ (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) શરીરની પ્રકૃતિ સુકુમાર તેમજ આરામ ભોગવવા યોગ્ય (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) રાજ ઋષિ શૈલક (सरीरगंसि) ના શરીરમાં (तेहिं अंतेहिंय पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहिं अरसेहिं य विरसेहिंय सीएहिं य उण्हेहिंय कालाइक्कंतेहिय पमाणाइक्कंतेहिय, णिच्चं पाणभोयणेहिंय) અનગાર ધર્મ મુજબપ્રાપ્ત થયેલા અન્ય, પ્રાંત, તુચ્છ, રૂક્ષ, અરસ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અસમય (કાલાતિક્રાંત) માં હમેશાં પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉબ્ભૂયા) વેદના થવા લાગી. અલ્લ ચણક (ચણા) વગેરે ' અંત ' કહેવાય છે. વાસી આહાર નુંનામ ' પર્યુષિત ' છે. થોડા આહારનું નામ તુચ્છ છે. સ્નિગ્ધતા (ઘી રહિત) વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે. હિંગ વગેરેના વઘાર વગરના આહારને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्धैश्च, 'अरसेहिय' अरसैः हिङ्ग्वादिव्यागार रहितैश्च, 'विरसेहिय' विरसैः पुराणत्वाद् विगतरसैश्च 'सीयेहिय' शीतैः शीतलैश्च 'उण्हेहिय' उष्णैश्च 'कालातिक्कंतेहिय' कालातिक्रान्तैः क्षुधापिपासा कालेष्वप्राप्तैश्च 'पमाणाइक्कंतेहिय' प्रमाणातिक्रान्तैश्च बुभुक्षापिपासाऽननुकूलैश्च=बुभुक्षापिपासा यत्प्रमाणा वर्तते, तामतिक्रान्तैः तन्निवारणाऽसमर्थैः स्वल्पलब्धैरित्यर्थः। नित्यपानभोजनैश्च प्रतिदिवसप्राप्तैरन्नपानैश्च नित्यं प्रतिकूलपानभोजनं कुर्वतइति भावः। प्रकृतिसुकुमारकस्य स्वभावकोमलस्य, सुखोचितस्य=सुखार्हस्य, लेशतोऽपि क्लेशासहस्येत्यर्थः, शरीरे वेदना=व्याधिः प्रादुर्भूता=उत्पन्ना,सा वेदना कीदृशीत्याह-उज्जला=दुःखातिशयेन प्रलयाग्निवज्जाज्वल्यमाना यावत्-अत्र यावत्करणेन-विउला, पगाढा, इत्यनयोः

नाम रूक्ष है। हिंग आदि के बघार से रहित हुए नीरस आहार का नाम अरस है। पुराने नीरस अन्न के बने हुए आहार का नाम विरस आहार है। बनाकर रखे हुए शीतल-ठंडे-आहार का नाम शीत है। गरम २ का नाम उष्ण है। क्षुधा पिपासा के समय में नहीं प्राप्त हुए आहार का नाम कालातिक्रान्त है। अथवा क्षुधा पिपासा के अनुसार नहीं प्राप्त हुआ आहार भी कालातिक्रान्त कहा जाता है। जितनी भूख लगी हो,जितनी प्यास लगी हो उतने आहार पानी का नही मिलना थोड़ा सा मिलना इससे शरीर में अशक्ति आदि उत्पन्न हो जाती है। अनगार अवस्था में साधु को अनुकूल आहार पानी नहीं मिलता है। अतः प्रतिकूल आहार पानी के सेवन से शरीर में विविध प्रकार की बाधाएँ उपस्थित हो जाती है। ऐसा ही राजऋषि शैलक अनगार के लिये हुआ। उनके शरीर

અરસ કહે છે જૂના થઈ ગયેલા અનાજનો આહાર બનાવવામાં આવે તે 'વિરસ' નામે ઓળખાય છે બહુ વખત પહેલાં બનાવીને મૂકી રાખેલા ઠંડા થઇ ગયેલા આહારને 'શીત' કહેવામાં આવે છે. એકદમ ગરમ આહારને ઉષ્ણુક કે છે. ભૂખ અને તરસના વખતે અહાર ન મળે તેને કાલાતિક્રાંત કહેવાય છે. અથવા ભૂખ અને તરસને યોગ્ય આહાર ન મળવો તેને પણ કાલાતિક્રાંત કહેવાય છે. ભૂખ અનેતરસના પ્રમાણમાં આહાર અને પાણી મળે નહિ થોડા પ્રમાણમાં મળે તો એનાથી શરીરમાં શિથિલતા આવી જાય છે. અનગાર અવસ્થામાં સાધુને અનુકૂળ આહાર પણી મળતું નથી એથી પ્રતિકૂળ આહાર પણીના સેવનથી શરીર અનેક રીતે નબળું થઈ જાય છે. રાજઋષિ અનગારની હાલત પણ આવી જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संग्रहः। विपुला-विस्तीर्णा आत्मप्रतिप्रदेशव्यापिनी, प्रगाढा प्रवर्धमाना तीव्रतरा, अतएव-दुरध्यासा=दुःसहा। वेदनायाः परिणामं प्रदर्शयति—' कंडुयदाह ' इत्यादि। ' कंडुयदाह पित्तज्जरपरिगयसरीरे, कण्डूकदाहपित्तज्वरपरिगतशरीरः= कण्डूकेन=कण्डूत्या, दाहेन हृदयकरचरणनयनज्वलनेन पित्तज्वरेण च परिगतं व्याप्तं शरीरं यस्य स तथा, चापि विहरती=आस्ते। ततः खलु स शैलकस्तेन रोगातङ्केन रोगेण सामान्येन व्याधिना, आतङ्केन प्रबलतरेण व्याधिना, च शुष्को जातश्चाप्यासीत्। ततः खलु स शैलकः 'अन्नया कयाइं' अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन्

में जो वेदना उत्पन्न हुई वह (उज्जला जाव दुरहिया) बहुत अधिक दुःखातिशय से वर्धित थी अतः प्रलय कालीन अग्नि की तरह शरीर को जला रही थी। यहां यावत् शब्द से " विउला पगाढा " इन पदो का संग्रह हुआ है। आत्मा के प्रति प्रदेश में व्याप्त होने से वह वेदना विपुल थी तथा तीव्रतर थी बहुत अधिक दिन प्रतिदिन बढने से वह प्रगाढ थी। इसलिये दुरध्यासथी बड़ी तकलीफ के साथ वह सहन करने योग्य थी। इस वेदनाजन्य शरीर में क्या २ परिणाम हुआ इस बात को सूत्रकार (कंडुय दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे) इन पदों द्वारा प्रकट करते हैं वे कहते हैं कि उन राजऋषि शैलक अनगार का शरीर कंडुयन-खुजली- के दाहसे और पित्तज्वर से व्याप्त हो गया। हृदय में, हाथों में, चरणों में और नेत्रों में उनके जलन होने लग गई। पित्तज्वर से पित्त में अधिकाधिक गर्मी आ गई- इस से लिया हुआ आहार उन्हें नहीं पचता और वमन द्वारा वह बाहिर निकल जाता

થઈ ગઇ તેમના શરીરમાં (उज्जला जाव दुरहिया) વેદના ખૂબજ થવા માંડી હતી તેથી પ્રલયના અગ્નિની જેમ તેમના શરીરમાં બળતરા થતી હતી. અહીં ' यावत् ' શબ્દ થી (विउला पगाढा) આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આત્મા ના બધા પ્રદેશોમાં વેદના વ્યાપ્ત થઇ હતી તેથી તે ' तीव्रतर ' હતી. દિવસે દિવસે વેદના વધતી જ જતી હતી તેથી તે ' प्रगाढ ' હતી એટલા માટે જ વેદના दुरध्यास એટલે કે બહુ કષ્ટથી સહ્ય હતી. વેદનાને લીધે રાજ ઋષિના શરીરની હાલત કેવી થઈ તે સૂત્ર કાર અહીં સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે (कंडुय दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे) કે તે રાજઋષિ અનગારનું શરીર કંડૂયન-ખરજવાની પીડાથી અને પિત્તના જવરથી વ્યાપ્ત થઈ ગયું. તેમની છાતીમાં હાથોમાં, પગોમાં અને આંખોમાં બળતરા થવામાંડી પિત્તજવર થી પિત્તમાં ગરમીનું પ્રમાણ વધી જવાથી કરેલા આહારનું પાચન થતું નહિ અને તે ઊલટી થઈ ને બહાર નીકળી જતો હતો. ખાવાપીવા તરફ તેમને સાવ અણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कस्मिंश्चित् काले पूर्वानुपूर्व्या चरन् यावत्–यत्रैव शैलकपुरं नामनगरं यत्रैव सुभूमिभागं नामोद्यानं तत्रैवोपागच्छति उपागत्यच यावद् संयमेन तपसा स्वात्मानं भावयन् विहरति। परिषन्निर्गता मण्डूकोऽपि निर्गतः, यत्र शैलकोऽनगारस्तत्रागत्य शैलकमनगारं यावद् वन्दते नमस्यति, वंदित्वा नत्वा स मण्डूकः पर्युपास्ते=सेवते स्म।

ततः खलु स मण्डूको राजा शैलकस्यानगारस्य शरीरं शुष्कं रूक्षं यावत्–सव्याबाधं=पीडितं सरोगं=रोगाक्रान्तं पश्यति दृष्ट्वा एवमवादीत्–अहं खलु भदन्त!

खाने पीने की रुचि जाती रही। (तएणं से सेलए तेणं रोगायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था तएणं से सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) इससे वे शैलक अनगार उस रोग से–सामान्य ज्वरादि व्याधि से, आतंग से–प्रबलतर मस्तक शूलादि शीघ्रघातक व्याधि से–सूख गये–बिलकुल दुबले पतले शरीर वाले हो गये। किसी एक समय पूर्वानुपूर्वी से विहार करते हुए ये जहां शैलक पुर नगर और उसमें भी जहां सुभूमि भाग नाम का उद्यान था वहां आये। तप और संयम से अपने आत्माको भावित करते हुए ये वहां ठहर गये। (परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ, सेलयं अणगारे जाव वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, पज्जुवासइ) जनता वंदना करने के लिये आई मंडूक भी आया। सबने शैलक राजऋषि को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके मंडूक राजा ने उन की सेवा की। (तएणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगा-

---

ગમો થઈ ગયો હતો. (तएणं से सेलए तेणं रोगायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था तएणं से सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) તેથી શૈલક અનગાર સામાન્ય રોગથી આતંક એટલે કે સખત રોગથી સૂકાઈ ગયા. સાવ દૂબળા થઈ ગયા. કોઈ વખતે પૂર્વાનુ પૂર્વી થી વિહાર કરતાં શૈલક અનગાર શૈલક પુર નગરના સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનમાં આવ્યા, અને તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં તેઓ ત્યાં રોકાયા. (परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ सेलयं अणगारे जाव वंदइ, नमंसइ वंदित्ता, पज्जुवासइ) તેમને વંદન કરવા માટે નાગરીકોની પરિષદ નગરની બહાર નીકળી. ત્યાં પહોંચીને બધા નાગરિકોએ શૈલક રાજઋષિને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને મંડૂક રાજાએ તેમની સેવા કરી. (तएणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युष्माकं यथाप्रवृत्तैः=यथायोग्यैः रोगोपशमनसमर्थैः चिकित्सकैः वैद्यैः यथाप्रवृत्तेन =यथायोग्येन प्रासुकेन औषधभैषज्येन औषधम्=एकद्रव्यनिर्मितं, भैषज्यं=द्रव्य समुदायनिर्मितं तेन, भक्तपानेन निरवद्याभ्यपानेन, चिकित्सामाचरतुमिच्छामि कारयामि । हे भदन्त ! यूयं खलु मम यानशालासु रथादिशालासु समवसरत=आगच्छत तत्र सुखेन तिष्ठता प्रासुकमेषणीयं पीठफलकशय्यासंस्तारकमवगृह्य विहरति । ततः खलु स शैलकोऽनगारो मण्डूकस्य राज्ञ-एतमर्थं तथेति प्रतिशृणोति

रस्स सरीरयं सुक्कं लुक्खं जाव सव्वावाहं सरोगं पासइ) इस के बाद ज्यों ही मंडूक राजा ने शैलक राजऋषि के शरीर को शुष्क रूक्ष यावत् पीडित एवं रोगाक्रान्त देखा तो (पासित्ता एवं वयासी) देख कर उन से इस प्रकार कहा-(अहं णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टावेमि) हे भदंत ! मैं आपकी यथा योग्य-रोगो पशमन करने में समर्थ-वैद्यों द्वारा-उचित प्रासुक (निर्दोष) औषध और भैषज्य से तथा निरवद्य अन्न पान से चिकित्सा करवाना चाहता हूँ-इसलिये (तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्जं पीठफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ता णं विहरइ) आप मेरी रथशाला में पधारें और वहां विराजे सुख शाता से वहां ठहरे, प्रासुक एषणीय, पीठफलक शय्या संस्तारक को मुनि के कल्पानुसार याचित कर लेलें । (तएणं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ) इस प्रकार मंडूक राज के प्रार्थना करने पर उन शैलक अनगार ने उसकी " तहत्ति " ऐस

सव्वावाहं सरोगं पासइ) त्यार आद मंडूक राजाओ राजऋषिना शरीरने शुष्क रूक्ष यावत् पीडित तेमज रोगाक्रांत जोयुं तो (पासित्ता एवं वयासी) जोईने तेमने आ प्रमाणे कहुं-(अहं णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जं णं भत्तपाणे तं तिगिच्छं आउट्टावेमि) हे भदंत ! मारी इच्छा छे के हुं रोगोने भटाडनार योग्य वैद्योनी उचित प्रासुक औषधो अने भैषज्योद्वारा तेमज निरवद्य अन्नपान थी तमारी चिकित्सा (ईलाज) करावडावुं एटला माटे (तुब्भेणं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह फासुअं एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरइ) तमे अमारी रथ शाळामां पधारो अने सुख शांति पूर्वक त्यां रहो. मुनि जनोचित प्रासुक एषणीय, पीठफलक. शय्या संस्तारक त्यांथी मागी लेजो (तएण सेलए अणगारे मंडुयस्सरण्णो एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ) मंडूक राजनी आ प्रमाणे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वीकरूतेस्म । ततस्तदनन्तरं स मण्डूको राजा शैलकं वन्दते नमस्यति, वंदित्वा नत्वा च यस्यादिशः प्रादुर्भूतः आगतः,तामेव दिशं प्रतिगतः स्वप्रासादं संप्राप्तः।२९।

मूलम्–तएणं से सेलए कल्लं जाव जलते सभंडमत्तोवगरणमायाए पन्थयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ अणु पविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासुयं पीढ जाव विहरइ। तएणं से मंडुए विगिच्छए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह, तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठतुट्ठा समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणयं च से उवदिसंति, तएणं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जमाणेण रोगायंके उवसंते होत्था हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तएणं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण खाइमसाइमं, मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झो-

---

कह कर उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। (तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) इसके बाद वे मंडूक राजा शैलक अनगार को वंदना नमस्कार कर जिस दिशा से प्रकट हुए थे–आये थे–उसी दिशा तरफ चले गये। अर्थात् वहां से अपने राज महल में वापिस आ गये ॥सूत्र २९॥

વિનંતિ સાંભળીને શૈલક અનગારે તેમની વિનંતિને "तहत्ति" આમ કહીને સ્વીકારી લીધી. (तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) ત્યાર બાદ મંડૂક રાજા શૈલક અનગારને વંદન અને નમસ્કાર કરીને જ્યાંથી આવ્યા હતા ત્યાં જતા રહ્યા એટલે કે તેઓ પોતાના રાજભવનમાં ગયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वयन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे, २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसीलविहारी पमत्ते संसत्ते उउबद्धपीढफलगसेज्जा-संथरए पमत्ते यावि विहरइ। नो संचाएइ फासुएसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणव-यविहारं अब्भुज्जएणं पयत्तेणं, पग्गहिएणं विहरित्तए॥ सू०३०॥

टीका-'तएणं से' इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु स शैलकः कल्ये=प्रभाते यावत् तेजसा ज्वलति=सूर्ये उदिते सतीत्यर्थः 'सभंडमत्तोवगरणमायाए' स भाण्डामत्रो-पकरणमादाय भाण्डामत्राणि अशनपानादिपात्रादि तैः सहोपकरणं रजोहरणादिकम् आदाय=गृहीत्वा, पान्थकप्रमुखैः पञ्चभिरनगारशतैः सार्धं शैलकपुरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव मण्डूकस्य यानशाला वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्रासुकं पीठफलकशय्या संस्तारकं गृहीत्वा यावद् विहरति। ततस्तदनन्तरं खलु स मण्डूको-

'तएणं से सेलए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सेलए) वे राजऋषिशैलक अनगार (कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाए पंथय पामोक्खेहिं पंच हिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) प्रातः काल जब सूर्य उदित होकर तेज से चमक ने लगा था "सभंडमत्तोवगरणमायाए" भाण्डोपकरणको लेकर पांथक प्रमुख पांचसौ अनगारों के साथ शैलक-पुर नगर में प्रविष्ट हुए। (अणुपविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला-तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट हो कर जहां मंडूक राजा की यान शाला थी वहां पहुँचे-(उवागच्छित्ता-फासुयं पीढ जाव विहरइ) पहुँच कर वहां से मुनि के कल्पानुसार एषणीय पीठ फलक शय्या संस्तारक की याचना

(तएणं सेलए) इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यार બાદ (सेलए) शैलक अनगार (कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाए पंथयपामोक्खेहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) सवारे सूर्य उदय पाम्यो त्यारे (सभंडमत्तोवगरणमायाए) भांडोपकरण લઈને પાંથક પ્રમુખ પાંચસો અનગારોની સાથે શૈલક પુર નગરમાં પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता तेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ) પ્રવેશીને તેઓ જ્યાં મંડૂક રાજાની રથશાળા હતી ત્યાં પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता फासुयं पीढ-जाव विहरइ) ત્યાં પહોંચીને શૈલક અનગારે મુનિ કલ્પાનુસાર એષણીય, પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકની યાચના કરી અને તે બધી વસ્તુઓ તેમજ આજ્ઞા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयति आह्वयति. । शब्दयित्वा=आहूय, एवं =वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यूयं खलु देवानुप्रियाः ! शैलकस्य राजर्षेः ' फासु एसणिज्जेणं ' प्रासुकैषणीयेन यावत् औषधभेषजेन ' तेगिच्छं ' चिकित्सां रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत. । ततस्तदनन्तरं चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन राज्ञैवमुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुकल्प्यैः प्रासुकैषणीयैरित्यर्थः, औषधभेषज्यभक्तपानैश्चिकित्सां=व्याधिप्रतीकारम्. आवर्तयति =करोति ' मज्जपाणयं च, मद्यपानकंच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पानं च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति. ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मंडुए चिगिच्छए सद्दावेइ) इसके बाद मंडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा (तुब्भे णं देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण जाव चिगिच्छं आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि अनगार की प्रासुक एषणीय औषध भेषज से चिकित्सा करो । (तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठ तुट्ठा समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छं आउट्टें ति) इस प्रकार मंडूक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यों ने हर्ष एवं संतोष से युक्त होकर उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औषध भेषजों से तथा भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारंभ कर दिया। (मज्ज पाण च से उवदिंसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया । यहां यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं हैं । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु-

---

મેળવીને તેઓ ત્યાં રોકાયા. (तएणं से मंडुए चिगिच्छए सद्दावेइ) ત્યાર બાદ મંડૂક રાજાએ વૈદ્યોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जे णं जाव तेगिच्छं आउट्टेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શૈલક રાજઋષિ અનગારની પ્રાસુક એષણીય ઔષધ અને ભેષજ થી ચિકિત્સા કરો. (तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठा तुट्ठा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छं आउट्टेंति) આ રીતે મંડૂક રાજાની વાત સાંભળી ને હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયેલા વૈદ્યો શૈલક રાજઋષિની ઉચિત ઔષધ અને ભેષજોથી તેમજ ભક્તપાનોથી ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા લાગ્યા. (मज्जपाणयंच से उवदिंसति) અને નિદ્રાવશ થઈ શકાય તેવા પદાર્થ વિશેષને પીવાની વિધિ તેમને સમજાવી. અહીં (मज्ज) મદ્ય શબ્દ આવ્યો છે તે મદિરા (દારુ) ના અર્થ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इह मद्यशब्दो न मदिरार्थकः किंतु निद्राजनक-पानद्रव्यविशेषार्थकः । साधो श्चिकित्सायां प्रासुकैषणीयौषधानामेव प्रस्तुतत्वादिह मदिरायाः प्रसङ्गाभावात्. साधोर्मद्यपानानधिकारित्वात् आगमेहि साधोर्मद्यपानप्रतिषेधात् मद्यपानस्य चारित्र विध्वंसकत्वाच्च, साधोः सुरापानेन साधुत्वभङ्गापत्तेश्च, यथा दशवैकालिकसूत्रे-

सुरं वा मेरगं वावि अन्नंवा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिवे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो. ॥ अ०५, उ०२,गा०३६ ।
वड्ढई सुंडिया तस्स माया मोसं च भिक्खुणो. ।
आजसोय अनिव्वाणं सययं च असाहुया. ॥ अ५ उ०२, गा०३८।

जनों की चिकित्सा में प्रासुक एषणीय औषधियों का ही विधान है और यही कारण यहां चल रहा है। यहां मदिरा का तो कोई प्रकरण ही नही चल रहा है। दूसरे-साधुओं को मद्यपान का अधिकार ही नहीं है। वे उसके शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार अनधिकारी हैं। आगम में साधुओं को मद्यपान करने का निषेध किया गया है। कारण वह चारित्र का विध्वंसक होता है। जहां चारित्र नहीं वहां साधुता कैसी सुरापान से साधुता का भंग होता है यह बात आगम में स्पष्ट है- जैसे दश वैकालिक सूत्र में "सुरं वा मेरगं वावि अन्नं वा मज्जगं रसं, ससक्खं न पिवे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो" अ०५ उ०२ गा ३६ वड्ढई सुंडिया तस्स माया मोसं च भिक्खुणो अजसोय अनिव्वा

ને બતાવવા માટે નહિ પણ નિદ્રાવશ થવાય તેવા પેટા પદાર્થ વિશેષ ને સૂચવવા માટે પ્રયુક્ત થયેા છે. કેમકે-સાધુઓની ચિકિત્સામાં પ્રાસુક એષણીય ઔષધીઓજ ગ્રાહ્ય સમજાય છે અહી પ્રકરણ પણ ઔષધીઓનું જ ચાલી રહ્યું છે મદિરા વિષે ની તેા અહીં કંઈ વાત જ નથી બીજી વાત અ પણ છે કે સાધુઓને મદ્યપાન નેા અધિકાર પણ નથી, શાસ્ત્રીય વિધિવિધાનની દૃષ્ટિએ તેઓ મદ્યપાનની બાબતમાં અનધિકારી ગણાય છે આ ગમે તે સાધુઓને મદ્યપાન કરવાની મના કહી છે કેમકે મદ્યપાનથી ચારિત્ર નષ્ટ થાય છે. જ્યાં ચારિત્ર નથી ત્યાં સાધુતાની કલ્પના કરવીજ વ્યર્થ છે. દારૂ પીવાથી સાધુતા નાશ પામે છે આ વાત આગમમાં સ્પષ્ટ રીતે સમજાવવામાં આવી છે. દા. ત. " દશ વૈકલ્પિક સૂત્ર " માં સ્પષ્ટ પણે કહેવામાં આવ્યું છે કે-(सुरंवा मेरगंवा वावि अन्नं वा मज्जगंरसं, ससक्खं न पिवेभिक्खू जसं सारक्ख मप्पणो) अ. ५, उ १, गा. ३६. वड्ढई सुंडिया तस्स माया मोसंच

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' भिक्खू ' भिक्षुः ' अप्पणो ' आत्मनः स्वस्य, ' जसं ' यशः संयमं ' सारक्खं ' संरक्षन् ' सुरं ' सुरां मदिरांवा ' मेरगं ' मेरकं सरकानामधेयं मद्यं ' वावि ' वाऽपि ' अन्नं वा ' अन्यद्वा=अन्यमपिमदिवजातं ' मज्जगं ' माद्यकं मदजनकं रसं 'ससक्खं' ससाक्षि 'न पिबे' न पिबेत् साक्षिभिः कैवल्यादिभिः सहेति ससाक्षि, केवल्यादिकं साक्षीकृत्येत्यर्थः । एकान्तेऽपि न पिबेदिति भावः । ३६ ॥

' तस्स ' तस्य सुरापायिनः ' भिक्खुणो ' भिक्षोः साधोः ' सययं ' सततं ' सुण्डिया ' मद्यपानविषयाऽऽसक्तिः, च पुनः ' माया=कपटं ' मोसं ' मृषा असत्यभाषणं, च पुनः ' अजसो ' अयशः अपकीर्तिः असंयमश्च ' अनिव्वाणं ' अनिर्वाणम्–अनुपशान्तिः, च पुनः ' असाहुया ' असाधुता साधु पदानर्हत्वं वर्धते। सर्वानर्थमूलं मद्यपानमिति भावः ॥ ३८ ॥

अनयोर्विस्तृतव्याख्या दशवैकालिकसूत्रस्य मत्कृताऽऽचारमणिमञ्जूषातोऽवगन्तव्या ।

वैद्यकेऽपि–बुद्धिभ्रंशकरत्वान्मद्यं प्रतिषिद्धमितिबोध्यते । ' शालिग्रामनिघंटु '

णं समयं च असाहुया " अ० ५ उ०२ गाथा ३८ इन दो गाथाओ द्वारा यह कहा गया है कि जो साधु अपने संयम रूप यश की रक्षा करना चाहता है वह मदिरा मेरक-सरका तथा और भी जो मादक द्रव्य है उनका सेवन न करे। इस के सेवन करने से सेवन करने वाले में मद्यपान विषयक आसक्ति बढती है, कपट असत्य भाषण असमभाव की वृद्धी होती है और परिणामो में शान्ति नहीं रहती है। असाधुता जगती है–पढती है। मद्यपान समस्त अनर्थों का मूल कारण है। इन दोनों गाथाओं की विस्तृत व्याख्या मैंने दश वैकालि सूत्र के आचार मणि मंजूषा में की है। वहां से जान लेनी चाहिये। वैद्यक ग्रन्थ जो शालिग्राम निघंटु है उस में भी बुद्धि को ध्वंस करने वाली होने के

भिक्खुणो अजसोय अनिव्वा णं समयं च असाहुया) अ. ५ उ. २, गाथा ३८ આ બે ગાથાઓ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે જે સાધુઓ પોતાના સંયમ રૂપ યશને રક્ષવા ચાહે છે, તે મદિરા (દારૂ) મેરક (સરકો) અને બીજા પણ કેટલાક મદક પદાર્થો છે તેમનું સેવન કરે નહિ એમના સેવનથી સેવન કરનારમાં મદ્યપાન વિષેની આસક્તિ વધે છે કપટ અસત્ય વચન અને અસંયમ જેવા ભાવોની પણ વૃદ્ધિ થાય છે, અને છેવટે એનાથી જીવનમાં શાંતિભંગ થાય છે. અસાધુતા (દુષ્ટતા) વધે છે. ખરેખર મદ્યપાન જગતના બધા અનર્થોનું મૂળકારણ છે. ઉક્ત બંને ગાથાઓની સવિસ્તર વ્યાખ્યા ' દશવૈકાલિક સૂત્ર 'ની આચાર મણિ મંજૂષામાં આવી છે જિજ્ઞાસુજનોએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઇએ. 'શાલિગ્રામ નિઘંટુ' નામે વૈદ્યક ગ્રંથમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कथं तर्हि सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसंरक्षकस्य साधोश्चिकित्सायां मद्यपानाधिकारः स्यात्. ।

आचाराङ्ग सूत्रेऽपि (श्रु० २, उ० २) मद्यपानस्य संकल्पेनापि साधुः प्रायश्चित्तभागी भवतीति मतिबोधितम्. उक्तं चान्यत्रापि यथा–

अज्ञानाद् वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुध्यति ।

मतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥ मनु० अ० ११–श्लो० १४६ ।

मदिरामज्ञात्वा यदि पिबेत् तर्हि पुनरुपनयनसंस्कारेणैव शुध्यति, नान्यथेति भावः । यदि मदिरां ज्ञात्वा पिबेत् तर्हि प्राणान्तकरणेनैव शुध्यति नान्यथेति स्थितिर्धर्मस्य मर्यादाऽस्तीत्यर्थः ।

कारण मद्यपान निषिद्ध किया है । अतः विचार ने जैसी बात है कि साधु जो तपसंजम का संरक्षक होता है वह अपनी चिकित्सा कराने में मद्यपान का अधिकारी कैसे हो सकता है । आचाराङ्ग सूत्र में भी (श्रु० २ उ०२) मद्यपान करने को संकल्प भी साधुओं को त्याग देना चाहिये । यदि वह ऐसा करता है तो उसे प्रायश्चित्त का भागी बनना पड़ता है । अन्य सिद्धान्त कारों ने भी " अज्ञानात् वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्धयति, मतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिक मितिस्थितिः । मनुस्मृति० अ० ११ श्लोक १४६, इस श्लोक द्वारा विषय समझाया है कि यदि कोइ अज्ञान भाव से मदिरा को पी लेता है तो वह पुनः उपनयन संस्कार से ही शुद्ध हो सकता है अन्यथा नहीं । यदि वह जानबूझ कर मदिरा का सेवन करता है तो वह अपने प्राण अर्पण कर ही शुद्ध हो

પણ મદિરાને બુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિષેધ સૂચવ્યો છે. એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સંરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામાં પણ મદિરા પાન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવું કરેતો તેમને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે. બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતાં કહેછે (अज्ञानात्, वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्धयति । मतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥ मनुस्मृति अध्याय ११ श्लोक–१४६ ।) આશ્લોક વડે કહેવામાં આવ્યું છે કે જો કોઇ અજાણમાં પણ મદિરાનું સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોઇ) સંસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે. અને જો તે જાણી બૂજીને મદિરાનું સેવન કરે તો પોતાના પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેટીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઇપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે. ધર્મશાસ્ત્રોનું એજ વિધાન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्रत्य पूर्वापरमूलपाठसमालोचनतोऽप्यत्र मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वं न सिध्यति. तथाहि-यथाप्रवृत्तैश्चिकित्सकैर्यथाप्रवृत्तेनौषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सामावर्तयामीति स्वीकृत्य मण्डूकेन शैलकानगार इत्थं प्रार्थितः-यूयं खलु प्रासुकमेषणीयं पीठफलकादिकमवगृह्य विहरतेति, शैलकानगारस्तथेति प्रतिश्रुत्य मण्डूकस्य यानशालायां तथैव विहरतिस्म. ततोमण्डूकेन चिकित्सका आदिष्टाः-प्रासुकैषणीयेन यावत् चिकित्सामावर्तयतेति ततश्चिकित्सका मण्डूकस्याज्ञानुसारेण प्रासुकैषणीयैरेवौषधादिभिश्चिकित्सां कुर्वतः साधोरकल्प्यं प्रवचननिषिद्धं मण्डूकेनाप्यनादिष्टं तदाज्ञाविरुद्धं मद्यं पाययितुं कथं प्रवृत्ताः स्युः ! कथमपि न ।

सकता है अन्यथा नहीं। यही धर्म की मर्यादा है। यहां पर के पूर्वापर के मूल पाठ के समालोचन से भी मद्यशब्द में मदिरा अर्थ सिद्ध नहीं होता है। जब मंडूक राजा ने शैलक राजऋषि के समक्ष यह प्रार्थना की-कि मैं 'यथा प्रवृत्तेन औषध भैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सां आवर्तयामि' रोगोपशमन करने में समर्थ वैद्यों के द्वारा यथा योग्य निर्दोष प्रासुक औषध भैषज्य से आपकी चिकित्सा कराऊँगा आप मेरी यान शाला में प्रासुक एषणीय पीठ फलक आदि की याचना करके वहां रहें तब इस मंडूक राजा की प्रार्थना को सुनकर वे शैलक अनगार 'तथेति' कहकर उसे स्वीकार कर के वहां उनकी यानशाला में आये। इनके आते ही मंडूक ने वैद्यों को बुलाकर यह आदेश दिया कि आप लोग प्रासुक एषणीय आदि औषध भेषज से इनकी चिकित्सा करें। तब उन वैद्यों ने मंडूक की आज्ञानुसार प्रासुक एषणीय औषध आदि से उनकी चिकित्सा करने लगे। फिर सोचने की बात है कि जब साधु

છે. અહીં પૂર્વાપરના મૂળપાઠથી પણ મદ્યશબ્દથી મદિરા વિષેનો અર્થ સિદ્ધ થતો નથી. જેમકે મંડૂક રાજાએ શૈલક રાજ ઋષિની સામે વિનંતી કરતાં કહ્યું-(यथाप्रवृत्तकैः चिकित्सकैः यथाप्रवृत्तेन औषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सां आवर्तयामि) રોગોને મટાડનારા સમર્થ વૈદ્યોદ્વારા હું યથોચિત પ્રાસુક ઔષધ ભૈષજ્યથી તમારી ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરાવીશ મારી રથશાળામાં તમે પ્રાસુક એષણીય પીઠ ફલક વગેરેની યાચના કરીને ત્યાં રોકાઓ ત્યારે મંડૂક રાજાની વિનંતીને સ્વીકારતાં ' तथेति' (સારૂં) કહીને તેઓ તેમની રથશાળામાં આવ્યા. શૈલક અનગારની ચિકિત્સા માટે મંડૂકે વૈદ્યોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને એમ આજ્ઞા કરી કે તમે પ્રાસુક એષણીય વગેરે ભેષજથી એમની ચિકિત્સા શરુ કરો. વૈદ્યોપણ મંડૂક રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણેજ પ્રાસુક એષણીય ઔષધ વગેરેથી તેમની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા લાગ્યા. એની સાથે સાથે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्रिममूलपाठावलोकनेन च मूलगुणनाशकं निषिद्धमद्यमिह नैव विज्ञायते, तथाहि- चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपाने च मूर्च्छितस्यापि शैलकस्य प्रमाददोषवशात् केवलं जनपदविहारानर्हता जाता, न तु मूलगुणनाशस्तस्याभूदिति विज्ञाय पान्थकप्रमुखेषु पञ्चशतानगारेषु प्रधानतया मुख्यं पान्थकमनगारं तस्य वैयावृत्त्यकरणार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जितास्ते सर्वेऽनगाराबहिर्जनपदविहारं विहरन्तिस्मेति वक्ष्यते। यदि शैलकेन निषिद्धमद्यं सेवितं स्यात् तर्हि तस्मिन् मूलगुणरहितेऽनगारधर्मात् प्रच्युते च सति पान्थकानगारस्य तद्वैयावृत्त्यकरणं विरुध्यते।

मर्यादा के अनुसार अकल्प्य तथा प्रवचन निषिद्ध वस्तु के देने के लिये मंडूक राजा ने उन से नहीं कहा तो भला वे उसकी आज्ञा के विरुद्ध मद्य उन्हें कैसे पिलाने में समर्थ हो सकते थे। तथा आगे का मूल पाठ देख ने से भी यही बात पुष्ट होती है कि मूल गुणों का विनाशक निषिद्ध मद्य इस मद्य शब्द का वाच्यार्थ नहीं हो सकता है। तथा हि- "चतुर्विध आहार एवं मद्यपान में मूर्च्छित बने हुए भी शैलक को प्रमाद दोष के वश से केवल जन पदों में विहार करने की ओर से ही अशक्ति आ गई है, उनके मूलगुणों का नाश नही हुआ है ऐसा समझ कर पांथक को छोड़ और समस्त मुनिजन वहां से बाहिरजन पदों में बिहार कर गये और पांथक को वे उनकी वयावृत्ति करने के लिये छोड़ गये। ऐसा सूत्रकार आगे कहेंगे। यदि शैलक ने निषिद्ध मद्यका सेवन किया होता तो वे मूलगुणो से भी रहित हो जाते और इस तरह अनगार धर्म से रहित होने पर पांथक अनगार को उनकी

બીજી વાત એ પણ છે કે જ્યારે સાધુમર્યાદા મુજબ અકલ્પ્ય તેમજ પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ ને આપવા માટે મંડૂક રાજાએ વૈદ્યોને આદેશ આપ્યો નહિ તો વૈદ્યોની શી તાકાત કે તેઓ તેમની આજ્ઞાને ઓળંગીને શૈલક અનગારને મદ્ય પીવડાવે ? તેમજ આગળના "મૂળ પાઠને" જોવાથી પણ આવાત સિદ્ધ થાય છે કે ગુણોને નષ્ટ કરનાર મદ્ય અહીં મદ્ય-શબ્દનો વાચ્યાર્થ થઈ શકે જ નહિં. જેમકે- ચાર જાતના આહાર અને મદ્ય પાનમાં મૂર્ચ્છાવશ થયેલા શૈલકને પ્રમાદ દોષથી ફક્ત જનપદો વિહાર કરવા માટેની અશક્તિ જ આવી ગઇ છે. તેમના મૂળગુણોનો નાશ થયો નથી આવું સમજીને જ પાંથકને ત્યાં મૂકીને બધા મુનિઓ ત્યાંથી બીજા બહારના જનપદોમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડયા પાંથકને શૈલકની વૈયાવૃત્તિ માટેજ મુનિઓ મૂકીને ગયા હતા. આ સૂત્રકાર આ પ્રમાણે આગળ વર્ણન કરવાના જ છે. હવે જો શૈલકે આગમનિષિદ્ધ મદ્યિનું સેવન કર્યું હોતતો તેઓ મૂળ ગુણોથી પણ હીન થઈ જાત અને આ પ્રમાણે અનગાર ધર્મ રહિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरङ्गकाले सुखमसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिकं प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं शिरसा तच्चरणसंस्पर्शे कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः। ततोऽसौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयतिस्म-क्षमध्वं मेऽपराधं, नैवं पुनः करिष्ये इति। मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थकत्वेतु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षिविशेषणं नोपपद्यते,पान्थकानगारकृतं तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-

---

वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पड़ता है। किं च मद्य के पान करने से पूर्वापराह्णकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजऋषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थ मस्तक से चरणों का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भंग होने से उन्हें क्रोध आ गया। पांथक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणों को छूकर प्रार्थना की महाराज! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अब नहीं करूंगा। यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजऋषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजऋषि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नहीं बनता है और न पांथक अनगार कृत उन के प्रति वंदना आदि कृत्य युक्ति संगत बैठते हैं।-यदि यहां मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

હોવા બદલ પાંથક અનગારની તેમની માટેની વૈયાવૃત્તિ પણ ઉચિત ગણાત જ નહિ અને બીજું કે જ્યારે મદ્યપાન કરીને પૂર્વાપરાહ્ન કાળમાં શૈલક રાજ ઋષિ સુખેથી સૂતા હતા ત્યારે ચાતુર્માસિ પ્રતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી જ્યારે ક્ષમાપના તાટે પાંથકે તેમનાં ચરણોમાં પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો ત્યારે તેઓ જાગ્રત થઈ ગયા. અને ઓચિંતા નિદ્રાભંગ થતાં તેઓ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા. પાંથકે તેમને ગુસ્સે થયેલા જોઈને ફરી તેમના ચરણોમાં મસ્તક નમાવીને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે ભગવાન! મારો ગુનો માફ કરો ફરીથી આવું નહિ થાય. જો મદ્ય શબ્દ મદિરાના અર્થને સૂચવનારો હોયતો મૂળસૂત્રમાં શૈલકના માટે રાજઋષિ શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે,તેમને રાજઋષિના વિશેષણથી સંબોધવામાં આવ્યા છે તે કેવી રીતે બને? પાંથક અનગારે તેમના પ્રત્યે ક્ષમાપના રૂપ વંદન વિનય વગેરે બતાવ્યો તે પણ ઉચિત કેવી રીતે કહી શકાય? બીજું કે જો મદ્ય શબ્દને મદિરાના અર્થમાં સ્વીકારીએ તો શૈલક અનગાર પશ્ચાત્તાપના ઉદયથી વિશુદ્ધ ચારિત્રના આરાધન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारित्राराधनार्थं कृत प्रतिज्ञस्य कृतनिश्चयस्य तदनन्तरद्वितीयेह्नि प्रभातकाले आनुपूर्व्या ग्रामानुग्रामविहारार्थं प्रवृत्तिरपि पुनः प्रायश्चित्तग्रहणमन्तरेण नोपपद्यते। तस्मादत्र मद्यशब्दो नास्ति मदिरार्थकः। किं तु-'मज्जपाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते' इत्यग्रिममूलपाठप्रामाण्यात् निद्राजनकपानद्रव्यविशेषार्थक एवेति निश्चीयते।

तत्त्वतः पूर्वापरमूलपाठपर्यालोचनेन 'मज्जपाणयं च से उपदिसंति' 'जाव-मज्जपाणेण' मज्जपाणए य मुच्छिए' 'सुबहुं मज्जपाणयं पीए' इति पाठाः प्रक्षिप्ता एवेति सुधियो विमर्शयन्तु।

ततस्तदनन्तरं तस्य शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः प्रासुकैषणीयैर्यावत्-औषधभैषज्यैर्पथ्याहारैश्च रोगातङ्काः उपशान्ता अभूवन, हृष्टः=प्रसन्नचित्तः, मलशरीरः=मलवत्

उदय होने पर विशुद्ध चारित्र आराधन के लिये कृत निश्चय देखा-जाता है और उसके बाद जो द्वितीय दिन प्रातःकाल में आनुपूर्व्या ग्रामानुग्राम विहार की उनमें प्रवृत्ति पाई जाती है वह भी नहीं घटित हो सकती है। कारण प्रायश्चित्त ग्रहण के विना ऐसी प्रवृत्ति होती नहीं है। इसलिये यहां मद्य शब्द मदिरार्थक नहीं हैं किन्तु यह "मज्ज पाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते" इस अग्रिम मूल पाठ की प्रमाणता से निद्राजनक पान द्रव्य विशेष अर्थवाला ही है ऐसा निश्चित होता है। तत्वतः विचार किया जावे तो पूर्वापर मूल पाठों की पर्यालोचना से "मज्जपाणयं च से उपदिसंति. जाव मज्जपाणेण मज्जपाणए य मुच्छिए, मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहु मज्जपाणयं पीए" ये सब पाठ प्रक्षिप्त ही ज्ञात होते हैं ऐसा बुद्धिमान् जन विचार करें। (तएणंतस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जणपाणेणं रोयायंके उवसंते

માટે કૃત પ્રતિજ્ઞ દેખાય છે અને ત્યાર બાદ તેઓ બીજા દિવસે સવારે જ પૂર્વપરંપરા અનુસાર એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવાની ઇચ્છા કરે છે જો આવું હોતતો તેમનામાં આવી ઇચ્છા પણ પ્રકટ કેવી રીતે થાત ? કેમકે પ્રાયશ્ચિત્ત વગર આવું તે કરી શકે જ નહિ. એટલા માટે અહીં મદ્ય શબ્દ મદિરાનો અર્થ સૂચવતો નથી પણ (मज्जपाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते " મદ્ય શબ્દ મૂળપાઠને અનુલક્ષી તે નિદ્રા જનક પાન દ્રવ્ય વિશેષ " અર્થ ને જ સૂચવનારો છે. (मज्जपाणयं च से उपदिसंति जाव मज्जपाणेण मज्जपाणए य मुच्छिए मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहुमज्जपाणयं पीए) પૂર્વાપરની અપેક્ષાએ મૂળપાઠ વિષે આપણે ગંભીર પણે વિચાર કરીએ તો ઉક્ત પાઠ પ્રક્ષિપ્ત જ લાગશે. (तएणं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जणपाणेणं रोया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्टशरीरः जातः, व्यपगतरोगातङ्कः=सर्वव्याधिरहितो जात इत्यर्थः । ततः खलु स शैलकस्तस्मिन् रोगातङ्के उपशान्ते सति तस्मिन् विपुले=अतिशये अशनपानखाद्यस्वाद्ये=चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपानके च निद्राजनकपानद्रव्यविशेषे च मूर्च्छितः आसक्तः ग्रथितः–स्नेहरज्जुभिर्बद्धः गृद्धो=लोलुपः ' अज्झोववन्ने ' अध्युपपन्न,, सरसाहाराद्यधीनजीवनः। ' ओसन्नो ' अवसन्नः=अवसन्न इवावसन्नः श्रान्ततुल्यः, आवश्यक–स्वाध्यायप्रतिलेखनध्यानादिक्रियासु शैथिल्येन श्रान्तइवमोक्षमार्गे शि-

होत्था) इस प्रकार इस शैलक राजऋषि के यथा प्रवृत्त प्रासुक एषणीय यावत्–औषध भैषज्यों से और पथ्याहार से रोगातंक उपशमित हो गये (हट्ठे मल्ल सरीरे जाए ववगयरोयायंके, तएणं सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एवं पासत्थे २ पासत्थ विहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते संसत्ते उउबद्धपीठफलकसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरइ) वह प्रसन्न चित्त हो गया शरीर से भी मल्ल की तरह पुष्ट हो गये। इस प्रकार रोग और आतंकों से सर्वथा रहित हो गये। इस के बाद वह राजऋषि विविध प्रकार के विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार में एवं मद्यपान में आसक्त हो गये। उन में स्नेह रूपी रज्जु से बन्ध गये–गृद्ध–लोलुप–हो गये और सरस आहार के आधीन जीवन वाले बन गये। थके हुए व्यक्ति की तरह वह स्वाध्याय,

यंके उवसंते होत्था) આ પ્રમાણે યથા પ્રવૃત્ત પ્રાસુક એષણીય યાવત્ ઔષધ ભૈષજ્યોથી અને યોગ્ય પથ્ય આહારથી શૈલક રાજઋષિના રોગો મટી ગયા. (हट्ठे मल्लसरीरे जाए ववगयरोयायंके, तएणं सेलए तंसिरोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण०पाण खाइम साइमे मज्जपाणेणय मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एवं पासत्थे २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते संसत्ते उउबद्धपीठफलगसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरइ) તેઓ શરીરથી પુષ્ટ તેમજ પ્રસન્ન ચિત્ત થઇ ગયા. આ રીતે રોગ અને આતંકો થી તેઓએ એકદમ મુક્તિ મેળવી લીધી. ત્યારબાદ તેઓ જાત જાતના પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવવામાં આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારના આહારમાં તથા મદ્યપાનમાં આસક્ત થઈ ગયા. તેઓ સ્નેહરૂપી દોરીથી બંધાઇ ગયા. ગૃદ્ધ–એટલે કે લોલુપ થઈને સરસ આહારોના સેવનમાં તેઓ ટેવાઈ ગયા. શ્રાન્ત વ્યક્તિની પેઠે સ્વાધ્યાય પ્રતિ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिल इत्यर्थः । ' ओसन्नविहारी '=अवसन्नविहारी शिथिलाऽऽचारी आलस्यवशेन मन्दीभूतचरणकरण इत्यर्थः । एवं=अनेन प्रकारेण ' पासत्थे ' पार्श्वस्थः–साधुगुणानां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः ज्ञानादीनां न सम्यगाराधकः । पार्श्वस्थविहारी= पार्श्वस्थानां यो विहारस्तथावर्तनं पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः=उत्तरगुणविराधनया संज्वलनकषायोदयेन च कुत्सिताऽऽचारः । कुशीलविहारी=कुत्सिताचारशीलः । ' पमत्ते ' प्रमत्तः=प्रमाद्यतिस्म–मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावात् संज्वलनकषायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादयोगेन संयमाराधनेषु सीदतिस्मेति प्रमत्तः । कर्तरिक्तः । ' संसत्ते ' संसक्तः गौरवत्रयाश्रयेण संकीर्णाचारः, ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासंस्तारके प्रमत्तश्चापि विहरति, शेषकालेऽपि कारणमन्तरेण

प्रति लेखन, ध्यान आदि मोक्ष मार्ग में भी शिथिल हो गये । अवसन्न विहारी हो गये–शिथिलाचारवाले बन गये-आलस्य के वश से चरण सत्तरी और करण सत्तरी के आराधना ढीले पड गये इस प्रकार वह पार्श्वस्थ हो गये–साधु गुणों के पास में रहने वाला बने रहे–ज्ञानादिकों का सम्यक् आरधन कर्ता वह नही रहे । पार्श्वस्थों के विहार जैसा इनका वर्ताव हो गया । उत्तर गुणों की विराधना से और संज्वलन कषाय के उदय से वह कुत्सित आचार वाले हो गये । कुशील विहारी हो गये । मोहनीय आदि कर्मों के उदय के प्रभाव से यह संज्वलन कषाय निद्रा विकथा रूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के योग से संयम की आराधना करने में शिथिल परिणामी हो गये । गौरवत्रय के आश्रय से उनका आचार शिथिल हो गया । हर एक समय कारण के विना भी पीठ फलकादि का सेवन करने वाले बन गये सदा इन

લેખન ધ્યાન વગેરે ક્રિયાઓમાં તેમજ મોક્ષમાર્ગમાં તેઓ શિથિલ થઈ ગયા અવસન્ન વિહારી થઈ ગયા,–શિથિલ આચરણ વાળા થઈ, આળસને લીધેચરણ સત્તરી અને કરણસત્તરી રહિત થઈ ગયા આમ તેઓ પાર્શ્વસ્થ થઈ ગયા સદ્ગુણોમાં રચ્યાપચ્યા બનીને રહેનારા બની ગયા. જ્ઞાન વગેરેની સમ્યક્ આરાધના તેમનાથી હવે નહોતી થતી પાર્શ્વસ્થોના વિહારની જેમ તેમનું આચરણ થઈ ગયું. ઉત્તર ગુણોની વિરાધનાથી અને સંજ્વલન કષાયના ઉદયથી તેઓ કુત્સિત આચાર વાળા થઈ ગયા. કુશીલ વિહારી થઈ ગયા. મોહનીય વગેરે કર્મોના ઉદયને લીધે તેઓ સંજ્વલન કષાય નિદ્રા વિકથા રૂપ પ્રમાદોમાં થી કોઈ પણ એક પ્રમાદના યોગથી સંયમને આરાધનામાં શિથિલ થઈ ગયા. ગૌરવત્રયના આશ્રયથી તેમનો આચાર શિથિલ બની ગયા. કારણ વગર પણ તેઓ ગમે ત્યારે પીઠ ફલક વગેરે નું સેવન કરવા લાગ્યા. તેઓ હંમેશાં તેના ઉપર પડયા જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीठफलकादिसेवी संजात इत्यर्थः । ' नो संचाएइ ' नो शक्नोति, अस्य विहर्तुमित्यत्रान्वयः, फासुएसणीयं पीठं=पीठादिकं प्रत्यर्प्य मण्डूकं च राजनमापृच्छ्य बहिर्जनपदविहारं ' अब्भुज्जएण ' अभ्युद्यतेन-उत्तमयुक्तेन, ' पयत्तेण ' प्रदत्तेन भगवदनुज्ञातेन प्रमादरहितेन, ' पग्गहिएण ' प्रगृहीतेन तीर्थंकरैरपि स्वीकृतेन; विहर्तुं=कर्तुम् । संज्वलनकषायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादवंशगतः शैलको बहिर्जनपदविहारं कर्तुमसमर्थो जात इत्यर्थः ॥ ३० ॥

मूलम्—तएणं तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवं अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पठव-

पर पड़ा रहने लगे (नो संचाएइ फासुएसणिज्जं पीढे पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं अपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं-अब्भुज्जएण पयत्तेण पग्गहिएण विहरित्तए) प्रासुक एषणीय पीठ आदि को प्रत्यर्पित कर (देकर) तथा मंडूकराज से पूछकर यह बाहर जनपदों में विहार करने के लिये समर्थ नहीं हुए । जो विहार उत्तम योग रूप उद्यम से युक्त होकर किया जाता है अर्थात् जिसमें प्रमत्त दशा नहीं रहती है-जिसके करने की भगवान् की आज्ञा है । तथा तीर्थंकरों ने भी जिसे किया है । तात्पर्य इसका यह है कि संज्वलन कषाय, निद्रा तथा विकथारूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के वशंगत होकर वहां से विहार करने के लिये असमर्थ बन गये । सूत्र ॥ ३० ॥

રહેતા હતા. (नो संचाएइ फासुएसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं अपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं अब्भुज्जएण पयत्तेण पग्गहिएण विहरित्तए) પ્રાસુક એષણીય પીઠ ફલક વગેરે પાછાં આપી તેમજ મંડૂક રાજાને પૂછીને બહારનાં બીજાં જનપદો માં વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ સમર્થ થઈ શકયા નહિ. જે વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ વડે કરવા માં આવે છે, એટલે કે જેમાં પ્રમત્ત દશા રહેતી નથી તેમજ જે વિહારને કરવાંની ભગવાને આજ્ઞા આપી છે, અને તીર્થંકરો પણ જેને કરતા આવ્યા છે. તેમાં તેઓ અસમર્થ થઈ ગયા. તાત્પર્ય એ છે કે આ સંજ્વલન કષાય, નિદ્રા તેમજ વિકથા રૂપ પ્રમાદો માંથી કોઇ પણ એક પ્રમાદના વશવર્તી થઇને ત્યાંથી બહાર વિહાર કરવા સમર્થ થઈ શકયા નહિ. ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इए, विउलेणं असण० ४ मज्जपाणए मुच्छिए नो संचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणाणं निग्गंथाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेण, पग्गहियेण जणवयविहारं विहरित्तए, एवं संपेहेंति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावंति ठावित्ता बहिया जाव विहरंति ॥ सू०३१ ॥

टीका—'तएणं तेसिं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तेषां पान्थकवर्जानां पञ्चानामनगारशतानां=पञ्चशतानगाराणाम्, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले, एकतः सहितानाम्=एकत्रसंमिलितानां यावत् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये= धर्मजागरिकां=धर्मध्यानप्रबोधिनीं कथां जाग्रतां=कुर्वताम्

'तएणं तेसिं पंथयवज्जाणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उन पांचसो, पांथक अनगार वर्ज मुनियों को किसी एक समय मध्य रात्रि में जब कि वे धर्मध्यान प्रबोधिनी कथा को एकत्र संमिलित होकर

(तएणं तेसिं पंथयवज्जाणं) इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यार माद (तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) पांथसो पांथक अनगार वर्ज मुनिओने कोइ એક વખતે મધ્યરાત્રિમાં જ્યારે તેઓ બધા એકઠા થઇને ધર્મધ્યાન પ્રબોધિની કથા વિષે ચર્ચા કરી રહ્યા હતા ત્યારે તેઓને આ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारकः ' अब्भत्थिए ' अभ्यर्थितः प्रवचनसंमतः यावत्-यावत् करणेन-चिंतिए, पत्थिए, मनोगए इत्येषां सङ्ग्रहः। चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः= विचारः ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत=अभवत्-एवं अमुना प्रकारेण खलु=निश्चये शैलको राजर्षिः ' चइत्ता ' त्यक्त्वा, ' रज्जं ' राज्यं यावत् प्रव्रजितं= दीक्षां गृहीतवान् स चेदानीं ' विउलेणं ' विपुलेन अतिशयेन अशन पानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधाहारे निद्राजनकपानद्रव्यविषे च मूर्च्छितः=आसक्तः नो शक्नोति यावद् कुत्रापि विहर्तुम्। नो खलु कल्पते देवानुप्रियाः ! श्रमणानां यावत् प्रमत्तानां विहर्तुम्, हे देवानुप्रिया ! प्रमादिनो भूत्वा श्रमणानां संयममार्गे विहर्तुं न कल्पते, किंतु अभ्युद्यतेन इत्यर्थः। ' तं सेयं ' तच्छ्रेयः=तत् तस्मात् श्रेयः खलु देवानुप्रियाः अस्माकं कल्ये प्रभाते शैलकं राजर्षिमापृच्छ्य

कर रहे थे। इस तरह का प्रवचन संमत चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ। (एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वइए विउलेणं असण ४ मज्जपाणे मुच्छिए नो संचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गंथाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए) शैलक राजा ने राज्य का परित्याग कर भगवती दीक्षा अंगीकार की हैं-इस तरह वे राजऋषि बने हैं-परन्तु अब वे विपुल अशन पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में तथा निद्रा कारक पान द्रव्य विशेष में आसक्त हो रहें हैं। कहीं पर भी बाहर विहार नहीं करना चाहते हैं। इस तरह हे देवानुप्रियों ! श्रमणो को प्रमत्त बनकर संयम मार्ग में विहार करना रहना-उचित नहीं है। (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता

જાતનો પ્રવચન સંમત, ચિંતત, પ્રાર્થિત, મનોગત સંકલ્પ વિચાર ઉદ્ભવ્યો (एवं खलु सेलए रायरिसि चइत्ता रज्जं जाव पव्वइए विउलेणं ४ मज्जपाणे मुच्छिए नो संचाएइ जाव विहरित्तए नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गंथाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए:) શૈલક રાજાએ રાજ્યવૈભવ ત્યજીને ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી છે એથી તેઓ રાજઋષિ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયા છે. પણ અત્યારે તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય આહાર તેમજ નિદ્રાકારક પાનદ્રવ્ય વિશેષમાં આસક્ત થઈ રહ્યા છે. બીજે કંઈ વિહાર કરવાની પણ તેઓની ઈચ્છા લાગતી નથી. હે દેવાનુપ્રિયો ! આ રીતે શ્રમણોને પ્રમત્ત થઈને સંયમમાર્ગમાં રહીને વિહાર કરવો યોગ્ય લાગતું નથી. (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'पाडिहारियं' प्रातिहारिकं=प्रत्यर्पणीयं, पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्प्य, शैलकस्यानगारस्य पान्थकमनगारं 'वेयावच्चकरं' वैयावृत्यकरं=सेवाकारकं, स्थापयित्वा बहिरभ्युद्यतेन यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन=सोद्यमेन प्रदत्तेन=तीर्थंकरानुज्ञापितेन, प्रगृहीतेन तीर्थंकराङ्गीकृतेन जनपदविहारं इत्यस्य संग्रहः। विहर्तुम्-कर्तुम् शैलकानगारस्य वैयावृत्यार्थं पान्थकमनगारं बहिर्विहर्तुमस्माकं श्रेय इत्यर्थ एवम्=उक्तप्रकारेण 'संपेहेंति' संप्रेक्षन्ते, विचारयन्ति। 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावज्ज्वलति=सूर्ये उदिते सति शैलकमापृच्छ्य प्रातिहारिकं=प्रत्यर्पणीयं पीठफलकशय्यासंस्तारकं 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयन्ति प्रत्यर्प्य पान्थकमनगारं 'वेयावच्चकरं' वैयावृत्यकरं, 'ठावेंति' स्थापयन्ति ''ठाविता' स्थापयित्वा बहिर्यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन जनपदविहारं इत्यस्य संग्रहः, विहरन्ति.। शैलकानगारस्य ये पञ्चशतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखा अन-

---

पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेणं पग्गहिएणं जणवयविहारं विहरित्तए) इसलिए हे देवानुप्रियों! हम लोगों को यही कल्याण कारक है कि प्रातः होते ही हम लोग शैलक राजऋषि से पूछकर और प्रत्यर्पणीय पीठ फलकशय्यासंस्तारक को रखकर वापिस देकर तथा शैलक राजऋषि की वैयावृत्ति करने के लिये पांथक अनगार को रखकर यहां से सोद्यम के साथ प्रदत्त तीर्थंकर की दी हुई आज्ञा के अनुसार प्रगृहीत तीर्थंकर की आज्ञा को अंगीकार कर ऐसा बाहिर देशों में विहार करें। (एवं संपेहेंति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयअणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति

फलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं, वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेणं पग्गहिएणं जणवयविहारं विहरित्तए) એટલે હે દેવાનુપ્રિયો! આપણા માટે કલ્યાણનો માર્ગ એક જ રહ્યો છે કે સવારે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને પીઠફલક, શય્યા સંસ્તા૨ક વગેરે પાછાં આપીને શૈલક રાજઋષિની વૈયાવૃત્તિ કરવા માટે પાંથક અનગારને નીમીને ઉદ્યમપૂર્વક આપણે અહીંથી તીર્થંકરોની આજ્ઞા મુજબ તેમજ તીર્થંકરોની આજ્ઞાનું પાલન કરતાં બહારના બીજા દેશોમાં વિહાર કરવા નીકળી પડીએ. एवं संपेहेंति संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता, पडियारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथयंअणगारं वेयावच्चकरं ठावंति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाराः शिष्यरूपेण सहचरा आसन् तेषु पान्थकं शैलकानगारसेवार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जास्ते सर्वेऽनगाराः पीठफलकादिकं प्रत्यर्प्य बहिर्जनपदविहारं कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

मूलम्-तएणं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारयउच्चार-पासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ, तएणं से सेलए अन्नया कयाइं कत्तिय चाउम्मासियंसि विउलं असण० आहारमाहारिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते, तएणं से पन्थए कत्तियचाउम्मासियंसि, कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउंकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ, तएणं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता एवं वयासी-से केस णं भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेणं ममं सुहप्पसुत्तं पाएसु संघट्टेइ? तएणं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल०क

ठावित्ता बहिया जाव विहरंति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-विचार करके प्रातःकाल जब सूर्य अपनी प्रभा से प्रकाशित होने लगा तब उन्होंने शैलक राजऋषि से पूछकर प्रतिहारिक-प्रत्यर्पणी पीठ फलग शय्या संस्तारक को वापिस दे दिया-वापिस देकर फिर उन्हों ने उन की वैयावृत्ति करने के लिये पांथक अनगार को रख दिया। रखकर फिर वे वहां से बाहर दूसरे देशों में विहार कर गये। सूत्र ॥ ३१ ॥

ठाविता बहिया जाव विहरंति) આ પ્રમાણે તેઓએ વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને જ્યારે સવારે સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને પ્રત્યર્પણીય એટલે કે પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકને પાછા સોંપીને રાજઋષિની વૈયાવૃત્તિ માટે પાંથક અનગારને ત્યાં નિયુક્ત કરીને તેઓ ત્યાંથી બહારના બીજા દેશોમાં વિહાર કરવા નીકળ્યા. ॥ સૂત્ર ૩૧ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं वयासी–अहण्णं भंते ! पंथए कायकउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, तं खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमंतु मेऽवराहं तुम्मण्णं देवाणुप्पिया णाइभुज्जो एवं करणयाए त्तिकट्टु सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेइ ।

तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवंवुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीठफलगसेज्जासंथारगं गिण्हित्ता विहरामि, तं नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए । एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ ॥ सू० ३२॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि–ततस्तदनन्तरं खलु स पान्थकः शैलकस्य ' सेज्जासंथारयउच्चारपासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएणं ' शय्यासंस्तारकोच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणमलौषधभैषज्यभक्तपानेन 'अगिलाए' अग्लानः सन्

'तएणं से पंथए इत्यादि' ॥ सूत्र ॥ ३२ ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से पंथए) वह पांथक (सेलयस्स) शैलक अनगार की (सेज्जासंथारयउच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणमल्ल ओसहभेसज्जभत्तपाणएणं) शय्या संस्तारक के द्वारा उच्चार प्रस्रवण, खेल, जल्ल सिंघाण मल आदि की परिष्ठापना द्वारा औषध भैषज्य द्वारा, भक्त पान लाने के द्वारा (अगिलाए) विना कोई ग्लानभाव के

(तएणं से पंथए) इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) त्यार भाद (से पंथए) पांथक (सेलयस्स) शैलर राजर्षिनी (सेज्जासंथारयउच्चारपासवण–खेल–जल्ल–सिंघाणमल्ल–ओसहभेसज्जभत्तपाणएणं) शय्या संस्तारक द्वारा, तेमज उच्चार प्रस्रवण, खेल, सिंघाण मल वगेरे नी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनयेन वैयावृत्यं सेवां करोति। ततः खलु स शैलकः 'अन्नया कयाइं' अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले 'कत्तियचाउम्मासियंसि' कार्तिकचातुर्मासिके विपुलम्=अधिकम्, 'असण०' अशनपानखाद्यस्वाद्यम् 'आहारमाहारिए' आहारमाहारितः चतुर्विधाहारमतिशयेन कृत्वेत्यर्थः सुबहुं 'मज्जपाणयं' मद्यपानकं=निद्राजनकपानकद्रव्यविशेषं 'पीए' पीतः पीत्वेत्यर्थः। 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये=दिवसस्य चतुर्थे प्रहरे सुखमसुप्तः मनोज्ञमणीतः भोजनातिशयेन निद्राकारकपानकद्रव्यसेवनेन च गाढनिद्रां प्राप्त इत्यर्थः। यत्तु समाधिना सुखेन सुप्त इत्यर्थ इत्युक्तं तन्न युक्तम् प्रमादसद्भावे समाधेरसम्भवात् अमर्यादितनिद्राताः समाधेर्दूरवर्तित्वाच्च। ततस्तदनन्तरं स पान्थकः 'कत्तियचाउम्मासियंसि'

(विणएणं) बडे विनय के साथ (वेयावडियं करेइ) वैयावृत्ति करने लगा। (तएणं से सेलए अन्नया कयाइं) एक दिन की बात है कि वे शैलक अनगार (कत्तिय चाउम्मासियंसि विउलं असण० आहारमाहारिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्ववरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते) चतुर्मासके कार्तिक महिने में बहुत अधिक अशन, पान, खाद्य, और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार कर के और निद्राकारक पानक द्रव्य विशेष को पी करके दिवस के चतुर्थ प्रहर में सुख से सोये हुए थे। यहां पर जो कोइ २ ऐसा पाठ कहते हैं कि वे समाधि पूर्वक सुख से सोये हुए थे वह ठीक नही है। कारण प्रमाद के सद्भाव में समाधि का होना बनता नही है। अमर्यादित निद्रा और समाधि इनका परस्पर विरोध है ऐसी स्थिति में तो समाधि बहुत दूर रहा करती है। (तएणं से

પરિષ્કાપના દ્વારા (अगिलाए) કોઇપણ જાતનો અણગમો કે ઘણા વિનાના બનીને (विणएणं) ખૂબજ નમ્ર થઈને (वेयावडियं करेइ) વૈયાવૃત્તિ કરવા લાગ્યા. (तएणं से सेलए अन्नया कयाइं) એક દિવસ શૈલક રાજઋષિ (कत्तियचाउम्मासियंसि विउलं असण — आहारमाहरिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्ववरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते) ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમાં ખૂબજ પ્રમાણમાં અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહાર કરીને અને નિદ્રા કારક આપાનક દ્રવ્ય વિશેષનું પાન કરીને સાંજના છેલ્લા પહોરના વખતે સુખેથી સુતા હતા. અહીં "ઘણા લોકો સમાધિ પૂર્વક સુખેથી શૈલક રાજઋષિ સૂતા હતા." એ પ્રમાણેનો પાઠ હોવાનું કહે છે તે યોગ્ય ગણાય જ નહિ કેમકે પ્રમાદઅવસ્થામાં સમાધિ થઇ શકતી નથી. અમર્યાદિત નિદ્રા અને સમાધિ આ બંને વચ્ચે વિરોધ છે. આવી સ્થિતિમાં સમાધિ થઇ શકતી જ નથી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्तिकचातुर्मासिके ' कायकाउस्सगे ' कृतकायोत्सर्गः ' देवसियं ' दैवसिकं प्रतिक्रमणं परिक्रान्तः=कृतवान , चातुर्मासिकं ' पडिक्कमिउं कामे ' प्रतिक्रमितुकामः शैलकं राजर्षिं ' खामणट्ठयाए ' क्षमापनार्थाय शीर्षेण मस्तकेन पादयोः संघट्टमसि स्पृशति । ततस्तदनन्तरं खलु स शैलकः शैलकराजर्षिः पान्थकेन=पान्थकानगारेण शीर्षेण पादयोः संघट्टितः संस्पृष्टः सन् ' आसुरुत्ते ' आशुरुप्तः झटितिकोपयुक्तः, यावत् क्रोधानलवेगेन ' मिसिमिसेमाणे ' मिसमिसन् देदीप्यमानः ' उट्ठेइ ' उत्तिष्ठति, ' उट्ठित्ता ' उत्थाय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ' से ' सः ' केस ' एषः एतादृशः कोऽस्ति खलु भोः ! ' एस ' एषः ' अप्पत्थियपत्थिय ' अप्रार्थितप्रार्थकः, यावत् परिवर्जितः श्री ह्री धी रहितः, यः खलु मां

पंथए कत्तिय चाउम्मासियंसि कय काउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कामिउकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ) इसी समय पांथक अनगार ने उसी चतुर्मास के कार्तिक महीने में कायोत्सर्ग करके देवसिक प्रतिक्रमण किया । फिर चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करने की इच्छा से उसने शैलक राजऋषि के अपने कृत दोषो की क्षमा याचना निमित्त मस्तक से दोनों चरणों का स्पर्श किया । (तएणं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसे माणे उट्ठेइ) पांथक अनगार के मस्तक से दोनों चरणों में स्पृष्ट हुए वे शैलक राजर्षि इकदम कोप से लाल हो गये । और मिस मिसाते हुए यावत् क्रोधानल के वेग से देदीप्यमान होते हुए-वे उठकर बैठ गये । (उट्ठित्ता एवं वयासी) बैठकर इस प्रकार कहने लगे- (से केसणं भो एस अप्पत्थिय पत्थिए जाव परिव-

---

(तएणं से पंथए कत्तियचाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कामिउकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ) આ વખતે ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમાં જ પાંથક અનગારે કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રતિક્રમણ કર્યું. ત્યાર પછી ચાતુર્માસિક પ્રતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી તેમણે પોતાના દોષોની ક્ષમાપના માટે શૈલક રાજઋષિના ચરણોમાં પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો. तएणं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिएसु समाणे आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे उट्ठेइ) પાંથક અનગારના મસ્તકના બંને પગોમાં થયેલા સ્પર્શથી શૈલક રાજઋષિ એકદમ લાલ ચોળ થઈ ગયા; અને ક્રોધ ની જ્વાળાઓમાં સળગતા તેઓ ઉઠીને બેઠા થઈ ગયા. (उट्ठित्ता एवं वयासी) બેઠા થઈને તેઓએ આ પ્રમાણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखप्रसुप्तं पादयोः संघट्टयति ? ततः खलु स पान्थकः शैलकेनैवमुक्तः सन् भीतः =भययुक्तः त्रस्तः=उद्विग्नः, त्रसितः कम्पितः करतलपरिगृहीतं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-' अहण्णं ' अहं खलु भदन्त ! पान्थकः कृतकायोत्सर्गः 'देवसियं' दैवसिकं=प्रतिक्रमणं प्रतिक्रान्तः । हे भदन्त ! अहं खलु पान्थकनामको भवदीयशिष्यः कायोत्सर्गं कृत्वा दैनिकं प्रतिक्रमणं कृतवान्, अधुना चातुर्मासिकं क्षमापयन् देवानुप्रियं वन्दमानः शीर्षेण पादयोः संघट्टयामि, हे देवानुप्रियाः तत् तस्माद् क्षमध्वं माम्, क्षमध्वं मे ममापराधं, ' तुम-

ज्जिए) अरे ! यह कौन ऐसा हैं जो श्री ह्री से रहित बुद्धिवाला हुआ यहां बिना बुलाये आ गये है और (णं ममं सुहप्पसुत्तं पाएसु संघट्टेइ) सुख पूर्वक सोए हुए मुझे पैरों में स्पर्श कर रहा है । (तएणं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल० कट्टु एवं वयासी) इस प्रकार शैलक के द्वारा कहे जाने पर वह पांथक अनगार डर गया, उद्विग्न हो गया, रोम २ उसका कप गया । उसी समय उसने दोनों हाथों की अंजलि जोडकर और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार कहा-अहण्णं भंते पंथए कयकाउसग्गे देवसिय पोडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं ! वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि) हे भदंत ! मैं हूँ आपका शिष्य मैं पांथक ने कायोत्सर्ग करके दैवसिक प्रतिक्रमण कर लिया है । अब चातुर्मासिक दोषों की क्षमा कराने निमित्त हे देवानुप्रिय आपकी वंदना करते हुए मैं आपके चरणों का स्पर्श किया है । (तं खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमंतु मेऽवराहं तुमण्णं

કહ્યું-(से केसणं भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए) અરે ! આ કોણ છે ? જે શ્રી હ્રી થી રહીત મૂર્ખ બોલાવ્યા વગર જ અહીં આવતો રહ્યો છે. (णं ममं सुहप्पसुत्तं पाएसु संघट्टेइ) કે જે સુખેથી વિશ્રામ કરનારા મને પગોમાં સ્પર્શ કરી રહ્યો છે. (तएणं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल० कट्टु एवं वयासी) શૈલક રાજઋષિની આ વાત સાંભળીને પાંથક અનગાર ડરી ગયા, ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયા અને તેમના આખુ આખુમાં ભય વ્યાપ્ત થઈ ગયેા. તરત જ તેઓ બંને હાથોની અંજલિ મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-(अहण्णं भंते पंथए कयकाउसग्गे देवसियपडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं ! वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि) હે ભદંત ! આતો હું છું આપનો શિષ્ય પાંથક મેં કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રતિક્રમણ કરી લીધું છે ચાતુર્માસિક દોષોની ક્ષમાપના માટે તમારા ચરણોમાં મેં મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો છે. (तं खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमंतु मेऽवराहं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण्णं ' यूयं खलु । हे देवानुप्रियाः ' णाइ भुज्जो ' न भूयः एवं करणाय प्रवर्तिष्ये इति कृत्वा=इत्युक्त्वा शैलकमनगारमेतदर्थं सम्यग् विनयेन ' भुज्जो भुज्जो ' भूयो भूयः पुनः पुनः ' खामेइ ' क्षमयति शैलकस्य राजर्षे क्रोधोपशमनार्थं पुनः पुनः स्वापराधं क्षमयति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेः पान्थकेनैवमुक्तस्य अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाणरूपः यावत् संकल्पः समुदपद्यत=अभवत्-एवम्=अमुना प्रकारेण खलु निश्चये,अहं सर्वं राज्यं त्यक्त्वा च यावत् दीक्षां गृहीत्वा पुनर्विपुलाशनपानादौ मूच्छितः गृद्धः अध्युपपन्नः अवसन्नः, यावत् अवसन्नविहारी, पार्श्वस्थविहारी कुशीलः कुशीलविहारी प्रमत्तः संसक्तश्चतुर्मासापगमेऽपि ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासंस्तारकं गृहीत्वा विह-

---

देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेइ) इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप मुझे क्षमा कीजिये । अब मैं हे देवानुप्रिय ! पुनः ऐसा नही करूँगा । इस प्रकार कहकर उसने बार २ शैलक अनगार से अपने इस अपराध की बड़े विनय के साथ क्षमा मांगी । (तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार पांथक अनगार के कहने पर उस शैलक राजर्षि के मन में यह इस प्रकार का यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ (एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउ बद्धपीठफलगसेज्जासंथारगं गिण्हित्ता विहरामि तं नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्ना णं पासत्था णं जाव विहरित्तए)मैंने समस्त राज्य का परित्याग कर यावत् जिनदीक्षा धारण की है परन्तु अब मै पुनःविपुल अशन

तुमण्णं देवाणुप्पिया ! णाइं भुज्जो एवं करणयाए त्तिकट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेइ) એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને ક્ષમા કરો. હે દેવાનુપ્રિય ! હવેથી મારાથી આવું કોઈપણ દિવસ થશે નહિ. આ પ્રમાણે પાંથક અનગારે શૈલક રાજઋષિની પોતાના અપરાધ બદલ વારંવાર વિનમ્ર થઈને ક્ષમા યાચના કરી. (तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) આ પ્રમાણે પાંથક અનગારની વાત સાંભળીને શૈલક રાજઋષિના મનમાં આ જાતનો સંકલ્પ-વિચાર સ્ફુર્યો કે (एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढफलगसेज्जा संथारगं गिण्हित्ता विहरामि तं नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं जाव विहरित्तए) સકળ રાજવૈભવનો ત્યાગ કરીને મેં જિનદીક્ષા મેળવી છે, પણ અત્યારે ફરી હું પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન વગેરેના સેવનમાં આસ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामि । तत्=तस्मात् नो खलु कल्पते श्रमणानाम् अनगाराणां 'पासत्थाणं' पार्श्वस्थानां यावत् करणेन-'ओसन्नाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं इत्येषां संग्रहः। 'अवसन्ना' पार्श्वस्थाः कुशीलाः प्रमत्ताः संसक्ताश्च भूत्वाऽनगाराणां विहर्तुं न कल्पते इत्यर्थः ।

'तं सेयं' तच्छ्रेयः=तत् तस्मात् श्रेयः खलु मे मम कल्ये प्रभातकाले मण्डूकं राजानमापृच्छ्य प्रतिहारिकं=प्रत्यर्पणीयं, पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्प्य पान्थकेनानगारेण सार्धं बहिः 'अब्भुज्जएण' अभ्युद्यतेन=उत्तमसहितेन, यावत्-इह यावत् करणात्-'पव्वत्तेण, पग्गहियेण' इत्यनयोः संग्रहः । 'पव्वत्तेण' प्रदत्तेन, तीर्थकरानुज्ञापितेन गुरूपदिष्टेन इत्यर्थः, 'पग्गहियेण' प्रगृहीतेन, तीर्थकराङ्गीकृतेन, गुरुसकाशान्मयाङ्गीकृतेनेत्यर्थः जनपदविहारेण विहर्तुम् । नव-

---

पान आदि में मूर्च्छित बन रहा हूँ । उन में स्नेहरूपी रज्जु से बँध गया हूँ । लोलुप हो गया हूँ । सरस आहार आदि के अधीन मेरा जीवन हो गया है । स्वाध्याय प्रतिलेखन आदि आवश्यक क्रियाओं से मैं शिथिल हो रहा हूँ । मेरी चरण सत्तरी और करण सत्तरी दोनों ही आलस्य के वश से मंदीभूत हो रही हैं । इसलिये मैं पार्श्वस्थ हो रहा हूँ । पार्श्वस्थों के जैसा मेरा विहार वर्ताव हो गया है । कुशील-कुत्सित आचार वाला बन गया हूँ । कुशील विहारी हो रहा हूँ । प्रमत्त दशाधीन होकर गौरवत्रय से संकीर्ण आचारवाला बना हुआ हूँ । ऋतुबद्ध पीठ फलक शय्या संस्तारक का सेवी हो रहा हूँ । अतः अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील प्रमत्त एवं संसक्त होकर अनगार रूप से रहना यह श्रेयस्कर नहीं है । (तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठ

ક્ત થઈ રહ્યો છું. સ્નેહરૂપી દોરીમાં હું બંધાઈ ગયો છું. હું લોલુપ થઈ ગયો છું. મારું જીવન સરસ આહારને આધિન થઈ ગયું છે. સ્વાધ્યાય પ્રતિલેખન વગેરે આવશ્યક ક્રિઓમાં હું શિથિલ થઈ ગયો છું. મારી ચરણ સત્તરી અને કરણ સત્તરી બંને આળસને લીધે મંદ થઈ રહી છે. એથી હું પાર્શ્વસ્થ થઈ રહ્યો છું. મારો વિહાર અને આચરણ પણ પાર્શ્વસ્થોની જેમ જ થવા માંડયો છે. કુશીલ-એટલે કે હું કુત્સિત આચરણ વાળો થઈ ગયો છું. કુશીલ-વિહારી થઈ રહ્યો છું. પ્રમત્તના જેવી દશાવાળો હું, ગૌરવત્રયથી સંકીર્ણ આચાર વાળો થઈ રહ્યો છું. હું ઋતુબદ્ધ પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારક ને સેવનારો થઈ ગયો છું. એથી અવસન્ન, પાર્શ્વસ્થ કુશીલ પ્રમત્ત અને સંસક્ત થઈને અનગાર રૂપે રહેવું નિઃશ્રેયસ્કર નથી. (तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलग सेज्जा संथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्पिविहारेण देशमध्ये विहारं कर्तुं श्रेय इत्यर्थः । एवम्=उक्तप्रकारेण, ' संप्रेक्षते स्व मनसि विचारयतिस्मेत्यर्थः । ' संपेहित्ता ' संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावद्विहरति । अत्र यावच्छब्देन-' जलंतेमंडुयं रायं आपुच्छित्ता, पाडिहारियं, पीढफलग सेज्जासंथारयं पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अनगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं ' इतिपाठस्य संग्रहः ॥ ३२ ॥

फलग सेज्जा संथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ) मेरा हिततो अब इसी में हैं कि प्रातःकाल मंडुक-राजा से पूछकर प्रतिहारिका-जो ये पीठ फलग शय्या संस्तारक है उन्हे पीछे देकर पांथक अनगार के साथ उत्तम योगरूप उद्यम से युक्त-अप्रमत्तदशा विशिष्ट-तीर्थंकरादि द्वारा आचरित और गुरू जन द्वारा उपदिष्ट-ऐसा विहार यहां से करदूँ । अर्थात् नव कल्पित विहार से अन्य देशों में विहार करना ही मुझे अब हितकारक है । इस प्रकार का विचार शैलक अनगार ने किया । बाद में वे इसी विचार के अनुसार वहां से विहार कर गये । यहां यावत् शब्द से " जलंते-मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलग सेज्जासंथारयं पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवय-विहारेणं " इस पाठ का संग्रह हुआ है । इसका अर्थ ऊपर लिखा जा चुका है । सूत्र ॥ ३२ ॥

अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजए णं जाव जणवय विहारेणं विहरित्तए एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ) હવે મારા પોતાને માટે તો એજ શ્રેયસ્કાર ગણાય કે સવારે મંડુકરાજાને જણાવી પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકો સોંપીને પાંથક અનગારની સાથે ઉત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમથી યુક્ત-અપ્રમત્તદશાવિશિષ્ટ -અને તીર્થંકર વગેરે દ્વારા આચરિત અને ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ વિહાર કરૂં એટલે કે નવ કલ્પિત વિહારથી બીજાદેશોમાં વિહાર કરવો જ હવે અત્યારના સંજોગોમાં મારે માટે હિતાવહ છે આરીતે શૈલક અનગારે વિચાર કર્યો. ત્યાર પછી એ વિચાર પ્રમાણે જ ત્યાંથી તેઓએ બીજે વિહાર કર્યો અહીં 'યાવત્' શબ્દથી " जलंते मंडुयं रायं आपुच्छिता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जा संथारयं पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આના અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર "૩૨" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो ॥ सू० ३३ ॥

टीका–'एवामेव' इत्यादि–एवमेव अनेन प्रकारेणैव यथा शैलको राजर्षिः प्रमादी जातस्तथैव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रंथो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके समीपे प्रव्रजितः गृहीतप्रव्रज्यः सन् अवसन्नः यावत्–संस्तारके–अत्र यावच्छब्देन–अवसन्ननिहारी, पार्श्वस्थः पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः कुशीलविहारी प्रमत्तः संसक्तः ऋतुबद्धपीठफलकशय्या' इत्यन्तः पाठः संगृह्यते। एवं चावसन्नत्वादि विशिष्टः सन् ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासंस्तारके प्रमत्तः=प्रमादीभूत्वा विहरति अवतिष्ठते, स खलु इह लोके चैव बहूनां श्रमणानां४ श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां

' एवामेव समणाउसो ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एवामेव) जिस तरह शैलक राजऋषि प्रमादी हुवे उसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणों ! (जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियं उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो) जो कोई हमारा निर्ग्रन्थ वा निर्ग्रन्थी जन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ अवसन्न बन जाता है यावत् ऋतु बद्ध पीठ फलकशय्या संस्तारक में प्रमत्त होकर बैठा रहता है वह इस लोक में अनेक श्रमण,श्रमणी श्रावक,श्राविकाओं द्वारा हीलनीय होता

(एवामेव समणाउसो) ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–(एवामेव) જેમ શૈલકરાજ ઋષિ પ્રમાદવશ થયા તેમ (समणाउसो) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! (जो अम्हं निगंथोवा निग्गंथीवा आयरियं उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव बहूणं समाणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो) જે કોઈ અમારા નિર્ગ્રંથકે નિર્ગ્રંથી જન આચાર્ય ઉપાધ્યયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને અવસન્ન થઈ જાય છે. યાવત્ ઋતુ બદ્ધ પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકમાં પ્રમત્ત થઈને બેસી રહે છે. તે આ લોકમાં ઘણાં શ્રમણો શ્રમણીઓ અને શ્રાવક શ્રાવિકાઓ દ્વારા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीलनीयः निन्दनीयः खिंसनीयः गर्हणीयः परिभवनीयः, भवति. । परलोकेऽपिच खलु आगच्छति, प्राप्नोति बहूनि दण्डानानि 'संसारो भाणियव्वो' संसारो भणितव्यः । संसारे स परिभ्राम्यति. अत्र संसारपरिभ्रमणपाठो वाच्यः-यथा- ' अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ' अनादिकम् अनवदग्रम् अनन्तं दीर्घाद्धं दीर्घकालं, दीर्घाध्वानं वा दीर्घमार्गं, चातुरन्तं चतुर्विभागं, चतुर्गतिकं, संसारएव कान्तारं दुर्गममार्गः तत्, तथा अनुपर्यटति पुनःपुन भ्रौम्यतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

मूलम्-तएणं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जाव विहरइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेंति, संपेहित्ता सेलयं रायं उपसंपाजित्ताणं विहरंति ॥ सू० ३४ ॥

हैं, निंदनीय होता है, खिंसनीय होता है, गर्हणीय होता है, परिभवनीय होता है ।तथा परलोक में भी अनेक दण्डों को पाता है । संसार में वह परिभ्रमण करता है ।

संसार परिभ्रमण संबन्धी पाठ यहां इस प्रकार से लगा लेना चाहिये। " अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टइ " इसका भाव इस प्रकार है-ऐसा जीव अनादि अनंतरूप संसार कान्तार में कि जो चतुर्गतिरूप विभाग वाला है और जिसका मार्ग या काल बहुत दीर्घ है उसमें पुनः पुनः भ्रमण करता रहता है । सूत्र ॥ ३३ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિંસનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે, પરિભવનીય હોય છે. તેમજ પરલોકમાં પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર થય છે. તે સંસારમાં પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે.

સંસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ જાણવો જોઈએ (अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टइ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે છે કે-ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનંત રૂપ સંસાર કાંતારમાં કે જેનો માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારંવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જરહે છે. ॥સૂત્ર ૩૩॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका-'तएणं' इत्यादि-ततस्तदनन्तरं पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतसंख्यका अनगाराः एकोनपञ्चशतसंख्यका अनगारा इत्यर्थः। 'इमीसे कहाए' अस्याः कथायाः, ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी। इमां कथामाकर्ण्येत्यर्थः। 'लद्धट्ठा' लब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः 'अन्नमन्नं' अन्योन्यं परस्परं 'सद्दावेंति' शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं बहिः यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अब्भुज्जएणं पवत्तेणं पडिग्गहिएणं जणवयविहारं इति पाठस्य संग्रहः अस्य व्याख्या प्रागुक्ता। तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाः अस्माकं शैलकं शैलकराजर्षिम् 'उवसंपज्जित्ता उपसंद्य=

'तएणं ते पंथगवज्जा' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएणं इसके बाद (ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समणा अन्नमन्नं सद्दावेंति) वे पांथक वर्जपांथक वर्ज ५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजऋषि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हों ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जाव विहरइ) शैलक राजऋषि पांथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं।

यहां यावत् शब्द से "अब्भुज्जएणं पवत्तेणं पडिग्गहिएणं जणवय विहारं" इस पाठ का संग्रह किया गया है। इन पदों की व्याख्या

(तएणं ते पंथगवज्जा) इत्यादि!

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર બાદ (ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति) પાંથકને બાદ કરતાં બીજા ચારસો નવાણું રાજઋષિ શૈલકના શિષ્યોઓએ જ્યારે આ કથી વિગત જાણી ત્યારે ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિની અભિલાષા રાખતા તેઓએ એક બીજાને એક સ્થાને એકઠા થવા માટે બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને એક જગ્યાએ એકઠા થઇને તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા, (सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जाव विहरइ) કે શૈલક રાજઋષિ પાંથક અનગારની સાથે બહાર જનપદોમાં વિહાર કરી રહ્યા છે,

અહીં જે (यावत्) શબ્દ છે તેનાથી (अब्भुज्जएणं पवत्तेणं पडिग्गहिएणं जणवयविहारं) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે, આ પદોની

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपगत्य तदाज्ञामङ्गीकृत्य विहर्तुं जनपदविहारं कर्तुमित्यर्थः । एवं अमुना प्रकारेण संप्रेक्षन्ते, परस्परं पर्यालोचयन्ति, संप्रेक्ष्य पर्यालोच्य शैलकं 'रायं' राजानं राजर्षिमित्यर्थः उपसंपद्य=उपेत्य तदाज्ञामादाय विहरन्ति ॥ ३४ ॥

मूलम्-तएणं सेलए पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा । एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि ॥३५॥

॥ पंचमं णायज्झयणं समत्तं ॥

पहिले कर दी गइ है । (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए) इसलिये हे देवानुप्रियो ! अब हम लोगों को यही उचित-कल्याण कारक-मार्ग है कि हम सब उन शैलक राजऋषि की आज्ञा को अंगीकार कर बाहर जनपदों में विहार करें ।

(एवं संपेहेंति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया- (संपेहित्ता सेलयं रायं उपसंपज्जित्ताणं विहरंति) विचार कर वे सब के सब शैलक राजा-राजऋषि के पास पहुँचे और उनकी आज्ञा लेकर विहार करने लगे । सूत्र ॥ ३४ ॥

વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए) એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા માટે એજ હિતાવહ છે કે અમે બધા તે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને બહાર ના જનપદોમાં વિહાર માટે નીકળીએ

(एवं संपेहेंति) આ પ્રમ ણે વિચાર કર્યો (संपेहित्ता सेलयं रायं उपसंपज्जित्ताणं विहरंति) વિચાર કરીને તેઓ બધા શૈલક રાજઋષિની પાસે ગયા. અને તેમની આજ્ઞા મેળવીને વિહાર કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु 'सेलए' शैलकराजर्षिः 'पंथगपामोक्खा' पान्थकप्रमुखाः, 'पंच' पञ्च, 'अणगारसया' अनगारशतानि, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियागं' श्रामण्यपर्यायं 'पाउणित्ता' पालयित्वा यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकपर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथैव स्थापत्यापुत्रः सिद्धस्तथैव सिद्धः। मासिकीं संलेखनां कृत्वा केवलीभूत्वा सिद्धा मुक्ता जाता इत्यर्थः।

एवमेव शैलकराजर्षिवदेव, हे श्रमणा आयुष्मन्तः। योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावद् प्रमादं परित्यज्य अभ्युद्यतेन सोद्यमेन प्रदत्तेन तीर्थंकरानुज्ञा

'तएणं सेलए पंथगपामोक्खा' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सेलए) वे शैलक राजऋषि और (पंथगपामोक्खा पंच सय अणगारसया) पांथक प्रमुख पांचसौ अनगार (बहूणि वासाणि) अनेक वर्षों तक (सामन्नपरियागं पाउणित्ता श्रामण्यपर्याय का पालन करके (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति) जहां पुंडरीक पर्वत था वहां आये। (उवागच्छित्ता जहेव थावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) वहां आकर स्थापत्यापुत्र अनगार की तरह १ मास की संलेखना कर केवली होकर मुक्त हो गये। अर्थात् सिद्ध हो गये।

(एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ) इसी तरह शैलक राजऋषि की तरह-(समणाउसो) हे आयुष्मंत श्रमणो! (जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ) जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण और निर्ग्रन्थ साध्वीजन यावत् प्रमाद

(तएणं सेलए पंथगपामोक्खा) इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર બાદ (सेलए) શૈલક રાજઋષિ અને (पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया) પાંથક પ્રમુખ પાંચસો અનગાર (बहूणि वासाणि) ઘણાં વર્ષો સુધી (सामन्नपरियागं पाउणित्ता) શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति) જ્યા પુંડરીક પર્વત હતો ત્યાં આવ્યા. (उवागच्छित्ता जहेवथावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) ત્યાં આવીને સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારની જેમ એક માસની સંલેખના કરીને કેવળી થઈ મુક્ત થઇ ગયા. એટલે કે તેઓ સિદ્ધ થયા

(एवामेव समणाउसो जो अम्मं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ) આ પ્રમાણે શૈલક રાજઋષિની જેમ (समणाउसो) હે આયુષ્મંત શ્રમણો! (जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ) જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અને નિર્ગ્રંથ સાધ્વી જન પ્રમાદ વગેરેને ત્યજીને સોદ્યમ પ્રદત્ત-તીર્થંકરાનુજ્ઞાપિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पितेन गुरूपदिष्टेन, प्रगृहीतेन तीर्थंकरैरङ्गीकृतेन जनपदविहारेण विहरिष्यति सोऽनगारश्चतुर्विधसंघस्यार्चनीयो वन्दनीयोभूत्वा यावत् संसारस्यान्तं कृत्वा मोक्षगामी भविष्यति ॥

एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् संप्राप्तेन सिद्धिगतिं गतेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=उक्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः । इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्यापूर्ववत् ॥

जो ओसन्नो य पासत्थो कुसीओ वि पमायओ ।
संवेगा उज्जओ होज्जा सिद्धो सो सेलओ जहा ॥ १ ॥

छाया-योऽवसन्नश्च पार्श्वस्थः कुशीलोऽपि प्रमादतः ।
संवेगादुद्यतश्चेत् स्यात् सिद्धोऽसौ शैलको यथा ॥ १ ॥ ३९ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चममध्ययनं संपूर्णम् ॥

का परित्याग कर सोद्यम प्रदत्त-तीर्थंकरानुज्ञापित-गुरूपदिष्ट और प्रगृहीत-तीर्थंकरों द्वारा अंगीकृत किये गये ऐसे जनपद विहार से युक्त होगा वह अनगार चतुर्विध संघका अर्चनीय वंदनीय होकर यावत् संसार का अन्त कर मोक्ष गामी होगा ।

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि) इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धगति को प्राप्त कर चुके हैं इस पांच वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त किया है । ऐसा मैं कहता हूँ " इति ब्रवीमि " इन पदों की व्याख्या पहिले की

ગુરૂપદિષ્ટ અને પ્રગૃહીત તેમજ તીર્થંકરો દ્વારા સ્વીકૃત એવા જનપદ વિહારથી યુક્ત થશે તે અનગાર ચતુર્વિધ સંઘનો અર્ચનીય, વંદનીય થઇને યાવત્ સંસારનો અંત કરીને મોક્ષપદ મેળવશે.

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) આરીતે હે જંબૂ ! સિધ્ધ ગતિ પામેલા ભગવાન મહાવીરે આ જ્ઞાતા અધ્યયનના પાંચમા અધ્યયનનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે. આમ હું તને કહું છું. " इतिब्रविमि " આ પદોની વ્યાખ્યા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गई व्याख्या के अनुसार ही जानना चाहिये। इस संग्रह श्लोक का अर्थ इस प्रकार है-जो प्रमाद से अवसन्न पार्श्वस्थ तथा कुशील हो जाता है वह साधु-अनगार-संवेग भाग से अपने चारित्र में उद्यम शील होकर शैलक राजऋषि की तरह सिद्ध पदका भोक्ता हो जाता है। सूत्र ॥ ३५ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का पांचवा अध्ययन समाप्त॥ ५ ॥

પહેલાં કરવમાં આવી છે આ સંગ્રહ શ્લોકનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કે જે પ્રમાદથી અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ તેમજ કુશીલ થઈ જાય છે, તે સાધુ (અનગાર) સંવેગ ભાવથી પોતાના ચારિત્રમાં ઉદ્યમશીલ થઈને શૈલક રાજ-ઋષિની જેમ સિદ્ધ પદને મેળવનાર થાય છે. ॥ સૂત્ર ' ૩૫ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું પાંચમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૫॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ षष्ठमध्ययनं प्रारभ्यते—

गतं पञ्चमाध्ययनं-संप्रति षष्ठमारभ्यते अस्यायं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः पञ्चमाध्ययने प्रमादवतोऽनर्थप्राप्तिः अप्रमादवतश्चगुणःअत्रापि तावेव दोषगुणौ कथ्येते इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिमसूत्रम्. ।

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई अदूरसामंते जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥सू०१॥

छठा अध्ययन का प्रारंभ-

पांचवाँ अध्ययन सम्पूर्ण हो चुका है । अब छठा अध्ययन प्रारम्भ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है कि पांचवें अध्ययन में जो ऐसा कहा गया है कि प्रमाद युक्त अनगार को अनेक अनर्थों की प्राप्ति होती है तथा जो प्रमाद से रहित होते है उन्हें अनेक गुणों का लाभ होता है सो इस अध्ययन द्वारा उन्हीं दोष और गुणों का कथन किया जावेगा इसी संबंध को लेकर यह अध्ययन प्रारंभ हुआ है । इस का आदि सूत्र यह है-(जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ।

છઠ્ઠા અધ્યયનનો પ્રારંભ-

પાંચમા અધ્યયન પછી આ છઠ્ઠું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. પાંચમા અધ્યયનમાં આ પ્રમાણે નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે કે પ્રમાદિ અનગાર ઘણા અનર્થો મેળવે છે તેમજ જે અ પ્રમાદિ હોય છે તે ઘણા ગુણો પ્રાપ્ત કરે છે. તો હવે આ અધ્યયનમાં તે ગુણો અને દોષોનું કથન વર્ણવવામાં આવશે. પાંચમા અધ્યયનની સાથે આ છઠ્ઠા અધ્યયનનો એ જ સંબંધ છે. આ સંબંધને વિચારવાના ઉપક્રમથી જ આ અધ્યયન શરૂ થયું છે. છઠ્ઠા અધ્યયનનું પહેલું સૂત્ર આ છેઃ-જઇણં ભંતે ! સમણેણં ઇત્યાદિ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीकार्थ–' जइणं भंते इत्यादि, यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत् सम्माप्तेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः षष्ठस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणं, परिषत् निर्गता, तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ३ ज्येष्ठेऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धर्मध्यानोपगतो विहरति ॥सू० १॥

टीकार्थ–(भंते) हे भदंत (जइणं) यदि (जाव संपत्तेणं समणेणं) मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने (पंचमस्स णायज्झयणस्स) पांचवे ज्ञाताध्ययन का (अयमट्ठे पन्नत्ते) यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो (छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है।

(एवं खलु जंबू !) इस प्रकार जंबू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उन से इस तरह कहते है कि हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया) उस काल और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ। भगवान् के आगमन की बात सुनकर राजगृह नगर से परिषद उन को वंदना करने के लिये उनके समिप पहुंची (ते णं कालेणं तेणं समएणं) उकसाल और उस समय में (समणस्स जेट्ठे अंतेवासीइं-

टीकार्थ–(भंते) હે ભદન્ત ! (जइणं) જો (जाव संपत्तेणं समणेणं) મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે (पंचमस्स णायज्झयणस्स) પાંચમા જ્ઞાતાધ્યયનનો (अयमट्ठे पन्नत्ते) આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો (छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?) મુક્તિ મેળવેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા જ્ઞાત ધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે ? (एवं खलु जंबु !) જંબૂ સ્વામીના આ જાતના પ્રશ્નને સાંભળીને જવાબ આપતાં સુધર્મા સ્વામી તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ ! તમારા પ્રશ્ન નો ઉત્તર સાંભળો.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં ભગવાન મહાવીર પધાર્યા. ભગવાન મહાવીર સ્વામીના આગમનની જાણ થતાં તેમને વંદન કરવા માટે રાજગૃહ નગરથી પરિષદ નીકળી. (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (समणस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई अदूरसामंते जाव धम्मज्झाणोवगए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से इंदभूई जायसड्ढे० समणस्स३ एवं वयासी –कहण्णं भंते! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति? गोयमा! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं णिच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ लिंपित्ता उण्हे दलयइ, सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ लिंपित्ता उण्हे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ। एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपइ, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा! से तुंबे तेसि अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए उप्पिं सलिलमाइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा! जीवा वि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणंति, तासिं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए कालमासे कालं किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगतल पइट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ सू० २ ॥

दभूई अदूरसामंते जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) श्रमण भगवान् महावीर के प्रधान अंतेवासी जिनका नाम इन्द्रभूतिथा उचित स्थान परबेठे हुए धर्म ध्यान में तल्लीन थे। सूत्र–१

વિહરઇ) શ્રમણ ભગવાનના પ્રધાન અંતેવાસી ઇન્દ્રભૂતિ ઉચિત સ્થાને બેઠેલા ધર્મ ધ્યાનમાં તલ્લીન હતા. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीकार्थ–ततः खलु स इन्द्रभूतिः जातश्रद्धः०श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण–अवादीत् कथं खलु भदन्त ! जीवाः 'गुरुयत्तं' गुरुकत्वं–अधोगमनस्वभावकत्वं च 'लहुयत्तं' लघुकत्वं–उर्ध्वगमनस्वभावकत्वं 'हव्व-मागच्छइ हव्यमागच्छन्ति = भगवान् महावीरस्वामी दृष्टान्तप्रदर्शन पुरः सरमुत्तरमाह–'गोयमा' इत्यादि। गौतम ! 'से' अथ, 'जहानामए' यथा-नामकः=यत्किंचिन्नामकः, एकं महत् शुष्कं तुम्बं निश्छिद्रं=छिद्रवर्जितं 'निरुवहयं निरुपहतं=वातादिकृतविकाररहितम्. अविशीर्णम् अविदारितमित्यर्थः दर्भैः= डाभनाम्ना प्रसिद्धैस्तृणविशेषैः, कुशैः स्वनामविख्यातैस्तृणविशेषैः, वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन 'लिंपइ' लिम्पति=लिप्तं करोति 'लिंपित्ता' लिप्त्वा 'उण्हे' उष्णे–'सूर्यातपे' ददाति=धारयति, शुष्कं सत् द्वितीयमपि=द्वितीय

'तएणंसे इंदभूई जाय सड्ढे' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इनके बाद (से इंदभूई जाय सड्ढे०) उन इन्द्रभूति ने कि जिन्हें प्रभु के ऊपर–अपूर्व श्रद्धा है (समणस्स३ एवं वयासी) श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा–(कहण्णं भंते ! जीवा गुरुयत्तंवा लहुयत्तंवा हव्वमागच्छंति) हे भदंत जीव कैसे भारी अधोगमन करने केस्वभाव को और कैसे लघु स्वभाववाले उर्ध्व गमन करने के स्वभाव को प्राप्तकरते है ? उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् दृष्टान्त पूर्वक इस प्रकार देते हैं–

(गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष एक बडी सी निश्छिद्र, वातादि

'तएणं से इंदभूई जाय सड्ढे' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યાર બાદ (से इंदभूई जाय सड्ढे) પ્રભુ ઉપર અપૂર્વ શ્રદ્ધા ધરાવનાર ઇન્દ્રભૂતિએ (समणस्स ३ एवं वयासी) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછ્યો. (कहण्णं भंते ! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमा गच्छंति) હે ભદન્ત ! ભારે અધોગમન કરનાર સ્વભાવને તેમજ ઉર્ધ્વગમન કરનાર લઘુ સ્વભાવને જીવ કેવી રીતે મેળવે છે ? તેમના આ પ્રશ્નનો જવાબ ભગવાન મહાવીર સ્વામી દૃષ્ટાંતની સાથે આ પ્રમાણે આપે છે.

(गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ. लिंपित्ता उण्हे दलयइ) હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ માણસ એક મોટી નિશ્છિદ્ર વાતાદિવિકાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारमपि दर्भैश्च कुशैश्च वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन लिम्पति. । लिप्त्वा उष्णे ददाति, शुष्कं सत् तृतीयमपि=तृतीयवारमपि दर्भैश्च कुशैश्च वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन लिम्पति. । एवं खलु ' एएणुवाएणं ' एतेनोपायेन, अन्तरा=मध्ये, वेष्टयन्, अन्तरा=मध्येन लेपयन, अन्तरा=मध्ये शोषयन, यावत् अष्टभिर्मृत्तिकालेपैः आलिम्पति=समन्ताल्लिप्तं करोति, 'अत्थाहं ' अस्ताधे=स्ताधं यावतिजले नासिका न ब्रुडति तावत् स्ताधं गाधं, स्ताधमिति नञ्समासः तस्मिन् अगाधे ऽति गम्भीरे इत्यर्थः, अथवा–' अत्याह ' अयं देशीशब्दः अगाधार्थकः, आर्षत्वात् सप्तम्यर्थे प्रथमा, 'अंतारं' अतारे तरीतुमशक्ये, ' अपोरिसियंसि अपौरुषिके= पुरुषः प्रमाणमस्येति पौरुषिकं, न पौरुषिकमित्यपौरुषिकं तस्मिन् पुरुषप्रमाणादधिके, पुरुषैरगाह्ये ' उदगंसि ' उदके=जले ' पक्खिवेज्जा ' प्रक्षिपति. ।

कृतविकार रहित, ऐसीपूरी-०कि जो फटी तुटी नहिं है तुंबी को दर्भो से और कुशों से वेष्टित करता है, और वेष्टितकर फिरउसे मिट्टी के लेप से लपेट देता है-लपेट कर उसे धूप मे सुकाता है (सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहिय कुसेहिय– वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणलिंपइ, लिंपित्ता उण्हे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहिय कुसे हिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टिया लेवेणं लिंपइ) जब वह अच्छी तरह शुष्क हो जाती है तब दुबारा भी वह उसे दर्भ और कुशों से परि वेष्टित करता है और परिवेष्टित कर के फिर उस पर मिट्टी का लेप करता है-लेपकर पहिले की तरह फिर उसे धूप में सूखने के लिये रख देता है । सुख जाने पर उसे पुनः तृतीय बार दर्भ और कुशों से वेष्टित करता है । वेष्टित करके फिर उस पर मिट्टी का लेप करता है (एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपइ, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि

રહિત વગર તૂટેલી તુંબીને દાભ તેમજ કુશથી વીંટી લે છે અને ત્યાર બાદ માટીથી તેની આસ પાસ લેપ કરે છે અને તેને તાપમાં સૂકવે છે. (सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहिय कुसेहिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टियाले वेणं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहिय कुसेहिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ) જ્યારે તુંબી સારી રીતે સૂકાઈ જાય ત્યારે બીજી વખત પણ તેને દાભ અને કુશથી વીંટાળીને ફરી તેના ઉપર માટીનો લેપ કરે છે. લેપ કર્યા બાદ તેને તાપમાં મૂકે છે. આમ સૂકાઈ ગયા બાદ ત્રીજી વખત દાભ અને કુશથી વીંટાળીને માટીનો લેપ કરે છે. (एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणेअंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपइ अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा) આ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ=नूनं=निश्चयेन ! तत्तुम्बं तेषामष्टानां मृत्तिकालेपानां सम्बन्धाद् ' गुरुययाए ' गुरुकतया ' भारिययाए ' भारिकतया दर्भकुशमृत्तिकानां भारेण भाराक्रान्ततया, अतएव-' गुरुयभारिययाए ' गुरुकभारिकतया उक्त हेतुद्वयस्य सद्भावेन शीघ्रनिमज्जनस्वभावता प्रदर्शिता उपरि सलिलमतिव्रज्य=अतिक्रम्य परित्यज्य अधो=नीचैः धरणीतलप्रतिष्ठानं=पृथ्वीतलं प्रतिष्ठानमाधारो यस्य तत् भवति=भूमितलमाश्रित्य तिष्ठतीत्यर्थः ।

एवमेव गौतम ! जीवा अपि प्राणातिपातेन यावद् मिथ्यादर्शनशल्येन आनुपुर्व्या अष्टकर्मप्रकृतिः समर्जयन्ति, तासां गुरुकतया भारिकतया गुरुकभारिक-

उदगंसि पक्खिवेज्जा) इस तरह के उपायसे बीच २ में वेष्टित कर बीच २ में लिपकर बीच २ में सुका कर जब आठ बार मिट्टी के लेप से उसे वह लिप्त कर चुकता है और बाद में उसे अगाध गहरे पानी में कि जो अतार तथा पुरुष प्रमाण से अधिक है डाल देता है ' अत्थाह ' यह देशीय शब्द है और इसका अर्थ अगाध होता है (से णूणं गोयमा से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरियभारियत्ताए उप्पिं सलिलमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ) तो निश्चय से हे गौतम ! वह तुंबी उन आठ बार के मिट्टी के लेपों के संबंध से गुरु हो जाने के कारण और ८ बार के दर्भ कुशों के भार से वजन दार हो जाने के कारण जैसे शीघ्र ही ऊपर में पानी को छोड़ कर नीचे पानी के बैठ जाती है (एवामेव गोयमा !) इसी तरह हे गौतम ! (जीवा वि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्म पगडीओ समज्जिणंति) जीव भी प्राणातिपातया

પ્રમાણે તુંબીને આઠ વખત દાભ અને કુશોથી વીંટાળીને તથા આઠ વખત માટીનો લેપ કરીને તાપમાં સુકવે છે ત્યાર બાદ તેને ઉંડા ' અતાર ' તેમજ પુરુષ પ્રમાણ કરતાં વધારે ઘેરા પાણીમાં નાખીદે છે. (अत्थाह) આ દેશીય શબ્દ છે અને તેનો અર્થ અગાધ હોય તે. (से णूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरियभारियत्ताए उप्पिं सलिलमइ वइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ) હે ગૌતમ ! પાણીમાં નાખેલી તે તુંબી આઠ વખત માટીના લેપથી ભારે થઇ જવાને કારણે તેમજ આઠ વખત દાભ તથા કુશના ભારથી ભારે થઇ જવાને લીધે પાણીમાં નાખતાની સાથે જ પાણીમાં નીચે જતી રહે છે અર્થાત્ ડૂબી જાય છે. (एवामेव गोयमा !) આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! (जीवा वि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणंति) જીવ પણ પ્રાણાતિપાત યાવત્

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तया कालमासे कालं कृत्वा धरणीतलमतिव्रज्य अधो नरकतलप्रतिष्ठाना भवन्ति, नरकादौ पतन्तीत्यर्थः, एवं खलु गौतम ! जीवा गुरुकत्वं हव्यमागच्छंति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, यस्मिन्समये प्राणातिपातादिकं कुर्वन्ति, तस्मिन्नेव समये गुरुत्वं प्राप्नुवन्तीति हव्य शब्दो द्योतयति ॥ सू०२ ॥

मूलम्—अहणं गोयमा से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि इसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ, तएणंतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पइत्ताणं चिट्ठइ, एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु

वत् मिथ्या दर्शन शल्य से क्रमर कर अष्टकर्मों की प्रकृतियों को उपार्जित करते रहते है। अर्थात् उन से बंधते रहते हैं-(तासिं गरुयत्ताए भारियत्ताए गरुयभारित्ताए कालमासे कालं किच्चा धरणियल महवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठणा भवंति, एवं खलु गोयमा। जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति) उन प्रकृतियों को पौद्गालिक होनेके कारण गुरु और भारी होने से ये कर्म बंध वाले जीव भी गुरु और भारी हो जाते हैं इस लिये वे काल मास मे काल करते हैं तब धरीणितल को अतिक्रमण कर नीचे नरकतल मे प्रतिष्ठित होजाते हैं।

इस तरह हे गौतम। जीव जिस समय प्राणातिपात आदि कर्मों को करते है उसी समय में वे गुरुत्व अवस्था को प्राप्तहो जाते हैं यहबात हव्य शब्द से द्योतित होती है। सूत्र " २ "

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કરતો રહે છે. એટલે કે આઠ કર્મોથી જીવ બંધાતો જાય છે (तासिं गुरुयत्ताए भारित्ताए गुरुयभारित्ताए कालमासे कालं किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहं नरगतलपइट्ठाणा भवंति एवं खलु गोयमा ! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એટલા માટે તેમનાથી આ કર્મ બંધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ જાય છે. એથી તે જીવો કાળ માસમાં કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનું અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે નરક તળમાં અવસ્થિત થઈ જાય છે.

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મો કરે છે તે સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે. આ વાત 'હવ્ય' શબ્દ થી જણાય છે. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ सू० ३ ॥

॥ छट्ठं नायज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

टीका—अथः खलु गौतम ! तत्तुम्बं तस्मिन् ' पढमिल्लुगंसि ' प्रथमे मृत्तिकालेपे ' तिन्नंसि ' स्तिमिते-आर्द्रतां प्राप्ते ततः ' कुहियंसि ' कथिते-विनष्टे 'परिसडियंसि' परिशटिते-बन्धनमुक्ते सति, ईषत्=स्तोकं धरणीतलाद् उत्पत्य-उर्ध्वीभूय खलु तिष्ठति. । ततोऽनन्तरं च खलु द्वितीयेऽपि मृत्तिकालेपे यावदुत्प-

'अहणं गोयमा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(अहणं गोयमा) हे गौतम । जैसे (से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ) वह तुंबी अपने ऊपर का पहेला लेप जब आर्द्र (गिला) हो जाता है, कूथित-विनष्ट-हो जाता है-परिशटित बंधन मुक्त हो जाता है तब नीचे से कुछ ऊपर को उठ जाती है (तयणंतरंच णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पाइत्ताणं चिट्ठइ

(अहणं गोयमा !) इत्यादि !

टीकार्थ-(अहणं गोयमा) હે ગૌતમ ! જેમ (से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ) પાણીમાં ડૂબી ગયેલી તુંબીની ઉપરનો પહેલો લેપ જ્યારે પાણીથી આર્દ્ર થઈ જાય છે-કુથિત-નાશ-પામે છે, પરિશટિત-બંધ મુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે તે નીચેથી કંઈક થોડી ઉપર આવે છે, (तयणंतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्य खलु तिष्ठति, एवं खलु एतेन उपायेन तेषु अष्टसु मृत्तिकालेपेषु स्तिमितेषु यावत् विमुक्तबंधने सति-अधो धरणीतलमतिव्रज्य=उत्पत्य उपरि सलिलतलप्रतिष्ठानं भवति.।

एवमेव गौतम ! जीवाः प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविरमणेन आनुपूर्व्या अष्टकर्मप्रकृतिः क्षपयित्वा गगनतलमुत्पत्य उपरि लोकाग्रे प्रतिष्ठानाः सिद्धस्वरूपावस्थिता भवन्ति. । एवं खलु गौतम ! जीवा लघुकत्वं

एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ) इसी तरह द्वितीय मिट्टी का लेप जब गीला होकर नष्ट हो जाता है परिशटित (सुख) जाता है तब वह तुंबी पहिले की अपेक्षा और कुछ वहां से ऊँची उठ जाती है। इसी तरह होते २ जब उस तुंबी के वे आठों ही लेप गीले कूथित एवं परिशटित हो जाते हैं तब वह तुंबी बिलकुल धरितल से उठकर ऊपर पानी में आ जाती है (एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगड़ीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति) इसी तरह हे गौतम। जीव प्राणातिपात के विरमण से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से क्रमशः अष्ट कर्मों की प्रवृत्तियो को नष्ट कर ऊपर की ओर गगनतल में उठ कर लोक के अग्रभागमें सिद्ध स्वरूप से अवस्थित हो जाता है।

जाव उप्पाइत्ताणं चिट्ठइ एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरणियल मइवइत्ता उप्पिं सलिलतल पइट्ठाणे भवइ) આ રીતે તુંબડીના ઉપરનો બીજી વખતનો લેપપણ ભીનો થઇને ઓગળી જાય છે, નષ્ટ થઇ જાય છે અને પરિશટિત થઇ જાય છે ત્યારે તે પહેલાં કરતાં પાણીમાં કંઇક થોડી વધારે ઉપર આવી જાય છે. આમ તુંબડીના આઠે આઠ લેપ ભીના થઇને ઓગળી જાય છે ત્યારે તુંબડી પોતાની મેળે જ પાણીની ઉપર તરવા માંડે છે. (एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणु पुव्वेणं अट्ठ कम्म पगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिंलोयग्गपइट्ठाणा भवंति)

આ પ્રમાણે જ હે ગૌતમ ! જીવ પ્રાણાતિપાત ના વિરમણથી યાવત મિથ્યા દર્શન શલ્યના વિરમણથી અનુક્રમે આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરી ને ઉપર ગગનતળમાં પહોંચીને લોકના અગ્ર ભાગમાં સિદ્ધ સ્વરૂપથી અવસ્થિત થાય છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हव्यमागच्छन्ति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकत्वं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एवं खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि, शेषं सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-लापालापक-पवित्रशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां षष्ठमध्ययनं संपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्व मागच्छंति-एवं खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम । जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते हैं उसी समय में वे लघुकत्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार हे जंबू । श्रमण भगवान महावीर ने छठे अध्ययनका यह अर्थ कहा है।सू० ३।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता-धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का छट्ठा अध्ययन समाप्त॥ ६ ॥

(एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति-एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि । ३ । આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ ઉર્ધ્વ ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી લે છે. એટલે કે જ્યારે જીવ કર્મોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ તે લઘુકત્વ સ્વભાવને મેળવે છે હે જંબૂ આમ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અ-ધ્યયનનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું છઠ્ઠું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૬॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ सप्तममध्ययनं प्रारभ्यते–

गतं षष्ठमध्ययनम् साम्प्रतं सप्तममारभ्यतेऽस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः इहानन्तराध्ययने प्राणातिपातादि क्रियावतां कर्मगुरुता प्रोक्ता, तदभिन्नानां कर्म लघुता ततश्चानर्थार्थप्राप्तिरुपोऽर्थः इहतु प्राणातिपातादि विरति स्खलितसंरक्षकाणामनर्थार्थप्राप्तिः प्रोच्येते. । तत्राद्यं सूत्रमाह–

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, तत्थणं राय-

---

सातवां अध्ययन प्रारम्भ—

छठा अध्ययन सम्पूर्ण हो चुका– अब सातवां अध्ययन प्रारंभ होता है । इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है– छठे अध्ययन में प्राणातिपात आदि करनेवाले प्राणियों में कर्म गुरुता कही गई है और नहीं करने वालों में कर्मलघुता कही गई है– तथा इन दोनों का फल क्रमशः अनर्थ एवं अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में यह कहा जावेगा कि जो प्राणातिपात आदि से विरति धारण करके भी उससे स्खलित हो जाते हैं वे जीवअनर्थ परंपरा को भोगते हैं और जो उसकी रक्षा करते हैं वे अभीष्ट–इच्छित अर्थ को प्राप्त कर लेते हैं ।

સાતમું અધ્યયન પ્રારંભ.

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમું અધ્યયન શરૂ થાય છે. સાતમા અધ્યયનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સંબંધ આ પ્રમાણે છે. છઠ્ઠા અધ્યયન માં પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમાં કર્મની ગુરૂતા કહેવામાં આવી છે અને પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમાં કર્મની લઘુતા કહેવામાં આવી છે. તેમજ અનુક્રમે આ બંનેનું ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી આ વિષે કહેવામાં આવ્યું છે હવે સાતમા અધ્યયનમાં કહેવામાં આવશે કે જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતાં તેનાથી સ્ખલિત થઇ જાય છે, તે જીવો અનર્થપરંપરા એને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા કરે છે તેઓ અભીષ્ટ–મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिहे नयरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसइ० अड्ढे० भद्दा भारिया अहीण पंचेंदिय० जाव सुरूवा तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था तं जहा–धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा–उज्झिया भोगवइया रक्खइया रोहिणिया॥सू०१॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि–अथ जम्बूस्वामी पृच्छति हे भदन्त ! यदि खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मुक्तिसंप्राप्तेन षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, हे भदन्त सप्तमस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं जम्बूस्वामिना प्रश्ने कृते सति सुधर्मास्वामी प्राह एवं खलुजम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन्

' जइणं भंते ! समणेणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(जइणं भंते !) जंबूस्वामी पूछते हैं कि हे भदंत ! (समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) श्रमण भगवान् महावीर ने जो मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं छट्ठे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदंत ! सप्तम ज्ञाताध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? (एवं खलु जंबू !) इसका उत्तर देते हुए श्री सुधर्मा स्वामी जंबूस्वामी से कहते है कि हे जंबू ! सुनो श्रमण भगवान महावीर ने जो सातवें ज्ञाताध्ययन का अर्थ प्ररूपित किया है– वह इस प्रकार है (तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय

' जइणं भंते ! समणेणं ' इत्यादि !

ટીકાર્થ–(जइणं भंते !) જંબૂ સ્વામી પ્રશ્ન પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! (समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) મુક્તિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રીતે કહ્યુ કર્યા છે ત્યારે હે ભદંત ! તેઓશ્રીએ સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? (एवं खलु जंबू !) આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ ! સાંભળો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, नगरस्य बहिः सुभूमिभागं नामकमुद्यानं 'तत्थ णं' तत्र खलु राजगृहे नगरे धन्यनामा सार्थवाहः परिवसतिस्म स कीदृशः, 'अड्ढे' आढ्यः बहुधनधान्य समृद्धः, तस्य भद्रानाम्नी भार्या, सा किं भूता ? अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा 'जाव सुरूवा' इह यावत्करणादिदं ज्ञातव्यं 'लक्खणवंजण गुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा, ससि सोमाकारा कांता पियदंसणा सुरूवा' इति एतानि पदानि व्याख्यातपूर्वाणि 'तस्स णं' 'तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः भद्रायाः भार्यायाः 'अत्तया' आत्मजा अङ्गजा–निजकुक्षिसंभवा इत्यर्थः चत्वारः सार्थवाहदारका आसन्, तद् यथा

में (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था (सुभूमिभागे उज्जाणे) वहां बाहिर में एक सुभूमि भाग नाम का उद्यान था। (तत्थ णं रायगिहे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसइ) उस राजगृह में धन्य नाम का सार्थवाह रहता था। (अड्ढे०भद्दा भारिया, अहीण पंचेदिय० जाव सुरूवा) यह बहुत अधिक धन धान्य से समृद्ध था। इसकी भद्रानाम की भार्या थी।

इसका शरीर अहीन पंचेन्द्रियों से परिपूर्ण था। सुन्दर अंगवाली थी। "यावत् शब्दसे" लक्खणवंजण गुणोववेया, माणुम्माणपमाणपडिपुण्ण–सुजाय–सव्वंग सुंदरंगा, ससिसोमाकारा, कंता पियदंसणा सुरूवा" इस पाठका संग्रह किया गया है

कोई बार पहिले इन पदो का अर्थ लिखा जा चुका है। (तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था) उस धन्य सार्थवाह के भद्राभार्या की कुक्षी से उत्पन्न

નિરૂપિત કર્યો છે. (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नगरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતું (सुभूमिभागे उज्जाणे) તે નગરની બહાર સુભૂમિભાગ નામે એક ઉદ્યાન હતું (तत्थ णं रायगिहे धण्णेनामं सत्थवाहे परिवसइ) રાજગૃહ નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતા હતો. (अड्ढे भद्दा भारिया अहीण पंचेंदिय. जाव सुरूवा) તે ઘણો જ ધન ધાન્યથી સમૃદ્ધ હતો. ભદ્રા નામે તેની પત્ની હતી. તેનું શરીર અહીન પંચેન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતું તે સુંદર અંગોવાળી હતી. 'यावत्' શબ્દથી અહીં (लक्खणवंजणगुणोववेया, माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा, ससिसोमाकारा, कंता पियदंसणा सुरूवा) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોનો પહેલાં ઘણી વખત અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. (तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था) ધન્ય સાર્થવાહને ભદ્રા ભાર્યાના ઉદર જન્મ પામેલાં ચાર સાર્થવાહ દારકો-પુત્ર-હતા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ धनपालः, २ धनदेवः, ३ धनगोपः, धनरक्षितश्चेति । तस्य खलु धन्यसार्थवाहस्य चतुर्णां पुत्राणां भार्याश्चतस्रः स्नुषाः-पुत्रवध्वः बभूवुः तद्यथा- १ उज्झिता, २ भोगवतिका, ३ रक्षिता, ४ रोहिणिकाव. ॥ सू. १ ॥

मूलम्-तएणं तस्स धण्णस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पब्भिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसुय रहस्सेसुय निच्छएसुय ववहारे सुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढीपमाणे आहारे आलंबणे चक्खुमेढीभूए जाव सव्व कज्जवड्ढावए तंणणज्जइ जंमए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवासियंसि वा इम्मस्स कुटुंबस्स किं मन्ने आहारे वा

हुए चार सार्थवाह दारक-पुत्र-थे (तं जहा) उनके नाम ये हैं-(धणपाले, धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए) धनपाल, धनदेव, धनगोप, धनरक्षित (तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) उस धन्य सार्थवाह को उन चारपुत्रों की भार्याएँ पुत्र वधुएं-थी (तंजहा-उज्झिया, भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) धनपालपुत्र की भार्या उज्झिताथी १ धनदेवकी भार्याभोगवतिका थी २,धनगोपकी भार्यारक्षिताथी ३, धनरक्षित की भार्या रोहिणिकाथी४ ॥सू० १॥

(तं जहा) તેમના નામે આ પ્રમાણે છે-(धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए) ધનપાળ, ધનદેવ, ધનગોપ અને ધનરક્ષિત. (तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स च उण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) ધન્ય સાર્થવાહના આ ચારે પુત્રોને ભાર્યાઓ હતી. (तं जहा उज्झिया भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) ધનપાળની ભાર્યા ઉજ્ઝિતા હતી ૧, ધનદેવની ભાર્યા ભોગવતિકા હતી, ૨, ધનગોપની ભાર્યા રક્ષિતા હતી ૩, ધનરક્ષિતની ભાર્યા રોહિણિકા હતી ૪, ॥ સૂત્ર ૧ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ? तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइ णियगसयण० य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असणं ४ धुवपुप्फ वत्थ गंधजाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिरक्खणट्ठयाए पंच२ सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्हं वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेइ वा ? ॥ सू० २ ॥

टीका- 'तएणं तस्स' इत्यादि- ततस्तदनन्तरं खलु तस्य धन्यसार्थवाहस्य अन्यदा कदाचित् 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरणं कुर्वतो 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः आन्तरोपायसाध्यसुखदुःखादिरूपः यावत्संकल्पः 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत 'एवं' अमुना प्रकारेण खलु' निश्चयेन अहं राजगृहे नगरे बहूनां 'ईसर'

'तएणं तस्स धण्णस्स' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तस्स धण्णस्स) उस धन्य सार्थवाह को (अन्नया कयाइं) किसीएक समय (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) मध्यरात्रि के समय में जब कि वह कुटुंब जागरणासे जागरहा था (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का यह आध्यात्मिक-आंतर उपाय साध्या सुख दुःखादिरूप यावत् संकल्प उत्पन्नहुवा (एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पभईणं सयस्स

'तएणं तस्स धण्णस्स' इत्यादि !

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यार माद (तस्स धण्णस्स) धन्य सार्थवाहने (अन्नया कयाइं) કોઈ વખતે (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) अडधी रात्रिना समये न्यारे ते कुटुंब जागरणु करतुं हतुं. (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) त्यारे आ जातनो आध्यात्मिक એટલે કે આંતરિક ઉપાયથી સાધ્ય સુખદુઃખ વગેરે રૂપ यावत् संकल्प उत्पन्न थयो-(एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईश्वराः-ऐश्वर्यसम्पन्नाः 'जावइयाइणं' यावत् शब्देन 'तलवरमाडंबिय कोडुंबियइब्भ सेट्ठिसेणावइसत्थवाह' एतेषां संग्रहः, तेन तलवरमाडम्बिककौडुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति सार्थवाहप्रभृतीनां 'सयस्स' स्वकस्य-निजस्य कुटुम्बस्य बहुसु 'कज्जेसु' कार्येषु-प्रयोजनेषुच पुनः 'कारणेसु' कारणेषु-कार्यजातसम्पादक हेतुषुच, 'कुडुंबेसु' कुटुम्बेषु बान्धवेषु च 'मंतेसु' मन्त्रेषु-कर्त्तव्य निश्चयार्थं गुप्तविचारेषु च 'गुज्झेसु' गुह्येषु-लज्जाया गोपनीयव्यवहारेषु च 'रहस्सेसु' रहस्येषु-प्रच्छन्न व्यवहारेषुच 'निच्छएसु' निश्चयेषु=पूर्ण निर्णयेषु च 'ववहारेसु' व्यवहारेषु च बान्धवादि समाचरितलोकविपरीतादि क्रिया प्रायश्चित्तेषु अत्र चकाराः समुच्चयार्थकाः एतेषु विषयेषु 'आपुच्छणिज्जे' आप्रच्छनीयः-ईषत्प्रष्टुंयोग्यः एकवार मित्यर्थः 'पडिपुच्छणिज्जे' परिप्रच्छनीयः सर्वतो भावेन प्रष्टव्यः। 'मेढी' मेधिः व्रीहियवादिकणमर्दनार्थं पशुबन्धनस्तम्भः, तत्सादृश्यादयमपि मेधिः-मेधिरूपः,

---

कुडुंबस्स बहुसु कज्जेसु य कारणे सु य, कुडुंबे सु य, मंतेसु य, गुज्झे रहस्से निच्छए, ववहारे सु य, आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढीप माणे आहारे, आलंबणे) मैं राजगृह नगर मे अनेक ऐश्वर्यशाली तलवर, माडंबिक कौटुम्बिक इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिजनों के तथा अपने निज कुटुम्बके प्रयोजनी भूत कार्यों मे, कार्यों के साधन भूत कारणो में बन्धुजनों के कर्तव्य को निश्चय करने के लिये प्रवृत्त गुप्तविचारो में लज्जावश गोपनीय व्यवहारो में-प्रच्छन्नव्यवहारोमें-पूर्णनिर्णयों में, बांधवादिजनो द्वारा समाचरित लोक विरुद्धादिकार्यों के प्रायश्चित्तों में अर्थात् इन सब विषयो में पूछा जाता है, ये सबलोग मेरी अच्छी तरहसे सलाह लेते हैं। मैं इन सब के लिये मेधी रूप हूँ

जाव पडिभईणं सयस्स कुडुंबस्स बहुसु कज्जेसु य कारणेसुय, कुडुंबेसु य, मंतेसुय, गुज्झे रहस्से निच्छए ववहारेसुय, आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढीपमाणे आहारे आलंबणे) રાજગૃહ નગરમા હું ઘણા ઐશ્વર્યશાળી, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેના તેમજ પોતાના કુટુંબનાં જ ખાસ કામોમાં, કાર્યોના સાધન ભૂત કારણોમાં સગાં વહાલાંના કર્તવ્યોના નિશ્ચય માટે ની ગુપ્ત મંત્રણાઓમાં છુપાવવા યોગ્ય લજ્જાથી સંબંધિત ગોપનીય કાર્યોમાં-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમાં-પૂર્ણ નીર્ણયોમાં, સગાં સંબંધીઓ વડે આચારથી વિરુદ્ધ અનાચરણીય કરવામાં આવેલા કાર્યોમાટે ની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિમાં-એટલે કે આ બધી સામાજિકરાજનીતિક અને ધાર્મિક બાબતોમાં બધા મને પૂછે છે. બધા માણસો મારી સલાહ લે છે. આ બધા લોકો માટે હું મેધી રૂપ છું, પ્રમાણ રૂપ છું. અનાજ વગેરેની હાલણી માટે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थादेतदवलम्बनैव सर्वस्यापि कुटुम्बस्यावस्थानम् ' पमाणे ' प्रमाणम् प्रत्यक्षादि प्रमाणवद् वस्तुतत्वप्रतिबोधकः 'आहारे' आधारः–आधारवत् कुटुम्बादीनामाश्रयः ' आलंबणे ' आलम्बनं रज्वादिवत् विपद्गर्तपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम्. ' चक्खु ' चक्षुः नेत्रं तद्वत् सकलार्थप्रदर्शकः, यदुक्तं (मेधिः प्रमाणमाधारः आलम्बनं चक्षुरिति ' तदेव स्पष्टबोधार्थमौपम्यवाचिभूतशब्दसंमेलनेन पुनरावर्तयति मेधिभूतः इत्यादि, यावदिति –– यावच्छब्देन (पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए) इत्येषां संग्रहो बोध्यः अर्थतः पुनरुक्तिदोषवारणं तु पूर्वत्र मेधिरिति आरोपित मेधित्ववानित्याद्यर्थेन बोध्यम् । सव्वकज्जवड्ढावए ' सर्व कार्यवर्धकः– सर्वेषा कार्याणां, वर्धकः=सम्पादकोऽस्मि. ' तं ' तद्

प्रमाणरूप हूँ। थीहि कच आदिके कणों को मर्दन करने के लिये पशु जिस स्तंभ में बांधे जाते हैं उसका नाम मेधी है । मेधी के सहारे से जिस तरह पशुओं का अवस्थान रहता है उसी तरह उसके सहारे से समस्त कुटुंबका अवस्थान था इसलिये इसे मेधीरूप कहा गया है। प्रत्यक्ष आदि प्रमाण जैसे वस्तुतत्व के प्रतिबोधक होते हैं उसी तरह यह भी सब के लिये वस्तु का वास्तविक स्वरूप समझा दिया करता था अतः इसे प्रमाण रूप प्रकटकिया है । मैं ही कुटुम्ब आदिका आश्रय भूत हू, रज्ज्वादिक की तरह विपत्तिरूप खड्डे में पतित जनो का उद्धारक होनेके कारण मैं उनका अवलंबन रूपहूँ।

चक्षु जिस प्रकार सामने के पदार्थ का यथार्थ प्रकाशन करता है उसी तरह यह भी मनुष्यों को राय लेने पर वास्तविक वस्तु के रहस्य से परिचित्त करा देता था। अतः इसे यहां चक्षुरूप कहा गया है इसीलिये (चक्खु मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए) मेधि प्रमाण,

---

બળદો જે થાંભલાને બાંધવામાં આવે છે. તેનું નામ મેધી છે. મેધી જેમ પશુઓને માટે બાસ કેન્દ્રરૂપમાં રહેલો આધાર હોયછે તેમજ તેપણ બધાને માટે મેધી રૂપ હતો પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણો જેમ વસ્તુના તત્વને બતાવનારા હોય છે તેમજ ધન્યસ.ર્થવાહ પણ બધાને દરેક દરેક વસ્તુનું સાચું સ્વરૂપ સમજાવતો હતો. તેથી તેને પ્રમાણ કહ્યો છે. કુટુંબનો હું જ આશરો છું. હું જ ઉંડા ખાડામાં પડેલા માણસોનો દોરીની જેમ ઉદ્ધારક છું એથી હું તેમના માટે અવલંબન (આધાર) રૂપ છું. ચક્ષુ જેમ સામેની વસ્તુને પ્રકાશિત કરે છે. તેમજ તે પણ સલાહ માટે આવેલા માણસોને વસ્તુના સાચા રહસ્યથી વાકેફ કરતો હતો. એટલા માટે જ (चक्खुमेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए) મેધિ પ્રમાણ આધાર આલંબન અને ચક્ષુ આ પદોની

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मात्कारणत् 'ण णज्जइ' न ज्ञायते मया 'जं' यत् यदि 'मए' मयि 'गयंसि' गते ग्रामादौ 'वा' 'चुयंसि' च्युते–स्खलितेवा कर्मवशादनाचरतः स्वपदात्पतिते इत्यर्थः ' मयंसि ' मृते–प्राणवियोगे सति, वा ' भग्गंसि ' भग्ने–रोगादिना कुब्ज खञ्ज-त्वेनाऽसमर्थीभूते, वा ' लुग्गंसि ' रुग्णे–रोगावस्थाप्राप्तेसति ' सडियंसिवा ' सटिते व्याधिविशेषेण जीर्णतां गते सति, वा ' पडियंसि ' पतिते प्रासादादितो-ग्लानभावाद्वा ' विदेसत्थंसि ' देशान्तरं गत्वा तत्रैव स्थिते वा 'विप्पवसियंसि ' विप्रोषिते – स्वस्थानविनिर्गते–देशान्तरगमनप्रवृत्ते सति वा ' मन्ने ' अहं मन्ये

आधार, आलम्बन एवं चक्षु इन पदों के साथ सूत्रकार इसी बात को और जोरदार शब्दों से समझाने के लिये उपमा वाचक भूत शब्द का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि यह धन्यसार्थवाह उन सब के लिये मेधिभूत था, प्रमाणभूत था, आधारभूत था, आलंबनभूत था और चक्षुभूत था। इस तरह यहां पुनरुक्ति दोष का सद्भाव भी नहीं माना जा सकता है।

कारण पहिले कथन में उसे स्वयं मेधि आदि रूप कहा गया है और इस कथन में उसे उन २ जैसा कहा गया है। इस प्रकार पुनरुक्ति दोष का वारण हो जाता है। यह धन्य सार्थवाह समस्त ईश्वर आदि जनों के सर्व कार्यों का संपादक था–इसलिये उसे यह " सर्व कार्य वर्द्धक " कहा गया है। इस प्रकार वह धन्य सार्थवाह अपने में इन समस्त बातों का विचार करके अब आगे ऐसा विचार करता है (तं ण णज्जइ जं मए गयंसि वा चुयंसि वा, मयंसि वा भग्गंसि वा, लुग्गंसि वा, सडियंसि

સાથે સૂત્રકાર એ જ વાતને વધારે સ્પષ્ટ કરવા માટે ઉપમા વાચક ' ભૂત ' શબ્દનો પ્રયોગ કરતાં કહે છે કે ધન્ય સાર્થવાહ બધાને માટે મેધિભૂત હતો, પ્રમાણ ભૂત હતો, આધાર ભૂત હતો, આલંબન ભૂત હતો અને ચક્ષુ ભૂત હતો. એથી અહીં પુનરુક્તિ રૂપ દોષ ઉદ્ભવવાની શક્યતાથી ઉભી થતી નથી. કેમકે પૂર્વ કથનમાં જ તેને મેધિ વગેરે રૂપ બનાવવામાં આવ્યો છે અને આ વર્ણનમાં પણ તેને તે પ્રમાણે જ વર્ણવવામાં આવ્યો છે. આ રીતે પુનરુક્તિ દોષનું નિવારણ પણ થઇ જ ગયું કહેવાય. ધન્ય સાર્થવાહ બધા ઈશ્વર વગેરે લોકોના બધા કામોને પાર પમાડનાર હતો. એથી જ તેને " सर्व कार्य वर्द्धक " કહેવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ પોતાની મેળે આ બધી વાતો વિષે વિચાર કરતો આગળ આમ વિચારે છે કે (तं ण णज्जइ जं मए गयंसिवा चुयंसिवा मयंसिवा भग्गंसिवा, लुग्गंसिवा, सडियंसिवा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'इमस्स' अस्य कुटुम्बस्य 'किं' कः 'आहारे' आधारः आश्रयो भूमिरिव 'वा' अथवा 'आलंबे' आलम्बः-पततो रज्जादिकमिव अथवा 'पडिबंधे' प्रतिबन्धः प्रमार्जनिकाशलाकादीनां परिरक्षणाय दवरकइव 'भविस्सइ' भविष्यति 'तं' तद्-तस्मात् 'सेयं' श्रेयः खलु निश्चये मम 'कल्लं' कल्ये-श्वः प्रभात-समये यावत्-तेजसा 'जलंते' ज्वलतिसति-दिनकरे उदयं प्राप्ते विपुलं-प्रचुरं अशनं ४ 'उवक्खडावेत्ता' उपस्कार्य निष्पाद्य मित्रज्ञाति निजक स्वजन सम्बन्धिनः परिजनान् चतस्रः स्नुषाः 'कुलघरवग्गं' कुलगृहवर्गं, कुलगृहं-पितृगृहं तद् वर्गं मातापित्रादिकं 'आमंतेत्ता' आमंत्र्य=भोजनार्थमाहूय 'तं' तान्

वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसयंसि वा इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?) कि ऐसा मैं यदि यहां से दूसरे ग्राम आदि को चला जाऊँ, या कर्मवशात् स्वपद से च्युत हो जाऊँ, मरजाऊँ किसी रोग आदि के द्वारा कुबडा या लूला बन जाउँ, रोग से ग्रसित हो जाउँ, किसी व्याधि विशेष से जीर्ण शरीर हो जाउँ किसी मकान आदि से अचानक गिरजाउँ विदेश जाकर वहाँ रहने लगजाऊँ,अथवा यहां से विप्रोषित परदेश रहने वाला जाऊँतो ऐसी स्थिति में मुझे ऐसा कोई नही ज्ञात होता है कि जो इस मेरे कुटुम्ब का आधार होगा आलंबनभूत होगा उसको बुहारू संमार्जनी की सीकों को एकत्र बांध कर रक्षा करने वाले डोरेके सामान रक्षा करने वाला होगा। इसलिये जब मैं ऐसा मानता हूँ (तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ०चउण्हं सुहाणं कुलघरवग्गं

पडियंसिवा, विदेसत्थंसि वा विप्पवसयंसि वा इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?) ने हुं अहींथी बीजे गाम जतो रहुं के कर्मवशात स्वपद (पोताना अधिकार) थी भ्रष्ट थइ जाउं के मरणने भेटुं, रोग वगेरेमां सपडाईने कूबडो अथवा अपंग थइ जाउं, रोगी थई जाउं कोइ व्याधि विशेषमां सपडाईने साव दुर्बळ शरीरवाळो थइ जाउं, कोइ मकान उपरथी ओचिंतो पडीजाउं, विदेशमां जईने त्यां रहेवा लागुं अथवा तो अहींथी विप्रोषित-परदेशमां रहेनार थइ जाउं त्यारे एवी स्थितिमां मने एवी कोई पण व्यक्ति देखाती नथी के जे मारा कुटुंबनो आधार थइ शके, आलंबन भूत थइ शके. सावरणीनां छूटांपडेलां तरणांओने एकीसाथे बांधनार दोरीनी जेम मारा आ कुटुंबने एकी साथे संपीने राखनार तेमज तेनी रक्षाकरनार कोण हशे ? ने अत्यारे आवी परिस्थिति छे तो मारे। ए विचार छे के- (तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिनः परिजनांश्च चतस्रः स्नुषाः कुलगृहवर्गं च विपुलेन अशनादिना ४ धूपपुष्पवस्त्रगंधादिभिर्यावत् ' सक्कारेत्ता ' सत्कृत्य ' सम्माणेत्ता ' सम्मान्य मधुरवचनादिना, तस्यैव मित्रज्ञत्यादेः चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य पुरतः समक्षं चतसृणां स्नुषाणां ' परिरक्खणट्ठयाए ' परीरक्षणार्थं पञ्च

आमंतेत्ता) तो मेरी अब इसी में भलाई है कि मैं कल सूर्योदयहोते ही प्रातःकाल सूर्य के उदय होने पर विपुल मात्रा में अशन पान, खाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी जनों को तथा परिजनों को चारों अपनी इन पुत्र वधूओं को, इनके माता पिता आदिको को भोजनार्थ आमंत्रित करके (तं मित्तणाइ णियग सयण० य चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असण ४ धुवपुप्फवत्थगंधं जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं परिरक्खणट्ठयाए पंच २ सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्हं वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेइ वा) उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन संबंधियों को परिजनों को चारों इन अपनी पुत्र वधूओं को और इनके माता पिता आदिकों को उस विपुल अशनादि से और धूप पुष्प, वस्त्र गंध आदि से यावत् सत्कृत करूँ मधुरवचनादि द्वारा उन्हें सन्मानित करूँ। सत्कृत और सन्मानित करके बाद में मैं उन्हीं मित्र ज्ञाति आदि जनों के चारो ओर अपनी इन पुत्र वधूओं के कुल गृह वर्ग के समक्ष इन चारों पुत्र

चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता) હું કાલ સવાર થતાં જ સવારે સૂર્યોદય થતાં અશન, પાન, સ્વાદ્ય અને ખાદ્ય આમ ચાર પ્રકારનો વિપુલ માત્રામાં આહાર તૈયાર કરાવીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક સ્વજન, સંબંધી તેમજ પરિજનો અને ચારે પુત્રો ચારે પુત્રવધૂઓ તથા એમના માતાપિતા વગેરેને જમવા માટે બોલાવીને (तं मित्तणाइ णियगसयण. य चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असण ४ धुव पुप्फवत्थगंधं जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं परिरक्खणट्ठयाए पंचरसालि अक्खए दलइत्ता जाणामि तावका किण्हंवा सारक्खेइवा संगोवेइवा संवड्ढेइवा) મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધીઓનો, પરિજનોનો, પોતાની ચારે પુત્રવધૂઓનો, અને તેમના માતા પિતા વગેરેનો પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવવામાં આવેલા અશન વગેરે ચારે પ્રકારના આહારો થી અને ધૂપ, પુષ્પ વસ્ત્ર ગંધ વગેરેથી સત્કાર કરૂં તથા મધુરવાણી થી તેમનું સન્માન કરૂં. તેમની સત્કાર તેમજ સન્માનની વિધિ પૂરી કર્યા બાદ હું મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તથા પુત્રવધૂઓના કુટુંબીજનોની સામે ચારે પુત્ર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्च संख्यकान् शाल्यक्षतान् शालिकणान् दत्वा 'जाणामि' जानामि 'ताव' तावत् निश्चयेन 'का' स्नुषा 'किहं' कथं केन प्रकारेण 'सारक्खेइ' संरक्षयति संगोपयति –संवरणतः, मंजूषादिषु संस्थापनेन गोपनं करोति, अथवा का–वधू 'संवड्ढइ' सम्वर्धयति बहुत्वकरणतः वपनादिना ? ॥ सू० २ ॥

मूलम्–एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ आमंतित्ता विउल असणं ४ उवक्खडावेइ, तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विउलं असण ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ पंच सालि अक्खए गेण्हइ गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झिया तं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालि अक्खए गेण्हाहि गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जयाणंऽहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालि अक्खए जाएज्जा तयाणं तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जाएज्जासि तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ दलयित्ता पडि-

---

वधूओं की परीक्षा के निमित्त उन्हें पांच पांच शालिकणों को दूँ– और देकर यह ज्ञात करूँ कि इन में से कौन पुत्र वधू किस तरह से इनकी रक्षा करती है, कौन पुत्र वधू इन्हें मंजूषा आदि में रखकर गुप्त रखती है और कौन सी पुत्रवधू वपनादि क्रिया द्वारा उन्हे बढाती है । सूत्र '२'

વધૂઓની પરીક્ષા માટે તેઓમાંથી દરેકને પાંચ પાંચ શાલિકણો (ડાંગરના કણો) આપું અને આપીને એ વાતની પરીક્ષા કરું કે તેઓમાંથી કોણ કેવી રીતે તે શાલિકણોને સાચવી રાખે છે. કઇ પુત્ર વધૂ શાલિકણોને પેટી વગેરે માં મૂકીને ગુપ્ત રાખે છે ? અને કઈ પુત્રવધૂ શાલિકણો ને વાવીને તેમની વૃદ્ધિ કરે છે ? ॥ સૂત્ર ૨ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसज्जेइ, तएणं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालि अक्खए गेण्हइ गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खलु तयाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालिणं पडिपुण्णा चिट्ठंति । तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाणं अहं पल्लंतराओ अंते पंच सालि अक्खए गहाय दाहामि त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए एगंते एडेइ एडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ॥ सू० ३ ॥

टीका–'एवं संपेहेइ' इत्यादि–एवं उक्तरूपेण संप्रेक्षतेमनसि विचार्यते 'संपेहित्ता संप्रेक्ष्य–पर्यालोच्य कल्ये प्रभातसमये, यावत् तेजसा ज्वलति, सूर्ये उद्गते सति मित्रज्ञाति स्वजनप्रमुखान् चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गं च–पितृगृहसम्बन्धिमाता पित्रादीन्, आमंत्रयति निमन्त्रयति, आमन्त्र्य विपुलमशनादिकं चतुर्विधाहारं उप-

'एवं संपेहेइ संपेहित्ता' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एवं संपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने इस पूर्वोक्त प्रकार अपने मन में विचार किया (संपेहित्ता) विचार करके (कल्लं जाव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ आमंतित्ता विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ) फिर उसने प्रातकाल होते ही सूर्य के उदय हो जाने पर मित्र, ज्ञाति, स्वजन आदि को और चारों ही पुत्रवधूओं के कुल गृह वर्ग को–उनके माता पिता आदिको को आमंत्रित किया । आमंत्रित

'एवं संपेहेइ, संपेहित्ता' इत्यादि !

ટીકાર્થ–(एवं संपेहेइ) ધન્યસાર્થવાહે પૂર્વોક્ત રૂપે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો. (संपेहित्ता) વિચાર કરીને (कल्लं जाव मित्तणाइ. चउण्हं सुण्हाणं कुलघर वग्गं आमंतेइ आमंतित्ता विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ) સવારે સૂર્યઉદય પામતાં જ સાથે જ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન વગેરેને અને ચારે ચાર પુત્ર વધૂઓના કુટુંબીજનોને તેમના માતાપિતા વગેરેને જમવા માટે આમંત્રિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्कारयति=निष्पादयति. ततः पश्चात् स्नातो भोजनमण्डपे सुखासननिषण्णः-सुखेनासने उपविष्टः सन् मित्रज्ञातिस्वजनादिभिः सार्द्धं चतसृणां स्नुषाणां च कुलगृहवर्गेणच सार्द्धं तद्विपुलमशनादिकं भोजयित्वा यावत्सत्कारयति वस्त्रादिभिः संमानयति मधुरववनादिना, सत्कारं कृत्वा संमानयित्वा तस्य धन्यसार्थवाहस्यैव स्वमित्रज्ञाति प्रमुखाणामग्रे चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य पुरतः पञ्चशालि क्षतान्, गृह्णन्ति गृहीत्वा ज्येष्ठा स्नुषा उज्झिका नाम्नी तां शब्दयति शब्दयित्वा

करने के बाद फिर उसने विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया।

(तओ पच्छा ण्हाए भोयण मंडवंसि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विउलं असणं ४ जाव सक्कारेइ, सम्माणेइ) जब चतुर्विध आहार निष्पन्न हो चुकी तब वह स्नान करके भोजनशाला में सुख से आसन पर उपविष्ट (बैठगया) हो गया और मित्र, ज्ञाति एवं स्वजनादि को के साथ २ और अपनी पुत्रवधूओं के माता पिता आदिकों के साथ २ उस चतुर्विध भोजन की विपुल सामग्री का आहार करने के बाद में उन सबका उस ने वस्त्रादि से सत्कार किया तथा मधुरवचनादि से सन्मान किया। (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ पंच सालि अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झिया तं सद्दावेइ) जब सबका सत्कार और सन्मान हो चुका तब उस के बाद

કર્યો. આમંત્રણ આપ્યા પછી ધન્ય સાર્થવાહે પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરે ના ચાર પ્રકારનો આહાર બનાવડાવ્યો.

(तओपच्छाण्हाए भोयणमंडवांसि सुहासण मित्तणाइ. चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विउलं असणं ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ) જ્યારે ચારે જાતનો આહાર તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તે સ્નાન કરીને રસોઇ ઘરમાં સુખેથી આસન ઉપર બેસી ગયો અને મિત્ર, જ્ઞાતિ અને પોતાના સ્વજનો વગેરેની સાથે તેમજ પોતાની પુત્ર વધૂઓનાં સગાં વહાલાંઓ માતાપિતાઓ ની સાથે ચારે જાતના પુષ્કળ પ્રમાણમાં તૈયાર કરવા માં આવેલા આહારને જમ્યો જમ્યા પછી તેણે વસ્ત્રો વગેરે આપીને તે બધાને સત્કાર્યા તેમજ મધુર વચનોથી તે બધાનું સન્માન કર્યું. (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ, चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ पंचसालि अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हं उज्झिया तं सद्दावेइ) જ્યારે બધા આમંત્રિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यवदत् हे पुत्रि त्वं खलु मम हस्तादिमान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहाण, गृहीत्वाच 'अणुपुव्वेणं' अणुपूर्व्या-अनुक्रमेण संरक्षन्ती संगोपायन्ती 'विहराहि' विहर. । 'जया' यदा-यस्मिन् समये खलु हे पुत्रि ! अहं 'तुमं' तवपार्श्वे इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् 'जाएज्जा' याचय, 'तया' तदा तस्मिन् समये खलु 'तुमं' त्वं मम इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जासि' प्रतिदद्याः पश्चाद् मह्यं समर्पये, इतिकृत्वा-इत्युक्त्वा ज्येष्ठायाः स्नुषायाः हस्ते ददाति, दत्वा च प्रतिविसर्जयति,

धन्य सार्थवाह ने अपने मित्र ज्ञाति आदि जनों के तथा उन चारों जपनी पुत्रवधूओं के कुल गृहवर्ग के सामने पांच शाल्यक्षतो को लिया और लेकर ज्येष्ठा जो पुत्रवधू थी कि जिसका नाम उज्झिका थी उसे बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वे णं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि) बुलाकर उससे ऐसा कहा-पुत्रि ! तुम मेरे हाथ से इन पांच शाल्यक्षतों को लों और लेकर इन्हें सुरक्षित रखो सम्भालकर अच्छी तरह से रखो। (जयाणं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जतयाणं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि) जब मैं हे पुत्रि ! तुम से इन पांच शालि अक्षतों को मागूं तब तुम मेरे लिये इन्हें पीछे देना ।

(त्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ) ऐसा कहकर उसने उस ज्येष्ठ स्नुषा के हाथ मेंउन शाल्यक्षतो को दे दिया। (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) देकर फिर उसे विसर्जित कर दिया।

મેહમાનોનો સત્કાર તેમજ સન્માન થઈ ગયું ત્યારે ધન્ય સાર્થવાહે પોતના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે સ્વજનો તેમજ ચારે પુત્ર વધૂઓના માતાપિતા વગેરે સગાવહાલા ઓની સામે પાંચ શાલિકણો (ડાંગરના કણો) લીધા અને પોતાના સૌથી મોટા પુત્રની ભાર્યા ઉજ્ઝિકાને બોલાવી. (સદ્દાવિત્તા એવં વયાસી તુમં णं पुत्ता ! ममहत्थाओ इमे पंचसालि अक्खए गेण्हाहि गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું " હે પુત્રિ ! આ પાંચ શાલિકણોને તમે સ્વીકારો અને એમને સારી રીતે સંભાળીને સુરક્ષિત રાખો. (जयाणं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालि अक्खए जाएज्ज तयाणं तुमं मम इमे पंचसालि अक्खए पडिदिज्जासि) હે પુત્રિ ! જ્યારે હું તમારી પાસેથી શાલીકણો માગું ત્યારે તમે મને પાછા આપજો.

(त्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ) આમ કહીને તેણે મોટા પુત્રની વધૂના હાથમાં શાલીકણો ને મૂઠી દીધાં. (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) શાલીકણો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु सा-उज्झिका नाम्नी वधूः धन्यस्य सार्थवाहस्यैतमर्थं 'तहत्ति तथेति' कृत्वा-तथास्त्विति कथयित्वा 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति स्वीकरोति। 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्तात् 'ते' तान् पञ्चशालयक्षतान् गृह्णति गृहीत्वा 'एगंतमवक्कमइ' एकान्तमपक्रामति एकान्त स्थाने गच्छति 'एगंतमवक्कमियाए' एकान्तमपक्रमितायाः एकान्तं गच्छन्त्याः मनसि 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः-आत्माश्रयो यावत्संकल्पःसमुदपद्यत एवमनेन प्रकारेण खलु निश्चयेन 'तायाणं' तातस्य श्वशुरस्य (तायाणं) अत्र आदरार्थं बहुवचनं, 'कोट्ठागारंसि' कोष्ठागारे 'बहवे' बहवः -अनेकसंख्यकाशालिनां 'पल्ला' पल्यकाः-पल्यकामानविशेषा तैः 'पडिपुन्ना' प्रतिपूर्णाः भृतास्तिष्ठंति सार्द्धत्रयमणप्रमितानां धान्यानामेकः पल्लक इत्यभिधीयते ते पल्लका बहवः कोष्टागारे भृताः संतीति भावः। 'तं जया णं' तद्-

(तएणं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ) चलते समय उस ज्येष्ठ पुत्र वधू उज्झिका ने धन्य सार्थवाह के "तथास्तु" कहकर इस कथनरूप अर्थको स्वीकार करलिया (पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालि अक्खए गेण्हइ) स्वीकार करके धन्य सार्थवाह के हाथ से उन पांच शाल्यक्षतों को फिर उसने ले लिया।

(गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ) लेकर फिर वह वहां से एकान्त स्थान में चली गई। (एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए०) वहां आकर उसने ऐसा विचार किया-(एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्लासालि णं पडिपुण्णा चिट्ठंति) तात-श्वशुरजी-के कोष्ठागार में-अनेक चावलो के पल्यक भरेहुए रक्खे हैं। यहां पल्यक एक प्रमाण विशेष का नाम है। यह ३॥) मन का होता है। तं जयाणं मम ताओ

આપીને તેમને જવાની આજ્ઞા આપી. (तएणं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ) જતી વખતે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્ઝિકાએ ધન્ય સાર્થવાહને 'સારૂ' (તથાસ્તુ) આમ કહીને તેની આજ્ઞાને સ્વીકારી. (पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ) આજ્ઞા સ્વીકાર્યા પછી ધન્ય સાર્થવાહના હાથથી તેમણે પાંચ શાલિકણો લઈ લીધાં.

(गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ) શાલિકણો ને લઈને તે ત્યાંથી એકાંત સ્થાન તરફ જતી રહી. (एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए०) ત્યાં એક તરફ આવીને તેણે વિચાર કર્યો-(एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्लासालिणं पडिपुण्णा चिट्ठंति) "મારા સસરાના કોઠારમાં ચોખાના ઘણા પલ્યકો ભરેલા છે. (પલ્યક એક પ્રમાણ વિશેષનું નામ છે. તે ૩॥ મણનું હોય છે) (तं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मात्-कारणात् यदा यस्मिन् समये खलु मम तातःश्वसुर इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचिष्यति 'तया णं' तदानीं तस्मिन्नेव समये खलु अहं 'पल्लंतराओ' पल्यान्तरात्-कोष्ठागारमध्ये अन्यतरात्पल्यकात् 'अन्ने' अन्यान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'गहाय' गृहीत्वा 'दाहामि' दास्यामि, इति कृत्वा-इति मनसि निधाय 'एवं संपेहेइ' एवं संप्रेक्षते-चिन्तयति 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य 'ते' तान् श्वसुरप्रदत्तान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'एगंते' एकान्ते 'एडेइ' एडति-प्रक्षिपति-पातयतीत्यर्थः 'एडित्ता' प्रक्षिप्य 'सकम्मसंजुत्ता' स्वकर्म संप्रयुक्ता-जातावाप्य भवत् स्वगृहादिकार्यकरणे उद्यूक्ताऽऽसीदित्यर्थः ॥सू० ३॥

मूलम्-एवं भोगवतियाए वि, णवरं सा छोल्लेइ छोल्लित्ता अणुगिलइ अणुगिलित्ता जाया, एवं रक्खियावि, णवरं गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जा

त्ति कट्टु पंच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाणं अहं पल्लंतराओ अंते पंच सालिअक्खए गहाय दहामित्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए एगंते एडेइ, एडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था) जब ऐसा कितने ही पल्यंक चावलों के कोष्ठागार में भरे हुए रखे हैं तो जिस समय श्वशुरजी इन पांच शाली-अक्षतों को मुझसे मां गेंगें मैं उसी समय कोष्टागार के मध्य में से किसी एक दूसरे पल्यंक से लेकर इन पांच शालि-अक्षतों को दे दूंगी। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके बादमें उसने श्वसुरप्रदत्त पांचशालि अक्षतो को एकान्त में दिया। और डालकर फिरवह अपने घर के काम करने में लग गई॥ सू० ३॥

जयाणं ममं ताओत्ति कट्टु पंच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाणं अहं पल्लंतराओ अंते पंच सालि अक्खए गहाय दहामि त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए एगंते एडेइ, एडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था) જ્યારે, ઘણા પલ્યકો ચોખા કોઠારમાં છે તો જે વખતે સસરા પાંચ શાલિકણો માગશે તે વખતે પાંચ શાલિકણો કોઠારના પલ્યકોમાંથી લઈને તેમને આપી દઈશ. " આ પ્રમાણે વિચારીને સસરાએ આપેલા પાંચ શાલિકણોને મોટા પુત્રની વધૂએ એક તરફ ફેંકી દીધા. અને ફેંકીને પોતાના હંમેશાના ઘરકામમાં પરોવાઈ ગઇ. ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एज्जासि तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालि अक्खए दलयइ तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ पक्खिवित्ता ऊसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—एवं भोगवतिकामपि-भोगवती नाम्नीं स्नुषामप्याह्वयति नवरं 'सा' भोगवती श्वशुरप्रदत्तपञ्चशालिकणरूपानक्षतान् स्वस्थाने नीत्वा 'छोल्लेइ' तुषरहितं करोति 'छोल्लित्ता' निष्तुषीकृत्य 'अणुगिलइ' अनुगिलति-भक्षयति, 'अणुगिलित्ता' अनुगिल्य भक्षयित्वा 'जाया' स्वकार्यसंप्रयुक्ता जाताचाप्यासीत्-स्वगृहकार्यकरणे लग्नाऽभवदिति भावः। एवमनेनैव प्रकारेण रक्षितामपि-रक्षितानाम्नीं तृतीयां स्नुषामप्याह्वयति, आहूय तेन पंचसंख्याः शालिकणा दत्ताः, नवरं सा तान् गृह्णाति, रम गृहीत्वा चायमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आ-

'एवं भोगवतिया एवि' इत्यादि। सूत्र

टीकार्थ-(एवं भोगवतियाए वि) उसी तरह भोगवतिका नामकी अपनी पुत्रवधू थी-उसे भी धन्यसार्थवाहने बुलाया (णवरं) इसमें विशेषता केवल इतनी रही कि (सा छोल्लेइ) उसने उन शाल्यक्षतोंको अपने स्थान पर लेजाकर तुषरहित किया (छोल्लित्ता अणुगिलइ) और तुष रहित कर वहउन्हे खा गई (अणुगिलित्ता जाया) खाकर बादमें अपने काम में लग गई। (एवं रक्खिया वि) इसी प्रकार धन्यसार्थवाहने अपनी तीसरी रक्षिता नामकी पुत्रवधू को बुलाया (णवरं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए०) बुलाकर उसे भी पांच शालिकणो को दिया।

'एवं भोगवतियाएवि' इत्यादि

टीकार्थ-(एवं भोगवतियाए वि) આ પ્રમાણે ધન્યસાર્થવાહે ભોગવતિકા નામની પોતાની બીજી પુત્રવધૂને બોલાવી (णवरं) ભોગવતિકાના વિષે વધારાનું એ જાણવું જોઇએ કે (सा छोल्लेइ) તેણે શાલિકણોને પોતાના નિવાસ સ્થાને લઈ જઇને તુષ (ફોતરાં) વગરના બનાવ્યા (छोल्लित्ता अणुगिलइ) અને શાલિકણોનાં ફોતરા સાફ કરીને તેમને ખાઇ ગઈ. (अणुगिलित्ता जाया) ખાધા પછી તે પોતાના કામમાં પરોવાઈ ગઇ. (एवं रक्खिया वि) આ રીતે ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતાને બોલાવી (णवरं गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए) બોલાવીને તેમને પણ પાંચ શાલિકણો આપ્યા. રક્ષિતાએ શાલિ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यात्मिक-आत्माश्रेयः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत संकल्पः समुदपद्यत, एवं खलु मां तातः श्वसुरः ' इमस्स ' एतेषां मित्रज्ञातिप्रमुखाणां ' पुरओ ' पुरतः-समक्षं पुनश्चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य पुरतोऽग्रे शब्दयित्वा चैवमवादीत् वक्ष्यमाणरीत्या मां कथितवान् त्वं खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रि ! मम हस्तादिमान् पञ्चशालिकणान् गृहाण गृहीत्वा आनुपूर्व्या संरक्षन्ती संगोपायन्ती विहर, यावद् यदाऽहं पुनर्याचेय तदा खलु त्वं मह्यमिमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जाएज्जासि' प्रतिदद्याः प्रति समर्पयेः, इति कथयित्वा मम हस्ते पञ्चशालिकणा ददाति ' तं-भवियव्व मेत्थ कारणेणं ' तस्माद्भवितव्यमत्र किंचित्कारणमित्येवं ' संपेहेइ ' संप्रेक्षते -पर्यालोचयति विचारयतीत्यर्थः ' संपेहित्ता ' संप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्

उसने वे ले लिया। लेने के बाद उसे ऐसा विचार आया (एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हा णं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी) कि ये मेरे तात-श्वसुर-जो मुझे इस मित्र ज्ञाति-आदि मंडली के समक्ष बुलाकर इसतरह कह रहे हैं (तुमण्णं पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालि अक्खए दलयइ तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं) कि " हे पुत्रि। तुम मेरे हाथसे पांच शाल्यक्षतों को लो और लेकर इन्हे सुरक्षित देखो। जब मैं तुम से इन्हे पीछे वापिस मांगू तो तुम इन पांचो शाल्यक्षतोंको मुझे समर्पित कर देना। सो ऐसा कहकर जो ये पांच शाल्यक्षतो को मुझे दे रहे हैं तो इस विषय में कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिये (त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ते पंच सालि

કણોને લઇ લીધા અને ત્યાર બાદ તેને આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો-(एवं खलु ममंताओ इमस्स मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी) " મારા સસરા પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓ ના માતાપિતા વગેરેની સામે મને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહી રહ્યા છે-(तुमण्णं पुत्ता! मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंचसालि अक्खए दलयइ तं भवियव्वमेत्थकारणेणं) " હે પુત્રિ ! આ પાંચ શાલિકણો તમે મારી પાસેથી લો અને લઇને એમને સંભાળીને રાખો. જ્યારે હું તમારી પાસેથી શાલિકણો માગુ ત્યારે આ પાંચે શાલિકણો તમે મને પાછા આપજો. આમ કહીને મને આ શાલિકણો આપી રહ્યા છે તો એની પાછળ ગમેતે કારણ તો હોવું જ જોઇએ. (त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंचसालि अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ ,बंधित्ता रयण करंडियाए पक्खिवेइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चशाल्यक्षतान् ' सुद्धे ' शुद्धे-पवित्रे ' वत्थे ' वस्त्रे ' बंधइ ' बध्नाति-'बंधित्ता' बध्वा ' रयणकरंडियाए ' रत्नकरंडिकायां-रत्नडिब्बिकायां ' पक्खिवेइ ' प्रक्षिपति रक्षार्थं स्थापयति ' पक्खिवित्ता ' प्रतिक्षिप्य स्थापयित्वा ' उसीसामूले ' उच्छीर्षकमूले-उपधानस्याधोभागे ' ठावेई ' स्थापयति ' ठावित्ता ' स्थापयित्वा ' तिसंझं ' त्रिसंध्यं-प्रातर्मध्याह्नसायंकाललक्षणे ' पडिजागरमाणी ' प्रति जाग्रती तद्रक्षार्थं सावधानासती ' विहरइ ' विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्–तएणं से धण्णे सत्थवाहे तहेवमित्त जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव तं भणियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु मम एए पंच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी – तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह करित्ता इमे पंच सालि अक्खए

अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंज्झं पडिजागरमाणी विहरइ) ऐसा जब उसने विचार किया तो विचार करके उसने उन पांच शाल्य क्षतों को शुद्ध वस्त्र में बांधा बांधकर उन्हें फिर रत्ननिर्मित एक डब्बे में रख दिया। रखकर उस डब्बे को उसने उसीसे-के नीचे भाग में सिरहाने के अधोभाग में रख दिया। इस तरह वह प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में इन तीनों कालों में उसकी संभाल में सावधान होकर रहने लगी। सूत्र " ४ "

पक्खिवित्ता उसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ:) આમ વિચારીને તેણે પાંચ શાલિકણોને શુદ્ધ વસ્ત્રમાં બાંધીને રત્ન જડેલી એક ડાબલીમાં મૂકી દીધા. ડાબલીમાં મૂકીને તેણે તે ડાબલીને પોતાના ઓશીકાની નીચે મૂકી દીધી. આ પ્રમાણે તે સવાર બપોર અને સાંજ આમ ત્રણે વખત તે ડાબલીને સંભાળીને રાખવા લાગી. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वावेह वावित्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेह करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह । तएणं ते कोडुंबिया रोहणीए एयमट्ठं पडिसुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवंति विहरंति तएणं ते कोडुंबिया पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववंति दुच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेंति करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएणं से धण्णे ' ततस्तदनन्तरं खलु स धन्यसार्थवाह ' तहेव ' तस्यैव मित्रादीन् यावच्चतुर्थीं रोहिणिकां स्नुषां शब्दयति, शब्दयित्वा ' जाव ' यावच्छब्देन यथा तृतीया रक्षिका शाल्यक्षतविषये चिंतयति तथैव रोहिणिकापि

' तएणं से धण्णे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से धण्णे) उस धन्यसार्थवाह ने (तहेव मित्तं जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ) उसी तरह मित्रादि परिजनों के समक्ष अपनी चतुर्थ पुत्रवधू कि जिसका नाम रोहिणी था उसे बुलाया (सद्दावित्ता जाव तं भणियव्वं) बुलाकर उसे पांच शाल्यक्षत देकर उन्हें सुरक्षित रखने के लिये उससे कहा ।

श्वसुर की बात सुनकर जिस प्रकार प्राप्त शाल्यक्षतों के विषय में तृतीय पुत्रवधू रक्षिका ने विचार किया था उसी तरह इस चतुर्थ पुत्रवधू

' तएणं से धण्णे ' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યાર બાદ (से धण्णे) ધન્ય સાર્થવાહે (तहेव मित्तं जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ) આ પ્રમાણે જ મિત્ર વગેરે સંબંધીઓની સામે પોતાની ચોથી પુત્ર વધૂ રોહિણીને બોલાવી. (सद्दावित्ता जाव तं भणियव्वं) બોલાવીને તેણે પાંચ શાલિકણો આપીને તેઓને સુરક્ષિત રાખવા માટે કહ્યું.

સસરાની વાત સાંભળીને રોહિણીએ ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિકાએ જેમ વિચારો કર્યા તેમજ તેણે પણ આ વિષે ઘણી જાતના વિચારો કર્યા. છેવટે તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विविधप्रकारेण चिन्तयति, 'तं भणियव्वं' तस्माद्भणितव्यमत्र किञ्चित्कारणेन मम तातेन श्वसुरेण मह्यं पंच शाल्यक्षता दत्ताः, तत्र कोऽपि हेतुरस्ति । 'तं' तद् तस्मात्कारणात् ' सेयं ' श्रेयः सुखकरमेतदेव खलु मम ' एए ' एतान् पञ्च शाल्यक्षतान् संरक्षन्त्याः । संगोपायन्त्याः संवर्द्धयन्त्याः इति निश्चित्य एवं संप्रेक्षते= पर्यालोचयति, संप्रेक्ष्य च कुलगृहपुरुषान्=कृषिकर्मनिपुणनिजकुटुम्बपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा चैवं वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्, हे देवानुप्रियाः यूयं खलु एतान् पंचशाल्यक्षतान् गृह्णीत गृहीत्वा ' पढमपाउसंसि ' प्रथम प्रावृषि वर्षाकालप्रारम्भसमये ' महावुट्ठिकायंसि ' महावृष्टिकाये ' निवइयंसि समाणंसि ' निपतिते सति महावृष्टिरूपेण जलराशि रूपेऽप्काये भूमौ निपतिते सतीत्यर्थः

रोहिणीकाने भी विविधरूप से विचार किया। अन्त में इस निष्कर्ष पर वह पहुँची कि श्वसुरजीने जो ये पांच शाल्यक्षत मुझे दिये हैं— और इनकी रक्षा आदि करने के विषय में जो मुझ से कहा है सो इसमें कोइ न कोइ कारण अवश्य है। (तं सेयं खलु मम एए पंच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ) इसलिये मुझे यही सुखकर है कि मैं इन पांच शाल्यक्षतों की रक्षा करूँ इन का संगोपन और संवर्द्धन करूँ। ऐसा निश्चय कर उसने यह पूर्वोक्त रूप से विचार किया। (संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ) विचार कर फिर बाद में उसने कृषिकर्म करने में निपुण अपने कुटुम्ब के पुरुषो को बुलाया। (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुला कर ऐसा कहा- (तुब्भेणं देवाणुप्पिया! एए पंच सालि अक्खए गिण्हह गिण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं

એ નિર્ણય ઉપર આવી કે સસરાએ મને પાંચ શાલીકણો આપ્યા છે અને તેઓની રક્ષાભાટે મને જે કંઇ કહ્યું છે તેની પાછળ કંઈને કંઇ કારણ તો ચોક્કસ હોવું જ જોઇએ. (तं सेयं खलु मम एए पंच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए त्ति कट्टुएवं संपेहेइ) તો મારી એજ ફરજ છે કે હું તેઓની રક્ષા કરૂં તેઓનું સંગોપન તેમજ સંવર્દ્ધન કરૂં. આ પ્રમાણે રોહિણી એ પાંચ શાલિકણો ને માટે વિચાર કર્યો. (संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ) વિચાર કરીને તેણે કૃષિકર્મ કરવામા એટલે કે ખેતીમાં ચતુર એવા પોતાના જ કુટુંબના માણસોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેણે આ રીતે કહ્યું-

(तुब्भेणं देवाणुप्पिया! एए पंच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'खुड्डागं' क्षुल्लकं 'कयारं' केदार=क्षेत्रं क्यारा, इति भाषा प्रसिद्धं 'सुपरिकम्मियं' सुपरिकर्मितं=शाल्यक्षतवपनयोग्यं 'करेह' कुरुत, कृत्वा च 'इमे' इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'वावेह' वपत प्ररोहार्थं क्षेत्रे प्रक्षिपत, उप्त्वा=क्षेत्रे वपनं कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान् क्षेत्रे जातान् पुनस्तान् वर्धनार्थं द्वित्रिवारम्-उत्पाट्य अन्यत्र क्षेत्रे समारोपितान् 'करेह' कुरुत एकस्मात् स्थानादन्यस्थाने रोपयत 'करित्ता' कृत्वा-रोपयित्वा, 'वाडिपरिक्खेवं' वाटिकापरिक्षेपं = प्राकाराकारेण वाटिकां कुरुत कृत्वा संरक्षन्त, संगोपायन्त आनुपूर्व्या=अनुक्रमेण 'संवड्ढेह' संवर्धयत।

सुपरिकम्मियं करेह) हे देवानुप्रियो! तुम लोग इन पांच शालि अक्षतों को लो-और लेकर जब सर्व प्रथम वर्षाकाल के प्रारम्भ में जलराशि रूप अप्काय महा वृष्टिरूप से भूमि पर गिरे तो उस समय तुम छोटी सी एक क्यारी में शालि अक्षतों को बोने के योग्य करो (करित्ता इमे पंच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खय निहए करेह, करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह) जब वह क्यारी अच्छी तरह से परिकर्मित हो जावे तो उसमें इन पांच शालि अक्षतों को तुम लोग बो दो।

बोकर दुबारा तिबारा उन्हे उत्खात निहत करो-अर्थात् जब वे खेत में-क्यारी में-अंकुररूप से उत्पन्न हो जावे तब उन्हें वृद्धिंगत करने के लिये वहां से उखाड़ो और फिर दूसरी जगह-क्यारी में उन्हें आरोपित करो। इस तरह दो तीन बार करो। करके फिर उस खेत को वाड़ी से परिवृत करो-प्राकार के आकार जैसी कांटो की बाड़ से

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે આ પાંચ શાલિકણો લો. અને વર્ષાકાળ ના પ્રારંભમાં અપ્કાયમહાવૃષ્ટિ રૂપે જળ વૃષ્ટિ થાય ત્યારે તમે નાની સરખી એક ક્યારી ને આ શાલિકણો વાવી શકો તે રીતે યોગ્ય બનાવજો, (करित्ता इमे पंच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खय निहए करेह, करित्ता वाडि परिक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह) ક્યારી જ્યારે સરસ રીતે તૈયાર થઈ જાય ત્યારે તેમાં આ પાંચે શાલિકણોને વાવજો.

વાવીને બીજી અને ત્રીજી વખત ઉત્ખાત નિહત કરો એટલે કે જ્યારે શાલિકણો ક્યારીમાં ઊગી જાય ત્યારે તેઓના વર્ધન માટે તે સ્થાનેથી ઉપાડીને ફરી બીજે સ્થાને રોપો. આ પ્રમાણે તમે બે ત્રણ વખત કરો આમ કરીને તમે તે શાલિકણોવાળી ક્યારીની ચોમેર કાંટાઓની વાડ બનાવો. આ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनंतरं खलु ते कोडुम्बिकपुरुषाः रोहिण्याः एतमर्थं शाल्यक्षतसंवर्धनरूपमर्थं प्रति शृण्वन्ति-रोहिणी कथनानुसारेण स्वीकुर्वन्ति स्वीकृत्य च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृह्णन्ति गृहीत्वा चानुपूर्वेण क्रमेण संरक्षन्ति संगोपायन्ति, 'विहरंति' आसते । ततस्तदनन्तरं खलु ते कौडुम्बिकाः पुरुषाः प्रथममाद्यवृषि महावृष्टिकाये निपतिते सति क्षुल्लकं केदारं सुपरिकर्मितं शालिवपनयोग्यं कुर्वन्ति कृत्वा च तान् पंच शाल्यक्षतान् वपन्ति द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवारं 'उक्खय निहए' उत्खात निहतान् मूलस्थानादुत्पाट्य अन्यत्र स्थाने समारोपितान् कुर्वन्ति कृत्वा वाटिका परिक्षेपं कुर्वंति कृत्वा च आनुपूर्व्या अनुक्रमेण-संरक्षन्तः-सम्यक् रक्षां कुर्वन्तः संगोपायन्तः संवर्धयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ५ ॥

उसे घेर दो-और घेर कर उस की रक्षा करो-उपद्रवों से उसे बचाओ इस प्रकार क्रमशः इन शालि अक्षतों को तुम लोग बढाओ। (तएणं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणंति ते पंचसालिअक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेंति संगोवंति विहरंति) रोहिणिका के इस शालि अक्षत वर्धनरूप अर्थ को उन कौडुम्बिक पुरुषों ने स्वीकार कर लिया और उन पांच शालि अक्षतों को उससे ले लिया। लेकर रोहिणीका के कहने के अनुसार क्रमशः उन सब ने रक्षा की और उपद्रवों से उन्हें बचाया।

(तएणं ते कौडुंबिया पढमापाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डीयं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते पंच सालि अक्खए वपंति दुच्चंपि तच्चंपि उक्खय निहए करेंति, करित्ता वाडि परिक्खेवं करेंति, करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संव-

પ્રમાણે તમે તે વાવેલા શાલિકણોની વિવિધ રીતે સંભાળ પૂર્વક રક્ષા કરતાં કરતાં તેઓનું વર્ધન કરો. (तएणं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेंति संगोवंति विहरंति) રોહિણીના-શાલિકણોના વર્ધન માટેના બધા સૂચનો કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકાર્યા, અને પાંચે શાલિકણોને તેમની પાસેથી લઇ લીધા. લઈને રોહિણીની સૂચના મુજબ શાલિકણો ની તેમણે ઉપદ્રવોથી રક્ષા કરી.

(तएणं ते कौडुंबिया पढमापाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डीयं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते पंचसालि अक्खए वपंति दुच्चंपि तच्चंपि अक्खए निहए करेंति, करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति) વર્ષા કાળના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं ते सालीअणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा सालीजाया किण्हा किण्हो भासा जाव निउरंबभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तएणं सालीपत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था, तएणं ते कोडुंबिया ते सालिए पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णव पज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थणं चोक्खाणं सूयाणं अवखंडाणं अप्फुडियाणं छड्डुछडापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए । तएणं ते कोडुंबिया ते सालीणवएसु घड़एसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता

डुमाणा विहरंति) जब सर्व प्रथम वर्षा काल के प्रारंभ में जलराशी रूप अप्कायमहा वृष्टि के रूप भूमि पर बरसा तब उन लोगों ने शालि वपन के योग्य एक छोटा क्यारी बनाया। बनाकर उस में उन पांच शालि अक्षतों को बो दिया। बाद में जब वे अंकुर के रूप में उत्पन्न हो गये—तब उन्हे मूलस्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में आरोपित कर दिया। इस तरह दो तीन बार उन्हें उखाड़ और आरोपित किया पश्चात् उस खेत को बाड़ से परिवृत कर दिया। इस प्रकार कर के उन सब ने क्रमशः उनकी रक्षा की-उपद्रवों से उन्हें बचाया और उन्हें बढाया ॥ सू०५ ॥

પ્રારંભમાં જ્યારે સૌ પ્રથમ અપ્કાય મહાવૃષ્ટિ ના રૂપમાં જળ વર્ષા થઈ ત્યારે તે લોકોએ શાલિકણોને વાવવા યોગ્ય એવી એક નાની સરખી ક્યારી બનાવી

નાની ક્યારી બનાવીને તેઓએ તેમાં પાંચ શાલિકણોને વાવ્યા. જ્યારે શાલિકણો અંકુરિત થયા ત્યારે તેઓએ તેમના પોતાના મૂળ સ્થાનેથી ઉપાડીને બીજા સ્થાને રોપી દીધા. ત્યાર બાદ ક્યારીને તેઓએ કાંટાની વાડ કરી લીધી. આ પ્રમાણે તે લોકોએ યથાક્રમે વાવેલા શાલિકણોની રક્ષા કરી, ઉપદ્રવોથી તેમની સંભાળ રાખી અને તેમનું વર્ધન કર્યું. ॥ સૂત્ર " ૫ "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उवलिंपंति, उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति। तएणं ते कोडुंबिया दोच्चंमि वासरत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति ते साली ववंति दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयणिहए जाव लुणेंति जाव चलण तलमलिए करेंति, करेत्ता पुणंति तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा जाव एगदेसंसि ठावेंति ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति। तएणं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति लुणित्ता संवहंति संवहित्ता खलयं करेंति खलयं करित्ता मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया, तएणं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति जाव विहरंति चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ॥ सू० ६ ॥

टीका–ततस्तदनन्तरं खलु ते शालय आनुर्व्या संरक्ष्यमाणाःसंगोप्यमानाः संवर्द्धयमानाः शालयः ' जाया ' जाताः–निष्पन्नाः किंभूताः ? किण्हा ' कृष्णाः वर्णतः श्यामाः ' किण्होभासा ' कृष्णावभासाः कृष्णच्छायाः श्यामकान्तयः यावद्

' तएणं ते साली अणुपुव्वेणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से साली) अन्य खेत में आरोपित की गई वह शाली (अणुपुव्वेणं) क्रम २ से (सारक्खिज्जमाणा, संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया) उन लोगों से रक्षितकी जाकर संगोपित की जाकर बढाई गई सो खूब बढ गई (किण्हा किण्हो भासा, जाव

' तएणं ते साली अणुपुव्वेणं ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારબાદ (ते साली) બીજા ખેતરમાં ઉપાડીને વાવેલા શાલિ કણો (अणुपुव्वेणं) યથાક્રમે (सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा, संवड्ढिज्जमाणा साली जाया) તેઓથી રક્ષિત, સંગોપિત તેમજ વર્ધિત થઇને ખૂબજ વૃદ્ધિ પામ્યા. (किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया, पासाईया दरसणिज्जा, अभिरूवा)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'मेह निउरंबभूया' मेघनिकुरम्बभूता अन्योन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घन निरंतरच्छायरमणीयमेघानां निकुरंबः समूहस्तद्वत् शोभाशालिन इत्यर्थः अतएव 'पासाईया' प्रासादीयाः दर्शकमनः प्रसन्नता हेतुत्वात् 'दरिसणिज्जा' दर्शनीयाः नेत्रानन्दकारित्वात् 'अभिरूवा' अभिरूपाः कमनीयत्वात् 'पडिरूवा' प्रतिरूपा-सर्वथा चित्तहारित्वात्। ततस्तदनन्तरं खलु 'साली' शालयः 'पत्तिया पत्रिता-पत्रयुक्ता जाता 'वत्तिताः-वृत्ताकारतया वर्तुला जाता नालरूपतया शाखादिना समतया वा वृत्तभावं प्राप्ताः 'गब्भिया' गर्भिताः प्रवर्धनानन्तरं जातगर्भाः= अन्तः सञ्जातमञ्जरिका इत्यर्थः 'पसूयाः' प्रसूताः=निस्सृतमञ्जरिकाः 'आगयगंधा' आगतगन्धाः=सर्वतः प्रसरत्सुरभिगन्धाः 'खीराइया' क्षीरकिताः= समुत्पन्नदुग्धाः, 'बद्धफला' 'बद्धफलाः क्षीरस्य कणरूपेण परिणामादुत्पन्नफला 'पक्का' पक्वाः कणानां परिपाकात् परिपुष्टा 'परियागया' पर्यायागताः= सर्वावयवेन पक्वावस्थामुपगताः। 'सल्लइया' शलाकिताः=शुष्कपत्रत्वेन

निकुरंबभूया, पासाईया, दरसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा) वर्ण से वह काली हो गई आभा भी उसकी काली निकलने लगी। यावत् वह मेघ निकुरम्ब समूह जैसी हो गई।

शाखा प्रशाखाओ के परस्पर में प्रवेश से, सान्द्र और अन्तर रहित छाया से रमणी य मेघों के समूह की तरह वह शोभित होने लगी। जो भी कोई उसे देखता तो उसका मन आनन्द से खिल उठता। नेत्रों को उसके दर्शन से बहुत अधिक शीतलता प्राप्त होती। इसलिये वह कमनीय और प्रतिरूप बन रही थी। चित्ताकर्षक थी और बहुत अधिक मनोज्ञ थी। (तएणं साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगय गंधा खीराइया, बद्धफला, पक्का, पड़ियागया, सल्लइया, पत्तइया हरियपव्वकंडा, जाया यावि होत्था) धीरे २ समयानुसार वह

તે શ્યામ રંગના થઇ ગયા. તેમનામાંથી કાળી આભા ફૂટવા લાગી. યાવત્ તે મેઘનીકુરંબ જેવાં થઇ ગયા.

આ રીતે વાવેલી તે ડાંગર શાખા પ્રશાખાઓના પ્રવેશથી સાંદ્ર તેમજ સઘન છાયાથી રમણીય મેઘસમૂહો જેવી શોભવા લાગી. જે કોઇ તેના સૌંદર્યને જોતું ત્યારે તેનું મન હર્ષઘેલું થઇને નાચી ઉઠતું હતું. તેને જોવાથી નેત્રો શીતળતા અનુભવતા હતા. એથી તે કમનીય અને પ્રતિરૂપ લાગતી હતી. તે ચિત્તને આકર્ષનારી તેમજ ખૂબજ મનોહર હતી. (तएणं साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया आगमगंधा, खीराइया बद्धफला पक्कापडियागया, सल्लइया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शलाकारूपेणावस्थिताः ' पत्तइया ' पत्रकिताः=पक्वपत्राणां प्रायशः क्षरणादल्प पत्राः, ' हरियपव्वकंडा ' हरितपर्वकाण्डाः-हरितानि=परिपक्वतया हरितालवर्णानि आशुकानि प्रादुर्भवदङ्कुरवत्पीतवर्णानि - पर्वकाण्डानि येषां ते तथा, जाताश्चाप्य-भवन् सम्पूर्णतया परिपक्वा जाता इत्यर्थः। ततः खलु ते कौटुम्बिका तान् शालीन्

शाली-धान्य-पत्र युक्त होने लगी, आकारमें गोल २ दिखलाई देने लगी। नाल के ऊपर शाखा आदि-अवयव समान रूप से नीचेकी ओर छत्ते के समान झुक गये थे इसलिये वह आकार मे गोलाकार दिखलाई देती थी। जब वह अच्छी तरह वर्धित हो चुकी तब उसमें भीतर मंजरी आगई और बाहिर निकल आई। चारों ओर सुगंधि उसमे से फैलने लगी।

धीरे २ उस मंजरीमे दूध भी उत्पन्न हो गया। और वह दुग्ध कणरूप से परिणम गया इससे उस मंजरी में अन्न भी आगये। वे अन्नके दाने भी परिपक्व हो गये संपूर्ण रूप से अच्छी तरह पककर पुष्ट हो गये। इस तरह जब वह शालि-धान्य पककर तैयार हो गई -तब उसके पत्ते शुष्क हो चले और वे शलाई के आकर में उसमें लटकने लगे। धीरे २ कुछ २ पके हुए पत्ते उसमें से क्षरित भी हो गये। इसलिए उसमें बहुत कम पत्ते लगे हुए रह गये। उसके पर्व काण्ड परिपक्व होने के कारण प्रादुर्भवित अंकुर के समान पीले हो गये।

पत्तइया, हरिय पव्वकंडा जाया यावि होत्था) સમય જતાં યથાક્રમે તે ડાંગર પાંદડા વાળી થવા માંડી. આકારમાં તે ગોળ દેખાવા લાગી. ડાંગરની દાંડીની ઉપર નાની શાખાઓ વગેરે અવયવો સરખી રીતે છતરીના આકારમાં નીચે નમેલાં હતાં એથી જ તે આકારમાં ગોળ દેખાતી હતી. જ્યારે તે સારી પેઠે મોટી થઈ ગઈ ત્યારે તેમાં મંજરીઓ નીકળી. અને તેની સુવાસ ચોમેર પ્રસરી ગઈ.

ધીમે ધીમે મંજરીઓમાં દૂધ ઉત્પન્ન થયું અને યથા સમયે તે દૂધ તેમાંજ કણોના રૂપમાં બંધાવા લાગ્યું. આમ સમય જતાં શાલિકણો સંપૂર્ણ રીતે પરિપકવ તેમજ પુષ્ટ થઈ ગયા. આ રીતે જ્યારે તે શાલિધાન્ય નો પાક તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેના પાંદડાંસૂકાઈ ગયાં અને તે શલાકા (સળી) ના આકારે તેમાં લટકવા લાગ્યા. તેમાં લટકવા લાગ્યાં ધીમે ધીમે પાકેલાં પાંદડાં તેમાંથી ખરવા લાગ્યાં. એથી ખૂબજ થોડાં પાંદડાં તેની ઉપર રહી ગયાં. તેનો પર્વકાંડ (છોડની બે ગાંઠ વચ્ચેનો ભાગ) પરિપકવ થઈ જવાથી પ્રાદુર્ભવિત અંકુરની જેમ પીળો થઈ ગયો હતો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्रितान् यावत् शल्यकित पत्रकितान् ज्ञात्वा तीक्ष्णैः ' णवपज्जणएहिं ' नवपायनकै-नवानि=नवीनानि पायनकानि=लोहकारेण तापितानि कुट्टितानि तीक्ष्णधारी कृतानि कृत्वा पुनस्तापयित्वा जले निर्वोलनानि येषां तानि, तैः ' असियएहिं ' 'असिय ' इति दात्रार्थकोऽयंदेशी शब्दः दात्रैरित्यर्थः, लुनन्ति=छेदयन्ति, लवित्ता ' करतलमलिए ' करतलमृदितान् कर लघर्षणेनान् कुर्वन्ति, शालिकणान् मञ्ज रीतो निस्सारयन्तीत्यर्थः ' [पुणंति ' लुनन्ति पलालादीनपसारयन्ति तत्र खलु=

(तएणं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति, लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थणं चोक्खाणं सयाणं अक्खंडाणं अप्फुडियाणं छड्डुछडापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए) इस तरह जब वह शालि-सस्य पूर्णरूप पककर तयार हो गई और जब उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उसे पत्रित यावत् शाल्यंकित पत्रांकित-पके हुए पत्तो वाली और शालि से युक्त देखा तो उसे पूर्ण पकी हुई जानकर तीक्ष्ण नव पायनक वाले दात्रों से-हँसियोंसे उन लोगों ने उसे काट लिया ।

" लुहार के द्वारा जो तापित और कुट्टित कर पहिले तीक्ष्ण धारी वाले बनाये गये थे हैं और बाद में फिर तापित कर जलमें बुझाये गये हैं " यह " नव पायनक " इस शब्द का अर्थ है । यह " आसिएहिं " यह हँसिया (दात्र) वाचक देशीय शब्द है । काटकर फिर उन्होंने उसशालि मंजरी में से हाथों से मर्दित कर शालिकणों को निकाला ।

(तएणं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं आसियएहिं लुणेंति लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति तत्थणं चोक्खाणं सयाणं अक्खंडाणं अप्फुडियाणं छड्डुछडापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए) આ પ્રમાણે જ્યારે તે શાલિધાન્ય પૂર્ણરૂપે પરિપકવ થઈને તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ તેને પત્રિત યાવત શલ્યંકિત પત્રાંકિત એટલે કે પાકેલાં પાંદડાં વાળી જોઈ ત્યારે તેને પૂર્ણરૂપે પરિપકવ થયેલી જાણીને તીક્ષ્ણ ધારવાળી દાતરડીથી તેને કાપી નાખી.

" લુહાર વડે તપાવી તેમજ ટીપીને પહેલાં તીક્ષ્ણ ધારવળાં બનાવવામાં આવે અને ત્યા બાદ ફરી તપાવીતે પાણીમાં ઠંડાં કરવામાં આવે તેને ' નવ. પાયનક ' કહેવામાં આવે છે.

' આસિએહિં ' આ દાત્ર (દાતરડી) વાચક દેશી શબ્દ છે.

ડાંગરને કાપીને તેઓએ શાલિમંજરીઓને હથેળીથી મસળીને શાલીકણો છૂટા પડયાં. ભૂસાને તેઓએ ત્યાંથી દૂર કર્યું. આ રીતે તે સ્થાન ભૂસુ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मिन् स्थाने ' चोक्खाणं ' चोक्षाणं=कचवरनिस्सारणेन स्वच्छानाम् ' सुइयाणं ' शुकितानां=शुकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः ' अक्खंडाणं ' अखण्डानाम्=अक्षतानाम् ' अप्फुडियाणं ' अस्फुटितानाम्=अत्रुटितानाम् ' छड्डछडापूयाणं ' छड्डछडापूतानाम्- ' छड-छड ' शब्दपूर्वक सूर्पादिना शोधितानां शालीनां शालिकणानां ' मागहए ' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्धः, ' पत्थए' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिताः शालयः संजाता इत्यर्थः।

ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तान् शालीन् ' नवएसु ' नवकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकलशेषु ' पक्खिवंति ' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य ' उवलिंपंति ' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना संयोजनेन मुख निरोधं कुर्वन्ति उपलिप्य ' लंछियमुद्दिए ' लाञ्छितमुद्रितान् लाञ्छिता= रेखादि-

---

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहां से हटाया। इस तरह उसस्थान में चोखे-कूड़ाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त -वपन योग्य ऐसे अखंड-अक्षत-साबित-टूटे नहीं तथा छड़ छड़ शब्द पूर्वक सूपादि से शोधित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए। (तएणं ते कौडुंबिया ते सालि णवएसु, घडएसु, पक्खिवंति पक्खिवित्ता उवलिंपंति, उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा विहरंति) इस के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया। भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बंदकर दिया। बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

વગેરે સાફ કરવાથી સ્વચ્છ શાલિકણો શૂક યુક્ત-વાવવા યોગ્ય, અખંડ-અક્ષત સૂપ વગેરે, થી છડ છડ શબ્દ કરાવડાવીને સાફકરેલાં શાલિકણો નીકળ્યા. તે શાલીકણો મગધદેશ પ્રસિદ્ધ એક પ્રસ્થ પ્રમાણ હતા. (तएणं ते कौडुंबिया ते सालिणवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता, उवलिंपंति उवलिंपित्ता लछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा विहरंति) ત્યાર બાદ કૌટુંબિક પુરુષોએ શાલિકણોને નવા નાના નાના કળશોમાં ભરીને મૂકી દીધા.

ત્યાર બાદ કળશોના મોં ઢાંકીને તેમને છાણ વગેરેથી લીંપીને બંધ કરી દીધા. કળશોને બંધ કરીને રેખાઓ વગેરેથી તેમને ચિહ્નિત કરીને તેમના ઉપર નામની મહોર લગાવી દીધી. ત્યાર પછી ભંડારમાં એક તરફ કળશોને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिह्नेन चिह्नितान्,मुद्रिताः=नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्ठागारस्स' कोष्ठागारस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा संरक्षन्तः संगोपायन्तो विहरन्ति।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारात्रे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथमप्रावृषि प्रावृट् प्रारम्भसमये महावृष्टिकाये निपतिते महावर्षायां सत्यां क्षुल्लकं केदारं 'सुपरिकर्मितं' सुपरिकर्मितं=विशिष्ट लक्षणमृत्तिकादिदानेन हलकुदालादिनोत्खननेन च संस्कारितं कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्चंपि तच्चंपि' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिवारमपि 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान्= उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दीं। पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया। समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और संभाल भी करते रहे। (तएणं ते कौडुंबिया दोच्चंपि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति) इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने द्वितीय वर्ष संबन्धी चौमासा जब लगा-तब-सर्व प्रथम महवृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुदाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया। उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया। (ते शालि वपंति, दोच्चंपि तच्चंपि उक्खय निहए जाव लुणेंति) बादमें उस शालीं को उसमें बो दिया।

पहिले की तरह जब वह धान्य अंकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहां से उखाड कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया। इस तरह यह

મૂકી દીધા. યથા સમય તેઓ તેમની સંભાળ પણ રાખતા હતા. (तएणं ते कौडुंबिया दोच्चंपि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति) ત્યાર પછી કૌટુંબિક પુરુષોએ બીજા વર્ષે ચોમાસાના દિવસો આવ્યાં ત્યારે સૌ પહેલાં મહાવૃષ્ટિના રૂપે જળવર્ષા થયા બાદ હળથી ખેડીને તેમજ કોદાળી વગેરે થી ખોદીને એક નાનું ખેતર તૈયાર કર્યું તેમાં ચીકણી અને કોમળ માટી નાખીને તેને ખૂબજ સરસ શાલિ (ડાંગર) વાવવા યોગ્ય બનાવી દીધું. (ते सालीवपंति, दोच्चंपि तच्चंपि उक्खय-निहए जाव लुणेंति) ત્યાર પછી ખેતરમાં શાલિનેવાવી દીધી.

પહેલાંની જેમ જ્યારે શાલિના અંકુરો બહાર નીકળ્યા ત્યારે કૌટુંબિક માણસો એ તેના છોડોને ત્યાંથી ઉપાડીને બીજા સ્થાને રોપી દીધા. આ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र खलु शालीनां बहवः कुडवाः शालिसंभृता बहवः कुडवा अभूवन् संजाताः, यावत् एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा संरक्षन्तः संगोपायन्तो विहरन्ति. । ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तृतीये वर्षारात्रे महावृष्टिकाये निपतिते सति बहून् केदारान् सुपरिकर्मितान् यावद् लुनन्ति, लवित्वा संवहन्ति=भाररूपेण तान् बद्ध्वा मस्तके स्कंधेवा निधाय खले स्थापयितुं समानयन्ति. तत्रतोऽपनीय तान्वहन्ति,समुह्य= समानीय ' खलयं ' खलकं=धान्यमर्दनस्थानं ' करेंति ' कुर्वन्ति शालीन् खले स्थापयन्तीत्यर्थः, कृत्वा=खले संस्थाप्य ' मलेंति ' खले प्रसार्यबलीवर्दैर्मर्दयन्ति

उत्खात (उखारना) निखात (रोपना) रूपक्रिया उन्होंने दो तीन वार की यावत् धीरे २ उसके पूर्णत पकजाने पर उन्हों ने उसे काट लिया। (जाव चरण तल मलिए करेंति, करेत्ता पुणंति, तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा जाव एगदेसंसि ठावेंति ठाविता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति) यावत् उसे अपने २ पैरों के तलियों से मर्दित किया। बाद में उसे पलालआदि के अपसारण (दूर) से साफ किया। इस तरह वहां शालियों के अनेक कुडव (घडे) उन से भर गये। यावत् उन कुडवो (घड़ो) को उन्हों ने ले जाकर पहिले की तरह भंडार में एक तरफ रख दिया।

रखकर वे समय २ पर उनकी सारसंभाल भी करने लगे। (तएणं ते कौडुंबिया तच्चंपि वासारत्तंसि महा वुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति, लुणित्ता संवहंति संवहित्ता खलयं करेंति, खलयंकरेत्ता मलेंति, जाव बहवे कुंभा जाया) इस तरह धीरे २ समय निकल ने पर जब तीसरी वार वर्षा काल सम्बन्धी

રીતે આ ઉત્પાત (ઉપાડવું) નિખાત (રોપવું) ની ક્રિયા તેમણે બે ત્રણવાર કરી. સમય જતાં યથાસમયે જ્યારે પાક તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેઓએ તેને કાપી લીધો.

(जाव चरण तल मलिए करेंति करेत्ता पुणंति, तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा जाव एगदेसंसि, ठावेंति ठाविता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति)

અને 'यावत्' તેને પોતાના પગોથી મર્દિત કર્યો ત્યાર પછી તેમાંથી ભૂસું વગેરે સાફ કર્યું. આ પ્રમાણે ત્યાં શાલિઓ (ડાંગર) ના ઘણા કુડવ–કળશો –ભરાઇ ગયા. આ રીતે તે કૌટુંબિક પુરુષોએ પહેલાંની જેમ જ શાલિથી પરિપૂર્ણ કળશોને કોઠારમાં એક તરફ મૂકી દીધા. યથા સમય શાલિના કળશોની તેઓ સંભાળ પણ રાખતા હતા.

(तएणं ते कौडुंबिया तच्चंपि वासारत्तंमि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति, लुणित्ता, संवहंति संवहित्ता खलयं, करेंति, खलयं करेत्ता मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत् बहवः=बृहद्घटाः जाताः=अनेकबृहद्घटाः शालिपूर्णा अभूवन्नित्यर्थः। ततःखलु ते कौटुम्बिकाः शालीन् कोष्ठागारे प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति यावत् संगोपायन्तो विहरन्ति. । चतुर्थे ' वासारत्ते=चतुर्थवर्षसम्बन्धि-चातुर्मास्यकाले वर्षं-

चौमासा प्रारंभ हुआ और उस में सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जब जलकी वर्षा हुई तो उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक खेत सुपरिकर्मित किये उन में उस शाली को बो दिया। यावत् उसे काट लिया। जब वह सब कट चुकी तब गट्ठा के रूपमें बांधा तब मस्तक परस्कंध पर भार रूप से उसे रख कर वे सब खलिहान में ले आये। लाकर वहां उन्हों ने धान्यमर्दन के योग्य खलिहान तैयार किया। उस के तैयार हो जाने पर उस में उस शाली को फैला कर रख दिया। बाद में बैलों द्वारा उस की दाँय की। यावत् वह धान्य इतना निष्पन्न हुआ कि उससे बड़े २ घड़े भर गये। (तएणं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवेंति, जाव विहरंति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया) इसके बाद उन लोगों ने उन धान्य को कोष्ठागार में रख दिया और समय २ उस की देखभाल करने लगे। इसी तरह जब चौथे वर्ष का चतुर्मास

આ રીતે સમય પસાર થતાં જ્યારે ત્રીજી વખત વર્ષા કાળ આવ્યો અને મહાવૃષ્ટિના રૂપે પ્રથમ જળ વર્ષા થઇ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણાં ખેતરો તૈયાર કર્યાં.

બધાં ખેતરોમાં તેઓએ શાલી વાવી. અને આમ સમય જતાં જ્યારે તે પહેલાંની જેમ પરિપકવ થઇ ગઇ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ શાલિનો પાક કાપી લીધો. જ્યારે લણણી થઇ ત્યારે ભારાઓ બાંધી માથે તેમજ ખભે મૂકીને બધા ખેતરોની શાલિને ખળામાં લઇ આવ્યા. ત્યાં લાવીને તેઓએ ધાન્ય મર્દન યોગ્ય ખળું તૈયાર કર્યું તૈયાર કર્યા બાદ તેઓએ શાલિ ને પાથરી દીધી. અને બળદો ફેરવીને ખળું કર્યું આ પ્રમાણે આગળની પહેલાંની જેમ બધી વિધિઓ પતાવ્યા બાદ ખેતરોમાંથી શાલિધાન્ય આટલું બધું થયું કે જેનાથી ઘણા મોટા મોટ કળશો ભરાઇ ગયા.

(तएणं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवेंति, जाव विहरंति च उत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया)

ત્યાર બાદ તેઓએ શાલિધાન્ય થી ભરેલા કળશોને કોઠારમાં મૂકી દીધા અને યથા સમય તેમની સંભાળ રાખવા લાગ્યા. આ પ્રમાણે જ ચોથા વર્ષના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शानां शालीनां बहूनि कुम्भशतानि जातानि बहूनि कुम्भशतानि शालिसंभृतानि जातानि, ॥ सू० ॥ ६ ॥

मूलम्--तएणं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिजममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंचसालि अक्खया हत्थे दिन्ना तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालिअक्खए पडिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया जाव त्ति क० एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी --एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनाई० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंचसालि अक्खए दलयामि, जयाणं अहं पुत्ता ! एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा तयाणं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्ति, से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे?,

---

प्रारंभ हुआ तब उस समय बोई गई और वर्धित हुई उस धान्य के सैकडों कुंभ तैयार हो गये। अर्थात् वह धान्य इतनी अधिक निपजी कि जिससे सैकडो बडे २ घडे उससे भर गये। सूत्र " ६ "

ચોમાસામાં વાવવામાં આવેલી શાલિથી સેંકડો મોટા કળશો ભરાઈ ગયા. એટલે કે શાલિ ધાન્યનો એટલો. બધો સરસ પાક તૈયાર થયો કે તેનાથી સેંકડો મોટા મોટા કળશો ભરાઈ ગયા. ॥ સૂત્ર " ૬ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंता अत्थि । तएणं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिनिज्जाएहि । तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी एएणं ते पंचसालिअक्खए–त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ । तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ, करित्ता एवं वयासी–किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? । तएणं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि । तएणं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणित्ता ते पंचसालिअक्खए गेण्हामि, गिण्हित्ता एगंतमवक्कमामि । तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि० जाव सक्कम्मसंपउत्ता जाया, तं ण खलु ताओ ते चेव पंच सालिअक्खए एएणं अन्ने । तएणं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च पहाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति सेणं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया ॥ १ ॥

एवं भोगवइयावि, नवरं तस्स जाव कंडंतियं च कुट्टंतियं च पीसंतियं च, एवं रुधंतियं, रंधंतियं, परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाओ ! जो अम्हं समणो वा जाव पंचयसे महाव्वयाइं फोडियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव हीलणिज्जे ४ जहा व सा भोगवइया ॥ २ ॥

एवं रक्खियावि, नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचसालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ। तएणं से धण्णे रक्खियं एवं वयासी–किं णं पुत्ता ते चेव एए पंचसालिअक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति । तएणं रक्खियया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया णो अन्ने । कहं णं पुत्ता! एवं खलु ताओ तुब्भे इओ पंचमंमि जाव 'भवियव्वं एत्थ कारणेणं '–ति कट्टु ते पंचसालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी२ विहरामि, तं एएणं कारणेणं ताओ ! ते चेव एए पंच सालिअक्खया, णो अन्ने । तएणं से धण्णे रक्खियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ•

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कंसदूस विउल धण जाव सावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो! जाव पंच य से महव्वयाइं रक्खियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे४ जहा व सा रक्खिया ॥ ३ ॥

रोहिणियावि एवं चेव, नवरं तुब्भं ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाह जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि । तएणं से धण्णे रोहिणिं एवं वयासी–कहं णं पुत्ता ! तुमं मम ते पंच सालिअक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइस्ससि ? । तएणं सा रोहिणी धण्णं एवं वयासी–एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त० जाव बहवे कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं, एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडीसागडेणं निज्जाएमि । तएणं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुयं सगडीसागडं दलयइ । तएणं सा रोहिणी सुबहुं सगडीसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारं विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिंदइ, उब्भिंदित्ता सगडीसागडं भरेइ, भरित्ता रायगिहे नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ । तएणं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ – धन्नेणं देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ताहट्ठ० पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव सव्वकज्जवड्ढाविय पमाणभूयं ठावेइ ।

एवामेव समणाउसो! जाव पंच य से महाव्वया संवड्ढिया भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं० ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणिया ।

एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते–त्तिबेमि ॥

॥ सत्तमं नायज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

टीका—' तएणं तस्स ' इत्यादि । ततः खलु तस्य धन्यस्य=धन्यसार्थवाहस्य पञ्चमे संवत्सरे ' परिणममाणंसि ' परिणम्यमाने=संपूर्यमाणे सति पूर्वरात्रापररात्रकालसमये अयमेतद्रूपः– आध्यात्मिकः=आत्मनि विचारः यावत् मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत– एवं खलु मया ' इओ ' इतः=अद्यतनादिवसात्प्राग् अतीते पञ्चमे वर्षे चतसृणां स्नुषाणां ' परिक्खणट्ठयाए ' परीक्षणार्थाय=बुद्धि-

' तएणं तस्स धण्णस्स ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (तस्स धण्णस्स) उस धन्य सार्थवाह को (पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि) पांच वर्ष जब पूर्ण हो चुके, तब (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) मध्यरात्रि के समय में (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ (एवं खलु मए इओ अईए पंच में

" तएणं तस्स धण्णस्स " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યાર બાદ (तस्स धण्णस्स) ધન્ય સાર્થવાહને (पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि) પાંચ વર્ષો જ્યારે પૂરાં થયાં ત્યારે (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) અડધી રાત્રિના વખતે (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परीक्षार्थं ते पञ्च शालयक्षता इस्ते दत्ता आसन्, ' सेयं ' श्रेयः=उचितम् अस्य वस्तुयाचितुमित्यनेन संबन्धः ! एवं खलु मम कल्ये यावज्ज्वलति=सूर्योदये सति= प्रभाते पञ्चशालयक्षतान् ' पडिजाइत्तए ' प्रतियाचितुं=प्रतिग्रहीतुम्, ' जाणामि ' जानामि=तद्द्वुना निर्णयामि यत्- ' जाव ' यावत्=यावत्संख्यकाः शालयक्षता मया दत्तास्ते ' ताव ' तावत्=तावत्परिमिताः कया स्नुषया 'किह ' कथं=केन प्रकारेण संरक्षिताः संगोपिताः संवर्द्धिता यावत् ' तिकट्टु ' इति कृत्वा इत्यभिप्रायं मनसि निधाय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण संपेक्षयति=विचारयति, संप्रेक्ष्य कल्ये यावज्ज्वलति प्रभातसमये विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विधमाहारम्. उपस्का

संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालि अक्खया हत्थे दिन्ना-तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलं ते पंच सालि अक्खए पडिजाइत्तए) कि मैंने आज से गत पांचवे वर्ष में चारों अपनी पुत्रवधूओं के उन की बुद्धि की परीक्षा के निमित्त हाथों में उन पांच पांच शालि-अक्षतों को दिया था, तो अब प्रातःकाल होते ही जब सूर्योदय हो जायगा-मैं उन पांच शालि अक्षतों को उनसे पीछे मांग लूं यह उचित है।

(जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया जाव त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) इससे मैं यह निर्णय कर लूंगा कि जितने शालयक्षत मैंने उन्हें दिये थे वे उतने शालयक्षत किस पुत्र वधू ने किस प्रकार से संरक्षित किये हैं, संगोपित किये हैं और संवर्धित किये हैं। इस पूर्वोक्त प्रकार से उसने विचार किया (संपेहित्ता

(एवं खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंचसालि अक्खया हत्थे दिन्ना-तं सेयं खलु मम कल्लं ते जाव जलंते पंचसालि अक्खए पडिजाइत्तए)

કે આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં મેં ચારે પુત્રવધૂઓને તેમની બુદ્ધિ પરીક્ષા માટે તેમના હાથોમાં પાંચ શાલિકણો આપ્યા હતા તો હવે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાની સાથે જ હું તેમની પાસેથી પાંચે શાલિકણો પાછા માગું એ જ ઉચિત છે.

(जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया जाव त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)

એનાથી મને એ વાતની ખબર પડશે કે મેં જે પહેલાં શાલિકણો તેમને આપ્યા હતા તેને કઇ પુત્રવધૂએ કેવી રીતે સંરક્ષિત, સંગોપિત તેમજ સંવર્ધિત કર્યો છે. આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतीन् चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गेण सार्द्धं भोजयित्वा यावत्तान् संमान्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतो 'जेट्ठं' ज्येष्ठां=ज्येष्ठपुत्रवधूम् 'उज्झियं' उज्झिताम् =उज्झितानाम्नीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्- एवं खलु अहं पुत्रि ! इतोऽतीते पञ्चमे संवत्सरे अस्य मित्रादेश्चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तव हस्ते पञ्च शाल्यक्षतान् 'दलयामि' ददामि=दत्तवान् कथितवांश्च

कल्लं जाव जलंते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेइ-उवक्खडावित्ता-मित्तनाइ० चउण्ह सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ) विचार कर के फिर उसने प्रातःकाल सूर्योदय होने पर विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप से चारों प्रकार का आहार तैयार करवाया।

जब चारों प्रकार का आहार अच्छी तरह निष्पन्न हो चुका तब उसने अपने समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के साथ भोजन किया। बाद में उन सबका सन्मान सत्कार किया। और उन्हीं मित्रादि परिजनों के एवं अपनी चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के समक्ष जेठी जो पुत्रवधू थी कि जिस का नाम उज्झिता था उसे बुलाया। (सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु अहं पुत्ता! इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं

(संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते विउलं असण पाण खाइमं उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ. चउण्ह सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओजेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ.)

વિચાર કરીને તેણે સવારે સૂર્ય ઉદયપામ્યા બાદ અશન, પાન બાધ અને સ્વાદ્ય આમ ચાર જાતનો પુષ્કળ પ્રમાણમાં આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો.

ચારે જાતનો આહાર સારી રીતે તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેણે પોતાના બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓનાં સગાંવહાલાંઓની સાથે ભોજન કર્યું. જમ્યા બાદ તેણે બધાંનો સત્કાર તથા સન્માન કર્યું. ત્યારબાદ મિત્ર વગેરે પરિજનો અને ચારે પુત્રવધૂઓનાં સગાવહાલાંઓની સામે તેણે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્ઝિતાને બોલાવી.

(सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु अहंपुत्ता। इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनाइ चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थंसि पंचसालि अक्खए दलयामि)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदा खलु अहं पुत्रि ! एतान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचेयं तदा खलु त्वं ममामि-मान् पञ्च शाल्यक्षतान् प्रतिदद्याः 'इति, स नूनं पुत्रि ! अर्थः समर्थः ? उज्झिता माह- हन्त ! अस्ति=एतत्सत्यमस्ति । श्रेष्ठीमाह- ' तं ' तत्=तस्मात् खलु त्वं हे पुत्रि ! मह्यं तान् ' पडिनिज्जाएहि ' प्रतिनिर्यातय=प्रतिसमर्पय । ततःखलु सा उज्झिता धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं सम्यक् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रति-श्रुत्य यत्रैव कोष्ठागारं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' पल्लाओ ' पल्लात्=शालि

कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थंसि पंच सालि अक्खए दलयामि) बुलाकर उससे ऐसा कहा हे पुत्रि ! आज से गत पांचवें वर्ष में मैंने जो इन मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुल गृह-वर्ग के समक्ष तुम्हारे हाथ में पांच शालि-अक्षतों को दिया था। (जयाणं अहं पुत्ता एए पंच सालि अक्खए जाएज्जा) और हे पुत्रि ऐसा कहा था कि जब मैं इन पांच शालि-अक्षतों को माँगूं (तयाणं तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि त्ति) तब तुम मुझे इन पांच सालि-अक्षतो को पीछे वापिस दे देना (से णूणं पुत्ता अट्ठे समट्ठे) हे पुत्रि ! कहो यही बात कही थी न ? (हंता अत्थि) तब उज्झिताने कहा-हां यही बात कही थी (तण्णं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिदिज्जाएहि) तो पुत्रि ! तुम मुझे उन पांच शालि अक्षतो को अब पीछे वापिस दे दो । (तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ)

બોલાવીને તેણે કહ્યું કે હે પુત્રિ! આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં મેં તને આ બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો અને ચારે પુત્રવધૂઓના સગાં વહાલાંઓની સામે તમારા હાથમાં પાંચ શાલિકણો આપ્યાં હતા.

(जयाणं अहं पुत्ता एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा)

અને એમ કહ્યું હતું કે જ્યારે હું તમારી પાસેથી આ પાંચ શાલિકણો માગું

(तयाणं तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जएसित्ति)

ત્યારે તમે મને આ પાંચે શાલિકણો પાછા આપજો. (से णूणं पुत्ता अट्ठे समट्ठे) હે પુત્રિ! બોલો મેં તમને એજ વાત કહી હતી ને ? (हंता अत्थि) ત્યારે ઉજ્ઝિતાએ કહ્યું- "હા એજ વાત કહી હતી." तण्णं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिनिज्जाएहि) તો હે પુત્રિ ! તે પાંચે શાલિકણો તમે મને પાછા આપીદો.

(तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स, एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोष्ठात् पञ्च शालयक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धन्यं सार्थवाहमेवमवादीत्- एते खलु ते पञ्च शालयक्षताः, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्ते तान् पञ्च शालयक्षतान् ददाति. । ततः खलु धन्य उज्झितां पुत्रवधूं ' सवहसावियं ' शपथशापितां = शपथयुक्तां करोति-शपथं कारयति, कृत्वा एवमवदत्-किं खलु पुत्रि ! त एव-एते पञ्च शालयक्षताः, उदाहु=अथवा अन्ये ? । ततः खलु उज्झिता धन्यसार्थवाहमेवमव-

---

इस प्रकार उज्झिताने उस धन्य सार्थवाह के इस कथन रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके जहां कोष्ठागार था-वहां पर गई ।

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पंच सालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) वहां जाकर उसने शालि कोष्ठ से पांच शालि-अक्षतों को ले लिया और ले जाकर जहां धन्यसार्थवाह था वहां आई । (उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी) आकर उसने धन्यसार्थवाह से ऐसा कहा-(एए णं ते पंच सालि अक्खए त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ) आपके वे पांच शालि अक्षत ये हैं । ऐसा कहकर उसने धन्यसार्थवाह के हाथ में उन पांच शालि अक्षतों को दे दिया । (तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ करित्ता एवं वयासी-किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएणं उज्झिया धण्णं सत्थवाहे

ઉજ્ઝિતાએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા સ્વીકારી અને ત્યાર પછી તે જ્યાં કોઠાર હતો ત્યાં ગઇ.

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાં જઇને તે શાલિકોષ્ઠમાંથી પાંચ શાલિકણો લઇ લીધા અને લઇને તે ધન્યસાર્થવાહની પાસે પહોંચી. (उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी) ત્યાં આવીને તેણે ધન્યસાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(एएणं ते पंचसालि अक्खए त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ)

" તમે આપેલાં પાંચ શાલિકણો આ રહ્યા " આમ કહીને તેણે પાંચે પાંચ શાલીકણો ધન્યસાર્થવાહને આપી દીધા.

(तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ करित्ता एवं वयासी किं पुत्ता ते चेव एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएणं उज्झिया धण्णं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दत्-एवं खलु यूयं हे तात ! अतीते पञ्चमे संवत्सरे अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य 'जाव' यावत् पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् दत्वा कथितवन्तः-हे पुत्रि ! त्वमेतान् पञ्चशाल्यक्षतान् संरक्षन्ती संगोपायन्ती विहरति । ततः खलु अहं युष्माकमेतमर्थं प्रतिशृणोमि, प्रतिश्रुत्य तान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृह्णामि, गृहीत्वा-एकान्तमपक्रामामि, ततः खलु तदा मम मनसि अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः=विचारः यावन्मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु 'तावाणं'

एवं वयासी एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमें संवच्छरे इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि) उन पांच शालि अक्षतों को हाथ में लेकर धन्य सार्थवाह ने उसे शपथ दिलाई-और दिलाकर उससे ऐसा पूछा पुत्रि ! कहो-ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे है ? इस प्रकार धन्य सार्थवाह के कथन को सुनकर उज्झिताने उससे ऐसा कहा हे तात ! आपने आज से गत पांचवें वर्ष में मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और अपनी पुत्रवधूओं के कुल गृह वर्ग के समक्ष पांच शालि अक्षतों को देकर ऐसा कहा था-हे पुत्रि ! तुम मेरे इन पांच शालि अक्षतों की रक्षा करती रहो-इन्हे उपद्रवों से बचाकर सुरक्षित रखो- (तएणं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि पडिसुणित्ता ते पंच सालि अक्खए गेण्हामि गिण्हित्ता एगंतमवक्कमामि-तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) मैंने आपके इस कथन को स्वीकार कर लिया था । और उन पांच शालि अक्षतों को ले लिया

सत्थवाहे एवं वयासी एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तनाइ. चउण्हय सुण्हाणं कुल. जाव विहराहि)

તે પાંચ શાલિકણોને હાથમાં રખાવીને ધન્યસાર્થવાહે તેને શપથ (સમ) આપીને ફરી પૂછયું કે હે પુત્રિ ! બોલો, આ પાંચે શાલિકણો મારા આપેલા જ છે કે બીજા. આ રીતે ધન્યસાર્થની વાત સાંભળીને ઉજ્ઝિતાએ તેમને કહ્યું-" હે તાત ! આજથી પાંચવર્ષ પૂર્વે મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના સગા વહાલાંઓની સામે મને પાંચ શાલિકણો આપતાં તમે કહ્યું હતું કે હે પુત્રિ ! તમે મારા આ પાંચ શાલિકણોની રક્ષા કરો અને એઓને ઉપદ્રવોથી બચાવો.

(तएणं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि, पडिसुणित्ता ते पंचसालि अक्खए गेण्हामि, गिण्हित्ता एगंतमवक्कमामि-तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

મેં તમારી આજ્ઞા પ્રમણે તે શાલિકણો લઇ લીધા. ત્યાર બાદ હું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तातानाम् आदरार्थं बहुवचनम् तातस्येत्यर्थः, श्वशुरस्य कोष्ठागारे बहवः पल्लाः शालीनां प्रतिपूर्णास्तिष्ठन्ति, तद् यदा खलु मम सकाशात् तात इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचिष्यते तदा खलु अहं पल्यन्तरात्=कोष्ठाभ्यन्तराद् अन्यान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहीत्वा दास्यामि, इति कृत्वा एकान्तेऽपक्राम्य तान् प्रक्षिप्य स्वकर्मसंयुक्ता=स्वकार्यसंलग्ना समभवत् 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् नो खलु तात! तएव पञ्च शाल्यक्षताः, किंतु एते खल्वन्ये=कोष्ठाभ्यन्तरादानीताः सन्तीत्यर्थः। ततः खलु स धन्यः सार्थवाह उज्झितायां अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=शीघ्रकोपान्वितः यावत् 'मिसमिसेमाणे' मिसमिसन्=क्रोधाग्निना

था। लेकर फिर मैं आपके पास किसी एकान्त स्थान में चली आई-वहां आते ही मुझे इस प्रकार का विचार आया—

(एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि० जाव सकम्म संपउत्ता जाया तं णो खलु ताओ ते चेव पंच सालि अक्खए, एए णं अन्ने) मेरे श्वसुर जी के यहां कोष्ठागार में तो बहुत से पल्लशालियों के भरे पडे हैं-तो जिस समय श्वसुर जी इन प्रदत्त पांच शालि अक्षतों को मुझ से पीछे वापिस मांगेंगे तो मैं दूसरे शालि कोष्ठ के भीतर से अन्य पांच शालि अक्षतों को उठाकर दे दूँगी। इस प्रकार विचार कर मैंने आपके द्वारा दिये हुए पांच शालि अक्षतों को इधर उधर डाल दिया और अपने दैनिक कार्य करने में लग गई। अतः हे तात! ये शालि-अक्षत वे पांच शालि अक्षत नहीं हैं-किन्तु उनसे भिन्न दूसरे ही हैं। (तएणं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसि मिसे-

તમારી પાસેથી એક તરફ ગઈ ત્યાં આવતાં જ મને વિચાર સ્ફુર્યો

(एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि. जाव सकम्म संपउत्ता जाया तं णो खलु ताओते चेवपंचसालिअक्खए एएणं अन्ने)

મારા સસરાના કોઠારમાં ડાંગરથી ભરેલા ઘણા પલ્યો છે. તે જ્યારે પણ તેઓ મારી પાસેથી ફરી પાંચ શાલિકણો માગશે ત્યારે કોઠારમાંથી બીજા પાંચ શાલિકણો તેમને આપીશ. આમ વિચાર કરતાં મેં તમારા આપેલા પાંચે શાલિકણોને આમ તેમ ફેંકી દીધા અને ત્યાર બાદ હું મારા હંમેશાના ઘરકામમાં પરોવાઈ ગઈ. એથી હે તાત! આ શાલિકણો તમે જે આપેલા હતા તે નથી. પણ આ તો બીજા જ છે.

(तएणं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसेमिसे माणे उज्झतियं तस्स मित्तणाइ० च उण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्सय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाज्वल्यमानः उज्झितां तस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तां तस्य=स्वस्य कुलगृहस्य 'छारुज्झियंच' क्षारोज्झिकां भस्मप्रक्षेपिकाम्, 'छाणुज्झियं च' छगणोज्झिकां=गोमयप्रक्षेपिकाम् 'कयवरुज्झियं' कचवरोज्झिकां=गृहकचवरप्रक्षेपिकाम्, 'समुच्छियंच' समुक्षिकां=गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिकाम्, 'संमज्जियंच' संमार्जिकां=गृहसंमार्जनकारिकाम्, 'पाओवदाइयं पादोदकदायिकां=पादप्रक्षालनजलदायिकाम्, 'ण्हाणोवदाइयं' स्नानोदकदायिकां=स्नानार्थजलदायिकाम्, 'बाहिरपेसणकारियं बाह्यप्रेषणकारिकं' बाह्यप्रेषणकार्यकारिकाम्, 'ठवेइ' स्थापयति=तादृशकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः।

माणे उज्झितियं तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिर पेसण कारिंठवेइ) इस तरह वह धन्य सार्थवाह उज्झिताके मुख से इस कथन रूप अर्थको सुनकर और उसे हृदय में अवधारण कर शीघ्र ही कुपित हो गया। मिस मिसाने लग गया-क्रोधरूपी अग्निसे जलने लगा। उसने उसी समय उज्झिता को उस मित्र ज्ञाति आदि कों के तथा चारो पुत्र वधूओं के कुलगृहवर्ग के समक्ष अपने घर की राख डालने वाली गोबर फेंकने वाली' कूड़ाकर कट साफ करने वाली, घरके आंगण में पानी छिड़कने वाली बुहारु देने वाली, पाद प्रक्षालन तथा स्नान के लिये जल देने वाली, बाहर जाने का काम करने वाली बना दिया।

अर्थात् बाहिरी काम करने वाली दासी के पद पर उसे रख दिया।

पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ)

આ પ્રમાણે તે ધાન્ય સાર્થવાહ ઉજ્ઝિતાના મુખેથી આ વાત સાંભળીને તેને હૃદયમાં અવધારણ કરીને એકદમ ગુસ્સે થઇ ગયેા.

કુપિતાવસ્થામાં તે ક્રોધની જ્વાળાઓમાં સળગવા લાગ્યેા. તેણે તેજ ક્ષણે ઉજ્ઝિતાને મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓ ના કુળના માણુસોની સામે ઘરની રાખ સાફ કરનારી, છાણ સાફ કરનારી, કચરા વગેરે સાફકરનારી, ઘરના આંગણામાં પાણી છાંટનારી, સાવરણી થી કચરા વાળનારી, પગ ધોવામાટે તેમજ સ્નાનકરવા મટે પાણી તૈયાર રાખનારી અને ઘરની બહારના કામેા કરનારી બનાવી દીધી.

એટલે બહારનાં કામ કરનારી દાસીનારૂપે ધન્યસાર્થવાહે તેનો નિમણુક કરી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवर्धमानस्वामीप्राह- एवमेव हे श्रमणाः ! आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थीवा यावत्प्रव्रजितः सन्विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि उज्झितानि=परित्यक्तानि भवन्ति तर्हि स खलु इह भवे एव बहूनां श्रमणानां४चतुर्विधसङ्घस्य हीलनीयः,निन्दनीयः, गर्हणीयः,यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारमनुपर्यटिष्यति यथा सा उज्झिता ।

एवं भोगवतिकाऽपि=भोगवतिकानाम्नी शाल्यक्षतभक्षिका द्वितीया पुत्रवधूरपि । नवरं=विशेषस्त्वयम् तां भोगवतिकां तस्य=निजस्य कुलगृहस्य यावत् 'कंडंतिं च' कण्डन्तिकाम्=उदूखलादौ तण्डुलादीनां तुषापसारणार्थं मुशलादिनाऽवघातिनीम्, 'कुट्टयंतियंच' कुट्टयन्तिकां=तिलादिचूर्णकारिकाम्, 'पीसंतियं च' 'पेषयन्तिकां=घरट्टादौ गोधूमादीनां पेषणकारिकाम्, 'रुंधंतियंच' रुन्धयन्तिकां

(एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया) श्री वर्धमान स्वामी इसका उपसंहार करते हुए कहते हैं कि हे आयुष्मंत श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी साध्वीजन दीक्षा संयम लेते समय पंच महाव्रत लेते हैं और यदि वह अपने महाव्रतों का परित्याग कर देता है तो वह उज्झिता की तरह इस भव में ही अनेक श्रमणजनों के द्वारा तथा चतुर्विध संघ के द्वारा हीलनीय होता है, निंदनीय होता है, गर्हणीय होता है-यावत् वह चतुर्गतिरूप इस संसार में परिभ्रमण करता रहता है । (एवं भोगवइया वि' नवरं जाव कंडंतियं च, कुट्टंतियं च' पीसंतियं च, एवं रुधंतियं च, रंधंतियं परिवेसंतिय परिभायं-

---

(एवामेव समणा उसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथीवा जाव पव्वइए पंच यसे महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, सेणं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया)

શ્રી વર્ધમાન સ્વામી આવિષે ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! અમારા જે કોઇ નિર્ગ્રંથ કે નિર્ગ્રંથી સાધ્વીજન દીક્ષા સંયમ લેવાના વખતે પાંચ મહાવ્રતો સ્વીકારે છે અને ભવિષ્યમાં સ્વીકારેલા તે મહાવ્રતો નો પરિત્યાગ કરે છે તો તે ઉજ્ઝિતા ની જેમજ આ ભવમાં ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સંઘ વડે હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે-યાવત-તે ચતુર્ગતિ વાળા આ સંસારમાં પરિભ્રમણ કરતો રહે છે.

(एवं भोगवइयावि, नवरं जाव कंडंतियं च कुट्टयंतियंच पीसंतियंच, एवं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वम्मे चणकक्रोद्रवादीनां तुषापसारिकाम्, 'रंधंतियं च' रन्धयन्तिकाम्=ओदनादि पाचिकाम् 'परिवेसयंतिच' परिवेषणकारिकाम् 'परिभायंतियं च' परिभाज यन्तिकां=पर्वदिनादौ स्वजनगृहेषु खण्डखाद्यादीनां संविभागकारिकाम् 'अब्भि तरियं च पेसणकारियं' आभ्यन्तरिकां च प्रेषणकारिका=गृहाभ्यन्तरप्रेषणकार्य-कारिकाम् 'महाणसिणिं' महानसिकां=महानससम्बन्धिसकलकार्यकारिणीं 'ठवेइ' स्थापयति=गृहाभ्यन्तरकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः। श्री वर्धमानस्वामी

तियं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपने जो दूसरी पुत्रवधू भोगवतिका नाम की थी कि जिसने उन पांच शालि अक्षतों को खा लिया था उसे बुलाया-और उससे भी उज्झिता की तरह दिये हुए पांच शालि अक्षतों को वापिस मांगा-उसने "वे पांच शालि अक्षत मैंने खा लिया है जब ऐसा कहा-तब उस धन्य सार्थवाहने उन मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के समक्ष और पुत्रवधूओं के कुलगृह के व्यक्तियों के समक्ष अपने घर के भीतरी काम पर रख दिया।

उसके अधीन में घर का भीतर का यह काम दिया गया-ओखली में मूशल से धान्य कूटना और चावल तैयार करना, तिल आदि का चूर्ण करना, चक्की से गेंहुओं आदि पीस कर आटा तैयार करना, चना आदि की दाल बनाना तथा क्रोद्रव आदि को फली से दल कर उनके छिल के दूर कर उन की कुद ई बनाना? चावल पकाना,

---

रूधंतियं च रंधंतियं परिवेसंतियं, परिभायंतियं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ)

આ પ્રમાણે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની બીજી પુત્રવધૂભોગ વતીકા-જે પાંચે શાલિકણો ખાઈ ગઈ હતી-તેને બોલાવી અને તેની પાસેથી પણ ઉજ્ઝિતાની જેમ પાંચે શાલિકણો માગ્યા. જવાબમાં ભોગવતીકાએ જ્યારે એમ કહ્યું "કે તે પાંચે શાલિકણો હું ખાઇ ગઇ છું. ત્યારે ધન્યસાર્થવાહે તેને મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્ર વધૂઓના કુટુંબીઓની સામે તેને ઘરની અંદરના કામોમાં તેની નિમણુંક કરી.

ધન્યસાર્થવાહે ઘરના નીચે મુજબના કામો તેને સોંપ્યા હતાં-ખાંડણિયા સાંબેલાથી શાળ (ધાન્ય) ખાંડવી અને ઓખા તૈયાર કરવા, તલ વગેરેનો ભૂકો કરવો. ઘંટીમાં ઘઉ વગેરે દળીને લોટ તૈયાર કરવો. આખા ચણા વગેરે ની દાળ તૈયાર કરવી. તથા કોદરા વગેરેને ઘંટીથી ભરડીને તેનાં છોતરાં દૂર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माह एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे आयुष्मन्तः ! श्रमणाः ! योऽस्माकं श्रमणो वा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति, यदि पंच च तस्य महाव्रतानि 'फोडियाइं' स्फोटितानि=खण्डितानि भवन्ति तर्हि स खलु इहभवे चैव बहूनां श्रमणानां ४ चतुर्विधसंघस्य हीलनीयः, यावत् संसारमनुपर्यटिष्यति यथा च सा भोगवतिका धन्यसार्थवाहस्य द्वितीय पुत्रवधूः ।

एवं रक्षिताऽपि=रक्षितानाम्नी धन्यसार्थवाहस्य तृतीयपुत्रवधूरपि, नवरं-धन्यसार्थवाहेन स्वदत्तशालक्षतान् प्रत्यर्पयितुं याचिता सती यत्रैव वासगृहं तत्रै-

---

भोजन करने वालों को भोजन परोसना, स्वजन के घरों में खण्ड-खाना खाद्य आदि का विभाग करना रसोई घर का समस्त कार्य करना। (एवामेव समणाउसो जो अम्हं समणो वा जाव पंचय से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव हीलणिज्जो ४ जहाव सा भोगवइया) इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो ! जो हमारा श्रमण अथवा श्रमणी जन प्रव्रजित होकर पंच महाव्रतों का खंडन करता है वह भोगवतिका की तरह इस भव में ही अनेक श्रमणों द्वारा तथा चतुर्विध संघ द्वारा हीलनीय होता है, यावत् अनादि अनंत इस संसार में परिभ्रमण करता है। (एवं रक्खियावि नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालि अक्खए गेण्हइ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपनी तृतीय पुत्रवधू से जिस का नाम रक्षित था अपने द्वारा दिये हुए ५ शालि अक्षतों को मांगा-सो वह जहां अपना वासगृह था वहां आई ·

કરી તેમાંથી કોઠરી બનાવવી, ભાત તૈયાર કરવા, જમનારાઓને પીરસવું સગાં સંબંધીઓનાં ઘરોમાં પીરસણ વગેરે મોકલવું રસોઈઘરનું બધું કામ કરવું.

(एवामेव समणाउसो जो अम्हं समणोवा जाव पंचय से महव्वयाइं कोडियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूण ४ जाव हीलणिज्जो समणाणं ४ जहाव सा भोगवइया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજન પ્રવ્રજિત થઈને પાંચ મહાવ્રતોનું ખંડન કરે છે. તે ભોગવતીકાની જેમ આ ભવમાં ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સંઘદ્વારા હીલનીય હોય છે. યાવત્ અનાદિ અનંત આ સંસારમાં પરિભ્રમણ કરે છે.

(एवं रक्खियावि नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंचसालि अक्खए गेण्हइ)

આ રીતે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા પાસેથી પોતે આપેલા પાંચ શાલિકણો માગ્યા. તે ત્યાંથી પોતાના નિવાસ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वोपागच्छति, उपागत्य मञ्जूषां 'विहाडेइ' विघटयति=उद्घाटयति विघटय्य मञ्जूषाभ्यन्तरस्थात् रत्नकरण्डकात् तान् पञ्चशालिअक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च शालिअक्षतान् धन्यसार्थवाहस्य हस्ते ददाति. । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षितां रक्षिताभिधां तृतीयपुत्रवधूमेवमवदत्– किं खलु पुत्रि ! त एवैते पञ्चशालिअक्षताः उदाहु– अथवा अन्ये, इति. । ततः खलु रक्षिता धन्यं सार्थवाहमेवमवदत् त एव तात ! एते पञ्च शालिअक्षताः, नो अन्ये धन्यः सार्थवाह आह कथं खलु पुत्रि ! रक्षितामाह–एवं खलु तात ! यूयमितः पञ्चमे संवत्सरे 'जाव' यावत् सर्वेषां मित्रज्ञातिप्रभृतीनां

वहां आकर उसने अपनी पेटी खोली–उस में से रखी हुई रत्न की डिबिया निकाली–निकाल कर उसमें रखे हुए पांच शालि अक्षतों को लिया (गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ) और लेकर जहां धन्य सार्थवाह थे–वह वहां आई (उवागच्छित्ता पंचसालि अक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ) वहां आकर उसने पांच शालि अक्षतों को धन्य सार्थवाह के हाथ में सौंप दिया । (तएणं से धण्णे रक्खिइयं एवं वयासी) धन्य सार्थवाह ने उन्हें लेकर रक्षिता से ऐसा कहा (किंणं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालि अक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति) हे पुत्रि ! ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे ? (तएणं रक्खिइया धण्णे सत्थवाहं एवं वयासी ते चेव ताया ! एए पंच सालि अक्खया णो अन्ने) तब रक्षिता ने धन्य सार्थवाह से कहा–हे तात ! ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं अन्य नहीं हैं । (कहं णं पुत्ता ! एवं खलु ताओ तुब्भे

સ્થાને આવી. ત્યાં તેણે પેટી ખોલીને અંદરથી રત્નજડિત ડાબલી બહાર કાઢી. ડાબલીમાંથી તેણે પાંચે શાલિકણો લીધા. (गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ) અને લઈને ધન્યસાર્થવાહ જ્યાં હતો ત્યાં આવી

(उवागच्छित्ता पंचसालि अक्खए धण्णस्सहत्थे दलयइ)

ત્યાં આવીને તેણે પાંચે શાલિકણો ધાન્યસાર્થવાહને આપી દીધા. (तएणं से धण्णे रक्खिइयं एवं वयासी) ધન્યસાર્થવાહે શાલિકણો લઈને રક્ષિતાને કહ્યું (किंणं पुत्ता ! ते चेव एए पंचसालि अक्खया उदाहु अन्ने ! त्ति)

" હે પુત્રિ ! આ પાંચ શાલિકણો તે જ છે કે બીજા ? "

(तएणं रक्खिइया धण्णे सत्थवाहे एवं वयासी ते चेव ताया ! एए पंच सालि अक्खया णो अन्ने)

ત્યારે રક્ષિતાએ ધન્યસાર્થવાહને કહ્યું–" હે તાત ! આ પાંચ શાલિકણો તે જ છે બીજા નહિ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् मह्यं दत्तवन्तस्तदा मम मनसि सङ्कल्पो जातः-यत्तातः सर्वेषां पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् ददाति तत् ' भवियव्वं एत्थ कारणेणं ' ' भवितव्यमत्र केनापि कारणेन=अस्मिन् विषये किमपि कारणमवश्यं विद्यते ' तिकट्टु ' इति कृत्वा इतिविचार्य तान् पञ्चशाल्यक्षतान् शुद्धे=स्वच्छे निर्मले वस्त्रे बद्ध्वा रत्नकरण्डके निक्षिप्य उच्छीर्षकमूले स्थापयित्वा ' तिसंझं ' त्रिसन्ध्यं=प्रभाते मध्याह्ने सायंकालेवा ' पडिजागरमाणी २ प्रतिजाग्रती २= पुनः पुनर्निरीक्षमाणा

इओ पंचमंसि जाव (भवियव्वं एत्थ कारणेणं) त्ति कट्टु ते पंच सालि अक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडि जागर माणी २ विहरामि) इस प्रकार रक्षिता की बात सुनकर धन्य सार्थवाह ने उससे पूछा-पुत्रि ! ये इसी तरह से अभी तक कैसे रक्खे रहे-तब रक्षिता ने कहा-सुनो मैं बताती हूँ-आपने आज से गत पांचवें वर्ष में जो ये पांच शालि अक्षत मुझे समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के तथा पुत्रवधूओं के कुलगृह वर्ग के समक्ष दिये थे उस समय मेरे मन में ऐसा विचार आया कि ये तात जो मुझे सब जनों के सामने इन पांच शालि अक्षतों को दे रहे हैं और इन की रक्षा आदि के विषय में कह रहे हैं-सो इस में कोई न कोई कारण अवश्य है-ऐसा विचार कर मैंने उन पांच शालि अक्षतों को स्वच्छ-निर्मलवस्त्र में बान्ध कर एक रत्न की डिबिया में रख दिया-और उसे अपने सिरहाने में रखकर आज तक मैं उसकी हर समय संभाल करती आ रही हूँ ।

(कहंणं पुत्ता एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमंसि जाव ' भवियव्वं एत्थ कारणेणं ' त्ति कट्टु ते पंचसालि अक्खए सुद्धे वत्थे जाव ति संझं पडि जागरमाणी २ विहरसि)

આ રીતે રક્ષિતાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને પૂછયું " હે પુત્રિ ! અત્યાર સુધી કેવી રીતે આ શાલિકણોને રાખવામા આવ્યા. ત્યારે રક્ષિતાએ જવાબ આપતાં કહ્યું "સાંભળો,હું બધી વિગત તમારી સામે રજુ કરૂં છું. આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના કુટુંબીજનોની સામે તમે મને શાલિકણો આપ્યા હતા. હે તાત ! તમે મને બધા સ્વજનોની સામે પાંચ શાલિકણો આપીને તેઓની રક્ષામાટે મને આજ્ઞા આપી હતી જેથી મેં વિચાર કર્યો કે આમાં કોઈ રહસ્ય ચોક્કસ છુપાયેલું છે આમ વિચાર કરીને પાંચે શાલિકણોને સ્વચ્છ નિર્મળ વસ્ત્રમાં બાંધીને એક રત્નની ડાબલીમાં મૂકી દીધા, અને તેને ઓશીકાની નીચે મૂકીને આજ (દિવસ) સુધી તેની રક્ષા કરતી રહીછું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहरामि=अद्यावधि तिष्ठामि तदेतेन कारणेन हे तात ! त एवैते पञ्च शालयः अक्षताः, नो अन्ये. । ततःखलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षितायाः अन्तिके=समीपे एतमर्थं श्रुत्वा हृष्ट तुष्टः तस्य=निजस्य कुलगृहस्य ' हिरण्णस्य ' हिरण्यस्य च= रजतस्य यावत् कांस्यदूष्य विपुलं यावत्स्वापतेयस्य=हिरण्यादि यावन्मात्रधनस्य ' भाण्डागारिणिं ' भण्डागाराधिष्ठात्रीं ' ठवेइ ' स्थापयति=सर्वधनाधिकारिणी त्वेन नियोजयतीत्यर्थः। श्रीवर्धमानस्वामी प्राह एवमेव हे श्रमणाः ! आयुष्मन्तः योऽस्माकं श्रमणो वा श्रयणी वा प्रव्रजितः सन् विहरति,यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि

(तं एएणं कारणेणं ताओ ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए णो अन्ने) इस कारण हे तात ! वे पांच शालि अक्षत ये ही हैं, दूसरे नही है । (तएणं से धण्णे रक्खिइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ० तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कंसदूस विउलधण जाव सावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेइ) इस तरह उस धन्य सार्थवाह ने रक्षिका के मुख से इस अर्थ को सुनकर बहुत अधिक प्रसन्न और संतुष्ट होकर उसे अपने घर में जितना भी सोना चांदी आदि धन था उसकी अधिकारिणि बना दिया ।

(एवामेव समणाउसो जाव पंच य से महव्वयाइं भवंति, सेणं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे४ जहाव सा रक्खिया) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा श्रमण और श्रमणी जन प्रव्रजित होकर इतस्ततः विहरण करता है यदी उस के पांच महाव्रत

(तं एएणं कारणेणं ताओ ! ते चेव एए पंचसालि अक्खए णो अन्ने)

એટલે હે તાત ! તે પાંચ શાલિકણો એજ છે, બીજા નથી

(तएणं से धण्णे रक्खिइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ०तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कंसइस विउल धणजाव तेज्जस्स य भंडारगारिणि ठवेइ)

આ રીતે ધાન્યસાર્થવાહે રક્ષિકાના મુખેથી બધી વિગત સાંભળીને બહુજ પ્રસન્ન તેમજ સંતુષ્ટ થતાં તેને પોતાના ઘરમાં જેટલું સોનું ચાંદી વગેરે ધન હતું તેની અધિકારીણી બનાવી દીધી.

(एवामेव समणाउसो जाव पंचयसे महव्वयाइं रक्खियाइं भवंति सेणं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खिया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ તેમજ શ્રમણી જનો પ્રવ્રજિત થઈને આમ તેમ વિહાર કરતા રહે છે. તેમ કરતાં જો તેમના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षितानि भवन्ति स खलु इहभवे चैव बहूनां श्रमणानांश्च चतुर्विधसंघस्य अर्चनीयः यावत् संमाननीयो भवति यथा सा रक्षिता=धन्यसार्थवाहस्य तृतीया पुत्रवधूः ।

रोहिणिकाऽप्येवमेव=रोहिणिकानाम्नी धन्यसार्थवाहस्य चतुर्थपुत्रवधूरपि पूर्ववदेव विज्ञेया, नवरं विशेषस्त्वम्-श्रेष्ठिना समाहूय 'मद्दत्तान् पञ्चशाल्यक्षतान् समर्पय' इत्येवं कथिता सती रोहिणिका श्रेष्ठिनं प्रत्याह-हे तात ! यूयं मह्यं सुबहुकम्=अनेकसंख्यकं 'सगडीसागडं शकटीशाकटं शकटयः=लघुगाडिकाः शाकटं=शकटसमूहः, शकटयश्च शाकटं चेति समाहारे शकटीशाकटम्=अनेकगाडी शकटसमूहं 'दलह' दत्त=प्रयच्छत, येन शकटचादिनाऽहं 'तुब्भं' युष्माकं तान्

सुरक्षित रहते हैं तो वह इस भव में ही अनेक श्रमणादि जनों द्वारा तथा चतुर्विध संघ द्वारा अर्चनीय होता है यावत् संमान नीय होता है। जैसे वह धन्य सार्थवाह की तृतीय पुत्रवधू रक्षिता हुई है। (रोहिणियावि एवं चेव नवरं तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगड़ी सागडं दलाह जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालि अक्खए पडिणिज्जाएमि) इसी तरह धन्य सार्थवाह की चौथी पुत्रवधू रोहिणी का भी चरित्र जानना चाहिये परन्तु इसमें जो विशेषता है-वह इस प्रकार है-जब धन्यसार्थवाहने चौथी अपनी पुत्रवधू रोहिणिका को बुलाया-और बुलाकर उससे ऐसा कहा किमैंने आज से गत पांचवे वर्ष जो तुझे पांच शालि-अक्षत दिये थे-उन्हें तुम वापिस मुझे आज दो-तब रोहिणिकाने उनसेकहा हे तात ! आप मेरे लिये अनेक छोटी गाडियां और बडी २ गाडियां दीजिये-कि जिनके द्वारा मैं आपके उन पांच शालि अक्षतों को भर-

પાંચ મહાવ્રતો સુરક્ષિત રહે છે તો આ ભવમાં તે અનેક શ્રમણો દ્વારા અર્ચનીય હોય છે. યાવત્ સન્માનનીય હોય છે, ધન્યસાર્થવાહની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા જેમસન્માનીત થઇ તેમજ તે પણ સન્માનીત થાય છે.

(रोहिणियावि एवं चेव नवरं तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलह जेणं अहं तुब्भं ते पच सालि अक्खए पडिणिज्जाएमि)

આ પ્રમાણે હવે આપણે ધન્યસાર્થવાહની ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણીના ચરિત્ર વિષે પણ જાણવું જોઇએ. તેના ચરિત્રની વિશેષ વાત આ પ્રમાણે છે કે— જ્યારે ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણિકાને બોલાવી અને બોલાવીને તેને એમ કહ્યું કે આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં મેં તને પાંચ શાલિકણો આપ્યા હતા તે મને પાછા આપો. ત્યારે રોહિણિકાએ તેમને કહ્યું. કે હે તાત ! તમે મને અનેક નાની મોટી ગાડીઓ આપો કે જેથી તમે આપેલા પાંચ શાલિકણોને તેમાં ભરાવીને અહીં લાવું અને તમને પાછા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्च शाल्यक्षतान् 'पडिणिज्जाएमि' प्रतिनिर्यातयामि=प्रतिसमर्पयामि. । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणीमेवमवदत्– कथं खलु हे पुत्रि ! त्वं मम तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशाकटेन 'पडिणिज्जाइस्ससि' प्रतिनिर्यातयिष्यसि=प्रतिसमर्पयिष्यसि ? ततः खलु सा रोहिणी धन्यं सार्थवाहमेवमवदत्–एवं खलु हे तात ! यूयम् इतः पञ्चमे संवत्सरे–अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः पुरतः संरक्षणार्थं संगोपनार्थं पञ्च शाल्यक्षतान् मह्यं दत्तवन्तः, तान् गृहीत्वा मया चिन्तितम्–अत्रकेनापि

वाकर यहां ला सकूं–और आपको पीछे वापिस करसके (तएणं से धण्णे रोहिणि एवं वयासी) रोहिणिका की इस प्रकार बात सुनकर धन्यसार्थवाहने उससे ऐसा कहा–(कहं णं पुत्ता ! तुमं मम ते पंच सालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाइस्ससि) पुत्रि ! किस तरह तुम मुझे वे पांच शालि अक्षत शकटी और शकट समूह में भरने लायक कर पीछे वापिस देना चाह रही हो ? (तएणं सा रोहिणि धण्णं एवं वयासी-एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमें संवच्छरे इमस्स मित्त० जाव वहवे कुंभसया जाया–तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ। तुब्भे ते पंच सालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाएमि) धन्यसार्थवाह का ऐसा कहना सुन कर रोहिणिका ने कहा–तात ! आजसे पांचवें वर्ष में आपने मुझे मित्र ज्ञाति आदिपरिजनों के समक्ष बुला कर पांच शालि अक्षत दिये थे–और उनके संरक्षण संवर्धन आदि विषय में आपने शिक्षा की थी।

આપી શકું (तएणं से धण्णे रोहिणि एवं वयासी) રોહિણિકાની આ રીતે વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું

(कहंणं पुत्ता ! तुमं ते पंचसालि अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइस्ससि)

હે પુત્રી ! મેં આપેલા પાંચ શાલિકણોને તમે નાની મોટી ઘણી ગાડી ઓમાં ભરાવીને કેવી રીતે આપવા માંગો છો

(तएणं सा रोहिणी धण्णं एवं वयासी -एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त. जाव वहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ तुब्भे ते पंचसालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाएमि)

ધન્યસાર્થવાહનું કથન સાંભળીને રોહિણિકાએ તેમને કહ્યું–' હે તાત ! આજથી પાંચ વર્ષ પહેલા મિત્રજ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો ની સામે મને બોલાવીને તમે પાંચ શાલિકણો આપ્યા હતા અને આપતી વખતે તમે તેમના સંરક્ષણ સંવર્ધન વગેરેની બાબતમા સૂચનો કર્યા હતાં.

તમારી પાસેથી શાલિકણો લઈને મેં આમ વિચાર કર્યો કે આ પાચ શાલિકણો તાતે આપ્યા છે અને તેમના સંરક્ષણ તથા સંવર્ધન વિષે જે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारणेन भवितव्यमिति, तदनु पितृगृहपुरुषान् समाहूय मया वर्द्धयितुं तेभ्यस्ते पञ्च शाल्यक्षता दत्ताः। तैः सुपरिकर्मित केदारेषु वपनादि क्रियाभिः परिवर्द्धिता जातास्ते प्रथमे वर्षे मागधप्रस्थपरिमिताः शालयः। एवं क्रमशो द्वितीये वर्षे शालीनां बहवः कुडवाः संजाताः। तृतीये वर्षे बहवः कुम्भाः। चतुर्थे संवत्सरे बहूनि कुम्भशतानि शालीनां संजातानि. । तेनैव क्रमेण एवं खलु हे तात ! युष्माकं तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशाकटेन प्रतिनिर्यातयामि=समर्पयामिः। तत खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणिकायै सुबहुकम्=अनेकसङ्ख्यकं शकटी शाकटं ददाति,।

મૈંને उन्हें लेकर ऐसा विचार किया–कि तातने जो ये पांच शालि अक्षत दिये है और उनके संरक्षण आदि के विषय में जो कहा है सो नियमतः इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है–ऐसा विचार कर मैंने पितृगृह (पीयर) के पुरुषों को बुलाया–और उन्हें उन पांच सालि अक्षतों को बढाने के लिये दिया।

उन लोगों ने उन्हें लेकर सुपरि कर्मित खेतों में वपनादि क्रिया द्वारा खूब बढाया प्रथम वर्ष में वे मगधदेश प्रसिद्ध प्रस्थप्रमाण निपजे। द्वितीय वर्ष अनेक कुडव प्रमाणवाले पर हुए। तृतीय वर्ष में वे अनेक कुंभप्रमाण हुए। चौथे वर्ष सैकडों कुंभप्रमाण हुए। इस तरह आपके द्वारा दिये हुए वे पांच शालि अक्षत आज अनेक गाडी और गाडा प्रमाण हुए हैं–इसलिये मैं आपके लिये आज उन्हें अनेक गाड़ी और गाडा प्रमाण करके पीछे वापिस देरही हूँ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुयं सगडी सागडं दलयइ, तएणं सा रोहिणि सुबहुं

કંઈ મને કહ્યું છે, જેથી ચોક્કસ આ વાતમાં કંઈક રહસ્ય હોવું જોઇએ. એમ વિચાર કરીને મેં પિયરના માણસોને બોલાવ્યા અને તેમને વર્ધન માટે પાંચ શાલિકણો આપ્યા.

તેમણે શાલિકણો લઈ લીધા, અને સુપરિકર્મિત ખેતરોમાં વાવીને તે કણોની ખૂબ વૃદ્ધિ કરી. પહેલા વર્ષે મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ પ્રસ્થ પ્રમાણ જેટલા શાલિકણો થયા. બીજા વર્ષે વાવવાથી ઘણા કળશો ભરાય તેટલા થયા, ત્રીજા વર્ષે બીજા વર્ષ કરતાં પણ વધારે કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ. ચોથા વર્ષે વાવવાથી સેંકડો કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ. આ પ્રમાણે તમે આપેલા પાંચ શાલિકણો આજે ઘણી નાની મોટી ગાડીઓમાં ભરાય તેટલા થઇ ગયા છે, તેથી જ હું આપને તે પાંચ શાલિકણો અનેક ગાડીઓમાં ભરાય તેટલા પ્રમાણમાં વર્ધન કરીને પાછા આપી રહી છું.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुयं सगडी सागडं दलयइ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु सा रोहिणी सुबहुकं शकटीशाकटं गृहीत्वा यत्रैव स्वकं कुलगृहं=पितृगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कोष्ठागाराणि=कोष्ठगृहाणि 'विहाडेइ' विघटयति=उद्घाटयति, विघटय्य पल्लान्=शालिकोष्ठान् 'उब्भिदेइ' उद्भिनत्ति=उन्मुद्रितान् करोति, तेषां मुद्रामपनयतीत्यर्थः, उद्भिद्य शकटीशाकटं भरति, भृत्वा राजगृहं नगरं मध्य मध्येन यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति. । ततः खलु राजगृहे नगरे शृङ्गाटक यावत्–महापथपथेषु बहुजनोऽन्यो न्यमेवमाख्याति

संगडी सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ) इस तरह रोहिणिका के वचन सुनकर धन्य सार्थवाहने उसे अनेक शकटी और शकटों को दिया वह रोहिणि का उन अनेक शकटी और शकटो को लेकर जहां अपना कुलगृह था वहां पहुँची–पहुंच कर उसने वहां के कोष्ठागार को उघाड़ा (विहाडित्ता पल्लं उब्भिदइ)–उघाड़ कर वहां रक्खे हुए शालि कोष्ठों को खोला उन्हें मुद्रा रहित किया–(उब्भिदित्ता संगडीसागडं भरेइ) बाद में उनसे अनेक शकटी और शकटों को भरा (भरित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) भर कर राजगृह नगर के ठीक बीचो बीच के मार्ग से होकर वह जहां अपना घर था और जहां धन्य सार्थवाह थे वहां पहुँची–(तएणं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ, धण्णेणं

तएणं सा रोहिणी सुबहुं संगडीसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेई)

આ રીતે રોહિણિકાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને ઘણી નાની મોટી ગાડીઓ આપી. રોહિણિકા તે બધી નાની મોટી ગાડીઓને લઈને જ્યાં પોતાનું પિયર હતું ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તેણે ત્યાંનો કોઠાર ઉઘાડયે (विहाडित्ता पल्लं उब्भिदइ) ત્યારબાદ ત્યાં મૂકેલા શાલિના કોઠારોને ઉઘાડયા (उब्भिदित्ता संगडीसागडं भरेइ) અને તેમનાથી નાની મોટી ઘણી ગાડીઓને ભરી.

(भरित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

ભરીને રાજગૃહ નગરના ઠીક મધ્ય માર્ગે થઈને જ્યાં તેનું પોતાનું ઘર અને જ્યાં ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યાં પહોંચી

(तएणं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धन्यः=धन्यवादपात्रं खलु हे देवानुप्रियाः धन्यः सार्थवाहः यस्य खलु रोहिणिका स्नुषा=चतुर्थपुत्रवधूः पञ्च शालिअक्षतान् शकटीशाकटेन निर्यातयति. । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्च शालिअक्षतान् शकटीशाकटेन निर्यातितान्=समर्पितान् पश्यति दृष्ट्वा हृष्टः यावत् 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति, प्रतीष्य=स्वीकृत्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहस्य पुरतो रोहिणिकां स्नुषां तस्य=निजस्य कुलगृहस्य=कुटुम्बस्य बहुषु कार्येषु च यावद् रहस्येषु च

देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाइए पासइ पासित्ता हट्ठ तुट्ठ पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव सव्वकज्ज वड्ढावियं पमाणभूयं ठावेइ) જ્યારે તે ગાડી અને ગાડે ભરે હુએ રાજગૃહ કે મધ્યમાર્ગ સે હોકર જા રહે થે-તબ લોગોં ને દેખકર નગરમેં શૃંગાટક આદિ માર્ગો કે ઊપર પરસ્પર ઇસ પ્રકાર સે બાત ચિત કરના પ્રારંભ કિયા " દેવાણુપ્રિયો ! દેખો ધન્ય સાર્થવાહ કિતના અધિક ધન્ય વાદ કા પાત્ર હૈ કિ જો ચતુર્થ પુત્ર વધૂ રોહિણિકા કે દ્વારા પાંચ શાલિ અક્ષતોં કી ગાડી ઔર ગાડોં સે ભરકર પીછે લૌટાયે હુએ દેખ રહા હૈ। ઔર હૃષ્ટ તુષ્ટ હો ઉન્હેં સ્વીકાર કર રહા હૈ। તથા સ્વીકાર કરકે ઉસ રોહિણિકા કો મિત્રજ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે ચારોં પુત્રવધૂઓં કે કુલ

धण्णेणं देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे ते पंचसालि अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ पासित्ता हट्ठ तुट्ठ पडिच्छइ पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ. चउण्ह य सुण्हाणं कूलघरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसुय जाव रहस्सेसुय आपुच्छणिज्जं जाव सव्वकज्ज वड्ढावियं पमाणभूयं ठावेइ)

જ્યારે તે નાની મોટી ગાડીઓ રાજગૃહ નગરના મધ્યમાર્ગે થઇને પસાર થઈ રહી હતી ત્યારે નગરના શૃંગાટક વગેરેમાં એકઠા થયેલા લોકો પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા " દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ ધન્યસાર્થવાહ કેટલો બધો ભાગ્યશાળી છે કે જે આજે ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણિકા વડે પાંચ શાલિકણોનાં ગાડાંઓ અને ગાડીઓ ભરીને ફરી પાછા આવતાં જોઇ રહ્યો છે. અને પ્રસન્ન થઇને તુષ્ટ થઇને તેને સ્વીકારી રહ્યો છે. તે આ બધું સ્વીકારીને રોહિણિકાને મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના કુટુંબી-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमच्छनीयां यावत् सर्वकार्यवर्द्धिकां प्रमाणभूतां 'ठवेइ' स्थापयति=सर्व कुटुम्बाधिष्ठात्रीत्वेन तां नियोजयतीत्यर्थः ।

एवमेव हे श्रमणाः ! आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं श्रमणोवा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि संवर्द्धितानि भवन्ति स खलु इहभवे एव बहूनां श्रमणानां ४= चतुर्विधसंघस्य अर्चनीयः-यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारं 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=पारयिष्यति यथा च सा रोहिणिका=धन्यसार्थवाहस्य चतुर्थी पुत्रवधूः । उक्तञ्च-

---

गृह वर्ग के समक्ष अपने कुटुम्ब के अनेक कार्यों में यावत् रहस्यों में पूछने योग्य यावत् समस्त कार्यों में प्रमाणभूत उसे बना रहा है।

तथा संपूर्ण कार्यों की बढाने वाली उसे मान रहा है-कारण इस का केवल यही है कि धन्य सार्थवाह ने उस रोहिणिका को अपने समस्त कुटुम्ब की अधिष्ठात्री बना दिया। (एवामेव समाणाउसो ! जाव पंच य से महव्वया संवड्ढिया भवंति सेणं इहभवे चेव बहुणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि) इस तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा श्रमण तथा श्रमणी जन दीक्षित होता हुआ अपने पंच महाव्रतों को बढाता रहता है वह रोहिणिका की तरह इस भवमें ही अनेक श्रमण आदि महानुभावों द्वारा तथा चतुर्विध संघ द्वारा अर्चनीय आदि होता हुआ चतु-

---

ઓની સામે પોતાના કુટુંબની ઘણી બાબતોમાં યાવત બીજી પણ ઘણી રહસ્યની મહત્ત્વપૂર્ણ બાબતોમાં તેની સલાહ લઈને તેને પ્રમાણ ભૂત બનાવી રહ્યો છે.

તેમજ રોહિણિકાને તે બધા કામોને સંપૂર્ણ રીતે પાર પાડનારી માની રહ્યો છે. કેમ કે ધન્યસાર્થવાહે રોહિણિકાને પોતાના આખા કુટુંબની અધિષ્ઠાત્રી બનાવી દીધી છે

(एवामेव समाणाउसो ! जाव पंचय से महव्वया संवड्ढिया भवंति से णं इह भवे चेव बहुणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ તેમજ શ્રમણીજન દીક્ષિત થઈને પોતાના પંચમહાવ્રતોનું વર્ધન કરતા રહે છે-તે રોહિણિકાની જેમ આ જગતમાં જ ઘણા શ્રમણ વગેરે મહાનુભાવો દ્વારા તેમજ ચતુર્વિધ સંઘદ્વારા અર્ચનીય હોય છે. અને તે ચતુરંત ૨૫ આ અનાદિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" जहसेट्ठी तह गुरुणा, जहणाइजणो तह समणसंघोय ।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ॥ १ ॥" इति

छाया—" यथाश्रेष्ठी तथा गुरवः, यथाज्ञातिजनस्तथा श्रमणसंघश्च. ।
यथा वध्वस्तथा भव्याः (श्रमणाः) यथा शालिकणास्तथा व्रतानि ॥ १ ॥ इति

एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्षं संप्राप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तः अर्थ=भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः । ' इति ब्रवीमि इति पूर्ववत् . ॥

इति श्री–विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराज-गुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री–घासीलाल–व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तममध्ययनं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

गति रूप इस अनादि संसार कान्तार को पारकरदेताहै। कहा भी है–श्रेष्ठी के स्थानापन्न यहां गुरुजन हैं ज्ञातिजनों के स्थानापन्न श्रमण संघ है, बधुओं के स्थानापन्न भव्यजन हैं और शालिकणों के समान पांच महाव्रत है।

इस प्रकार हे जंबू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने इस सप्तम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं तुम से कहता हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासी लालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सातवा अध्ययन समाप्त ॥ ७ ॥

સંસાર કાંતાર (જંગલ) ને પાર થઈ જાય છે. અહીં શ્રેષ્ઠીના સ્થાને ગુરુજનો છે. જ્ઞાતિજનોના સ્થાને શ્રમણસંઘ છે. સગાવહાલા ઓના સ્થાને ભવ્ય જનો છે અને શાલિકણો ના સ્થાને પંચમહાવ્રતો છે.

આ રીતે હે જંબૂ ! મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા જ્ઞાતા ધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપે નિરૂપિત કર્યો છે. આમ હું તમને કહી રહ્યોછું. શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ' સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૭॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथाष्टममध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्तं सप्तमाध्ययनं सम्प्रतं मल्लीनामकममष्टमाध्ययनमुच्यते, एवं रूपेण सहास्य सम्बन्धः–पूर्वाध्ययने ' महाव्रतानां विराधनायामर्थो भवति, तथा तत्समाराधनायां शिवसुखावाप्तिरूपः परमार्थो भवती ' त्युक्तम्, अस्मिन्नध्ययने तु तेषां महाव्रतानामेव स्तोकेनापि मायाशल्येन मालिन्ये सति यथावत् स्वफलजनकत्वं नास्तीति प्रतिबोध्यते, इत्येवं प्रसंगतः प्राप्तस्यैतस्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—

—: अष्टम अध्ययन प्रारभ –

सातवां अध्ययन का भाव संपूर्ण हो गया है–अब मल्ली नामका अष्टम अध्ययन प्रारंभहोता हे ! इसअध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबंध है कि पूर्व अध्ययनमें जो यह विषय कहा गया है कि जो साधुमहाव्रतों की विराधना करता है वह अनेक अनर्थों का भोक्ता होता है और चतुर्गति संसार में परिभ्रमण करता है जो इनकी रक्षा करता है–अच्छी तरह से आराधना करता है–वह शिव सुख प्राप्तिरूप परमार्थका भोक्ता होता है।

अब इस अध्ययन में सूत्रकार इसबातको स्पष्ट कहते हैं कि उन महाव्रतों में यादि थोडीसी भी मायाशल्य से मलिनता आजाती है तो वे यथावत् अपने फलके जनक नही होते हैं। इसीसंबंध से प्राप्त हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है जइणं भंते इत्यादि

આઠમું અધ્યયન.

સાતમું અધ્યયન પુરૂં થઈ ગયું છે. હવે મલ્લી નામે આઠમું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. આ અધ્યયનનો પૂર્વ અધ્યયનની સાથે સંબંધ એવી રીતે છે કે–સાતમા અધ્યયનમાં એ પ્રકારે ચર્ચા થઇ કે જે સાધુ મહાવ્રતોની વિરાધના કરે છે તે ઘણા અનર્થોને ભોગવનાર હોય છે, અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સંસારમાં પરિભ્રમણ કરે છે. જે પંચમહાવ્રતોની રક્ષા કરે છે–સારી પેઠે તેમની આરાધના કરે છે તે શિવસુખ પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થને ભોગવતા હોય છે.

હવે આઠમાં અધ્યયનમાં સૂત્રકાર એ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે કે મહાવ્રતોમાં જો થોડી પણ માયા શલ્યથી મલીનતા આવી જાય તો તેમનું ફળ સંપૂર્ણ પણે મળતું નથી. એજ સંબંધની ચર્ચા માટેના આઠમા અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે. ' जइणं भंते ' इत्यादि—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहेवासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणइए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं सलिलावतीनामं विजए पन्नत्ते, तत्थ णं सलिलावती विजए वीयसोगानामं रायहाणी पण्णत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया तस्स धारणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे, होत्था, तएणं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइं सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाव उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति–' जइणं भंते !' इत्यादि ' जइ ' यदि ' णं ' खलु ' भंते ! ' हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण श्रीवर्धमान स्वा-

---

टीकार्थ–(जइणं भंते !) श्री जंबूस्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (जइणं भंते !) हे भदंत ! यदि (समणेणं भगवया महाविरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! के

टीकार्थ–(जइणं भंते !) श्री જંબૂ સ્વામી પૂછે છે કે (जइणं भंते) હે ભદંત ! જો (समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पण्णत्ते)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिना यावत्- सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, अष्टमस्य खलु हे भदन्त ! कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

एवं श्रीजम्बू स्वामिना पृष्टः श्री सुधर्मास्वामी तं कथयति- ' एवं खलु जम्बू इत्यादि. । एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् समये- इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बू द्वीपे महाविदेहे वर्षे महाविदेहनामके क्षेत्रे मन्दरस्य पर्वतस्य=मेरुगिरेः 'पच्चत्थिमेणं ' पश्चिमे पश्चिमायां दिशि ' निसढस्स ' निषधस्य=निषधपर्वतस्य ' वासहरपव्वयस्स ' वर्षधरपर्वतस्य ' उत्तरेणं ' उत्तरस्मिन् उत्तरस्यां दिशि ' सीयोयाए महाणइए ' शीतोदाया महानद्याः ' दाहिणे ' दक्षिणे दक्षिणस्यां दिशि सुखाव

अट्ठे पण्णत्ते) श्रमण भगवान् महावीरने कि जो मोक्षको प्राप्त हो चुके है सातवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदंत ! उन्होंने आठवे ज्ञाताध्ययन का क्या भाव प्ररूपित किया है । (एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेवजंबू दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणइए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थि मलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं सलिलावइ नामं विजए पन्नत्ते) इस प्रकार जंबू स्वामी के द्वारा पूछे गये श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं हे जंबू । तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इसप्रकार है उस काल में और उस समय में इस जंबूद्वीप नामके द्वीप में स्थित महाविदेह नामका क्षेत्र में सुमेरूपर्वत की पश्चिमदिशामें, निषधर्वत की उत्तरदिशा में शीतोदा म-

મોક્ષ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સાતમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોકત રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે. તો હે ભદંત ! તેમણે આઠમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે.

(एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबू दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणइए दाहिणे णं सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं सलिलावइ नामं विजए पन्नत्ते)

શ્રી સુધર્મસ્વામી જંબૂ સ્વામીને જવાબ આપતાં કહે છે કે હે જંબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે-તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપમાં સ્થિત મહાવિદેહ નામે ક્ષેત્રમાં સુમેરુપર્વતની પશ્ચિમદિશામાં નિષધપર્વતની ઉત્તર દિશામાં, મહાનદી શીતોદાની દક્ષિણે, સુખાવહ વક્ષસ્કાર પર્વતની પશ્ચિમે, પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રની પૂર્વદિશામાં સલિલાવતી નામે વિજય છે. પશ્ચિમ સમુદ્રમાં મળનારી મહાનદી શીતોદાની દક્ષિણ દિશામાં સલિલા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस्य सुखोत्पादकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमे पश्चिमायां दिशि पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्ये पूर्वे, अत्र अस्मिन् स्थाने खलु सलिलावती नामा विजयः प्रज्ञप्तः- पश्चिम समुद्रगामिन्याः शीतोदामहानद्या दक्षिणतः सलिलावतीनामकं चक्रवर्तिनां विजेतव्यं क्षेत्रखण्डमासीत्, तदेव सलिलावतीविजय इत्युच्यते इत्यर्थः।

तत्र खलु सलिलावतीविजये वीतशोका नाम राजधानी प्रज्ञप्ता कथिता.। सा कीदृशी- इत्याह-नवयोजनविस्तीर्णा यावत् द्वादश योजनायामा प्रत्यक्षं देवलोकभूता साक्षात् स्वर्गस्वरूपा। तस्याः खलु वीतशोकाया राजधान्या उत्तर पौरस्त्ये=दिग्भागे ईशानकोणे इन्द्रकुम्भं नामोद्यानमासीत्.। तत्र खलु वीतशोकायां राजधान्यां बलो नाम राजाऽभूत्। तस्य बलस्य राज्ञो धारणी प्रमुखं देवीसहस्रम्.

हानदी की दक्षिण दिशामें, सुखोत्पादक वक्षस्कारपर्वत की पश्चिमदिशामें, पश्चिमलवणसमुद्र की पूर्व दिशा में सलिलावती नाम का विजय है।

पश्चिम समुद्र में जानेवाली शीतोदा महानदी की दक्षिणदिशा में जो सलिलावती नामका विजय है-जिसे चक्रवती जीता करते हैं। उसी का नाम सलिलावती विजय है।

(तत्थणं सलिलावती विजए वीयसोया नामं रायहाणी पण्णत्ता) उस सलिलावती विजय में वीतशोका नाम की राजधानी है (नव जोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोय या) इसका नौ योजन का विस्तार है और १२ योजन का आयाम है। यह प्रत्यक्ष में देवलोक -अमरावती-जैसी प्रतीत होती है। (तीसेणं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे) उस वीतशोका नगरी के ईशान कोण में एक इन्द्रकुंभ नामका उद्यान था। (तत्थणं वीयसोगाए

वती नामे એક क्षेत्र-खंड-छे. જેને चक्रवर्ती સમ્રાટો જીતતા આવ્યા છે-તેનું नाम सलिलावती विजय छे

(तत्थणं सलिलावती विजए वीयसोका नामं रायहाणी पण्णत्ता) सलिलावती विजयमां वीतशोका नामे એક राजधानी छे (नव जोयण वित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोय भूया) तेनो विस्तार नव योजन જેટલો તેમજ તેનો आयाम १२ (બાર) योजन જેટલો છે તે प्रत्यक्ष देवलोक-अमरपुरी-જેવી सुंदर छे. (तीसेणं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमें दिसिभाए इंद कुंभे नामं उज्जाणे) તે वीत शोका नगरीना ईशान કોણમાં इन्द्रकुंभ नामे એક उद्यान હતો.

(तत्थणं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया, तस्स धारणी पामोक्खं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवरोधे=अन्तः पुरे आसन्. बलनामकस्य तस्य राज्ञो धारणीप्रमुखा एकसहस्र संख्यकाः देव्यआसन्नित्यर्थः ।

ततस्तदनन्तरं खलु सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचित्– अन्यस्मिन् कस्मिं श्चित् समये सिंह स्वप्ने स्वप्नावस्थायां दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता, यावद् महाबलो नाम दारको जातः इह यावच्छब्देन–सा स्वप्नवृत्तं भर्तुरग्रे निवेदयति, ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रुतिस्ततः सा गर्भवती जाता संपूर्णेषु मासेषु महाबल नामकः पुत्रो जात इत्यर्थो बोद्धव्यः । सा कीदृश इत्याह उन्मुक्त–यावद्

रायहाणीए बले नामं राया,तस्स धारणी पामोक्खं देवी सहस्सं ओराहे होत्था) उस वीत शोका नाम की राजधानी में बल नामका राजा रहता था। उसके अन्तः पुर में धारणी प्रमुख १ हजार रानियां थी। (तएणं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइं सिहे सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे) एक दिनकी बात है कि जब धारिणी देवी अपनी शय्या में आनन्द के साथ सोयी हुईथी उस समय उसने रात्रिके पश्चिम प्रहरमें स्वप्नमें एक सिंह देखा। स्वप्न देखने के साथ साथ वह जग गई। स्वप्न का वृत्तान्त उसने अपने पतिसे निवेदित किया। उसने स्वप्न पाठकों को बुलाया और उनलोगोने स्वप्न फलका रहस्य उसे सुनाया रानीने भी वह सब सुना। वह गर्भवती हो गई। गर्भ के नो मास साढे सात औरआनन्द के साथ उसके व्यतीत हुई। बाद में महाबल नामका पुत्र उससे उत्पन्न हुआ।

देवी सहस्सं ओराहे होत्था)

તે વીતશોકા નામની રાજ નીમાં બલ નામે રાજા રહેતો હતો.

તેના રણવાસમાં ધારણી ૧ ખ એક હજાર રાણીઓ હતી.

(तएणं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइं सिहे सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए उम्मुक्कजाव भोगसमत्थे)

એક વખતની વાત છે કે ધારિણીદેવી પોતાની શય્યા ઉપર સુખેથી સૂતી તે સમયે રાત્રિના છેલ્લા પહોરમાં તેણે સ્વપ્નમાં એક સિંહ જોયો. સ્વપ્ન જોતાની સાથેજ તે જાગી ગઇ, અને સ્વપ્નની વિગત પોતાના પતિને કહી સંભળાવી. સ્વપ્ન પાઠકોને બોલાવ્યા અને તેમણે રાજાને સ્વપ્નના ફળ વિષે બધી વાત કહી. રાણીએ પણ સ્વપ્નના રહસ્યને સ્વપ્ન પાઠકોના મુખેથી સાંભળ્યું તે સગર્ભા થઇ. ગર્ભના નવ માસ અને સાડા સાત દિવસો સુખેથી પસાર થયા. ત્યાર બાદ યથા સમયે તેને મહાબલ નામે પુત્રનો જન્મ થયો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोग समर्थः = उन्मुक्तबालभाव विज्ञातपरिणतमात्रः सर्वकलाकुशलो भोगसमर्थो जात इत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तएणं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरी पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, पंच पासायसया पंचसयदाओ जाव विहरइ, थेरागमणं, इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा । परिसा निग्गया, बलो वि निग्गओ धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥सू० २॥

टीका–ततस्तदनन्तरं खलु तं 'महब्बलं' महाबलनामकं कुमारं मातापितरौ 'सरिसियाणं' सदृशीनां कुलेन वयसा योग्यानां कमलश्रीप्रमुखाणां, पञ्चानां राजवरकन्याशतानां=पञ्चशतानां राजवरकन्यानाम्, एकदिवसे पाणिं ग्राहयतः, पञ्च

धीरे २ वह महाबल पुत्र बाल्यकाल को पूरा करके यौवन अवस्था को प्राप्त हुआ । अवस्थानुसार वह विकसितज्ञान वाला भी होगया सर्वकलाओं में कुशलमति बन गया और–पंचेन्द्रियों के भोग भोगने लायक भी हो गया । सूत्र " १ "

' तएणं तं महब्बलं ' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (तं महब्बलं अम्मापियरो) उस महाबल का माता पिताने (एगदिवसेणं) एक ही दिन के भीतर (सरिसियाणं कमलसिरी पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं) समान कुल, वय वाली कमलश्री आदि पांचसौ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ (पाणिं

समय જતાં મહાબલ બચપણ વટાવીને જુવાન થયો. ઉંમરના વધારાથી વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો. તે બધી કળાઓમાં કુશળ બુદ્ધિ વાળો અને પંચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો. ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

' तएणं महाब्बलं ' इत्यादि

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (तं महब्बलं अम्मापियरो) મહાબલને તેનાં માતા પિતાએ (एगदिवसेणं) ફક્ત એક દિવસમાં જ.

(सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खा णं पंचण्हं रायवर कन्नासयाणं) સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાંચસો ઉત્તમ રાજ કન્યાઓની સાથે (पाणिं गेण्हावेंति) પરણાવી દીધો. (पंच पासाय सया पंच सय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रासादशतानि पञ्चशतवधूनां निवासार्थं पञ्चशतानि प्रसादान् कारयतः। पञ्चशतदायः=पञ्चशतप्रमितो दायः=यौतुकं 'दहेज' इति भाषा प्रसिद्धः श्वसुरेण तस्मै महाबलकुमाराय प्रदत्त इत्यर्थः। स महाबलकुमारः यावद्=उपरि प्रासादे मानुष्यकान् कामभोगान् उपभुञ्जानः, विहरति=आस्तेस्म। अथ-'थेरागमणं' स्थविरागमनम्=तत्र वीतशोकायां नगर्यां स्थविराणामागमनमभूदित्यर्थः। ते स्थविराः इन्द्रकुम्भे=इन्द्रकुम्भनामके 'उज्जाणे' उद्याने 'समोसढा' समवसृताः-अवग्रहमवगृह्यावस्थिताः। परिषन्निर्गता=वीतशोकानगरी निवासीनो लोकाः स्थविराणं वन्दनार्थं बहिर्निःसृता इत्यर्थः। बलोऽपि निर्गतः=बलनामा नृपोऽपि नगर्यां निःसृतः। स्थविराणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य, राजा बलः प्रतिबुद्धः सन्नवादीत्-

---

गेण्हावेंति) विवाह कर दिया। (पंच पासायसया पंचसयदाओ) और पांच सौ प्रासाद उन ५०० पांच सौ वधूओं के निवास के लिये बनवादिये। महाबल कुमारके लिये उसके श्वसुर ने ५०० प्रमाण दहेज दिया। अर्थात् दहेज में भी वस्तुए महाबल कुमारको मिली-वे सब ५०० ५०० सौ थी। (जाव विहरइ) इस तरह वह महाबल कुमार यावत् महलों के ऊपर रहता हुआ मनुष्य भव संबंधी काम भोगों को भोगने लगा (थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया बलो वि निग्गओ) वीतशोका नामकी उसनगरी में एक समय स्थविरो का आगमन हुआ वे सब वहां के इन्द्रकुंभ नाम के उद्यान में मुनिपरंपरा के अनुसार अवग्रह प्राप्तकर विराजमान हुए। नगरी के परिषद् मुनि वंदना के लिये अपने अपने घर से निकल कर उस उद्यान में आई। बल राजा भी आया। (धम्मं सोच्चा निसम्म

दाओ) अने पांचसो महेल ते पांचसो नववधूओ ने रहेवा माटेबनावी दीधा. महाबल कुमारना ससराओ पांचसो प्रमाणो हेज आप्युं. एटले के महाबलकुमारने हेजमां जेटली वस्तुओ मळी ते तमाम पांचसोनी संख्यावाळी हती.(जाव विहरइ) आ प्रमाणे महाबल कुमार 'यावत' बधा महेलोमां रहीने मनुष्य भवना बधा भोगोभोगववा लाग्यो.

(थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया बलो वि निग्गओ)

एक वखते वीतशोक नामनी ते नगरीमां स्थविरोनुं आगमन थयुं. तेओ बधा त्यांना इन्द्रकुंभना उद्यानमां मुनिपरंपराने अनुसरतां अवग्रह मेळवीने विराजमान थया. नागरिकोनी परिषद पोत पोताना घेरथी नीकळीने मुनिजनोनी वंदना माटे उद्यानमां आवी. बलराजा पण त्यां आव्या,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्र पूर्ववद् वर्णनं बोध्यम्. यथा हे देवानुप्रियाः महाबलकुमारं राज्ये स्थापयित्वा युष्माकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि. ततः स्थविरैः- 'विलम्बं माकुरु' इत्युक्तो ऽसौ बलः यन्नवरं=विशेषवृत्तमाह-महाबलं महाबलनामकं स्वपुत्रं राज्ये स्थापयति स्थापयित्वा स्थविराणां समीपे प्रव्रजितः।

यावद् एकादशाङ्गविद् एकादशाङ्गान्यधीते स्म.। बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यत्रैव चारुपर्वतस्तत्रोपागत्य मासिकेन भक्तेन=मासिकभक्तपत्याख्याने न मासिकमनशनं कृत्वेत्यर्थः, सिद्धः=मुक्तिं प्राप्तः ॥ सू०२ ॥

जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए, मासिएणं भत्तेणं सिद्धे) स्थविरों से श्रुतचारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर, उसे हृदय में धारण कर राजा बल प्रतिबुद्ध हो गया। और कहने लगा- हे देवानुप्रियो ! मैं महाबल कुमार को राज्य में स्थापित कर आपके पास दीक्षा लेना चाहता हूँ। इस तरह जब राजा ने कहा-तो उन स्थविरों ने "विलम्ब मत करो" ऐसा उससे कहा-इस प्रकार उन से आज्ञापित होता हुआ वह महाबल राजा वापिस नगर में आया वहां आकर उसने महाबल कुमार को राज्य में स्थापित किया।

बाद में स्थविरों के पास जाकर दीक्षित हो गया। धीरे २ उसने ११ अंगों का अध्ययन कर लिया। इस तरह उसने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया। पालन करके फिर वह जहां वह चारु पर्वत था वहां आया। वहां आकर उसने १ मास का भक्त प्रत्याख्यान किया। और अन्त में मुक्ति को प्राप्त कि। सूत्र " २ "

(धम्मं सोच्चा निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे)

સ્થવિરો પાસે શ્રી શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળીને તેને સારી પેઠે હૃદયમાં ધારણ કરીને રાજા બલ પ્રતિબુદ્ધ થઈ ગયો, અને તે કહેવા લાગ્યો-' હે દેવાનુપ્રિયો ! હું મહાબલ કુમારને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તમારી પાસેથી દીક્ષિત થવા ચાહું છું. રાજાની આ વાત સાંભળીને સ્થવિરો એ તેને કહ્યું 'વિલમ્બ કરો નહિ' આ રીતે તેમની આજ્ઞા મેળવીને રાજા નગરમાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેણે મહાબલ કુમારને રાજ્યસિંહાસન ઉપર બેસાડયો.

ત્યારબાદ રાજા સ્થવિરોની પાસે આવીને દીક્ષિત થઇ ગયો. ધીમે ધીમે તેણે અગિયાર (૧૧) અંગોનું અધ્યયન કર્યું. આરીતે તેણે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું. પાલન કરીને તે જ્યાં ચારુપર્વત હતો ત્યાં આવીને તેણે એક માસનું ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કર્યું. અને અન્તે મુક્તિ મેળવી ॥સૂ૦૨॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महाबलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचंदे सहजायया सहवड्ढिया जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं त्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया, महब्बले णं धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पियबालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छइ। तएणं ते छप्पियबालवयंसगा महब्बलं रायं एवं वयासी–जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयह अम्हं के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो। तएणं से महब्बले राया ते छप्पिय बालवयंसए एवं वयासी–जइणं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छहं जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह–पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति, तएणं से महब्बले राया छप्पियबालवयंसए पाउब्भूते पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ. आपुच्छइ, तएणं से महब्बले जाव महिड्ढीए जाव पव्वइए एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका–'तएणं सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं सा कमलश्री राज्ञी महाबलस्य भार्या, अन्यदा अन्यस्मिन् काले सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा। यावत् बलभद्रः कुमारो जातः अत्र यावत्करणेनायमर्थोऽवगन्तव्यः–सा स्वप्नवृत्तं भर्तुरग्रे निवेदयति ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रवणं यावत्–तदनन्तरं सा गर्भवती जाता, संपूर्णेषु मासेषु बलभद्रनामकः कुमारः उत्पन्न इति। स युवराजश्चाप्यभवत्। तस्य खलु महाबलस्य राज्ञ इमे=वक्ष्यमाणा षडपि च बालवयस्यका बालमित्राणि

'तएणं सा कमलसिरी' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्नया) किसी एक समय (सीहं) सिंह को (सुमिणे) स्वप्न में (जाव बलभद्दो कुमारो जाओ) देखा और देख कर वह प्रतिबुद्ध हो गई–जग गई–। यावत् उस के बलभद्र कुमार उत्पन्न हुआ यहां यावत् शब्द से इस पाठ का संग्रह हुआ है–कमल श्री ने स्वप्न में जो सिंह देखा था उस स्वप्न को उस ने अपने पति महाबल से कहा–महाबल ने स्वप्नपाठकों को बुलाया उन्हों ने इस दृष्ट स्वप्न का क्या फल है यह बात उसे सुनाई। सुनकर सब को बडा आनन्द हुआ। कमल श्री गर्भवती हुई। नौ मास साढे सात दिन जब गर्भ को पूर्ण हो गया–तब कमल श्री के बलभद्र नाम का कुमार उत्पन्न हुआ।

(जुवराया यावि होत्था) धीरे २ वह कुमार युवराज भी बन गया। (तस्स णं महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था)

'तएणं सा कमलसिरी' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારબાદ (सा कमलसिरी) મહાબલ રાજાની રાણી કમલા શ્રીએ (अन्नया) કોઇ એક વખતે (सीहं) સિંહને (सुमिणे) સ્વપ્નમાં (जाव बलभद्दो कुमारो जाओ) જોયો અને જોઈને તે જાગી ગઇ. 'यावत्' સમય જતાં તેને બલભદ્ર નામે કુમાર જન્મ્યો. અહીં 'यावत्' શબ્દથી આ પાઠોનો સંગ્રહ થયો છે કે–કમલશ્રીએ જે સ્વપ્નમાં સિંહ જોયો હતો તે સ્વપ્ન વિષેની ચર્ચા તેણે પોતાના પતિ મહાબલને કરી મહાબલે સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા સ્વપ્નપાઠકોએ તેને સ્વપ્નનું ફળ બતાવ્યું. સ્વપ્નફળને જાણીને બધાને ખૂબજ આનંદ થયો. કમળાશ્રી સગર્ભા થઇ. ગર્ભને જ્યારે નવમાસ અને સાડા સાત દિવસ પૂરાં થયાં ત્યારે કમળશ્રીના ઉદરથી બલભદ્રનામે કુમારનો જન્મ થયો.

(जुवराया यवि होत्था) સમય પસાર થતાં કુમાર બલભદ્ર યુવરાજ પણ થઇ ગયા. (तस्सणं महाबलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था) મહાબલ રાજાને ૬ બાલમિત્ર રાજાઓ પણ હતા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजान आसन्,तद् यथा-(१) अचलः, (२) धरणः, (३) पूरणः, (४) वसुः (५) वैश्रमणः, (६) अभिचंद्रः, ते कीदृशा इत्याह-' सहजायया ' सहजातकाः सह समानकाले समुत्पन्नाः, सहवर्धिताः, समानकाले वर्धिताः, यावत्-' तेसिं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जन्नं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तन्नं, ' इत्यन्तस्य पाठस्य संग्रहः । तेषाम् अन्यदा कदाचित् एकतः सहितानां समुपागतानां संनिषण्णानां संनिविष्टानाम् अयमेतद्रूपः मिथः कथासमुल्लापः समुदपद्यत इतिछाया । एकतः=एकत्र-एकस्मिन् स्थाने सहितानां=मिलितानां, समुपागतानां सप्तानां मध्ये एकस्य कस्यचिद् भवने कार्यवशात् संप्राप्तानां, संनिषण्णानाम्=उपविष्टानां, संनिविष्टानां=स्थिरसुखासनस्थितानाम्-अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः मिथः कथासमुल्लापः=परस्परवार्तालापः समुदपद्यत=अभवत्, इत्यर्थः । यत् खलु देवानुप्रियाः ! अस्माकं सुखं वा दुःखं वा प्रव्रज्या वा विदेशगमनं वा समुत्पद्यते, तत् खलु अस्माभिः ' एगयओ

उस महाबल राजा के ये छह बाल मित्र राजा थे । (तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे अभिचंदे सहजायया, सहवड्ढिया जाव कम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति) उनके नाम ये हैं- (१) अचल, (२) धरण (३) पूरण (४) वसु (५) वैश्रमण (६) ये अभिचंद्र । सब महाबल राजा के साथ२ उत्पन्न हुए थे,और उन्हीं के साथ २ बडे हुए थे। एक समय सब ये सबके सब किसी कार्यवश एक स्थान पर एकत्रित हुए तो परस्पर में इन सब ने ऐसा विचार किया-कि चाहे सुख कारक कार्य हो या दुःख कारक कार्य हो, प्रव्रज्या लेना हो या परदेश जाना हो चाहे इनमें से कोई भी

(तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे, अभिचंदे सहजायया सह वड्ढिया जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्टु अन्न मन्न स्सेयमट्ठं पडिसुणेंत्ति

તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-(૧) અચલ, (૨) ધરણ, (૩) પૂરણ, (૪) વસુ, (૫) વૈશ્રમણ, (૬) અભિચંદ્ર. આ બધા મહાબલ રાજાની સાથે જ જન્મ્યા હતા, અને તેમની સાથે જ મોટા થયા હતા, એક વખતે જ્યારે બધા કોઇ કાર્યવશ એક સ્થાને એકઠા થયા ત્યારે તેઓએ વિચાર કર્યો કે દુઃખ કારક કે સુખ કારક ગમે તેવું કામ હોય પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવી હોય કે પરદેશ જેવું હોય, તો આપણે બધાએ સંપીને જ તે કામ સાથે રહીને કરવું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समेच्चा ' एकतः समेत्य ' णित्थरियव्वं ' निस्तरितव्यम् इतिकृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अस्माभिः सर्वमित्रैर्मिलित्वा सर्वं कार्यं संपादनीयमिति निश्चित्य परस्परमेतमर्थं प्रतिज्ञातवन्त इत्यर्थः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये इन्द्रकुम्भे उद्याने स्थविराः समवसृताः समागतवन्तः । परिषन्निर्गता=स्थविरान् वंदितुं वीतशोका नगरी निवासिनो लोका बहिर्निःसृताः, महाबलो राजाऽपि वन्दनार्थं निर्गतः । महाबलः खलु धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् स्थविरानेवमवादीद् युष्माकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि यन्नवरं षडपि च बालवयस्यकान् आपृच्छामि बलभद्रं च कुमारं राज्ये स्थापयामि, ततः

कार्य करना हो तो हम सब लोग मिलकर ही वह कार्य करेंगे इस प्रकार से आपस में वे सब वचन बद्ध हो गये । (तेणं कालेणं तेणं समएणं) इतने में उस काल और उस समय में (इंदकुंभउज्जाणे थेरा समोसढा) उस इंदकुंभ उद्यान में स्थविरों का आगमन हुआ- (परिसा निग्गया महब्बलेणं धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पियबालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि) स्थविरों का आगमन सुनकर वीतशोका नगरी की परिषद् मुनियों को वंदना करने के लिये अपने २ घर से निकल कर उद्यान मे आई, महाबल राजा भी गये। धर्म का उपदेश हुआ महाबल राजा धर्म का उपदेश सुन कर प्रतिबोध को प्राप्त हो गया ।

उसने उसी समय स्थविरों से कहा-भदंत ! मैं आप लोगों के पास दीक्षा धारण करना चाहता हूँ-परन्तु मेरे जो बालसखा हैं मैं उन से

આ પ્રમાણે તેઓ પ્રતિજ્ઞા (વચન) બદ્ધ થયા. (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा) ઇન્દ્રકુંભ ઉદ્યાનમ ! સ્થવિરો પધાર્યા.

(परिसा निग्गया महब्बले णं धम्मं सोच्चा जंन वरं छप्पिय बालवयंसए आपूच्छामि बलभद्दंच कुमारं रज्जे ठावेमि)

સ્થવિરોનું, આગમન સાંભળીને પોત પોતાના સ્થાનેથી નીકળીને વીત શોકા નગરીના નાગરિકોની પરિષદ મુનિયોની વંદન માટે ઉદ્યાનમાં આવી. મહાબલ રાજા પણ ત્યાં ગયા. મુનિઓએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ધર્મોપદેશ શ્રવણ કરીને રાજા મહાબલને પ્રતિબોધ થયો. એટલે કે વૈરાગ્ય થયો.

મહાબલે તે સમયે જ સ્થવિરોને વિનંતિ કરી " હે ભદંત ! હું તમારી પાસેથી દીક્ષિત થવા ચાહું છું. પણ તે પહેલાં આ વિષે મારા બાલસાખાઓને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थविरैः-' मा विलम्बं कुरु ' इत्येवमुक्तः सन् स्वभवने समागत्य यावत् तान् षडपि बालवयस्यकान् अपृच्छति। ततः खलु ते षडपि च बालवयस्यकाः महाबलं राजानमेवमवादीत्-यदि खलु देवानुप्रियाः! यूयं प्रव्रजिष्यथ, अस्माकं कोऽन्य आधारो वा आलम्बो वा भविष्यति यावत्-तस्माद् युष्माभिः सहैव वयं प्रव्रजामः। ततः खलु स महाबलो राजा तान् षडपि च बालवयस्यकान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं मया सार्धं यावत् प्रव्रजिष्यथ, तर्हि खलु स्व स्वभवनं गच्छत ज्ये-

इस विषय में पूछ लूँ और बलभद्र कुमारको राज्य में स्थापित कर दूँ पीछे आपके पास संयम लूंगा। इस प्रकर राजा का कथन सुनकर स्थविरों ने उससे " मा विलम्बं कुरु " विलम्ब मत करो ऐसा कहा-स्थविरों द्वारा अनुमत हो कर राजा अपने घर पर वहां से वापिस आया और आते ही उस ने (जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छइ) अपने बाल काल्य के उन छह मित्रो से पूछा।

(तएणं ते छप्पिय बालवयंसगा महब्बलं रायं एवं वयासी) अपने मित्र महाबल की बात सुनकर उन मित्रों ने उससे ऐसा कहा- (जइणं देवा० जाव पव्वयामो) मित्र! यदि आप दीक्षा लेना चाहते हैं तो फिर हमारा आपके बाद और कौन दूसरा आलंबन तथा आधार होगा-इसलिये हम भी आप ही के साथ दीक्षा संयम धारण करेंगे। (तएणं....एवं वयासी) इस प्रकार अपने बाल कल्य के मित्रों की बात सुनकर राजा महाबल ने उन से कहा (जइणं तुब्भे मए सद्धिं जाव

હું પૂછી લઉ અને બલભદ્ર કુમારને રાજ્યાસને બેસાડી દઉ. ત્યાર બાદ તમારી પાસેથી સંયમ ગ્રહણ કરીશ. " આ રીતે રાજાની વિનંતી સાંભળીને સ્થવિરોએ તેને કહ્યું-" मा विलम्बं कुरु, મોડું કરો નહિ. " આમ સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને તે રાજા પોતાને ઘેર પાછો વળ્યો. ઘેર આવીને તેણે (जाव छप्पियबालवयंसए आपुच्छइ પોતાના છએ બાલસખાઓને પૂછ્યું.

(तएणं ते छप्पियबालवयंसगा महब्बलं रायं एवं वयासी) પોતાના મિત્ર મહાબલની વાત સાંભળીને તે મિત્રોએ તેને કહ્યું-" जइणं देवा जाव पव्वयामो) હે મિત્રવર! તમે જો દીક્ષિત થવા ચાહો છો તો અમારો કોણ આલંબન અને આધાર થશે? એથી અમે પણ તમારી સાથે જ દીક્ષા સંયમ ધારણ કરીશું. (तएणं.....एवं वयासी) આ રીતે પોતાના બાલ સખાઓની વાત સાંભળીને મહાબલે તેમને કહ્યું-

(जइणं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तोणं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जे ठिं ठावेह)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्ठान् पुत्रान् स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका दूरूढाः समारूढाः सन्तो यावत्=ममान्तिके प्रादुर्भवत, ततस्ते षडपि बालवयस्यकाः स्व स्व गृहे गत्वा स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः समारूढाः सन्त महाबलस्य राज्ञोऽन्तिके प्रादुर्भवन्ति। ततः खलु स महाबलो राजा षडपि च बालवयस्यकान् प्रादुर्भूतान् पश्यति। दृष्ट्वा हृष्टतुष्टो=ऽतिशयेन तुष्टः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति। शब्दयित्वा =आहूय बलभद्रस्य बलभद्रकुमारस्य अभिषेकः कारितः। ततो महाबलो बलभद्रं

पव्वयह तो णं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह) यदि आप लोग मेरे साथ प्रव्रजित होना चाहते हैं तो अपने २ घर पर जाओ-और जाकर ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ राज्यपद पर स्थापित करो-बाद में पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकाओ पर आरूढ होकर मेरे पास यहां आओ (पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति) इस प्रकार महाबल राजा की बात सुनकर वे छहों मित्र वहां से अपने २ घर पर आये-और अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ पद पर स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरूढ हो महाबल राजा के पास आये। (तएणं से महब्बले राया छप्पिय बाल वयंसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे कोडुंबिय पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छइ) महाबल राजा ने जब अपने इन छहों बाल मखाओं को अपने पास आया हुआ देखा-तो देखकर वे बहुत अधिक

જો તમે બધા ખુશીથી મારી સાથે દીક્ષિત થવા ચાહતાહો છો તો સત્વરે પોત પોતાની રાજધાનીએ જઈને પોત પોતાના મોટા પુત્રો ને રાજગાદીએ બેસાડીને હજાર પુરુષો વહન કરે એવી ' પુરુષ સહસ્રવાહિની ' પાલખીઓ ઉપર બેસીને અહીં આવો. (पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति) આ રીતે મહાબલ રાજાની વાત સાંભળીને છએ મિત્રો ત્યાંથી પોતપોતાને ઘેર આવ્યા અને પોતાના સ્થાને મોટા પુત્રોને રાજ ગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્ર વાહિની પાલખીઓ ઉપર બેસીને થઈને મહાબલ રાજાની પાસે આવ્યા.

(तएणं से महब्बले राया छप्पिय बालवयंसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छइ)

પોતાના છએ બાલમિત્રોને પોતાની પાસે આવી ગયેલા જોઈને રાજા મહાબલ અત્યંત હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો. રાજાએ સત્વરે તે સમયે જ કૌટુંબિક પુરુ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजानम् आपृच्छतिस्म। आपृच्छय स महाबलो यावत् महद्धर्या महाद्युत्या पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारुह्य यावत् स्थविरान्तिकं तत्रव्रजितः दीक्षां गृहीतवान्। एकादशाङ्गानि—आचाराङ्गादीनि अधीतेस्म। चतुर्थषष्ठाष्टमादि भक्तैः यावत् आत्मानं भावयन् विहरति स्मते स्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्हं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उपसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति, तएणं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु ॥ सू० ४ ॥

हर्षित एवं संतुष्ट हुए। उसी समय उन ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया—बुलाकर बलभद्र कुमार का अभिषेक करवाया।

इस तरह बलभद्र कुमार अब राज्य पद आसीन हो गया—। महाबल राजा ने बलभद्र से पूछा—पूछकर फिर वे पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरूढ हो गये—और महाऋद्धि एवं महाद्युति के साथ २ चलते हुए वे स्थविरों के पास उद्यान में आये। उन्हों ने संयम ले लिया। आचारांग आदि ११ अंगों का अध्ययन किया और चतुर्थभक्त आदि विविध प्रकार की तपस्याओं से अपने आत्मा को भावित किया ॥सू० ३॥

પોતે બોલાવ્યા અને બોલાવીને બલભદ્ર કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરાવડાવ્યો.

આ રીતે બલભદ્ર કુમાર રાજ્યાસને બિરાજીત થઈ ગયા. રાજા મહાબલે પ્રવ્રજ્યા વિષે બલભદ્રને પૂછ્યું અને પૂછીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર બેસીને મહાઋદ્ધિ અને મહાદ્યુતિની સાથે શોભતા તેઓ ઉદ્યાનમાં સ્થવિરોની પાસે આવ્યા અને તેઓએ સંયમ સ્વીકાર્યો. તેમણે આચારાંગ વગેરે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું. અને ચતુર્થભક્ત વગેરે અનેક પ્રકારની તપસ્યા કરીને પોતાના આત્માને ભાવિત કર્યો. ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं तेषां महाबलप्रमुखाणां सप्तानामनगाराणाम्. अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले एकतः सहितानाम् एकत्रोपविष्टानाम् अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः ' मिहो ' मिथः=परस्परं ' कथासमुल्लावे ' कथासमुल्लापः- वार्तालापः ' समुपज्जित्था ' समुदपद्यत- अभवत्. हे देवानुप्रियाः ! अस्माकं मध्ये ' एगे ' एकः=कोऽप्येकः यत् खलु तपः कर्म ' उवसंपज्जित्ता ' उपसंपद्य अङ्गीकृत्य खलु विहरति=विहरिष्यति, अस्माभिः सर्वैः तत् खलु तपः कर्म उपसंपद्य खलु विहर्तुं=विहर्तव्यम्, इति कृत्वा ' अन्नमन्नस्स ' अन्योन्यस्य परस्परस्य एतमर्थं ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=प्रतिजानन्ति प्रतिज्ञां

' तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइं) उन महाबल प्रमुख सात अनगारोंको किसी एक समय (एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहा समुल्लावे समुप्पजित्था) जब कि ये एक जगह बैठे हुए थे इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-परस्पर में उनकी ऐसी बात चीत चली-(जण्हं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) हे देवानुप्रियों ! हम लोगों में से जो भी कोई तप कर्म को अंगीकार कर अपने आप को भावित करेगा-हम सब भी वही तप कर्म आचरित करेंगे । (तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्टु अण्ण-

---

' तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (तेसिं महाब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइं) કોઈ વખતે મહાબલ પ્રમુખ તે સાતે અનગારોને (एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)-જ્યારે તેઓ એક સ્થાને એકઠા થઈને બેઠા હતા ત્યારે આ પ્રમાણે વિચાર સ્ફુર્યો-એટલે કે તેઓ આ રીતે અરસ પરસ વાતચીત કરવા લાગ્યા-(जाण्हं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણામાંથી ગમેતે વ્યક્તિ જે જાતનું તપ કર્મ સ્વીકારીને પોતાના આત્માને ભાવિત કરશે આપણે બધા પણ તેજ તપ આચરીશું

(तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तएत्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुर्वन्ति । प्रतिश्रुत्य बहुभिश्चतुर्थ- यावद् चतुर्थभक्तादिभिरात्मानं भावयन्तो विहरन्ति. ।ततस्तदनन्तरं स महाबलोऽनगारो ' इमेण ' अनेन वक्ष्यमाणेन 'कारणेणं' कारणेन प्रतिज्ञां कृत्वा तदन्यथा करणरूपेण भाषित्वातदन्यथा करणं हि माया सा च स्त्रीत्वस्य कारणम्, इयं मायाऽभिमानात् प्रादुर्भवति, अभिमानं चात्र-' अहमेतेषां नायकोऽस्मि, एते मदधीना अनुनायकाः सन्तीति. यदि ममोत्कृष्टता न स्यात्तर्हि नायकानुनायकानां को विशेषः स्यादित्येवं भावनया अभिमानो माया

मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकार विचार कर उन्हों ने परस्पर में इस विचार को स्वीकार कर लिया।

(पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति) स्वीकार कर फिर उन सबने साथ ही साथ चतुर्थ भक्त आदि की तपश्चर्या करना प्रारंभ कर दी- (तएणं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निव्वत्तिसु) महाबल अनगार ने इस वक्ष्यमाण कारण से स्त्री नाम गोत्र कर्म का उपार्जन किया अर्थात् महाबल ने प्रतिज्ञा करके भी प्रतिज्ञानुसार तपश्चरण नहीं किया किन्तु-कुटिलभाव रखकर अन्यथारूप से तपश्चरण किया-कहा कुछ और किया कुछ-इसी का नाम माया है। यह माया स्त्रीत्व प्राप्ति का कारण होती है। माया अभिमान से उद्भूत होती है-महाबल के हृदय में अभिमान इस कारण से आया था- कि मैं इन सब का नायक हूँ-ये मेरे आधीन हैं-अनुनायक हैं-यदि मेरे में इनकी अपेक्षा उत्कृष्टता नही हो तो फिर नायक और अनुनायकों में

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને બધાએ મળીને એ વાતને સ્વીકારી લીધી.

(पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति) સ્વીકાર કરીને તેઓએ એકી સાથે ચતુર્થભક્ત વગેરે તપશ્ચર્યા શરુ કરી.

(तएणं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिसु)

મહાબલ અનગારે જેના કારણ વિષેની ચર્ચા આગળ થશે-તેવા " સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મનું " ઉપાર્જન કર્યું. એટલે કે મહાબલે પ્રતિજ્ઞા કરીને પણ તે મુજબ તપનું આચરણ કર્યું નહિ. કુટિલભાવથી તેઓએ બીજી રીતે તપનું આચરણ કર્યું. " કહેવું કંઇ અને કરવું કંઇ " તેનું નામ માયા છે. એ માયા જ સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિનું કારણ બને છે. અભિમાનથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે. મહાબલ ના મનમાં આરીતે અભિમાન ઉત્પન્ન થયું કે હું બધાનો નાયક છું. આ બધા મારે આધીન છે-અનુનાયક છે. જો મારામાં તેઓની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહિ હોય તો નાયક અને અનુનાયકોમાં તફાવત શો રહ્યો ? આ જાતની ભાવના-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुत्पादयति. । ' इत्थिणामगोयं ' स्त्रीनामगोत्रं यस्य कर्मण उदयात् स्त्रीभावः स्त्रीत्वं प्राप्यते तत् स्त्रीनाम कर्म तथा-गोत्रं जाति कुल निर्वर्तकं कर्म अनयोःसमाहारः स्त्रीनामगोत्रं कर्म ' निवत्तिंसु ' निर्वर्तितवान् उपार्जितवान् ॥ सू०४ ॥

मूलम्-जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । जइणं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बलअणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । एवं अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो दुवालसं, इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहिं आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, तं जहा —

(१) अरहंत (२) सिद्ध (३) पवयण (४) गुरु (५) थेर (६) बहुस्सुए (७) तवस्सीसुं । वच्छल्लयाइ (८) तेसिं अभिक्खणं णाणोवओगे य ॥१॥ (९) दंसण (१०) विणए (११) आवस्सए य (१२) सीलव्वए निरइयारं । (१३) खणलव (१४) तव (१५) च्चियाए (१६) वेयावच्चे (१७) समाहीय ॥२॥ (१८) अप्पुव्वणाणगहणे (१९) सुयभत्ती (२०) पवयणे पभावणया । एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥सू०५॥

क्या भेद होगा-इस प्रकार की भावना ने उस के हृदय में अभिमान उत्पन्न किया और इस अभिमान ने माया को जन्म दिया । जिस कर्म के उदय से जीव स्त्रीत्वपद प्राप्त करता है वह स्त्री नाम कर्म है तथा जातिकुल निर्वर्तक जो कर्म होता है वह गोत्र है । इस प्रकार के कर्म को माया के सद्भाव से अनगार ने उपार्जित किया । सूत्र " ४ "

એજ મહાબલના મનમાં અભિમાન ને જન્મ આપ્યો હતો. અને એ અભિમાને જ માયાને પણ ઉત્પન્ન કરી હતી. જે કર્મના ઉદયથી જીવ સ્ત્રીત્વપદ મેળવે છે તે સ્ત્રીનામ કર્મ છે તેમજ જે કર્મ જાતિકુલ નિર્વર્તક હોય છે તે ગોત્ર છે. માયા ના સદ્ભાવથી આ પ્રમાણે તે અનગારે આ જાતના કર્મનું ઉપાર્જન કર્યું. ॥ સૂત્ર " ૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—'जइणं ते इत्यादि। यदि खलु ते महाबलवर्जा षडनगाराः 'चउत्थं चतुर्थं=चतुर्थभक्तम्. एकोपवासमित्यर्थः, उवसंपज्जित्ता' उपसंपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरंति, ततः स महाबलोऽनगारः 'छट्ठं' षष्ठं=षष्ठभक्तमुपवासद्वयमुपसंपद्य खलु विहरति। अयं भावः—यदा ते षडनगाराः एकोपवासं कुर्वन्ति, तदा महाबलोऽप्येकोपवासं करोति, परंतु-पारणदिने एवं कथयति अद्य मे शिरोबाधा ते नाहं पारणं करिष्यामि, भवद्भिरेवपारणं कर्तव्यमित्युक्त्वा मायया षष्ठं भक्तं करोतीति।

यदि खलु ते महाबलवर्जा षष्ठं=षष्ठभक्तमुपसंपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरंति, ततः स महाबलोऽनगारोऽष्टमं अष्टमभक्तमुपसंपद्य खलु 'विहरइ' विहरति.।

'जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा' इत्यादि।

टीकार्थ—(जइणं) यदि वे (महब्बलवज्जा) महाबल अनगार को छोड़कर (छ अणगारा) छह अनगार (चउत्थंउवसंपज्जित्ताणं विहरंति) चतुर्थ भक्त की तपस्या करते-तओसे) तो वह (महाबल अणगारे) महाबल अनगार (छट्ठंउवसंपज्जित्ताणं विहरइ) दो उपवास करता-तात्पर्य इसका यह है कि जिस समय वे छह अनगार एक उपवास करते उस समय महाबल अनगार भी एक ही उपवास करता -परंतु जब पारणा का दिन आता तो कहने लगता कि आज मेरे शिरमे दर्द हो रहा है मैं पारणा नहीं करूँगा-आप लोग ही पारणा करलो।

इस प्रकार माया को चित्त में रखकर वह दूसरा उपवास करलेता। (जइणं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उपसंपज्जित्ताणं विहरंति ताओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) इसी तरह वे

'जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा' इत्यादि

ટીકાર્થ-(जइणं) જો તેઓ (महाब्बलवज्जा) મહાબલ સિવાયના (छ अणगारा) છ અનગારો (चउत्थंउवसंपज्जित्ताणं विहरंति) ચતુર્થભક્તની તપસ્યા કરતા (तओसे) ત્યારે તે (महाबलअणगारे) મહાબલ અનગાર (छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) બે ઉપવાસ કરતા. એટલે કે જ્યારે છ અનગાર એક ઉપવાસ કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર પણ એકજ ઉપવાસ કરતા. પણ જ્યારે પારણાનો દિવસ આવતો ત્યારે તેઓ કહેતા કે આજે મારૂં માથું દુઃખવા માંડયું છે, હું પારણાં કરીશ નહિ. તમે લોકો પારણાં કરો.

આરીતે માયાવશ થઈને મહાબલ અનગાર બીજો ઉપવાસ કરતા હતા.

(जइणं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बलेअणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं यदि ते षडनगारा अष्टमम् अष्टमभक्तम्, उपसंपद्य विहरंति 'तो' तर्हि स महाबलोऽनगारः दशमं=दशमभक्तमुपसंपद्य विहरति। अथ यदि ते षडनगारा-दशमं = दशमभक्तमुसंपद्य विहरति 'तो' तदा स महाबलोऽनगारः 'दुवालसं' द्वादशं द्वादश भक्तम् उपसंपद्य विहरति, एवमधिकाधिकतपः करणादहमुत्कृष्टो भविष्यामीति मायाकरणेन स्त्रीनामगोत्रं कर्मोपार्जितवान् तदानीं मिथ्यात्वं सास्वादनं च गुणस्थानमनुभवतिस्म. स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुबन्धि मायाहेतुकत्वादिति

महाबल अनगार वर्ज छट्ठ की तपश्चर्या-दो उपवास-करते तो यह महाबल अनगार अट्ठम की तपश्चर्या-तीन उपवास करता।

(एवं अट्ठमंतो दसमं, अह दसमंतो दुवालसं इमेहिं य णं वीसाए-हिं य कारणेहिं य आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु) यदि वे छह अनगार अष्टमभक्त की तपश्चर्या करते तो यह महाबल अनगार दशमभक्त की तपश्चर्या करता यदि वे दशम-भक्त की तपश्चर्या करते, तो यह द्वादशभक्त की तपस्या करता। इस तरह अधिकाधिक तप करने से मैं उत्कृष्ट उत्तम-हो जाऊँगा" इस प्रकार माया पूर्वक तपस्या करने से उसने स्त्री नाम गोत्र-जिस कर्म के उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ऐसा स्त्री नाम कर्म तथा जाति कुल निर्वर्तक गोत्र कर्म का बंधकर लिया। इस समय में मिथ्यात्व और सास्वादन इन दो गुणस्थानों का जीव अनुभव करता है। क्यों कि मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी माया हेतुकता स्त्री नामकर्म में रहती

આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ બધા છએ અનગારો છઠ્ઠનાં તપશ્ચર્યા-બે ઉપવાસ-કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર અઠ્ઠમની તપશ્ચર્યા-ત્રણ ઉપવાસ કરતા હતા

(एवं अट्ठमंतो दसमं, अह दसमंतो दुवालसं इमेहिं य णं वीसाएहिय कारणेहिय आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु)

તે બધા છ અનગારો જ્યારે અષ્ટમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દશમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ છ અનગાર દશમભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દ્વાદશ ભક્તની તપસ્યા કરતા હતા. આ રીતે વધારે તપ કરવાથી હું આ બધા કરતાં ઉત્તમ થઇ જઇશ તેમ તેઓ માનતા પણ આમ માયાવશ તપ કરવાથી તેણે સ્ત્રીનામ ગોત્ર-એટલે કે જે કર્મના ઉદયથી સ્ત્રીત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એવું સ્ત્રીનામ કર્મ તેમજ જાતિકુલ નિવર્તક ગોત્ર કર્મનો બંધ કર્યો. આ વખતે મિથ્યાત્વ અને સાસ્વાદન આ બે ગુણ સ્થાનોને જીવ અનુભવે છે. કેમકે મિથ્યાત્વ અને અનંતાનુબંધી માયા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावः । ततः खलु स महाबलोऽनगारः ' इमेहिं ' एभिश्च शास्त्रप्रसिद्धैः खलु वीसा एहि य ' विंशत्याच कारणैः विंशतिस्थानकैः ' आसेविय बहुलीकएहिं ' आसेवितबहुलीकृतैः प्रत्येक स्थानस्य सकृत् करणादासेवितानि बहुशः सेवनाद् बहुलीकृतानि तैः लब्धोत्कृष्टरसायनपरिणामैरित्यर्थः । तीर्थंकरनामगोत्रं कर्म ' निव्वत्तिंसु ' निर्वर्तितवान् उपार्जितवानित्यर्थः । तं जहा तद्यथा-विंशतिस्थानकानां नामानि गाथात्रयेण दर्शयति(१-७) अर्हत्-सिद्ध- प्रवचन- गुरु- स्थविर- बहुश्रुततपस्विषु वत्सलता भक्तिः-यथाऽवस्थिते गुणग्रामोत्कीर्तनरूपा (८) ' तेसिं ' तेषाम् अर्हदादीनां 'अभिक्खण ' अभीक्ष्णं=पुनःपुनः ज्ञानोपयोगः ज्ञानेषूपयोगः ज्ञानोपयोगः इत्यष्ट स्थानकानि, (९) दर्शनं=सम्यक्त्वं, (१०) विनयो गुरुदेवादिविषयकः, (११) आवश्यकम्- उभयकालमावश्यककरणम् (१२) शीलव्रतं च निरतिचारं, व्रतप्रत्याख्याननिर्मल पालनम्, (१३) क्षणलवेति- कालोप

है । इस के बाद उस महाबल अनगार ने शास्त्र प्रसिद्ध इन विंशति स्थानकों के द्वारा कि जो आसेवित बहुलिकृत थे तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध किया । प्रत्येक स्थान का एक बार सेवन करना इसका नाम आसेवित और बहुत बार सेवन करना इसका नाम बहुली कृत है । (तंजहा) वे बीस स्थान ये हैं अरिहंत (१), सिद्ध (२), प्रवचन (३) गुरु (४), स्थाविर (५), बहुश्रुत (६), तपस्वी इनमें वात्सल्यभाव-भक्ति -रखना-अर्थात् इनके यथावस्थित गुणों का उत्कीर्तन करना (७), इन के ज्ञान में निरंतर उपयोग रखना (८), दर्शन का विशुद्धि करना (९) गुरुदेव आदि के विषय में विनय संपन्नता होना (१०), दोनों काल में आवश्यक क्रियाओं को करना (११),शील और व्रतों में अतिचार रहित

હેતુકતા નામ કર્મમાં રહે છે. ત્યાર બાદ મહાબલ અનગારે શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ વિંશતિ (વીસ) સ્થાનકો વડે-કે જે આસેવિત બહુલીકૃત હતા.-તીર્થંકર નામ ગોત્ર કર્મનો બંધ કર્યો. દરેક સ્થાનનું એક વાર સેવન કરવું તે આસેવિત અને ઘણી વાર સેવન કરવું તે બહુલીકૃત છે. (तंजहा) વીસ સ્થાનો નીચે મુજબ છે-અરિહંત, (૧) સિદ્ધ, (૨) પ્રવચન, (૩)ગુરુ, (૪) સ્થવિર, (૫)બહુશ્રુત, (૬) તપસ્વીમાં વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ-રાખવી એટલે કે તેમના યથાવસ્થિત ગુણોનું કીર્તન કરવું. (૭) તેમનાં જ્ઞાનમાં નિરંતર ઉપયોગ કરતા રહેવું (૮) દર્શનની વિશુદ્ધિ કરવી (૯) ગુરુ દેવ વગેરેની સામે વિનય રાખવો (૧૦) બંને સમયે (સવાર સાંજ) આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવી, (૧૧) શીલ અને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्षणं, क्षणलवादिकालेषु प्रमादं विहाय शुभध्यानकरणम् (१४) तपः= द्वादशविधम्, (१५) त्यागः=दानम् तच्च अभयदानं सुपात्रदानं च, तत्राभयदानं=भयानुत्पादनं परैर्भयं प्राप्तस्य मार्यमाणस्य कथंचिन्म्रीयमाणस्य च परिरक्षणम्, अभयदानमिह करुणादानोपलक्षणम्। सुपात्रेभ्यो दानं महाव्रतधारिभ्यः प्रतिमाधारिश्रावकेभ्यश्च दानम् सुपात्रदानम्। इदमुपलक्षणं तेन चतुर्विधसंघ सुखोत्पादनमित्यर्थः। (१६) वैयावृत्यं=आचार्यादीनां शुश्रूषा (१७) समाधिः–सर्वजीवानां सुखोत्पादनम्, (१८) अपूर्वज्ञानग्रहणं=प्रसिद्धम्, (१९) श्रुतभक्तिः=जिनोक्तागमेषु

होकर प्रवृत्ति करते रहना व्रत, प्रत्याख्यान को निर्मल रूपसे पालन करना (१२), क्षण, लव आदि कालों में प्रमाद का परिहार (निवारण) करते हुए शुभ ध्यान करना, (१३), तप–१२ प्रकार के तपों का आराधन करना (१४), त्याग–अभय दान और सुपात्र दान देना किसी को भय उत्पादन नहीं करना यह अभयदान है–तथा दूसरों द्वारा भय को प्राप्त हुए अथवा मार्यमाण या किसी भी तरह मरणोन्मुख हुए ऐसे व्यक्ति की अपनी शक्ति के अनुसार रक्षा करना, उन पर करुणा बरसाना, उनके प्रति दया भाव रखना यह सब अभय दान है।

यह अभयदान करुणादान का उपलक्षक है। महाव्रतधारी सकल संयमीजनों को अथवा प्रतिमाधारी श्रावकों को आहारादि दान करना यह सुपात्र दान है। चतुर्विध संघ के लिये सुख का उत्पादन करना इसका यह उपलक्षक है (१५), वैयावृत्य–आचार्य आदि की शुश्रूषा करना (१६) समाधि–समस्त जीवों को सुख मिले इस प्रकार का प्रय-

વ્રતોમાં અતિચાર વગર થઈને પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું–વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન નું નિર્મળ રૂપથી પાલન કરવું. (૧૨) ક્ષણ, લવ વગેરે કાળોમાં પ્રમાદ રહિત થઈને શુભ ધ્યાન ધરવું. (૧૩) તપ,–બાર પ્રકારના તપોનું આરાધન કરવું,(૧૪)ત્યાગ, અભય દાન અને સુપાત્ર દાન આપવું, કોઇને પણ ભયની સ્થિતિમાં મૂકવો નહિ તે અભયદાન છે તેમજ બીજાઓ દ્વારા ભયની સ્થિતિમાં મૂકાયેલા અથવા તો કોઈપણ રીતે મરણોન્મુખ થતા વ્યક્તિની પોતાની શક્તિ મુજબ રક્ષા કરવી, તેમની ઉપર કરુણા રાખવી, દયાભાવ બતાવવો આખું અભયદાન કહેવાય છે.

આ અભયદાન કરુણાદાનનો ઉપલક્ષક છે. મહાવ્રતધારી બધા સંયમી જનોને અથવાતો પ્રતિમાધારી શ્રાવકોને આહાર વગેરે દાન કરવું તે સુપાત્ર દાન છે. ચતુર્વિધ સંઘના માટે સુખનું સર્જન કરવું આ તેનો ઉપલક્ષક છે. (૧૫) વૈયાવૃત્ય–આચાર્ય વગેરેની સેવા કરવી, (૧૬) સમાધિ–બધા પ્રાણીઓને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमानुरागः, (२०) प्रवचने प्रभावना=प्रभूतभव्येभ्यः प्रव्रज्यादानं, भवकूपपतत्प्राणित्राणसमाश्वासनपरायणजिनशासनमहिमोपबृंहणं समस्तस्य जगतो जिनशासन रसिक करणं मिथ्यात्वतिमिरापहरणं, चरणकरणशरणीकरणं च।

एतानी-तीर्थकरत्वप्राप्तिः विंशतिस्थानकानि सर्वजीवसाधारणानि सन्तीति दर्शयितुमाह-' एएहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ' इति। एतैः कारणैस्तीर्थकरत्वं लभते जीवः।

त्न करना, (१७), अपूर्व ज्ञान का पढना, (१८), श्रुतभक्ति-जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित आगमों में परम अनुराग रखना, (१९), प्रवचन प्रभावना अनेक भव्य जीवों को प्रव्रज्या देना, संसारकूप में पड़ते हुए प्राणीयों की रक्षा करने के आश्वासन में परायण ऐसे जिनशासन की महिमा बढाना, समस्त जगत के जीवों को जिन शासन का रसिक बनाना, मिथ्यात्वरूप तिमिर का ध्वंस करना, और चरण सत्तरी एवं करण सत्तरी की शरण में रहना यह सब प्रवचन प्रभावन है (२०)।

ये २० स्थान समस्त जीवों को तीर्थंकर पदकी प्राप्ति में कारण है। (एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइं जीओ) इन्हीं बीस स्थानक के सेवन से जीव तीर्थंकर पद को प्राप्त करता है। अन्यत्रभी यही बात कही है-जिनागम में अनेक तप प्रसिद्ध हैं परन्तु इन श्री बीसस्थानरूप तपस्या के समान और कोई तप नही हैं। इन बीस स्थानों में से कोई एक स्थान की आराधना करके जीव अरिहंतो के बीच में उत्तम जिनेन्द्र के पद को पाता है।

સુખ મળે તેમ કરવું-(૧૭) અપૂર્વજ્ઞાનનું વાંચન કરવું. (૧૮ શ્રુતભક્તિ-જિનેન્દ્રપ્રતિપાદિત આગમો-માં ખૂબજ અનુરાગ રાખવો, ૧૯ પ્રવચન પ્રભાવના -અનેક ભવ્યજીવોને પ્રવ્રજ્યા આપવી સંસાર રૂપી વાવમાં પડનાર પ્રાણીઓની રક્ષા કરવા રૂપ આશ્વાસન માં પરાયણ એવા જિન શાસનનો મહિમા પ્રશસ્ત કરવો. જગતના બધા જીવોને જિનશાસનના રસિક બનાવવા. મિથ્યાત્વ રૂપ અંધકારનો નાશ કરવો, અને ચરણસત્તરી અને કરણસત્તરીની શરણમાં રહેવું આ પ્રવચન પ્રભાવના છે. ૨૦

આ વીસ સ્થાનો બધા જીવોને માટે તીર્થંકર પદની પ્રાપ્તિમાં કારણ ભૂત હોય છે. "એએહિં કારણેહિં તિત્થયરત્તં લહઇ જીઓ" આ કારણો દ્વારા જ જીવ તીર્થંકર પદ મેળવે છે. બીજી ઘણી જગ્યાએ પણ એજ વાત કહેવામાં આવી છે. જિનાગમોમાં અનેક તપ પ્રસિદ્ધ છે, પણ આ શ્રી વીસ સ્થાન રૂપ તપસ્યા જેવી બીજી કોઈપણ તપસ્યા નથી. આ વીસ સ્થાનોમાંથી ગમે તે એક સ્થાનની આરાધના કરીને જીવ અરિહંતોની મધ્યે ઉત્તમ જિનેન્દ્રના પદને મેળવે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदुक्तम्—

भूयांस्यपि तपांसिस्युः, प्रसिद्धानि जिनागमे. ।
परंश्रीविंशतिस्थान.- तपस्तुल्यं तपो नहि. ॥ १॥
अन्यच्च–बीसाए अन्नयरं, ठाणं आराहिऊण जे जीवा ।
अरिहाईणं मज्झे, जिणिंदपदमुत्तमं लहइ. ॥ २ ॥
पुनः–पुरिमेण पच्छिमेणय, एए सव्वे वि फासिया ठाणा. ।
मज्झिमगेहिं जिणेहिं, एगं दो तिण्णि सव्वे वा. ॥ ३ ॥

इतिवचनादादिनाथजीवेन वर्धमानजीवेन च पूर्वस्मिन् तृतीयभवे सर्वाणि विंशतिस्थानकानि सेवितानि, अन्यैर्द्वाविंशतितीर्थकरजीवैरेकं द्वे त्रीणि सर्वाण्यपि स्पृष्टानि, नियमो नास्ति । मल्लीनाथ जीवेन तु सर्वाण्येव सेवितानीति भाव; ।

एतेषु विंशति संख्याकेषु ये वसन्ति तदाराधनायां प्रवृत्ता भवन्ति, ते स्थानकवासिनः कथ्यन्ते । उक्तं च—

" तित्थंगर पयदाइसु, वसइ य वीसासु ठाणगेसुं जं ।
आराहणट्ठमणिसं; ठाणगवासी य सो हवए ॥ १ ॥ "

छाया–" तीर्थङ्कर पददायिषु वसति च विंशतौ स्थानकेषु यत् ।
आराधनार्थमनिशं, स्थानकवासो च स भवति ॥ १ ॥ " इति।

आदि नाथ प्रभु के जीव ने और श्री महावीर प्रभुके जीवने पूर्व तृतीय भव में समस्त बीस स्थानों की आराधना की थी। बीच के बाकी २२ तीर्थंकरों ने किन्हींने एक किन्हींने २ किन्हींने ३ स्थानों की और किन्हीं २ ने सबहीं स्थानों की आराधना की। ऐसा नियम नहीं हैं कि तीर्थंकर प्रकृति के बंध के लिये इन बीसो ही स्थानों की आराधना करनी पड़ती हो। मल्लिनाथ के जीव ने तो इन बीसोही स्थानो की आराधना की। बीस स्थानों में जो रहते हैं उनकी आराधना करने में प्रवृत्त होते हैं—वे स्थानकवासी कहलाते है। उक्तंच-तथंकर

પૂર્વતૃતીય ભવમાં આદિનાથ પ્રભુના જીવે અને શ્રી મહાવીર પ્રભુના જીવે વીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી. વચ્ચેના શેષ બાવીસ તીર્થંકરો માંથી કોઇએ એક કોઇએ બે, કોઇએ, ત્રણ સ્થાનોની અને કોઈ કોઇએતો બધા સ્થાનોની આરાધના કરી હતી. એવો કોઈ ચોક્કસ નિયમ નથી કે તીર્થંકર પ્રકૃતિના બંધને માટે ઉક્ત વીસે વીસસ્થાનોની આરાધના કરવી જ પડતી હોય. મલ્લિનાથના જીવેતો આ બધાંની વીસેવીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી આ વીસ સ્થાનોમાં જે રહે છે તેમની આરાધના કરવામાં જે તત્પર રહે છે તેઓ 'સ્થાનકવાસી' કહેવાય છે ઉક્તંચ–તીર્થંકર પ્રકૃતિને આપનારા ઉક્ત વીસ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यच्च—" तीर्थङ्कर पदप्राप्तेः, स्थानकेषु च विंशतौ ।
वसन्त्याराधनार्थं यत्तस्मात् स्थानकवासिनः ॥ १ ॥" इति।

मूलम्—तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तएणं ते महाब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तं जहा—चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेंति, पारित्ता छट्ठं करेंति। करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता दशमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमें करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति,

प्रकृति के दाता इन २० स्थानों में जो आराधना करने के निमित्त सदा वसते हैं–निवास करते हैं–वे ही स्थानकवासी कहलाते हैं। दूसरे श्लोक का भी यही भाव है। सूत्र " ५ "

સ્થાનોમાં આરાધના કરવાના પ્રયોજનથી જેઓ હંમેશા નિવાસ કરે છે–વસે છે, તેઓજ સ્થાનવાસી કહેવાય છે. બીજા શ્લોક નો પણ એજ અર્થ છે. સૂત્ર '૫"॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करित्ता चउत्थं करेंति करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति, सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति. एवं खलु एसा खुड्डागसीह निक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ,

तयाणंतरं दोच्चंपि परिवाडीए चउत्थं करेंति, नवरं विगइवज्जं पारेंति, एवं तच्चापि परिवाडी नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति, एवं चउत्था वि परिवाडी नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति ॥ सू० ६ ॥

टीका–' तएणं ते ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखा सप्तानगाराः ' मासियं ' (१) मासिकीम् एकमासपरिमाणां प्रथमां भिक्षुप्रतिमाम् ' उवसंजित्ताणं ' उपसंपद्य स्वीकृत्य, विहरन्तिस्म. । एवम् अमुना प्रकारेण ' जाव-एगराइयं ' यावत् एकरात्रिकीम् अत्र यावत् करणात् ' दो मासियं तेमासियं चउम्मासियं पंचमासियं छम्मासियं सत्तमासियं पढमसत्तराइंदियं बीयसत्तराइंदियं

' तएणं ते महाबल पामोक्खा ' । इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते महब्बलपामोक्खा) उन महाबल प्रमुख सातों अनगारों ने (मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) १ मास की प्रमाण वाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण की (जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) इसी तरह दो मास प्रमाण वाली द्वितीय भिक्षु प्रतिमा, तीन मास प्रमाण वाली तृतीय भिक्षु प्रतिमा, ४ चार मास प्रमाण वाली चतुर्थ भिक्षु प्रतिमा, पांच मास

तएणं ते महाबल पामोक्खा ' । इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યાર બાદ (ते महाबलपामोक्खा) મહાબલ પ્રમુખ સાત અનગારોએ (मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) એક માસની પ્રમાણવાળી ૧ પ્રથમ ભિક્ષુ પ્રતિમા ધારણ કરી. (जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) આ પ્રમાણે જ બે માસ પ્રમાણવાળી દ્વીતીય ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રણમાસ પ્રમાણ વાળી તૃતીય ભિક્ષુપ્રતિમા, ચાર ચાર માસ પ્રમાણ વાળી ચતુ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तच्चसत्तराइंदियं अहोराइंदियं ' इति पाठस्य संग्रहः । तत्र २. द्वैमासिकीं, ३ कीं, ४, चातुर्मासिकीं ५, पंचमासिकीं, ६, षाण्मासिकीं, ७. सप्तमासिकीं, सर्मा. ८. प्रथम सप्तरात्रिंदिवां, ९. द्वितीय सप्तरात्रिंदिवां, १०. तृतीय सप्तरात्रिंदिव, इमा दश प्रतिमा उपसंपद्य, एकादशीम्-११. अहोरात्रिकीं, १२. द्वादशीम्-एक रात्रिकीम् इत्येवं द्वादशप्रतिमा उपसंपद्य विहरन्ति स्म । आसां वर्णनं दशाश्रुतस्कन्धे सप्तमाध्ययने मुनिहर्षिणी टीकायां द्रष्टव्यम्.।

ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखा सप्तानगारा ' खुड्डागं ' क्षुल्लकं ' सीह निक्कीलियं' सिंहनिष्क्रीडितं=सिंहनिष्क्रीडितनामकं सिंहो यथा विहरन् स्व पश्चा-

प्रमाण वाली पांचवीं भिक्षुप्रतिमा, छ मास प्रमाण वाली छठी भिक्षुप्रतिमा, ७ मास प्रमाण वाली सप्तमी भिक्षुप्रतिमा, प्रथम सात रात दिन प्रमाण वाली ८ भी भिक्षुप्रतिमा, द्वितीय सात दिन रात प्रमाण वाली १० वी भिक्षुप्रतिमा तथा १ दिन रात प्रमाण वाली ११ वीं भिक्षुप्रतिमा और एक रात प्रमाण वाली १२वीं भिक्षुप्रतिमा उन सब अनगारोंने धारण की ।

इन समस्त प्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कंध में सप्तम अध्ययन में मुनि हर्षिणी नाम की टीका में किया गया है । वहां से देख लेना ।

(तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) इसके बाद उन महाबलप्रमुख सातों ही अनगारों ने लघु सिंह निष्क्रीडित नाम का तप किया । जिस

र्थं भिक्षुप्रतिमा પાંચ માસ પ્રમાણવાળી પાંચમી ભિક્ષુપ્રતિમા, છ માસ પ્રમાણ વાળી છઠ્ઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, સાત માસ પ્રમાણવાળી સાતમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત દિવસ પ્રમાણવાળી આઠમી ભિક્ષુપ્રતિમા, બીજી સાત દિવસ રાત પ્રમાણ વાળી નવમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રીજી સાત દિવસ રાત પ્રમાણવાળી દશમી ભિક્ષુ પ્રતિમા તેમજ એક દિવસ રાત પ્રમાણવાળી અગિયારમી ભિક્ષુપ્રતિમા, અને એક રાત પ્રમાણવાળી બારમી ભિક્ષુ પ્રતિમા, તેઓ બધા અનગારો એ ધારણ કરી.

આ બધી પ્રતિમાઓ વિષે વિગત વાર ચર્ચા ' દશાશ્રુતસ્કંધ ' ના સાતમા અધ્યયનની મુનિહર્ષિણી નામની ટીકામાં કરવામાં આવી છે. જિજ્ઞાસુ-ઓએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઇએ.

(तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीह निक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति)

ત્યાર બાદ મહાબલ પ્રમુખ સાતે સાત અનગારોએ લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત નામે તપ કર્યું. સિંહ જેમ પોતાના પાછળના ભાગની તરફ ડોકીયું કરતો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ङ्गागं पश्यति, तथा यत् तपः पूर्वकृतं पुनरावर्त्योत्तरोत्तरं क्रियते तत् सिंहनिष्क्रीडितमित्युच्यते. । तपःकर्मोपसंपद्य विहरन्ति । तत्र क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडितं तपः कर्म केन प्रकारेण तैः कृतमित्याकाङ्क्षायामाह–' तंजहा ' इत्यादि चतुर्थं चतुर्थभक्तमेकोपवासरूपं कुर्वन्ति कृत्वा ' सव्वकामगुणियं ' सर्वकामगुणितं=सर्वकामगुणाः दुग्धदधिघृततैलमधुररूपा विकृतयः संजाता यत्र तत् सर्वकामगुणितम्. इदं पारणक्रियायाविशेषणं, ' पारेंति ' पारयन्ति=पारणं कुर्वन्ति । पारयित्वा षष्ठं कुर्वन्ति, ततः पारणं कृत्वा षष्ठभक्तं द्व्युपवासरूपं तपः कुर्वन्ति– इत्यर्थं कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । (तंजहा) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्रीडित तप उन्हों ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं । – (चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वं कामगुणियं पारेंति, पारित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता, दसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति करित्ता दुवालसमं करेंति) उन्हों ने पहिले चतुर्थ भक्त–एक उपवास किया । एक उपवास करके विगय सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्ठभक्त –दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्हों ने पारणा किया बाद में चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर–तीन उप-

આગળ આલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલાં તપોને સાથે લઇને આગળ કરવામાં આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે. (तं जहा) અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિષે સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતાં કહે છે.

(चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेंति, परित्ता, छट्ठं करेंति करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति करित्ता चाउद्दसमं करेंति करित्ता दुवालसमं करेंति)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત–એક ઉપવાસ કર્યો. એક ઉપાસ કરીને વિગય સહિત પારણું કર્યું. પારણુ કર્યા બાદ ફરી છઠ્ઠભક્ત–બે ઉપવાસ કર્યા. બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણું કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ પારણું કર્યા. ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો. અષ્ટમ ભક્ત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्तं द्युपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं चतुरुपवासरूपं दशमभक्तं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं पञ्चोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति. कृत्वा चतुर्दशं षडुपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति. कृत्वा षोडशं सप्तोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं अष्टोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा विंश-

वासरूप अष्टभभक्त किया अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये। षष्टभक्त करके पारणा किया फिर दशमं भक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टम भक्त रूप तीन उपवास किये। अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर पञ्च उपवास रूप द्वादश भक्त किया द्वादश भक्त करके पारणा किया। पुनः दशम भक्त किया। दशम भक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दश भक्त किया। चतुर्दश भक्त करके पारणा किया पुनः द्वादश भक्त रूप पांच उपवास किये। (करित्ता सोलसमं करेंति) पांच उपवास करके पारणा किया पुनः७ उपवासरूप सोलस भक्त किया (करित्ता चोद्दसमं करेंति) ७ उपवास करके पारणा किया–बाद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसमं करेंति)पारणा करके फिर अष्टा दश भक्त रूप८उपवास किये (करित्ता सोलसमं करेंति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसइमं करेंति) सात उपवास करके उसका

કરીને પારણું કર્યું ત્યાર બાદ છઠ્ઠ ભકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા. ષષ્ઠ ભકત કરીને પારણું કર્યા ત્યાર બાદ દશમ ભકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા. ચાર ઉપવાસોના અન્તે પારણું કર્યું ત્યાર બાદ અષ્ટમ ભકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા. અષ્ટમ ભકત કરીને પારણું કર્યું ત્યાર બાદ દ્વાદશ ભકત પાંચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણું કર્યું. ફરી દશમ ભકત કર્યા. દશમ ભકત કરીને પારણું કર્યું. અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ ભકત કર્યા.

ચતુર્દશ ભકત કરીને પારણું કર્યું. ફરી દ્વાદશ ભકત રૂપ પાંચ ઉપવાસો કર્યા. (करित्ता सोलसमं करेंति પાંચ ઉપવાસો કરીને પારણું કર્યું. ફરી સોલસ ભકત સાતઉપવાસ કર્યા (करित्ता चोद्दसमं करेंति) સાત ઉપવાસ કરીને પારણું કર્યું ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता अट्ठारसमं करेंति " પારણું કરીને અષ્ટાદશ ભકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता सोलसमं करेंति આઠ ઉપવાસો કરીને પારણું કર્યું ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા. " करिता वीसइमं करेंति " સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણું કર્યું, ત્યાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तितमं नवोपवासरूपं कुर्वन्ति । कृत्वाऽष्टादशं कुर्वन्ति कृत्वा विंशतितमं कुर्वन्ति कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति कृत्वा दशमं कुर्वन्ति कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति कृत्वा षष्ठं कुर्वन्ति, कृ-

पारणा किया-फिर ९ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसमं करेंति) उस का पारणा किया-फिर ८ उपवास किये (करित्ता वीसइमं करेंति) आठ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ९ उपवास किये (करित्ता सोलसमं करेंति) ९ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ७ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसमं करेंति) सात उपवास का पारणा किया-८ उपवास किये (करित्ता चोद्दसमं करेंति) उन आठ उपवास का पारणा किया-फिर ६ उपवास किये (करित्ता सोलसमं करेंति) ६ उपवास का पारणा किया-फिर ७ उपवास किये (करित्ता दुवालसमं करेंति) ७ उपवास करके उस का पारना किया-फिर ५ उपवास किये (करित्ता चाउद्दसमं करेंति) ५ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ६ उपवास किये (करित्ता दसमं करेंति) ६ उपवास करके पारणा किया फिर ४ उपवास किये (करित्ता दुवालसमं करेंति) ४ उवास का पारणा किया-पारणा करके ५ उपवास किये (करित्ता अट्ठमं करेंति) ५ उपवास का पारणा किया-फिर ३ उपवास किये (करित्ता दसमं

બાદ ફરી નવ ઉપવાસો કર્યા. " करिता अट्ठारसमं करेंति" અને તેનાં પારણું કર્યાં. ત્યાર બાદ આઠ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता वीसइमंकरेंति " આઠ ઉપવાસો કરીને તેનાં પારણું કર્યાં. ત્યાર પછી નવ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसमं करेंति " નવ ઉપવાસો કરીને તેનાં પારણું કર્યાં. ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા " करित्ता अट्ठारसमं करेंति " સાત ઉપવાસનાં પારણું કરીને આઠ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता चोद्दसमं करेंति " અને આઠ ઉપવાસોનાં પારણું કર્યાં. ત્યાર પછી છ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसमं करेति " છ ઉપવાસોના પારણું કરીને સાત ઉપવાસ કર્યા " करित्ता दुवालसमं करेंति " સાત ઉપવાસ કરીને તેનાં પારણું કર્યાં ત્યાર બાદ પાંચ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता चाउद्दसमं करेंति " પાંચ ઉપવાસો કરીને તેનાં પારણું કર્યાં. ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता दसमं करेंति છ ઉપવાસનાં પારણું કર્યાં, અને ત્યાર પછી ચાર ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता दुवालसमं करेंति" ચાર ઉપવાસના પારણું કરીને પાંચ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता अट्ठमं करेंति " પાંચ ઉપવાસનાં પારણું કર્યાં અને ત્યાર બાદ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता दसमं करेंति " ત્રણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्वाऽष्टमं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्थं कुर्वन्ति सर्वत्र सर्वकामगुणितेन पारयन्ति। चतुर्थं कुर्वन्तीत्यादि-सर्वत्र सर्वकामगुणितेन पारयन्तीत्यन्तस्यायं निष्कर्षः-सिंहनिष्क्रीडितं तपोद्विविधं महत् क्षुल्लकंच । तत्रानुलोमगत्या-

करेंति) ३ उपवास का परणा किया फिर ४ उपवास किये (करित्ता छट्ठं करेंति) ४ उपवास का पारणा किया-फिर २ उपवास किये (करित्ता अट्ठमं करेंति) २ उपवास का पारणा करके फिर ३ उपवास किये (करित्ता चउत्थं करेंति) ३ उपवास का पारणा करके फिर १ उपवास किया (करित्ता छट्ठं करेंति) १ उपवास का पारणा करके फिर २ उपवास किये (करित्ता चउत्थं करेंति) २ उपवास का पारणा करके फिर एक उपवास किया (सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति) पारणा जो इन्हों ने किया वह सर्वत्र विगय सहित किया

(एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं-मासेहिं सत्तहिं अहोरत्तेहिं य अहासुत्तं जाव अहाराहिया भवइ) इस तरह क्षुद्र सिंहनिष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी है। यह छह मास और सात दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के अनुसार यावत् आराधित होती है।

अर्थात् इसके करने में सात दिन रात अधिक ६ मास का समय लगता है। यहां " सर्वकामगुणित " ऐसा जो पारणा का विशेषण

ઉપવાસોના પારણા કરીને ત્યાર પછી ચાર ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता छ करेंति " ચાર ઉપવાસનાં પરણાં કર્યાં, ત્યાર બાદ બે ઉપવાસ કર્યા. " करिता अट्ठमं करेंति " બે ઉપવાસનાં પારણાં ત્રણ ઉપવાસ કર્યા " करित्ता चउत्थं करेंति ત્રણ ઉપવાસના પારણાં કરીને એક ઉપવાસ કર્યો. " करित्ता छट्ठं करेंति " એક ઉપવાસનાં પારણાં કરીને બે ઉપવાસો કર્યા. " करित्ता चउत्थं करेंति બે ઉપવાસનાં પારણાં કરીને એક ઉપવાસ કર્યો " सव्वत्थ सव्व कामगुणिएणं पारेंति " તેઓએ બધાં પારણા વિગય સહિત કર્યાં હતા.

(एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहिं अहोरत्तेहिंय आहासुत्तं जाव अहाराहिया भवइ)

આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આ પ્રથમ પરિપાટી છે. છ માસ અને સાત દિવસ રાત સુધી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજ 'યાવત' તેની આરાધના હોય છે.

એટલે કે આ વ્રતને કરવામાં છ માસ અને સાત દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે અહીં " सर्वकामगुणित " ને પારણાંના વિશેષણ રૂપે મૂકુ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतुर्भक्तादि विंशतितमपर्यन्तं, प्रतिलोमगत्या ।

विंशतितमभक्तादितश्चतुर्थभक्तपर्यन्तं च मिलित्वा तपः क्षुल्लकमित्युच्यते। अनुलोमसमाप्त्यनन्तरं प्रतिलोमकरणात् प्राग् मध्येऽष्टादशभक्तं भवति। चतुर्थ षष्ठाष्टमादीनि तु एकैकवृद्धया एकोपवास द्वयुपवासादीनि। इह चतुर्थषष्ठाष्टमदशम द्वादशचतुर्दशषोडशभक्तानि प्रत्येकं चत्वारि २ त्रिणि अष्टादशानि, द्वे विंशतितमे एवं तपोदिनानि १५४ चतुःपञ्चाशदधिकं शतं, पारणदिनानि ३३ त्रयस्त्रिंशद्भवन्ति।

रखा है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सिंहनिष्क्रीडित तप क्षुल्लक और महत की अपेक्षा से दो प्रकार का होता है-इनमें अनुलोम गति से प्रथम चतुर्थभक्त से प्रारंभ होकर विंशतितम पर्यन्त किया जाता है और प्रति लोमगति से प्रथम विं शतितम भक्तादि से प्रारंभ कर चतुर्थभक्त पर्यन्त समाप्त किया जाता है। इस तरह अनुलोम प्रतिलोम विधि से किया गया यह तप क्षुल्लक निष्क्रीडित तप माना गया है। अनुलोम विधि की समाप्ति होने के बाद प्रतिलोम विधि से इसे करने के पहिले बीच में अष्टादश भक्त हो जाते हैं। ये चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि एक एक उपवास की वृद्धि से एक उपवास दो उपवास तीन उपवास आदि वाले होते है।

इसमें चतुर्थ षष्ठ अष्टम, दशम द्वादश चतुर्दश और षोडश भक्त ये प्रत्येक क्रमश ४-४-३-३ हो जाते हैं, तथा विंशतितम ९ उपवास दो होते हैं। तपस्या के दिन १५४, पारणा के दिन ३३ इस प्रकार मिला

વામાં આવ્યો છે તેનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ ક્ષુલ્લક અને મહતની દૃષ્ટિએ બે પ્રકારનું હોય છે. અનુલોમ ગતિથી પહેલાં ચતુર્થ ભક્તથી આરંભીને વિંશતિતમ સુધી તપ કરવામાં આવે છે અને પ્રતિ લોમ ગતિથી પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્ત વગેરે થી આરંભિને ચતુર્થ ભકત સુધી પુરૂં કરવામાં આવે છે, આ રીતે અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિથી કરવામાં આવેલું આ તપ ક્ષુલ્લક નિષ્ક્રીડિત તપ ગણાય છે. અનુલોમ વિધિની સમાપ્તિ બાદ પ્રતિલોમ વિધિથી આ તપ આરંભ કરીને તેના પહેલાં વચ્ચે અષ્ટાદશ ભક્ત થઈ જાય છે આ ચતુર્થ, અષ્ટ, અષ્ટમ વગેરે એક એક ઉપવાસની વૃદ્ધિથી એક ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને ત્રણ ઉપવાસ વગેરેના હોય છે.

આમાં ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, ચતુર્દશ અને ષોડશ ભક્ત આ બધા અનુક્રમે ચાર ચાર, ત્રણ ત્રણ, થઈ જાય છે. તેમજ વિંશતિતમ નવ ઉપવાસ બે હોય છે. તપસ્યાના દિવસો ૧૫૪, અને પારણાંના દિવસો ૩૩,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उभयं मिलित्वा प्रथमपरिपट्यां १८७ सप्ताशीत्यधिकैकमेकंशतं दिनानि भवन्ति पारणकं च सर्वत्र सर्वकामगुणितं=सविकृतिकं कुर्वन्ति-इत्यर्थः। एवं खलु एषा क्षुद्रसिंहनिष्क्रीडितस्य तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी षड्भिर्मासैः सप्तभिश्चाहोरात्रैश्च यथासूत्रं सूत्रोक्तविधिना यावद् आराधिता भवति। उक्तरीत्या क्षुद्रकसिंह निष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमायां परिपाट्यां सप्तरात्रिंदिवाधिकाः षणमासा भवन्ति पारणं च विकृतिसहितं भवति।

इदमस्य तपसः प्रथमपरिपाटीयन्त्रम्, एकमेव द्वितिय तृतीयचतुर्थ पदिपाटीनामपि यन्त्रं बोध्यम्।

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९		
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	

तदनन्तरं प्रथमपरिपाटीकरणानन्तरं द्वितीयायां परिपाट्यां चतुर्थं कुर्वन्ति, नवरं विकृतिवर्जं पारयन्ति। पारणं कुर्वन्ति, एवं तृतीयाऽपि परिपाटीं, नवरं

कर प्रथम परिपाटी में १८७, दिन हो जाते है। पारणा के दिन विगय सहित आहार लिया जाता है। इस प्रकार इस क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी ६ मास ७ दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के अनुसार आराधित होती है। इस तप की प्रथम परिपाटी का यन्त्र उपर संस्कृत टीका में दिया है। इसी तरह, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ परिपाटी काभी यंत्र जानना चाहिये।

(तयाणंतर.....पारेंति)

जब प्रथम परिपाटी के अनुसार क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित तप आराधित हो चुकता है तब उसके बाद द्वितीय परिपटी में जो चतुर्थ भक्त की तपस्या करते हैं वे विकृतिवर्ज आहार का पारणा करते है।

આમ બંનેનો સરવાળો પ્રથમ પરિપાટીમાં ૧૮૭ દિવસનો હોય છે. પારણાંના દિવસે વિગય સહિત આહાર કરવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની પ્રથમ પરિપાટી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ છ માસ અને સાત દિવસ રાત સુધી આરાધિત હોય છે. આ તપની પ્રથમ પરિપાટીનું યંત્ર ઉપર સંસ્કૃત ટીકામાં બતાવ્યા મુજબ છે. આ પ્રમાણેજ દ્વિતીય, તૃતીય ચતુર્થ પરિપાટીના યંત્ર વિષે પણ જાણવું જોઇએ.

(तयाणंतर.....परिति)

જ્યારે પ્રથમ પરિપાટી મુજબ ક્ષુદ્રસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના પૂરી થઈ જાય છે ત્યારે દ્વિતીય પરિપટીમાં ચતુર્થ ભક્તની તપસ્યા કરનારા વિકૃતિ વર્જ આહારનાં પારણાં કરે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारणके-अलेपकृतं=अस्निग्धं=रूक्षं पारयन्ति। एवं चतुर्थ्यपि परिपाटी नवरं पारणके आचामाम्लेन पारयन्ति=रूक्षान्नमचित्तजलप्लावितं कृत्वा तेन पारणं कुर्वन्तीत्यर्थः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्-तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं भंते! महालयं सीहनिक्कीलियं तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ । सव्वंपि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहि य मासेहिं बारसेहिं य अहोरत्तेहिं समप्पेइ। तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरंति ॥ सू० ७ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है। परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है। इसी तरह की चोथी परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि का धोया हुआ धोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयंबिल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે. પણ તેનાં પારણાં વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નનાં હોય છે. આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે. પણ તેનાં પારણાં ભાત વગેરેના ઓસામણમાં એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયંબિલના હોય છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका-ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगाराः 'खुड्डागं' क्षुल्लकं= लघुकं, सिंहनिष्क्रीडितं-चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्तं तपः कर्म द्वाभ्यां संवत्सराभ्यामष्टाविंशत्याऽहोरात्रैः 'अहासुत्तं' यथासूत्रं सूत्रोक्तविधिना, यावद्=इह यावत् करणाद् ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा 'आणाए' आज्ञया=भगवदाज्ञया प्रवचनानुसारेण आराध्य, यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते=स्तुवन्ति, नमस्यंति=प्रणमन्ति, वन्दित्वा नत्वा एवमवदन्

हे भदन्त ! वयमिच्छामः खलु 'महालयं' महत् सिंहनिष्क्रीडितं तपः कर्म कर्तुम्, ततः स्थविराज्ञया महाबलप्रमुखाः सप्तानगाराः महासिंहनिष्क्रीडितं तपः

'तएणं ते महब्बलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा) वे महाबल प्रमुख सातों हीं अनगार (खुड्डागं सीह निक्कीलियं) लघु सिंह निष्क्रीडित तपः कर्म को (दोहिं संवच्छरेहि अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं) दो वर्ष २८ दिन रात तक (अहासुत्तं) यथा सूत्र (जाव आणाए आराहेत्ता) यावत् भगवान की इस तप को करने की जैसी आज्ञा है उस के अनुसार आराधित कर (जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) जहां स्थाविर भगवान थे वहां गये। वहां जाकर उन्होंने भगवंत स्थविरो को वंदन की-उन्हें नमस्कार किया वंदना नमस्कार करके फिर वे इस प्रकार बोले (इच्छामो णं भंते! महालयं सीहनिक्कीलियं

'तएणं ते महब्बलपामोक्खा' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ 'ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा' મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (खुड्डागं सीहनिक्कीलियं) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરીને (दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી (अहासुत्तं) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (जाव आणाए आराहेत्ता) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આજ્ઞા છે, તે મુજબ આરાધીને

(जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी)

જ્યાં સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે ભગવંત સ્થવિરોની વંદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्म कर्तुं प्रवृत्ताः, ' तहेव ' तथैव=महासिंहनिष्क्रीडितमपि तद्वदेव भवति–'जहा खुड्डागं' यथा क्षुल्लकं=लघुसिंहनिष्क्रीडितं, नवरं विशेषस्तु ' चोत्तीसइमाओ नियत्तए ' चतुस्त्रिंशत्तमाद् निर्वर्तते–अयमर्थः–चतुर्थभक्तमेकोपवासरूपमादितः कृत्वाऽनुलोमगत्या पूर्वोक्त–क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडिततपः क्रमवत् षोडशोपवासरूप-चतुस्त्रिंशत्तमपर्यन्तं करोति पुनस्तस्मान्निवर्तते=प्रत्यावर्तते, तद् यदा–चतुस्त्रिंशत्तम-

---

तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडिए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहिय अहोरत्तेहिं य समप्पेइ) हे भदंत ! हम लोग महान् सिंह निष्क्रीडित तपः कर्म करना चाहते हैं। इसके बाद वे स्थविर भगवान् की आज्ञा से महाबल प्रमुख सातों ही अनगार बृहत् सिंह निष्क्रीडित तप कर्म करने में प्रवृत्त हो गये।

यह महासिंहनिष्क्रीडित तप भी क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडित तप की ही तरह होता है–परन्तु इसमें इतनी विशेषता रहती है कि इस तप को करने वाला संयमी एक उपवास रूप चतुर्थ भक्त को सर्व प्रथम करता है फिरवह अनुलोम गति से पूर्वोक्त क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडित तप कर्म को आराधित करने के क्रम की तरह सोलह उपवास रूप चतुस्त्रिंशत्तम पर्यन्त इस तप को करता है।

बाद में वहां से लौटता है–लौटने का क्रम इस प्रकार है–जब यह

(इच्छामो णं भंते ! महालयं सीहनिक्कीलियं तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडिए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहिय अहोरत्तेहिं य समप्पेइ)

હે ભદંત ! અમે મહાન સિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ કરવા ઇચ્છીએ છીએ. ત્યાર બાદ સ્થવિર ભગવાનની આજ્ઞાથી મહાબલપ્રમુખ સાતે અનગારો મહાન સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મમાં પ્રવૃત્ત થઈ ગયા.

મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિ પણ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિની જેમજ હોય છે. પણ તેના કરતાં તેમાં એટલી વિશેષતા હોય છે કે આ તપને આચરનાર સંયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્તને સૌ પહેલાં આચરે છે ત્યાર બાદ તે અનુલોમ ગતિથી પૂર્વે વર્ણવેલા ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મના આરાધન ક્રમની જેમજ સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુસ્ત્રિંશત્તમ સુધી આ તપને કરે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करणानन्तरं प्रतिलोमगत्या प्रत्यावृत्तिकाले मध्ये पञ्चदशोपवासरूपं द्वात्रिंशं भक्तं कृत्वा पुनः षोडशोपवासरूपं चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, ततश्चतुर्दशोपवासरूपं त्रिंशत्तमं कृत्वा द्वात्रिंशं करोति एवं पूर्वोक्तक्रमेण ततश्चतुर्थभक्तपर्यन्तं करोति। इदं महासिंहनिष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमपरिपाटी यन्त्रम्-

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	१०	९
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	१०	९
११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६							
११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	१५						

इमेऽङ्का उपवासानां निवेशिताः। एवमेव द्वितीयतृतीय चतुर्थपरिपाटीनां प्रत्येकं यन्त्रं बोध्यम्.।

इह महासिंह निष्क्रीडिते तपस्येकस्यां परिपाट्यामनुलोमप्रतिलोमतश्च तुर्य-षष्ठाष्टमादि त्रिंशत्तमपर्यन्तानि चत्वारि चत्वारि 'द्वात्रिंशानि त्रीणि, 'द्वे चतुस्त्रिंशत्तमे' भवन्ति.।

सोलह उपवास कर चुकता है-तब प्रतिलोम गति से प्रत्यावृत्ति काल मे बीच में यह १५ उपवासरूप द्वात्रिंशत् भक्त करता है-पुनः सोलह उपवासरूप चतुस्त्रिंशत्तम भक्त करता है। फिर चतुर्दश उपवास रूप तीस भक्त करता है-इन्हें कर के फिर १५ उपवास करता है। इस प्रकार पूर्वोक्त क्रम से यह चतुर्थभक्त पर्यन्त तपस्या करता है। इस महासिंह निष्क्रीडित तप का प्रथम परिपाटीयंत्र उपर संस्कृत टीका में दिया है। इस प्रकार समझ लेवें।

यंत्र में जो अंक दिये है वे अंक उपवासों के हैं। इसी तरह द्वितीय तृतीय और चतुर्थ परिपाटीयों के प्रत्येक के अंक जानना चाहिये। इस महासिंह निष्क्रीडित तप में एक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम की

ત્યાર બાદ તે ત્યાંથી પાછો ફરે છે. પાછા ફરવાનો ક્રમ આ પ્રમાણે છે. જ્યારે તે સોળ ઉપવાસો કરી લે છે ત્યારે પ્રતિલોમ ગતિથી પ્રત્યાવૃત્તિ કાળમાં વચ્ચે પંદર ઉપવાસ રૂપ દ્વાત્રિંશત ભકત કરે છે. ફરીતે સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુસ્ત્રિંશત્તમ ભકત કરે છે. જ્યાર બાદ ચતુર્દશ ઉપવાસ રૂપ ત્રીશ ભકત કરે છે. અને ત્યાર પછી પંદર ઉપવાસ કરે છે. આ રીતે પૂર્વોકત ક્રમથી તે ચતુર્થ ભકત પર્યન્ત તપસ્યા કરે છે. મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપનું પ્રથમ પરિપાટી યંત્ર ઉપર સંસ્કૃત ટીકામાં બતાવ્યા પ્રમાણે સમજી લેવું.

આ અંકો ઉપવાસો ના છે. આ પ્રમાણે જ દરેક બીજી, ત્રીજી અને ચોથી પરિપાટીઓના અંકો જાણવા જોઇએ. મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપમાં એક પરિપાટિમાં અનુલોમ પ્રતિલોમની અપેક્ષા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, વગેરેથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इह प्रत्येकपरिपाट्या मनुलोमप्रतिलोमतः सर्वाणि तपोदिनानि संकलनया ४९७सप्तनवत्यधिकानि चत्वारि शतानि,तथा-पारणदिनानि-६१एकाधिक षष्टिसंख्यकानि भवन्ति, एषामुभयेषामाकलनेन यावान् कालो भवति, तं प्रदर्शयितुमाह 'एगाए परिवाड़ीए' इत्यादि। एकस्याः परिपाट्याः कालः-एकेन संवत्सरेण षड्भिर्मासैरष्टादशभिश्चाहोरात्रैः 'समप्पेइ' समाप्यते संपूर्णो भवति.। 'सव्वंपि' सर्वमपि अशेषमपि चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्तमित्यर्थः, 'सीहनिक्कीलियं' सिंह निष्क्रीडितं तपः- षड्भिर्वर्षैर्द्वाभ्यां च मासाभ्यां द्वादशभिश्चाहोरात्रैः पारणदिनैः 'समप्पेइ' समाप्यते= संपूर्णं भवति-यथासूत्रं यावदाराधितं भवतीत्यर्थः

अपेक्षा चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, आदि से लेकर त्रिंशत्तम-१४ उपवासो-तक सब उपवास चार चार हो जाते हैं। अर्थात् प्रथम भक्त ४, चतुर्थ भक्त ४ षष्ठ भक्त ४ अष्टम भक्त ४,इत्यादि १४ उपवासों तक जानना चाहिये। १५ उपवास ३, और १६ उपवास २ हो जाते हैं।

यहां प्रत्येक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम विधि के अनुसार समस्त तपस्या के दिनों की संख्या मिलाकर ४९७ होती है। पारणा के दिनों की संख्या ६१। इन दोनों के संकलन से जितना समय होता है-सूत्रकार उसे "एगाए परिवाडीए" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं-वे कहते हैं कि एक परिपाटी का काल एक वर्ष ६ मास और १८रात दिनों में समाप्त होता है। (सव्वंवि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहिं मासेहिं बारसहिय अहोरत्ते हिं य समप्पेइ) और समस्त यह सिंह निष्क्रीडित तप छह वर्ष दो मास एवं १२ दिन रात में समाप्त होता है।

માંડીને ત્રિંશત્તમ-૧૪ ઉપવાસો-સુધી બધા ઉપવાસો ચારચાર હોય છે એટલે કે પ્રથમ ભક્ત ૪ ચતુર્થ ભક્ત ૪, ષષ્ઠ ભક્ત ૪, અષ્ટમ ભક્ત ૪, વગેરે ૧૪ ઉપવાસો સુધી જાણવું જોઇએ. ૧૫ ઉપવાસ ૩ અને ૧૬ ઉપવાસ ૨ થઇ જાય છે.

આ પ્રમાણે અહીં દરેકે દરેક પરિપાટિમાં અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિ મુજબ તપસ્યાના બધા દિવસોની ગણત્રી કરીયે તો ૪૯૭ થાય છે. પારણાંના દિવસોની સંખ્યા ૬૧ હોય છે. આ બંનેના સરવાળાના જેટલા દિવસો થાય છે. સૂત્રકાર 'एगाए परिवाडीए" વગેરે પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે. સૂત્રકાર કહે છે કે એક પરિપાટીનો કાળ એક વર્ષ છ માસ અને અઢાર દિવસોમાં પૂરો થાય છે. (सव्वं वि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहिं मासेहिं वारसहिय अहोरत्तेहिं य समप्पेइ અને આ સિંહ નિષ્ક્રીયડિત તપને સંપૂર્ણ પણે પૂરૂં થવામાં છ વર્ષ બે માસ અને બાર દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगाराः ' महालयं ' महत्, सिंह निष्क्रीडितं यथासूत्रं-सूत्रानतिक्रमेण यावद् आज्ञया आराध्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नत्वा बहूनि बहुविधानि चतुर्थ. यावद् चतुर्थषष्ठाऽष्टमादीनि तपांसि कुर्वन्तो विहरन्ति. ॥ सू० ७ ॥

मूलम्-तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई तत्थणं महब्बल-

(तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सिंह निक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति) इस प्रकार वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगार इस महासिंह निष्क्रीडित तप को यथा सूत्र यावत् आराधित करके जहां स्थविर भगवंत थे वहां आये। (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरंति) वहां आकर उन्हों ने स्थविर भगवंतो को वंदना की नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके फिर वे चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि तपों को करते हुए विहार करने लगे ॥सू०७॥

(तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सिंहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति)

આ રીતે યથાસૂત્ર અને યાવત્ યથાવિધિ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપને આરાધીને મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો જ્યાં સ્થવિર ભગવંત હતા ત્યાં આવ્યા.

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरंति)

ત્યાં જઈને તેમણે સ્થવિર ભગવંતો ને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા, અને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેઓ ત્યાર બાદ ચતુર્થ ષષ્ઠ અષ્ટમ વગેરે તપોને આરંભતાં વિહાર કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર " ૭ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई ॥सू०८॥

टीका–'तएणं ते' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारास्तेनोदारेण इहलोकाद्याशंसारहितत्वेन प्रधानेन तपः कर्मणा 'सुक्का' शुष्काः शुष्कशरीराः रक्तमांसशोषणात् 'भुक्खा' बुभुक्षिताः बहुतपस्वित्वात् । 'जहा खंदओ' यथा स्कन्दकः स्कन्दकनामकोऽनगारः भगवतीसूत्रे द्वितीयशतके प्रथमोद्देशके वर्णितस्तथा संजाता इत्यर्थः, नवरं–एतावान् विशेषः–'थेरे' स्थविरान् स्कन्दको महावीरमापृष्टवान् एते तु स्थविरानित्यर्थः आपृच्छ्य 'चारुपव्वयं'

'तएणं ते महब्बलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते महब्बल पामोक्खा सत्त अणगारा) वे महबल प्रमुख सातों ही अनगार (तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) भगवती सूत्र के द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में वर्णित स्कंदक मुनि की तरह उसे इहलोक परलोक आदि की आशंसा से रहित होने के कारण प्रधान तप से शुष्क शरीर एवं बुभुक्षित (भूख युक्त) हो गये । (नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरूहंति' दुरूहित्ता जाव दो मासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणंति) किन्तु स्कंदक मुनि की अपेक्षा इन सातों अनगारों में यह विशेषता हुई कि स्कंदक मुनि ने महावीर प्रभु से आज्ञा ली और इन्हों ने स्थविर भगवंतों से आज्ञा ली

'तएणं ते महाब्बल पामोक्खा सत्त अणगारा' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) त्यारबाद (महाब्बलपामोक्खा सत्त अणागरा) महाबल प्रमुख सातें अनगारो (तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) भगवती सूत्रना बीजा शतकना पहेला उद्देशकमां वर्णित स्कंदक मुनिनी जेम तेओ इहलोक अने परलोक वगेरेनी अशंसा (इच्छा) रहित होवा बदल प्रधान तपथी शुष्क शरीर अने बुभुक्षित (भूख्या) थई गया.

(नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारु पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव दो मासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं च उरासीइं वाससय सहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणंति)

स्कंदक मुनिओ ज्यारे भगवान महावीर पासे आज्ञा मेळवी हती त्यारे ओ सातें अनगारोओ भगवंत स्थविरो पासेथी आज्ञा मेळवी स्कंदमुनी करतां ओमना विशे आटलुं ज वधारे जाणवुं जोईओ. आ प्रमाणे सातें अनगारो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारुपर्वतं चारुनामकं पर्वतं ' दुरूहंति ' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, ' दुरूहित्ता' दूरुह्य =आरुह्य यावद् पृथिवीशिलापट्टकं प्रमार्ज्य पादपोपगमनं स्वीकृत्य द्विमासिक्यासंलेखनया सविंशतिकं भक्तशतं 'चउरासीइं वाससयसहस्साइं' चतुरशीतिं वर्षशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षवर्षाणि, श्रामण्यपर्यायं=चारित्रपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा चतुरशीतिं पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि सर्वायुः पालयित्वा जयन्ते विमाने देवतयोपपन्नाः=देवत्वेनोपपातमुत्पत्तिं प्राप्ताः ।

तत्र खलु अस्त्येककानां देवानां द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थितिः । तत्र खलु महाबलवर्जानां षण्णां देवानां देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः । महाबलस्य देवस्य प्रतिपूर्णानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्जाता ॥ सू०८ ॥

इस तरह ये सातों ही अनगार भगवंत स्थविरों से आज्ञा लेकर चारु नाम के पर्वत पर पहुँचे-वहां पहुँच कर उन्हों ने वहां के शिलापट्टक की प्रमार्जना की-बाद में पादपोपगमन संथारा धारण कर लिया। दो मास की संलेखना से १२० भक्तों का छेदन कर उन्हों ने ८४ लाख वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालक किया ।

इस तरह अपनी ८४ लाख पूर्व की समस्त आयु समाप्त कर अन्त में देह का परित्याग कर वे पांच अनुत्तर विमान के अन्दर जयन्त विमान में (तत्थणं अत्थे गइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं० ठिई तत्थणं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई) वहां कितने क देवों की बत्तीस सागर प्रमाण स्थिति है सो महाबल को छोड़कर छह देवों की स्थिति कुछ कम बत्तीस सागर की हुई और महाबल की स्थिति पूर्ण बत्तीस सागर की हुई । " सूत्र ९ "

ભગવંત સ્થવિરોની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને ચારુ નામે પર્વત ઉપર પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓએ પાદપોપગમન સંથારો ધારણ કર્યો.

આ પ્રમાણે પોતાનો ૮૪ લાખ પૂર્વનું સંપૂર્ણ આયુષ્ય પૂરું કરીને અન્તે દેહ છોડીને તેઓ પાંચ અનુત્તર વિમાનમાં જયન્ત નામના વિમાનમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યા.

(तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं० ठिई-तत्थणं महब्बल वज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई)

ત્યાંના કેટલાક દેવોની બત્રીશ સાગર પ્રમાણ સ્થિતિ છે. મહાબલને બાદ કરતાં બીજા છ દેવોની સ્થિતિ બત્રીશ સાગર પ્રમાણમાં થોડી ઓછી થઇ અને મહાબલની સ્થિતિ પૂરી બત્રીશ સાગર જેટલી થઇ ॥ સૂત્ર " ૮ "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायायासी, तं जहा पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, संखे कासिराया, रुप्पी कुणालाहीवई,अदीणसत्तूकुरुराया, जितसत्तू पंचालाहिवई॥ सू०९ ॥

टीका–'तएणं ते' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं ते महाबलवर्ज्याः षडपि देवास्तस्माद् देवलोकाद् जयन्ताद् विमानाद् । 'आउक्खएणं' आयुः क्षयेण–देवसम्बन्धिन आयुष्कर्मदलिकनिर्जरणेन, देवसम्बन्धायुः क्षयेण ' भवक्खए ' भवक्षयेण भवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणं ' ठिइक्खएणं ' स्थितिक्षयेण=देवसम्बन्धिस्थितिक्षयेण तेनानन्तरं चयं=देवशरीरं त्यक्त्वा इहैव जम्बूद्वीपे नाम्नि द्वीपे

' तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पियदेवा ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते महब्बल वज्जिया) महाबल के सिवाय वे (छप्पिय देवा) छहों देव (ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं) उस देवलोक से जयन्त विमान से–देवलोक संबन्धी आयु कर्म के दलिको की निर्जना हो जाने से अर्थात् देव पर्याय संबन्धी आयु के क्षय हो जाने से भव के कारण भूत गत्यादि कों की निर्जना हो जाने से स्थिति के क्षय हो जाने से (अणंतरं) उसी समय (चयं चइत्ता) देव शरीर को छोड़कर (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में, भारतवर्ष में–भरत क्षेत्र में–

' तएणं ते महब्बल वज्जा छप्पिय देवा ' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यारभाद (ते महब्बल वज्जिया) महाબલ સિવાય તે (छप्पियदेवा) छ देवो (ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं) તે દેવલોકના જયંત વિમાનથી દેવલોક સંબંધી આયુ કર્મના દલિકોની નિર્જરા થઈ જવાથી એટલે કે દેવ પર્યાય સંબંધી આયુષ્ય ક્ષય થવાથી ભવના કારણ ભૂત ગતિ વગેરેની નિર્જરા થઈ જવાથી, સ્થિતિનો ક્ષય હોવાથી (अणंतरं) તે સમયેજ (चयंचइत्ता) દેવ શરીરને છોડીને (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे) જંબૂદ્વીપ નામના એજ દ્વીપમાં–ભારત વર્ષમાં–ભરત ક્ષેત્રમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(मध्यजम्बूद्वीपे) भारते वर्षे भरत-क्षेत्रे, विशुद्धपितृमातृवंशेषु राजकुलेषु प्रत्येकं २ कुमारतया ' पच्चायाया होत्था मत्युत्पन्ना अभूवन् तद्यथा-१. मतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराजः प्रथमो जीवः मतिबुद्धि नामकः कोशलदेशाधिपतिः । यत्रदेशे-अयोध्यानगरी २. चन्द्रच्छायः-अङ्गराजः द्वीतीयो धरणि जीवः चन्द्रच्छायनामाऽङ्ग देशाधिपतिः यत्र चम्पानगरी ३. शङ्ख काशिराजः, तृतीयोऽभिचन्द्रजीवः शङ्खनामा-काशिदेशाधिपतिः यत्र वाराणसी नगरी । ४ रुक्मी-कुणालाधिपतिः चतुर्थः पूरण जीवः-रुक्मीनामकः कुणालदेशाधिपतिः यत्र श्रावस्ती नगरी । ५. अदीनशत्रुः-कुरुराजः, पञ्चमो वसु जीवोऽदीनशत्रुनामकः कुरुदेशाधिपतिः । यत्र-

(विसुद्धपिइमाइवंसेसु) विशुद्ध माता पिता के वंश वाले राज कुलों में (पत्तेयं २) पृथक २ (कुमारत्ताए पच्चायायासी) पुत्र रूप से उत्पन्न हुए । (तंजहा) इनमें (पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासि राया, रुप्पी कुणालाहिवइ, अदीणसत्तू कुरु राया, जितपत्तू पंचालाहिवई) प्रथम जो अचल का जीव था वह कोशल देश का अधिपति हुआ, जिस में अयोध्या नगरी है-इसका नाम वहां प्रतिबुद्ध हुआ । दूसरा जिसका नाम धरण था वह चन्द्र छाया नाम का अङ्ग देश का अधिपति हुआ । इस अंग देश में चंपा नगरी है । तीसरा जो अभिचन्द्र का जीव था वह काशी देश का राजा हुआ । वहां इसका नाम शंख हुआ । इस काशी देश में बनारस नाम की नगरी है । चौथा जो पूरण का जीव था वह कुणाल देश का अधिपति हुआ उसका वहां नाम रुक्मी था । इस कुणाल देश में श्रावस्ती नगरी है । पांचवां जो

"विसुद्धपिइमाइवंसेसु" વિશુદ્ધ માતાપિતાના વંશવાળા રાજકુળોમાં (पत्तेयं२) જુદા જુદા (कुमारत्ताए पच्चायायासी) પુત્ર રૂપે જન્મ પામ્યા. (तं जहा) આ બધામાં.

(पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया रुप्पी कुणाला हिवइ अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचालाहिवई)

પહેલો અચલનો જીવ કોશલ દેશનો અધિપતિ થયો કોશલ દેશનું પાટનગર અયોધ્યા નગરી હતું. અચલનો જીવ ત્યાં પ્રતિબુદ્ધ નામે પંકાયો.

બીજો ધરણ અંગ દેશનો અધિપતિ થયો તેનું નામ ચંદ્રચ્છાય હતું. ત્રીજા અભિચંદ્રનો જીવ કાશી દેશનો રાજા થયો. તે ત્યાં શંખ નામે પ્રસિદ્ધિ પામ્યો. આ કાશી દેશમાં બનારસનામે નગરી છે. ચોથા પૂરણનો જીવ કુણાલ દેશનો અધિપતિ થયો. ત્યાં તેનું નામ રુકમી હતું. આ કુણાલદેશમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देशे-हस्तिनागपुरम् । ६. जिनशत्रु पाञ्चालाधिपतिः, षष्ठो वैश्रमण जीवो जितशत्रुनामकः पाञ्चालदेशाधिपतिः, यत्रदेशे काम्पिल्यं नगरम् । एवं षडपि पृथक् २ स्थानेषु राजानो जाताः ॥ सू०९ ॥

मूलम्-तएणं से महब्बले देवे तीहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइएसु सउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठिईयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभावईए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कंतीए भववक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते तं रयणिं च णं चोद्दसमहासुमिणा वन्नओ भत्तारकहणं सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ॥ सू० १०॥

वसु का जीव था वह कुरु देश का अधिपति हुआ-वहां उसका नाम अदीन शत्रु था । कुरु देश में हस्तिनाग पुर है । तथा छठा जो वैश्रवण का जीव था पाञ्चाल देश का अधिपति हुआ-इसका वहां नाम जित शत्रु पड़ा था । इस में कपिला नाम की नगरी है ।

इस तरह ये छहों पृथक् २ स्थानों में राजा हुए । सूत्र " ९ "

શ્રાવસ્તી નગરી છે. પાંચમો વસુનો જીવ કુરુદેશનો અધિપતિ થયો. તેનુંનામ અદીન શત્રુ હતું. કુરુ દેશમાં હસ્તિનાપુર નગર છે. તેમજ છઠ્ઠો વૈશ્રવણનો જીવ પાંચાલ દેશનો અધિપતિ થયો. તેનું નામ જિત શત્રુ હતું. પાંચલ દેશમાં કપિલા નામે નગરી છે.

આ પ્રમાણે તેઓ છએ જુદા જુદા દેશોમાં રાજ્ય પદે સુશોભિત થયા ॥ સૂત્ર " ૯ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका-' तएणं से ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स महाबलो देवस्त्रिभिर्ज्ञानैः ' समग्गे ' समग्रः संयुक्तः, ' उच्चट्ठाणट्ठिएसु ' उच्चस्थान स्थितेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु सौम्यासु दिग्दाहाद्युत्पातरहितासु ' दिसासु '=दिक्षु वितिमिरासु तीर्थंकर गर्भावासप्रभावाद् व्यपगतान्धकारासु विशुद्धासु=झंझावातरजः कणादि रहितत्वेन निर्मलासु ' जइएसु ' जापिकेषु राजदीनां विजयसूचकेषु ' सउणेसु ' शकुनेषु काकरुतादिषु ' पयाहिणाणुकूलंसि ' प्रदक्षिणानुकूले प्रदक्षिणावर्ततत्वात् प्रदक्षिणः, शुभावहः सुरभिशीतमन्दत्वादनुकूलश्च तस्मिन् ' भूमिसर्प्पिसि ' भूमिसर्पिणी= भूमौ प्रसरणशीले मारुते वायौ, ' पवायंसि ' प्रवाते वातुं प्रवृत्ते ' निप्फन्नसस्समेइणीयंसि ' निष्पन्नसस्यमेदिनीके निष्पन्नसस्या मेदिनी भूमिर्यस्मिन् तथाभूते काले ' पमुइयपक्कीलिएसु ' प्रमुदितप्रक्रीडितेषु जनपदेषु अर्धरात्रकालसमये अश्विनीनक्षत्रेण ' जोगं ' योगं चन्द्रयोगम्, उपागतेन प्राप्तेन, यः सः=प्रसिद्धः ' हेमंताणं ' हेमन्तानां मार्गशीर्षादि फाल्गुनान्तानां शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थो मासः, अष्टमः पक्षः कृष्णादि मासस्य शास्त्रसंयमत्वादष्टमत्वं पक्षस्येति भावः फाल्गुनशुद्धः=फाल्गुनस्य शुद्धः शुक्लः द्वितीयपक्षोऽस्तीत्यर्थः । तस्य फाल्गुन शुद्धस्य ' चउत्थिपक्खे ' चतुर्थीपक्षे फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्षः पार्श्वोऽर्धरात्रिरिति भावः, तत्र-' णं ' इतिवाक्यालङ्कारे, जयन्ताद् विमानाद् द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितिकादनन्तरं चयं=देवसम्बन्धिशरीरं त्यक्त्वा- इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां

' तएणं से महब्बले ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से महब्बले देवे) वह महाबल का जीव देव (तीहिं णाणेहिं समग्गे) मति ज्ञान श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान इन तीन ज्ञानों का धारी हो कर (अणंतरं) उन छहों के बाद अपनी स्थिति पूर्ण कर (जयंताओ विमाणाओ) उस जयंत विमान से (चइत्ता) चल कर (इहेव जंबूदीवे दीवे) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में (भार

' तएणं से महब्बले ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यारબાદ " से महब्बले देवे " દેવ મહાબલનો જીવ " तीहिं णाणेहिं समग्गे " મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન આ ત્રણે જ્ઞાનોને ધારણ કરનાર થઈને " अणंतरं " તે છએના પછી પોતાની સ્થિતિ પૂરી કરીને " जयंताओ विमाणाओ " જયંત વિમાનથી " चइत्ता " ચાલીને " इहेव जंबूदीवे दीवे " જંબૂ દ્વીપ નામના આજ દ્વીપમાં (भारहे वासे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'कुंभगस्स' कुम्भकस्य कुम्भकनामकस्य राज्ञः पभावत्याः=प्रभावतीनाम्न्या देव्यः 'कुच्छिंसि' कुक्षौ 'आहारवक्कंतीए' आहारव्युत्क्रान्त्या=आहारपरिवर्तनेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः, 'सरीरवक्कंतीए' शरीरव्युत्क्रान्त्या=देवशरीरपरिवर्तनपूर्वकमनुष्यशरीरग्रहणेनेत्यर्थः 'भववक्कंतीए' भवव्युत्क्रान्त्या = देवभवं विहाय मनुष्यभवग्रहणेन 'गब्भत्ताए वक्कंते' गर्भतया व्युत्क्रान्तः=गर्भरूपेण समुत्पन्नः। तस्यां रजन्यां च खलु चतुर्दश महास्वप्नाः प्रभावती देव्या दृष्टः।

हे वासे) भरत क्षेत्र में (मिहिलाए रायहाणीए) मिथिला राजधानी में (कुंभगस्स रन्नो पभावइए देवीए कुच्छिंसि) कुंभक राजाकी प्रभावती देवी की कुक्षि में (आहार वक्कंतीए) आहार के परिवर्तन से-मनुष्योचित आहार के ग्रहण से, (सरीरवक्कंतीए) शरीर की व्युत्क्रान्ति से देव शरीर के परिवर्तन पूर्वक मनुष्य शरीर के ग्रहण से, (भव वक्कंतीए) भव की व्युत्क्रान्ति से देव भव को छोड़कर मनुष्य भव के ग्रहण से (गब्भत्ताए वक्कंते) गर्भरूप से उत्पन्न हुए।

जब यह प्रभावती की कुक्षी में गर्भ रूप से उत्पन्न हुए तब (गहेसु उच्चट्ठाणट्ठिएसु) सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे। (दिसासु सोमासु) चारों दिशायें दिग्दाह आदि उपद्रवों से रहित थी (वितिमिरासु विसुद्धासु) तीर्थंकर के गर्भावास के प्रभाव से वे अन्धकार रहित बन गई थीं एवं झंझावात रजकण आदि से रहित हो कर निर्मल हो गई थीं।

ભરત ક્ષેત્રમાં "मिहिलाए रायहाणीए" મિથિલા રાજધાનીમાં कुंभगस्सरन्नो पभावइए देवीए कुच्छिंसि" કુંભક રાજાની પ્રભાવતી દેવીના ઉદરમાં "आहार वक्कंतीए" આહારના પરિવર્તનથી માનવોચિત આહારના ગ્રહણથી "सरीर वक्कंतीए" શરીરની વ્યુષ્ક્રાંતિથી એટલે કે દેવ શરીરના પરિવર્તન તેમજ મનુષ્ય શરીરના ગ્રહણથી "भववक्कंतीए" ભવની વ્યુષ્ક્રાંતિથી દેવ ભવને ત્યજીને મનુષ્ય ભવને ગ્રહણ કરવાની અપેક્ષાથી "गब्भत्ताए वक्कंते" ગર્ભ રૂપે જન્મ પામ્યા.

જ્યારે તેઓ પ્રભાવતીના ઉદરમા ગર્ભરૂપે અવતર્યા ત્યારે "गहेसु उच्चट्ठाण ट्ठिएसु" સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને હતા. दिसासु सोमासु ચારે દિશાઓ દિગ્દાહ વગેરે ઉપદ્રવો વગરની હતી. "वितिमिरासु विसुद्धासु" તીર્થંકર ના ગર્ભવાસના પ્રભાવથી દિશાઓ પ્રકાશ યુક્ત તેમજ ઝંઝાનિલ રજકણ વગેરેથી રહિત થઇને સ્વચ્છ બની ગઈ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उस समय (सउणे सु जइएसु) काक आदि पक्षी, राजा आदि के विजय सूचक शब्द बोल रहे थे। (मारुयंसि) हवा भी (पयाणु कूलंसि) प्रदक्षिणावर्त हो कर (पवायंसि) वह रही थी। सुरभी और शीतल मन्द होने के कारण वह अनुकूल थी। (भूमि सप्पिसि) भूमि का स्पर्श वह कर रही थी। (कालंसि) वह समय ऐसा था कि जिसमें (निप्फन्नसस्समेइणीयंसि) निष्पन्न सस्य से मेदिनी आच्छादितहरी भरी बनी हुई थी (जणवए सु) जन पद भी (पमुइयपक्कीलीएसु) हर्ष से हर्षित बनें हुए थे और विविध प्रकार की क्रीडाओ में रत थे– (अद्धरत्तकालसमयंसि) यह समय अर्द्ध रात्रि का था। (अस्सिणी णक्खत्तेणं जोगमुवगएणं) इस में अश्विनी नक्षत्र का चन्द्र के साथ योग हो रहा था (जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुण सुद्धे) यह अर्ध रात्रि का समय फालगुन मास के शुक्ल पक्ष का था। यह मास हेमंत काल के मासो में चौथा मास तथा ८ वां पक्ष है। (तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खे णं) ऐसी उस फाल्गुन शुक्ल चौथ की अर्द्धरात्रि के समय में वे महाबल देव अपनी ३२ सागर की स्थिति पूर्ण करके उस जयंत नामक विमान से चव कर प्रभावती देवी

તે વખતે (सउणेसु जइएसु) કાગડા વગેરે પક્ષીઓ રાજા વગેરેના માટે વિજયને સૂચવનારા શબ્દો ઉચ્ચારી રહ્યા હતા. (मारुयंसि) પવન પણ (पयाणुकूलंसि) પ્રદક્ષિણાવર્ત થઈને (पवायंसी) વાતો હતો. શીતળ મન્દ અને સુગંધ યુક્ત પવન અનુકૂળ લાગતો હતો. ' भूमिसप्पिसि ' તે પૃથ્વીનો સ્પર્શ કરતાં વાતો હતો હતો. ' कालंसि ' આવો સુખદ સમય હતો કે જેમાં (निप्फन्नसस्समेइणियंसि) નિષ્પન્ન ધાનથી મેદિની ' પૃથ્વી ' લીલાછમ આવરણ થી ઢંકાઇ રહી હતી. ' जणवएसु ' જનપદ પણ ' पमुइय पक्कीलीएसु ' હર્ષમાં તરબોળ થઈ રહ્યું હતું. અને જાતજાતની ક્રીડાઓમાં મશ્ત હતું 'अद्धरत्तकालसमयंसि ' અડધી રાતનો વખત હતો. ' अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवगएणं ' અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો. 'जे से हे मंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे ' ફાગણ મહિના નો શુકલ પક્ષ ચાલતો હતો. આ મહિનો હેમંત કાળના મહિનામાં ચોથો મહિનો તેમજ આઠમો પક્ષ છે. ' तस्सणं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खेणं ' એવી ફાગણ શુકલ ચોથના અડધી રાતના વખતે મહાબલ દેવ પોતાની બત્રીશ સાગરની સ્થિતિ પૂરી કરીને તે જયંત નામક વિમાનમાંથી ચવીને પ્રભાવતી દેવીના ગર્ભમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्णकः= तेषां स्वप्नानां वर्णनं वाच्यं तच्चान्यत्र सविस्तरं द्रष्टव्यम् तेषां नामानि केवलं प्रोच्यन्ते—गज-वृषभ-सिंह=लक्ष्मी-पुष्पमाला-चन्द्र-सूर्य-ध्वज-पूर्णकलश-पद्मसरः-समुद्र-देवविमान-रत्नराशिवह्नय इति। भर्तृकथनम् स्वप्नवृत्तं भर्त्रे निवेदयतीत्यर्थः। स्वप्नपाठकपृच्छा=स्वप्नफलवाचकान् समाहूय भर्त्रा कुम्भकनृपेण स्वप्नफलपृच्छा कृतेत्यर्थः। यावत्-स्वप्नपाठकैः स्वप्नफलं निवेदितं, तत्सर्वं प्रथमाध्ययने धारिणीदेव्या अधिकारे यथा कथितं तथैव वाच्यं विशेषस्तु-धारिण्या स्वप्ने गज एव दृष्टः, प्रभावत्या तु चतुर्दश स्वप्ना इति। एवं च तैरुक्तम्-

के गर्भ में आये। (तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वन्नओ) उस रात्रि में उस प्रभावतीदेवी ने १४ महा स्वप्न देखे। इन महा स्वप्नों का सविस्तर वर्णन अन्यत्र से जानना चाहिये हम यहां उन के नाम निर्देश करते है जो इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र देवविमान, रत्नराशि और अग्नि। इन स्वप्नो को देखकर प्रभावती ने अपने पति कुंभक राजा से कहा राजा ने उसी समय स्वप्नपाठकों को बुलाया-और उनसे इन स्वप्नों के फल को पूछा।

उन्हों ने इन स्वप्नों का क्या फल है यह बात राजा को कही। यह सब विषय इसी के प्रथम अध्ययन में धारिणी देवी के अधिकार में जिस प्रकार से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से यहां भी जानना चाहिये। धारिणी देवी ने स्वप्न में केवल एक हाथी ही देखा था। प्रभावती ने तो चौदह महा स्वप्न देखे। अन्त में उन स्वप्न पाठकों ने कहा-राजन! प्रभावती देवी ने जो ये चौदह सुन्दर स्वप्ने देखे हैं-उन

સ્થિત થયા 'तं रयणिं च णं चोद्दसमहासुमिणा वन्नओ' તે રાત્રિમાં પ્રભાવતી દેવીએ ૧૪ સ્વપ્નો જોયાં આ બધાં મહાસ્વપ્નો વિષેનું સવિસ્તર વર્ણન જિજ્ઞાસુઓએ બીજેથી જાણી લેવું જોઈએ. પ્રભાવતી દેવીએ. ચંદ્ર, સૂર્ય, ધ્વજ, પૂર્ણકળશ, પદ્મસર, સમુદ્ર, દેવવિમાન રત્નરાશિ અને અગ્નિ આટલી વસ્તુઓ સ્વપ્નમાં જોઇ હતી. આ સ્વપ્નોને જોયા બાદ પ્રભાવતીએ પોતાના પતિ કુંભક રાજાને સ્વપ્ન વિષે કહ્યું અને તેમણે તરત જ સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા અને તેમને આ સ્વપ્નોના ફળ વિષે પૂછ્યુ.

સ્વપ્ન પાઠકોએ આ સ્વપ્નોનું ફળ શું થશે તેની બધી વિગત રાજાને કહી સંભળાવી. જ્ઞાતાધ્યયન ના પ્રથમ અધ્યપનમાં ધારિણિદેવીના પ્રસંગમાં આ વિષે સવિસ્તર વર્ણવ્યું છે અહીં પણ તે મુજબ જ સમજી લેવું જોઇએ સ્વપ્નમાં ધારિણી દેવીએ ફક્ત એક હાથી જ જોયેા હતો પણ પ્રભાવતીએ તો ચૌદ મહા સ્વપ્નો જોયાં હતાં. સ્વપ્નનું ફળ વર્ણવતાં સ્વપ્ન પાઠકોએ કહ્યું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे राजन् ! प्रभावती देव्या चतुर्दश शोभनाः स्वप्ना अवलोकिताः । तत्प्रभावाच्च चक्रवर्ती वा तीर्थंकरो वा भविष्यति । स्वप्नफलं श्रुत्वा सा प्रभावती गर्भं सुखसुखेन वहमाना विहरति=आस्ते स्म ॥ सू० १० ॥

मूलम्–तएणं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य विहरंति, एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमल्लिय चंपय असोग पुन्नाग नाग मरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महयागंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति ।

तएणं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूयं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणंसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव मुयंतं जाव उवणेंति, तएणं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं जाव डोहलं विणेइ, तएणं सा पभावती देवी पसत्थ-

---

के प्रभाव से इस के या तो कोई तीर्थंकर जन्म लेगा या कोई चक्रवर्ती। इस प्रकार स्वप्नों का फल सुनकर प्रभावती बड़ी प्रसन्न हुई और उस ने आनंद के साथ गर्भ को धारण करते हुए सुखपूर्वक समय को व्यतीत किया। सूत्र " १० "

" હે રાજન્ ! પ્રભાવતી દેવીએ ચૌદ ઉત્તમ સ્વપ્નો જોયાં છે, તેના પ્રભાવ થી એમના ઉદરથી કાંતો તીર્થંકર જન્મશેશે કાં કોઇ ચક્રવર્તી ! " આ પ્રમાણે સ્વપ્ન ફળ સાંભળીને પ્રભાવતી ખૂબજ પ્રસન્ન થઇ. અને સુખેથી ગર્ભ ધારણ કરી ને સમય પસાર કરવા લાગી ॥ સૂત્ર ૧૦ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डोहला जाव विहरइ, तएणं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य रत्तिंदियाणं जे से हेमंताणं पढमं मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्त० अस्सिणी नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एकूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएणं तीसे ' इत्यादि– ततस्तदनन्तरं खलु तस्याः प्रभावत्या देव्या त्रिषु मासेषु बहुमतिपूर्णेषु=अशेषतः सम्पूर्णेषु सत्सु अयमेतद्रूपः दोहदः गर्भसद्भावजनिताभिलाषः प्रादुर्भूतः– धन्याः खलु ता अम्बाः=पुत्रमातरः या खलु ' जलथलयभासुरप्पभूएणं ' जलस्थलजभास्वरप्रभू – तेन जलेषु स्थलेषुच यज्जात भास्वरं= विकसितं, प्रभूतं प्रचुरं, तेन ' दसद्धवन्नेणं ' दशार्धवर्णेन पञ्चवर्णयुक्तेन माल्येन माल्येभ्यो हितं माल्यं=पुष्पजातं, तेन ' अत्थुयपच्चत्थुयंसि ' आस्तृत प्रत्यास्तृते क्रमश उपर्युपरि समाच्छादिते शयनीये=शय्यायां ' सन्निसन्नाओ ' सन्निषण्णाः=संनिविष्टाः ' सण्णिवन्नाओ ' संनिपन्नाः सुप्ताश्च विहरन्ति सुखेन

' तएणं तीसे पभावईए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (तीसे पभावईए देवीए) उस प्रभावती देवी के जब (तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं) तीन मास अच्छी तरह से पूर्ण हो चुके–तब (इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए) उसे इस प्रकार का दोहला उत्पन्न हुआ– (धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ) वे माताएँ धन्य हैं (जाओ णं जल थलय भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्ने णं मल्ले णं) जो जल में एवं स्थल में उत्पन्न हुए विकसित पंचवर्णों के प्रभूतपुष्पों से (अत्थुय पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सन्निवन्नाओ य

'तएणं तीसे पभावइए । ' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (तीसे प्रभावइए देवीए) પ્રભાવતીદેવીને જ્યારે (तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं) ત્રણ મહિના સારી રીતે પસાર થઇ ચુકયા ત્યારે (इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए) તેને આ પ્રમાણે દોહદ ઉત્પન્ન થયું કે (धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ) તે માતા એ ધન્ય છે. (जाओ णं जल थलय भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं) જેઓ જળ અને સ્થળમાં ઉદ્ભવેલાં અને વિકાસ પામેલાં પાંચરંગના પુષ્કળ પ્રમાણમાં એકઠાં કરેલાં પુષ્પોથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिष्ठन्ति ता अम्बा धन्याः, इति पूर्वेण सम्बन्धः । एकंच महत् विशालं 'सिरिदामगंडं' श्रीदामकाण्डं श्रीदाम्नां=शोभायुक्तमालानां काण्डं समूहं 'पाडलमल्लियचंपय- असोग- पुन्नाग-नागमरुयग-दमणग-अणोज्ज कोज्जयपउरं' पाटला-मल्लिका- चम्पिका-ऽशोक- पुंनागनाग - मरुवक-दमनका- ऽनवद्यकुब्ज प्रचुरं, पाटलाद्या पुष्पजातयः- पाटलपुष्पं, ' गुलाब ' इति प्रसिद्धं मल्लिकापुष्पं=चम्पकपुष्पम् , अशोकपुष्पम्, पुन्नागपुष्पम् , नागपुष्पं, मरुवकः पत्रजाति विशेषः, दमनकपुष्पम् , अनवद्यः- सुन्दरः, कुब्जकः शतपत्रिका विशेषः, एतानि प्रचुराणि यत्र तत् तथा, ' परमसुहफासदरिसणिज्जं ' परमसुखस्पर्शदर्शनीयं परमसुखदः स्पर्शोयस्य तद् तच्च दर्शनीयं दृष्टिसुखदं चेति 'महया गंधद्धाणिं' महासुरभिगन्धघ्राणि महासुरभिगन्धगुणं तृप्तिहेतुं पुद्गलसमूहं सुञ्चत् प्रसारयद् तद् आजिघ्रन्त्यः

विहरंति) इस तरह एक एक करके क्रमशः पुष्पों के अनेक स्वरों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठती हैं सुख से शयन करती हैं। (एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमल्लियचंपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महयागंधद्धणिमुयंतं आघायमाणीओ दोहलं विणेंति) और अद्वितीय श्रीदामकांड को-शोभायुक्त मालाओ के समूह को कि जिसमें पाटल (गुलाब) मल्लिका (मोंगरा) चंपक, अशोक, पुन्नाग, नाग, मरुवा, दमनक एवं सुन्दर कुब्जक के पुष्पों का प्राचुर्य है, जिसका स्पर्श परम सुख कारक है और जो दृष्टि को आनंद दायक है तथा तृप्ति कारक महासुरभि गंध गुण वाले पुद्गलों को जो फैला रहा है सूंघती हुई अपने गर्भ मनोरथ

(अत्थुय पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सन्निवन्नाओ य विहरंति) આ રીતે અનુક્રમે પુષ્પોના થરથી ઢંકાએલી એવી શય્યા (પથારી) ઉપર બેસે છે અને સુખેથી શયન કરે છે.

(एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमालियचंपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्ज पउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महया गंधद्धणिमुयंतंआधाय माणीओ दोहलं विणेंति)

જેમાં પાટલ (ગુલાબ), મલ્લિકા, ચંપક, અશોક, પુન્નાગ, નાગ, મરુવો, દમનક અને સુંદર કુબ્જકના પુષ્પો પુષ્કળ પ્રમાણમાં છે, સ્પર્શ જેનો અત્યંત સુખદ છે અને જે દૃષ્ટિને આનંદ આપનાર છે અને તૃપ્તકરનાર મહાસુગંધ ગુણવાળા પુદ્ગલોને જે ફેલાવી રહ્યો છે-એવા અદ્વિતીય (સર્વોત્તમ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेन तथाविधेन श्रीदामकाण्डेन घ्राणेन्द्रियं तर्पयन्त्यः दोहदं = गर्भसद्भावजनित मनोरथं 'विणेंति' विनयन्ति=पूरयन्ति। ता एव जनन्यो जगति भाग्यशालिन्यः प्रशंसनीया धन्याश्च सन्तीत्यर्थः।

ततस्तदनन्तरं खलु- तस्याः प्रभावत्या देव्याः इममेतद्रूपं दोहदं प्रादुर्भूतं दृष्ट्वा यथा संनिहिताः समीपस्थिता वानव्यन्तरादेवाः क्षिप्रमेव जलस्थलीत्पन्नानि यावद्दशार्धवर्णानि = पञ्चवर्णानि माल्यानि = पुष्पाणि कुम्भाग्रशश्च कुम्भ-परिमाणतः, भाराग्रशश्च भारपरिमाणतश्च कुम्भकस्य राज्ञो भवने संहरन्ति= समानयन्ति. । एकंच खलु महत् श्रीदामकाण्डं यावद् मुञ्चत् उपनयन्ति-समीपे समानयन्ति। ततः खलु सा प्रभावती देवी जलस्थलज यावत्- यावच्छब्देन-

की पूर्ति करती हैं (वे माताएँ धन्य हैं ऐसा संबंध यहां पर लगा लेना चाहिये) (तएणं) इसके बाद (तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं दोहलं पाउब्भूतं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसोय भारग्गसोय कुंभगस्स रन्नो भवणंसि साहरंति) उस प्रभावती देवीके इस प्रकारके दोहलेको उत्पन्न हुआ देख कर के समीप में रहे हुए वानव्यन्तर देवोंने शीघ्र ही जल में और स्थल में उत्पन्न पंचवर्ण के पुष्पों को कुंभ परिमाण में और भारपरिमाण में कुंभक राजा के भवन पर लाकर रख दिया।

(एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव सुयंतं जाव उवणेंति) और साथ में एक बड़ा भारी श्रीदामकाण्ड भी कि जिसमें पाटल गुलाब

શ્રી દામકાંડ (સુંદરમાળાઓના સમૂહ) ની સુવાસ અનુભવતી પોતાના ગર્ભ મનોરથ (દોહદ)ની પૂર્તિ કરે છે. (ખરે ખર તે માતાઓ ધન્ય છે.)

(तएणं) ત્યાર બાદ.

(तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवे दोहले पाउब्भूतं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जल थलय० जाव दसद्धवन्नं मल्लं कुंभगस्सो य भारगस्सो य कुंभगरस्स रन्नो भवणंसि साहरंति)

પ્રભાવતી દેવીના આ પ્રમાણેના દોહલાને ઉત્પન્ન થયેલો જાણીને પાસે રહેનારા વાનવ્યંતર દેવોએ તરત જ જળ અને સ્થળમાં ઉત્પન્ન થયેલાં પાંચરંગના પુષ્પોને કુંભ પરિમાણમાં અને ભાર પરિમાણમાં કુંભક રાજાના ભવન ઉપર લાવીને મૂકી દીધાં

(एगंच णं महं सिरिदामगंडं जाव सुयंतं जाव उवणेंति) પાટલ વગેરેના પુષ્પો જેમાં ગૂથેલાં છે, અને જે નેત્રોને માટે સુખદ અને સ્પર્શ પણ જેનો આનંદ દાયક છે, અને જેમાંથી ચોમેર સુગંધી પ્રસરી રહી છે એવો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' जल थलइत्यनन्तरं ' भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं ' इति संग्रहः, माल्येन=पुष्प जातेन यावत्-अत्र यावच्छब्देन- ' अत्थुयपच्चत्थुयंसि ' इत्यारभ्य ' अग्घाय माणीओ ' इतिपर्यन्तस्य ग्रहणम्, दोहदं विनयति=पूरयति. । ततः खलु सा प्रभावती देवी प्रशस्तदोहदा यावद् संपूर्ण दोहदा संमानित दोहदा विहरति. ।

अथ भगवतस्तस्य तीर्थंकरस्य सकल जगत्कल्याणकरंजन्मकदाऽभवदिति जिज्ञासायामाह-' तएणं ' इत्यादि. ।

ततस्तदनन्तरं खलु सा प्रभावती देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु=सर्वथा संपूर्णेषु तदनन्तरम् अर्धाष्टमेसु रात्रिंदिवेषु व्यतीतेषु योऽसौ हेमन्तानो हेमन्त ऋतु संज्ञकानां मार्गशीर्षादिफाल्गुनान्तानां प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्षः मार्गशीर्ष शुद्धः मार्गशीर्षमासस्य शुद्धः शुक्लः पक्षो वर्तते, तस्य- खलु एकादश्यां तिथौ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये मध्यरात्रे अश्विनी नक्षत्रे योगं=चन्द्रयोगमुपागते-प्राप्ते

आदिकेपुष्पगुंथे हुए हैं और जो नेत्र को सुख देने वाले एवं सुखस्पर्श है जिसमें से सुगंध ही सुगंध चारों ओर फैल रही है रानिके पास लाकर उपस्थित किया। (तएणं सा पभावती देवी जल थलय जाव मल्लेणं जाव दोहलं विणेइ) इसके अनन्तर उस प्रभावती देवीने जल थलके विकसित पंच वर्ण वाले प्रभूत पुष्पों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठकर शयन कर श्रीदामकाण्ड को कि जो पाटल (गुलाब) आदि के पुष्पों से गुंथा हुआ था यावत् गंध को फैला रहा था सूंघ कर अपने दोहले की पूर्ति की। (तएणं सा पभावती देवी पसत्थ दोहला जाव विहरइ, तएणं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य रत्ति दियाणं जे से हेमंत्ताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त० आस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एगू

એક મોટો ભારે શ્રીદામકાંડ પણ વાનવ્યંતરો ત્યાં લાવ્યા (तएणं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं जाव दोहलं विणेइ) ત્યાર બાદ પ્રભાવતી દેવીએ જળના વિકસિત પાંચરંગના પુષ્પોથી સમાચ્છાદિત શય્યા ઉપર બેસીને, શયન કરીને, પાટલ વગેરેના પુષ્પોથી ગૂંથાયેલા સુવાસિત શ્રીદામકાંડને સુંઘીને પોતાના દોહદની પૂર્તિ કરી.

(तएणं सा पभावती देवी पसत्थदोहला विहरइ, तएणं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णातं अद्धट्ठमाणयराइंदियाणं जे से हेमंताणं पढमेमासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एगारसीए पुव्वत्तावरत्त. आस्सिणीनक्खत्तेणं जोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सति उच्चस्थानस्थितेषु उच्चराशिग तेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु प्रमुदित प्रक्रीडितेषु हृष्टेषु क्रीडावत्सु च जनपदेषु=देशेषु सत्सु आरोग्यारोगरहिता अनाबाधा प्रसववेदना रहिता सतीत्यर्थः आरोग्यं = अनाबाधं क्लेशवर्जितं एकोनविंशतितमं तीर्थंकरं प्रजाता=प्रजनिवती. ॥ सू० ११ ॥

णवीसइमं तित्थयरं पयाया) इस प्रकार प्रशस्त दोहला वाली वह प्रभावती देवी कि जिस का दोहला अच्छी तरह से पूर्ण हो चुका हैं और जिस दोहले को राजा आदिजनों ने भी सन्मानित किया है आनन्द पूर्वक रहने लगी। अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि भगवान् उन तीर्थंकर को जगत् कल्याण कारक जन्म किस समय हुआ-वे कहते हैं कि जब गर्भ के नौ मास सम्पूर्ण रूप से व्यतीत हो चुके और उनके ऊपर साढे सात रात का समय और अधिक निकल चुका उस समय प्रभावती देवी ने हेमन्त काल के प्रथम मास मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन मध्य रात्रि के समय अश्विनी नक्षत्र में, जब कि उसका योग चन्द्रमा के साथ हो रहा था और सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे तथा जनपदों में आनन्द की लहरे छायी हुईथी-विविध प्रकार की क्रीडाओं में वे रत बने हुए थे बिना किसी बाधा के क्लेशवर्जित १९ वें तीर्थंकर को जन्म दिया ॥ सूत्र ११ ॥

सुहागएणं उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइय पक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एकूणवीसइमं तित्थयरं पयया)

આ રીતે જેનું દોહદ સંપૂર્ણ પણે પૂરૂં થયું છે અને રાજા વગેરે ગુરુ જનોએ પણ જેના દોહદને સન્માનીત કર્યું છે એવી પ્રશસ્ત દોહદ વાળી પ્રભાવતી દેવી આનંદની સાથે પોતાના દિવસો પસાર કરવા લાગી. હવે સૂત્રકાર જગત્ ના કલ્યાણ કરનારા એવા ભગવાન તીર્થંકર નો જન્મ કયારે થયો તેનું વર્ણન કરતાં કહે છે-કે જ્યારે ગર્ભના નવમાસ પૂરા થઇ ગયા અને નવમાસ ઉપર સાડા સાત દિવસરાતનો સમય પસાર થયો ત્યારે હેમંતઋતુના પ્રથમ મહિનાના શુકલ પક્ષ અગિયારસના દિવસે અડધી રાતના સમયે અશ્વિની નક્ષત્રમાં-જ્યારે તે નક્ષત્રનો યોગ ચન્દ્રની સાથે થઇ રહ્યો હતો અને સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને સ્થિત હતા અને આખા જનપદમાં આનંદનાં મોજાંઓ પ્રસરી રહ્યા હતાં અને બધા માણસો અનેક જાતની રમતો અને ક્રીડાઓમાં મસ્ત થઇ રહ્યા હતા ત્યારે પ્રભાવતી દેવીએ કલેશ અને દુઃખ રહિત થઇને ૧૯ મા તીર્થંકર ને જન્મ આપ્યો. ॥ સૂત્ર " ૧૧ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समयेणं अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं नवरं मिहिलाए कुंभयस्स पभावईए अभिलाओ संजोएव्वो जाव नन्दीसरवर दीवे महिमा, तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवइ४ तित्थयर जायकम्मं जाव नामकरणं, जम्हाणं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते तं होउणं णामेणं मल्ली, जहा महाब्बले नाम जाव परिवड्ढिया सा वड्ढती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदास परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं ॥ सू० १२ ॥

टीका–' तणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन् समये जिन जन्मसमयेऽधोलोक वास्तव्या अष्ट दिक्कुमार्यः महत्तरिकाः प्रधानाः भोगङ्करा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, सुवत्सा ५, वत्समित्रा ६, वारिषेणा ७, बलाहका ८, इत्येतन्नामिकाः समागताः । यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ भगवतस्तीर्थंकरस्य जन्मवर्णितं, सर्वं तथैव विज्ञेयम्, नवरं=एतावान् विशेषः

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (अहो लोगवत्थव्वाओ) अधोलोक में निवास करनेवाली (अट्ठ) आठ (दिसाकुमारीओ) दिक्कुमारिकाएँ (महत्तरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मणंसव्वं) जिनका नाम भोगङ्करा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी सुवत्सा, वत्समित्रा वारिषेणा और बलाहका है आई। जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति

'तेणं कालेणं तेणं समएण'–ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (अहोलोग वत्थवाओ) અધોલોકમાં રહેનારી (अट्ठ) આઠ (दिसाकुमारीओ) દિશા કુમારિકાઓ (महत्तरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं) જેમના નામો ભોગંકરા ભોગવતી, સુભોગા, ભોગમાલિની, સુવત્સા, વત્સમિત્રા, વારિષેણા, અને બલાહકા–છે–ત્યાં આવી–' જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ ' માં ભગવાન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इह मिथिलायां नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञः प्रभावत्याः अभिलापः=वर्णनं संयोक्तव्यः =वक्तव्यः, यावत् नन्दीश्वरवरे द्वीपे महिमा=उत्सवः, देवैकृतः । तदा खलु कुम्भको राजा बहुभिर्भवनपतिवानव्यन्तर-ज्योतिष्क वैमानिकैः जन्मोत्सवे कृते सति तीर्थकरजातकर्म यावत् नामकरणं कृतवान् यस्मात् खलु अस्माकम् अस्यां दारिकायां गर्भगतायां मातुर्माल्यशयनीये कुसुमशय्या विषये दोहदो विनीतः=

में भगवान तीर्थंकर ने जन्म का जैसा वर्णन किया गया है-वैसा ही वर्णन यहां जानना चाहिये (नवरं) परन्तु उसकी अपेक्षा इसमें इतनी विशेषता है (मिहिलाए कुंभयस्स पभावइए अभिलाओ) कि यहां मिथिला नगरी कुंभक राजा और रानी प्रभावती का सम्बन्ध लिया गया इसलिये मल्लीनाथ तीर्थंकर के जन्म के वर्णन करने में इनसब का योग लगा लेना चाहिये।

(जाव नंदीसर वरे दीवे महिमा) मल्लिनाथ तीर्थंकर के जन्म का उत्सव नंदीश्वर नाम के द्वीप में देवों ने किया। (तयाणं कुंभए राया बहूहिं भवणवइ ४ तित्थयर जाय कम्मं जाव नाम करणं) इसके बाद कुंभक राजा ने अनेक भवनपति वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक देवों के द्वारा जन्मोत्सव किये जाने पर तीर्थंकर का जातकर्म यावत् नाम करण किया। (जम्हा णं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्ल सयणिज्जंसि दोहले विणीए तं होउणं णामेण मल्ली) नाम करण

તીર્થંકર ના જન્મ વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેવું જ વર્ણન અહીં પણ જાણવું જોઇએ. (नवरं) પણ તેના કરતાં અહીં આટલી વિશેષતા જાણવી જોઇએ કે (महिलाए कुंभयस्स पभाईए अभिलाओ) અહીં મિથિલા નગરી, કુંભક રાજા અને રાણી પ્રભાવતીના સંબંધ વિષે વર્ણન કરવામાં આવે છે એટલે મલ્લિનાથ તીર્થંકરના જન્મ વર્ણનમાં આ બધાનો યોગ અપેક્ષિત છે.

(जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा) દેવોએ મલ્લિનાથ તીર્થંકરનો જન્મોત્સવ નંદીશ્વર નામના દ્વીપમાં ઊજવ્યો હતો (तयाणं कुंभए राया बहूहिं भवण वइ४ तित्थयर जायकम्मं जाव नाम करणं) ઘણા ભવનપતિ વાન વ્યંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક દેવોએ જ્યારે સારી પેઠે ભગવાન તીર્થંકરનો જન્મોત્સવ ઊજવી લીધો ત્યારે કુંભક રાજાએ તેમનો જાતકર્મ યાવત્ નામ કરણ સંસ્કાર કર્યો.

(जम्हाणं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि दोहले विणीए तं होउणं णामेण मल्ली)

રાજાએ તેમનું નામ મલ્લિ પાડ્યું કેમકે જ્યારે તે ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમની માતાને માલતીના પુષ્પોની માળાની શય્યાનું દોહદ થયું હતું અને તેમના દોહદની

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवैः पूरितः, तद् भवतु खलु इयं नाम्ना मल्लिः मालायै हितं, तव साधु वा माल्यं कुसुमं तद्गताभिलाषरूपदोहदपूर्वकमेतस्या दारिकाया जन्मसंजातं तस्मा दस्या नाम 'मल्ली' इतिकृतम् । अस्याः स्त्रीत्वेऽपि जिनस्तीर्थंकरोऽर्हदिति शब्दानां बाहुल्येन पुंस्त्वे प्रवृत्तिदर्शनात्पुंलिङ्गशब्देन व्यवहारः । यथा महाबलो नाम=

में उनका नाम मल्ली रखा गया-क्यों कि राजाने यह विचारा कि जब ये गर्भ में थी तो इनकी माताको पुष्पोंकी माल्य की शय्या के विषय में दोहला उत्पन्न हुआ था-और उस दोहले की पूर्ति देवों ने की थी अतः यह पुत्री नाम से मल्ली रहो- इसी अभिप्राय से राजा ने उसका नाम मल्लि रखा।

" मालायै हितं तत्र साधु वा माल्यं " इस व्युत्पत्ति के अनुसार माल्य शब्द का अर्थ कुसुम होता है। सो जब ये माता के गर्भ में थी तब माता को उस माल्य के विषय में अभिलाष रूप दोहला उत्पन्न हुआ था-जिस की पूर्ति देवों ने की थी-अतः उस दोहद पूर्वक इस लड़की का जन्म हुआ-इस कारण राजा ने उसका नाम मल्लि रख दिया। यद्यपि यह स्त्रीरूप में थी-तौ भी " जिनः तीर्थंकर अर्हत " इत्यादि शब्दों की बहुलता से पुल्लिङ्ग में प्रवृत्त देखी जाती है-इसलिये यहां इनका पुल्लिङ्ग शब्द से व्यवहार तीर्थंकर की अपेक्षा किया गया है। (जहा महाबले नाम जाव पडिवड्ढिया " सा बद्धइ भगवती दिय लोय चुता अणोवम सिरीया दासी दास परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं ,,

પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી. એથી જ રાજાએ તે પુત્રીનું નામ મલ્લિ પાડયું હતું

" मालायै हितं तत्र साधुवा माल्यं " આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ માલ્ય શબ્દનો અર્થ કુસુમ (પુષ્પ) થાય છે. જ્યારે મલ્લિ માતાના ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમને માલ્ય ની અભિલાષા રૂપ દોહદ ઉત્પન્ન થયું હતુ તે દોહદની પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી. એથી માલ્યના દોહદથી જન્મેલી તે પુત્રીનું નામ રાજાએ મલ્લિ પાડયું જો કે આ સ્ત્રી રૂપે હતી છતાં એ " जिन तीर्थंकरः अर्हत् વગેરે શબ્દો ના બાહુલ્યથી તે પુલ્લિગથી જ સંબોધિત કરવામાં આવે છે. એટલા માટે અહીં જે પુલ્લિગ શબ્દથી વ્યવહાર કરવામાં આવે છે તે તેમની તીર્થંકરની અપેક્ષાથી જ.

(जहा महाबले नाम जाव पडिवड्ढिया "सा बद्धती भगवती दियलोय चुता अणोवमसिरीया दासीदासपरिवुडा परिकिन्ना पोढमद्देहिं " १ ")

ભગવતી સૂત્રના મહાબલનાં વર્ણનની જેમ જ મલ્લિના વર્ણન વિષેપણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथा भगवती सूत्रे महाबलो वर्णितस्तथेयं मल्ली विज्ञेयेत्यर्थः ।

अथ गाथा द्वयेन मल्लिं वर्णयति–' सा वड्ढइ ' इत्यादि

सा वर्धमाना भवती द्युलोकच्युता अनुपमश्रीका,
दासीदासपरिवृता परिकीर्णा पीठमर्दैः ॥ १ ॥

सा मल्ली वर्धमाना=अनुदिनं वृद्धिं गता, भगवती=ऐश्वर्यादिगुणयुक्ता, द्युलोकच्युता देवलोकादनुत्तरविमानाच्च्युता=अवतीर्णा, अनुपम श्रीका=अद्वितीय शोभायुक्ता, दासीदासपरिवृता, पीठमर्दैः=वयस्यैः परिकीर्णा=परिकरवती बहुसहचरी युक्तेत्यर्थः ।

असितशिरोजा सुनयना बिम्बोष्ठी धवलदन्तपङ्क्तिका ।
बरकमलकोमलाङ्गी फुल्लोत्पलगन्धनिःश्वासा ॥ २ ॥

असित शिरोजा=भ्रमरवदतिश्यामवर्णकेशा, सुनयना = सुलोचना, बिम्बोष्ठी =बिम्बवद्रक्तवर्णोष्ठी, धवलदन्तपङ्क्तिका धवला कुन्दमुक्तादिवच्छुक्लवर्णा दन्त पङ्क्तिर्दन्तश्रेणिका यस्याः सा तथा, बरकमलकोमलाङ्गी=बरकमलवत् – अशुष्क कमलपुष्पवत् कोमलानि मृदुलान्यङ्गानि यस्याः सा तथा, फुल्लोत्पलगन्धनिः श्वासा=विकसितनीलकमलवद्गन्धयुक्तनिःश्वासवती जाता ॥ सू० १२ ॥

जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल का वर्णन किया गया है–उसी प्रकार से इन मल्ली का भी वर्णन जानना चाहिये–सूत्रकार इसी बात का वर्णन " सा वड्ढइ " इस गाथा द्वारा करते है–वे कहते है कि ये मल्लि नाम की कन्या प्रतिदिन वृद्धिंगत हो रही थी । ऐश्वर्य आदि गुणों से युक्त थी । अणुत्तर विमान से चव कर आई थी अनुपम श्री से संपन्न थी । दासी दास परिवृत्त थी और अनेक सहचरियों से युक्त थी ।

उनके बाल भ्रमर के समान अति श्याम वर्ण वाले थे । लोचन बडे सुहावने थे । बिम्ब जैसे लाल वर्ण वाले इनके दोनों ओष्ठ थे । दांतों की पङ्क्ति कुन्द तथा मुक्ता आदि के समान बिलकुल शुभ्र थी । अशुष्क

જાણવું જોઇએ. " सा वड्ढइ" આ ગાથા વડે સૂત્રકાર એજ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે. તેઓ વર્ણન કરતાં કહે છે કે મલ્લિ નામે કન્યા દિવસે દિવસે મોટી થઈ રહી હતી. તે ઐશ્વર્ય વગેરે ગુણોથી પૂર્ણ હતી તે અનુત્તર વિમાનથી ચવીને આવી હતી અને અનુપમ શ્રી સંપન્ન હતી. તે દાસી દાસોથી વીંટળાયેલી તેમજ ઘણી સહચરીઓથી યુક્ત હતી.

તેમના વાળ ભમરા જેવા અત્યંત કાળા હતા. તેમનાં નેત્રો મનોહર હતાં. બંને હોઠ બિંબફળ જેવા લાલ હતા. તેમની દંતપંક્તિ કુંદ તેમજ મોતી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते छप्पिरायाणो विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरइ। तं जहा – पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं, तएणं सा मल्ली कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी – तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तेसिं णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह, जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०१३॥

टीका–'तएणं सा' इत्यादि–ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली मल्लीनाम्नी 'विदेहरायवरकन्ना' विदेहराजवरकन्या=विदेहो मिथिलाजनपदः, तस्य राजा कुम्भकस्तस्य वराकन्या=पुत्री 'उम्मुक्कबालभावा' उन्मुक्तबालभावा, व्यपगतबाल्यावस्था यावत् रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च अतीवातीवोत्कृष्टा उत्कृष्ट-

---

कमल पुष्प के जैसा इनका मृदुल अंग था। विकसित नील कमल के समान गंध युक्त इनका निश्वास था। सूत्र " १२ "

'तएणं सा मल्ली' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह राजकी कन्या वह मल्ली (उम्मुक्कबालभावा) बाल्यावस्था का परित्याग कर (जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा

વગેરે જેવી એકદમ સ્વચ્છ હતી. તાજા કમળ પુષ્પના જેવાં તેમનાં સુકોમળ અંગો હતા. તેમનો નિશ્વાસ પ્રફુલ્લિત નીલકમળ જેવો સુવાસિત હતો. ॥ સૂત્ર " ૧૨

'तएणं सा मल्ली' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) વિદેહ રાજકન્યા મલ્લિ (उम्मुक्कबालभावा) બચપણ વટાવીને (जाव रूवेण जोव्वणेण य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरीरा चापि जाता ऽऽसीदिति सम्बन्धः=। ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्लिर्देशोन वर्षशत जाता देशोनं=किञ्चिदूनं वर्षशतं जातं=भूतं व्यतीतं यस्याः सा तथा, देशोनशतवर्षवयस्का सतीत्यर्थः तान् षडपि प्रतिबुद्धयादीन् राज्ञो विपुलेनावधिना= अवधिज्ञानेन आभोगयन्ती २ पुनः पुनः पश्यन्ती विहरति, तिष्ठति स्म । तद्यथा-प्रतिबुद्धिं यावत् जितशत्रुं पाञ्चालाधिपतिम् । प्रतिबुद्धि नामा इक्ष्वाकुवंश्यो राजाऽयोध्याधिपतिः, चन्द्रच्छायोऽङ्गदेशाधिपतिः, शङ्खनामा काशीजनपदाधिपतिः, रुक्मीनामा कुणालाधिपतिः, अदीनशत्रुनामा कुरुदेशराजः, जितशत्रुः पञ्चाला-

जाया यावि होत्था) यावत् रूप, यौवन एवं लावण्य से अत्यंत उत्कृष्ट शरीर युक्त हो गई । (तएणं सा मल्ली देसूणं वाससय जाया-ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरइ) उस समय उस की अवस्था शत वर्ष से कुछ कमथी । प्रतिबुद्धि आदि अपने साथ के उन ६ राजाओं को ज्योंही उनोंने अपने अवधिज्ञान से जाना तो उने मालूम हो गया कि (पडिबुद्धिं जाव जियसतुं पंचालाहिवइं) अचल का जीव कोशल देश का अधिपति हुआ है-वह इक्ष्वाकुवंशीय है और उसका नाम प्रतिबुद्ध है ।

धरण का जीव चंद्रच्छाय नाम का अंग देशाधिपति हुआ है । अभिचन्द्र का जीव काशी देश का अधिपति हुआ है उसका नाम इस समय शंख है । पूरण का जीव कुणाल देश का अधिपति हुआ है । उसका नाम रुक्मी है । वसुका जीव कुरुदेश का अधिपति हुआ है

लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था) यावत रूप, यौवन अने लावण्यथी એકદમ ઉત્તમ શરીરવાળી થઈ ગઈ.

(तएणं सा मल्ली देसूणं वास समजाया ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणो आभोएमाणी २ विहरइ)

તેમની ઉંમર તે વખતે સો વર્ષ કરતાં ઓછી હતી. પ્રતિબુદ્ધિ વગેરે પોતાની સાથેના તે છ રાજાઓને તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જાણ્યા ત્યારે તેને જાણ થઈ કે (पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं) અચલનો જીવ કોશલનો અધિપતિ થયો છે. તે ઈક્ષ્વાકુવંશીય છે, અને તેનું નામ પ્રતિબુદ્ધ છે.

ધરણનો જીવ અંગ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ ચંદ્રચ્છાય છે અભિચંદ્રનો જીવ કાશી દેશનો અધિપતિ થયો છે અને અત્યારે તેનું નામ શંખ છે. પૂરણ નો જીવ કુણાલ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ રુકમી છે વસુનો જીવ કુરુ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धिपतिः, एतान् षडपि राज्ञः पुनपुनरवधिज्ञानेन विलोकयन्ती तिष्ठतिस्मेत्यर्थः। ज्ञानत्रयसंपन्ना मल्ली भगवती स्वकीयावधिज्ञानोपयोगेनेदं विदितवती–पूर्वभवस्नेहवशात्ते षडपि राजानो मां परिणेतुमागमिष्यन्तीति तेषां प्रतिबोधार्थमुपायो मया विधेय इति भावयति स्मेति भावः। ततस्तदनन्तरं सा मल्ली कौटुम्बिक पुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एवं= वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत्–हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु अशोकवनिकायामेकं महत्=बृहत् मोहनगृहं=संमोहजनकं गृहं 'करेह' कुरुत=निर्मात, कीदृशं तदित्याह 'अणेगखंभसयसन्निविट्ठं' अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम् अनेकानि स्तम्भशतानि सन्निविष्टानि संलग्नानि यस्मिन् तत् तथाविधम्। तस्य खलु मोहनगृहस्य बहुम-

---

उसका नाम अदीन शत्रु है। वैश्रवण का जीव पांचालाधिपति हुआ है। उसका नाम जितशत्रु है (तएणं सा मल्ली कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) इस प्रकार अपने पूर्वभव के साथियों की परिस्थिति को ज्ञात कर उस मल्ली भगवती ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया– (सद्दावित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा– (तुब्भे णं देवाणुप्पिया! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह–अणेगखंभसयसन्निविट्ठं) हे देवानुप्रियों! तुम अशोकवनिका में सैकडों खंभों से युक्त एक विशाल संमोहन गृह बनाओ। इस घर को बनाने को आदेश उन मल्ली भगवती इसलिये दिया था कि उन्हों ने अपने अवधिज्ञान से यह जान लिया था कि वे छहों राजा पूर्वभव के स्नेह से मुझ से विवाह करने के लिये यहां आवेंगे-अतः मुझे उन्हें प्रतिबोधित करने के लिये उपाय करना चाहिये।

નામ અદીનશત્રુ છે. વૈશ્રવણ નો જીવ પંચાલ દેશનો અધિપતિ થયો તે અને તેનું નામ જિતશત્રુ છે. (तएणं सा मल्ली कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) આ રીતે પોતાના પૂર્વભવના મિત્રોની પરિસ્થિતિ જાણીને મલ્લી ભગવતીએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. "सद्दावित्ता एवं वयासी" અને બોલાવીને તેમને કહ્યું.

(तुब्भेणं देवाणुप्पिया! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह–अणेगखंभ सयसन्निविट्ठं)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે અશોક વનિકામાં સેંકડો થાંભલાઓ વાળું એક મોટું સંમોહન ઘર બનાવો. મલ્લી ભગવતીએ સંમોહન ઘર એટલા માટે બનાવડાવ્યું હતું કે પોતાના અવધિજ્ઞાન થી તેમણે એ વાત જાણી લીધી હતી કે તેઓ છએ રાજા પૂર્વ ભવના પ્રેમને લીધે તેમની સાથે લગ્ન કરવા અહીં આવશે એથી તેમને પ્રતિબોધિત કરવાના ઉપાયો તેમણે મલ્લીને કરવા જ જોઇએ કૌટુંબિક પુરુષોને તેમણે આગળ કહ્યું–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यदेशभागे=सर्वथा मध्यस्थानभागे षट्-' गब्भघरए ' गर्भगृहान् अन्तर्गृहान् कुरुत । वास भवनानि तेषां च गर्भगृहाणां बहुमध्यदेशभागे जालगृहं अत्र गृहान्तर्गतं वस्तु बहिः स्थिताः पश्यन्ति, तदर्थं कुड्येषु दार्वादिनिर्मितजालकानि वर्तन्ते तद् जालगृहं कुरुत तस्य खलु जालगृहस्य बहुमध्यदेशभागे मणिपीठिकां मणिमयपीठिकां, कुरुत, कृत्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति मल्लीभगवत्या आदेशात् कोटुम्बिकपुरुषा मोहनगृहं तत्र मध्यभागे षट्संख्यकं गर्भगृहं तन्मध्ये मणिमय-

(तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह) उस संमोहन गृह के ठीक मध्यभाग में छ गर्भगृहों को बनाओ (तो सेणं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह, जाव पच्चप्पिणंति) उन गर्भ गृहों के मध्यभाग में जालघर को बनाओ। जालियों में से जिस घर की वस्तु को बाहिर रहे हुए मनुष्य देख लेते हैं। वह जाल घर कहलाते है। ये जालियां भीतों में काष्ठ आदि की बनाकर लगाई जाती है। जिस प्रकार मकानों में हवा तथा प्रकाश आने के लिये खिड़कियों हुआ करती है-उसी प्रकार से ये जालियां भी लगाई जाती हैं। और उस जाल गृह के ठीक बीच के स्थान में मणिनिर्मित पीठिका को बनाओ। बनाकर पीछे इसकी हमें सूचना दो। इस प्रकार मल्ली भगवती के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने १ मोहन गृह, उसके बीच में छ गर्भ गृह उनके बीच में १ जाल गृह और उस के बीच में मणि-

"तस्सणं मोहणगरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह" સંમોહન ઘરનો અધવચ્ચે છ ગર્ભગૃહો બનાવો.

(तीसेणं गब्भघरगाणं बहुमज्झ देसभाए जाव घर यं करेह तस्स णं जाल घरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेइ जाव पच्चप्पिणंति)

ગર્ભગૃહોના મધ્ય ભાગમાં જાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અંદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની જાળીઓથી જોઈ લે છે, તે ઘરને જાળઘર કહે છે. જાળીઓ ભીતોમાં લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામાં આવે છે. ઘરોમાં પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ જાળીઓ પણ મૂકવામાં આવે છે) આ જાળ ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો.

આબધું તૈયાર થઈ જાય ત્યારે મને સૂચિત કરો. આરીતે મલ્લી ભગવતીની આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષોએ એક સંમોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક જાળગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीठिकां च कृत्वा मल्लीभगवत्याः समीपमागत्यावेदयन्ति स्म. भवदीयादेशमनुसृत्य सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः ॥ सू. १३ ॥

मूलम्–तएणं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नजोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ, करित्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी २ विहरइ। तएणं तीसे कणगमईए जाव मच्छयछिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडेपक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ, से जहानामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए॥सू०१४॥

टीका–'तएणं मल्ली' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली=मल्लीकुमारी मणिपीठिकाया उपरि आत्मनः सदृशीं सदृशत्वं च सदृशवयस्कां स्वशरीरसदृशप्रमाणां सदृशलावण्ययौवनगुणोपपेतां स्वसदृशलावण्यादिगुणैः सहितां, कनकमयीं सुवर्णनि-

मध पीठिका बनाई–और बनाकर फिर वे मल्ली भगवती के पास आये–आकर कहने लगे–आपके आदेशानुसार हमने सब बनाकर यथावत् तैयार कर दिया है। सूत्र " १३ "

'तएणं मल्ली मणिपेढियाए' इत्यादि०।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (मल्ली) मल्ली कुमारीने (मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्न जोव्वण गुणो

બનાવી અને બનાવીને તેઓ મલ્લી ભગવતીની સામે આવ્યા અને આવીને કહેવા લાગ્યા-" હે દેવાનુપ્રિયે હમારી આજ્ઞા પ્રમાણે અમે યથાવત બધું તૈયાર કરાવી દીધું છે. " ॥ સૂત્ર " ૧૩ ,, ॥

'तएणं मल्ली मणिपेढियाए' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યાર બાદ (मल्ली) મલ્લી કુમારીએ.

(मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस लावन्न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्मितां 'मत्थयच्छिद्दं' मस्तकच्छिद्रां मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां 'पउमुप्पलप्पिहाणं पद्मोत्पलपिधानां=रक्तनीलकमलानि पिधानानि मस्तकच्छिद्रस्याच्छादनानि यस्या स्तां प्रतिमां = स्वतुल्यकृतिकपुत्तलिकां कारयति = शिल्पकारैर्निर्मापयति । कारयित्वा सा मल्ली कुमारी यद् ' विउलं ' विपुलं=बहुलम् , अशनपानखाद्य स्वाद्यं= चतुर्विधमाहारम् आहारयति=भुङ्क्ते, ततः तस्मात्-' मणुन्नाओ ' मनोज्ञाम् प्रियरसयुक्तात् अशनपानखाद्यस्वाद्यात् चतुर्विधाहारमध्यात् 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्यि-दिने दिने, एकमेकं पिण्डं=ग्रासं गृहीत्वा, तस्याः कनकमय्याः मस्तकच्छिद्रायाः यावत् प्रतिमाया मस्तके=मस्तकोपरिभागवर्तिनि रन्ध्रे प्रक्षिपन्ती=एकमेकं ग्रासं निपातयन्ती ' विहरइ ' विहरति=आस्ते स्म । ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां कनक-

---

ववेयं कणगमइं मत्थयच्छिद्दं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ) उस माणिपीठिका के ऊपर अपनी जैसी-अपनी जैसी वयवाली अपने शरीर के सदृश प्रमाणवाली, अपने जैसे लावण्य आदि गुणों वाली एक सुवर्ण निर्मित पुत्तलिका शिल्पियों से बनवाई । उसके मस्तक में एक बड़ा सा छेद रखवाया । वह छेद रक्त नील कमल रूप ढक्कन से ढका हुआ था । (करित्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एग द्वारेणं पिउगहाय....विहरइ) जब इस प्रकार की पुत्तलिका बनकर तैयार हो चुकी-तब उस मल्ली कुमारी ने विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया और स्वयं खाया-बाद में उस प्रियरसयुक्त आहार में से प्रतिदिन वह एक एक ग्रास को लेकर उस मस्तक छिद्र वाली सुवर्ण की पुत्तलिका के उस मस्तकोपरिभागवर्ती छेद में डालने लगी-(तएणं

जोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिद्दं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ)

તે મણિ પીઠિકા ઉપર શિલ્પ શાસ્ત્રીઓ પાસેથી પોતાના જેવી. પોતાના જેવા આયુષ્યની, પોતાના શરીર જેવા પ્રમાણની પોતાના જેવા લાવણ્ય વગેરે ગુણોવાળી એક સોનાની પૂતળી બનાવડાવી. તેના માથામાં એક મોટું કાણું રખાવ્યું. તે કાણું રક્તનીલ કમળના ઢાંકણાથી ઢાંકેલું હતું.

(करित्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगद्वारेणं पिउगहाय....विहरइ)

જ્યારે આરીતે સોનાની પૂતળી તૈયાર થઇ ગઇ ત્યારે મલ્લી કુમારીએ અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો પુષ્કળ પ્રમાણમાં આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો, અને હંમેશા તે આહારમાંથી પોતે જમતી, અને ત્યાર બાદ તેમાંથી એક કોળીઓ લઇને કાણાવાળી સોનાની પૂતળીના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मध्यां यावत् मस्तकच्छिद्रायां प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशात् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' प्रादुर्भवति=बहिर्निस्सरति स्म । सदृष्टान्तं पुत्तलिकां वर्णयति–तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्–' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्–अत्र यावच्छब्देन–' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूषकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिद्दाए पडिमाए एगमेगंसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका में मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) वह दुर्गंध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड़ जाने की होती है । यहां यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का संग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ इस प्रकार है–वह दुर्गंध गाय के मरे हुए सडे कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सडे कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सडे कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए घोडे के सडे कलेवर की

માથાના કાણામાં નાખતી. (तएणं तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्दाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ) આરીતે સોનાની પૂતળીમાં દરેક એક એક કોળીયો નાખવાથી તેમાંથી દુર્ગંધ નીકળવા લાગી. (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) મરેલા અને સડેલા સાપના જેવી તે દુર્ગંધ હતી. અહીં યાવત શબ્દથી ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' વગેરેનો સંગ્રહ થયો છે. આનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે મરીને સડી ગયેલા ગાયના શરીરના જેવી મરીને સડવા માંડેલા કૂતરાના શરીરના જેવી મરીને સડવા માંડેલા બિલાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતાં માણસના શરીરના જેવી, મરીને સડતાં પાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતાં ઉંદરના શરીરના જેવી, મરીને સડતાં ઘોડાના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા હાથીના શરીરના જેવી,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति वा, वृकमृतक इति वा, द्वीपिमृतक इति वा, इतिच्छाया, एषां मृतसर्पादि कलेवराणां दुर्गन्धः खलु यादृशोऽनिष्टः प्रादुर्भवति 'एत्तो' एतस्माद् 'अणिट्ठतराए' अनिष्टतरः अधिकस्तीव्रः, अतएव 'अमणामतराए' अमनआमतरः= मनसोऽति प्रतिकूलो दुर्गन्धस्तस्याः पुत्तलिकाया अभवदित्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसलणामं जणवए, तत्थ णं सागेए नामं नयरे, तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे, तत्थ णं नयरे पडिबुद्धिनामं इक्खागुराया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंडभेयकुसले, तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था । तएणं सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी –एवं खलु सामी ! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सइ, तं

होती है, मरे हुए हाथी के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए सिंह के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए व्याघ्र के सडे कलेवर की होती है वृक और द्वीपि के सडे कलेवर की होती है। इन मृत सर्पादिकों के सडे हुए कलेवरों की दुर्गंध जिस प्रकार अनिष्ट होती है उसी प्रकार इससे भी अनिष्टतर वह पुत्तलिका से निकलती हुई दुर्गंध थी–अमन आमतर थी मन को जरा सी भी रुचे ऐसी नहीं थी–किन्तु मन के अतिसर्वथा प्रतिकूल थी। सूत्र " १४ "

મરીને સડી ગયેલા સિંહના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા વાઘના શરીરના જેવી મરીને સડી ગયેલા વરુ અને દીપડા (દ્વીપિ)ના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના શરીરના જેવી અનિષ્ટકારી દુર્ગંધ હોય છે તેવી જ અને તેઓના કરતાં પણ વધારે અનિષ્ટતર પૂતળીમાંથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી. મનને એકદમ અણગમો થાય તેવી સર્વથા પ્રતિકૂળ તેમાંથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી. ॥ સૂત્ર " ૧૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए, तुब्भेवि णं सामी ! मम नागजन्नयंसि समोसरहा तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ। तएणं पउमावई पडिबुद्धिणा रन्नो अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सइ तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वदह एवं खलु पउमावइए देवीए कल्लं नागजण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय० दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह । तएणं जलथलय दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणाविह भत्तिसुविरइयं हंसमियमउरकोंच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामियजावभत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएह तस्सणं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामंगडं जाव गंधध्धुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह, ओलंबित्ता पउमावइं देविं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह। तएणं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति ॥ सू० १५ ॥

टीका–'तेणं कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समयेकोसलानाम जनपदः देश आसीत्, तत्र खलु साकेतनामकं नगरमासीत् । तस्य साकेत

'तेणं काले णं तेणं समएणं' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेणं काले णं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (कोसला नाम जणवए) कोशल नामका जन पद–देश था ।

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते કાળે અને તે વખતે (कोसल नाम जणवए) કોશલ નામે જનપદ (દેશ) હતો. (तत्थणं साकेए नामं नयरे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगरस्य खलु उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु महदेकं नागगृहमासीत् तत् कीदृशमित्याह-दिव्यं=प्रधानं, सत्यं कामनापूरकत्वात् ' सच्चोवाए ' सत्यावपातं =सत्याभिलाषं, ' संनिहियपाडिहेरे ' संनिहितप्रातिहार्यं=संनिहितं विनिवेशितं प्रातिहार्यं प्रतीहारकर्म व्यन्तरदेवेन यस्मिन् तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः । तत्र खलु नगरे=साकेतनगरे प्रतिबुद्धिनामा इक्ष्वाकुराजः=इक्ष्वाकुवंशीयो राजा परिवसति । पद्मावती देवी तस्य भार्याऽऽसीत् । ' सुबुद्धिः अमच्चे ' सुबुद्धिनामकस्तस्यामात्यः=मंत्री, स कथंभूत इत्याह-' सामदंडभेयकुसले ' सामदण्डभेदकुशलः

(तत्थणं सागेए नामं नयरे) उस में साकेत नाम का नगर था । (तस्स णं उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए-एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संति हियपाडिहेरे) उस के ईशान कोंण में विशाल नागघर था ।

यह दिव्य और प्रत्येक व्यक्ति की कामना का पूरक होने से सत्य था । जो भी कोई कामना-अभिलाषा-इसके समक्ष करता वह उस की सफल हो जाती-सत्य हो जाती-इसलिये यह सत्याभिलाष था । इसके द्वार पर व्यन्तर देव प्रतिहार के रूप में खडे रहते थे इसलिये यह संनिहित प्रतिहार्य था । (तत्थ णं नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागु राया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंडभेयकुसले) उस साकेत (अयोध्या) नगर में इक्ष्वाकुवंश से उत्पन्न प्रतिबुद्ध नाम का राजा रहता था । इस की भार्या का नाम पद्मावती था । अमात्य का नाम सुबुद्धि था।

તેમાં સાકેત નામે નગર હતું.

(तस्सणं उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए-एत्थणं महं एगे णागघरए होत्था) दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संतिहिय पडिहेरे)

તેના ઈશાન કોણમાં એક મોટુ નાગઘર હતું.

તે દિવ્ય અને દરેકે દરેક માણસની ઈચ્છાને પૂરી કરનાર હોવાથી સત્ય હતું. ગમે તે વ્યક્તિ પોતાની ઈચ્છા-કામના-તેની સામે પ્રકટ કરતો, તેની ઈચ્છા તે ચોક્કસ પૂરી પાડતું હતું. તેની કામના સફળ તેમજ સત્ય થતી હતી. એથી જ તે સત્યાભિલાષ હતું. વ્યંતર દેવો તેના દ્વારે પ્રતિહારના રૂપમાં ઊભા રહેતા હતા એથીજ તે સંનિહિત પ્રતિહાર્ય હતું.

(तत्थणं नयरे पडिबुद्धीनामं इक्खागुराया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंडभेयकुसले)

સાકેત નગરમાં ઈક્ષ્વાકુવંશમાં જન્મેલો પ્રતિબુદ્ધ નામે રાજા રહેતો હતો. તેની ભાર્યાનું નામ પદ્માવતી હતું. તેના અમાત્ય (મંત્રી) નું નામ સુબુદ્ધિ હતું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साम=सान्त्वनप्रयोगः, दण्डः=युद्धं, भेदः=शत्रुपक्षे मन्त्रिसैनिकादिभिर्विरोधोत्पादनम्, तेषु कुशलः=निपुणः। ततस्तदनन्तरं खलु पद्मावत्यादेव्या अन्यदा कदाचित् नागयज्ञकश्चाप्यासीत्=नागमहोत्सव दिवसः समायात इत्यर्थः। ततस्तदा खलु सा पद्मावती देवी नागयज्ञं नागमहोत्सवदिवसम्, उपस्थितं=समायातं ज्ञात्वा यत्रैव प्रतिबुद्धिर्नामेक्ष्वाकुराजस्तत्रैवोपागच्छति। उपागत्य करतल परिगृहीतं शिरआवर्त्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे स्वामिन्। एवं खलु मम कल्ये आगामिदिवसे नागयज्ञश्चापि भविष्यति, तद्=तस्मात् इच्छामि

यह अमात्य साम, दण्ड, और भेद नीति में कुशल था। शत्रु को शांति से वश करना यह साम नीति है, युद्ध से वश करना-उसे परास्त कर अपने आधिन बनाना-यह दण्ड निति है-शत्रु की सेना में मंत्री तथा सैनिकों में विरोध उत्पन्न कराना इस का नाम भेद है। (तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था) एक समय की बात है कि पद्मावती देवी के यहां नागयज्ञ के महोत्सव का दिन आया। (तएणं सा पउमावई नागजन्न मुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी-तेणेव उवागच्छइ)अतःवह पद्मावती देवी नाग यज्ञ-नागमहोत्सव-का दिन आया हुआ जान कर जहाँ अपने पति प्रतिबुद्धि राजा थे वहां गई। (उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी) वहां जाकर उस ने राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-बाद में वह इस प्रकार कहने लगी- (एवं खलु सामी मम कल्लं नाग जन्नए

તે અમાત્ય સામ દંડ તેમજ ભેદ નીતિમાં કુશળ હતો. શત્રુને શાંતિથી વશકરવો તે સામનીતિ છે. યુદ્ધ લડીને વશ કરવો, તેને હરાવવો અને પોતાને અધીન કરવો તે દંડનીતિ તે. શત્રુની સેનામાં મંત્રી તેમજ સૈનિકોમાં વિરોધ ઉત્પન્ન કરવો તે ભેદ નીતિ છે. (तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था) એક સમયની વાત છે કે પદ્માવતી દેવીને ત્યાં નાગયજ્ઞ નો મહોત્સવ દિવસ આવ્યો. (तएणं सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि तेणेव उवागच्छइ) નાગ મહોત્સવ ના દિવસની જાણ થતાં પદ્માવતી દેવી પ્રતિબુદ્ધ રાજાની પાસે ગઇ. (उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी) ત્યાં જઈને તેણે બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી કહ્યું

(एवं खलु सामी मम कल्लं नाग जन्नए यावि भविस्सइ तं इच्छामि णं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु स्वामिन्! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञकं गन्तुं नागमहोत्सवं कर्तुं=नागगृहं गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण समन्वयः। हे स्वामिन्! यूयमपि खलु मम नागयज्ञे=नागपूजायां समवसरत=आगच्छत यतु 'मया सार्धं समागच्छत इत्यर्थः' इति व्याख्यातं तत् प्रमादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चाद् गमनपरं शास्त्रं विरुध्येत। ततस्तदनन्तरं खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको नृपः पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूपं प्रतिशृणोति=स्वीकरोतिस्म. । ततः खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता हृष्टा तुष्टा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्– हे देवानुप्रियाः! एवं खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

---

यावि भविस्सइ, तं इच्छामिणं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नए यं गमित्तए) स्वामीन्! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल नाग महोत्सव मनाऊँगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ। हे स्वभिन्! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें।

(तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ) पद्मावती देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएणं पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुई। यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! मम, कल्लं नागजण्णए भविस्सइ,

---

सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नएयं गमित्तए)

હે સ્વામિન્ આવતી કાલે મારે ત્યાં નાગ મહોત્સવ થશે. હું આવતી કાલે મહોત્સવ ઉજવવાની છું. એથી નાગ મહોત્સવ ઉજવવાની તમારી પાસેથી આજ્ઞા મેળવવા આવી છું. તમારી આજ્ઞા થાય તો હું આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ માણવા નાગઘર જાઉં. હે સ્વામિ! ઉત્સવમાં પધારવા તમને પણ હું આમંત્રણ આપું છું.

(तएणं पडिबुद्धि पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ) પદ્માવતી નું કથન સાંભળીને પ્રતિબુદ્ધ રાજાએ તેની વિનંતી સ્વીકારી લીધી. "तएणं पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ" પ્રતિબુદ્ધિ રાજા વડે આજ્ઞાંકિત થયેલી રાણી પદ્માવતી દેવી ખૂબજ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઇ. યાવત તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तद्=तस्मात् यूयं मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एवं वदत-एवं खलु पद्मावत्या देव्याः कल्ये=प्रभाते नागयज्ञकः=नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूयं खलु हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूतं जलोत्पन्नं विकसितं प्रचुरदशार्ध वर्णं=पञ्चवर्णमाल्यं कुसुमजातं माल्यं च नागगृहे संहरत=समानयत.एकंच खलु महत् श्रीदामकाण्डमुपनयत. समानयत । ततः खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन माल्येन-'णाणाविहभत्तिसु-विरइयं नानाविध भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना सुशोभितं,पुष्पमण्डपं विरचयति सम्बन्धः, पुनः कथंभूतं तदित्याह-'हंसमियमउरकोंच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ' हंसमृगमयूरक्रोञ्चसारसचक्रवाक मदन शालकोकिल कुलोपपेतम्-हंसादि कोकिलान्ताः प्राग्व्याख्याताः, तेषां कुलैः समूहैश्चित्ररूपैरुपपेतं युक्तं, 'ईहामियजावभत्तिचित्तं ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वदह एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा देवानुप्रियों ! मेरे यहां कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग मालियों को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के कल नाग यज्ञ होगा । (तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल में उत्पन्न हुए विकसित पंचवर्णों के पुष्पों को नागघर पर पहुँचाओ और साथ में एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएणं जलथल० दसद्धवन्ने णं मल्लेणं णाणाविह भत्तिसु विरइयं हँस मिय मउर कोंच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं

" सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मम कल्लं नाग जण्णए भविस्सइ. तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह सद्दावित्ता एवं वदह एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजण्णए भविस्सइ "

બોલાવીને તેમને કહ્યું- " દેવાનુપ્રિયો ! મારે ત્યાં આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ થશે. માટે તમે માળીઓને બોલાવો અને બોલાવીને તેમને એ પ્રમાણે કહો કે કાલે પદ્માવતી દેવીને ત્યાં નાગ મહોત્સવ થશે. (तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! जल थलय. दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બધા જળ થળમા ઉત્પન્ન થયેલાં પાંચ રંગોના પુષ્પોને અને શ્રીદામકાંડને નાગઘરોમાં પહોંચાડો.

" तएणं जल थल० दसद्धवन्ने णं मल्लेणं णाणाविह भत्तिसु विरइयं हँस मियमउर कोंच सारस चक्कवायमयणसाल कोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव भत्ति चित्तं महत्थं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएइ)

ज्ञा १४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्र यावच्छब्देन – ' ईहामृगेत्यनन्तरं – वृषभतुरगमकरविहगव्यालकिन्नररुरु शरभकुञ्जरवनलतापद्मलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईहामृगो वृकः, रुरुशरभौ मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्–आश्चर्य जनकम् , ' महग्घं ' महार्घ–महामूल्यकं ' महरिहं ' महार्ह=महतां योग्यं, विपुलं विस्तीर्णम् , ईदृशं पुष्पमण्डपं विरचयत कुरुतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु बहुमध्यदेशभागे–सर्वथा मध्यभागे एकं महत् श्रीदामकाण्डं यावत् पाटलादिपुष्प समूहसहितगन्धद्रव्याणि गन्धवर्तिं मुञ्चत्–प्रददत् ' उल्लोयंसि ' उल्लोचे=चन्द्रातपे वस्त्रनिर्मितगृहाभ्यन्तरिकावरणे–' ओलंबेह ' अवलम्बयतः, ओलंबित्ता अव-

महग्घं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएह) इस के अनन्तर वे सब जल थल के विकसित पंचवर्णों के पुष्पों से और अनेक प्रकार के चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मंडप बनावे, इस मंडप को वे हंस मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग–वृक, वृषभ, तुरग, मकर, विहग, व्यालक–सर्प, किन्नर, एए, शरभ, कुंजर–वनलता और पद्मलता इन के चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावें ।

वह पुष्प मंडप कीमती महारुषों के योग्य, एवं विस्तीर्ण हो ऐसा बनावें । (तस्सणं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोलयंसिओलंबेह, ओलंबित्ता पउमावइं देवीं पडिवाले माणा २ चिट्ठह, तएणं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति) और उस के ठीक मध्य भाग में तने हुए चंदोवा के नीचे एक बड़ा भारी श्रीदाम

અને ત્યાર બાદ જળથળ ના વિકાસ થયેલા પંચવર્ણોના પુષ્પોથી તેમજ જાત જાતના ચિત્રોની રચનાથી શોભતો એક પુષ્પોનો માંડવો બનાવે. હંસ, મૃગ, મોર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક મદનશાલ અને કોકાલ આબધાં પશુ પંખીઓ નાં ચિત્રો થી માંડવાને શણગારે તથા ઇહામૃગ, વરુ, બળદ, ઘોડો, મગર, પક્ષી વ્યાલક, (સર્પ), કિન્નર, રુરુ, શરભ, હાથી, વનલતા, અને પદ્મલતાના સુંદર ચિત્રોથી માંડવાને અદ્ભુત રીતે સુશોભિત કરો.

પુષ્પમંડપ કિંમતી તેમજ મહાપુરુષોને યોગ્ય વિશાળ હોવો જોઇએ.

(तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोलयंसि ओलंबेह, ओलंबित्ता पउमावइं देवीं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, तएणं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति)

અને તાણેલા ચંદરવાની નીચે ઠીક મધ્યભાગમાં નાકને પોતાની સુવાસ થી નૃત્ય કરાવનાર એક, બહુ મોટો શ્રીદામકાંડ લટકાવો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लम्ब्य पद्मावतीं देवीं 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकाः कौटुम्बिकपुरुषाः यावत्-यथापद्मावत्यासमादिष्टं तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्म॥सू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी कल्लं० कोडुंबिए एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सब्भिंतर बाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कोडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएणं तेऽवि तहेव उवट्ठावेंति। तएणं सा पउमावई देवी अंतो अंते उरंसि पहाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा, तएणं सा पउमावई देवी नियगपरिवाल संपरि-वुडा सागेयं नगरंमज्झंमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्ख-रणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडिया जाइं

काण्ड-पुष्पों का गजरा-कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गंध निकल रही हो को लटकावें। लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहां प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें। इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियों को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मंडप की रचना करने को कहा-उन्हों ने सब कार्य व्यवस्थित ढंग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहां ठहरे रहे। सूत्र "१५"

લટકાવીને મારી-પદ્માવતી દેવીની બધા ત્યાં પ્રતીક્ષા કરતા રોકાય. આ પ્રમાણે પદ્માવતી દેવીએ કૌટુંબિક પુરુષોને નાગમહોત્સવ વિષે સૂચનો આપ્યાં પદ્મમાવતી દેવીના આદેશ મુજબ કૌટુંબિક પુરુષોએ માળીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને યથાયોગ્ય પુષ્પમંડપ બનાવવાની આજ્ઞા આપી. આ પ્રમાણે બધું કામ વ્યવસ્થિત રીતે પતાવીને પદ્માવતી દેવીની રાહ જોતા તેઓ ત્યાં રોકાયા. ॥ સૂત્ર "૧૫" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं, पउमावईए देवीए बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति । तएणं पउमावई सव्विड्ढीए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरयं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता लोमहत्थगं जाव धूवं डहइ, डहित्ता पंडिबुद्धिं पडिवालेमाणी पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥ सू० १६ ॥

टीकाः—' तएणं सा ' इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु सा पद्मावती देवी कल्ये द्वितीयदिवसे प्रभाते कौटुम्बिकान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादित्-भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, साकेतं नगरं ' सब्भिंतर बाहिरियं' साभ्यन्तरबाह्यं=अभ्यन्तरेण-मध्यभागेन सह बाह्यं बहिर्भागं यत्र तत्-' आसित्तसम्मज्जिओवलित्तं ' आसिक्तं संमार्जितोपलिप्तं=आसिक्तं=सुगन्धितजलैरार्द्रीकृतं संमार्जितं=मार्जन्यादिभिः कचवरापसारणेन निर्मलीकृतं पश्चादुपलिप्तं

' तएणं सा पउमावई देवी इत्यादि ' ।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (सा पउमावईदेवी) उस पद्मावतीदेवीने (कल्लं कोडुंबिए एवं वयासी) दूसरे दिन प्रातःकाल उन कौटुम्बिक पुरुषों से ऐसा कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! साकेयं नगरं सब्भिंतर बाहिरियं आसित्त सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति) भो देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र ही साकेत नगर को भीतर बाहिर सुगंधित जल से सींचो, बुहारू लेकर उसे कूडा कर कट कचरा हटाकर बिलकुल साफ करो, गोबर आदिसे उसे लीपो इस प्रकार पद्मावतीदेवी

'तएणं सा पउमावईदेवी ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ(तएणं) ત્યાર બાદ (सा पउमावई देवी) પદ્માવતી દેવીએ (कल्लं कोडुंबिए एवं वयासी) બીજે દિવસે સવારે કૌટુંબિક પુરુષોને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! साकेयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે સાકેત નગરની બહાર અને અંદર સુવાસિત પાણી છાંટો સાવણીથી કચરો એકદમ સાફ કરો અને છાણ વગેરેથી લીંપો પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષોએ તે પ્રમાણે જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोमयादिनाऽनुलिप्तं कुरुत यावत् प्रत्यर्पयन्ति-यथा-पद्मावती देव्या आदिष्टं तथा कृत्वा ते कौटुम्बिका हे स्वामिन्यः सर्वं साधितमस्माभिरिति-तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति-आवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं सा पद्मावती देवी 'दोच्चंपि' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव लहुकरणजुत्त० ' लघुकरणयुक्त० यावद् युक्तमेव नृपभैर्युक्तं कृत्वा रथमुपस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषाश्रपि यथा पद्मावत्या समादिष्टं तथैव रथमुपस्थापयन्ति । ततः खलु सा पद्मावती देवी अन्तोऽन्तःपुरे=अन्तःपुरस्य मध्ये स्नाता यावद् सर्वालंकार विभूषिता धार्मिकं यानं=रथं दूरूढा=आरो-

के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने वैसा ही सब कुछ कार्य यथावत् कर दिया और पीछे पद्मावती के पास जाकर कहा-स्वामिनी ! आपने जैसा काम करने को कहा था हम ने वह काम वैसा ही कर दिया है । (तएणं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कौडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरण जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएणं ते वि तहेव उवट्ठावेंति) इसके बाद पद्मावती देवीने दुबारा भी उन कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया और बुलाकर कहा-भो देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र ही जल्दी २ चाल से चलने वाले बैलों को जोत कर यहां एक रथ को उपस्थित करो । पद्मावती की इस आज्ञा को पाकर वे कौटुम्बिक पुरुष भी पद्मावती के आदेशानुसार रथ को बैलों से युक्त कर ले आये । (तएणं सा पउमावई देवी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा) रथ जब आ चुका-तब पद्मावती देवी ने अन्तः पुर के भीतर ही स्नान किया यावत् समस्त अलंकारों से आपने आप को विभूषित कर फिर वह

કર્યું અને ત્યાર બાદ તેમની પાસે આવીને કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિનિ ! તમે જે કામ કરવાની અમને આજ્ઞા આપી હતી તે કામ અમે એ સરસ રીતે પૂર્ણ કરી દીધું છે.

तएणं सा पउमावईदेवी दोच्चंपि कोडुंबिय खिप्पामेव लहुकरण जुत्ता० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह तएणं तेवि तहेव उवट्ठावेंति)

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવીએ બીજી વાર કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને કહ્યું "હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે શીઘ્રગતિ વાળો બળદ જોતરીને એક રથ લાવો. પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞાનુસાર આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષો પણ તેમની આજ્ઞા મુજબ રથમાં બળદ જોતરીને લઈ આવ્યા. (तएणं सा पउमावई देवी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा) જ્યારે રથ સજ્જ થઈને આવી ગયો ત્યારે પદ્માવતી દેવીએ રણવાસની અંદર જ સ્નાન કર્યું યાવત્ સર્વ પ્રકારના ઘરેણાંઓથી પોતાના શરીરને શણગાર્યું અને ત્યાર પછી તે ધાર્મિક રથમાં બેસી ગઈ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हतिस्म । ततः खलु सा पद्मावती देवी निजकपरिवारसंपरिवृता संख्यादिपरिवारेण युक्ता साकेतनगरं मध्यमध्येन निर्यांति=निर्गच्छति । निर्याय=निर्गत्य यत्रैव पुष्करणी कमलयुक्ता वापी वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुष्करणीमवगाहते=प्रविशति । अवगाह्य जलमज्जनं यावत्–स्नानं कृत्वा परमशुचिभूता 'उल्लपडसाडिया' आर्द्रपटशाटिका, सार्द्रपरिधानीयवस्त्रा यानि तस्यां पुष्करिण्यामुत्पलानि यावत्पद्मादीनि तानि गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव नागगृहं वर्तते तत्रैव प्रधारयति प्रवर्तते गमनाय । ततस्तदनन्तरं खलु पद्मावत्या दासचेटयो बहव्यः पुष्पपटलकहस्तगताः=हस्तपरिधृतपुष्पकरण्डकाः धूपकडुच्छुकहस्तगताः=धूपाधारपात्राणि

उस धार्मिक यान पर रथ पर आरूढ हो गई । (तएणं सा पउमावई देवी नियगपरिवाल संपरिवुडा साकेयं नयरं मज्झं मज्झेणं णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद पद्मावती देवी अपने परिवार से घिरी हुई होकर उस साकेत नगर के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर निकली-निकल कर वह जहां कमलों से युक्त वापी थी–वहां पर आई–(उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ) आकर उस ने उस पुष्करिणी में प्रवेश किया – (ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसुइभूया उल्ल पउ साडिया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हइ) प्रवेश कर जल स्नान किया यावत् परम शुची भूत बनी हुई उस ने गीली साड़ी पहिने ही पुष्करिणी से कमल चुन लिये (गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) चुन कर फिर वह जहां नाग घर था उस ओर चल दी–(तएणं पउमावईए दासचेडीओ बहूओ

(तएणं सा पउमावईदेवीनियग परिवालसंपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झ मज्झेणं णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવી પોતાના સંપૂર્ણ પરિવારની સાથે સાકેત નગરીની બરા બર મધ્યમાર્ગમાં થઇને પસાર થઇ અને જ્યાં કમળો યુક્ત વાવ હતી ત્યાં પહોંચી (उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ) ત્યાં પહોંચીને તે પુષ્કરિણી (કમળવાવ) માં ઉતરી.

ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसुइभूया उल्ल पउसाडिया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हइ)

ઉતરીને તેણે પાણીમાં સ્નાન કર્યું યાવત તે પરમ પવિત્ર થઇને તેણે ભીનાં લુગડાંથીજ પુષ્કરિણીમાંથી કમળો ચૂંટ્યાં. (गोण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ચૂંટ્યા બાદ પદ્માવતી દેવી જ્યાં નાગઘર હતું તે તરફ ગઈ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस्ते धृतवत्यः पृष्ठतः समनुगच्छन्ति । ततः खलु सा पद्मावती देवी सर्वद्धर्या= सखिदास्यादिपरिजनैः सह यत्रैव नागगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य नागगृह-मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य रोमहस्तकं=मयूरपिच्छनिर्मितमार्जनीं गृहीत्वा नागगृहं संमार्ज्य यावद् धूपं दहति, नागगृहाभ्यन्तरे समन्तात् धूपं दहति स्म । धूपं दग्ध्वा प्रतिबुद्धिं=प्रतिबुद्धिनृपं स्वपतीं प्रतिपलयन्ती प्रतिपालयन्ती=पुनः पुनः प्रतीक्षमाणा तिष्ठति स्म ॥ सू० १६ ॥

पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुग-च्छंति) उस के पीछे २ उस की अनेक दास चेटिया पुष्प करण्डों को और धूप के पात्रों को हाथों में लिये हुए चली । (तएणं पउमावई सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरयं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता लोमहत्थगं जाव धूवं डहइ डहित्ता पडि-बुद्धि पडिवालेमाणी २ चिट्ठइ) इस के अनन्तर पद्मावती सखी, दासी आदि परिजन रूप अपनी समस्त ऋद्धि के साथ जहां वह नाग घर था वहां आई-वहां आकर वह नाग घर के भीतर गई भीतर जाकर उस ने वहां रखी हुई मयूर पिच्छ निर्मित मार्जनी को उठाया-उठा कर उस ने उससे उस नागघर को झाड़ा झाड कर फिर उस ने वहां यावत् धूप जलाई । धूप जला कर फिर वह अपने पतिदेव प्रतिबुद्धि राजा की प्रतीक्षा करती हुई बैठ गई । सूत्र " १६ "

(तएणं पउमावईए दास चेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडु-च्छगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति)

તેની પાછળ ઘણી દાસ-દાસીઓ પુષ્પ-કરણ્ડકો તેમજ ધૂપદાનીઓ હાથોમાં ઉચકી ચાલવા લાગી.

(तएणं पउमावई सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता नागघरयं अणुपविसइ अणुपविसित्ता लोमहत्थगं जाव धूवं डहइ डहित्ता पडिबुद्धि पडिवालेमाणी २ चिट्ठइ)

આરીતે પદ્માવતી દેવી સખી દાસી વગેરે પરિજન રૂપ પોતાની સંપૂર્ણ ઋદ્ધિની સાથે જ્યાં તે નાગઘર હતું ત્યાં પહોંચી અને ત્યાં પહોંચીને તે નાગઘરની અંદર ગઈ. ત્યા જઇને તેણે મોરપીંછી હાથમા લીધી અને ત્યાર-પછી તેણે નાગઘરને સ્વચ્છ બનાવ્યું. નાગઘરની સફાઈ કરીને તેણે ધૂપ સળગાવ્યો અને પછી પોતાના પતિ પ્રતિબુદ્ધિની પ્રતીક્ષા કરતી ત્યાં જ બેસી ગઈ. સૂ ૧૬

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं पडिबुद्धी पहाए हत्थिखंधवरगते सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं० हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं साकेयनयरं० णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं। तएणं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—तुमन्नं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहूणि रायईसर जाव गिहाइं अणुपविससि तं अत्थि णं तुमं कहिंचि परिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमं पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी — एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाई तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमं कलं पि अग्घइ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं संवच्छरपडिलेहणगंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमंपि कलं न अग्घइ ?, तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लिं विदेहवररायकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा सयं रज्जं सुक्का, तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरुढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेणं साएयाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सू०१८॥

टीकाः—ततस्तदनन्तरं खलु प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको राजा स्नातो मुकुटाद्यलङ्कारवस्त्रविभूषितः हस्तिस्कन्धवरगतः 'सकोरण्टमल्लदामेणं' सकोरण्टमाल्यदाम्ना कोरण्टाख्य पुष्पस्तवकवन्ति माल्यदामानि पुष्पस्रजस्तैः सहितेन छत्रेण ध्रियमाणेन यावत् श्वेतवरचामरैरुद्धोजितैश्च सहितः, हयगजरथयोधमहा-

'तएणं पडिबुद्धी ण्हाए' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पडिबुद्धी) प्रतिबुद्धि राजाने (ण्हाए) स्नान किया बाद में वे मुकुट आदि अंलकारों से और राजसी वस्त्रों से अलंकृत होकर (हत्थिखंधवरगए) अपने पट्ट हाथी पर बैठ गये-

(सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं० हयगयरह जोहमहया भड

'तएणं पडिबुद्धिण्हाए' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (पडिबुद्धि) પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ (ण्हाए) સ્નાન કર્યું અને મુકુટ વગેરે આભૂષણો તેમજ રાજસી વસ્ત્રોથી અલંકૃત થઈને (हत्थिखंधवरगए) પોતાના ખાસ હાથી ઉપર સવાર થયા.

(सकोरंट जाव सेयवर चामराहिं० हयगयरह जोह महया भडचडकरेहिं साकेयनयरं० निग्गच्छइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भट चरकरपहकरैः हय गजादीनां समूहैश्च सहितः साकेतनगरस्य मध्यभागेन निर्गच्छति । निर्गत्य स प्रतिबुद्धिनृपो यत्रैव नागगृहं वर्तते तत्रैवोपागच्छति उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=अवतरति प्रत्यवरुह्य=अधः प्रत्यवतीर्य आलोके=नागदर्शने प्राप्ते सति प्रणामं करोति कृत्वा पुष्पमण्डपं पद्मावती निर्मापित-पुष्पमयमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पश्यति तदेकं महत् श्रीदामकाण्डम् ।

चड कर पह करेहिं साकेयं नयरं० निग्गच्छइ) उन के बैठते ही छत्र धारी ने उन पर कोरण्ट पुष्प के गुच्छों से निर्मित मालाओं से युक्त छत्र को तान दिया ।

चमर ढोर ने वालों ने उन पर श्वेत उत्तम चमर ढोरना प्रारंभ कर दिया । बाद में वे हय, गज आदि के समुदाय से युक्त होकर साकेत नगर के मध्यभाग से होकर निकले (निग्गच्छित्ता जेणेव नाग घरे, तेणेव उवागच्छइ) निकल कर नागघर की ओर चल दिये (उवागच्छित्ता हत्थि खंधाओ पच्चो रुहइ, पच्चो रुहित्ता आलोए पणामं करेइ) वहां पहुँच कर वे उस हाथी से नीचे उतरे-उतर कर ज्यों ही उन्हें नाग प्रतिमा दिखलाइ पडी तो उसी समय उन्हों ने उसे नमस्कार किया ।

(करित्ता पुप्फमंडपं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, तं एगं महं सिरिदामगंडे) नमस्कार कर फिर वे पद्मावती देवी द्वारा निर्मापित पुष्प मंडप में प्रविष्ट हुए । वहां उन्हों ने उस विशाल श्री दाम काण्ड

રાજા જ્યારે હાથી ઉપર સવાર થઈ ગયા ત્યારે છત્ર ધારીએ તેમના ઉપર કોરંટ પુષ્પોના ગુચ્છોથી બનેલું તેમજ માળાઓથી શોભિતું છત્ર તાણ્યું.

ચમર ધારીઓ તેમના ઉપર સફેદ તેમજ ઉત્તમ ચમરો ઢોળવા લાગ્યા. આમ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા હય, ગજ વગેરે સમુદાયની સાથે સાકેત નગરના મધ્યભાગે થઈને (निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ) જે તરફ નાગઘર હતું તે તરફ ગયા.

(उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ)

ત્યાં પહોંચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને જ્યારે તેઓએ નાગપ્રતિમાઓ જોઈ ત્યારે તરત જ તેમણે તેમને નમન કર્યું.

(करित्ता पुप्फ मंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, तं एगं महं सिरिदाम गंडे

નમન કર્યા બાદ રાજા પદ્માવતી દેવી વડે બનાવવામાં આવેલા પુષ્પ મંડપમાં પ્રવિષ્ટ થયા ત્યાં તેમણે મોટા શ્રીદામકાંડને જોયો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु प्रतिबुद्धिस्तं श्रीदामकाण्डं सुचिरं कालं=बहुकालं निरीक्षते एकाग्रमनसा पश्यतिस्म। निरीक्ष्य तस्मिन् श्रीदामकाण्डे जातविस्मयः 'अपूर्वदृष्टमिदं श्रीदामकाण्ड' मित्याश्चर्यं प्राप्तः सन् सुबुद्धिं=सुबुद्धिनामकममात्यं=स्वमन्त्रिणम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय! त्वं खलु मम 'दोच्चेणं' दौत्येन=दूतो भूत्वा बहून् यावत् ग्रामाकरनगरसंनिवेशान् अहिण्डसि=परिभ्राम्यसि, बहूनि च राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहानां यावद् गृहाणि अनुप्रविशसि, तदस्ति खलु त्वया दृष्टपूर्वं

को-देखा। (तएणं पडिबुद्धि तं सिरीदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) देख ने के बाद प्रतिबुद्धि राजा ने बहुत देर तक उस का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया।

निरीक्षण करने के बाद उसे उस श्रीदामकाण्ड के विषय में बड़ा आश्चर्य हुआ। आश्चर्य युक्त होकर उसने अपने सुबुद्धि मंत्री से फिर इस प्रकार कहा-(तुमं णं देवाणुप्पिया! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव गिहाइं अणुपविससि-तं अत्थि णं तुमं कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठ पुव्वे जारिसए णं इमें पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे)

हे देवानुप्रिय! तुम मेरे दूत होकर अनेक ग्रामों में अनेक आकरों में, अनेक नगरों में अनेक संनिवेशों में घूमते फिरते हो वहां बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाहों के घरों में भी आते जाते रहते हो, तो क्या तुमने ऐसा

(तएणं पडिबुद्धि तं सिरीदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी)

તેને જોઈને પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ સૂક્ષ્મ દૃષ્ટિથી બહુ વખત સુધી તેનું નિરીક્ષણ કર્યું.

રાજાને શ્રીદામકાંડ જોઈને ખૂબજ આશ્ચર્ય થયુ. તેમણે પોતાના મંત્રી સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યું-

(तुमन्नं देवाणुप्पिया! मम दोच्चेणं बहूणि गामागार जाव गिहाइं अणुपविससि तं अत्थिणं तुमं कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसएणं इमें पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे)

હે દેવાનુપ્રિય! મારાદૂત થઈને તમે ઘણાં ગામો, આકરો નગરો અને સંનિવેશોમાં ફરતા રહો છો, ત્યાં ઘણા રાજા ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અને સાર્થવાહોના નિવાસ સ્થાનમાં પણ આવાગમન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुत्रचिदेतादृशं श्रीदामकाण्डम्, यादृशं खलु इदं पद्मावत्या देव्याः श्रीदामकाण्डं वर्त्तते । ततःखलु सुबुद्धिः सुबुद्धिनामा मन्त्री प्रतिबुद्धिं राजानमेवं=वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत्-एवं खलु स्वामिन् ! अहमन्यदा कदाचित् युष्माकं दौत्येन= दूतो भूत्वा मिथिलां राजधानीं गतः ।

तत्र=मिथिलाराजधान्यां खलु मया कुम्भकस्य=कुम्भकनाम्नो राज्ञो दुहितुः पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या आत्मजाया मल्ल्याः=कुम्भकनृपस्य पुत्री या प्रभावती देव्या आत्मजा=गर्भजा मल्ली नाम्नी कुमारी वर्त्तते तस्या इत्यर्थः, ' संवच्छर परिलेहणगंसि ' ' संवत्सरप्रतिलेखनके=वर्षपूर्तिसंख्याकरणदिवसे वार्षिके जन्मदिवसोत्सवकाले इत्यर्थः दिव्यम् आश्चर्यकारकं श्रीदामकाण्डं दृष्टपूर्वं=पूर्वकाले दृष्टम् । तस्य खलु श्रीदामकाण्डस्येदं पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमां कलां

श्रीदामकांड जैसा कि ये श्रीदामकांड पद्मावती देवी का है कहीं देखा है ? (तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी) राजा की इस प्रकार बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उन प्रतिबुद्धि राजा से इस तरह कहा (एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं राय हाणिं गए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे) स्वामिन्! मैं किसी एक समय आपका दूत बनकर मिथिला राजधानीमें गयो हुआ था। वहां मैंने कुंभक नरेश की पुत्री प्रभावती देवी की आत्मजा-गर्भजा-मल्ली कुमारी की वर्ष गांठ के अवसर पर आश्चर्य कारक श्रीदाम कांड को देखा था।

(तस्स णं सिरीदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमे कलं ण अग्घइ) उस के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्री

કરેા છે, તેા તમે પદ્માવતી દેવીના જેવેા શ્રીદામકાંડ કોઈ સ્થાને જોયેા છે ? (तएणं सुबुद्धि पडिबुद्धिरायं एवं वयासी) રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિએ પ્રતિબુદ્ધિ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું-

(एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेण मिहिलं रायहाणिगए तत्थणं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए, संवच्छर पडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे)

હે સ્વામિન્ ! એક વખતે તમારા દૂત તરીકે જ હું મિથિલા રાજધાની માં ગયેા હતેા.

ત્યાં મેં કુંભક રાજાની પુત્રી પ્રભાવતી દેવીની આત્મજા-પુત્રી-મલ્લી-કુમારીના જન્મોત્સવ પ્રસંગે ખૂબજ નવાઈ પમાડે તેવેા શ્રીદામકાંડ જોયેા હતેા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नार्हति । मल्लीकुमार्या यदस्ति श्रीदामकाण्डं तस्य शोभासुगन्धादिगुणानां लक्षांशमपि प्राप्तुं न शक्नोति पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डमित्यर्थः ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय! कीदृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या यस्याः खलु संवत्सरप्रतिलेखनके श्रीदामकाण्डस्य पद्मावत्या देव्या श्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमामपि कलां नार्हति ?। ततः खलु सुबुद्धिः प्रतिबुद्धिमिक्ष्वाकुराजमेवमवादीत्–हे स्वामिन्! विदेह राजवरकन्यका मल्लीभाग्नी

दामकांड लक्षांश (लाखमा भाग भी सुन्दर और सुगंधीत में नहीं हैं) भी नही हैं (तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद प्रतिबुद्धि ने सुबुद्धि अमात्य से ऐसा कहा– (केरिसियाणं देवाणुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवर कन्ना) हे देवानुप्रिय ! विदेह राजा की वह उत्तम कन्या मल्ली कुमार कैसी है कि (जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सत्तमंपि कलं न अग्घइ) जिस की वार्षिक जयंती के श्रीदाम कांड के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्रीदामकांड लक्षांश भी नही ज्ञात हो रहा है ।

(तएणं सुबुद्धिपडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी) इस तरह सुनकर सुबुद्धि ने इक्ष्वाकु वंशों में उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजा से ऐसा कहा (विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठिय कुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ) स्वा-

---

(तस्स णं दिरीदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरीदामगंडे सय सहस्सतमे कलं ण अग्घइ)

તેની સામે પદ્માવતી દેવીનો આ શ્રીદામકાંડ લક્ષાંશ પણ નથી. એટલે કે સુગંધ કે સૌંદર્ય બંનેની દૃષ્ટિએ મલ્લીકુમારીના જન્મોત્સવ પ્રસંગના શ્રીદામકાંડની સામે આ કંઈ જ નથી. (तएणं पडिबुद्धो सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) આ રીતે સાંભળીને પ્રતિબુદ્ધિએ સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું– (केरिसियाणं देवाणुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवरकन्ना) હે દેવાનુપ્રિય ! વિદેહ રાજ પુત્રી મલ્લીકુમારી એવી કેવી છે કે.

" जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईएदे वीए सिरि दामगंडे सयसहस्सत्तमं पि कलं न अग्घइ "

જેમના જન્મોત્સવના શ્રીદામકાંડની સામે પદ્માવતી દેવીનો આ શ્રીદામ કાંડ લક્ષાંશ પણ લાગતો નથી.

(तएणं सुबुद्धि पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी) આ રીતે સાંભળીને ઇક્ષ્વાકુવંશમાં ઉત્પન્ન પ્રતિબુદ્ધ રાજાને સુબુદ્ધિએ કહ્યું (विदेहरायवरकन्नगा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुप्रतिष्ठितकूर्मोन्नतचारुचरणा, सुप्रतिष्ठितौ=सुष्ठुसंस्थानवन्तौ=कूर्मोन्नतौ=कूर्म पृष्ठवदुपर्युन्नतौ चारू=सुन्दरौ चरणौ यस्याः सा तथा, वर्णकः=वर्णनं विशेषतो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादौ द्रष्टव्यम्. ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिभूपः सुबुद्धेरमात्यस्यान्तिके एतमर्थं मल्लीकुमारी सौन्दर्यादि गुणवर्णनरूपं श्रुत्वा=श्रवण गोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवधार्य श्रीदामकाण्डजनितहर्षः=श्रीदामकाण्डगुणश्रवणसंजातप्रमोदः सन् दूतं शब्दयति आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! गच्छ खलु त्वं मिथिलां राजधानीं, तत्र खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहितरं प्रभावत्या देव्या आत्मजां मल्लीं विदेहवरराजक-

---

मिन् । वह विदेहराज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी अच्छे आकार वाले, कूर्म की पृष्ठ के समान उन्नत सुन्दर चरण वाली है । इस का विशेष वर्णन जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि में किया गया है ।

(तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ) इस प्रकार श्रीदाम कांड के गुणों के श्रवण से अत्यधिक हर्षित हुए प्रतिबुद्धि राजा ने सुबुद्धि अमात्य के मुख से मल्ली कुमारी के सौन्दर्य आदि गुणों का वर्णन सुनकर और उसे हृदय में निश्चित कर दूत को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छाहिणं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं) हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नाम की राजधानी को जाओ–(तत्थ णं कुंभगस्स रण्णो धूयं पभावईए देवीए

सुपइट्ठिय कुम्मुन्नय चारूचरणा बन्नओ) હે સ્વામિન્ ! તે વિદેહ રાજાની ઉત્તમકન્યા મલ્લીકુમારી સરસ આકારવાળા કાચબાની પીઠના જેવા સુંદર ઉન્નત ચરણવાળી છે. (તેમનું વિશેષ વર્ણન જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ વગેરે માં કરવામાં આવ્યું છે.

(तएणं पडिबुद्धि सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ)

આ પ્રમાણે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મોઢેથી શ્રીદામકાંડના ગુણ શ્રવણથી તેમજ મલ્લીકુમારીના સૌંદર્ય વગેરે ગુણોની ચર્ચા સાંભળીને તેને હૃદયમાં અવધારિત કરીને ખૂબજ હર્ષિત થયેલા પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યું–(गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલાની રાજધાનીમાં જાઓ.

(तत्थणं कुंभगस्स रण्णो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लिं विदेहवरराय कण्णगं मम भरियत्ताए वरेहिं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यकां मम भार्यात्वेन वरय, अयमर्थः-हे देवानुप्रिय ! मिथिलां गत्वा कुम्भकनृपं ब्रूहि-साकेतनगराधिपतिः प्रतिबुद्धिनामानृपस्तव कन्यकां मल्लीं धर्मपत्नीत्वेन ग्रहीतुमिच्छति, तदनुमन्यस्वेति ।

यद्यपि च सा स्वयं राज्यं शुल्कं=मूल्यं यस्याः सा तथा, स्वस्य निरुपम-सुशीलादिगुणवत्तया सा यदि स्व शुल्कत्वेन राज्यमभिलषेत्तदाऽहं सर्वं राज्यं समर्पयामीति भावः। ततः खलु स दूतः प्रतिबुद्धिना राज्ञा एवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टो

अत्तयं मल्लिं विदेहवररायकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहिं) वहां कुंभक राजा की पुत्री मल्ली कुमारी को कि जो प्रभावती देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई है मेरी भार्या के रूप से वरो अर्थात् तुम मिथिला राजधानी में जाकर कुंभक राजा से कहो कि साकेताधिपति प्रतिबुद्धि राजा आपकी कन्या मल्ली कुमारी को अपनी धर्मपत्नी बनाना चाहते हैं-सो आप इस की स्वीकृति प्रदान करो

(जइ विय णं सा सयं रज्जसुक्का) यद्यपि मैं इस बात को जानता हूँ कि वह कन्या राज्य ही है शुल्क जिस का ऐसी है-अर्थात् वह अनुपम सुशीलादि गुणों से युक्त होने के कारण अपने शुल्कपने से राज्य की अभिलाषा यदि करेगी तो मैं उसे समस्त अपना राज्य भी समर्पित कर दूँगा ।

(तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेइ) इस प्रकार राजा का अभिप्राय हृदयंगम कर वह सुबुद्धि अमात्य बड़ा ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुआ और उस ने मिथिला राजधानी जाना स्वीकार कर लिया । (पडिसुणित्ता जेणेव सए गेहे

અને પ્રભાવતી દેવીના ઉદરથી જન્મ પામેલી કુંભકરાજાની પુત્રી કુમારીની મારી વધૂના રૂપે યાચના કરો, એટલે કે તમે મિથિલા રાજધાનીમાં જઇને કુંભક રાજાને કહોકે સાકેતના અધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા તમારી પુત્રી મલ્લી કુમારી ને પોતાનીવધૂ બનાવવા ચાહે છે તો તમે તેની સ્વીકૃતિ આપો.

(जइविय णं सा सयं रज्जसुक्का) મલ્લીકુમારી અત્યન્ત સૌંદર્યવતી તેમજ રાજ્ય જેનું શુલ્ક (કિંમત) છે આવી અદ્ભુત સુશીલ વગેરે ગુણોવાળી કન્યા છે. એ વાત હું સારી પેઠે જાણું છું એટલે કે અનુપમ ગુણવતી મલ્લી કુમારી પોતાના શુલ્ક રૂપે મારા રાજ્યને પણ માંગશે તો હું મારું આખું રાજ્ય તેને સમર્પિત કરવા તૈયાર છું.

(तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेइ) આ રીતે રાજાનો અભિપ્રાય હૃદયમાં ધારણ કરીને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ખૂબ જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऽत्तिकदेन प्रमुदितो भूत्वा प्रतिशृणोति आज्ञामङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य-यत्रैव रथकं गृहं यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथो वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं प्रतिकल्पयति=सज्जयति, प्रतिकल्प्य चातुर्घण्टमश्वरथं सज्जीकृत्य दूरूढः=समारूढः सन् यावत्-हयगजमहाभट चटकरेण सहितः साकेतात् साकेत-नगराद् निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव विदेहजनपदः यत्रैव मिथिलानगरी तत्रैव प्रधारयति गमनाय=गंतुं प्रवृत्तः प्रस्थित इत्यर्थः । इति प्रतिबुद्धिनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० १७॥

जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) स्वीकार कर पहिले वह अपने घर गया ।

वहां जाकर फिर वह जहां चार घंटो से युक्त अश्वरथ रखा था वहाँ गया (उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेइ) वहां जाकर उस ने उसे चातुर्घंट रथ को अच्छी तरह सज्जित कर वाया (पडिकप्पावित्ता दुरूढे जाव हय गय महया भडचडग रेणं साएयाओ णिग्गच्छइ) जब रथ अच्छी तरह सज्जित हो चुका तो वह बाद में उस पर आरूढ हुआ-और हय, गज, महा भटों के समूह से युक्त होकर साकेत नगर से बाहिर निकला (णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेह जणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए निकल कर फिर वह जहां विदेह जनपद और उस में भी जहां वह मिथिला राजधानी थी उस ओर चल दिया । सूत्र " १७ "

હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો અને તેણે મિથિલા રાજધાની જવાની રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી. (पडिसुणित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) સ્વીકારીને તે પહેલાં પોતાને ઘેર ગયો.

ઘેર પહોંચીને તે જ્યાં ચાર ઘંટડીઓ વાળો અશ્વરથ મૂકેલો હતો ત્યાં ગયો. (उवागच्छित्ता चउग्घंटे आसरहं पडिकप्पावेइ) ત્યાં જઈને તેણે ચાતુર્ઘંટ રથને સારી પેઠે શણગાર્યો.

(पडिकप्पावित्ता दुरूढे जाव हयगय महया भडचडगरेणं साएया ओ णिगच्छइ)

જ્યારે રથ સારી રીતે તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેના પર સવાર થયો અને હાથી ઘોડા મહાભટોના દળની યોદ્ધાઓની સાથે સાથે સાકેત નગરથી બહાર નીકળ્યો.

(णिगच्छित्ता जेणेव विदेह जणवए जेणेव महिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

નીકળીને તે જે તરફ વિદેહ જનપદ અને મિથિલા રાજધાની હતી તે તરફ ગયો. ॥ સૂત્ર " ૧૭ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्--तेणं कालेणं तेणं समएणं अंगनाम जणवए होत्था, तत्थणं चंपा नामं णयरी होत्था, तत्थणं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था, तत्थ णं चम्पाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया, तएणं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था अहिगयजीवाजीवे वन्नओ, तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ता णावावाणियगाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था--से यं खलु अम्हं गणिमं धरिमं च मेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च ४ गेण्हंति। गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति, भरित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण०४उवक्खडावेंति मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडिसागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडिसागडियं मोयंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति, तंदुलाण य संमियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स उदयमायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति। सोहणंसि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ॥ सू० १८ ॥

टीका-अथ द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य संबन्धं प्रस्तौति-'तेणं कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अङ्ग नामा जनपद आसीत् । तत्र खलु चम्पा नाम नगरी असीत् तत्र खलु चम्पायां नगर्यां चन्द्रच्छायोऽङ्गराज असीत् । तत्र खलु चम्पायां नगर्याम् अरहन्नकप्रमुखाः बहवः संयात्रा नौकावाणिजकाः= संगतायात्रा संयात्रा तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः-पोतवणिजः मिलित्वा देशान्तर गामिनो नौकया वाणिज्यकारिणः परिवसन्ति, कथंभूतास्ते इत्याह-आढ्याः=धन

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (अंगनाम जणवए होत्था) अंग नामका जनपद था-(तत्थणं) उस जनपद में (चंपानामं णयरी होत्था) चंपा नाम की नगरी थी (तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था) उस चंपा नगरी में चन्द्रच्छाय नाम के अंग देशाधिपति रहते थे ।

(तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे संजत्ता णावा वणियगा परिवसंति) और उसी चंपा नगरी में अरहन्नक प्रमुख अनेक पोतवणिक् जो साथ २ व्यापार के निमित्त परदेश की यात्रा-गमना गमन-करते रहते थे । नौकाओं द्वारा जो व्यापार करते हैं वे पोतवणिक कहलाते हैं । (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्या-

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काळे अने ते समये (अंगनाम जणवए होत्था) अंगनामे जनपद हतुं (तत्थणं) ते जनपदमां (चंपा नामं णयरी होत्था) चंपा नामे नगरी हती. (तत्थणं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था) ते चंपा नगरीमां चंद्रच्छाय नामना अधिपति रहेता हता.

(तत्थणं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ताणावा वाणियगा परिवसंति)

ते चंपा नगरीमां अरहन्नक प्रमुख घणा पोतवाणिको-के-जेओ वेपार खेडवा माटे देश परदेशमां आव जा करता रहेता हता निवास करता हता. नौकाओ वडे जेओ वेपार करे छे तेओ पोतवणिक कहेवाय छे (अड्ढा जाव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान्यपूर्णा यावद् अपरिभूताः परैः पराभवितुमशक्याः। ततः=तत्र=तेषु खलु सोऽरहन्नकः श्रमणोपासकः श्रावकश्चाप्यासीत्, न केवलं धनधान्यादियुक्तएवासीत् किंतु-आर्हतागमानुरागी श्रमणानां सेवकश्चाप्यासीदित्यर्थः। पुनः किं भूतोऽसावित्याह-' अहिगयजीवाजीवे ' अभिगतजीवाजीवः = जीवाजीवतत्वज्ञः वर्णकः=अस्य वर्णनमन्यत्रोक्तरीत्याऽवगन्तव्यम्। ततः खलु तेषामरहन्नकप्रमुखाणां संयात्रानौकावाणिजकानां व्यवसायिकानाम्, अन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, एकतः सहितानाम्=एकत्र संमिलितानां अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः, मिथः कथासंलापः परस्परकथालापः समुदपद्यत=अभवत् श्रेयः

दि से परिपूर्ण यावत् दूसरों से पराभवितुं अशक्य थे (तएणं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) इन में अरहन्नक श्रमणोपासक भी था। केवल यह धन धान्यादि से परिपूर्ण ही नहीं था किन्तु आर्हत आगमानुरागी और श्रमण जनों का उपासक भी था।

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) जीव का क्या स्वरूप है, अजीव का क्या स्वरूप है इस बात का यह ज्ञाता था। इस का विशेष वर्णन अन्यत्र किया गया है।

(तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था) किसी एक दिन ये अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिक पोतवणिक किसी कार्य वश जब सब के सब किसी एक स्थलपर एकत्रित हुए तो उन्हों ने परस्पर में वक्ष्यमाण रूप से ऐसा विचार किया-

અપરિભૂયા) તેઓ બધા ધન ધાન્ય વગેરે સમસ્ત વૈભવોથી સંપન્ન હતા તેઓ બધા અપરાજેય હતા. (तएणं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) આમાં એક અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક પણ હતો. તે કેવળ ધન ધાન્યથીજ સમૃદ્ધ નહતો પણ તે આર્હત આગમાનુરાગી અને શ્રમણજનોનો સેવક પણ હતો.

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) જીવ અને અજીવ સ્વરૂપ વિષે તે સંપૂર્ણ પણે જ્ઞાતા હતો. (આ બાબતનું વિશેષ વર્ણન બીજા સ્થાને કરવામાં આવ્યું છે.)

(तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था)

એક દિવસે અરહન્નક પ્રમુખ બધા સાંયાત્રિક પોતવણિક કોઇ સ્થળે એકઠા થયા અને તેઓએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु अस्माकं गणिमं गणयित्वा व्यवहारयोग्यं यथा नालिकेरपूगीफलादिकं, धरिमं यत् तुलाधृतं व्यवहारयोग्यं भवति तद् धरिमम्, मेयं यत्-सेटिकादिभिर्मीयते तद् मेयम्, परिच्छेद्यं यत्-गुणतः परिच्छेद्यते परीक्ष्यते वस्त्ररत्नादि, तत् परिच्छेद्यं, च भाण्डकं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा लवणसमुद्रं पोतवहनेन अवगाहितुम्=उत्तरीतुम्, इति कृत्वा इति निश्चित्य, अन्योन्यं=परस्परम् एतमर्थं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा नौकायानेन लवणसमुद्रसंतरणरूपमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य गणिमं च ४ गृह्णन्ति, गृहीत्वा शकटी शाकटिकं=लघुशकटमहाशकटानां समूहं च सज्जयन्ति-नूतनरज्ज्वाद्युपकरणैः

(सेयं खलु अम्हं गणिमं, धरिमं, च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेण ओगाहित्तए) गणिम - गिनती करके व्यवहार योग्य-जैसे नारियल, पूगीफल आदि, धरिम-तुला पर तौलकर व्यवहार योग्य-जैसे सस्यादि, मेय सेटिकादि से प्रमाण कर व्यवहार योग्य, और परिच्छेद्य-गुणसे परीक्षा कर व्यवहार योग्य-जैसे वस्त्र रत्न आदि इन चार प्रकार के क्रयाणक को दो नौकाओंमें भर कर हम लोग बाहर लवणसमुद्रको पार कर चलें-इसमें हम लोगोंको बहुत लाभ होगा।

(त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च ४ गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति) इस प्रकार परस्पर विचार कर उन सब ने एक मत हो इस चतुर्विध क्रयाणक को लेकर नौका से लवण समुद्र को पार करने रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया।

(सेयं खलु अम्हं गणिमं, धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेण ओगाहित्तए)

ગણિમ- ગણીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમ કે નારિયેળ, સોપારી, વગેરે ધરિમ-ત્રાજવાં માં જોખીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે ધાન વગેરે, મેય-માપના પ્રમાણથી વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે તેલ વગેરે અને પરિચ્છેદ્ય-ગુણથી પરીક્ષા કરીને વ્યવહાર કરી શકાય જેમકે વસ્ત્ર રત્ન વગેરે આ ચારે જાતની વસ્તુઓ વિક્રય માટે બે નૌકાઓમાં લાદીને આપણે લોકો બહાર લવણસમુદ્રને પાર કરીએ તો આપણને ખૂબ લાભ થશે.

(त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च ४ गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति)

આ રીતે ચારે જાતની વેપારની વસ્તુઓ નૌકાઓમાં મૂકીને લવણસમુદ્રને પાર કરવાની બધાએ સર્વસમ્મતિથી સ્વીકારી. અને સ્વીકારીને તેઓએ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा गणिमस्य ४ भाण्डकस्य शकटीशाकटिकं भरन्ति= पूरयन्ति । भृत्वा=पूरयित्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते विपुलं=विस्तीर्णम् अशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति = निष्पादयन्ति । मित्रज्ञातिप्रमुखान् भोजनवेलायां भोजयन्ति, यावद् आपृच्छन्ति स्म. अरहन्नक प्रमुखाः संयात्रानौकावाणिजका यात्रावसरे मित्रज्ञातीन् भोजयित्वा वाणिज्यार्थं नौकया समुद्रसंतरणकामास्तान् मित्रज्ञातीन् स्वस्वानुमति प्रदानार्थं प्रार्थयन्ति स्मेत्यर्थः। आपृच्छ्य=संप्रार्थ्य शकटीशाकटिकं योजयन्ति वृषभैः सह संयोजयन्ति संयोज्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव गम्भीरकं गम्भीरकाख्यं समुद्रतीरवर्ति पोत-

---

स्वीकार कर के फिर उन सबने चारों प्रकार के क्रयाणक को लिया-लेकर उसे नूतन रज्जवादि से परिष्कृत की गई गाडी और गाड़ों में भर दिया।

(भरित्ता सोहणंसि तिहिकरण दिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति) भर कर फिर उन्हों ने शुभतिथि, करण दिवस नक्षत्र रूप मुहूर्त में विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को बनवाया – (मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति) जब वह बन कर तैयार हो चुका–तो उन्हों ने अपने २ मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों को भोजन के अवसर पर भोजन करवाया और फिर उन से पूछा–हम लोग बाहर व्यापार के लिये जाना चाहते हैं– इसलिये आप लोग इस विषय में अपनी २ अनुमति प्रदान करें-इस तरह उन से प्रार्थना की– (अपुच्छित्ता) पूछ कर (सगडसागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव गंभीरए पोय

આરે જાતની વેચાણની વસ્તુઓને નવા દોરડાઓવાળી ગાડી તેમજ ગાડાઓમાં ભૂકી.

(भरित्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं४ उवक्खडावेंति)

ભરીને તેઓએ શુભતિથિ, કરણ, નક્ષત્રરૂપ મુહૂર્તમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય આમ ચારે જાતના આહાર પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવડાવ્યા. (मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति) જ્યારે આહાર તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેઓએ પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમવામાટે બોલાવીને જમાડયા અને જમ્યા પછી તેમને તેઓએ પૂછયું " અમે બધાં વેપાર ખેડવામાટે બહાર જવા ઇચ્છીયે છીએ "

એથી તમે બધા અમને અનુમતિ આપો. આરીતે તેઓએ તેમને વિનંતી કરી. (आपुच्छित्ता) આજ્ઞા મેળવીને.

(सगडसागडियं जोयंति जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्तनं=पोतनगरं नौकारोहणस्थानं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटी-शाकटिकं मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहावस्थितं क्रयाणकादिकं सर्वं वस्तु जात-मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजातं शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहनं=नौकायानं सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायानं पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नविशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छंति) फिर उन्हों ने क्रयाणको से भरी हुई गाडी और गाड़ों को जुत वाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चंपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहां गंभीरक नाम का जहाज पर सवार होने का स्थान (बंदरगाह) था वहां पर आये।

(उवागच्छित्ता सगड़ सागडियं मोयंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति) वहां आकर उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ों को ढील दिया ढीलकर पोत यानों को सज्जित किया-यथो चित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया। सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को गाडियों और गाड़ों पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान पर भर दिया (तंदुलाणय संभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जा-

गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति)

તેમને વેચાણના માલસામાનથી ભરેલી ગાડી અને ગાડાને જોતર્યા અને ત્યાર પછી તેઓ બધાં ચંપા નગરીની બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી પસાર થઈને જ્યાં ગંભીરક નામનું વહાણ પર બેસવાનું સ્થાન (બંદર) હતું ત્યાં પહોંચ્યા.

(उवागच्छित्ता सगडसागडियं मोयंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति)

ત્યાં પહોંચીને તેઓએ પોતપોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાંઓને છોડીને યથોચિત નવીન ઉપકરણોથી વહાણ તૈયાર કર્યું. વહાણને સુદૃઢ રીતે તૈયાર કરીને તેઓએ ગાડી તેમજ ગાડાંઓની વેચાણની બધી વસ્તુઓ વહાણમાં યથાસ્થાને ગોઠવી દીધી.

(तंदुलाण य संभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य, कट्ठस्स य आव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथवा-एकद्रव्यरूपाणां च भैषज्यानां पथ्यानामाहारविशेषाणाम् अथवा द्रव्यसंयोगरूपाणाम् च तृणस्य च काष्ठस्य च आवरणानाम्=अङ्गरसकादीनां च प्रहरणानां च खड्गादिशस्त्राणां अन्येषां च बहूनां पोतवहनपायोग्याणां=नौकायानोपनेयानां द्रव्याणां=स्थापनेन पोतवहनं=नौकायानं भरन्ति पूरयन्ति स्म। शोभने=शुभावहे,

---

णय तणस्स य, कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति)

नौका यान में उन्हों ने चावलों को भरा, गेहुओं को भरा, गेहुओं के आँटे को और आटे से निष्पन्न पक्वान्न विशेषको भरा। तैल, गुड़ घृत गोरस भरा पानी भरा पानी के वर्तनों को भरा। त्रिकुट आदि औषधियों को भरा पथ्याहार विशेष भैषज्यों को भरा, तृणों को भरा लकड़ियों को भरा अंगरस आदि आवरणों को, खड्ग, आदि शस्त्रों को तथा और भी अनेक वस्तुओं को जो पोत वहन के योग्य थी भरा।

इस तरह उन्हों ने इन समस्त वस्तुओं को, यथोचित स्थान पर स्थापित उस नौकायान को भर दिया। यहां पर जो औषध और भैषज्य ये दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन से ऐसा भी अर्थ बोध होता है कि त्रिकूट आदि जो अलग २ द्रव्य हैं वे औषध और इन का समुदाय रूप जो द्रव्य है-जैसे चूर्ण आदि वह भैषज्य है। "पोयवहणपाउग्गाणं" पद का यह अर्थ है कि जो द्रव्य नौका द्वारा अच्छी तरह ढोया-जा सके वह सब उन्हों ने उस में भर दिया। (सोहणंसि तिहि करण

रणाण य, पहरणाण य, अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનો લોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામાં આવેલું પક્વાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકૂટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડાં, અંગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણુ માં લઇજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમાં લાદી-

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામાનથી ભરી દીધું. અહીં ઉપર 'ભૈષજ્ય' અને 'ઔષધ' આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠાં કરવાં જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે "पोयवहणपाउग्गाणं" પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે સારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધું તેમણે તેમાં ભર્યું હતું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिथिकरण दिवस नक्षत्रमुहूर्ते विपुलं=विस्तीर्णम्, अशनपानखाद्यस्वाद्यं=चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति=संपादयन्ति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रमुखान् भोजयित्वाऽऽपृच्छन्ति, समुद्रयात्रानुमतिप्रदानार्थं प्रार्थयन्ति आपृच्छय यत्रैव पोतस्थानं=नौकायानारोहणस्थानं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च तत्र स्थिताः ॥सू० १८॥

मूलम्–तएणं तेसिं अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी–अज्ज ताय भाय माउल भाइणज्जे भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा २ चिरजीवह भद्दं च भे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामोत्तिकट्टु ताहिं सोमाहिं, निद्धाहिं दीहाहिं, सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मे दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दर पंचंगुलितलेसु, अणुक्खि-

दिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता, मित्तणाई० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति) जब सब प्रकार का चतुर्विध क्रयाणक नौकायान में भरा जा चुका तब पुनः उन लोगों ने अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न करवाया, और करवा कर अपने २ मित्र ज्ञाति आदि परिजनों को जिमाया जिमा कर उन से समुद्रयात्रा कर ने की अनुमति मांगी–और मांग कर फिर वे सब के सब पोत वणिक् जहां नौका पर चढने का स्थान था वहां आये–और आकर वहाँ ठहर गये। सूत्र " १८ "

(सोहणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण ४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता, मित्तणाई० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति

જ્યારે ચારે જાતની વેચાણ કરવાની વસ્તુઓ જહાજમાં ભરાઈ ગઇ ત્યારે તેમણે અશન વગેરે ચારે જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો અને કરાવડાવીને પોતપોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમાડયા અને જમાડીને તેમની પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાની આજ્ઞા માગી અને આજ્ઞા મેળવીને તેઓ બધા પોતવણિકો જ્યાં વહાણમાં બેસવાનું થવાનું સ્થાન હતું ત્યાં આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેઓ બધા ત્યાં રોકાયા. ॥ સૂત્ર " ૧૮ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तंसि धूवंसि पूइएसु समुद्दवाएसु, संसारियासु, बलयवाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु,जइएसु सव्वस-उणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्ठिसीहणाय जयरवेणं पक्खुभितमहासमुद्दरवभूयं पिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं संजुत्ता नावा वाणियगा णावं दुरूढा ।

तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु–हंभो सव्वेसिमविभे अत्थ सिद्धीओ उवट्ठिताइं कल्लाणाइं, पडिहयाइं सव्वपावाइं, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालाओ, तओ पुस्समाणवेणं वक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज्जसंजाता णावा वाणियगा वावारिसु तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—' तएणं तेसिं ' इत्यादि—ततस्तदनन्तरं खलु तेषामरहन्नक प्रमु खाणां यावत् नौकावाणिजकानां परिजना यावत् तादृशीभिर्वाग्भिरभिनन्दन्तश्चाभि संस्तुवन्तश्चैवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादिषुः–हे आर्य ! =हे पितामह ! तात ! हे पितः हे मातुल ! हे भागिनेय ! भगवता महता समुद्रेण ' अभिरक्खिज्जमाणा '२ अभि

' तएणं तेसिं अरहन्नग जाव ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी) उन अरहन्नक यावत् अन्य और पोतवणिजों के परिजनों ने यावत् उस २ प्रकार की वाणियों द्वारा उन सबका अभिनन्दन एवं संस्तवन करते हुए उन से इस प्रकार कहा-(अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणज्जे ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जे माणा २ चिरं जीवह भद्दं

'तएणं तेसिं अरहन्नग जाव' इत्यादि

टीकार्थ–"तएणं" त्यारबाद "अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंताय अभिसंथुणमाणाय एवं वयासी" ते अरहन्नक प्रमुख पोतवणिकोना परिजनो तेमनुं अनेक जातनी मंजुळवाणीयो वडे अभिनंदन अने संस्तवन करतां तेमने कहेवा लाग्या. (अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भणिज्जे भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जेमाणा२ चिरंजीवह भद्दं च ते) हे आर्य !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्ष्यद्यमाणाः२=सुरक्ष्यमाणाः२ चिरं बहुकालं जीवत, भद्रं च युष्माकं भवतु पुनरपि लब्धार्थान् लब्धलाभान् कृतकार्यान् सम्पादितसकलकृत्यान् अनघसमग्रान्= अनघाश्च ते समग्राः अनघसमग्रास्तान् दोषरहितत्वादनघाः, धनेषु परिवारेषु च क्षेमाभावात्. समग्राः तथाविधान् युष्मान् निजकं=स्वकीयं, गृहं क्षेम्यमागतान् शीघ्रमागतान् वयं पश्यामः, इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा ताभिः सौम्याभिर्निर्विकारत्वात्, स्निग्धाभिः सस्नेहत्वात्, दीर्घाभिः दूरं यावदवलोकनात् ' सप्पिवासाहिं ' सपिपासाभिः=दर्शनेच्छावतीभिः, ' पप्पुयाहिं ' प्रप्लुताभिः=अश्रुपूर्णाभिः दिट्ठीहिं ' दृष्टिभि निरीक्षमाणा अवलोकमानाः मुहूर्तमात्रं संतिष्ठन्ते अरहन्नादीनां परिजना अश्रुपूर्णदृष्टिभिस्तान् पश्यन्तोमुहूर्तमात्रं निश्चला अभवन्नित्यर्थः। ततः ' समाणिएसु ' समापितेषु सम्यक् संपादितेषु पुष्पबेलिकर्मसु पुष्पाक्षत-

च भे) हे आर्य ! हे तात ! हे भ्रातः ! हे मामा ! हे भागिनेय ! आपलोग इस भगवान् विशाल समुद्र से बार२ सुरक्षित होते हुए चिर काल तक जीवित रहें। आप सबका कल्याण हो। (पुणरवि लद्धट्ठे, कय कज्जे, अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो) हम लोग लाभ से युक्त सम्पादित सकल कार्यों वाले विना किसी शारीरिक आदि बाधा से रहित धन और परिवारों से परिपूर्ण हुए आप सब को घर पर शीघ्र आया हुआ देखें। (त्ति कट्टु) ऐसा कह कर वे वहां-(ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं, दीहाहिं, सप्पिवासाहिं, पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति) सौम्य स्निग्ध, दीर्घ, दर्शनेच्छावती और अश्रुपूर्ण दृष्टियों से उन्हें देखते हुए एक मुहूर्त तक बैठे रहे। (तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दर, पंचंगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि

હેતાત ! હે ભાઇ ! હે મામા ! હે ભાણેજ ! તમે બધા આ ભગવાન વિશાળ સમુદ્રવડે વારંવાર સુરક્ષિત થઇને ચિરકાળ સુધી જીવતા રહો. તમારું કલ્યાણ થાઓ. " पुणरविलद्धट्ठे, कयकज्जे, अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो " અમે બધા તમને લાભન્વિત થયેલા, બધા કાર્યોને પાર પમાડનારા, કોઇ પણ જાતની શારીરિક મુશ્કેલી વગર એટલે કે સ્વસ્થ શરીરવાળા, ધન તેમજ પરિપૂર્ણ પરિવારથી યુક્ત થઇને ઘેર પાછા આવેલા જોઇએ. " त्तिकट्टु " આમ કહીને તેઓ ત્યાં.

(ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं, सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं, दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति)

સૌમ્ય, સ્નિગ્ધ, બહુવખત સુધી દર્શનની ઇચ્છાવાળી અને આંસુ ભીની દૃષ્ટિઓથી તેમને જોતા એક મુહૂર્ત સુધી બેસી રહ્યા.

(तओ समाणिए सुपुप्फ बलिकम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दरपंचंगुलि तलेसु,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्कनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः। अनूत्क्षिप्ते=अनुपश्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूमे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना संमानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा संसारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयबाहुषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छ्रितेषु उर्ध्वमुखमवस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा–पटुप्रवादितेषु पटुभिः पुरुषैः प्रवादितेषु, यद्वा–पटु यथा भवति तथा प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्वशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा–गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवरशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा–महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवंसि, पूइएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसुज्झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरस रक्त चंदन के चपेटाकार से हाथे जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाए जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ट रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जब अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा करने का आदेश पत्र जब चंपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्ठसी.

अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूइएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

ત્યાર બાદ પુષ્પ અક્ષત દાન વગેરે ની વિધિ પૂરીથઈ ગઇ, પરિધાનીય વસ્ત્રો ઉપર સરસ લાલ ચંદનના થાપાઓ લગાવી લીધા, ગૂગળ વગેરે ધૂપ અગ્નિમાં નાખીને ધૂપ કરી લીધો, ધૂપ વગેરે અર્પીને સમુદ્રના પવનોની અર્ચનાનું કામ પુરૂં થઇગયું, બીજા સ્થાનેથી દીર્ઘકાષ્ઠરૂપ વલય એટલે કે સૂકાન વગેરે વહાણ ઉપર યથાસ્થાને મુકાઇ ગયા, શુભધ્વજાઓના અગ્રભાગ જ્યારે ઉર્ધ્વમુખના રૂપે અવસ્થાપિત થઈ ગયા, કુશળ વાજાંવાળાઓ વડે સરસ વાજાંઓ વગાડવાનું કામ પતિ ગયું, જય પમાડનારા કાગડા વગેરે પક્ષી ઓના માંગલિક શબ્દો એટલે કે સારા શુકન થઈ ગયા અને ચંપાનગરીના રાજા પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાનો પરવાનો " આદેશ પત્ર " તેઓની પાસે આવી ગયો ત્યારે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयरवेण उच्चस्वरयुक्त जय जय ध्वनिता प्रक्षुभितमहासमुद्ररवभूतामिव वायु प्रक्षोभजनितमहासागरध्वनिव्याप्तामिव मेदिनीं = पृथ्विं प्रचुरनादवतीं कुर्वाणा एकदिशं एकस्यां दिशि संयात्रानौका वाणिजका नावं नौकायानं दूरुढाः आरोहंति स्म ।

ततस्तदनन्तरं ' पुस्समाणवो ' पुष्पमानवः=मागधो मङ्गलपाठकः ' वक्कमुदाहु ' वाक्यमुदाह–मङ्गलवचनमुक्तवान् तदाह–हंभो इत्यादि हे नौकायात्रिकाः ' सव्वेसिमविभे ' सर्वेषामपि युष्माकम् अर्थसिद्धयो भवतु, उपस्थितानि कल्याणानि भवन्तु तथा प्रतिहितानि सर्वपापानि भवन्तु=सर्वेविघ्नाः प्रतिहता विनष्टा भवन्त्वित्यर्थः । ' जुत्तो ' युक्तः ' पूसो ' पुष्यः=पुष्याख्यो नक्षत्रविशेषः अनुकूलेन चन्द्रमसा युक्त इत्यर्थः । पुष्यनक्षत्रं यात्रायां प्रशस्तम् तथ चोक्तं–

हणायजयरवेणं पक्खुभित्तमहासमुद्दरवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा) उत्कृष्ट सिंहनाद जैसी जय जय ध्वनि से वायु के प्रक्षोभ से जनित महासागरकी ध्वनि से व्याप्त हुई की तरह मेदनी को करते हुए (संज्जुत्ता नावा वाणियगा एगदिसिं णावं दुरूढा) वे सांयात्रिक पोत वणिक् नाव पर सवार हुए ।

(तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु) इतने में ही मंगल पाठक–चारण–ने मंगल ध्वनि की (हंभो सव्वेसिं भविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताइं कल्लाणाइं, पडियाइं सव्व पावाइं, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो अयंदेसकालो) हे हे नौका यात्रिकों ! आप सब को अर्थ की सिद्धि हो, सब कल्याण आपके लिये सदा उपस्थित रहें, समस्त प्रकार के विघ्न आपकी इस मांगलिक यात्रा में नाश हों पुष्प नक्षत्र का अनुकूल चन्द्रमा के साथ योग रहा है यात्रा में पुष्य नक्षत्र का योग प्रशस्त होता

(महया उक्किट्ठसीहणायजयरवेणं पक्खुभित्तमहासमुद्दरवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा)

પવનથી–ક્ષુબ્ધ મહાસાગરના સર્વત્ર વ્યાપ્ત થયેલા ધ્વનીની જેમ સિંહનાદ જય જય ધ્વનિથી પૃથ્વીને શબ્દિત કરતા (सुंज्जुत्तानावा वाणियगा एगदिसिंणावं दुरूढा) તે સમયે માંગલિકોએ એટલે કે ચારણોએ મંગળધ્વનિ કર્યો.

(हंभो सव्वेसिमविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताइं कल्लाणाइं पडियाइं सव्वपावाइं, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयंदेसकालो)

હે પોતવણિકો ! તમને બધાને અર્થની સિદ્ધિ થાય તમને સદા કલ્યાણો પ્રાપ્ત થાઓ, મંગળયાત્રાના તમારા બધા વિઘ્નોનાશ પામો અત્યારે ચન્દ્રની સાથે પુષ્યનક્ષત્રનો અનુકૂળ યોગ થઈ રહ્યો છે. (યાત્રામાં પુષ્યનક્ષત્રનો યોગ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपि द्वादशमे चन्द्र पुष्यः सर्वार्थसाधनः ॥ इति ॥

विजयो मुहूर्तोऽधुना विद्यते, अयं देशकालः=समयः प्रस्थाने शुभावह इत्युक्तं-मागधेन । ततस्तदनन्तरं ' पुस्समाणवेणं ' पुष्यमानवेन मागधेन ' वक्के ' वाक्ये=माङ्गलिकवचने, ' उदाहिए ' उदाहृते उक्ते सति हृष्टतुष्टाः अतिशयेन प्रमुदिताः ' कुच्छिधारकन्नधार गब्भिज्ज संजत्ताणावावाणियगा ' कुक्षिधार कर्णधार गर्भज संयात्रा नौवाणिजकाः=कुक्षिधाराः नौकायाः पार्श्वतो नियोजिता सञ्चालकाः, कर्णधाराः नाविकाः प्रधानभूता नौकावाहकाः, गर्भजाः=नौमध्ये स्थित्वा यथावसरकार्यकर्त्तारः, संयात्राः=संगताः मिलिताः सन्तो देशान्तरगामिनः, नौ वाणिजकाः=नौकया वाणिज्यकारिणः भाण्डपतयः सर्वेऽते व्यापृतवन्तः स्व स्व व्यापारे प्रवृत्ताः सन्तः, तां नावं पूर्णोत्सङ्गां विविधक्रयाणकजातैः

है-उक्तश्च अपि द्वादशमे चन्द्रे पुष्यः सर्वार्थसाधन : । इस समय विजय मुहूर्त वर्त रहा है । प्रस्थान के लिये यह समय शुभावह हैं । (तओ पुस्समाणवेणं वक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज्ज संजात्ता णावा वाणियगा वावारिसु) इस तरह पुष्प मानव-चारण जब मंगल ध्वनि कर चुका-तब हर्षित और संतुष्ट हुए कुक्षिधार-नौका के पार्श्व में नियोजित किये गये संचालक जन, कर्णधार-खेवटियाजन, गर्भज-नौका के भीतर बैठ कर अवसरानुकूल कार्य कर्त्ता जन, और सांयात्रिक जन-मिलकर परदेश जाने वाले पोतवणिक् कि जिन का क्रयाणक नौका में भरा हुआ था-ये सब के सब अपने २ व्यापार-कार्य में प्रवृत्त हो गये (तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्ण मुहिंबंधणेहिंतो मुंचंति) और उस नौका को कि जिस का मध्यभाग विविध क्रयाणकों से पूर्ण

પ્રશસ્ત હોય છે-કહ્યું પણ છે- " अपिद्वादशमे चन्द्रे पुष्यः सर्वार्थसाधनः ") અત્યારે વિજયના મુહૂર્તનો સમય ચાલી રહ્યો છે. પ્રસ્થાન માટે અત્યારનો વખત શુભાવહ છે.

(तओ पुस्समाण वेणंवक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधार गब्भिज्ज संजात्ता णावावाणियगा वावारिसु)

આરીતે જ્યારે પુષ્પમાનવો-ચારણો-નો મંગળ પાઠ થઈ ચૂકયો ત્યારે હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયેલા કુક્ષિધાર-નૌકાના પાર્શ્વભાગમાં નિયુક્ત કરાયેલા સંચાલકો, કર્ણધાર-નૌકાચલાવનારાઓ, ગર્ભજ-નૌકાના અંદરના ભાગમાં બેસીને અવસરાનુકૂળ કામ કરનારાઓ અને સાંયાત્રિકજનો-વેપારીઓ-કે જેમની વસ્તુઓને નૌકામાં લાદેલી હતી, પોતપોતાના કામમાં વળગી ગયા.

(तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिं तो मुचंति)

અને જેના વચ્ચેના ભાગમાં અનેક જાતની વેચાણની વસ્તુઓ ભરેલી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभृतान्तरालां, पूर्णमुखीं यथोचितसंभृताग्रभागां बन्धनेभ्यः तीरस्थशङ्कुबद्धरज्जु-बन्धनग्रन्थिमुन्मुच्य मुञ्चन्ति=विसर्जयन्ति ॥ सू०१९ ॥

मूलम्—तएणं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी२ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा, तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजात्तामावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं२ आगासे देवयाओ नच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति, तालजंघं दिवंगयाहिं बाहाहिं ससिमूसगमहिसकालगं भरियमेहवन्नं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालियजमलजुयलजीहं आऊसियवयणगंडदेसं चीणचिविटनासियं विगयभुग्गभुमयं खज्जोयगदित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसियपयालियपयडियगत्तं पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं अभिगज्जंतं बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पलगवल-

भरा हुआ था तथा अग्रभाग भी जिस का यथोचित अनेक प्रकार की संचालन सामग्री से व्याप्त हो रहा था तीर पर की कील में बंधी हुई रस्सी के बंधन को खोलकर छोड़ दिया। सूत्र " १९ "

હતી અને અગ્રભાગમાં યથોચિત જાતજાતની સંચાલન સામગ્રી ભરેલી હતી એવા વહાણને કિનારા ઉપર ના થાંભલાનું બંધન ખોલીને મુક્ત કરવામાં આવ્યું. ॥ સૂત્ર " ૨૦" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुलिय अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिंगहाय अभिमुहमाव-
यमाणं पासंति ॥ सू० २० ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु सा नौ विमुक्तबन्धना बन्धनरहिता पवनबलसमाहता=वायुवेगप्रेरिता 'उस्सियसिया' उच्छ्रितसितपटा नौकायां वायुसंग्रहार्थं बृहद्वस्त्रमुच्छ्रितं कृत्वा निबध्यते, उच्छ्रितशुक्लपटेन सा नौः कीदृशीत्याह-'वितत पक्खा इव गरुडजुवई' विततपक्षेव गरुडयुवतिः विततपक्षा=प्रसारितपक्षा गरुडभार्या गगने गच्छन्ती, यथा भवति तद्वदित्यर्थः, गङ्गासलिलतीक्ष्णस्रोतोवेगैः गङ्गाजलस्य ये तीक्ष्णास्तीव्राः स्रोतोवेगाः=प्रवाहवेगास्तैः संक्षुभ्यन्ती२ प्रेर्यमाणा २ समुद्रं प्रतीति भावः,'उम्मीतरङ्गमालासहस्साइं' ऊर्मितरङ्गमालासहस्राणि ऊर्मयो महाकल्लोला बृहत्तरङ्गाः, तरङ्गाः=ह्रस्वकल्लोलाः लघुतरङ्गास्तेषां माला आवलयः तासां सहस्राणि, समति क्रामन्ती २ समुत्तरन्ती २ कतिपयैर्बहुभिरहोरात्रैः दिवसैः रात्रिभिश्च लवणसमुद्रं अनेकानि योजनशतानि

'तएणं सा नावा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (विमुक्क बंधणा) बन्धन से विमुक्त हुई (सा नावा) वह नौका (पवणबलसमाहया) वायु के वेग से प्रेरित होकर (गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी २) गंगा जल के प्रवाह वेगों से बार २ इधर उधर क्षुभित होती हुई (उस्सियसिया) अपने ऊपर वायु संग्राहार्थ बांधे गये शुभ्रवस्त्र से (वितत पक्खा गरुड जुवईइव) पांखों को पसार कर आकाश में उड़ती हुई गरु युवती के जैसी प्रतीत होने लगी। (उम्मीतरंग मालासहस्साइं समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण समुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा)

'तएणं सा नावा' इत्यादि.

टीकार्थ-(तएणं) त्यार भाद (विमुक्कबंधणा) બંધન મુક્ત થયેલું (सा नावा) તે વહાણ (पवणबलसमाहया) પવનના આઘાતોથી પ્રેરિત થઇને (गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी) ગંગાના તીવ્રપ્રવાહથી ક્ષુભિત થતું. (उस्सियसिया) પવન ભરાઇને વહાણને ગતિમળે એવા પોતાના સ્વચ્છ સઢથી "वितत पक्खा गरुडजुवई इव" પાંખો પ્રસારેલી અને આકાશમાં ઉડતી ગરુડ યુવતીની જેમ લાગતું હતું.

(उम्मीतरंग माला सहस्साइं समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण समुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ओगाढा' अवगाहिता तीर्णा। ततस्तदनन्तरं खलु तेषाम् अरहन्नकप्रमुखाणां संयात्रा नौवाणिजकानां लवणसमुद्रमनेकानि योजनशतानि अवगाहितानां तीर्णानां सतां बहूनि 'उप्पाइयसयाइं' उत्पातशतानि प्रादुर्भूतानि। तान्युत्पादशतानि वर्णयति--

'तं जहा' इत्यादि। तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकालं-विना मेघध्वनिः, अकाले विद्युत् अकाले 'थणियसद्दे' स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिरभूत् तथा-अभीक्ष्णं=पुनः पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा-एकं च खलु महत् बृहत् पिशाचरूपं पश्यन्ति अरहन्नकप्रमुखाः संयात्रा नौ वाणिजकाः अकालमेघध्वनि-

---

घडे वेग के साथ ऊर्मियों-महालहरों के तरंगो के-छोटी २ लहरों के-माला सहस्र को उल्लंघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई। (तएणं तेसिं अरहन्नग पामोक्खाणं संजत्तानावा वाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयण सयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं) इस के बाद उन सांयात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका वणिकों को जब कि वे लवण समुद्र में अनेक सैकड़ों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से सैकड़ों उपद्रव सामने आने लगे।

(तं जहा) जैसे- (अकालेगज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ नच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

ખૂબજતીવ્ર વેગે નાનામોટા સેંકડો મોજાંઓ ને વટાવીને કેટલાક દિવસો બાદ વહાણ લવણસમુદ્રમાં ઘણા યોજનો દૂર સુધી પહોંચી ગયું.

(तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्तानावा वाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं)

ત્યાર બાદ સાંયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ પોતવણિકો લવણ સમુદ્રમાં જ્યારે સેંકડો યોજનો સુધી દૂર પહોંચીગયા ત્યારે સેંકડો આફતો તેમની સામે ઝઝૂમવાલાગી. (तं जहा) જેમ કે

(अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ नच्चंति, एगंच णं महं पिसायरूवं पासंति)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતાં મેઘ ગર્જનાઓ થવા માંડી, વીજળીઓ ઝબૂકવા લાગી અને મેઘનો ગંભિર ધ્વનિ પણ થવા માંડયો. આકાશમાં વારંવાર દેવતાઓ નાચતા જોવામાં આવવા લાગ્યા,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वकमेकं बृहत् पिशाचरूपं विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूतं तत् पिशाचरूपमित्याह-' तालजंघं ' तालजङ्घं तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिवं गताभ्यां गगनस्पर्शिभ्यां बाहुभ्यां महादीर्घाभ्यां बाहुभ्यां युक्तमित्यर्थः । मषीमूषकमहिषकालकं मषी-कज्जलं मूषको महिषश्च प्रसिद्धः तद्वत् कालकं कृष्णवर्णं यत्तत्तथा, भरियमेहवन्नं ' भृतमेघवर्णं = जलपूर्णघनीभूतमेघघटावदतिश्यामं, लम्बोष्ठं, निर्गताग्रदन्तं निर्गतानि :मुखाद्बहिर्भूतानि अग्राणि अग्रभागा येषां ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्तं, ' निल्ललियजमलजुयलजीहं ' निर्ललितयमलयुगलजिह्वम् निर्ललितं – मुखाद्बहिष्कृतं यमलं=समं युगलं द्वयं जिह्वयो र्येन तत्तथा, 'आऊसियवयणगंडदेसं' प्रविष्टवदन-

---

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गंभीर ध्वनि भी होने लगी। बार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगे।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा। (तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालगं) इस पिशाच की दोनों जंघाएँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थीं। दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे। कज्जल, मूषक, और महिष के समान इस का वर्ण काला था। (भरियमेहवन्नं, लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्ललिय जमलजुय लजीहं, आऊसिय वयणगंडदेसं, चीण चिपिटनासियं विगय भुग्ग-भग्ग भुमयं) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यंत काला था। ओष्ठ बडे लंबे थे। आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे। इस की जिह्वा के दोनो अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

તેમજ વિશાળ શરીરવાળા પિશાચનુંરૂપ પણ જોવામાં આવવા લાગ્યું. (तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं मासिमूसग महिसकालगं) તે પિશાચની બંને સાથળો તાલવૃક્ષની જેમ લાંબી હતી. બંને હાથ જાણે આકાશને સ્પર્શતા હોય. ભેંશ, ઉંદર અને પાડાના જેવો તેનો રંગ કાળો હતો.

(भरियमेहवन्नं, लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्ललियजमलजुयलजीहं, आऊसियवयणगंडदेसं, चीणचिपिटनासियं विगयभुग्गभग्गभुमयं)

પાણીથી ભરેલી સાન્દ્ર મેઘ ઘટાઓની જેમ તેનું શરીર ઘણું કાળું હતું. હોઠ ઘણા લાંબા અને નીચે લબડતા હતા. આગળના દાંત બહાર નીકળી ગયેલા હતા. તેની જીભના આગળના બંને ટેરવાં એકી સાથે મોંથી બહાર નીકળી રહ્યાં હતાં. તેના બંને ગાલ મોંમાં બેસીગયેલા હતા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गण्डदेशं प्रविष्टौ वदने गण्डदेशौ कपोलभागौ यस्य तत्तथा, 'चीणचिपिटनासियं' चीनचिपिटनासिकं, चीना=ह्रस्वा चिपिटा च नासिका यस्य तत्तथा, 'विगयभुग्गभग्गभुमयं' विकृतभुग्नभग्नभ्रुवम् विकृते सविकारे भुग्ने भग्ने= अतीववक्रे भ्रुवौ यस्य तत् तथा, खज्जोयगदित्तचक्खुरागं' खद्योतकदीप्तचक्षुरागं, खद्योतकवदीप्तश्चक्षुरागो लोचनरक्तत्वं यस्य तत्तथा, उत्तासणगं' उत्त्रासनकं भयानकं विशालवक्षस्कं=विस्तीर्णोरः स्थलं, विशालकुक्षि=विस्तीर्णोदरम्, प्रलम्बकुक्षि–दीर्घोदरम्, 'पहसियपयलियं पयडियगत्तं' प्रहसितप्रचलितप्रपतितगात्रम्। प्रहसितानि प्रविकासितानि प्रचलितानि=प्रकम्पितानि प्रपतितानि प्रकर्षेण श्लथीभूतानि गात्राणि यस्य तत्तथा, पणच्चमाणं' प्रनृत्यत् 'अप्फोडंतं' आस्फोटयत्, अभिवयंतं' अभिव्रजत्, 'अभिगज्जंतं' अभिगर्जत्, बहुसो' अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं' बहु-

---

निकल रहे थे। दोनों कपोल इसके मुख के भीतर घुसे हुए थे–अर्थात् दोनों गाल इस के पिच के हुए थे।

नाक इस की छोटी और चपटी थी। इस की दोनों भौंहें विकृत भुग्न और भग्न थी। अथवा भुग्न भग्न थी अत्यन्त वक्र थी–(खज्जोयगदित्तचक्खुरागं, उत्तासणगं विसालवच्छं, विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसियपयालिय, पयडियगत्तं) इस की आँखों की ललाई खद्योत (आग्या) के समान दीप्त थी, उरस्थल (छाती) इस का भयोत्पादक था, पेट विस्तीर्ण और लंबा था। शरीर इस का प्रहसित प्रचलित एवं श्लथी भूत ढीला था। यह उस समय, (पणच्चमाणं अप्फोडंतं, अभिवयंतं अभिगज्जंतं, बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं) नृत्य कर रहा था। अपनी दोनों भुजाओं का आस्फालन (बजाता) कर रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि मानों गर्जना करता हुआ समक्ष (सामने) ही

તેનું નાક નાનું અને ચપટું હતું. તેની બંને ભમ્મરો વિકૃત અડબચડી અને ભગ્ન હતી. અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર–વાંસી–હતી.

(खज्जोयगदित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं, विसालकुच्छिं पलंब कुच्छिं, पहसिय पयालिय, पयडियगत्तं)

તેની આંખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી. તેનું વક્ષસ્થળ ભયંકર હતું. પેટ વિશાળ અને લાંબું હતું. તેનું શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત એટલે કે લબડી ગયેલું હતું. ત્યારે.

(पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं, अभिगज्जंतं, बहुसो २ अट्टट्टहासे त्रिणिम्मुयंतं)

તે નાચી રહ્યો હતો. પોતાના બંને ભુજાઓનું તે આસ્ફાલન (અફળાવવું)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शोऽट्टहासं विनिर्मुञ्चत् , ' नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिकुसुमप्पगासं ' नीलोत्पल गवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशं=नीलोत्पलं=नीलकमलं, गवलं=महिषशृङ्गं, गुलिका =कृष्णवर्णवस्तुविशेषः प्रसिद्धः, अतसीकुसुमम् , अतसी=अलसीनाम्नाप्रसिद्धो धान्य-विशेषस्तस्य कुसुमं=पुष्पं तद्वत् प्रकाशो वर्णो यस्य स तथा तम् , नीलकमलादि-सदृशवर्णमित्यर्थः, खुरधारं क्षुरधारं क्षुरस्येव धारा यस्य स तत्तथा तम् अतितीक्ष्ण धारमित्यर्थः, असिं = कृपाणं, गृहीत्वा, अभिमुहमावयमाणं ' अभिमुखमापतत् पश्यन्ति सर्वेऽपि सांयात्रिकाः अरहन्नकप्रमुखा अवलोकन्ते स्म ॥ सू० १९ ॥

मूलम्–तएणं ते अरहण्णगवज्जा संजत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति तालजंघं दिवं गायाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं भरियमेहवन्नं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्ठं धवलवट्टअसिलिट्ठ तिक्ख-थिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं विकोसियधारासिजुयलसमस-

आ रहा है। बार बार तो यह अट्टहास करता था। (नीलुप्पलगवल गुलिय अयसि कुसुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय अभिमुह मावय माणं पासंति) नीलकमल, गवल-महिष शृंग, गुलिका-कृष्ण वर्णक विशेष, अलसी पुष्प, के समान इसका सारा शरीर अत्यंत काला था।

यह एक तलवार लिये हुए था, जिस की धारा क्षुरा की धारा के समान तीक्ष्ण थी। उन अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिको ने उसे इस तरह से देखा कि वह उस तलवार को लेकर हम लोगों की ओर आरहा है। सूत्र " २० "

કરી રહ્યો હતો. તેને જોઇને એમજ લાગતું હતું કે તે જાણે ગર્જના કરતો સામે આવી રહ્યો હોય તે વારંવાર અટ્ટહાસ "ખડખડાટ કરીને હસવું" કરતો હતો.

(नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय अभिमुह-मावयमाणं पासंति)

નીલકમળ, ગવલ, કપડાંનાં ગુલિકા-કૃષ્ણવર્ણક વિશેષ, અળસીના પુષ્પની જેમ તેનું શરીર ઘણું કાળું હતું.

તેના હાથમાં છરાનીધાર જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવાર હતી. અરહન્નક પ્રમુખ સાંયાત્રિકોને એમ થયું કે તે પિશાચ હાથમાં તલવાર લઇને તેમની તરફ જ ધસી આવી રહ્યો છે. ॥ સૂત્ર " ૨૦ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरंतनिल्लालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयबीभच्छलालपगलंतरत्ततालुयं हिंगुलुयसगब्भकंदरविलंबअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं आऊसियअक्खचम्मउट्ठद्धगंडदेसं चोणचिपिडवंकभग्गणासं रोसागयधमधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिर ओभुग्गणासियपुडं घाडुब्भडरइयभीसणमुहं उद्धमुहकन्नसक्कुलियं महंत विगयलोमसंखालगलंबंतचलियकन्नं पिंगलदिप्पंतलोयणं भिउडितडियनिडालं नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंत पुप्फुयायंतसप्पविच्छुय गोधंदरनउलसरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्नपूरं मज्जारसियाललइयखंधं दित्तवुघुयंतं घूयकयकुंमलसिरं घंटारवेण भीमं भयंकरं कायरजणहिययफोडणं दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंता भिन्नणहरोममुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मवितताऊसवियबाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्ध अणिट्ठ दित्त असुभ अप्पिय अमणुन्न अक्कंतवग्गुहि य तज्जयंतं पासंति, तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया० संजायभय अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा२ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिट्ठंति ॥१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सांयात्रिकैः पिशाचरूपं दृष्टं, तत्रारहन्नकश्रावकवर्ज्यैर्यत्कृतं तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं वर्णयन्नाह-'तएणं' इत्यादि।

ततस्तदनन्तरं खलु तेऽरहन्नकवर्ज्याः संयात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणकं पिशाचस्वरूपं पश्यन्ति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीनां बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृशं पिशाचस्वरूपं पश्यन्तीत्याह-'एगं च णं महं' इत्यादि। एकं च खलु महान्तं तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूतं तालपिशाचमित्याह-'तालजंघं' इति तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिवं गताभ्यां=गगनस्पर्शिभ्यां बाहुभ्यां युक्तं, स्फुटं शिरसं=स्फुटं स्फुटितं बन्धनरहितत्वाद् विकीर्णं शिरः शिरोजातत्वाद् केशजालं यस्य स तथा तं, 'भमरणिगरवरमा-

'तएणं ते अरहण्णगवज्ज' इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सांयात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के बिना उस विकराल पिशा च को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (संजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोत वणिक् जनों ने (एगं च णं महं तालपिसायं पासंति) एक बड़ा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लंबी २ जंघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानों आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

'तएणं ते अरहण्णगवज्जा' इत्यादि

ટીકાર્થ—સૂત્રકાર અહીં ફરી પિશાચનું સવિશેષવર્ણન કરવાની ઈચ્છાથી કહે છે કે પિશાચને જોઈને અરહન્નક શ્રાવક સિવાયના બાકીના બીજા બધા સાંયત્રિકોની શું સ્થિતિ થઇ અને તે વિકરાળ પિશાચનું રૌદ્ર સ્વરૂપ જોઈને તેઓએ શું શું કર્યું એનું વર્ણન કરતાં પહેલાં તે પિશાચના સ્વરૂપનું વિશેષ રૂપથી વર્ણન હું અહીં કરું છું-

"तएणं" ત્યાર બાદ "अरहन्नगवरज्जा" અરહન્નક શ્રાવકના સિવાય "संजत्ताणावा वाणियगा" બધા સાંયાત્રિક પોતવણિક જનો એ "एगं च णं महं तालपिसायं पासंति" મોટા તાલવૃક્ષ જેવો અને તાલ વૃક્ષ જેવી મોટી સાથળો વાળો પિશાચ જોયો.

તેના બંને હાથ આકાશને સ્પર્શતા હતા. છૂટા પડેલા તેના માથાના વાળ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरासिमहिसकालगं ' भ्रमरनिकरवरमापराशिमहिषकालकं=तत्र भ्रमरनिकर इव=भ्रमरसमूह इव वरमापराशिरिव, महिष इव च यः कालकः=कृष्णवर्णकस्तं, 'भरियमेहवन्नं ' भृतमेघवर्णं=जलपूर्णमेघघटावदतिनीलम्, ' सुप्पणहं ' शूर्पनखं शूर्पवत् नखा यस्य स शूर्पनखस्तं, फालसदृशजिह्वं, फालमिहाग्नौ प्रतापितं बोध्यम्, तत्सादृश्यं च वर्णदैर्घ्यदीप्त्यादिभिरिति, लम्बोष्ठं=दीर्घौष्ठं, ' धवलवट्ट असिलिट्ठ तिक्खथिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं ' धवलवृत्ताश्लिष्टतीक्ष्णस्थिरपीनकुटिलदंष्ट्रोपगूढवदनं ' धवलाभिः=श्वेताभिः, वृत्ताभिर्वर्तुलाभिरश्लिष्टाभिर्विरलाभिः तीक्ष्णाभिः स्थिराभिर्दृढाभिः उपचितत्वेन पीनाभिः=स्थूलाभिः वक्रतया कुटिलाभिश्च दंष्ट्राभिरुपगूढं व्याप्तं वदनं यस्य स तथा तम् अतिविशालदंष्ट्रमित्यर्थः, ' विकोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुय चंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरंतनिल्लालियग्गजीहं' विकोशितधारासियुगल समसदृशतनुकचञ्चलगलद्रसलोलचपलफुरफुरायमाणनिर्लालिताग्रजिह्वम्, तत्र विकोशिता=अपनीतावरणा धारा ययोस्तौ विकोशित-

---

शिर के बाल बंधन रहित होने से इधर उधर बिखरे हुए थे ! इस का वर्णभ्रमर समूह उडद की राशि और महिष के शृंग जैसा काला था। (भरिय मेहवन्नं) जल से भरी हुई मेघ घटा के समान अत्यन्त श्याम था।

(सुप्पणहं, फाल सरिस जीहं लंबोट्ठं, धवलवट्ट आसिलिट्ठ तिक्ख थिर पीणकुडिलदाढोवगूढवयणं) नख इस के सूप (सूपड़ा) जैसे थे। जिह्वा इस की अग्नि में लाल किये गये फाल के समान थी। ओष्ठ लंबे २ थे। इसका मुख श्वेत, गोल, २ विरलो, नुकीली, स्थिर-दृढ-स्थूल और कुटिल टेढी २ दांडों से युक्त था।

(विकोसिय धारासिजुयल समसरिसतणुयं चंचल गलंत रस लोल चवलफुरुफुरंत निल्लालियग्गजीहं) इस की जिह्वा दोनों अग्र

આમતેમ વિખેરાઈ ગયા હતા. તેનોરંગ ભમરાઓના ટોળા, અડદનો ઢગલો અને પાડાના શિંગડાં જેવો કાળો હતો "भरिय मेहवन्नं" પાણીથી ભરેલી મેઘની ઘટાઓની જેમ ખૂબજ કાળો હતો.

(सुप्पणहं, फालसरिसजीहं लंबोट्ठं, धवलवट्ट, आसिलिट्ठ, तिक्खथिरपीण कुडिलदाढोवगूढवयणं)

તેના નખો સૂપડા જેવા હતા. તેની જીભ અગ્નિમાં લાલચોળ થઈ ગયેલી હળની કોસ જેવી હતી તેના હોઠ લાંબા હતા. તેનું મોં સફેદ ગોળ મટોળ અણિયાળી, મજબૂત મોટી તેમજ કુટિલ ત્રાંસી દાઢો વાળું હતું.

(विकोसिय धारासियजुयलसमसरिसतणुयं चंचलगलंतरसलोलचवलफुरफुरंत निल्लालियग्गजीहं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारौ तयोरस्योः खड्गयोर्युगलं=द्वयं तेन समसदृश्यौ-अतितुल्ये तनुके-प्रतले, चञ्चलं यथाभवति, यथाऽविश्रान्तं गलन्त्यौ=रसातिलालसत्वात् लालाबिन्दूनधः पातयन्त्यौ, अतएव रसलोले-रसास्वादानुरक्ते, चपले चञ्चले, अतएव फुरफुरायमाणे-प्रकम्पमाने, निर्लालिते मुखाद्बहिष्कृते, अग्रजिह्वे-अग्रभूतजिह्वे जिह्वाग्रे येन स तथा तम् अतिदीर्घजिह्वमित्यर्थः तथा-' अवयच्छियमहल्लविगयबीभच्छ लालपगलंतरत्ततालुयं ' प्रसारितमहाविकृतबीभत्सलालाप्रगलद्रक्ततालुकम्, प्रसारितं मुखप्रसारणेन दृश्यमानं महाविकृतं बीभत्सं लालाभिः प्रगलद्रक्तं च तालु यस्य स तथा तं मुखप्रसारणप्रकटीभूतमहाविकृतलालापूर्णरक्ततालुवन्तमित्यर्थः तथा-' हिंगुलुयसगब्भकंदरविलंबअंजणगिरिस्स ' हिङ्गुलुकसगर्भकन्दरबिलामिवाञ्जनगिरेः-हिङ्गुलकेन रक्तवर्णकद्रव्यविशेषेण सगर्भं=सान्तरालं कन्दररूपं बिलमिव अञ्जनगिरेः=कज्जलपर्वतस्य मुखप्रसारेण रक्तातिदीर्घ जिह्वा तालु युक्तमुख विवरस्य हिङ्गुलक पुञ्जसम्भृतकन्दरसादृश्यादति कृष्णवर्णमहाविशालशरीरस्याञ्ज-

---

भाग म्यान से निकाली हुई तलवार के समान तीक्ष्ण थी। पतलि थी। चंचल थी। रस में अतिलालसावाले होने के कारण उन से निरन्तर लार बह रही थी। रस के आस्वादन में वे अनुरक्त थे। चंचल होने के कारण वे कंप रहे थे। और मुख से बाहिर निकले हुए थे। तात्पर्य-इस की जीभ बहुत लंबी थी।

(अवयच्छिय महल्लविगयबीभच्छलालपगलंतरत्ततालूयं, हिंगुलुयसगब्भकंदरविलंबअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं) तालु इस का मुख के फाडते समय दिखलाई पड़ता था। महा विकराल था। बीभत्स था। लार से गीला हो रहा था और लाल था। इसका मुख अंजनगिरि (काला पर्वत) के हिंगुलक से भरे हुए कंदरा रूप बिल के

તેની જીભના બંને આગળનાં ટેરવાં મ્યાનમાંથી બહાર કાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતાં, પાતળાં હતાં ચંચળ હતાં અને વિષયના રસોને ગ્રહણ કરવા માટે અત્યંત લોલુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાંથી સતત લાળ ટપકયા જ કરતી હતી. તેઓ રસાસ્વાદમાં અનુરકત હતાં. ચંચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રૂજી રહ્યાં હતાં, અને મોંથી બહાર નીકળી રહ્યાં હતાં. મતલબ એ છે કે તેની જીભ ખૂબ લાંબી હતી

(अवयच्छियमहल्लविगयबीभच्छलालपगलंतरत्ततालूयं, हिंगुलुयसगब्भकंदरविलंबअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं)

મોં પહોળું કરતી વખતે તેનું તાળવું દેખાતું હતું. તે બીભત્સ હતું. લાળથીભીનું થઈ કહ્યું હતું અને લાલચોળ હતું. તેનું મોં અંજનગિરિ (કાળા પર્વત) ના હિંગળોથી ભરેલી કંદરાના દર જેવું હતું તે બહુ વિશાળ અને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगिरिसाम्याद् अञ्जनगिरेः कन्दरमिव तन्मुखं प्रतिभातीतिभावः । ' अग्गिजालुग्गिलंतवयणं ' अग्निज्वालोद्गिरद् वदनम् अग्निज्वाला उद्गिरद्=बहिष्कुर्वद्=वदनं मुखं यस्य स तथा तम् , यस्य मुखाद् अग्निज्वालानिस्सरति तथाविधमित्यर्थः, ' आऊसिय अक्खचम्मउइट्ठगंडदेसं ' आयुषिताक्षचर्मापकृष्ट गण्डदेशम्-आयूषितं=वलियुक्तम् यदक्षचर्म-शुष्को जलाकर्षण कोशस्तद्वदपकृष्टौ=अन्तः प्रविष्टौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तम् , ' चीणचिविडवंकभग्गणासं ' चीनचिपिट वक्रभग्ननासं=चीना=ह्रस्वा, चिपिटा=निम्ना, वक्रा=कुटिला, भग्ना=भग्नेव अयोघनोपरिकुट्टनेन मृतेव नासा यस्य स तथा तं, चिपिटनासिकावन्तमित्यर्थः ' रोसागयधमधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिरं ओभुग्गणासियपुडं ' रोषागतधमधमायमानमारुतनि-

---

समान था। यह स्वयं अति विशाल और अत्यंत काले वर्ण का था इस लिये अंजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिङ्गुल के समान लाल थे।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अंजनगिरि की हिंगुलक से भरी हुई कंदरा से उपमित किया है। इस के मुख से अत्यन्त लाल जिह्वा और तालु वाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि मानों अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है। (आऊसियअक्खचम्म उइट्ठगंडदेसं, चीणचिपिडवंकभग्गणासं रोसागयधमधमेंतमारुत निट्ठुरं खरफरुसझुसिरओभुग्गणासियपुयडं, घाडुब्भडरइयभीसणमुहं) इस के दोनों कपोल (गाल) पानी को खीच ने वाले शुष्क वलि युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे। नासिका इस की ह्रस्व चिपटी थी। टेडी इस नासि का के छेदों से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળારંગનું હતું. એટલા માટે જ તે અંજનગિરિ જેવું હતું. તેની જીભ અને તાળવું બન્ને ખૂબજ લાલ હતાં એથી તેઓ હિંગળોક જેવા લાલ હતાં.

સૂત્રકારે અંજનગિરિની હિંગળોકથી ભરેલી કંદરાની તેના મોંની જે ઉપમા આપી છે. તેની પાછળ એજ કારણ છે. તેનું તાળવું અને જીભ ખૂબજ લાલ હોવાથી એમ લાગતું હતું કે જાણે તેના મોંમાંથી અગ્નિની જવાળાઓ બહારનીકળી રહી હોય.

(आऊसिय अक्ख चम्म उइट्ठगंडदेसं चीण चिपिडवंक भग्गणासं रोसागय धममेंत मारुत निट्ठुरं खर फरुस झुसिरओ भुग्गणासियपुडं धाडुब्भडरइयभीसणमुहं

તેના બંને ગાલ કોસની જેમ કરચલીયોવાળા જેમ મોંમા પેસી ગયેલા હતા. નાક તેનું નાનું અને ચપટું હતું. ત્રાંસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्ठुरखरपरुषशुषिरावभुग्ननासिकापुटम् रोषात् क्रोधादिवागतः प्रबलतया धमधमायमानः धमधमेतिशब्दं कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठुरस्तीव्रः खरपरुषः=अतिकर्कशः परमदुःसहः, शुषिरयोः=रन्ध्रयोर्यस्य तत्तथा, तदेवं भूतम्-अवभुग्नं-वक्रं नासिकापुटं यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमधमायमानश्वासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाडुब्भडरइयभीसणमुहं' घाटोद्भटरचितभीषणमुखं=तत्र घाटाभ्यां शिरोऽवयवविशेषाभ्याम् उद्भटं विकरालं दुर्दर्श रचितम् अतएव भीषणं भयंकरं, मुखं यस्य स तथा तं विकृतभयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलियं' ऊर्ध्वमुखकर्णशष्कुलीकम्=ऊर्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम्। तथा-'महंतविगयलोमसंखालग्गलंबंतचलियकन्नं' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानचलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि असुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्खः=अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=संलग्नौ संस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ यस्य स तथा तम्, 'पिंगलदिप्पंतलोयणं' पिङ्गलदीप्यमानलोचनं=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानों बडे क्रोध से आ रहा है-और इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम २ शब्द होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता था। वह तीव्र था अतिकर्कश था कठोर था। दुःसह था। उस का मुख शिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह बड़ा भयंकर लगता था।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलियं) इस के दोनों कर्णपुट ऊँचे उठे हुए थे। (महंतविगयलोमसंखालग्गलंबंतचलियकन्नं) इन दोनों कानों के रोम इस के महा विकराल थे शंख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान फैले हुए थे। इसीलिये ये बडे लंबे थे और चंचल थे।

નીકળતો હતો તે એમ જણાતો હતો કે જાણે બહુ ક્રોધમાં ભરાઇને તે સામે ધસી આવતો હોય, એથી જ જ્યારે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા (ધમણ) માંથી જેમ 'ધમ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવો જ ધ્વનિ થયા હતો. તે તીવ્ર, કર્કશ કઠોર અને દુઃસહ હતો. તેના મોંના કઇ રૂપા અવયવોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયંકર લાગતો હતો.

(उद्धमुहकन्नसक्कुलियं) તેની બંને તરફની કાનપટી ઉંચે ઉપસેલી હતી (महंतविगयलोमसंखालग्गलंबंतचलियकन्नं) બંને કાન પરના રુવાંટા મહાવિકરાળ હતાં. આંખના ખૂણાઓસુધી તેના બંને કાન ફેલાયેલા હતા. એટલા માટે જ એઓ લાંબા અને ચંચળ હતા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीप्यमाने=भास्वरे, लोचने यस्स स तथा तम्, मार्जारवस्प्रदीप्तनेत्र मित्यर्थः, तथा =' भिउडितडियनिडालं ' भ्रुकुटितडिल्ललाटं=भ्रुकुटिः- भ्रूवक्रता कोपकृता सैव तडिद् यस्मिन्, तथाविधं ललाटं, भालं यस्य स तथा तम् कोपावेषेन विद्युत्सदृश-भ्रूसमुल्लसितललामयुक्तमित्यर्थः। तथा-' नरसिरमालपरिणद्धचिंधं ' नरशिरोमाला-परिणद्धचिन्हं=नरशिरोमालैव परिणद्धं=परिधृतं चिह्नं=पिशाचत्वं बोधकं लक्षणंयेन स तथातं=नरतुण्डमाला धारिणमित्यर्थः। तथा-'विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं' विचित्रगोनससुबद्धपरिकरं=विचित्रैः=बहुवर्णकयुक्तैः, गोनसैः=सर्पविशेषैः, सुबद्धः परिकरः कवचो येन स तथा तम्, ' अवहोलंतपुप्फुयायंतसप्पविच्छुय गधुंदरनउलसरड विरइयविचित्तवेयच्छमालियागं ' अवधोलयत् फुत्कुर्वत् सर्पवृश्चिकगोधोन्दुरनकुल-सरटविरचितविचित्रवैकक्षमालिकं=अवधोलयन्तः किंचिम् प्रसर्पन्तः फूत्कुर्वन्तश्च ये सर्पाः वृश्चिकाः गोधा उन्दुरा नकुलाः सरटाश्च तैर्विरचिता विचित्रा विविध-वर्णवती, वैकक्षमालिकास्कन्धलम्बितमाला यस्य स तथा तम्, स्कन्धदेशे फुत्कार-

(पिंगलदिप्पंतलोयणं, भिउडितडियनिडालंनरसिरमालपरिणद्धं चिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंतपप्फुयायंतसप्प विच्छुय गोधंदरनउलसरडविरइयं विचित्तवेयच्छमाल यागं) इस की दोनों आँखे मार्जार (बिल्ली की तरह पीली और चमकीली थीं। इस का ललाट भ्रू वक्रता रूप बिजली से युक्त था इस ने पिशाचत्व के बोधक नरमुंडकी माला रूप चिह्न को धारण कर रक्खा था। इस ने जो कवच पहिरा हुआ था-वह अनेक वर्णवाले सर्पो से व्याप्त हो रहा था। अथवा-कवचके स्थानापन्न इस ने विविध वर्णवाले सर्पो को अपने शरीर पर धारण कर रक्खा था।

स्कंध देश में, इधर उधर, सरकते हुए तथा फुत्कार करते हुए सर्पों की, वृश्चिकों की, गोहों की, उन्दुरों की, नकुलों की, सरटों की, विविध

(पिंगलदिप्पंतलोयणं भिउडितडियनिडालं नरसिर-मालपरिणद्धं चिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंतपप्फुयायंतसप्पविच्छुयगोधंदरनउलसरडविरइयं विचित्तवेयच्छमालयागं)

તેની બંને આંખો બિલાડાની જેમ પીળી અને ચમકતી હતી. વક્રભ્રૂ (ભ્રમર) રૂપ વીજળીથી તેનું કપાળ યુકત હતું. પિશાચપણાના પ્રમાણ રૂપે તેણે નરમુંડની માળા પહેરેલી હતી. ઘણારંગના સાપોથી તે આવેષ્ટિત હતો. અથવા કવચના સ્થાને તેણે જાતજાતના રંગવાળા અનેક સાપોને શરીર ઉપર ધારણ કરેલા હતા.

બધા ઉપર આમતેમ હિલચાલ કરતા એટલે કે સરકતા તેમજ ફુત્કાર કરતા સાપો, વીંછીઓ, ઘો, ઉંદરો, નોળિયાઓ, અને સરટોની અનેક રંગો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युक्तमसर्पत्सर्पादिमालाधारिणमित्यर्थः । तथा-' भोगकूरकण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्न पूरं ' भोगक्रूरकृष्णसर्पधमधमायमानलम्बमानकर्णपूरम्=भोगैः=फणैःक्रूरौ भयंकरौ भोगक्रूरौ, तौच कृष्णसर्पौ च भोगक्रूरकृष्णसर्पौ, तौ च धमधमायमानौ=फुत्कुर्वन्तौ तावेव लम्बमाने कर्णपूरे=कर्णालङ्कारविशेषौ यस्य स तथा तम्,तथा-परिधृतकृष्णसर्प कर्णभूषणमित्यर्थः ' मज्जारसियाललइयखंधं ' मार्जारशृगाललगितस्कन्धम्=मार्जा रशृगालालगिता संयोजिताः स्कन्धयोर्येन स तथा तम्, 'दित्तधुधुयंत घूयकयकुंतल-सिरं ' दीप्तधुधुकुर्वद्घूककृतकुंमलशिरस्कम्=दीप्तं-दीप्तस्वरं यथाभवत्येवं धुधुशब्दं कुर्वन्तो यौ घूकाः=उलूकाः तएव कृतः कुम्मलः शेखरकः शिरोभूषणं शिरसि येन स तथा तम्, शब्दायमानोलूकशिरोभूषणधारिणमित्यर्थः, तथा-घंटारवेण भीमं= भयंकरम् , घण्टानां शब्देन भीमं भयंकरम् , अतिभयानकम् , तथा-' कायरजण-हिययफोडणं ' कातरजनहृदयस्फोटनम्=कातरजनानां भीरुजनानां यानि हृद-

---

वर्ण संपन्न माला उस ने पहिरी हुई थी। (भोगकूरकण्हसप्पधम धमेंत लंबंतकन्नपूरं) कर्णपूरों के स्थान पर इसने फणावलि से भयंकर बने हुए, तथा फुत्कार करते हुए काले दो सर्पों को पहने रखे थे। (मज्जारसियाल लइय खंधं) अपने दोनों स्कन्धों पर इसने मार्जार और शृगालों को बैठा रखा था। (दित्तधुधुयंतघूयकयकुंतलसिरं) दीप्त स्वर जिस तरह से हो इस तरह से घू घू करते हुए उल्लुओं को इस ने अपने शिर का आभूषण-मुकुट बनाया था। (घंटारवेण भीमं भयं-करं कायरजणहिययफोडणं दित्तमत्तट्टहासं विणिम्मुयंतं वसारुहिर-पूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं) घंटाओं के शब्द से यह भयंकर बना हुआ था। कातरजनों के हृदय का भयजनक होने से यह विदारक बना

વાળી માળા તેણે પહેરેલી હતી. (भोगकूरकण्हसप्पधंमधमेंतलंबंतकन्नपूरं) કુંડ-લોના સ્થાને તેણે ફણાઓથી ભયંકર તેમજ ફુત્કાર કરતા બે કાળા સાપો પહે-રેલા હતા (मज्जारसियाललइयखंधं) પોતાના બંને ખભા ઉપર તેણે બિલાડા અને શૃગાલને બેસાડેલા હતા. (दित्तधुधुयंत घूयकयकुंतलसिरं) મોટા સાદે ' ધૂ ' ' ધૂ' કરનાર ઘૂવડોને તેણે પોતના માથાના આભૂષણ એટલે કે મુકુટ બનાવ્યા હતા.

(घंटारवेण भीमं भयंकरं जणहिययफोडणं दित्त मत्तट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं)

ઘંટના ભીમ ધ્વનિથી તે ભયંકર લાગતો હતો. કાતર જનોને હૃદયોના ભયથી વિદીર્ણ કરનાર હોવાથી તે 'વિદારક' હતો. વારંવાર તે મહા ભયંકર ઉગ્ર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यानि तेषां स्फोटनं भयजनकत्वेन विदारकं, तथा-दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं ' दिप्तमट्टाट्टहासम्=उग्रमट्टाट्टहासं विनिर्मुञ्चन्तं=प्रकुर्वन्तम्, तथा-' वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं ' वसारुधिरपूयमांसमलमलिनपोच्चडतनुम्=वसारुधिरपूयमांसमलैर्मलिनः पोच्चडा आर्द्रा ' पच पच ' कुर्वाणा तनुः शरीरं यस्य स तथातम्, तथा-' उत्तासणयं ' उत्त्रासनकम्=उद्वेजकं, विशालवक्षस्कम्=विस्तीर्णवक्षस्थलकम् 'पेच्छंताभिन्नणहरोममुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणीवसणं' प्रेक्ष्यमाणाऽभिन्ननखरोममुखनयनकर्णवरव्याघ्र चित्र कृत्तिनिवसनम्=तत्र प्रेक्ष्यमाणा-दृश्यमाना अभिन्नाः =अच्छिन्नानखाश्च रोमाणि च मुखं च नयने च कर्णौ च यस्यां सा प्रेक्ष्यमाणाऽभिन्ननखरोममुखनयनकर्णा सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा-विविधकर्णका, कृत्तिश्चर्म सैव निवसनं-परिधानं वस्त्रं यस्य स तथा तम् अखण्डव्याघ्रचर्मपरिधानमित्यर्थः, तथा-' सरसरुहिरगयचम्मवितउसवियबाहुजुयलं ' सरसरुधिरगजचर्म विततोच्छ्रृतबाहुयुगलं=सरसं-रुधिरार्द्रं यद् गजचर्म, तद् विततं-विस्तारितं यत्र तत् सरसगजचर्मविततं, तदेवं भूतम् उच्छ्रृतम् उत्थापितं बाहुयुगलं येन स तथा तम्

हुआ था घार २ यह महा उग्र, अट्टहास कर रहा था। इस का शरीर वसा-चर्बी, रुधिर, पूय-पीप, मांस एवं मल इन से मलिन हो रहा था। और मसक ने पर पच पच इस प्रकार का शब्द करने लगता था।

(उत्तासणयं, विशालवच्छं पेच्छंताभिन्नणहरोममुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं, सरसरुहिरगयचम्मवितउसवियबाहुजुयलं) इसे देखते ही लोग काँप जाते थे,। इस का वक्षस्थल (छाती) बहुत विशाल था। इस ने जो व्याघ्र का विविध वर्ण वाला चर्म रूप वस्त्र पहिर रखा था उस में स्पष्ट रूप से व्याघ्र के अच्छिन्न नख, रोम, मुख, नयन' और कान दृष्टिगत हो रहे थे। अपने उत्था पित किये हुए बाहु युगल मे इस ने लम्बा खून से लथ पथ हुआ गीला गज का चमड़ा धारण कर रखा था। (ताहियखरफरुसअसि

અટ્ટહાસ કરતો હતો. તેનું શરીર વસા-ચર્બી, લોહી, પીપ, માંસ અને મળથી ખરડાયેલું હતું. અને જોરથી દબાવાથી (ફસકી જવાથી) 'પચ' પચ શબ્દ થતો હતો.

(उत्तासणयं, विसालवच्छंपेच्छंता भिन्नणह रोममुहनयणकन्नवरवग्ध चित्तकत्ती णिवसणं, सरससहिरगयचम्म वितत ऊसवियबाहुजुयलं)

તેને જોતાની સાથે જ માણસો ધ્રૂજવા માંડતા હતા. તેનું વક્ષસ્થળ ખૂબજ પહોળું હતું. અનેક જાતના રંગોના પહેરેલા વાઘના ચામડાના વસ્ત્રમાં વાઘના આખા નખો, રુંવાંટા, મોં આંખે અને કાન સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ રહ્યાં હતાં. ઉંચા કરેલા બંને હાથમાં તેણે લોહીથી ખરડાયેલું લાંબુ હાથીનું ચામડું પહેરેલું હતું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊर्ध्वीकृतभुजद्वयलम्बमानपक्षरद्रुधिरगजचर्मधारिणमित्यर्थः । तथा–' ताहिय खर फरुसअसिणिद्धअणिट्ठदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कंतवग्गूहि य तज्जयंतं' ताभिश्च खरपरुषास्निग्धनिष्ठदीप्ता शुभा प्रिया मनोज्ञा कान्तवाग्भिश्च तर्जयन्तं=ताभिः =तादृशीभिर्भयंकराभिश्च, खरपरुषा=अतिकर्कशा, अस्निग्धाः=स्नेहरहिता, अनिष्टा=दुःश्रवत्वेनानीप्सिताः, दीप्ता=उपतापजनकत्वादुज्ज्वलाः, अशुभाः=अमङ्गलाः, अप्रियाः–श्रुतिकटुत्वात्, अमनोज्ञाः=मनोविकृतिजनकत्वात्, अकान्ताश्च विकृतस्वरत्वाद् या वाचस्ताभिश्च तर्जयन्तं=त्रस्तयन्तं पश्यन्तिस्म । अथ पुनस्तत् ताल पिशाचरूपं ' एज्जमाणं ' एजमानं=नावंप्रति अभ्यागच्छत् पश्यन्ति, दृष्ट्वा भीताः, त्रस्ताः, त्रसिताः, उद्विग्नाः, संजातभयाः अन्योन्यस्य=परस्परस्य, कायं=शरीरं, ' समतुरंगेमाणा २ ' आश्लिष्यन्तः २ बहूनामिन्द्राणां च स्कन्दानां=कार्तिकेयाणां च, रुद्रशिववैश्रमणनागानां नागो–भवनपतिविशेषः, भूतानां यक्षानां च भूतयक्षाः

णिद्ध अणिट्ठदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कंतं वग्गूहिं य तज्जयंतं पासइ) उस ताल पिशाच को भयंकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह शून्य, अनिष्ट, उपताप जनक, अमंगल रूप अप्रिय अमनोज्ञ, एवं अकान्त ऐसी अपनी वाणी से दूसरों को दुःखित करता हुआ उन लोगोंने देखा।

(तं तालं पिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता, भीया० संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाणय खंदाण य रुद्दसिव वेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ठं किरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठंति) और साथ में यह भी देखा की वह ताल पिशाच का रूप हम लोगों की ओर आ रहा

(ताहि य खरफरुस असिणिद्ध अणिट्ठदित्त असुभअप्पियअमणुन्नअक्कतं वग्गूहिंय तज्जयंतं पासइ)

તાલ પિશાચને તે લોકોએ પોતાની ભયંકર, અત્યંત કર્કશ, સ્નેહ રહિત, અનિષ્ટ ઉપતાપ જનક, અમંગળરૂપ અપ્રિય અમનોજ્ઞ, અને અકાન્ત (બીભત્સ) વાણીથી બીજાઓને ત્રાસ આપતો જોયો.

(तं तालं पिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता, भीया० संजायभया, अन्नमन्नस्स, कायं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिववेसमण णागाणं भूयाणय जक्खाणय अज्जकोट्ठं किरिया य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—व्यन्तरभेदास्तेषाम्, तथा—आर्यकोट्टक्रियाणां च=आर्याप्रशान्तस्वभावा देव्यः, कोट्टक्रिया=चण्डिकारूपादेव्यः, तासां बहूनि उपयाचितशतानि=बहुविधानि मान्यताशतानि उपयाचमानाः २ कुर्वन्त २ स्तिष्ठन्ति ॥सू—२१ ॥

मूलम्—तएणं अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतित्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहराग णयणवन्ने अदीणविमणमाणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एवं वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि. तो मे कप्पइ पारित्तए अहणं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि, तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे त्तिकट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ, तएणं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी—हं भो ! अरहन्नगा अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया णो खलु

है इस बात को देख कर वे सब के सब भयभीत हो गये, डर गये, उद्विग्न हो गये। उन के प्रति प्रदेश में भय का संचार हो गया। इस तरह होकर वे सब परस्पर में एक दूसरे के शरीर से चिपक गये। और अनेक इन्द्रों की स्कन्द की कार्तिकेय की रुद्र की शिव की वैश्रमण की नाग की भूत की यक्ष प्रशान्त स्वभाव वाली देवियों की तथा चण्डि का रूप देवियों की सैकडों प्रकार बार २ मान्यता करने लग गये। सूत्र "२१"

તાલ પિશાચ ને તેઓએ પોતાની તરફ જ આવતો જોયો. આરીતે જોઇને તેઓ બધા ભયત્રસ્ત થઇગયા, બીગયા, ઉદ્વિગ્ન થઇગયા. તેમના આત્માના પ્રતિપ્રદેશમાં ભયનું સંચરણ થઇ ગયું. તેઓ ભયભીત થઇને એક બીજાને ચોંટી પડયા, અને તેઓમાંથી ઘણા ઇન્દ્રોની સ્કંદની, કાર્તિકેયની રુદ્રની, શિવની, વૈશ્રમણની, નાગની, ભૂતની, યક્ષની, પ્રશાંન્ત સ્વભાવવાળી દેવીઓની તેમજ ચંડિકારૂપ દેવીઓની સેંકડો પ્રકારની વારંવાર માનતા માનવા લાગ્યા. ॥ ॥ સૂત્ર " २१ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइणं तुमं सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोयवहणं दोहि अंगलियाहिं गेण्हामि, गिण्हित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता अंतो जलंसि णिव्वोलेमि जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तएणं से अरहन्नए समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी–अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहित्तिकट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥ सू० २० ॥

टीका—अरहन्नकवर्ज्यैः सांयात्रिकैर्यथानुष्ठितं तदुक्तम्, अधुनाऽरहन्नकेन पिशाचरूपमवलोक्य यत् कृतं तदाह–' तएणं ' इत्यादि । ततस्तदा खलु स अरहन्नकः अरहन्नकनामको मुख्यः सांयात्रिकः, श्रमणोपासकः=श्रावकस्तं दिव्यम्

तएणं से अरहन्नए इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद मुख्य सांयात्रिक अरहन्नक को छोड़ कर अन्य सांयात्रिकों ने जो २ किया उस के बाद (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक ने (तं दिव्वं पिसायरूवं पासित्ता) जब दिव्य

' तएणं से अरहन्नए ' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) અરહન્નક સિવાયના બીજા સાંયાત્રિકોની આવી હાલત થઇ ત્યાર બાદ (समणोवासए अरहन्नए) શ્રમણોપાસક અરહન્નકે (तं दिव्वं पिसायरूवं पासित्ता) જ્યારે તે દિવ્ય અપૂર્વદૃષ્ટ–અદ્ભુત–પિશાચના રૂપને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपूर्वदृष्टमद्भुतं पिशाचरूपम् एजमानं=नावं प्रति समागच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वाअभीतः, भयरहितः, अत्रस्तः त्रासमप्राप्तः अचलितः, अप्राप्तक्षोभः असंभ्रातः, संभ्रान्तिरहितः अनाकुलः, अव्यग्रः अनुद्विग्नः, अप्रकम्पः अभिन्नमुखरागनयनवर्णः= अभिन्नौ-अविकृतौ मुखरागनयनवर्णौ यस्य स तथा, तस्य भयाभावान्मुखरागोनयनवर्ण श्चान्यथा न अदीनविमानो जातइत्यर्थः मानसः=अदीनविमनः-नदीनं दैन्यप्राप्तं, नापि विमनः=दुर्मनः नापि विकृतं मानसं यस्य स तथा तस्य मनोऽप्यन्यथा न जातमित्यर्थः, तथा भूतः सन् पोतवहनस्य नौकायानस्यैकदेशे=एकभागे वस्त्रान्तेन=वस्त्राञ्चलेन खलु भूमिम्=उपवेशनस्थानं प्रमार्जयति प्रमार्ज्य स्थानम्-उपवेशनार्हं स्थानं संशोध्य जीवादिरहितं कृत्वा तत्र तिष्ठति=उपविशति, स्थित्वा=उपविश्य करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं =वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-नमोऽस्तु अर्हद्भ्यो यावत् सिद्धिगतिनामधेयं

अपूर्वदृष्ट-अद्भूत-पिशाच रूप को (एज्ज मानं) नाव की तरफ आता हुआ (पासइ) देखा-तो (पासित्ता देखकर वह (अभीए) डरा नहीं (अतत्थे) त्रस्त नहीं हुआ (अचलिए) धैर्य से चलायमान नहीं हुआ (असंभंते) घबराया नहीं (अणाउले) आकूल व्याकुल नहीं बना (अणुव्विग्गे) उद्विग्न नहीं हुआ (अभिन्न मुहरागणयणवन्ने) उस के मुख का राग और नयनों का वर्ण विकृत नहीं बना (अदीणविमणमाणसे) उस का मन न दीन बना और न विकृत ही बना (पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थं तेणं भूमिं पमज्जइ) किन्तु नौका यान के एक तरफ वस्त्राञ्चल से भूमि को प्रमार्जित करने लगा- (पमज्जित्ता) प्रमार्जित कर के फिर वह (ठाणं ठाइ) बैठ ने के योग्य स्थान का संशोधन कर उसे जीवादि रहित कर वहां बैठ गया! (ठाइत्ता करयलओ

" एज्जमानं " પોતાના વહાણ તરફ આવતું " पासइ " જોયું ત્યારે " पासित्ता " જોઇને તે " अभीए " ભય પામ્યો નહિ, " अतत्थे त्रस्त थयो नहीं, " अचलिए " ધૈર્યથી વિચલિત થયો નહિ, " असंभंते " ગભરાયો નહિ, " अणाउले વ્યાકુળ થયો નહિ, (अणुव्विग्गे) ઉદ્વિગ્ન થયો નહિ, (अभिन्नमुहरागणयणवन्ने) તેના મોંનો રંગઅને આંખોના વર્ણનમાં જરાયે વિકૃત થયો નહિ (अदीणविमणमाणसे) તેનું મન દીન બન્યું નહિ તેમજ વિકૃત થયું નહિ. (पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ) તે વહાણના એક તરફની ભૂમિને વસ્ત્રના છેડાથી પ્રમાર્જિત કરવા લાગ્યો. (पमज्जित्ता) પ્રમાર્જિત કરીને તે (ठाणंठाइ) બેસવા યોગ્ય સ્થાનનું સંશોધન કરીને. સ્થાનને જીવ વગેરેથી રહિત બનાવીને ત્યાં બેસીગયો. (ठाइत्ता करयलओ एवं वयासी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानं संप्राप्तेभ्यः, यदि खल्वहम् एतस्मादुपसर्गाद् पिशाचकृतसंकटात्, निर्विघ्नो भवामि मुञ्चामि, तदा मे तथा=तावत्पर्यन्तं प्रत्याख्यातव्यम्० चतुर्विधभक्तप्रत्याख्यानं मयाऽनुष्ठेयमित्यर्थः, इति कृत्वा साकारभक्तं=चतुर्विधमाहारं प्रत्याख्याति०। ततस्तदनन्तरं खलु स पिशाचरूपधारी देवः, यत्रैवारहन्नकः अरहन्नकनामकः श्रमणोपासकः = श्रावकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यारहन्नकम्-एवं= वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हंभो ! अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित !=अप्रार्थितं

एवं वयासी) बैठ कर उस ने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाई। और उसे मस्तक पर रख कर आवर्त करते हुए वह इस प्रकार कह ने लगा-(णमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं) यावत् सिद्धगति को प्राप्त हुए अर्हंत प्रभुओं को नमस्कार हो (जइणं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए)

यदि मैं इस पिशाच कृत उपसर्ग से बच गया तो ही अशनादि ग्रहण करूँगा (अहं णं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे) यदि मैं इस उपसर्ग से नहीं बचा तो मेरे तावत्पर्यन्त चतुर्विध आहार का त्याग है (त्ति कट्टु) ऐसा विचार कर (सागारं भत्तं पच्चक्खाइ) उसने साकार चतुर्विध आहारका प्रत्याख्यान कर दिया। अर्थात् सागारी संथारा किया - (तएणं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वह पिशाच रूप धारी देव जहां वह श्रमणोपासक अरहन्नक बैठा था-वहां आया

બેસીને તેણે પોતાના બંને હાથની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર મૂકીને ફેરવતાં તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો-" णमोत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं" यावत्-सिद्धगतिने पामेला अर्हंत प्रभुओने मारा नमस्कार छे.

(जइणं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए

જો હું આ પિશાચના ઉપસર્ગોથી બચી જઈશ તોજ આહાર વગેરે ગ્રહણ કરીશ. " अहंणं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे " આ ઉપસર્ગથી મારી રક્ષા નહિ થાય તો તાવત્પર્યન્ત ચારવ્રતના આહારનો હું ત્યાગ કરું છું. " त्तिकट्टु " આમ વિચારીને " सागरं भत्तं पच्चक्खाइ " તેણે સાકાર ચતુર્વિધ આહારનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું.

એટલે કે તેણે સાગારી સંથારો કર્યો.

(तएणं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર બાદ પિશાચ રૂપ ધારીદેવ જ્યાં શ્રમણોપાસક બેઠાહતા ત્યાં આવ્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–यत् केनापि न प्रार्थितं मरणं, तत् प्रार्थितं येन, स अप्रार्थितप्रार्थितः। यद्वा–हे तत्सम्बोधनम् हे मरणप्रार्थक !–अप्रस्थित प्रस्थित। अप्रस्थितः येन प्रस्थित इव मुमूर्षुरित्यर्थस्तस्य संबोधनम्, हे मरणवाञ्छक ! यावत् इह यावच्छब्देन ' दुरंतपंतलक्खणा, हीणपुण्णचाउद्दसिया सिरिहिरिधीकित्ति ' इत्यन्तस्य संग्रहः। दुरन्तप्रान्तलक्षण ! दुरन्तं विपाककटु प्रान्तम् अवसानं लक्षणं स्वभावो यस्य स तथा, तस्यामन्त्रणं, हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हीना क्षीणा पुण्या=चन्द्रकला शुभकारकत्वात् यस्यां सा हीनपुण्या=कृष्णपक्षीयेत्यर्थः, सा चासौ चतुर्दशी च हीनपुण्य चतुर्दशी, तस्यां जातः, तत्सम्बोधनम् हे भाग्यहीन इत्यर्थः। श्रीह्रीधी कीर्तिपरिवर्जित। हे दरिद्र। हे निर्लज्ज ! हे बुद्धिहीन ! हे कुलकलङ्कित ! श्रीः=लक्ष्मीः, ह्रीः=लज्जा, धीः=बुद्धिः, कीर्तिः=यशः, ताभिः नो खलु कल्पते तवशीलव्रतगुणविरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासान्–तत्र शीलानि=सामायिकदेशावकाशिकपौषधतिथिसंविभागाख्यानि, व्रतानि=पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः=त्रीणिगुणव्रतानि, विरमणं

(उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी) आकर उस ने अरहन्नक से इस तरह कहा (हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया) हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मरण की इच्छा करने वाला। यावत् शब्द से " हे दुरन्त प्रान्त लक्षण ! हे हीन पुण्य चातुर्दशिक ! हे श्रीह्रीधी कीर्ति परिवर्जित ! हे कुल कलंकित ! (णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वयगुण वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तएवा) मुझे तुम्हारे द्वारा पालित शीलो को व्रतों को गुणव्रतों को मिथ्यात्व की विनिवृत्ति को पर्व दिनों में हरित काय आदि के परित्याग

" उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी " આવીને તેણે અરહન્નકને આ પ્રમાણે કહ્યું–" हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया " હે અરહન્નક ! હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મૃત્યુને ભેટવાની ઇચ્છા રાખનાર ! ' यावत् ' શબ્દથી હે દુરંતપ્રાંત લક્ષણ ! હે હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિક ! હે શ્રીહ્રીધી કીર્તિ પરિવર્જિત ! હે કુલકલંકિત !

(णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं खोभेत्तएवा खंडित्तए वा भंजित्तएवा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तएवा)

તમારા વડે આચરિત શીલોને, વ્રતોને, ગુણવ્રતોને, મિથ્યાત્વની વિનિવૃત્તિને, પર્વના દિવસોમાં હરિકાય વગેરેના પરિત્યાગને, ચૌદશ, આઠમ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

=मिथ्यात्वान्निवर्त्तनम्, प्रत्याख्यानं=पर्वदिनेषु हरितकायादि त्याज्यानामवश्यं परित्यागः, पोषधोपवासः=पोष=पुष्टिधर्मस्य वृद्धिं धत्त इति पोषधः=चतुर्दश्यष्टम्यमावास्यापूर्णिमादिपूर्वदिनानुष्ठेयो व्रतविशेषः, एतेषां द्वन्दे तान् चालयितुं वा करणयोगरूपेण परिवर्त्तयितुम्, एवं क्षोभयितुं वा एतान् एवं परिपालयामि, अथवा परित्यजामीति क्षोभं कर्तुं, खण्डयितुं देशतो भङ्क्तुं भङ्क्तुं सर्वतो वा उज्झितुं देशविरतेस्त्यागेन, वा परित्यक्तुं सम्यक्त्वस्यापि त्यागात् वा, तद् यदि खलु त्वं शीलव्रत० यावत् न परित्यजसि तदा तवाहमेतत् पोतवहनं नौकायानं द्वाभ्यामङ्गुलीभ्यां तर्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णामि, गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाणमात्रान् गगनभागान् यावत्, ऊर्ध्वं विहायसि=गगने 'उव्विहामि' उद्विध्यामि=प्रापयामि, 'उव्विहित्ता' उद्विध्य=ऊर्ध्वमाकाशे नीत्वा, 'अंतो जलंसि,' अन्त-

को, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा आदि पर्वदिनों में अनुष्ठेय व्रत विशेष रूप पोषध को अन्यथा करण योग रूप से परिवर्तित करने की तुम इन्हें इस तरह से पालो अथवा इन का परित्याग कर दो इस रूपसे उन्हें क्षुभित करने की उन्हें एक देश अथवा सर्वदेश से खंडित करने की भंग करने की देश विरति के छुडवाने की अथवा सम्यक्त्व के परित्याग से उन के त्याग करवाने की मुझ में शक्ति नही है। अतः (जइणं तुमं सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि) तुम इन शीलव्रत आदि कों को स्वयं छोड़ दो-यदि नहीं छोडोगे तो मैं तुम्हारी इस नौका को दो अंगुलियों से-तर्जनी और मध्यमा से-पकड़ लूँगा (गिण्हित्ता सत्तट्ठ तालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं

અમાસ, પૂનમ વગેરે, પર્વના દિવસોમાં અનુષ્ઠેય વ્રતવિશેષ રૂપ પોષધને, અન્યથા કરણયોગ રૂપથી પરિવર્તિત કરવાની, તમે આ વ્રતો આ રીતે આચરો કે આનો પરિત્યાગ કરો આ પ્રમાણે તેમને ક્ષુભિત કરવાની, તેમને એકદેશ અથવા સર્વદેશથી ખંડિત કરવાની-ભંગ કરવાની-દેશવિરતિના ત્યાગ અથવા સમ્યકત્વના પરિત્યાગથી તેમને પરિત્યકત કરાવડાવવાની માગમાં તાકાત નથી એથી.

(जइणं तुमं सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि)

તમે પોતાની મેળેજ આ શીલવ્રત વગેરે નો ત્યાગ કરો. જો તમે આ પ્રમાણે કરશો નહિ તો હું તમારા વહાણને બે આંગળીઓથી એટલે કે તર્જની અને મધ્યમા આંગળીઓથી-પકડી પાડીશ.

(गिण्हित्ता सत्तट्ठताल प्पमाण मेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहामि-उव्विहित्ता अंतो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जले-जलमध्ये, ' णिव्वोलेमि ' निर्वोडयामि=निमज्जयामि, येन त्वं ' अट्टदुहट्ट-वसट्टे ' आर्तदुर्घटवशार्तः=आर्तम्-आर्त्तध्यानम् दुर्घटं=हिंसादिदुर्घटनायुक्तत्वाद् रौद्रध्यानार्त्तं, तयोर्वशेन ऋतः-पीडितः, अतएव-'असमाहिपत्ते' असमाधिप्राप्तः, अकाले चैव=मरणकालात्पूर्वमेव जीवितात् 'ववरोविज्जसि' व्यपरोपयिष्यसे-व्यपगतोभविष्यसि मरिष्यसीत्यर्थः। ततः पिशाचवचनश्रवणानन्तरं सोऽरहन्नकः श्रमणोपासकः तं देवं पिशाचरूपं मनसा चैव एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=पिशाचरूपं देवं स्वमनसि सम्बोध्य स्वात्मन्येव वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवानित्यर्थः, हे देवानुप्रिय ! हे देव ! अहं खलु अरहन्नको नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः =जीवाजीवतत्त्वज्ञः, नो खलु अहं शक्यः केनापि देवेन वा यावत् नैर्ग्रन्थ्यात् प्र-

---

वेहासं उव्विहामि-उव्विहित्ता अंतो जलंसि णिव्वोलेमि) और पकड़ कर सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक उसे ऊपर पानी में डुबो दूँगा। (जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीविधाओ ववरोविज्जसि) जिससे तुम आर्त्त और दुर्घट-रौद्र-ध्यान के वश से पीडित होते हुए असमाधि को प्राप्त हो जाओगे और मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे।

(तएणं से अरहन्नए समणो वासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी) इस तरह उस पिशाच रूप धारी देव के वचन सुनने के बाद उस श्रमणोपासक अरहन्नक ने उस देव से अपने मन ही मन ऐसा कहा- (अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजी वा जीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावय-

---

जलंसि णिव्वोलेमि)

અને પકડીને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ તેને ઉપર આકાશમાં લઈ જઈશ અને ત્યાંથી પાણીમાં ડુબાડી મૂકીશ.

(जे णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

એથી તમે આર્ત્ત અને દુર્ઘટ-રૌદ્ર-ધ્યાનથી પીડિત થતા અસમાધિને મેળવશો અને મૃત્યુકાળ ના પહેલાં જ જીવન વગરના થઈ જશો.

(तएणं से अरहन्नए समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी) આરીતે પિશાચ રૂપવાળા દેવની વાત સાંભળીને શ્રમણોપાસક અરહન્નકે દેવને પોતાના મનમાં જ આપ્રમાણે કહ્યું.

(अहेणं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचनात् 'चालित्तए' चालयितुम्=अन्यथाभावं कारयितुं वा, 'खोभित्तए' क्षोभयितुं=संशयोत्पादनेन क्षोभं कर्तुंवा, तथा-'विपरिणामित्तए' विपरणमयितुं =विपरीताध्यवसायोत्पादनेनाप्यन्यथाकर्तुं वा, केनापि देवादिना श्रावकधर्माद् विचालयितुं नाहं शक्य इति संक्षिप्तार्थः। तत् खलु या=यादृशी श्रद्धा वर्तते तत्-तथा कुरु. त्वं यत् कर्तुमिच्छसि तत् कुरुष्वेत्यर्थः 'इति कट्टु' इति कृत्वा= इति स्वात्मन्युक्त्वा, अभीतः यावद्-अत्र यावच्छब्देन 'अतत्थे, अचलिए, असंभंते अणाउले, अणुव्विग्गे, इत्येषां पदानां संग्रहः, एतान्यस्मिन्नेवसूत्रे व्याख्यातानि,

---

णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीण विमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए, धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे देवानुप्रिय देव! मैं अरहन्नक नामका श्रमणोपासक श्रावक हूँ।

जीव अजीव आदि तत्त्वों के स्वरूप को जानने वाला हूँ। किसी भी देव में ऐसी शक्ति नहीं है जो मुझे इस निर्ग्रन्थ प्रवचन से विचलित कर सके उस में अन्यथा भाव रूप से परिणमासके क्षुभित कर सके-संशयोत्पादन से मुझे उस में संदिग्ध बना सके तथा विपरिणामी बना सके-विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उस में मुझे विपरीत बुद्धि वाला कर सकें, तात्पर्य इस का यही है कि कोइ भी देव ऐसा नहीं है कि जिस के द्वारा मैं श्रावक धर्म से विचलित किया जा सकूं।

इसलिये हे देव! तुम्हारी जैसी श्रद्धा हो वैसा तुम करो। इस

खोभित्तएवा विपरिणामित्तएवा तुमंणं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિયદેવ! હું અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શ્રાવક છું.

જીવ અજીવ વગેરેના તત્ત્વોના સ્વરૂપને જાણનાર છું. કોઇપણ દેવમાં તાકાતનથી કે જે મને પોતાના નિર્ગ્રંથપ્રવચનથી વિચિલિત કરી શકે, તેમાં અન્યથા ભાવ રૂપથી પરિણુમાવી શકે, ક્ષુલિતકરી શકે, સંશય ઉત્પન્ન કરીને મને તેમાં શંકાશીલ બનાવી શકે. અને વિપરિણામી બનાવી શકે, વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પ્રત્યે મને વિપરીત બુદ્ધિવાળો કરી. શકે. મતલબ એ છે કે કોઇપણ દેવમાં આટલી તાકત નથી કે તે મને પોતાના શ્રાવક ધર્મથી ડગાવી શકે.

એથી દેવ! તમારી જેવી શ્રદ્ધા હોય તેમ કરો. મનમાં દેવને સંબોધીને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिन्नमुखरागनयनवर्णः=भयाभावादभिहतमुखनेत्रप्रतिभः, तथा-अदीनविमनोमानसः=भयसंशयरहितत्वात् विशादवैमनस्यरहितचित्तः, अतएव-निश्चलः=सुधीरः धर्मे दृढतर इत्यर्थः, निस्पन्दः=किंचिदपिकम्परहितः, तूष्णीकः कृतवाक्संयमः स मौन इत्यर्थः धर्मध्यानोपगतः धर्मध्यानमेव शरणं कृत्य तत्परायणः विहरति= आस्तेस्म ॥सू०२२॥

प्रकार देव को मन में संबोधन करके उस अरहन्नक श्रमणोपासक ने मन ही मन कहा-और अभीत, अत्रस्त, अचलित, असंभ्रान्त, अनाकुल, अनुद्विग्न, चित्त बना रहा। निर्भय होने के कारण उस के मुख और नेत्र की कांति में अन्तर नही आया।

भय और संशय से रहित होने की वजह से उस का चित्त विषाद एवं वैमनस्य से रहित रहा। इसीलिये अपने धर्म में दृढ बना हुआ वह जरा भी उस से विचलित नही हुआ। किन्तु चुपचाप मौन धारण कर एक धर्म ध्यान को ही इस स्थिति में शरण मान उसी में वह तत्पर बना रहा। अप्रार्थित प्रार्थित आदि जो संबोधन पद सूत्र में आये हैं उन का अर्थ इस प्रकार है-जिसे कोइ भी नहीं चाहता है ऐसा अप्रार्थित मरण होता है उसे भी अरहन्नक श्रावक चाह रहा है।

इसलिये देव ने उसे अप्रार्थित प्रार्थित इस संबोधन से संबोधित किया है। देव ने यह समझ कर की यह अरहन्नक अपने धर्म पर यदि

અરહન્નક શ્રમણોપાસકે પોતાના મનમાં જ આમ કહ્યું. અને તે અભીત અત્રસ્ત, અચલિત, અસંભ્રાંત, અનાકુળ, અનુદ્વિગ્ન, ચિત્તથી શાંતથઇને બેસી રહ્યો તે નિર્ભય હતો તેથી તેના મોં અને આંખોની કાંતિમાં જરાયે પરિવર્તન થયું નહિ.

ભય તેમજ સંશય વગર હોવાથી તેનું ચિત્ત વિષાદ અને વૈમનસ્ય રહિત હતું. એથી જ તે પોતાના ધર્મ પ્રત્યે દૃઢભાવ રાખતો તે જરાએ વિચલિત થયો નહિ, પણ ચુપચાપ મૌન ધારણ કરીને ફકત ધર્મધ્યાનને જ આ સ્થિતિમાં શરણ માનીને તેમાં તે તલ્લીન થઇ ગયો. અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત વગેરે જે સંબોધન પદો સૂત્રમાં આવ્યા છે તેનો અર્થ આપ્રમાણે છે-કે જે મરણ ને ભેટવાનું કોઈપણ ઇચ્છે નહિ તે મરણને અરહન્નક શ્રાવક ઇચ્છી રહ્યો હતો. એથી જ દેવે તેને અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આ જાતના સંબોધનથી સંબોધિત કર્યો છે. અરહન્નક જો પોતાનો ધર્મને વળગી રહેશે તો તેનો વિપાક

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो ! अरहन्नगा० अदीण विमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ, तएणं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं

दृढ बना रहता है तो इस का परिणाम उसे विपाककाल में कटु ही भोगना पडेगा–उसे दुरन्त प्रान्त लक्षण इस संबोधन पद से बोधित किया है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में चन्द्रकला क्षीण रहती है-इसलिये शुभ कारक चन्द्रकला से विहीन होने के कारण वह चतुर्दशी हीन पुण्य मानी जाती है देव कहता है कि मालूम होता है तेरा जन्म हुआ है अतः तू भाग्य हीन है। इसलिये अरहन्नक श्रावक को उस ने हीन पुण्य चातुर्दशिक इस संबोधन पद से बोधित किया है। श्री ह्री आदि प्रत्येक में वर्जित पद के साथ संबोधन पद लगाकर देव ने अरहन्नक को संबोधित किया है–जैसे हे श्री वर्जित हे ह्री वर्जित आदि। सामायिक, देशावकाशिक, पौषध, अतिथि संविभाग ये शील हैं। अणुव्रत ५ हैं। गुणव्रत ३ हैं। यह सब श्रावक का धर्म है। इस तरह ४ शिक्षाव्रत, ५ अणुव्रत और ३ गुणव्रत ये १२ प्रकार श्रावक धर्म के यहां प्रकट किये गये हैं। सूत्र " २२ "

કાળમાં પરિણામ કટુ જ ભોગવવું પડશે. આ જાણીને જ દેવે તેને " દુરંત પ્રાંત લક્ષણ " આ પદથી સંબોધ્યો છે. કૃષ્ણ પક્ષની ચૌદશનાં દિવસે ચંદ્રકળા ક્ષીણરૂપે રહે છે. એથી તે અમંગળકારી ગણાય છે તે મંગળકારી નહીં હોવાથી તે ચૌદશ હીન પુણ્ય ગણાય છે. દેવ તેને કહે છે કે તારો જન્મ આવા સમયે જ થયો છે એથી તું અભાગિયો છે. અરહન્નક શ્રાવકને દેવે એટલા માટે જ હીનપુણ્યચાતુર્દશિક પદવડે સંબોધિત કર્યો છે. શ્રી, હ્રી વગેરે દરેક પદની સાથે વર્જિત વિશેષણ લગાડીને જ દેવે અરહન્નકને સંબોધિત કર્યો છે. જેમ કે-'હે શ્રીવર્જિત ! હેહ્રી વર્જિત ! વગેરે. સામાયિક, દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિસંવિભાગ આ બધા શીલ છે અણુવ્રત પાંચ છે. ગુણવ્રત ત્રણ છે. આ બધો શ્રાવકનો ધર્મ છે. આરીતે ચાર શિક્ષાવ્રત, પાંચ અણુવ્રત, અને ત્રણ ગુણવ્રત આમ બાર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ અહીં ચર્ચવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર " ૨૨ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंगुलियाहिं गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वयासी—हं भो ! अरहन्नगा ! अप्पत्थियपत्थिया णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ० चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं२ उवरिं जलस्स ठवेइ, ठाविता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिए अरहन्नगं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो ! अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं० मज्झगते महया सद्देणं आइक्खइ ४, एवं खलु जंबूदीवे२ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा । तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठं सद्दहामि०, तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतिये पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दढधम्मे नो दढधम्मे ? सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयइ णो परिच्चयइ त्तिकट्टु, एवं संपेहेमि, संपेहित्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तरविउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए गईए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया ! तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा०, तं जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चेणं एसमट्ठे तं दिट्ठेणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे भाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेइ, खामित्ता अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलयित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २३ ॥

टीका।—'तएणं से दिव्वे' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु स दिव्यः पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी, अरहन्नकम्०अरहन्नकनामकं श्रमणोपासकं=श्रावकं 'दोच्चंपि' द्वितीयवारमपि, तच्चंपि=तृतीयवारमपि, एवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-हंभो ! अरहन्नक० ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते-तव शीलव्रत०

'तएणं से दिव्वे पिसायरूवे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से दिव्वे पिसाय रूवे) उस पिशाचरूप धारी देव ने (अरहन्नगं समणोपासगं) उस श्रमणोपासक अरहन्नक से (दोच्चंपि तच्चं पि) दुबारा तिबारा भी (एवं वयासी) ऐसा ही कहा की हे अरहन्नक०। अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझ में ऐसी शक्ति नहीं

'तएणं से दिव्वे पिसायरूवे' इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यारआद "से दिव्वे पिसायरूवे" ते पिशायरूप धारी देवे "अरहन्नगं समणोपासगं" श्रमणोपासक अरहन्नकथी "दोच्चंपि तच्चंपि" બીજી અને ત્રીજી વખત પણ "एवं वयासी" આ પ્રમાણે જ કહ્યું-"હે અરહન્નક०!, અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત તમારા શીલ વિગેરે શ્રાવક ધર્મને બદલવાની કે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादि-येन त्वं आर्तदुर्धटवशार्तः असमाधिप्राप्तः अकाले चैव जीविताद् व्यपरोपयिष्यसे इत्यन्तं पूर्वोक्तमेववाक्यं द्वितीयतृतीयवारमप्युक्तवानित्यर्थः। तथापि सोऽरहन्नकः श्रावकः अदीन विमनो मानसः=विषादवैमनस्य रहितचित्तः, निश्चलः=धीरः, निस्पन्दः=भयाभावद् कम्परहितः=तूष्णीकः= भयरहिततत्वेन, सभयवाग्व्यापाररहितः। यद्वा-कृतवाक् संयमः, धर्मध्यानोपगतः, धर्मध्यानशरणमुपागतः विहरति-आस्तेस्म०।

ततस्तदन्तरं खलु स दिव्यः पिशाचरूपोऽरहन्नक धर्मध्यानोगतं पश्यति, दृष्ट्वा बलिततरकम्=अत्यन्तम्०आशुरुप्तः=झटिति क्रोधाविष्टस्तत् पोतवहनं=नौकायनं, द्वाभ्याम कलीभ्याम्=तर्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णाति। गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाण

हैं कि मैं तुम्हारे इन शीलादिकों का परिवर्तन आदि कर सकूं अतः तुम स्वयं ही इन का परित्याग कर दो-तो ठीक है-नही तो मैं तुम्हारी नौका को पानी में डुबा दूंगा।

इस से तुम, आर्त्त रौद्रध्यान के वशवर्ती होकर असमाधि को प्राप्त हो जाओगे-तथा मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे। इस तरह जैसा उस ने प्रथम वार कहा-द्वितीय और तृतीय वार भी अरहन्नक श्रावक को वैसा ही कहा-(तएणं से दिव्वे पिसाय रूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ पसित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अगुलियाहिं गिण्हइ) इस के बाद जब उस पिशाचरूप धारी देव ने अपनी बात पर ध्यान नही देते हुए अरहन्नक श्रावक को विषाद वैमनस्य से रहित चित्त होकर निश्चल रूप से विना

તેમાં કોઇ પણ જાતનો ફેરફાર કરવાની મારામાં તાકાત નથી, જો તમે પોતાની મેળેજ એમનો ત્યાગ કરો તો ઠીક! નહીં તો તમારા વહાણને હું પાણીમાં ડુબાડી દઇશ.

તેથી તમે આર્ત્ત રૌદ્ર ધ્યાનના વશવર્તી થઇને અસમાધિને પ્રાપ્તકરશો તેમજ મૃત્યુના સમય પહેલાં જ મૃત્યુને ભેટશો. આ પ્રમાણે જેમ તેણે પહેલી વખત કહ્યું હતું તે પ્રમાણે જ બીજી અને ત્રીજી વખત પણ અરહન્નક શ્રાવકને દેવે કહ્યું.

(तएणं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हइ)

ત્યાર બાદ પિશાચરૂપ ધારી દેવે અરહન્નક શ્રાવકને વિષાદ અને વૈમનસ્ય રહિત ચિત્તવાળો થઇને નિશ્ચળ રૂપથી, ભય વગર થઇને, મૌન ધારણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्रान् यावत् ऊर्ध्वं गगने नीत्वाऽरहन्नके श्रावकमेवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-हंभो ! अरहन्नक ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते तव शीलव्रत०तथैव=सोऽरहन्नकः पूर्ववदेव यावत् धर्मध्यानोपगतो विहरति=आस्ते स्म० ।

किसी भय के मौन सहित धर्मध्यान में ही मग्न देखा तो देख कर वह उस पर क्रोध के आवेश से अत्यंत लाल पीला बन गया। और उस पोतयान को उस ने अपनी दोनों अंगुलियों-मध्यमा एवं तर्जनी अंगुलियों से-पकड लिया। (गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वयासी) पकड़ कर वह उसे ऊपर आकाश न सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक ले गया-ले जाकर फिर उस में अरहन्न श्रावक को इस प्रकार कहा -(हं भो अरहन्नगा। अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तव सीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझे तुम्हारे इन शीलव्रत आदिकों को विचलित आदि करना उचित नहीं हैं अतः तुम ही खुशी से उन्हे छोड़ दो-नही तो मैं तुम्हारी इस नौका को यहां से पटक कर पानी में डुबो दूंगा-जिस से तुम असमाधि प्राप्त होकर आर्त्तध्यानादि के वशवर्त्ति बन मरणकाल से पहिले मृत्युके वश हो जाओगे। देवके इस कहने पर अरहन्नक श्रावकने कुछ भी ध्यान नही दिया प्रत्युत उसे मन ही मन

કરીને ધર્મધ્યાનમાં જ તલ્લીન જોયો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમાં ભરાઈ લાલ પીળો થઈ ગયો, અને તેણે વહાણને પોતાની બે આંગળીઓ-મધ્યમા અને તર્જની-વડે પકડી લીધું. " गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वयासी ' પકડીને તે વહાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ જેટલું આકાશમાં લઈગયો અને લઈ જઈને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तवसीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ)

હે અરહન્નક ! હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હું તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી વિચલિત કરું તે યોગ્ય ન લેખાય જેથી તમે રાજીખુશીથી પોતાની મેળે જ તેમને ત્યજો નહિતો તમારા વહાણને હું અહીંથી પટકીને પાણીમાં ડુબાડી દઇશ. જેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્ત્તધ્યાન વગેરેના વશવર્તી થશો અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહેલાં જ મૃત્યુને ભેટશો દેવની આ વાત પર અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યું નહિ અને તેણે પોતાના મનમાં જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु स पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी देवः, अरहन्नकं यदा नो शक्नोति नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितुं वा क्षोभयितुं वा विपरिणमयितुं वा 'ताहे, तदा स पिशाचः 'संते' श्रान्तः=परिश्रमं प्राप्तः स्थग्नः, मनसा खिन्न इत्यर्थः, यावत्-अत्र यावत् करणेन-'तंते' परितंते इत्यनयोः संग्रहः । तान्तः-शरीरेण खेदं प्राप्तः, परितान्तः=सर्वथा खिन्नः, 'निव्विन्ने' निर्विण्णः=उपसर्गकरणात् प्रतिनिवृत्तः, तत् पोतवहनं=नौकायानं, शनैः शनैरुपरिजलस्य, 'ठवेइ' स्थापयति० 'ठावित्ता' स्थापयित्वा तद् दिव्यं पिशाचरूपं 'पडिसाहरइ' प्रतिसंहरति

संबोधित कर "मुझे इस निग्रन्थ प्रवचसे कोइ भी देव विचलित नहीं कर सकता है" ऐसा ही विचार-कहा-तथा अडिग भावसे निर्भय बन मौन लिये हुए अपने धर्मध्यानमें ही वह स्थिर रहा।

(तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ, निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणा मित्तए वा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरिजलस्स ठवेइ) इस तरह वह पिशाच रूप धारी देव जब अरहन्नक श्रावक को निर्ग्रन्थ प्रवचन० से चलाने के लिये, उस से क्षुभित करने के लिये, विपरिणमित करने के लिये समर्थ नहीं हो सका तब श्रान्त और भग्न मन से खिन्न-होकर वह उपसर्ग करने रूप अपने कृत्य से प्रति निवृत्त हो गया। और धीरे २ आकाश से उतार उस पोतयान को उस ने पानी के ऊपर रख दिया। (ठाविता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ)

વિચાર કરીને કહ્યું—"આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનથી મને કોઇ પણ દેવ હટાવી શકશે નહિ." આમ વિચારી ને નિશ્ચળ અને નિર્ભય થઇને તે મૌન પાળતો તે પોતાના ધર્મધ્યાન માંજ તલ્લીન રહ્યો.

(तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तएवा विपरिणामित्तएवा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ)

આ પ્રમાણે પિશાચ રૂપધારી દેવ જ્યારે અરહન્ન શ્રાવકને નિર્ગ્રંથ પ્રવચનથી વિચલિત કરવામાં, તેનાથી ક્ષુભિત કરવામાં, વિપરિણમિત કરવામાં શક્તિમાન થઈ શકયો નહીં ત્યારે શ્રાંત અને ભગ્નમનથી ખિન્ન થઇને ઉપસર્ગ કરવા રૂપ પોતાના કર્મથી પ્રતિનિવૃત્ત થઈ ગયો. અને આકાશમાંથી ધીમેધીમે ઉતરીને તેણે વહાણ ને પાણી ઉપર મૂકીદીધું. (ठाविता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलीनयति० । प्रतिसंहृत्य=पिशाचरूपमन्तर्हितं कृत्वा दिव्यं=प्रशस्तं परमसुंदरं देवरूपं विकुर्वति प्रादुर्भावयति । विकुर्वित्वा = दिव्यं देवरूपं प्रादुर्भाव्य, अन्तरिक्षप्रतिपन्नः=आकाशस्थितः, 'सखिखिणियाइं' सकिङ्किणीकानि यावद् प्रवरवस्त्राणि परिहितः, स देवोऽरहन्नकं श्रमणोपासकमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हंभो ! अहो ! अरहन्नक ! धन्योऽसि खलु त्वं, हे देवानुप्रिय ! यावत् त्वया जन्मजीवितफलं लब्धं, यस्य खलु तव निर्ग्रन्थे प्रवचने इममेतद्रूपा प्रतिपत्तिः=सम्यक्श्रद्धा लब्धा=उपार्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता०, अभिसमन्वागता=

रखकर फिर उसने वह अपना दिव्य पिशाच का रूप समेट लिया-अन्तर्हित कर लिया-(पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिखिणियाइं जाव परिहिए अरहन्नगं जाव समणोवासयं एवं वयासी) अन्तर्हित कर के फिर बाद में वह अपने वास्तविक दिव्यरूप में आ गया।

दिव्यरूप में आकर के उसने जो उस समय वस्त्रों को धारण कर रखा था-वे क्षुद्र घंटिकाओ से युक्त बड़े ही सुन्दर थे। आकाश में रह कर ही उसने श्रमणोपासक अरहन्नक से इस प्रकार कहा-(हं भो अरिहन्नगा ! धन्नो सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्सणं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवे पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया) अहो अरहन्नक ! तुम धन्य हो। हे देवानुप्रिय ! तुमने यावत् जन्म और जीवन का फल प्राप्त कर लिया है जो इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में इस प्रकार

મૂકીને તેણે પોતાનું દિવ્ય પિશાચરૂપ અન્તર્હિત કરી લીધું

पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिणियाइं जाव परिहिए अरहन्नगं जाव समणोवासयं एवं वयासी)

અન્તર્હિત કરીને તેણે પોતાના સાચા દિવ્ય રૂપને ફરી ધારણ કરી લીધું.

દિવ્ય રૂપમાં પહેરેલાં તેના વસ્ત્રો નાની નાની ઘૂઘરીઓવાળાં ખૂબજ સુંદર હતાં. આકાશમાંજ સ્થિર રહીને તેણે શ્રમણોપાસક અરહન્નકને આ પ્રમાણે કહ્યું-

(हं भो अरिहन्नगा धन्नोसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्सणं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्तीलद्धा पत्ता अभिसमन्नागया)

હે અરહન્નક તમે ધન્ય છો ! હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સંપૂર્ણ પણે જન્મ અને જીવનનું ફળ મેળવી લીધું છે. કેમ કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં આ રીતે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्यगासेविता वर्त्तते०। हे देवानुप्रिय ! एवम्=अमुना प्रकारेण खलु शक्रो देवेन्द्रः =परमैश्वर्यवत्त्वाद्देवानामिन्द्रः, देवराजः = देवानां राजा कान्त्यादिगुणाधिक्येन विराजमानत्वाद्, सौधर्मे=सौधर्मनामके प्रथमे कल्पे, सौधर्मावतंसके विमाने सुधर्मायां सुधर्माख्यायां सभायां देवसभायां बहूनां देवानां मध्यगतः=मध्ये स्थितः महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण, 'आइक्खइ' आख्याति=सामान्यरूपेण ब्रवीति, भाषते=विशेषतः कथयति, प्रज्ञापयति=सामान्यतो बोधयति, प्ररूपयति, विशेषतः प्रतिबोधयति०। किमित्याह 'एवं खलु' इत्यादिना।

की यह सम्यक श्रद्धा प्राप्त की है और उसे अपने आधीन कर लिया है। तथा वह श्रद्धा इस समय तक भी तुम्हारे द्वारा अच्छी तरह अचल रूप में सेवित हो रही है। (एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे सभाए) सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगए महया सद्देणं आइक्खई ४) मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्यों किया इसका कारण यह है कि हे देवानुप्रिय ! एक दिवस परम ऐश्वर्यशाली देवों के इन्द्र शक्र देवराज ने सौधर्म नाम के प्रथम कल्प में सौधर्मावतंसक विमान में अनेक देवों के बीच में बैठकर अपनी सुधर्मासभा में उच्चस्वर से पहिले तो सामान्य रूप से, कहा, बाद में भाषण द्वारा विशेष रूप से कहा। पहिले सामान्य रूप से समझाया, बाद में विशेषरूप से समझाया। उस में उन्हों ने कहा- (एवं खलु जंबूद्दीवे २ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए सम-

---

તમે સમ્યક્ શ્રદ્ધા મેળવી છે અને તેને સ્વાધીન બનાવ્યું છે' અત્યાર સુધી પણ તમે તે શ્રદ્ધા ને જ સારી રીતે અચળ રૂપે વળગી રહ્યા છો.

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं० मज्झगए महए सद्देणं आइक्खई ४)

મેં જે કંઇ તમારી સાથે વર્તન કર્યું છે તેની પાછળનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે હે દેવાનુપ્રિય! એક દિવસે પરમ ઐશ્વર્યશાળી દેવોના ઈન્દ્ર શક્ર દેવરાજે સૌધર્મનામના પહેલા કલ્પમાં સૌધર્માવતંસક વિમાનમાં ઘણા દેવોની વચ્ચે બેસીને પોતાની સુધર્મા સભામાં મોટા સાદે પહેલાં તો સામાન્ય રૂપે કહ્યું અને ત્યાર બાદ પોતાના ભાષણ વડે વિશેષ રૂપમાં કહ્યું. તેઓ એ પહેલાં સામાન્ય અને ત્યાર પછી વિશેષ રૂપમાં સમજાવતાં કહ્યું—

(एवं खलु जंबूद्दीवे २ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं खलु जम्बूद्वीपेद्वीपे जम्बूद्वीपनामके द्वीपे भारते वर्षे=दक्षिणभरतक्षेत्रे चम्पायां नगर्याम् अरहन्नकः श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवो यावत्-सम्यक्त्वमूलदेशविरतिलक्षणे धर्मे दृढचित्तो वर्तते, असौ नो खलु शक्यः केनापि देवेन वा दानवेन वा इदमुपलक्षणम्- किन्नरेण वा, किंपुरुषेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा इतिसंयोज्यम्०। तत्र देवो वैमानिको ज्योतिष्को वा दानवो भवनपति, इतरे किन्नरादयो व्यन्तरभेदाः, 'णिग्गंथाओ' नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितुं वा यावत् क्षोभयितुं वा, 'विपरिणामित्तए' विपरिणमयितुं=विपरीताध्यवसायोत्पादनेनान्यथाभावं जनयितुं वा। जम्बूद्वीपान्तर्गतभरतक्षेत्रे चम्पानगरी निवासी-अरहन्नक नामकः श्रावको केनापि देवादिना श्रावकधर्माच्चालयितुं न शक्यत इतिभावः।

णोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा) देखो-जंबूद्वीप नाम के द्वीप में दक्षिण भरत क्षेत्र में, चंपा नाम की नगरी में जीव अजीव आदि तत्त्वों का ज्ञाता अरहन्नक नाम का श्रमणोपासक सेठ रहता है।

यह सम्यक्त्व मूल देश विरति रूपधर्म में इतना दृढचित्त हैं कि यह किसी भी देव दानव, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व द्वारा अपने निर्ग्रन्थ प्रवचनरूप गृहीत धर्म से विचलित नहीं किया जा सकता है।

क्षुभित नहीं किया जा सकता है। विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उसमें अन्यथा भाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता हैं इन में वैमानिक एवं ज्योतिषी देवों का देव पद से तथा भवनपति का दानव पद से ग्रहण हुआ है। शेष किन्नरादिकों का कि जो व्यन्तर देव हैं उपलक्षण से ग्रहण किया गया है।

अहिगय जीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा)

જુઓ-જંબૂદ્વીપ નામનાં દ્વીપમાં દક્ષિણ ભરતક્ષેત્રમાં ચંપા નામની નગરીમાં જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોને જાણનાર અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શેઠ રહે છે.

તે સમ્યકત્વમૂળ દેશ વિરતિ રૂપ ધર્મમાં આટલો બધો સ્થિર ચિત્ત છે કે ગમે તે દેવ દાનવ, કિન્નર કિંપુરુષ મહોરગ, ગંધર્વ વડે પણ પોતાના નિર્ગ્રંથ પ્રવચન રૂપ ધર્મથી તે વિચલિત થતો નથી.

ક્ષુભિત તેમજ વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી તેમાં બીજો ભાવ ઉત્પન્ન થતો નથી. અહીંયા દેવપદથી વૈમાનિક અને જ્યોતિષી દેવોનું તેમજ દાનવપદથી ભવનપતિનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः=शक्रदेवेन्द्रवचनश्रवणानन्तरं खलु अहं हे देवानुप्रिय ! शक्रस्य नो एतमर्थं श्रद्दधामि नो प्रत्येमि नो रोचयामि, शक्रोक्तवाक्यार्थे मम विश्वासो न जात इत्यर्थः । ततः खलु ममायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः, प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत=समभवत्-गच्छामि खलु अरहन्नकस्यान्तिके=समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नकं, शक्रेण प्रशंसितोऽरहन्नकः स कीदृशो वर्तते ' किं पियधम्मे ' किं प्रियधर्मा=प्रियोधर्मो यस्य स प्रियधर्मा, प्रीतिभावेन सुखेन च धर्मस्य स्वीकारात् प्रियधर्मा वर्तते किम्, अथवा ' नो पियधम्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-किमसौ ' दढधम्मे ' दृढधर्मा विपत्स्मुपस्थितास्वपिधर्मस्यापरित्यागकरणात् दृढः=स्थिरः धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

तात्पर्य इस का केवल एक यही है कि जंबूद्वीप नाम का एक द्वीप है । उस में भरत क्षेत्र नाम का क्षेत्र है । उस में चंपा नाम की नगरी है । यह अरहन्नक नाम का श्रावक उसी नगरी का निवासी है । वह अपने धर्म में इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित करने की किसी भी देव दानव में शक्ति नहीं है । (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था) जब शक्र देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा-तो उनके कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-श्रद्धा नही हुई वे उनके वचन मुझे रुचिकारक नही हुए । अतः मेरे मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित संकल्प उत्पन्न हुआ (गच्छामिणं अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं

તાત્પર્ય-આ પ્રમાણે છે કે જંબૂદ્વીપનામે દ્વીપ છે. તેમાં ભરતક્ષેત્ર નામે ક્ષેત્ર છે. તે ક્ષેત્રમાં ચંપા નામે નગરી છે. તે અરહન્નક શ્રાવક ચંપા નામે નગરીમાં વસે છે તે પોતાના ધર્મમાં એટલો બધો સુદૃઢ છે કે દેવ દાનવમાં પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે.

(तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था)

જ્યારે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તેમની વાત સાંભળીને મને તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ બેઠો નહિ. મને તેમના વચન ગમ્યાં પણ નહિ. એથી મારા મનમાં આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો.

(गच्छामि णं अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथवा–' नो दृढधम्मे ' नो दृढधर्मा सोऽरहन्नको नास्ति दृढधर्मा ? स च शील-व्रतगुणान् किं चालयति=अपनयति यावत् परित्यजति, किं वा नो परित्यजति अत्र यावत् करणात्–क्षोभयति किंवा नो क्षोभयति ? खण्डयति किंवा नो खण्डयति ? उज्झति किं वा नो उज्झति ? इति बोध्यम् । इति कृत्वा=इत्येवं मनसि विचार्य, एवं संपेक्षे, संप्रेक्ष्य अवधिम्=अवधिज्ञानं प्रयुङ्क्ते प्रेरयामि प्रयुज्य देवानुप्रियम् आभोगयामि=पश्यामि । आभोग्य उत्तरपौरस्त्यम्–ईशानकोणदिग्भागं गच्छामि, गत्वा, ' उत्तरविउव्वियं ' उत्तरवैक्रियं करोमि, कृत्वा तयोत्कृष्टया गत्या=देवसम्बन्धिन्या गत्या यत्रैव समुद्रः, यत्रैव देवानुप्रियस्तत्रैवोपागच्छामि, उपागत्य दे-

---

अरहन्नगं किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे दढधम्मे नो दढधम्मे ? सील-व्वयगुणे किं चालेति, जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ) कि चलो अरहन्नक के पास चलें–और चलकर यह ज्ञातकरें कि अरहन्नक को धर्म प्रिय है, कि नहीं है, वह धर्म में दृढ है कि नहीं है । वह अपने शीलों को, व्रतो को और गुणों को छोड़ता है अथवा नहीं छोडता है, उन्हें क्षुभित करता है, या नहीं करता है, उनका खंडन करता है या नहीं करता है। प्रवचन में एक देश से भी उस में अतिचार लगाता है या नही लगाता है (त्तिकट्टु एवं संपेहेमि) हे अरहन्नक ! मैंने ऐसा बिचार किया (संपेहित्ता ओहिं पउंजामि) विचार करके फिर मैंने अपने अवधिज्ञान को जोडा (पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तर विउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि) अवधिज्ञान को जोड कर मैंने उसके द्वारा आप देवानुप्रिय को देखा ।

પિયધમ્મે નો દઢધમ્મે ? સીલવ્વય ગુણં કિં ચાલેતિ જાવ પરિચ્ચયઇ, णो परिच्चयइ

કે ચાલો અરહન્નકની પાસે જઈએ અને જઈને તપાસ કરીએ કે તેને ધર્મ પ્રિય છે કે કેમ ? તે પોતાના શીલોને, વ્રતોને અને ગુણોને ત્યજે છે કે કેમ ? તેમને ક્ષુભિત કરે છે કે નહિ ? તેમજ તેમનું ખંડન કરે છે કે કેમ ? પ્રવચનમાં એક દેશથી પણ તેમાં અતિચાર લાગે છે કે કેમ ? (ति कट्टु एवं संपेहेमि) હે અરહન્નક ! મેં આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો. (संपेहित्ता ओहिं पउंजामि) વિચાર કરીને મેં મારા અવધિજ્ઞાનથી સંગતિ બેસાડી

(पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तर विउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि અને તેની સંગતિ વડે દેવાનુપ્રિય તમને મેં જોયા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वानुप्रियस्योपसर्गं करोमि । नो चैव खलु देवानुप्रियाः ! भीता वा त्रसिता वा उद्विग्ना वा संजातभया वा जाताः । तद्=तस्माद् यत् खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो वदति, सत्यः खलु एषोऽर्थो दृष्टः । तद् तस्मात् दृष्टा खलु देवानुप्रियाणां भवताम् ऋद्धिः=गुणानामैश्वर्यम् , द्युतिः=आन्तरं तेजः, यशः=ख्यातिः, यावद्-अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम् बलं=शारीरं पराक्रमं, वीर्यम्=आत्मिकं बलम्, पुरुषकारः

देखकर मैं ईशान कोण की ओर गया। वहां जाकर मैंने उत्तर वैक्रिय की रचना की-रचना कर उस देवभव सम्बन्धी उत्कृष्ट गति से जहां समुद्र था और जहां आप देवनुप्रिय थे वहां मैं आया (उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्गं करेमि) आकर मैंने फिर आप देवानुप्रियके ऊपर उपसर्ग करना प्रारंभ करदिया। (णो चेवणं देवाणुप्पिया भीया वा तं जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे णं एसमट्ठे) परन्तु आप देवानुप्रिय भीत नहीं हुए, त्रस्त नही हुए त्रसित नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए और न उत्पन्न हुआ है भय जिस को ऐसे ही हुए। इस लिये मैंने जैसा आपके विषय में शक्रदेव राजा देवेन्द्र ने कहा था वैसा ही आपको देखा-(तं दिट्ठेणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे, लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए) अब मैंने आपके गुणों का ऐश्वर्य देखलिया प्रत्यक्ष कर लिया। आपकी द्युति-आन्तरतेज, आपकी ख्याति यावत् शब्द से आपका शारीरिक पराक्रम, आपका आत्मिक बल आपका स्वधर्म में दृढता

જોઈને હું ઈશાન કોણ તરફ ગયો. ત્યાં જઈને મેં ઉત્તર વૈક્રિયની રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સંબંધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યાં સમુદ્ર હતો અને જ્યાં દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યાં આવ્યો.

(उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्गं करेमि)

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો.

(णो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा तं जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे णं एसमट्ठे)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડર્યા નથી, ત્રસ્ત થયા નથી, ત્રસિત થયા નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામાં ભય ઉત્પન્ન થયો નથી. એથી તમારા વિષે શક્ર દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને જોતાં બરોબર લાગે છે.

(तं दिट्ठेणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए)

હવે મેં તમારા ગુણોની સમૃદ્ધિ જોઈ લીધી છે. તમારી દ્યુતિ આંતર તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શૂરાતન, તમારું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वधर्मे दृढतारूप इति, पराक्रमः=धर्माराधनजन्यशक्तिविशेषः, लब्धः=उपार्जितः, प्राप्तः=स्वायत्तीकृतः, अभिसमन्वागतः=सम्यगासेवितः । अहो ! अरहन्नक ! भवतामृद्ध्यादयो मया दृष्टाः, यश्च पराक्रमो धर्माराधनालब्धः प्राप्तोऽभिसमन्वागतश्च सोऽपि मया दृष्ट इति भावः ।

तत्=तस्मात् क्षमयामि, खलु हे देवानुप्रियाः ! भवन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्तः हे देवानुप्रिया ! क्षन्तुमर्हन्ति भवन्तः । मत्कृताऽपराधं क्षन्तुं योग्या भवन्त इति भावः । नापि भूयोभूयः एवं करणतया=पुनः पुनरेवं न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुटः=संयोजिताञ्जली कृतकरद्वयपुटः, पादपतितः पश्चाङ्गनमनपूर्वकं चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूपं विनयेन=विन-

---

रूप पुरुषकार आपका धर्माराधन जन्य शक्तिरूप पराक्रम, ये सब गुण मैंने देख लिया। इन सब गुणों को आपने अच्छी तरह उपार्जितकिया है ।

अच्छी तरह इन सब को आपने अपने आधीन बनाया है । और अच्छी तरह से इन सब गुणों को आपने सेवित किया है । (तं खामेमि, णं देवाणुप्पिया ! खमं तु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ) अतः हे देवानुप्रिय ! आप को मैं खमाता हूँ । आप देवानुप्रिय मुझे क्षमा करें ! मैंने अभी तक जो आपके अपराध किये है मैं उन की आपसे क्षमा चाहता हूं । आप मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य है । अब आगे मैं ऐसा नही करूँगा । इस प्रकार कह कर उस देवने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और जोड़ कर फिर वह उस अरहन्नक श्रावक के चरणों में

આત્મિક બળ, તમારૂં ધર્મમાં દૃઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂં પરાક્રમ આ બધા ગુણો મેં જોઇ લીધા છે. તમે આ બધા ગુણો સારી પેઠે મેળવ્યા છે.

આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે. આ સર્વે ગુણોનું સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે.

(तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो २ एवं करणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હું ખમાવું છું. દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો. મેં જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા ચાહું છું. તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો. હવેથી ભવિષ્યમાં કોઇ પણ વખત મારાથી આવું અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ. આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડયા અને ત્યારબાદ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभावेन भूयोभूयः क्षमयति, क्षमयित्वा अरहन्नकस्य द्वे कुण्डलयुगले ददाति दत्वा यस्या दिशः स देवः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः=देवलोकं गत इत्यर्थः ॥सू०२३॥

मूलम्-तएणं से अरहन्नए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ, तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा नावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि० संकामेंति, संकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएइ, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गिण्हंति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडल जुयलं उवणेंति । तएणं तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ,

पंचांग नमन पूर्वक नमस्कार किया नमस्कार कर उसने अपने अपराध की उससे बड़े विनय के साथ बार २ क्षमा कराई। (खामित्ता) क्षमा कराकर (अरहन्नस्स) उसने अरहन्नक श्रावक के लिये (दुवे कुंडल जुयले दलयति-दलयित्ता-जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) दो कुंडल युगल दिये। देकर के फिर वह जिस दिशा से आया था-प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस हो गया देवलोक को चला गया। सूत्र "२३"

પંચાંગ નમનપૂર્વક નમસ્કાર કર્યા અને પોતાના અપરાધોની બહુ જ વિનય સાથે વાર'વાર ક્ષમા કરાવી.(खामित्ता) ક્ષમા કરાવીને (अरहन्तस्स,तेणे अरहन्नक श्रावकने (दुवेकुंडलजुयले दलयति दलयित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

બે કુંડળોની જોડ આપી. તે આપીને જે દિશામાંથી આવ્યો હતો, પ્રકટ થયો હતો તે જ દિશા તરફ દેવલોકમાં જતો રહ્યો. ॥ સૂત્ર "૨૩" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडिच्छित्ता मल्लिं विदेहवररायकन्नं सद्दावित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावा वाणियगे विउलेणं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ पडिविसज्जेइ, तएणं अरहन्नग संजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडवववहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गिण्हंति, गिण्हित्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोतवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता भंडं संकामेंति, दक्खिणाणुकुलेणं वाउणा जेणेव चंपा पोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति, लंबित्ता सगडी० सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडी० संकामेंति, संकामित्ता जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव उवणेंति, तएणं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडल युगलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तं अरहन्नगपामोक्खे एवं वयासी –तुब्भे णं देवा०! बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं आगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?. तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चम्पाए नयरीए अरहन्नपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावा वाणियगा परिवसामो, तएणं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वे कुंडलजुयलं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ, तं एसणं सामी अम्हेहिं कुंभगराय भवणंसि मल्ली विदेह० अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना काचि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेह०, तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं चदच्छाये वाणियगजणियहरिसे दूतं सद्दावेइ, जाव जइविय णं सा सयं रज्जसुक्का, तएणं से दूते हट्ठ जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २२॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु सोऽरहन्नकः, 'निरूवसग्गम्' उपसर्गाभावो जातः, इति कृत्वा=इतिविज्ञाय प्रतिमां=साकारसंस्तारकरूपं नियम विशेषं पारयति स्म०। ततस्तदनन्तरं खलु ते ऽरहन्नकप्रमुखा नौकावाणिजकाः सांयात्रिकाः दक्षिणानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरकं गम्भीरनामकं पोतपत्तनं नौका

'तएणं से अरहन्नए' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से अरहन्नए) उस अरहन्नक श्रावक ने (निरूव सग्गामिति कट्टु) उपसर्ग दूर हो गया है ऐसा जानकर पडिमं परेइ) अपने साकारी संथारे को पारित किया।

(तएणं ते अरहन्नग पामोक्खा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति) इसके अनन्तर वे समस्त अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिक पोत वणिक् दक्षिणानुकूल वायु

'तएणं से अरहन्नए' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) त्यार બાદ (से अरहन्नए) તે અરહન્નક શ્રાવકે (निरुवसग्गामिति कट्टु) ઉપસર્ગ (સંકટ) જતો રહ્યો છે એમ માનીને (पडिमं पारेइ) પોતાના સાકારી સંથારાને પારિત કર્યો.

(तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति)

ત્યાર પછી બધા અરહન્નક પ્રમુખ સાંયાત્રિક પોત વાણિકો દક્ષિણાનુકૂળ પવનથી જ્યાં ગંભીર નામે નાવને લાંગરવાનું બંદર હતું ત્યાં પહોંચ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऽवतरणस्थानं वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य च पोतं=नावं, 'लंबेंति, लम्बयन्ति तीरस्थानेकशङ्कुषु रज्ज्वादिभिर्निबध्य स्थिरी कुर्वन्ति० । 'लंबित्ता' लम्बयित्वा शकटी शाकटिकं=लघुशकटबृहच्छकटानां समूहं सज्जयन्ति=नवीनोपकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तं गणिमं धरिमं मेयं परिच्छेद्यं चतुर्विधं क्रयाणकसमूहं शकटीशाकटिके ' संकामेंति संक्रामयन्ति=स्थापयन्ति, संक्राम्य=तेऽरहन्नक प्रमुखाः सांयात्रिकाः शकटीशाकटिकं योजयन्ति=बलीवर्दादिभिर्योजितं कुर्वन्ति, योजयित्वा शकटारूढास्ते यत्रैव मिथिलाराजधानीवर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलायां राजधान्यां बहिरग्रोद्याने=प्रधानोद्याने शकटीशाकटिकं मोचयन्ति=शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक्कुर्वन्ति, मोचयित्वा मिथिलायां राजधान्यां तन्म-

---

से जहां गंभीर नाम का नौका के ठहरने का स्थान था (बंदर गाह था) वहां पहुंचे। (उवागच्छित्ता पोयं लबेंति) वहां पहुंच कर उन लोगों ने नौका को खड़ा कर दिया-तीर स्थित अनेक खूंटों में रज्ज्वादि से उसे बांधकर स्थिर कर दिया। (लंबित्ता सगड़सागड़ं सज्जेंति) खड़ा करके छोटी छोटी गाडियों को और गाड़ों को तैयार किया-नवीन उपकरण एवं रज्ज्वादि से उन्हें सज्जित किया। (सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि ४ संकामेंति) सज्जित करके फिर उन्होंने उस गणिम, धरिम, मेय एवं परिच्छेद्य रूप चतुर्विध-क्रयाणक को नौका से उतार कर उन गाडी गाडों में भरा (संकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति) भर कर फिर उन्हों ने उन्हें जोता-जोत कर जहां मिथिला नगरी थी वहां वे आये। (उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सागडंसगडी मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं

(उवागच्छित्ता पोयं लबेंति) ત્યાં પહોંચીને તેઓએ નાવને ઉભી રાખી. કિનારાની દોરીઓથી તેને સારી રીતે બાંધી દીધી. (लंबित्ता सगड सागडं सज्जेंति) ત્યાર પછી નાની ગાડીઓ તેમજ મોટાં ગાડાંઓને દોરી વગેરે સાધનોથી સજ્જ કર્યાં. (सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि ४ संकामेंति) સજ્જ કર્યા બાદ તેમણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની વેચાણની વસ્તુઓને નાવમાંથી ઉતારીને ગાડીઓ અને ગાડાઓમાં ભરી

(संकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव महिला तेणेव उवागच्छंति)

સામાન ભર્યા પછી તેમણે ગાડીઓ અને ગાડાંઓને જોતર્યાં અને જોતરીને જ્યાં મિથિલા નગરી હતી ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता महिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हार्थं महाप्रयोजनकं 'महग्घं' महार्घं=बहुमूल्यकं, महार्हं महतां योग्यं विपुलं विस्तीर्णं राजार्हं राजयोग्यं प्राभृतम्-उपहाररत्नादिकं कुण्डलयुगलं=देवेन दत्तं कुण्डलद्वयं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा मिथिलामनुप्रविशन्ति। अनुप्रविश्य यत्रैव कुम्भकः =कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृतं रत्नादिकं दिव्यं कुण्डलयुगलं च उपनयन्ति=राज्ञः पुरतः स्थापयन्ति। ततस्तदा खलु कुम्भको राजा तेषाम्=अरहन्नकादीनां सांयात्रिकाणां नौकावाणिजकानां यावत् रत्नादि

च गिण्हंति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति) वहां आकर उन लोगों ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को ढील दिया। ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने के लिये उस महा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषो के योग्य रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुंडलों को कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेंति) वहां जाकर फिरवे जहां कुभक राजा थे वहां गये-वहां पहुंचकर उन सबने राजा को दोनो हाथो की अंजलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया।

बाद में साथ मे लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुंडल

मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडल जुयलं च गिण्हंति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति)

ત્યાં પહોંચીને તેમણે ગાડીઓ અને ગાડાંઓને છોડી દીધાં અને ત્યાર બાદ તેમણે મિથિલા રાજધાનીમાં જવા માટે તે મહાપ્રયોજનની સિદ્ધિ માટે બહુ કિંમતી મહાપુરૂષોને લાયક એવા રત્નો વગેરેની ભેટ તથા દેવે આપેલા બંને કુંડળોને કે જેઓ રાજાને યોગ્ય હતા તે લીધાં અને લઈને તેઓ મિથિલા રાજધાનીમાં ગયા.

(अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेंति)

ત્યાં જઈને તેઓ જ્યાં કુંભક રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યાં, ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધાએ રાજાને બંને હાથની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમન કર્યાં. પછી સાથે લાવેલાં રત્નો વગેરેના ઉપહાર તેમજ કુંડળો તેમણે ભેટ કર્યાં.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राभृतं कुण्डलद्वयं च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छ्य=गृहीत्वा च मल्लीं विदेह राजवरकन्यां शब्दयति, शब्दयित्वा च तद् दिव्यं=मनोहरं कुण्डलयुगलं मल्ल्या विदेह राजवरकन्यकाया 'पिणद्धेइ' पिनद्धयति=पिनद्धं करोति परिधापयतीत्यर्थः। पिनद्धय प्रतिविसर्जयति=तां कन्यान्तः पुरे स्वभृत्यैः प्रापयति, ततस्तदन्तरं खलु स कुम्भको राजा तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण संमान्य यावत् उच्छुल्कं=शुल्काभावं वितरति=ददाति। 'अरहन्नकादिभ्योऽन्यवर्हर्तृभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमितं राजशुल्कं मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य मित्याज्ञापत्रं प्रदत्तवानिति भावः। वितीर्य=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्रं दत्वा,

उन्हों ने राजा को भेट किये। (तएणं कुंभए तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्नं सद्दावेइ सद्दावित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिणद्धइ) कुंभक राजा ने उन सांयत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेंटको तथा कुण्डलद्वय को स्वीकार कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह वरराजकन्या मल्लि कुमारी को पहिरा दिये।

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहां से दूतों के साथ कन्यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया। (तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणिगये विउले णं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ) इसके बाद कुंभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिकां का विपुल, वस्त्र, गंधमाला, अलंकारों से सन्मान किया। सन्मान करके

(तएणं कुंभए तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह बरराय कन्नं सद्दावेइ, सद्दावित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह वरराज कन्नगाए पिणद्धइ)

કુંભક રાજાએ તે સાંયાત્રિકોની રત્નો વગેરેની ભેટ તેમજ કુંડળોને સ્વીકાર્યાં. સ્વીકાર્યા પછી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લિકુમારીને બોલાવી અને બોલાવીને બંને દિવ્ય કુંડળો વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારીને પહેરાવ્યાં.

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) પહેરાવીને તેને દૂતોની સાથે ત્યાંથી કન્યાન્તપુરમાં પહોંચાડી

(तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणियगे विउले णं वत्थ गंध जाव उस्सुकं वियरइ)

ત્યાર પછી કુંભકરાજાએ અરહન્નક પ્રમુખ સાંયાત્રિકોનું વિપુલ વસ્ત્ર ગંધ માળા અલંકારોવડે સન્માન કર્યું સન્માન કરીને તેમની વસ્તુઓનો કર (મહેસૂલ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'रायमग्गमोगाढे' राजमार्गमवगाढान् राजमार्गसमीपावस्थितान् आवासान् निवासस्थानानि वितरति=अरहन्नकादीनां वासार्थमाज्ञां ददाति, प्रति विसर्जयति =एवं व्यवस्थां तदर्थं विधाय कुम्भको राजा स्वनिर्दिष्टानि वासस्थानानि गन्तु मादिशति स्मेत्यर्थः। ततः खलु अरहन्नक सांयात्रिकाः यत्रैव राजमार्गमव गाहिता=राजमार्गसंनिकृष्टा आवासाः=वासस्थानानि वर्तन्ते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य राजदत्तभवनेषु निवसन्तस्ते भाण्डव्यवहरणं=गणिमादिकस्य क्रयाणकव स्तुजातस्य विक्रयं कुर्वन्तिस्म०। कृत्वा प्रतिभाण्डं=स्वकीयं गणिमादिकं भाण्डं विक्रीय तन्मूल्येन पुनरन्यत् क्रीतं स्वोपयोगिवस्तुजातरूपं भाण्डं प्रतिभाण्डं, तद् गृह्णन्ति=संचिन्वन्ति, गृहीत्वा शकटी शाकटिकं भरन्ति=पूरयन्ति० भृत्वा मिथि लानगरीतः प्रस्थिताः सन्तः यत्रैव गम्भिरकं गम्भीरकाख्यं पोतपत्तनं=नौकारोहण स्थानं वर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहनं=नौकायानं सज्जयन्ति=नवीनो-

---

उन की वस्तुओं पर से कर-टेक्स-माफ कर दिया। इन व्यवहारी अरहन्नकादिकों से क्रय विक्रय के व्यवहार पर नियमित राज शुल्क मेरे नौकर न लेवे इस प्रकार का आज्ञा पत्र उन्हें लिखकर दे दिया। (वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासेवियरइ, पडिविसज्जेइ) शुल्क भाव विषयक आज्ञापत्र प्रदान करके राजा फिर उन्हें राजमार्ग के समीप में रहे हुए राजकीय मकान ठहरने के लिये देदिये। इस प्रकार उनकी व्यवस्था करके बाद में कुंभक राजा ने वहां से उन्हें विदा किया (तएणं अरहन्नग संजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे-तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भंडववहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गिण्हंति गिण्हित्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेंति) राजा से बिना बिदा लेकर वे अरहन्नक सांयात्रिक जन जहां राजमार्ग में राजकीय भवन थे वहां आये।

માફ કર્યો વેપારી અરહન્નક પ્રમુખ વગેરેની પાસેથી ક્રય વિક્રયના ઉપર મારા રાજ કર્મચારીઓ શુલ્ક(કર)ને નહિ આ પ્રમાણેનું આજ્ઞાપત્ર રાજાએ તેમને લખી આપ્યું.

(वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ)

શુલ્ક માફીનું આજ્ઞાપત્ર તેમને આપીને રાજાએ રાજમાર્ગની પાસે આવેલો પોતાનો મહેલ તેમને ઉતરવા માટે આપ્યો. આ પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરીને કુંભક રાજાએ ત્યાંથી તેમને વિદાય કર્યા.

(तएणं अरहन्नग संजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडववहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गिण्हंति गिण्हित्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा भाण्डं संक्रामयन्ति, स्थापयन्ति दक्षिणानुकूलेन वायुना यत्रैव चम्पापोतस्थानं=चम्पानगरीसमीपे नौकावतरणस्थानं वर्तते तत्रैव पोतं=नावं लम्बयन्ति=तीरस्थितानेकशङ्कुषु रज्ज्वादिभिर्बद्ध्वा स्थिरीकुर्वन्ति, लम्बयित्वा शकटीशाकटिकं=लघुशकटबृहच्छकटाकां समूहं सज्जयन्ति=परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तद् गणिमं धरिमं मेयं परिच्छेद्यं=चतुर्विधं भाण्डं शकटीशाकटिके शकटसमूहे संक्रामयन्ति=स्थापयन्ति संक्राम्य यावद् महार्थं प्राभृतं दिव्यं देवेन दत्तं कुण्डलयुगलं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा चम्पानगर्यां प्रविष्टा चन्द्रच्छायःचन्द्रच्छायनामाऽङ्गराजः = अङ्गदेशाधिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तन्महार्थं यावद्

वहां आकर वे उन भवनों मे ठहर गये-और वहीं रहते हुए वे अपनी क्रयाणक गणिमादिरूप वस्तुओं का विक्रयकरने लगे। और उनके विक्रय से जो मूल्य उन्हें प्राप्त होता था उससे दूसरी अपने व्यवहार के उपयोगी वस्तुओं को खरीदने लगे। इस तरह जब उन का संग्रह होचुका तब उन लोगों ने गाडी और गाड़ों को उनसे भरा-और भरकर मिथिला नगरी से प्रस्थित होकर जहां गंभीरक नाम का पोत पत्तन था वहां आये। वहां आकर उन्होंने नौकायान को सज्जित किया (सज्जिता भंडं संकामेंति, दक्खिणानुकूलेणं वाउणा जेणेव चंपा पोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति-लंबित्ता सगड़ी० सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगड़ी० संकामेंति संकामित्ता जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडल जुयलं गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति) सज्जित

રાજાની આજ્ઞા મેળવીને અરહન્નક સાંયાત્રિકો જ્યાં રાજ માર્ગની પાસે રાજ મહેલ હતો ત્યાં પહોંચ્યાં.

ત્યાં જઈને તેઓ મહેલમાં રોકાયા અને ત્યાં રહીને જ તેઓ પોતાની વેચાણ માટેની વસ્તુઓનું વેચાણ કરવા લાગ્યા. વેચાણથી તેઓને જે કંઈ રકમ મળતી તેનાથી તેઓ પોતાના વેપાર માટેની બીજી વસ્તુઓની ખરીદી કરવા લાગ્યા આ પ્રમાણે વસ્તુઓનો સંગ્રહ થયો ત્યારે તે લોકોએ ગાડીઓ અને ગાડાઓમાં વસ્તુઓ ભરી અને આ પ્રમાણે મિથિલા નગરીથી પ્રસ્થાન કરીને તેઓ જ્યાં ગંભીરક નામે પોત પત્તન હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓએ વહાણને તૈયાર કર્યું.

(सज्जित्ता भंडं संकामेंति दक्खिणानुकूलेणं वाउणा जेणेव चंपापोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति लंबित्ता सगडी० सज्जेंति सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडी संकामेंति संकामित्ता जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगाराया तेणेव उवागच्छंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राभृतं दिव्यं कुण्डलयुगलं चोपनयन्ति, चन्द्रच्छायनृपस्याग्रे स्थापयतीत्यर्थः। ततः खलु चन्द्रच्छायनृपोऽङ्गराजस्तद् दिव्यं महार्थं कुण्डलयुगं च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छ्य गृहीत्वा तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् एवमवादीत्–वक्ष्यमाण-

करके उसमें गाड़ी और गाड़ों से उतर २ कर अपने भांडों को रखा। दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर फिर वे वहां से चले–और चलकर जहां चंपा नगरी के समीप में नौका के ठहरने का स्थान था वहां आकर उन लोगों ने लंगड़ डाल दिया अपनी नौका को ठहरा दिया।

नौका को ठहरा कर फिर गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया–सज्जित करने के बाद उसमें से गणिमादि वस्तुओं को उतार २ कर उन गाड़ी और गाड़ों में भरा–भर कर फिर वे महार्थ साधक प्राभृत (भेंट) को और दिव्य कुंडलयुगल को लेकर चंपा नगरी में प्रविष्ट हुए।

वहां प्रविष्ट होकर जहां अंगदेशाधिपति चंद्रच्छाय राजा थे–वहां गये। (उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव उवणेंति, तएणं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलयुगलं पडिच्छइ) वहां पहुँच कर उन लोगों ने उस महार्थ साधक भेंट को और कुंडलयुगल को राजा को भेट किया अंगदेशाधिपति चंद्रछाय राजा ने उस भेंट एवं दिव्य महार्थ कुंडल युगल को स्वीकार कर लिया–(पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोक्खे एवं वयासी) स्वीकार करके फिर उसने उन अरहन्नक आदि

તૈયાર કરીને ગાડીઓ તથા ગાડાંઓમાંથી પોતાના ભાંડોને તેમાં મૂકયા. દક્ષિણાનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે તેઓ ત્યાંથી ચાલ્યા અને ચંપા નગરીની પાસે વહાણને ઉભું રાખવાની જગ્યા હતી ત્યાં લંગર નાખ્યું અને વહાણ ઉભું રાખ્યું.

વહાણ ઉભું રાખીને ગાડીઓ અને ગાડાંઓને તૈયાર કરીને તેમાં ગણિમ વગેરે વસ્તુઓ વહાણમાંથી ઉતારીને મૂકી અને ત્યાર પછી મહાર્થ સાધક ભેટ અને દિવ્ય કુંડળની જોડ લઈને ચંપા નગરીમાં ગયા.

ત્યાં જઈને જ્યાં અંગદેશાધિપતિ ચંદ્રચ્છાય રાજા હતા ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव उवणेंति तएणं चंदच्छाए अंगाराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलयुगलं पडिच्छइ)

ત્યાં પહોંચીને તેઓએ મહાર્થ સાધક ભેટને તેમજ કુંડળની જોડ રાજાને ભેટ કરી. અંગદેશના રાજા ચંદ્રછાયે પણ તે ભેટ તેમજ દિવ્ય મહાર્થ કુંડળની જોડને સ્વીકારી. (पडिच्छित्ता तं अरहन्नकपामोक्खे एवं वयासी) સ્વીકાર્યા બાદ તેણે અરહન્નક વગેરે સાંયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યું—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकारेणोक्तवान् हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु बहून् ग्रामागर०यावत्-अत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम्० 'ग्रामाकरनगरखेटकर्वट मडम्बद्रोणमुख पत्तन निगमसंनिवेशान्' इति तत्र ग्रामो जनपदः, आकरः-सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानम् नगरं-करहितं, खेटं-धूलीप्राकारं, कर्वटं कुनगरं, मडम्बं-दूरवर्ति सन्निवेशान्तरं, द्रोणमुखं-जलपथस्थलपथयुक्तं, पत्तनं - जलपथ - स्थलपथयोरेकतरेण युक्तं, निगमो-वणिग्जनाधिष्ठितः, संनिवेशः-कटकादीनामावासः, तान् ग्रामादीन् ' आहिंडह ' आहिण्डध्वे=परिभ्राम्यथ, तथा लवणसमुद्रं चाभीक्ष्णं २ पोतवहनैः=नौकायानैः, 'ओगाहेह' अवगाहध्वे=तरथ, तत्=तस्माद् यूयं कथयत-अस्ति चापि युष्माभिः किमपि कुत्रचिद् आश्चर्यं दृष्टपूर्वं पूर्वं युष्माभिर्यत् किमप्याश्चर्यं कुत्रचिद् दृष्टमस्ति, तान्मग्रे वर्णयतेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु तेऽरहन्नकप्रमुखाः व्यवहारिणश्चन्द्रच्छायमङ्गराजमेवमवादिषुः=वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवन्तः-हेस्वामिन् ! एवं खलु वयमिहैव चम्पायां नगर्याम् अरहन्नकप्रमुखा बहवः सांयात्रा नौकावाणिजकाः परिवसामः,

सांयात्रिक से इस प्रकार कहा-(तुब्भे णं देवाणुप्पिया बहूणि गामागर जाव आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं ओगाहेह) हे देवानुप्रियों ! आप लोग अनेक ग्राम आकर आदि में परिभ्रमण करते रहते हो-तथा लवण समुद्र को भी नौका यानों से बार २ पार करते रहते हो (तं अत्थियाइं भे केइं कहिं चि अच्छेए दिट्ठपुव्वे ?) तो कहो यदि कहींपर आप लोगों ने कोई आश्चर्य देखा हो तो । (तएणं ते अरहन्नग पामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी) ऐसा राजा की जिज्ञासा जानकर उन व्यवहारी अरहन्नक प्रमुखों ने अंगदेशाधिपति उन चंदच्छाय राजा से इस प्रकार कहा- (एवं खलु सामी अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे संजत्तगा णावा

(तुब्भेणं देवाणुप्पिया बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं ओगाहेइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ઘણાં ગામ આકર વગેરેમાં પરિભ્રમણ કરતા જ રહો છો તેમજ લવણસમુદ્રને પણ વહાણ વડે વારંવાર પાર કરતા રહો છો

(तं अत्थियाइं भे केइं कहिंचि अच्छेए दिट्ठपुव्वे !) તમે કોઇ પણ નવાઈની વાત જોઈ હોય તો બતાવો

(तएणं अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी)

અંગદેશાધિપતિ રાજા ચંદ્રચ્છાયની જિજ્ઞાસા જાણીને અરહન્નક, પ્રમુખો એ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું--

(एवं खलु सामी अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु वयमन्यदा कदाचिद् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये गणिमं च ४ गणिमादि चतुर्विधं क्रयाणकं पोतवहने भृत्वा समुद्रे प्रस्थिताः, तथैव अहीनातिरिक्तं= न न्यूनाधिकं, किंतु यथादृष्टं तथैव भवतामग्रे कथयामः, यावत्=समुद्रेगच्छन्तो वयं गम्भीरपुरपत्तनं=नौकावतरणस्थानं प्राप्य शकटसमूहे सर्वं क्रयाणकं भृत्वा मिथिलायां नगर्यां बहिरुद्याने शकटसमूहमवस्थाप्य कुम्भकस्य राज्ञोदर्शनार्थं मिथिला नगरीं प्रविष्टाः, यावत् – कुम्भकस्य राज्ञः प्राभृतं दिव्यं कुण्डलयुगलं चोपनयामः, कुम्भकनृपायोपहारं वयं प्रदत्तवन्त इत्यर्थः । तदा खलु स कुम्भकः

वणियगा परिवसामो, तएणं अम्हें अन्नया कयाइं गणिमं च ४ तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो) स्वामीन् सुनो हम अरहन्नक प्रमुख अनेक सांयात्रिक पोतवणिक् यही चंपा नगरी में रहते हैं हम लोग किसी एक समय, गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक को पोत वहन में भरकर यहां से समुद्रीय रास्ते से होकर मिथिला राजधानी गये हुए थे। वहां हम ने जो कुछ देखा वह आपके समक्ष न न्यून रूप में और न अधिक रूप में किन्तु जैसा देखा वैसा ही हम निवेदित करते है–हम लोग नौका से यहां से प्रस्थित होकर गंभीरक पोत पत्तन पर पहुँचे वहां उतर कर हम लोगों ने समस्त अपना क्रयाणक शकटों में भर दिया। वहां से चल कर फिर हम लोग मिथिला नगरी के बाहिर एक उद्यान में गाडियों को रख कर कुंभक राजा के दर्शन करने के लिये मिथिला नगरी गये। वहां राजा के समीप पहुँच कर हम लोगों ने उन के समक्ष अपनी भेंट रख दी और कानो के दो कुंडल भी

संजत्तगा णावा वणियगा परिवसामो तएणं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च ४ तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो)

હે સ્વામી! અમે અરહન્નક પ્રમુખ અનેક સાંયાત્રિક પોત વાણિકો અહીં ચંપાનગરીમાં જ રહીયે છીએ.

અમે કોઇ વખત ગણિમ વગેરે ચાર જાતની વેચાણની વસ્તુઓ પોત વહનમાં ભરીને અહીંથી સમુદ્રના માર્ગેથી મિથિલા રાજધાનીમાં ગયા હતા. ત્યાં અમે જે કંઇ જોયું છે તે તમારી સામે વધારે પડતું પણ નહિ તેમજ ઓછું પણ નહિ એટલે કે ત્યાં જેવી રીતે જે રૂપમાં અમે જોયું છે તે વિષે તમારી સામે નિવેદન કરીયે છીએ. અમે લોકો અહીંથી વહાણ વડે પ્રસ્થાન કરીને ગંભીરક પોતપત્તન ઉપર પહોંચ્યા. ત્યાં ઉતરીને અમે વેચાણની બધી વસ્તુઓ ગાડાઓમાં ભરી. ત્યાર પછી ત્યાંથી ચાલીને મિથિલા નગરીની બહાર ઉદ્યાનમા ગાડીઓને ઉભીરાખીને કુંભક રાજાના દર્શન માટે મિથિલા નગરીમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'मल्लीए' मल्ल्याः=मल्लीनाम्न्या विदेहराजवरकन्यायाः=स्वकन्यकायास्तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं पिनद्धयति, पिनद्ध्य=परिधाप्य प्रतिविसर्जयति। हे स्वामिन्! तदेषा खलु अस्माभिः कुम्भकस्य राज्ञो भवने, मल्ली विदेहराजवरकन्या=विदेहराजस्य कुम्भकस्य वरा सर्वगुणयुक्तत्त्वात् श्रेष्ठा कन्या, आश्चर्यं दृष्टम्=अवलोकितम्। तत् नो खलु अन्या काऽपि तादृशी देवकन्या वा यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-'असुरकन्ना वा-नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा राजकन्ना वा' इति। असुरकन्या वा नागकन्या वा यक्षकन्या वा गन्धर्वकन्या वा राजकन्या वा, इति संस्कृतम्, यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, यादृशी मिथिलायां-

---

(तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयल पिणद्धेइ) भेंट को स्वीकार करके उसी समय उन कुंभक राजा ने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-और बुलाकर वे दो कुंडल उसे पहिना दिये। (पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) और पहिना कर फिर उसे कन्यान्तः पुर में प्रति विसर्जित कर दिया। (तं एसणं सामी अम्हे हिं कुंभरायभवणंसि मल्ली विदेह अच्छेरए दिट्ठे, तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देव कन्ना वा जाव जारिसियाणं मल्ली विदेह०) इस तरह हे स्वामीन्! हमने कुंभक राजा के भवन में सर्व गुण संपन्न विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी रूप अश्चर्य देखा है।

हमारी दृष्टि में अन्य कोई भी ऐसी देव कन्या, असुर कन्या, नाग कन्या, यक्ष कन्या, गंधर्व कन्या अथवा राज कन्या आश्चर्य रूपा नहीं है

गया. त्यां जईने अमे तेनની सामे भेट तेमज કાનના કુંડળની જોડ મૂકી.

(तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेइ)

ભેટ સ્વીકારીને તેજ વખતે કુંભક રાજાએ પોતાની વિદેહ રાજવરકન્યા મલ્લી કુમારીને બોલાવી. અને બોલાવીને કુંડળો તેને પહેરાવ્યાં. (पिणद्धिता पडिविसज्जेइ,) અને પહેરાવીને તેને કન્યાન્તઃપુરમાં મોકલી દીધી.

(तं एसणं सामी अम्हे हिं कुंभरायभवणंसि मल्ली विदेहअच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसियाणं मल्लीविदेह०)

આ પ્રમાણે હે સ્વામી! અમે કુંભક રાજાના મહેલમાં સર્વગુણ સંપન્ન વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના રૂપમાં આશ્ચર્ય જોયું છે.

અમારી સામે બીજી કોઈ પણ દેવકન્યા અસુર કન્યા, નાગ કન્યા, યક્ષ કન્યા, ગંધર્વકન્યા, અથવા તો રાજકન્યા નથી કે જે એવી વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી જેવી આશ્ચર્ય રૂપા હોય.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्वरस्य कुम्भकस्य कन्यका मल्ली दिव्याश्चर्यरूपा विराजते, नास्ति तादृशी काऽपिदेवकन्या तथा न सन्त्यसुरकन्यकादयः काश्चिदपि तत्तुल्या इति भावः।

ततस्तदनन्तरं खलु चन्द्रच्छायनामा नृपस्तान् अरहन्नकप्रमुखान् सत्कारयति=वस्त्रादिना तेषां सत्कारं करोति, सम्मानयति–मधुरवचनादिना प्रशंसति। सत्कृत्य संमान्य प्रतिविसर्जयति। तेभ्योऽरहन्नकादिभ्यो व्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रय व्यवहारेषु राजकीय शुल्कं मदीयभृत्यैर्न ग्रहीतव्यमित्याज्ञापत्रं दत्वा तान् विसर्जयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु चन्द्रच्छायो वाणिजकजनितहर्षः = अरहन्नकादि वाणिजकवचनश्रवणेन मल्लीकुमार्यां संजातानुरागः सन् दूतं शब्दयति, यावद्=

जैसी कि विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी है। (तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता, पडिविसज्जेइ, तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सद्दावेइ, जाव जइ वि य णं सा सयं रज्जसुक्का, तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्था गमणाए) इस प्रकार उन अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिकों के मुख से मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य श्रवण कर चंदच्छाय राजा ने उन अरहन्नक प्रमुख पोत वणिकों का वस्त्रादि प्रदान द्वारा सत्कार किया और मधुर वचनादि द्वारा उनकी बहुत २ प्रशंसा की।

बाद में उन्हें अपने पास से राजकीय शुल्क माफ कर विसर्जित कर दिया उन्हें इस प्रकार का " मेरे भव्य जन इन अरहन्नक आदि व्यवहारी जनों से क्रय विक्रय के व्यवहार में राजकीय शुल्क न लेवें आज्ञा पत्र लिखकर दे दिया। पश्चात् उन अरहन्नक आदि वणिग्जनोंके वचनों के

(तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सद्दावेइ जाव जइ वि य णं सासयं रज्जसुक्का तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए)

આ રીતે તે અરહન્નક પ્રમુખ સાંયાત્રિકોના મોંથી મલ્લીકુમારી રૂપ આશ્ચર્ય સાંભળીને ચંદચ્છાય રાજાએ અરહન્નક પ્રમુખ તે પોત વાણિકોનો વસ્ત્ર વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો તેમજ મધુર વચનો વડે તેમના ખૂબજ વખાણ કર્યાં.

ત્યાર બાદ રાજકીય કર (મહેસૂલ) માફ કરીને તેમને વિદાય કરતી વખતે " મારા તમામ રાજકર્મચારીઓ અરહન્નક વગેરે વેપારીઓ પાસેથી ક્રય વિક્રયના વ્યવહારમાં રાજકીય કર લેવો નહિ " આ જાતનું આજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યું ત્યાર પછી અરહન્નક વગેરે વણિક જનોના મોંથી સાંભળેલા વચનોથી મલ્લીકુમારી ઉપર જેમના હૃદયમાં પ્રેમ ઉત્પન્ન થયો છે, એવા તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्र यावत् कहणादिदं द्रष्टव्यम्-शब्दयित्वा चैवमवादीत्-हे देवानुप्रिय! त्वं मिथिलायां नगर्यां गत्वा कुम्भकं राजानं ब्रूहि-तव कन्यकां मल्ली चन्द्रच्छायो वाञ्छति' इति। यद्यपि च खलु सा स्वयं राज्यशुल्का = राज्यार्थीनी, एवं चेत्तस्याः समग्रं राज्यं समर्पयामीति भावः। ततस्तदनन्तरं खलु स दूतश्चन्द्रच्छायनृपाज्ञया हृष्टतुष्टः=अत्यन्तं प्रमुदितः सन् यावत् कतिपय सैन्यसहितो रथारूढः प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः। इति द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सम्बन्धः कथितः॥ सू० २४॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाल नाम जणवए होत्था, तत्थ णं सावत्थी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया, होत्था, सुकुमाल० रूवेण य जोवणेणं लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि

श्रवणसे मल्ली कुमारीके ऊपर जिसका अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस चन्द्रच्छाय राजा ने उसी समय दूत को बुलाया। बुला कर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! तुम मिथिला नगरी में जाकर कुंभक राजासे कहो कि आपकी पुत्री मल्ली कुमारी को चंद्रच्छाया राजा चाहते हैं।

यदि वह पुत्री मेरे समस्त राज्य को चाहेगी तो मैं उसे अपना समस्त राज्य समर्पित कर दूंगा। इस तरह वह दूत चंद्रच्छाय राजा की आज्ञा से हर्षित एवं संतुष्ट होता हुआ कतिपय सैन्य सहित वहां से रथ पर आरूढ होकर मिथिला नगरी की ओर प्रस्थित हो गया। इस तरह यह द्वितीय चंद्रच्छाय नामके राजा का संबंध कहा। सूत्र "२४"

ચંદ્રચ્છાય રાજાએ તરત જ દૂતને બોલાવ્યો અને તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય! તમે મિથિલા નગરીમાં જઈને કુંભક રાજાને કહોકે તમારી પુત્રી મલ્લી કુમારી ને ચંદ્રચ્છાય રાજા ચાહે છે.

જો તે પુત્રી મારા આખા રાજ્યને પણ ઈચ્છશે તો હું તેને પોતાનું રાજ્ય સમર્પવા તૈયારે છું. આ રીતે દૂત ચંદ્રચ્છાય રાજાની આજ્ઞાથી હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થતો થકી કેટલાક સૈન્યની સાથે ત્યાંથી રથ ઉપર સવાર થઈને મિથિલા નગરી તરફ ચાલ્યો. આ પ્રમાણે આ બીજા ચંદ્રચ્છાય નામના રાજા ના સંબંધ વિષે કહ્યું ॥ સૂત્ર "૨૪" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होत्था, तीसे णं सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहुदारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी —एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहुदारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सइ, तं कल्लं तुब्भेणं रायमग्गमोगाढंसि मंडवं जलथलयदसद्धवन्नमल्लं साहरेह जाव सिरिदामगंडं ओलइंति । तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविहपंचवन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहइ, तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टए रयेह, रएइत्ता जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिक्खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगरयहयरविंदपरिक्खित्ते अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तएणं ताओ अंते उरियाओ सुबाहुदारियं पट्टयंसि दुरूहेंति दुरूहित्ता सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति, ण्हाणित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति करित्ता पिउणो पायं वंदिउं उव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णेति, तएणं सुबाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुप्पी राया सुबाहुदारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुमएणं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, तं अत्थि ताइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए ? तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं न अग्घेइ, तएणं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजाणितहास दूतं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नोनृपस्य संबन्धं प्रस्तौति–' तेणं कालेणं ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपदः=देशः, आसीत्,

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि।

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (कुणाल नाम जणवए होत्था) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था।

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (कुणाल नाम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र=तस्मिन् देशे खलु श्रावस्ती नाम नगर्यासीत । तत्र=श्रावस्त्यां नगर्यां खलु 'रुप्पी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपतिः=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=प्रसिद्धः राजाऽऽसीत्० । तस्य खलु रुक्मिणो दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भसमुत्पन्ना,सुबाहुर्नाम=सुबाहुनाम्नी दारिका=कन्यका आसीत् । सा सुबाहुदारिका कीदृशीत्याह-'सुउमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=कोमलकरचरणवती, तथा-रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=तारुण्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती प्रधानेत्यर्थः, अतएव-उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलवनितागुणसंपन्ना

(तत्थणं सावत्थी नाम नयरी होत्था) उस जनपद-देश-में श्रावस्ती नाम की नगरी थी। (तत्थणं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था-तस्सणं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया होत्था) उस श्रावस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम रुक्मी था रहते थे। इस रुक्मी राजा की एक पुत्री थी। जिस का नाम सुबाहु था।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। (सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे णं लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था) इस के हाथ और चरण ही अधिक सुकुमार थे। यह रूप-आकृति और वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी। इस कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री संबंधी समस्त गुणों से युक्त

जणवए होत्था) કુણાલ નામે જનપદ એટલે કે દેશ હતો. (तत्थणं सावत्थी नाम नगरी होत्था) તે જનપદ-દેશમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી.

(तत्थणं रुप्पी कुणालहिवई नामं राया होत्था तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहु नामं दारिया होत्था)

શ્રાવસ્તી નગરીમાં કુણાલ દેશના અધિપતિ રુકમી રહેતા હતા. રુકમી રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનું નામ સુબાહુ હતું.

ધારિણી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો હતો.

(सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे णं लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था)

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ હતા. તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ લાવણ્ય બધામાં સુંદર ગણાતી હતી. તેથી તે ખૂબજ સુંદર અંગોવાળી અને સ્ત્રી સંબંધી બધા ગુણોથી યુક્ત હતી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाता चाप्यासीत्० । तस्याः खलु सुबाहुदारिकाया अन्यदाकदाचित् चातुर्मासिकं मज्जनकं=स्नानं=स्नानमहोत्सवश्चाप्यभूत् ततस्तदनन्तरं स रुक्मीकुणालाधिपतिः सुबाहुदारिकायाः=स्वपुत्र्याश्चातुर्मासिकमज्जनकमुपस्थितं जानाति० । ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषान्= आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः ! एवं खलु सुबाहुदारिकायाः मम पुत्र्याः कल्ये=प्रभाते द्वितीयदिवसेत्यर्थः चातुर्मासिकमज्जनकं चातुर्मासिकस्नानमहोत्सवो भविष्यति, तत् तस्मात् कल्ये यूयं खलु राजमार्गमवगाढे=राजमार्गसंनिकृष्टे मण्डपे जलस्थलजदशार्धवर्णमाल्यं=जलजं स्थलजं पञ्चवर्णपुष्पसमूहं संहरत=समानयत, यावत्–

थी। (तीसेणं सुबाहु दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था) एक दिन इस सुबाहु पुत्री के चातुर्मासिक स्नान महोत्सव का समय आया (तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहु दारियाए चाउम्मासिय मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ) कुणाल देशाधिपति रुक्मि राजा को अपनी पुत्री सुबाहु दारिका के चातुर्मासिक स्नानोत्सव का जब ध्यान आया–तब (जणित्ता कौडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) ऐसो जान कर उस ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया– (सद्दावित्ता एवं वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–(एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहु दारियाए कल्लं चाउम्मासिय मज्जणए भविस्सइ) हे देवानुप्रियों ! कल प्रातः काल सुबाहु दारिका का चतुर्मासिक स्नान होगा। (तं कल्लं तुब्भेणं रायमग्गमोगाढंसि मंडवं जलथल दसद्धवन्न मल्लं साहरेह) अतः तुम लोग राज मार्ग के समीप मुख्य मंडप में कल प्रातः काल ही जल, स्थल में

(तीसेणं सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासिय मज्जणए जाए यावि होत्था)
એક દિવસે સુબાહુ પુત્રીનો ચાતુર્માસિક સ્નાન મહોત્સવનો સમય આવ્યો.

(तएणं से कुणालाहिवई सुबाहु दारियाए चाउम्मासिय मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ)
કુણાલ દેશના રાજા રુકમીને તેની પુત્રી સુબાહુનો ચાતુર્માસિક સ્નાનોત્સવનો જ્યારે વિચાર આવ્યો ત્યારે (जणित्ता कौडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! सुबाहुदारियाए सकल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सइ)
હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવારે સુબાહુ દારિકાનું ચાતુર્માસિક સ્નાન થશે.

(तं कल्लं तुब्भेणं रायमग्गमोगाढंसि मंडवं जला थल दसद्धवन्नमल्लं साहरेइ)
એથી તમે આવતી કાલે સવારે રાજમાર્ગની પાસેના મુખ્ય મંડપમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-एकंच खलु महत् श्रीदामकाण्डमुपनयत, तस्य मण्डपस्य खलु बहुमध्यदेशभागे एकं महत् श्रीदामकाण्डं यावत् पाटलादि पुष्पसमूह सहितं गंधधाणि मुञ्चत् उल्लोचे अवलम्बयतः इति ततस्ते कौटुम्बिक पुरुषास्तथैव मण्डपमध्ये उल्लोचे= चन्द्रातपे श्रीदामकाण्डमवलम्बयन्ति०। ततः खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिःसुवर्णकारश्रेणिं=सुवर्णकारान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्- भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, राजमार्गमवगाढे=राजमार्गाऽऽसन्ने पुष्पमण्डपे नानाविधपञ्चवर्णैः=अनेकविधैः पञ्चवर्णरञ्जितैस्तण्डुलै नगरं आलिखत=रचयत स्वस्तिकाद्याकारै श्चित्रयतेत्यर्थः । तस्य लिखितचित्रस्य

उत्पन्न हुए पंच वर्ण के पुष्पों को लाकर उपस्थित करो।

(जाव सिरिदाम गंडे ओलइंति) तथा एक बड़ा भारी श्री दामकांड-बहुत बड़ी लंबी पुष्पमाला-भी लाना। जो पाटल (गुलाब) आदि पुष्पों से गुंथा हुआ हो और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली सुगंधि निकल रही हो। उस मंडप के ठीक बीचो बीच ऊपर तने हुए चंदरवामें उसे लटका देना। इस तरह राजाकी आज्ञानुसार उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सब कार्य कर दिया श्रीदाम कांड को वहां ऊपर चंदरवा में लटका दिया। (तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविह पंचवण्णेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहह) इस के बाद उस कुणालाधिपति रुक्मी राजा ने सुनारों को बुलाया-और बुला कर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही

જળ તેમજ સ્થળના પંચવર્ણના પુષ્પો લાવો.

(जाव सिरिदामगंडे ओलइंति) તેમજ એક મોટો શ્રીદામકાંડ-મોટી પુષ્પમાળા-પણ સાથે લાવો. તે શ્રીદામકાંડ ગુલાબ વગેરે પુષ્પોથી ગુંથાએલો તેમજ નાસિકા તૃપ્ત થાય તેવી સુવાસવાળો હોવો જોઇએ. તેને મંડપની બરોબર વચ્ચે ઉપર તાણવામાં આવેલા ચંદરવામાં લટકાવજો. આ પ્રમાણે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે રાજ પુરુષોએ તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કામ પુરૂં કરી આપ્યું. શ્રીદામકાંડને અધવચ્ચે ચંદરવામાં લટકાવ્યો.

(तएणं से रुप्पी कुणालहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविह पंचवण्णेहिं तंदुलेहिं णगरंआलिहह)

ત્યારપછી કુણાલાધિપતિએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું--

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुमध्यदेशभागे पट्टकं रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्टं तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येवं ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमानः, 'चाउरंगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपदातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महाभटचड़गरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महाभटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्पवेश्यः तथाविधो यः पहयरः समुदायस्तस्य वृन्दं=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्दः समूहार्थवाचकः । अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः सुबाहुं=सुबाहु-

राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मंडप में अनेक रंगों से रंगे हुए चावलों से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रहेय) उसने ठीक बीचों बीच में एक पट्टक बनाओ-(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणंति) पट्टक बनाकर उनलोगों ने राजा को इसकी पीछे खबरकरदी-उन्हों ने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान कीथी-वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी-(तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरंगिणी सेना के साथ २ महाभटों के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

"હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે રાજમાર્ગની પાસે બનાવવામાં આવેલા પુષ્પ-મંડપમાં અનેક રંગથી રંગાએલા ચોખાથી નગરની રચના કરો.

(तस्स बहुमज्झ देसभाए पट्टयं रहेय) તેની બરોબર અધવચ્ચે એક પટ્ટક બનાવો. (रएइत्ता जाव पच्चप्पिणंति) આ પ્રમાણે પટ્ટક બનાવીને તેઓએ રાજાને સૂચના કરી કે હે સ્વામી ! જે પ્રમાણે કામ કરવાની તમે અમને આજ્ઞા આપી હતી તે પ્રમાણે બધું અમે તૈયાર કરી દીધું છે.

(तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अंहे उरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गं जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી તે કુણાલાધિપતિ રુકમી રાજા હાથી ઉપર સવાર થઈને ચતુરંગિણી સેનાની સાથે સાથે જેમાં કોઇપણ પેસી શકે નહિ તેવા મહા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम्नी दारिकां=पुत्रीं, पुरतः अग्रे कृत्वा यत्रैव राजमार्गो यत्रैव पुष्पमण्डपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य पुष्पमण्डपमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य सिंहासनवरगतः 'पुरत्थाभिमुहे' पौरस्त्याभिमुखः पूर्वदिङ्मुखः, 'सन्निसन्ने' संनिषण्णः=उपविष्टः। ततस्तदनन्तरं 'ताओ' ताः, 'अंतेउरियाओ' आन्तः पुरवासिन्यो वनिताः सुबाहुदारिकां पट्टके 'दुरुहेंति' दुरोहति=आरोहयन्ति उपवेशयन्तीत्यर्थः। दुरुह्य=आरोह्य श्वेतपीतकैः=राजतसौवर्णैः कलशैः स्नपयन्ति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा=भूषयित्वा, पितुः पादौ वन्दितुमुपनयन्ति तत खलु सुबाहुदारिका यत्रैव रुक्मी राजा तत्रैवोपाग-

---

मनुष्य घुस नहीं सकता है तथा अन्तः पुर से परिवृत होते हुए अपनी पुत्री सुबाहुदारिका को आगे करके जहां राजमार्ग के समीप पुष्पमंडप बना हुआ था वहाँ आये। (उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ-अणुविसित्ता सीहासनवरगए पुरत्थाभिमूहे सन्निसन्ने) वहां आकर वे हाथी के स्कंध से नीचे उतरे। उतर कर पुष्प मंडप में उपविष्ट हुए। वहां जाकर वे पूर्वदिशा की तरफ मुख कर के श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गये। (तएणं ताओ अन्ते उरियाओ सुबाहुदारियं पट्टयंति दुरूहेंति, दुरूहित्ता सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति-करित्ता पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति) इस के बाद उन अन्तः पुर निवासिनी स्त्रियों ने सुबाहुदारिका को पाट पर चढाया-और चढा करके-बैठा कर के-चांदी और सुवर्ण के श्वेत पीले कलशों से उसे स्नान कराया-स्नान कराने के बाद

લટોના સમૂહની વચ્ચે તેમજ અન્તઃપુરની સાથે પોતાની પુત્રી સુબાહુ દારિકાને આગળ રાખીને જ્યાં રાજમાર્ગની પાસે પુષ્પમંડપ હતો ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता सीहासनवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

ત્યાં આવીને તેઓ હાથીના ઉપરથી નીચે ઉતર્યા. ઉતરીને તેઓ પુષ્પમંડપની અંદર ગયા. ત્યાં જઈને તેઓ પૂર્વ દિશા તરફ મોં કરીને એક ઉત્તમ આસન ઉપર બેસી ગયા.

(तएणं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुदारियं पट्टयंति दुरूहेंति दुरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता सव्वालंकार विभासियं करेंति करित्ता पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति)

ત્યારબાદ રણવાસની સ્ત્રીઓએ સુબાહુ દારિકાને પટ્ટક ઉપર ચઢાવી અને તેના ઉપર બેસાડીને ચાંદી તેમજ સોનાના સફેદ અને પીળા કળશોથી તેને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्छति, उपागत्य पादग्रहणं करोति । तत खलु स रुक्मीराजा सुबाहुदारिकामङ्के= उत्सङ्गे निवेशयति, निवेश्य सुबाहुदारिकाया रूपेण च यौवनेनच लावण्येन च यावद् विस्मितः= आश्चर्यं प्राप्तः, वर्षधरं=वर्षधरपुरुषं अन्तः पुररक्षकं षण्ढपुरुषं शब्दयति= आह्वयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=उक्तवान्– हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु मम दौत्येन=दूतो भूत्वा बहूनि ग्रामाकरनगरगृहाणि अनुप्रविशसि, तद् तस्माद्ब्रूहि-अस्तिचापि त्वया कस्यचिद् राज्ञो वा ईश्वरस्य वा व्यवहारिणो वा सार्थवाहस्य वा श्रेष्ठिनो वा क्वचिद् ईदृशं मज्जनकं दृष्टपूर्वं,

फिर उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-विभूषित करके फिर वे उसे पिता के चरणों की वंदना करने के लिये ले चली।

(तएणं सुबाहुदारिया जेणेव रूप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुप्पी राया सुबाहु दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेइ) सुबाहु दारिका भी जहां रुक्मी राजा विराजमान थे-वहां आई वहां आकर के उसने पिता के चरणों में नमन किया इस के बाद राजाने उस सुबाहुदारिका को उठाकर अपनी गोद मे बैठालिया बैठाकर उस सुबाहुदारिका के रूपसे यौवन से और लावण्य से विस्मित हुए उन राजा ने वर्षधर अन्तःपुर के रक्षक नपुंसक-कंचुकी को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ

નવડાવી, નવડાવીને તેને બધા ઘરેણાંઓથી શણગારી, શણગારીને તેઓ તેને પિતાના ચરણોના વંદન માટે લઈ ગઈ.

(तएणं सुबाहु दारिया जेणेव रुप्पीराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुप्पीराया सुबाहुदारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेइ)

સુબાહુ દારિકા પણ જ્યાં રુકમી રાજા બેઠા હતા ત્યાં આવી, આવીને તેણે પિતાના ચરણોમાં વંદન કર્યાં. ત્યારબાદ રાજાએ સુબાહુ દારિકાને ઉઠાવીને પોતાના ખોળામાં બેસાડી લીધી. બેસાડીને સુબાહુ દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી વિસ્મય પામેલા રાજાએ વર્ષધર અંતઃપુરના રક્ષક નપુંસક-કંચુકીને બોલાવ્યા.

(सद्दावित्ता एवं वयासी तुमण्णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगर गिहाणि अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा इसरस्स वा कहिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यारिसं खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मज्जनकम् ? । यतस्तदनन्तरं खलु स वर्षधरः=अन्तःपुररक्षकः षण्ढपुरुषः, रुक्मिणं करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्–एवं खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्यस्मिन् समये युष्माकं दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिलां राजधानीं प्रतिगतः, तत्र खलु मया कुम्भकस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः प्रभावत्या देव्याः प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजवरकन्यकायाः यद् मज्जनकं दृष्टं, तस्य खलु मज्जनकस्य=मल्लीमज्जनकस्य इदं सुबाहुदारिकाया मज्जनकं शतसहस्रतमामपि=लक्षामपि कलां=शोभाया अंशं 'न अग्घेइ' नार्हति,न प्राप्नोती-

---

रन्नो वा इसरस्स वा कहिं चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसएणं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरों में नगरों एवं घरों में जाते रहते हो,तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कहीं किसी राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्थवाहक अथवा किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है।

(तएणं से वरिसधरे रुप्पिं करयल० एवं वयासी–एवं खलु सामी अहं अन्नया कयाइं तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठ पुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए

બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યું—" હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અમારા દૂતના રૂપમાં ઘણા ગામો, આકારો, નગરો અને ઘરોમાં અવર–જવર કરતા રહો છો તો બતાવો કે તમે પહેલાં એવો સુબાહુ દારિકા જેવો સ્નપન મહોત્સવ કોઈ રાજા, ઈશ્વર, કોઈ વ્યવહારી, કોઈ સાર્થવાહ અથવા કોઈ શ્રેષ્ઠીને ત્યાં જોયો છે ?

(तएणं से वरिसधरे रुप्पिं करयल० एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घेइ)

આ પ્રમાણે સાંભળીને તે વર્ષધરે બંને હાથની અંજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને રુકમી રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામી ! હું કોઈ વખત તમારા દૂત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर्थः। ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी राजा वर्षधरस्य=वर्षधर पुरुषस्यान्तिके=समीपे 'एयमट्ठं' श्रुत्वा निशम्य 'सेसं तहेव' शेषं तथैव-शेषवृत्तान्तं चन्द्रच्छायनृपवद् बोध्यमित्यर्थः। तथाचायं सम्बन्धः- स रुक्मी-तं वर्षधरं प्रत्येवमवादीत्- हे देवानुप्रिय ! कीदृशी मल्ली वर्तते, तदा वर्षधर आह-नो खलु अन्या कापि तादृशी देवकन्या वा यावत् यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, अत्र यावच्छब्देनासुर नागयक्षगन्धर्वादि कन्यकाः संग्राह्याः, ततः खलु स रुक्मी वर्षधरपुरुषं

प्रकार कहा-हे स्वामिन। मैं किसी समय आपका दूत होकर मिथिला नगरी गया हुआथा-वहां मैंने कुंभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से अवतरित हुई है मल्ली कुमारी का जो विदेह राजा की पुत्रियों में सर्वोत्तम है जैसा स्नान महोत्सव देखा उसके समक्ष यह सुबाहुदारीका का मज्जनोत्सव लक्षांश-लाखमें अंश को भी प्राप्त नहीं कर सकता है। (तएणं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस के बाद रुक्मी राजाने जब वर्षधर (कंचुकी पुरुष) के मुख से ऐसी बात सुनी तो उसका विचार कर उसने चन्द्रच्छाय राज की तरह अर्थात् राजा ने वर्ष धरसे मल्ली कुमारी के विषय में अपनी जिज्ञासा प्रकट की-पूछा वह कैसी है-तब वर्षधर ने उस से कहा-हे देवानुप्रिय ! क्या कहें-जैसी वह है ऐसी तो कोई भी कन्या नहीं है-न ऐसी कोई देव कन्या है न कोई असुर कन्या है, न कोई नाग कन्या है,

तरीके मिथिला नगरीमां गयेा हतेा. त्यां मे प्रभावतीना गर्भथी जन्मेली विदेह राजानी बधी पुत्रीओमां श्रेष्ठ कुंभक राजानी पुत्री मल्ली कुमारीनेा जेवेा स्नान महेात्सव जेयेा. तेनी सामे सुभाहु द्वारिकानेा स्नान महेात्सव लक्षांश पण कही शकाय तेम नथी.

(तएणं से रुप्पीराया वरिसधरस्स अंतिए अयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी जाव जेणेव महिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

रुकमी राजाओ ज्यारे वर्षधर (कंचुकी पुरुष) ना मुखेथी आ प्रभाणे वात सांभळी त्यारे तेना विषे विचार करीने तेणे चन्द्रच्छाय राजानी जेम एटले के राजाओ वर्षधरने मल्ली कुमारीना संबंधमां पोतानी इच्छा जणावतां कहुं के ते केवी छे ? त्यारे जवाबमां वर्षधरे कहुं के हे देवानुप्रिय ! शुं कहुं ? जेवी ते कन्या छे तेवी तेा कोई पण नथी. एवी कोई नथी देवकन्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य संमान्य प्रतिविसर्जयति, ततः खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिः-मज्जनजनितहर्षः = मल्लीमज्जनकगुणश्रवणसंजात तद्विषयकारागः सन् दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् अत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिलां राजधानीं गत्वा कुम्भकं राजानं ब्रूहि—' रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तव कन्यकां मल्लीं वाञ्छति ' इत्यादि । ततः खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयद् गमनाय = गन्तुं प्रवृत्तः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू०२५॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से विसर्जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी में अनुरक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया-बुलाकर फिर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम यहां से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ और जाकर कुंभक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते है । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार हो जहां मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय राजा रुक्मी का संबंध कहा गया है । सूत्र " २५ "

કે નથી અસુર કન્યા કે નથી યક્ષકન્યા કે નથી ગંધર્વ કન્યા, વગેરે.

આ રીતે વર્ષધરની વાત સાંભળીને રુકમી રાજાએ વર્ષધરનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને પોતાની પાસેથી વિદાય કર્યા. ત્યારપછી કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજાએ મલ્લી કુમારીના મજ્જનોત્સવ તેમજ ગુણોના શ્રવણથી હર્ષિત તથા તે કુમારીમાં અનુરક્ત ચિત્ત વાળા થઈને દૂતને બોલાવ્યો. દૂતને બોલાવીને તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અહીંથી સત્વરે મિથિલા રાજધાનીમાં જાઓ અને જઈને કુંભક રાજાને કહો કે કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજા તમારી કન્યા મલ્લી કુમારીને ચાહે છે વગેરે.

આ પ્રમાણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થઈને મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયો. આ રીતે તૃતીય રાજા રુકમીનો સંબંધ કહેવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર ॥ ૨૫ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नाम जणवए होत्था तत्थ णं वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं संखे नामं कासी राया होत्था, तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था, तएणं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह, तएणं सा सुवन्नगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि घडित्तए, नो चेवणं संचाएइ संघडित्तए, तएणं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव संधि संघाडेत्ता एयमाणं पच्चप्पिणह, तएणं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए, तएणं अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो, तएणं से कुंभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी निडाले साहट्टु एवं वयासी–से केणं तुब्भे कलायाणं भवह? जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएणं ते सुवन्नगारा कुंभेणं रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइं२ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी—अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउं । तएणंसंखे कासीराया तं सुवन्नगारे एवं वयासी—किन्नं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ?, तएणं ते सुवन्नगारा संखं एवं वयासी--एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधीं विसंघडिए, तएणं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता, तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे कुंभएणं निव्विसया आणत्ता, तएणं से संखे सुवन्नगारे एवं वयासी--केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कूंभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रायवरकन्ना ?, तएणं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वयासी–णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं से संखे कुंडलजुयलजणितहासे दूयं सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धमस्तावमाह—' तेणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्, तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तरं खलु तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिः=सन्धानं योजनं, ' विसंघडिए ' विसंघटितः= त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (काशी नाम जणवए होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थणं वाणारसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थणं संखे नामं काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शंख नाम का राजा रहता था (तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था) एक समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन दिव्य कुंडलों की संधी टूट गई–उन का जोड़ खुल गया ।

(तएणं से कुंभए राया सुवन्नगार सेणिं सद्दावेइ सद्दाविस्ता एवं

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' તે વખતે (काशी नाम जणवए होत्था) કાશી નામે દેશ હતો. (तत्थणं वाराणसी नगरी होत्था) તેમાં બનારસ નામે નગરી હતી (तत्थणं संखे नामं कासीराया होत्था) તેમાં કાશી દેશના અધિપતિ શંખ નામે રાજા રહેતો હતો.

(तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય કુંડળોનો સાંધાનો ભાગ તૂટી ગયો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं 'संधाडेह' संघटयत सन्धानं संयोजनं कुरुत ततस्तदा खलु सा सुवर्णकारश्रेणिः एतम्=कुण्डलसंधानकरणरूपम् अर्थं=कार्यं तथाऽस्त्विति कथयित्वा प्रतिशृणोति= स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृह्णाति. गृहीत्वा यत्रैव 'सुवन्नगार भिसियाओ' सुवर्णकारभिसियाः सुवर्णकाराणां वृषिकाः=आसनानि -उपवेशनस्थानानि तत्रैवोपगच्छति, उपागत्य सुवर्णकारभिसियासु-सुवर्णकारोपवेशनस्थानेषु निविशति=उपविशति निविश्य=उपविश्य, बहुभिः = अनेकविधैः आयैः=साधनैः यावत्-अत्र यावत्करणात्-उपायैः=पयोगैः, स्थितिभिः=व्यवस्थाभिरिति बोध्यम् । परिणमयन्ति=पूर्वस्वरूपं सम्पादयन्ति सा सुवर्णकारश्रेणिस्तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं घटयितुमिच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः ।

वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह) तब कुंभक राजा ने सुवर्णकारों को बुलाया और बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग इस दिव्य कुंडल युगल की संधि को जोड़ दो (तएणं सा सुवन्नगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगार भिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामे माणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुंडल जुयलस्स संधित्तए) उस सुवर्णकार श्रेणी ने कुंडलों की संधि को जोड़ ने रूप अर्थ को " तथास्तु कहकर स्वीकार कर लिया-और वे दोनों दिव्य कुंडल राजा के पास से ले लिये। लेकर फिर वे सब जहां सुवर्णकारों के बैठ ने के स्थान थे वहां चले आये।

(तएणं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह)

ત્યારે કુંભક રાજાએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે આ દિવ્ય કુંડળો ના સંધિ ભાગ જોડી આપો.

(तएणं सा सुवन्नगार सेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ २ पडिसुणित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामेमाणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधित्तए)

તે સોનીઓએ તથાસ્તુ કહીને કુંડળો ના તૂટેલા ભાગને જોડવાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. અને બંને દિવ્ય કુંડળો રાજાની પાસેથી તેઓ એ લઈ લીધાં. લીધા પછી તેઓ બધા જ્યાં સોનીઓને બેસવાનાં સ્થાન હતાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो चैव खलु शक्नोति संघटयितुम् तैः सुवर्णकारैस्तस्य त्रुटितस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयितुमनेकोपायाः कृताः, परंतु कुण्डल सन्धेर्यथोचित योजनाऽभावात्ते विफलप्रयत्ना अभूवन्निति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु सा सुवर्णकारश्रेणिर्यत्रैव कुम्भकः-मिथिलाराजः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा=करद्वयं संयोज्य 'वद्धावेत्ता' वर्धयित्वा-'जयजये' ति शब्देनाभिनन्द्य, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् ! एवं खलु अद्य यूयमस्मान् शब्दयथ, शब्दयित्वा यावत्=भवद्भिरेवं वयमाज्ञप्ताः-'अस्य कु-

---

आकर उन स्थानों में बैठ गये-बैठकर उन लोगों ने अनेक साधनों से, अनेक उपायों से अनेक व्यवस्थओं से उस दिव्य कुंडल के युगल की संधि को जोड़ ने की इच्छा की, परन्तु (नो चेवणं संचाएइ संघडित्तए, तएणं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ) वे उस संधी को यथोचित रूप से जोड़ ने में समर्थ नहीं हो सके-अतः उन का समस्त प्रयत्न विफल हुआ- । इस तरह विफल प्रयत्न वाले हुए वे लोग जहां मिथिलाधिपति कुंभक राजा थे-वहां गये उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी) वहां जाकर उस सुवर्णकार श्रेणी ने दोनों हाथों को जोड़कर राजाको बधाई दी-जय हो विजय हो इस तरह उसका अभिनंदन किया-बाद में इस प्रकार कहा- (एवं खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह, सद्दावित्ता जाव संधि संघाडेत्ता एयमाणं पच्चप्पिणह) स्वामिन् ! आपने आज हमलोगों को बुलाया था और

ત્યાં આવ્યા. ત્યાં તેઓ બેઠા અને બેસાને તે લોકોએ જાત જાતનાં સાધનો, ઉપાયો તેમજ અનેક જાતની વ્યવસ્થાઓથી બંને કુંડળોના તૂટેલા ભાગને સાંધવાના પ્રયત્નો કર્યા પણ

(नो चेव णं संचाएइ संघडित्तए, तएणं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ)

તેઓ કુંડળોના તૂટેલા સંધિભાગને સાંધવામાં સમર્થ થઈ શકયા નહિ અને તેઓના બધા પ્રયત્નો નિષ્ફળ બન્યા આ પ્રમાણે નિષ્ફળ પ્રયત્ન વાળા તેઓ બધા જ્યાં મિથિલાધિપતિ કુંભક રાજા હતા ત્યાં ગયા. (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी) ત્યા જઈને તે સોનીઓએ બંને હાથ જોડી ને રાજાને જયથાઓ જયથાઓ આ પ્રમાણે ના શબ્દોથી અભિનંદિત કર્યા અને ત્યાર પછી કહેવા લાગ્યા—

एवं खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह सद्दावित्ता जाव संधि संघाडेत्ता एयमाणं पच्चप्पिणह)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयत, सन्धिं संघटय=त्रुटितं सन्धिं योजित्वा-एतामाज्ञां =ममाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत ' इति, ततः खलु वयं तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृह्णीमः; यत्रैव सुवर्णकारश्रेणिकाः, यावत्-तत्रैवोपागच्छामः उपागत्य तत्रोपविश्य वयं कुण्डल युगलस्य संधिं संघटयितुं प्रयत्नं कृतवन्तः परंतु नो शक्नुमः संघटयितुं संयोजयितुम् , ततः तस्मात् कारणात् खलु हे स्वामिन् ! एतस्य दिव्यस्य कुण्डलस्यान्यत् सदृशं कुण्डलयुगलं घटयामः=रचयामः, ततस्तदनन्तरं खलु स कुम्भको राजा तस्याः सुवर्णकारश्रेण्याः सुवर्णकारसमूहस्य अन्तिके=समीपे, एतमर्थं=कुण्डलसन्धिसंघटन

બુલાકર ઐસા કહા થા કિ તુમ લોગ ઇસ દિવ્ય કુંડલ યુગલ કી સંધિ કો કિ જો ટૂટ ગઈ હૈ-ખુલ ગઈ હૈ-ઠીક કર દો-જોડ દો-ઔર જોડકર હમારી ઇસ આજ્ઞપ્તિ કો પૂર્ણ કર ઇસ કી હમેં ખબર દો (तएणं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हामो-जेणेव सुवन्नागारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघडित्तए तएणं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो) હમને ઉસ દિવ્ય કુંડલ યુગલ કો લે લિયા થા-ઔર લેકર હમ લોગ જહાં સુવર્ણ કારોં કે બૈઠ ને કા સ્થાન થા-વહાં ચલે ગયે થે-વહાં બૈઠકર હમ લોગોં ને અનેક સાધનોં દ્વારા, અનેક ઉપાયોં દ્વારા ઔર અનેક વ્યવસ્થાઓં દ્વારા ઇસ કુંડલ યુગલ કી સંધિ કો જોડનેકા પ્રયત્ન કિયા-પરન્તુ યથોચિત રૂપસે જોડને મેં હમ લોગ સફલ પ્રયત્ન નહી હો સકે હૈ-અતઃ હે સ્વામિન્ ! આપકી આજ્ઞા હો તો હમ ઇસ દિવ્ય કુંડલકે સમાન ઔર દૂસરા કુંડલ યુગલ બના દેતે હૈં-(तएणं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं

હે સ્વામિન્ તમે આજે અમને બોલાવ્યા હતા અને બોલાવીને કહ્યું હતું કે તમે લોકો આ દિવ્ય કુંડળોનો સંધિ ભાગ તૂટી ગયો છે તેને સારો કરી આપો, સાંધી આપો અને સાંધીને અમને ખબર આપો.

(तएणं अम्हे तं दिव्वं कुंडल जुयलं गिण्हामी जेणेव सुवन्नागारभिसिया ओ जाव नो संचाएमो संघडित्तए तएणं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो)

અમે તે કુંડળની જોડને લીધી અને લઇને જ્યાં સોનીઓને બેસવાની જગ્યાઓ છે ત્યાં ગયા. ત્યાં બેસીને અમે લોકોએ ઘણાં સાધનો ઉપાયોને ઘણી વ્યવસ્થાઓ વડે આ બંને કુંડળોના તૂટેલા ભાગને સાંધવાના પ્રયત્નો કર્યો, પણ તેઓને યોગ્ય રીતે સાંધવામાં અમે લોકો સફળ થયા નથી, એથી હે સ્વામી ! આપની આજ્ઞા હોય તો આ દિવ્ય કુંડળો જેવાજ બીજા કુંડળો ઘડી આપીએ..

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योग्यतारहित्यरूपं श्रुत्वा=शब्दतः कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवगत्य, 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=झटितिक्रोधाविष्टः, 'तिवलियं' त्रिवलिकां=रेखात्रयाभिव्यक्तिकारिकां, 'भिउडीं' भ्रुकुटिं वक्रीभूतभ्रुवं, ललाटे=भाले संहृत्य=आबध्य-एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-अथ खलु यूयं 'कलायाणं' कलादानां-कलामाददत इति कलादाः स्वर्णकारास्तेषां के भवथ ? न कोऽपीत्यर्थः ये खलु यूयमस्य कुण्डलयुगलस्य नो शक्नुथ सन्धिं संघटयितुम् । ये खलु सुवर्णकारास्ते कलामात्रं सुवर्णमादाय तद् वितत्य राजादीनां मनोहरं कनकमयमाभूषणादिकं रचयन्ति यूयं तु त्रुटितस्य सुवर्णसन्धेः संयोजनेऽप्यसमर्थाः स्थ तर्हि कलादाकुलोद्भवा यूयमिति कथं-

---

सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडी निडाले साहट्टु एवं वयासी) इस प्रकार उस सुवर्णकार श्रेणी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे विचार कर वह कुंभक राजा उस पर झटिति क्रोध से लाल पीली आंखों वाला हो गया-और भ्रकुटि को मस्तक पर चढाकर इस प्रकार बोला (से केणं तुब्भे कलायाणं भवह ? जेणं तुब्भे इमस्स कुंडल जुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडेत्तए ?) जब तुम लोग इस कुंडल युगल की संधि को ही नहीं जोड़ सकते हो तो फिर तुम सुवर्णकार कैसे ? जो सुवर्णकार होते हैं वे तो कलामात्र (थोडा) भी सोनेका पसार कर ऐसे २ आभूषण उसके बना देते हैं जो राजादिकोंके मनको भी हरण कर लेते हैं। तुम लोग तो टूटे हुए सुवर्ण की संधि को भी जोडने में अक्षम बन रहे हो तो फिर कैसे हम तुम्हें सुवर्णकारों के कुलों में उत्पन्न हुआ

तएणं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडी, निडाले साहट्टु एवं वयासी)

આ રીતે સોનીઓના મુખેથી આ વાત સાંભળીને અને તે વિષે બરોબર વિચારીને કુંભક રાજા તેઓના ઉપર ખૂબજ ક્રોધથી લાલ પીળા થઈ ગયા અને ભમ્મરો ઉંચી ચઢાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-

(सेकेणं तुब्भे कलायाणं भवइ ? जेणं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडेत्तए ?)

તમે આ બંને કુંડળોના તૂટેલા સાંધિલાગને જ સાંધી શકવામાં અસમર્થ છો ત્યારે તમે સુવર્ણકાર કઈ રીતે છો ! જેઓ સુવર્ણકાર હોય છે તેઓ તો કલા માત્ર પણ સોનું હોય તેને ફેલાવીને એવાં એવાં ઘરેણાંઓ તૈયાર કરી આપે છે કે જનાથી રાજાઓના મન પણ પ્રસન્ન થઈ જાય છે.

તમે લોકો જ્યારે તૂટેલા સોનાનો સાંધો પણ જોડી શકતા નથી ત્યારે અમે તમને સુવર્ણ કારોના કુળમાં જન્મેલા કયા આધારે માની એ ? (सुव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्ये, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान्? इत्याह-' ते ' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निव्विसए ' निर्विषयान् स्वदेशतो निष्क्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्यादूर्ध्वहिर्गच्छथ ' इत्याज्ञां ददाति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्विषयाः स्वदेशतो निर्गन्तुमाज्ञप्ताः सन्तः यत्रैव स्वानि स्वानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' सभंडमत्तोवगरणमायाए ' सभाण्डामत्रोपकरणमादाय स्वकीयभाण्डभाजनाद्युपकरणं गृहीत्वा शकटसमूहेऽवस्थाप्य मिथिलाया राजधान्या मध्यमध्येन निष्क्रामन्ति= निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य विदेहस्य जनपदस्य मध्यमध्येन मध्ये भूत्वा, यत्र काशीजनपदः, यत्रैव वाराणसी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अग्गुज्जाणंसि'

मानें । (सुवन्नगारे निव्विसए आणवेइ) इस तरह कह कर उस कुंभक राजा ने उन सुवर्णकारों को अपने देश से बहिर निकल जाने की-आज्ञा दे दी । (तएणं से सुवन्नगारा कुंभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साई २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति) इसके बाद वे सुवर्णकार कुंभक राजा से अपने देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञप्त होकर जहां अपने २ घर थे वहां आये । वहां आकर उन्हों ने अपने २ भांड भाजन आदि उपकरणों को गाडियों में भरा और भराकर मिथिला राजधानी के बीचों बीच से होकर निकले । (निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति) और निकल विदेह जनपद के भीतर से होकर जहां काशी देश और बनारसी नगरी थी वहां आये।

न्नगारे निव्वसए आणवेइ) આ પ્રમાણે કહીને કુંભરાજાએ તે સુવર્ણકારોને પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી.

तएणं से सुवन्नगारा कुंभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए महिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુંભક રાજાની પાસેથી પોતાના દેશમાંથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભર્યો. અને ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા.

(निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને બનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्गोद्याने=प्रधानोद्याने, सगडीसागडं ' शकटीशाकटं=लघुशकटबृहच्छकटानां समूहं ' मोएंति ' मोचयन्ति शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक् कुर्वन्ति मोचयित्वा महार्थं=महाप्रयोजनकं यावत्-महार्घं=महामूल्यकं महार्हं=महतां राजादीनां योग्यं, पाभृतम्=उपहारं गृह्णन्ति, गृहीत्वा वाराणस्या नगर्या मध्यमध्येन=वाराणस्या नगर्यामध्ये भूत्वा यत्रैव शङ्खः शङ्खनामा काशिराजस्तत्रैवोपागच्छन्ति० । उपागत्य करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे स्वामिन्! एवं वयं खलु मिथिलाया नगर्याः कुम्भकेन राज्ञा निर्विषयाः=स्वदेश निर्गता भवितुमाज्ञप्ताः सन्त इह ' हव्वमागया ' हव्यमागताः शीघ्रमागताः,

(उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडी सागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासी राया तेणेव उवागच्छंति) वहां आकर उन्होंने अपनी २ गाड़ी और गाड़ों को वहां के बगीचे में ठहरा दिया-और ठहरा कर फिर ये सब महार्थसाधक-कीमती तथा राजादिकों के योग्य भेंट को लेकर वानारसी नगरी के बीच से होकर जहां काशी राज शंख राजा थे वहां आये ' (उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी-अम्हेणं सामी! मिहिलाओ-नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हव्वमागया) वहां आकर उन्होंने दोनों हाथों को जोड़ कर और उनकी अंजलि को माथेपर रखकर राजा को नमस्कार किया, बाद में इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन्! हमलोगों को कुंभक राजा ने

उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडी सागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव संखे कासी राया तेणेव उवागच्छंति)

ત્યાં આવીને તેઓ એ પોત પોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાંઓને. ત્યાંના બાસ ઉદ્યાનમાં રોકયાં અને રોકીને તેઓ બધા મહાર્થ સાધક બહુજ કીમતી તેમજ રાજા વગરે ને યોગ્ય એવી ભેટ લઈને બનારસી નગરીની ઠીક વચ્ચે થઈને જ્યાં કાશીરાજ શંખરાજા હતા ત્યાં ગયા.

उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी अम्हेणंसामी ! मिहलाओ नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इहं-हव्वमागया)

ત્યાં જઈને તેમણે બંને હાથો જોડીને અંજલી મસ્તકે મૂકીને રાજાને વંદન કર્યા અને તેઓ કહેવા લાગ્યાં-હે સ્વામિન્! કુંભક રાજાએ અમને લોકોને મિથિલાનગરીથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે મિથિલાનગરીની બહાર કહા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्=तस्मात् इच्छामः खलु हे स्वामिन्! युष्माकं बाहुच्छाया परिगृहीताः भुजच्छाया समाश्रिताः अतएव निर्भयाः, निरुद्विग्नाः=उद्वेगरहिताः, सुखं सुखेन= अतिसुखेन परिवस्तुमिच्छाम इति पूर्वेण सम्बन्धः।

ततस्तदनन्तरं खलु शङ्खः काशिराजस्तान् सुवर्णकारानेवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः! किं= कुतः खलु यूयं कुम्भकेन राज्ञा निर्विषया आज्ञप्ताः? ततः खलु ते सुवर्णकाराः शङ्खमेवमवादीत्–हे स्वामिन्। एवं खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहितुः= मिथिलानगरी से बहार चलेजाने की आज्ञा दी–सो हमलोग वहांसे निर्वासित होकर यहां आये हैं–(तं इच्छामोणं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया परिग्गहिया निब्भयानिव्विग्गा सुहं सुणेहं परिवसिउं) अतः हे स्वामिन्! आपकी बाहुच्छाया का आश्रय लेकर हमलोग यहां निर्भय और निरुद्विग्न होकर शान्ति पूर्वक आनन्द के साथ रहना चाहते हैं (तएणं संखे कासीराया ते सुवन्नागारे एवं वयासी) उनकी इस प्रकार की बात सुनने के बाद काशी देशाधिपति शंख राजा ने उनसे ऐसा कहा–(किन्नं तुब्भे देवाणुप्पिया! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता) हे देवानुप्रियों। किस कारण से कुंभक राजा ने आप लोगों को मिथिलानगरी से बाहर चले जाने की आज्ञा प्रदान की–

(तएणं ते सुवन्नगारा संखं एवं वयासी) सुवर्णकारों ने प्रत्युत्तरमें शंख राजा से इस प्रकार कहा–(एवं खलु सामी! कुंभगस्स रन्नो

કરવાની આજ્ઞા કરવાથી એથી અમે ત્યાંથી નિર્વાસિત થઈને અહીં આવ્યા છીએ.

(तं इच्छामो णं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया परिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसिउं)

એથી હે સ્વામિન્! તમારી બાહુચ્છાયાના આશ્રયમાં અમે લોકો નિર્ભય અને નિરૂદ્વિગ્ન થઈને શાંતિથી સુખેથી અહીં રહેવા ઇચ્છા રાખીએ છીએ.

(तएणं संखे कासी राया ते सुवन्नागारे एवं वयासी)

તેમની આ પ્રમાણે વિનંતી સાંભળીને કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજાએ તેમને કહ્યું

(किन्नं तुब्भे देवाणुप्पिया! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता)

હે દેવાનુપ્રિયો! કુંભક રાજાએ તમને શા કારણથી મિથિલા નગરીની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે?

(तएणं ते सुवन्नागारा संखं एवं वयासी)

સોનીઓએ જવાબમાં શંખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः, मल्लयाः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिविसंघटितः=त्रुटितः। ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-तेनैवं वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयत सन्धिं संघटय=त्रुटितं सन्धिं योजयित्वा, एतामाज्ञां=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत" इति ततः खलु वयं तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूपं सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य संधिं संघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्वाऽस्माभिरेवमावेदि-

धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयस्स संधी विसंघ-डिए-तएणं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्वि सया आणत्ता) हे स्वामीन्! कुंभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुंडलों की संधी विघटितहो गई थी-सो कुंभक राजाने हमसब सुवर्ण कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की संधी को जोड कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुंडलो को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर चले आए-वहां बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुंडलों को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित संधी को जोडने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे संघटित नही कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहां जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एवं खलु सामी! कुंभगरस्स रन्नो धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए तएणं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दा-वित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

હે સ્વામીન્! પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી કુંભક રાજાની પુત્રી મલ્લી કુમારીના બે કુંડળોનો સાંધો તૂટી ગયો. કુંભક રાજાએ બધા સોનીઓને બોલાવ્યા અને કહ્યું કે તમે લોકો આ કુંડળોની સંધિને જોડી આપો. અમોએ તેમની પાસેથી કુંડળો લઈ લીધા અને લઈને અમે બધા પોતપોતાના બેસવાના સ્થાને આવી ગયા. ત્યાં બેસીને અમોએ જાત-જાતના ઉપાયોથી તે કુંડળોને પહેલાંના જેવા જ સારા બનાવી આપવાની એટલે કે તૂટેલો સંધિ ભાગ ફરી સાંધી આપવા માટે ઘણા પ્રયત્નો કર્યા પણ તે કુંડળોને પૂર્વવત્ સારા કરવામાં સમર્થ થઈ શક્યા નહિ અમે લોકો રાજાની પાસે ગયા અને તેમને વિનંતિ કરી કે હે મહારાજ! અમે બહુ જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तम्–अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परंतु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरो गत्वाऽस्माभिरेव मवादित्–अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयितुं प्रयत्नं कृतवन्तोऽपि वयं नो शक्ताः संघटयितुम्, तस्मात् खलु हे स्वामिन्! एतत्सदृशमन्यत् कुण्डलयुगलं घटयामः इति। ततः क्रोधाविष्टेन कुम्भकेन राज्ञा एवं 'निव्विसया' निर्विषया स्वदेशतो निर्गता भवितुम्, आज्ञप्ताः=आदिष्टाः।

ततः स शङ्खः काशीराजः सुवर्णकारानेवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः। कीदृशी खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहिता=पुत्री प्रभावत्या देव्या आत्मजा=अङ्गजाता, मल्ली

महाराज हमलोग प्रयत्न करने पर भी इस कार्यमें असफलित हो रहे हैं–अतः आपकी आज्ञा हो तो हम इन्हीं कुंडलों जैसा कुंडल और बनादेवें–बस हमारा इतना ही कहना था कि राजा इकदम क्रोध के आवेश में आ गये–और हमलोगों को अपने देश से निकल जाने की आज्ञा दे बैठे। बस (तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे कुंभएणं निव्विसया आणत्ता–तएणं से संखे सुवन्नगारे एवं वयासी–केरिसिया णं देवाणुप्पिया! कुंभगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेह रायवरकन्ना) हे स्वामीन् यहीकारण है कि जिससे हमलोग कुंभक राजा के द्वारा देश से निकल जाने के लिये आज्ञप्तहुए हैं–शंख राजाने उन सुवर्ण करों को अपने राज्यमें बसनेके लिये खुशी से आज्ञाप्रदान की।

इस प्रकार सुनने के अनन्तर उस शंख राजा ने सुवर्णकारों से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियों! कहो–कुंभक राजा की वह विदेहवर

પ્રયત્નો કર્યા છતાં આ કામમાં અમે સફળ થઈ શકયા નહિ. એથી તમે આજ્ઞા આપો તો આ કુંડળો જેવાં જ બીજા બે કુંડળો ઘડી આપીએ અમારી આ વાત સાંભળીને રાજા એકદમ લાલચોળ થઈ ગયા અને અમને પોતાના દેશથી બહાર જવાની આજ્ઞા આપી દીધી.

(तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे कुंभए णं निव्विसया आणत्ता तएणं से संखे सुवन्नगारे एवं वयासी केरिसियाणं देवाणुप्पिया! कुंभगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना)

હે સ્વામીન્! બસ એ કારણને લીધે જ કુંભક રાજાએ અમને દેશવટો આપ્યો. શંખ રાજાએ તે બધા સોનીઓને પોતાના દેશમાં રહેવાની ખુશીથી પરવાનગી આપી.

સોનીઓની આ બધી વાત સાંભળીને શંખ રાજાએ તેમને કહ્યું કે–હે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदेहराजवरकन्यका ?, ततः खलु ते सुवर्णकाराः शङ्खं राजानमेवमवदन्-हे स्वामिन् ! नो खलु अन्या काचित् तादृशी देवकन्या वा गन्धर्वकन्या वा यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्-असुरकन्या नागकन्या यक्षकन्या वा इति, यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या मल्लीसदृशी काऽपि कन्या लोकत्रये नास्तीत्यर्थः । ततः खलु स शङ्खः काशीराजः कुण्डलयुगलजनितहर्षः=कुण्डलयुगलमहत्त्वश्रवणसंजातमल्लीविषयकानुरागः सन् दूतं शब्दयति, यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिलां गत्वा कुम्भकं राजानं

राज कन्या मल्ली कुमारी-कि जिसका जन्म प्रभावती की कुक्षि से हुआ है-कैसी है ? (तएणं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वयासी-णो खलु सामी ! अन्ना काइ तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जारीसियाणं मल्ली विदेहवररायकन्ना-तएणं से संखे कुंडलजुयलजणितहासे दूयं सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए) इसके प्रत्युत्तर में उन सुवर्ण कारोंने शंख राजा से इस प्रकार कहा हे स्वामिन् ! ऐसी तो कोई देवकन्या भी नहीं है, गंधर्व कन्या भी नही है, असुरकन्या भी नहीं है, नागकन्या भी नही है और न कोई यक्ष कन्या ही है कि जैसी विदेह वर राजकन्या मल्लीकुमारी है। तात्पर्य इसका यही है कि-मल्ली कुमारी जैसी कन्या लोकत्रय में भी नही है। इस प्रकार कुंडलयुगल के महत्व श्रवण से मल्लीकुमारी के विषय में जिसे अनुराग (भाव उत्पन्न हो चुका है ऐसे उस शंख राजाने दूतको बुलाया-बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही मिथिला जाकर कुंभक

દેવાનુપ્રિયો ! બતાવો કુંભક રાજાની વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લી કુમારી કે જેનો જન્મ પ્રભાવતીના ગર્ભથી થયો છે તે કેવી છે ?

(तएणं ते सुवन्नगारा संखराया एवं वयासी-णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जारिसियाणं मल्ली विदेहवररायकन्ना-तएणं से संखे कुंडलजुयलजणितहासे दूयं सद्दावेई, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए)

તેના જવાબમાં સોનીઓએ શંખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામીન્ ! જેવી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી છે તેવી તો દેવકન્યા પણ નથી, ગંધર્વકન્યા પણ નથી, અસુર કન્યા પણ નથી, નાગકન્યા પણ નથી અને યક્ષ કન્યા પણ નથી. તાત્પર્ય એ છે કે-મલ્લીકુમારી જેવી કન્યા ત્રણે લોકોમાં પણ નથી.

આ રીતે કુંડળોના મહત્ત્વ વિષે વાત સાંભળતાં જ મલ્લી કુમારીના ઉપર જેના મનમાં અનુરાગ જન્મ પામ્યો છે એવા તે શંખ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમાં સત્વરે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रूहि-शङ्खः काशिराजस्तव कन्यकां मल्लीं वाञ्छति ' इत्यादि । तथैव=पूर्वोक्त रुक्मिदूतवत् , प्राधारयद् गमनाय=ततः शङ्खस्य काशीराजस्याज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिलानगरी तत्रैव गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति चतुर्थस्य शङ्खस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २६ ॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु जणवए होत्था, तत्थ णं हत्थिणाउरनयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था, जाव विहरइ, तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्तेपभावईए अत्तए मल्लीए अणुजाणए मल्लदिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे ममं पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलास विब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह, तएणं सा चित्तगर सेणी तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, तूलियाओ वन्नए य गिण्हइ,

---

राजासे कहो कि काशी देशाधिपति शंख राजा आपकी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते हैं इत्यादि ।

इस प्रकार अपने राजा काशी राज की आज्ञा से वह दूत रथ पर आरूढ होकर जहां मिथिला नगरी थी उस ओर चल दिया । इस तरह यह चतुर्थ शंख राजा का वृत्तान्त प्रकार कहा गया है । सूत्र " २६ "

પહોંચ્યો અને કુંભક રાજાને કહો કે કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજા તમારી કન્યા મલ્લીકુમારીને ચાહે છે વગેરે.

આ રીતે પોતાના રાજા કાશી રાજાની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો. આ રીતે આ ચોથા શંખ રાજાનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર " ૨૬ " ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता भूमिभागे विरंचइ, विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था, तएणं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धापत्ता अभिसमन्नागया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ, तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ, तएणं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए एवि पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता भूमिभागं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेणं जाव निव्वत्तेइ, तएणं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणइ, तएणं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं मल्लदिन्ने अन्नया पहाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभावविलास विब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे२ जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू०२७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका-अथ पञ्चमस्यादीनशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धप्रस्तावमाह-'तेणं कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुरुजनपदः=कुरु नामको देशः, आसीत्, तत्र=तस्मिन देशे, हस्तिनापुरे-नगरे अदीनशत्रुर्नाम राजाऽऽसीत्०।यावद् विहरति -राज्यं पालयन् स आस्त स्मेत्यर्थः ।

इतश्च तत्र खलु मिथिलायां कुम्भकस्य पुत्रः प्रभावत्याः आत्मजः=अङ्गजातः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकाया अनुजातकः=लघुभ्राता, मल्लदत्तो नाम कुमारः, यावद्-राजनीतिकुशलो युवराजश्चाप्यभूत् । ततस्तदनन्तरं मल्लदत्तः कुमारः

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (कुरु जणवए होत्था-तत्थणं हत्थिणाउरनयरे अदीण सतू नामं राया होत्था जाव विहरइ) कुरु नाम का देश था-उस में हस्तिनापुर नाम के नगर में अदीन शत्रु नाम के राजा रहते थे। ये न्यान्य नीति के अनुसार अपने राज्य का परिपालन अच्छी तरह से करते थे । (तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल दिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था) उस मिथिला नगरी में कुंभक राजा के यहां प्रभावती से एक पुत्र और हुआ था-जिस का नाम मल्ल दत्त कुमार था यह मल्ली कुमारी का छोटा भाई था ।

राजनीति में यह विशेष निष्णात था । अतः राजा ने इसे युवराज

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે

(कुरुजणवए होत्था तत्थणं हत्थिणाउरनयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव विहरइ)

કુરૂ નામે દેશ હતો. તેમાં હસ્તિનાપુર નામે નગરમાં અદીનશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો. તે ન્યાય અને નીતિને અનુસરીને રાજ્ય-શાસન ચલાવતો હતો.

(तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणुजाणए मल्ल-दिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था)

તે મિથિલા નગરીમાં કુંભક રાજાને ત્યાં પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી એક પુત્રનો જન્મ થયો હતો તેનું નામ મલ્લદત્તકુમાર હતું અને તે મલ્લીકુમારીનો નાનો ભાઈ હતો. રાજનીતિમાં તે ખૂબ જ નિષ્ણાત હતો. એથી રાજાએ યુવ-રાજપદે તેની નીમણુક કરી હતી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्- हे देवानुप्रियाः! गच्छत खलु यूयं मम 'पमदवणंसि' प्रमदवने = अन्तःपुरस्थितोद्याने, एकां महतीं 'चित्तसभं' चित्रसभां=चित्रगृहं 'करेह' कारयत चित्रसभाया विशेषणमाह- 'अणेग' इति-अणेगखंभसयसंनिविट्ठं' अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टम्, अनेके- अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचाकचिक्यचञ्चच्चक्षुश्चित्ताह्लादजनकमणिगत- विचित्रशिल्परचना सुशोभिता ये स्तम्भाः सुवर्णमयस्तम्भाः, तेषां शतैः संनिविष्टम् =समन्वितम्, 'जाव पच्चप्पिणंति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव चित्रसभां कृत्वा मल्लदत्तस्य पुरः समागत्य तदाज्ञां निवेदयंति, भवदाज्ञाऽनुसारेण सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः। ततः खलु स मल्लदत्तश्चित्र-

का पद प्रदान कर दिया था। (तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय०सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छहणं देवाणुप्पिया! तुब्भे ममं पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति) एक दिन मल्लदिन्न कुमार ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम जाओ और प्रमदोद्यान में-अन्तः पुर-स्थित बगीचे में एक बड़ा चित्रगृह बनाओ।

वह अनेक सुवर्ण मय स्तंभशत से समन्वित हो। इन स्तंभो में नाना वर्ण के चमकीले मणि जड़े हुए हों। जो अपनी चाकचिक्य से चक्षु और चित्त के आह्लादक हो। इन मणियों द्वारा उन स्तंभों में विचित्र शिल्प रचना की गई हो। इस प्रकार मल्लदत्त कुमार की आज्ञा प्राप्त कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी के अनुसार चित्र गृह की रचना

(तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय०सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छहणं देवाणुप्पिया! तुब्भे ममं पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति)

એક દિવસે મલ્લદિનકુમારે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું--કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે પ્રમદોદ્યાનમાં જાઓ અને ત્યાં રણુ-વાસના ઉદ્યાનમાં એક મોટું ચિત્રગૃહ તૈયાર કરો.

ચિત્રગૃહ સેંકડો સોનાના થાંભલાવાળું હોવું જોઇએ. તે થાંભલાઓમાં ચમકતા ઘણા મણિઓ જડેલા હોવા જોઇએ. પોતાના પ્રકાશથી જોનારાની આંખોને આંજી દે તેવું તેમજ ચિત્તને આહ્લાદ આપનારું હોવું જોઇએ. મણિઓ વડે તેના થાંભલાઓમાં જાતજાતના શિલ્પની રચના કરવામાં આવેલી હોવી જોઇએ. આ રીતે મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા મેળવીને કૌટુંબિક પુરુષોએ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करश्रेणिं=चित्रकारान् शब्दयति, शब्दयित्वैवमवादीत्– हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु चित्रसभां=चित्रगृहं 'हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं' हावभावविलासविब्बोककलितैः =शृङ्गारभावाभ्यां संजाता स्त्रीचेष्टा हावः, भावो मनोविकारः, विलासो हावभेदः विब्बोकः–अभिमतप्राप्तावपिगर्वादनादरः, अयमपि हावभेदः । अन्येत्वेवमाहुः—

हावो मुखविकारः स्याद् भावश्चित्तसमुद्भवः ।
विलासो नेत्रजो ज्ञेयो विभ्रमो भ्रू समुद्भवः ॥इति॥

करके उसे खबर दी कि आपकी आज्ञानुसार हमने सब काम कर लिया है।

(तएणंसे मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ,सद्दावित्ता एवं वयासी) इसके बाद उस मल्लदत्त कुमार ने चित्रकारों को बुलवाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा–(तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभाव विलास विब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह) हे देवानुप्रियों ! तुम लोग चित्रगृह को हाव, भाव, विलास, एवं विब्बोक युक्त चित्रो से चित्रित करो। स्त्रियों की जो चेष्टा शृंगार एवं मनो विकार जन्य होती है–उस का नाम हाव है। मानसिक विकृतिका नाम भाव है। विलास हाव का ही एक प्रकार है। अभि मत (इच्छित) की प्राप्ति होने पर भी जो गर्व से उस में अनादर होता है–उस का नाम विब्बोक है। यह भी हाव का ही एक भेद है। इन हाव भावादिकों के विषय में कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि मुख का जो विकार होता है वह हाव है, चित्त से जो विकार उत्पन्न होता है, वह भाव है। नेत्र

તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચિત્રગૃહનું નિર્માણ કરીને તેમને ખબર આપી કે આજ્ઞા મુજબ અમોએ બધું કામ પુરૂં કરી નાખ્યું છે.

(तएणं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी)

ત્યારબાદ મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે–

(तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ચિત્રગૃહને હાવ, ભાવ, વિલાસ અને વિબ્બોકવાળા ચિત્રોથી ચિત્રિત કરો. સ્ત્રીઓની શૃંગાર અને મનોવિકાર જન્યને ચેષ્ટાઓ હાવ કહે છે. માનસિક વિકૃતિનું નામ ભાવ છે. અભિમત (ઇચ્છિત) ની પ્રાપ્તિ હોવા છતાં પણ ગર્વથી જે તે અનાદર હોય છે તેનું નામ વિબ્લોક છે. તે પણ હાવનો જ એક પ્રકાર છે. આ હાવ, ભાવ વગેરેના વિષે કેટલાક આ પ્રમાણે પણ કહે છે કે મોંનો વિકાર જ હાવ છે, ચિત્તથી જન્મે છે તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एतैर्भावादिभिः कलितैर्युक्तैः, रूपैः=चित्रविशेषैः चित्रयत=चित्रितं कुरुत, चित्रयित्वा यावत् प्रत्यर्पयत=ममाज्ञा संपादितेति मां कथयतेत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं खलु सा चित्रकारश्रेणिः=तथेति=' तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा प्रतिशृणोति=स्वीकुरुते स्म। प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य ' तूलियाओ वन्नए य ' तूलिका वर्णकांश्च=तूलिकाः=केशमय्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, वर्णकान्= पञ्चवर्णकद्रव्याणि, च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चित्रसभा तत्रैवानुप्रविशति, अनुप्रविश्य भूमिभागं=चित्ररिचनस्थानं ' विरंचइ ' वेवेक्ति=अत्रोत्थं चित्रणीयमिति कृत्वा रेखादिभिर्भित्त्यादौ विभागं करोति, ' विरंचित्ता ' विविच्य=भूमिं सज्जयति

से जो भाव उत्पन्न होता है वह विलास एवं भ्रू से जो उत्पन्न होता है वह विभ्रम है। जब इस प्रकार के चित्रों से वह चित्रगृह चित्रित हो जावे-तब हमें इस की खबर दो- (तएणं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नए य गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ) इस के बाद उस चित्रकार श्रेणि ने " तथास्तु " इस प्रकार कहकर मल्लदत्त कुमार की आज्ञा को स्वीकार कर लिया- और स्वीकार करके फिर वे सब के सब अपने २ घर आ गये-वहां आकर उन्हों ने अपनी २ तूलिकाओं को और वर्णकों-पंचवर्ण वाले द्रव्यों को लिया-लेकर जहां-वह चित्रगृह था उस ओर चल दिये। वहां आकर वे उस के अन्दर गये (अणुपविसित्ता भूमिभागे विरंचेइ विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सिज्जित्ता चित्तसभं हाव भाव जाव चित्तेउं

ભાવ છે, નેત્રથી જે ભાવ ઉત્પન્ન હોય છે તે વિલાસ અને ભવાંથી જે ઉત્પન્ન હોય છે તે વિભ્રમ છે. જ્યારે આ પ્રમાણે તે ચિત્રગૃહ ચિત્રિત થઈ જાય ત્યારે અમને તમે સૂચિત કરજો

(तएणं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नएयगिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ)

ત્યારપછી તે ચિત્રકારોએ 'तथास्तु' (સારૂ) આ પ્રમાણે કહીને મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાને ઘેર આવી ગયા. ત્યાં આવીને તેઓએ પોતપોતાની પીંછીઓ અને વર્ણકો એટલે કે પાંચ રંગવાળા દ્રવ્યોને સાથે લીધા અને લઈને જે તરફ ચિત્રગૃહ હતું તે તરફ રવાના થયા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા

अणुपविसित्ता भूमिभागे विरंचेइ विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मार्जनादिभिः परिष्करोति, सज्जयित्वा चित्तसभां 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलासविब्बोककलितैः, रूपैः=चित्रविशेषैः, 'चित्तेउं' चित्रयितुं 'पयत्ता' प्रवृत्ता चाप्यभवत्। सा चित्रकारश्रेणिश्चित्रगृहं हावभावादियुक्त चित्र-विशेषैश्चित्रयितुं प्रवर्ततेस्म 'इत्यर्थः।

ततः=तत्र खलु एकस्य चित्रकारस्य 'इमेयारूवा' इयमेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्रकरलब्धि=चित्रकरणविशिष्टशक्तिः,मनसि यादृशं रूपं चिन्तयति तादृशं करोत्येवं भूता लब्धिः, लब्धा=उपार्जिता, प्राप्ता=स्वायत्तिकृता,अभिसमन्वा गता=सम्यगासे-

पयत्ता यावि होत्था) अन्दर प्रविष्ट होकर सबसे पहिले उन्हों ने चित्र रचने के स्थान को रेखादि द्वारा अंकित किया

यहां इस प्रकार का चित्र काढना चाहिये इस प्रकार के विचार से भित्ति के ऊपर रेखा आदि खींचकर उन्हों ने उस का विभाग किया-विभाग कर के फिर वहां की भूमि को उन्हों ने साफ किया-साफ कर के फिर वे चित्रकार उस चित्रगृह को हाव भाव आदि वाले चित्र विशेषों से चित्रित करने में लग गये। (तएणं एगस्स चित्तगस्स इमे यारूवे चित्तगर लद्धी लद्धा, पत्ता अभि समन्नागया-जस्सणं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सणं देसाणु-सारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ) इन में एक चित्रकार ऐसा था जिसमें चित्र करने की विशिष्ट शक्ति थी। इस ने इस शक्ति को पहिले से ही

सभं हाव भाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था)

તેમાં પ્રવેશીને તેઓએ સૌ પહેલાં ચિત્ર બનાવવાની જગ્યા ઉપર રેખાઓ બનાવી.

અહીં આ પ્રમાણે ચિત્ર તૈયાર કરવાનું છે. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને ભીંત વગેરે ઉપર રેખાઓ વગેરે દોરીને તેમને વિભાજન કર્યું, વિભાજન કરીને તે સ્થાનને તેઓએ સ્વચ્છ બનાવ્યું. સ્વચ્છ બનાવીને તે ચિત્રકારો ચિત્રગૃહને હાવ ભાવ વગેરેના વિશેષ ચિત્રોથી ચિત્રિત કરવા લાગ્યા.

(तएणं एगस्स चित्तगस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्ना गया, जस्सणं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ)

આ બધાઓમાં એક ચિત્રકાર એવો પણ હતો કે તેમાં ચિત્ર તૈયાર કરવાની વિશેષ શક્તિ હતી. તેણે પોતાની ચિત્ર બનાવવાની અસાધારણ શક્તિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विता, यस्य, खलु द्विपदस्य-मनुष्यादेर्वा चतुष्पदस्य गवादेर्वा, अपदस्य=चरण-रहितस्य सर्पादेर्वा, एकदेशमपि एकाङ्गमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण चक्षुर्गोचरीकृतैकदेशानुसारेण 'तयाणुरूवं' तदनुरूपं दृष्ट द्विपदादियोग्यं, रूपं चित्रं 'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति। ततस्तदनन्तरं खलु स चित्रकरदारको मल्लयाः= मल्लीकुमारिकायाः, ' जवणियंतरियाए ' यवनिकान्तरितायाः=यवनिकया - पर-दारूयेन आवरणपटेन, अन्तरितायाः-व्यवहितायाः परदाभ्यन्तरस्थितायाः इत्यर्थः। जालान्तरेण=गवाक्षरन्ध्रेण पदाङ्गुष्ठं पश्यति-दृष्टवान्। ततः खलु तस्य चित्रकारस्य= चित्रकारदारकस्य, अयमेतद्रूपः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूपः,यावद्=विचारः समुदपद्यत-श्रेयः=श्रेयस्करम् अभ्युदयजनकं, खलु मम मल्लया अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण सदृशकं= मल्लीसमानं यावद्-गुणोपपेतं=मल्लया अङ्गेषु यत्र ये सौन्दर्यादिगुणाः तैः समन्वितं,

उपार्जित किया था-प्राप्त किया-था-उस में यह विशेष चतुर था, इस का इसे अच्छा अभ्यास था।

यह जिस मनुष्यके, चतुष्पद गवादिके, अपद सर्पादि अथवा वृक्षादि के जिस किसी एक एक भाग को देख लेता तो उसी के अनुसार यह उस का पूर्ण चित्र अंकित कर देता था। (तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ, तएणं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए वि पायंगुट्ठाणु-सारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए एवं संपेहेइ) एक दिन इस चित्रकार ने परदा के भीतर बैठी हुई मल्लि कुमारी के पैर का अंगूठा गवाक्ष छिद्र से देख लिया था सो उस के मन में ऐसा विचार आया कि मेरे लिये यह श्रेयस्कर है कि मैं मल्ली कुमारीका भी पादा-ङ्गुष्ठानुसार यावत् गुणोपपेत उसी के जैसा चित्र बनाऊँ।

પહેલેથી જ મેળવેલી હતી. ચિત્રકળામાં તે ખૂબ જ પ્રવીણ તેમજ તેનો તે સારો અભ્યાસી હતો.

તે ચિત્રકાર માણસના, ગાય વગેરે ચોપગાંઓના, સાપ વગેરે અપદોના અથવા તો વૃક્ષ વગેરેનો કોઈપણ એક ભાગ જોઈ લેતો અને ત્યારબાદ તે પ્રમાણેનાં જ આબેહૂબ તેમનાં ચિત્ર દોરતો હતો.

(तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ तएणं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए वि पायं-गुट्ठाणुसारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए एवं संपेहेइ)

એક દિવસ તે ચિત્રકારે પડદાની પાછળ બેઠેલી મલ્લીકુમારીના પગનો અંગૂઠો ગવાક્ષના કાણામાંથી જોઈ લીધો ત્યારે તેના મનમાં એમ થયું કે હું મલ્લીકુમારીના પગના અંગૂઠાના જેવું જ સુંદર ચિત્ર તૈયાર કરું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपं=चित्रं निर्वर्तयितुं=रचयितुम् । एवम्=उक्तप्रकारेण, संप्रेक्षते=स चित्रकरदारकः विचारयतिस्म । संप्रेक्ष्य=मनसि विमृश्य, भूमिभागं=चित्रकरणस्थानं सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्करोति, सज्जयित्वा मल्ल्या अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण यावत्=सदृशकं गुणोपपेतं रूपं निर्वर्तयति=रचयतिस्म । ततस्तदनन्तरं खलु सा चित्रकार-श्रेणिश्चित्रसभां 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलास विब्बोककलितैः रूपैः, चित्रैः 'चित्तेइ' चित्रयति, चित्रयित्वा यत्रैव मल्लदत्तः कुमारस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत् एतामाज्ञां प्रत्यर्पयति- हे स्वामिन् ! भवदाज्ञानुसारेण चित्रगृहं

मल्ली कुमारी के अंग में जहां २ जो जो सौन्दर्यादि गुण है उन सब गुणों को उस मल्ली कुमारी के चित्र में अंकित करूँ । ऐसा जब उस ने विचार किया- (संपेहित्ता) तो उस विचार के अनुसार (भूमि-भागं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए वि पायंगुट्ठानुसारेणं जावि निव्वत्तेइ, तएणं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं हावभावजाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्ल दिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) उस ने वहां का भूमिभाग साफ किया-मार्जन, लेप आदि द्वारा उसे संस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उस ने वहां मल्ली कुमारी का भी दृष्ट पादांगुष्ठ के अनुसार बिलकुल हूबहू जैसे के तैसा गुणोपपेत रूप-चित्र अंकित कर दिया ।

इसके बाद उस चित्रकारों की श्रेणी ने उस चित्रगृह को हावभाव विलास एवं विब्बोक वाले रूपों से-चित्रों से अंकित कर दिया-चित्रित कर दिया-चित्रित कर फिर वे सब के सब मल्लदत्त कुमार जहां बैठा

મલ્લી કુમારીના અંગમાં જ્યાં જ્યાં જે જે સૌંદર્યના ગુણો છે તે બધા ગુણોને તે મલ્લીકુમારીના ચિત્રમાં અંકિત કરું. આ પ્રમાણે જ્યારે તેણે વિચાર કર્યો-(संपेहित्ता) અને તે વિચાર ને અનુ સરતાં જ

(भूमिभागं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए वि पायंगुट्ठानुसारेणं जावि निव्वत्तेइ तएणं सा चित्तगर सेणी चित्तसभं हावभाव जावचित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणात्तियं पच्चप्पिणइ)

તેણે તે જગ્યાને સ્વચ્છ બનાવી અને માર્જન લેપન વગેરેથી તે સ્થાનને સાફ કર્યું સાફ કર્યા બાદ તેણે પહેલાં જોયેલા મલ્લી કુમારીના પગના અંગૂઠા ના જેવું જ આબેહૂબ ગુણોપેત રૂપ ચિત્ર અંકિત કર્યું.

ત્યાર બાદ ચિત્રકારોએ જ્યારે ચિત્રગૃહને હાવભાવ વિલાસ અને વિબ્બોકનાં ચિત્રોથી ચિત્રિત કરી આપ્યું ત્યારે તેઓ બધા જ્યાં મલ્લદત્ત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्रितमस्माभिरित्येवं चित्रकारश्रेणिः कथयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु मल्लदत्तश्चित्रकारश्रेणिं 'सक्कारेइ' सत्कारयति, वचनादिना, संमानयति=वस्त्रादिना। 'सक्कारित्ता' सत्कार्य=सत्कारं कृत्वा 'सम्माणित्ता' संमान्य विपुलं=विस्तीर्णं 'जीवियारिहं' जीविकार्हं=वृत्तियोग्यं, 'पीइदाणं' प्रीतिदानं=परमहर्षहेतुकं दानं ददाति दत्त्वा प्रतिविसर्जयति। ततः खलु मल्लदत्तोऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये स्नातोऽन्तः पुरपरिवारसंपरिवृतः 'अम्मधाईए' अम्बाधात्र्या=उपमात्रा सार्धं यत्रैव चित्रसभा=चित्रगृहं वर्तते, तत्रैवोपागच्छति। उपागत्य चित्रसभामनुपविशति=चित्रगृहे प्रवेशं करोति, अनुप्रविश्य हावभावविलासविब्बोककलितानि रूपाणि=

था-वहां आये-आकर के उन्होंने उससे कहा स्वामिन्! हमलोगों आपकी आज्ञानुसार चित्र गृह को चित्रित कर दिया है-(तएणं) इस प्रकार चित्रकारों के मुख से सुनकर (मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ) मल्लदत्त कुमारने उस चित्रकार श्रेणी का सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिरउस ने उसे विपुल जीविकाके योग्य प्रीतिदान दिया-और बाद में उसे विसर्जित कर दिया। (तएणं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियाल संपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ) इसके पश्चात् किसी एक दिन वह मल्लदत्त कुमार स्नान कर के अन्तः पुर परिवार से युक्त होकर अपनी अम्बाधात्री के साथ जहां चित्रगृह था वहां गया-(उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ अणुपविसित्ता हावभाव

કુમાર બેઠા હતા ત્યાં આવ્યા અને આવીને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે સ્વામિન્! તમારી આજ્ઞા મુજબ અમોએ ચિત્રગૃહ તૈયાર કરી દીધું છે. (तएणं) આ રીતે ચિત્રકારો ના મોંથી સાંભળીને

(मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ)

મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રકારોનું સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું, સત્કાર અને સન્માન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમાં જીવિકાયોગ્ય પ્રીતિદાન આપ્યું અને ત્યાર પછી તેઓને જવાની રજા આપી.

(तएणं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियाल संपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી કોઇ એક દિવસ મલ્લદત્ત કુમાર સ્નાન કરીને રણવાસના પરિવાર ને સાથે લઈને પોતાની અમ્બાધાત્રીની સાથે જ્યાં ચિત્ર ગૃહ હતું ત્યાં ગયો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्राणि पश्यन् यत्रैव मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः ' तयाणुरूवे ' तदनुरूपं= तत्सदृशं, रूपं=चित्रं ' णिव्वत्तिए ' निर्वर्तितं = रचित मासीत् तत्रैव प्राधारयद् गमनाय= गन्तुं प्रवर्ततेस्म ॥ सू० २७ ॥

मूलम्—तएणं से मल्लदिन्ने कूमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जावसमुपज्जित्था—एस णं मल्लीविदेहरायवरकन्नत्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणियं२ पच्चोसक्कइ । तएणं मल्लिदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी—किन्नं तुमं पुत्ता! लज्जिए वीडिए विअडे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ ?,

तएणं से मल्लदिन्ने अम्मधाईं एवं वयासी—णो जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए देवयभूयाए लज्जाणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए ?, तएणं अम्मधाई मल्लदिन्नं कूमारं एवं वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली, एस णं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे

विलासविब्भोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) वहां जाकर चित्रगृह में प्रविष्ट हुआ-प्रविष्ट होकर हावभाव, विलास एवं विब्बोक से युक्त उन रूपोंको चित्रों को-बार२ देखता हुआ वह जहां विदेह राजवरकन्या का तदनुरूप चित्र बना हुआ था उस ओर गया ॥ सूत्र २७ ॥

(उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ अणुपविसित्ता हावभाव विलासविब्भोय कलियाइं रूवाइं पासमाणे २ जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवेणिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાં પહોંચીને તે ચિત્રગૃહમાં ગયો અને જઈને હાવભાવ વિલાસ અને બિબ્બોકવાળા તે ચિત્રોને જોતાં તે જ્યા વિદેહ રાજવર કન્યાના જેવું જ ચિત્ર દોરેલું હતું તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર " ૨૭ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूवे णिव्वत्तिए । तएणं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते एवं वयासी-केसणं भो चित्तयरए अपत्थिय पत्थिए जाव परिवज्जए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिए त्तिकट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ, तएणं सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी--एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया, जस्सणं दुपयस्स वा जाव णिवत्तेइ, तं माणं सामी ! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह । तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणावेइ ॥ सू०२८ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि ! ततस्तदनन्तरं खलु स मल्लदत्तः कुमारो मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः=स्वाग्रजाताया भगिन्याः' ' तयानुरूवं ' तदनुरूपं=मल्लीसदृशं रूवं=रूपं चित्रं,' निव्वत्तियं' निर्वर्तितं=चित्रकारदारकेण रचितं, पश्यति। दृष्ट्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूपः, ' अज्झत्थिए ' आध्यात्मिकः=आत्मगतः, यावत्=संकल्पः, ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत=संजातः-एषा

' तएणं से मल्लदिन्ने कुमारे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) उस मल्लदत्त कुमार ने (विदेहरायवरकन्नाए मल्लीए तयाणुरूवं निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) विदेह राज की वर-

' तएणं से मल्लदिन्ने कुमारे ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं)त्यार भाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) ते भल्ल दत्तकुमारे (विदेह रायवरकन्नाए मल्लीए तयाणुरूवं निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु मल्ली विदेह राजवरकन्या, इति कृत्वा लज्जितः=सामान्यतः, व्रीडितः=विशेषतो लज्जितः, व्यर्दः=सर्वथा लज्जां प्राप्तः सन् शनैः शनैः 'पच्चोसक्कइ' प्रत्यवष्वस्कते=तस्मात् स्थानात् प्रतिनिवर्ततेस्म । ततस्तदनन्तरं खलु मल्लदत्तं=मल्लदत्तकुमारम्, 'अम्माधाई' अम्बधात्री=मातृप्रतिनिधिरूपा धात्रीस्तन्यादि दानेन पोषिका उपमातेत्यर्थः, 'पच्चोसक्कंतं' प्रत्यवष्वस्कमानं पश्चान्निवर्त्तमानं दृष्ट्वा एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्–हे पुत्र ! किं=कस्मात्कारणात् खलु त्वं लज्जितो व्रीडितो व्यर्दः=अत्यन्तं लज्जितः सन् शनैः शनै प्रत्यवष्वस्कसे ?। ततः खलु स मल्लदत्तकुमारः अम्बाधात्रीमेवमवादीत्–'अम्मो !' हे अम्ब ! 'नो जुत्तं' नो युक्तं=नो

कन्या मल्लीकुमारीका कि जो अपनी बडी बहिन थी तदनुरूप चित्र चित्रकार दारक के द्वारा अङ्कित किया गया ज्यों ही देखा–तो देखकर उसके मन में इस प्रकार का संकल्प उत्पन्न हुआ–(एसणं मल्ली विदेहरायवरकन्नत्तिकट्टु लज्जिए, वीडिए विउडे सणियं २ पच्चोसक्कइ) यहतो विदेहराज की वर कन्या मल्ली कुमारी है। ऐसा विचार करवह पहिले तो लज्जित हुआ–बाद में विशेषरूप से लज्जित हुआ। और इस तरह वह दुःखित होकर धीरे २ वहां से चलदिया। (तएणं मल्लदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी–किन्नं तुमं पुत्ता लज्जिए वीडिए विअडे सणियं २ पच्चोसक्कइ ?) इस तरह मल्लीदत्त कुमार को वहां से धीमी २ चाल से जाता हुआ देखकर उसकी अम्बाधाय ने उससे ऐसा कहा–क्यों तुम लज्जित-व्रीडित एवं विशेष लज्जित होकर यहां से धीरे २ चले जा रहे हो–(तएणं से मल्लदिन्ने

જ્યારે પોતાની મોટી બહેન વિદેહવર કન્યા મલ્લીકુમારીનું ચિત્રકારવડે દોરાયેલું આબેહૂબ ચિત્ર જોયું ત્યારે તે જોતાંજ તેના મનમાં વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (एसणं मल्ली विदेहरायवरकन्न त्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विउडे सणियं २ पच्चोसक्कइ)

આતો વિદેહરાજની વરકન્યા મલ્લી કુમારી છે. આમ વિચારીને પહેલાંતો તે લજ્જિત થયો અને ત્યાર બાદ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે તે દુઃખી અવસ્થામાં ત્યાંથી ધીમે ધીમે જતો રહ્યો.

(तएणं मल्लदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी–किन्नं तुमं पुत्ता लज्जिए वीडिए विऊडे सणियं २ पच्चोसक्कइ ?)

આ રીતે મલ્લીકુમારને ત્યાંથી ધીમે ધીમે જતો જોઈને તેની અંબાધાયે કહ્યું કે–તમે કેમ લજ્જિત–વ્રીડિત અને સવિશેષ પીડિત થઈને અહીંથી ધીમે ધીમે જઈ રહ્યા છો. (तएणं से मल्लदिन्ने अम्मधाईं एवं वयासी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्तं खलु मम ज्येष्ठाया भगिन्या गुरुदेवतभूतायाः, पूज्यायाः, लज्जनीयायाः= लज्जते यस्याः सकाशात् सा लज्जनीया, 'कृत्य प्रत्ययस्य बाहुलकत्वादपादानेऽनीयर प्रत्ययः' तस्या अग्रे मम चित्रकरनिर्वर्तितां सभां=चित्रगृहम् अनुपवेष्टुम्. अत्र खलु चित्रगृहे मम पूज्या ज्येष्ठा भगिनी मल्लीकुमारी स्थिताऽस्ति, तस्मादत्र मम प्रवेशकरणं नोचित मित्यर्थः। ततस्तदनन्तरं खलु अम्बाधात्रीमल्लदत्तं कुमार मेवादीत्- हे पुत्र ! नो खलु=निश्चयेन एषा मल्लीवर्तते, किंतु एतत् खलु मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः श्चित्रकरेण तदनुरूपं रूपं=चित्रं निर्वर्तितं=रचितमस्ति। तस्मादत्र लज्जाकरणं तव नोचितमिति भावः।

अम्मधाई एवं वयासी) इस प्रकार सुनकर उस मल्लदत्त कुमारने अम्बाधाय से ऐसा कहा-(णो जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूआए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए) मुझे चित्रकार से निर्वर्तित इस चित्रगृहमें प्रवेश करना उचित नही है, कारण यहां मेरी गुरुदेव जैसा-पूज्य तथा जिसके समक्ष मैं लजाता हूँ-जिनके सामने आते जाते मुझे लज्जा आती है-ऐसी बड़ी बहिन बैठी हुई हैं।

तात्पर्य इसका यह है कि इस चित्रगृह में मेरी पूज्य बहिन मल्ली कुमारी बैठी हुई है इसलिये उनके समक्ष मुझे यहां प्रवेश करते हुए लज्जा आती है। (तएणं अम्माधाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी-नो खलु पुत्ता एस मल्ली-एसणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे चित्ते णिव्वत्तिए) ऐसा सुनकर अम्बाधात्री उपमाता ने मल्लदत्त कुमारसे इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! ये स्वयं मल्ली कुमारी नहीं है-यह तो विदेहराजकी उत्तम कन्या उन मल्ली कुमारी का चित्र

આ પ્રમાણે સાંભળીને તે મલ્લદત્ત કુમારે અંબાધાય ને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(णो जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए)

ચિત્રકારો વડે ચિત્રિત કરવામાં આવેલા આ ચિત્રગૃહમાં પ્રવેશવું મારા માટે ઉચિત નથી કેમકે ગુરુદેવ જેવી પૂજનીય તેમજ જેમની સામે જતાં પણ હું લજ્જિત થાઉં છું એવા મારા મોટાં બહેન અહીં બેઠાં છે.

મતલબ એ છે કે આ ચિત્રગૃહમાં મારી પૂજ્ય-બહેન મલ્લી કુમારી બેઠી છે. એથી તેમની સામે જતાં મને લજ્જા આવે છે

(तएणं अम्माधाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी-नो खलु पुत्ता एसमल्ली एसणं मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे चित्ते णिव्वत्तिए)

આ પ્રમાણે સાંભળીને અંબધાત્રી ઉપમાતા એ મલ્લદત્ત કુમારને કહ્યું કે કે હે પુત્ર ! આ ખરે મલ્લીકુમારી નથી પણ આ તો વિદેહરાજની ઉત્તમ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदन्तरं खलु मल्लदत्तः=मल्लदत्तकुमारः, अम्बाधात्र्या एतम्=उक्तरूपम्, अर्थं श्रुत्वा, आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-क एष खलु भोः! चित्रकरः 'अपत्थियपत्थिय' अप्रार्थितप्रार्थितः यत् केनापि न प्रार्थ्यते, तदप्रार्थितं मरणं तत् प्रार्थितं येन सोऽप्रार्थित प्रार्थितः मरणवाञ्छक इत्यर्थः यावत् परिवर्जितः=श्रीह्रीधृति कीर्ति परिवर्जितः, एतदत्रैवाध्ययने प्राग् व्याख्यातम्, येन खलु मम ज्येष्ठाया भगिन्या गुरु देवतभूतायाः=पूज्यायाः, यावत्-तदनुरूपं 'निव्वत्तिए त्तिकट्टु' निर्वर्तितम्?, इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, तं चित्रकारं वध्यं=हन्तव्यम्०आज्ञापयति येन मल्लीचित्रं लिखितं स चित्रकारो हन्तव्य इत्याज्ञां दत्तवानित्यर्थः। तत खलु सा चित्रकर श्रेणिरस्या उक्तरूपायाः कथाया-

---

कारने तदनुरूप चित्र बनाया है। इसलिये यहां लज्जा करना तुम्हे योग्य नहीं हैं। (तएणं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरत्ते एवं वयासी) अम्बाधाय के मुख से ऐसी बात सुनने के बाद मल्लदत्त कुमार ने उस अपनी अम्बाधाय से क्रोध में भरे हुए होकर इस प्रकार कहाः-(केसणं भो! चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए जाव निव्वत्तिए) अरे! कौन ऐसा मरण वाञ्छक तथा श्री ह्रीधृति, एवं कीर्ति से परिवर्जित चित्रकार हैं कि जिसने गुरुदेव जैसा-पूज्य मेरी ज्येष्ठ भगिनी का यहां तदनुरूप चित्र चित्रित किया है। (त्तिकट्टुतं चित्तगरं वज्झं आणवेइ) इस प्रकार कहकर उसने उस चित्रकार को वध्य घोषित कर दिया।

जिस चित्रकार ने मेरी पूज्य ज्येष्ठ भगिनी का यह चित्र यहां लिखा है-वह वध्य है इस प्रकार उसने आज्ञा देदी-(तएणं सा

કન્યા મલ્લીકુમારીનું આબેહૂબ દોરાયેલું ચિત્ર છે. એથી અહીં લજ્જા તમારા તમારા માટે યોગ્ય નથી. (तएणं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरत्ते एवं वयासी) અંબાધાય ના મોંથી આ વાત સાંભળીને મલ્લદત્ત કુમારે તે પોતાની અંબાધાય ને ક્રોધમાં ભરાઈને કહ્યું કે-

(केसणं भो! चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए जाव निव्वत्तिए)

અરે! એવો કોણ મૃત્યુને ચાહનાર શ્રી, હ્રી, ધૃતિ અને કીર્તિ રહિત ચિત્રકાર છે કે જેણે ગુરુદેવ જેવા પૂજ્ય મારાં મોટાં બહેનનું અહીં આબેહૂબ ચિત્ર દોર્યું છે. (त्तिकट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે તે ચિત્રકારને વધ્ય (મારવા યોગ્ય) ઘોષિત કર્યો.

મારાપૂજ્ય મોટા બહેનનું જે ચિત્રકારે અહીં જે ચિત્ર દોર્યું છે તે વધ્ય છે આ રીતે તેણે પોતાની આજ્ઞા ઘોષિત કરી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लब्धार्था-ज्ञातार्था सती यत्रैव मल्लदत्तः कुमारस्तत्रोपागच्छति. उपागत्य करतल परिगृहीतं यावत्-शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयविजय शब्देन वर्धयति= अभिनन्दयति, वर्धयित्वा, एवमवादीत्-हे स्वामिन्! एवं खलु तस्य चित्रकरस्य, इममेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्रकरलब्धिर्लब्धा=अर्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता अभिसमन्वागता=सम्यगासेविता, यस्य खलु द्विपदस्य वा यावत्-चतुष्पदस्य वा अपदस्य वा एकदेशमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण तदनुरूपं रूपं 'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति. तत्=तस्मात् हे स्वामिन्! मा खलु यूयं तं चित्रकरं वध्य-

चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धीलद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया जस्सणं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ) इस प्रकार इस उक्त रूप कथा का हाल जब उस चित्रकार श्रेणी को मालूम हुआ-तब वह जहां मल्लदत्त कुमार था वहां पहुँची पहुँच कर उसने उसे दोनो हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर धरकर नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी वधाई देकर फिर वह इस प्रकार कहने लगी-स्वामिन्! उस चित्रकार को इस प्रकार की यह चित्रकार लब्धि प्राप्त हुई है-उस पर उसका अधिकार जम गया है-उस का उसे अच्छी तरह अभ्यास हो चुका है-कि जिसकी वजह से वह किसी भी द्विपद, चतुष्पद, अपद का एक देश भी देखकर उसके अनुसार तदनुरूप चित्ररच देता है। (तं माणं सामी।

(तएणं सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी एवं खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया जस्सणं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ)

આ રીતે ચિત્રકારોને ઉપરની બધી વિગતની જાણ થઇ ત્યારે જ્યાં મલ્લદત્ત કુમાર હતો ત્યાં તેઓ પહોંચ્યા અને પહોંચીને બંને હાથોની અંજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરતાં જય વિજયના શબ્દો ઉચ્ચારતાં તેણે કહ્યું—કે હે સ્વામિન્! તે ચિત્રકારને આ પ્રભાવોની વિશેષ શક્તિ પ્રાપ્ત થઈ છે તે કલા ઉપર તેનો પૂરે પૂરો અધિકાર આવી ગયો છે. તે સારી પેઠે અભ્યસ્ત થઇ ગયો છે જેથી તે કોઈ પણ દ્વિપદ (માણસ) ચતુષ્પદ (પશુ) અને અપદ (સાપ વગેરે) ના કોઇ પણ એક દેશને જોઈને તે મુજબ તેના જેવુંજ ચિત્ર દોરી આપે છે. (तं माणं सामी! तुब्भे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माज्ञापयत-वधार्थमाज्ञां मा कुरुतेत्यर्थः, तत्=तस्मात् हे स्वामिन् ! यूयं खलु तस्य चित्रकरस्यान्यं तदनुरूपं चित्रकरापराधसदृशं, दण्डं 'निव्वत्तेह' निर्वर्तयत=कुरुत। ततः=चित्रकरश्रेणिसविनयवचनश्रवणानन्तरं, खलु स मल्लदत्तस्तस्य - मल्लीचित्रं रचयितुः, चित्रकरस्य 'संडासगं' सन्दंशकम्=ऊरुजङ्घयोः सन्धि नाडीरूपमित्यर्थः, 'छिंदावेइ' छेदयति-कर्तयतिस्म यत्तु-'संडासंगति' हस्तौ छेदयतिस्म' इतिव्याख्यातं-तद् ज्ञानविजृम्भितम्-तेनैव चित्रकरेण हस्तिनापुरे नगरे गत्वा पुनर्मल्लीचित्रं रचितमित्येतदर्थप्रतिबोधकमूलपाठविरोधात् हस्ताभावे चित्रलेखना-

---

तुब्भे ते चित्तगरं वज्झं आणवेह) इसलिये हे स्वामिन! आप उस चित्रकार को मारने की आज्ञा प्रदान न कीजिये (तं तुब्भेणं सामी! तस्स चित्तागरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ) किन्तु हे नाथ! आप उस चित्रकर को बताये गये इस चित्र के अनुसार किसी और दूसरे दंड का निर्धारणकर दीजिये-इस प्रकार चित्रकार श्रेणी के वचन सुनने के बाद मल्लदत्त कुमार ने उस मल्ली के चित्र बनाने वाले चित्रकार की उरु और जंघाओं की संधि को छिदवा दिया-कतरवा दिया-

(जो "संडासंगति" किसी २ टीकाकार ने ऐसा मान कर "उस के दोनों हाथ कटवा दिये" इस प्रकार का व्याख्यान किया है वह ठीक नही ज्ञात होता है-कारण "इसी चित्रकार ने हस्तिनापुर में जाकर मल्ली कुमारीका चित्र रचा है" ऐसा जो आगे मूलपाठ आनेवाला उस

तं चित्तगरं वज्झं आणवेह) એથી હે સ્વામિન્! તમે તે ચિત્રકારને મારવાની આજ્ઞા આંડી વાળો.

(तं तुब्भेणं सामी! तस्स चित्तागरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ)

અને હે નાથ! તમે ચિત્રકારને તે ચિત્ર બદલ બીજી ગમે તે સજા કરો. આ પ્રમાણે ચિત્રકારોનાં વચન સાંભળીને મલ્લદત્તકુમારે મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર બનાવનાર ચિત્રકારના ઉરુઓ-જાંઘાઓના સાંધાઓને કપાવી દીધા.

"संडासंगति" આ પ્રમાણેના પાઠના આધાર લઈને કેટલાક ટીકાકારો આમ માનતા થયા છે કે તે ચિત્રકારના બંને હાથ પણ કપાવવામાં આવ્યા હતા. પણ હકીકતમાં આ વાત સત્યથી વેગળી છે કેમકે એ જ ચિત્રકાર આગળ હસ્તિનાપુરમાં જઈને મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર દોરે છે. આ પ્રમાણે જે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभवात्। छेदयित्वा 'निव्विसयं' निर्विषयम्-विषयान्निर्गतं स्वदेशात् बहिर्गन्तु-मित्यर्थः, आज्ञापयति=आज्ञां दत्तवान् ॥ सू०२८॥

मूलम्—तएणं से चित्तगरए मल्लदिन्नेण णिव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयराओ णिक्खमइ, णिक्खमित्ता विदेहजणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कूरु-जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता भंडणिक्खेवं करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, स-ज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण एवं णिव्वत्तेइ, णिवत्तित्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ, गिण्हित्ता हत्थिणापुरं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं करयल जाव बद्धावित्ता पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ? मिहिलाओ राय-हाणीओ कुंभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कूमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए तं इच्छामिणं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परि-वसित्तए, तएणं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं

का फिर विरोध आवेगा। हाथों के विना चित्र लिखना कैसे बन सकता है। जंघा कटवा देने के बाद फिर उस ने उसे अपने देश से बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी। " २८ "

મૂળ પાઠ આગળ આવશે તેની સાથે હાથ કપાવવાની ઉક્ત વાત બંધ બેસતી નથી. હાથ વગર ચિત્ર દોરી જ કઈ રીતે શકાય ?

મલ્લદત્તકુમારે જાંઘાઓ કપાવવાની સજા કરીને તે ચિત્રકારને દેશવટો આપ્યો. ॥ સૂત્ર " ૨૮ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिण्णेणं निव्विसए आणत्ते ? तएणं से चित्तयरदारए अदीसत्तूरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ, तं एवं खलु सामी ! मल्लदिण्णे कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ।

तएणं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी - से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तूस्स उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी एसणं सामी ! मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए, तएणं अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी - तहेव जाव पहारेत्थ गमणयाए ॥ सू० ॥

टीका—'तएणं से इत्यादि । ततस्तदन्तरं खलु स चित्रकारो मल्लदत्तेन निर्विषयः=देशनिर्गतो भवितुम् आज्ञाप्तः सन् सभाण्डामत्रोपकरणमादाय=स्वगृहमागत्य

' तएणं से चित्तगरए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से चित्तगरए) वह चित्रकार (मल्ल दिन्नेणं णिव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्त कुमारसे देशसे बाहिर निकल

' तएणं से चित्तगरए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (से चित्तगरए) चित्रकार (मल्लदिन्नेणं णिव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्तकुमार वडे अपाएली देश બહાર જવાની આજ્ઞા સાંભળીને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वकीय भाण्डाद्युपकरणं गृहीत्वा मिथिलातो नगरीतो निष्क्रामति=बहिर्निस्सरति निष्क्रम्य विदेहं जनपदं=विदेहदेशस्य मध्यमध्येन=मध्ये भूत्वा प्राकृतत्वात् षष्ठ्यर्थे द्वितीया, यत्रैव कुरुजनपदः=कुरुनामको देशः, यत्रैव हास्तिनापुरं नगरं, तत्रोपागच्छति, उपागत्य 'भंडणिक्खेवं' भाण्डनिक्षेपं=भाण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति कृत्वा 'चित्तफलगं' चित्रफलकं=चित्रगोयपट्टकं यस्मिन् पट्टके चित्रं रचनीयं तदित्यर्थः, सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्करोति, सज्जयित्वा मल्लया विदेहराज-

---

जाने के लिये आज्ञप्त होता हुआ (सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमित्ता विदेह जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कुरु जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ) अपने घर आया-वहां आकर उसने अपने भाण्ड आदि उपकरणों को लिया-और लेकर फिर वह मिथिला नगरीसे बाहिर निकल गया-निकल कर वह विदेह जनपद के बीच से होकर जहां कुरु जनपद था और जहां हस्तिनापुर नगर था-वहां आये- (उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठानुसारेणं रूवं णिव्वत्तेइ) वहां आकर के उस ने अपने भांड आदि उपकरणों को यथास्थान रख दिया-रखकर के फिर उसने चित्र फलक को-जिस में चित्र रचा जाता है उस पटिये को-मार्जन लेप आदि से ठीक ठाक किया-अर्थात् पहिले उसने उस पट्टि को साफ किया पश्चात् उस पर रंग आदि का लेप लगाया।

(सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमित्ता विदेह जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ) તે પોતાને ઘેર આવ્યો અને ત્યાંથી તેણે ભાંડ-વાસણ વગેરે વસ્તુઓ લીધી. લઇને મિથિલા નગરીની બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને વિદેહ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુરુજનપદ હતું અને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં ગયો.

(उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठानुसारेणं रूवं णिव्वत्तेइ)

ત્યાં જઇને તેણે પોતાની ભાંડ વગેરે વસ્તુઓને ઉચિત સ્થાને ગોઠવી લીધી અને ગોઠવીને ચિત્ર ફલકનું-એટલે કે જેમાં ચિત્ર દોરવામાં આવે છે તે પાટિયાનું-માર્જન લેપન વગેરે કરીને તૈયાર કર્યું. મતલબ આ પ્રમાણે છે કે પહેલાં તેણે પાટિયાને સ્વચ્છ બનાવ્યું ત્યારપછી રંગ વગેરેનો લેપ કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरकन्यायाः पादाङ्गुष्ठानुसारेण रूपं=तदीयं चित्रं निर्वर्तयति। निर्वर्त्य 'कक्खंतरंसि' कक्षान्तरे-कक्षस्थ=बाहोर्मूलस्य अन्तरे=आभ्यन्तरे 'छुप्पइ' छुपति धरतीत्यर्थः। 'छुप्पित्ता' छुप्त्वा=धृत्वा 'महत्थं जाव' महार्थं यावत्-महार्घं, महार्हं, 'पाहुडं' प्राभृतम्=उपहारं, गृह्णाति, गृहीत्वा हस्तिनापुरं नगरं-हस्तिनापुरनगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव-अदीनशत्रूराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं करतल-यावत् करतल परिगृहीतं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयजयेति शब्देन वर्धयति=अभिनन्दयति, वर्धयित्वा प्राभृतमुपचयति=अग्रे स्थापयति उपनीय एव

बाद में विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का उसके ऊपर पाद के अंगुष्ठ के अनुसार तदनुरूप चित्र रचा। (णिव्वत्तित्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ, गिण्हित्ता, हत्थिणा पुरं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव अदीण सत्तूराया तेणेव उवागच्छइ) चित्र रचकर के फिर उसने उसे अपनी कांख में दबाया-दबा कर महार्थ यावत् महार्घ प्राभृत (बहु मूल्य भेट) लिया, और लेकर हस्तिनापुर नगर के बीचों बीच से होकर वह जहां अदीन शत्रु राजा थे वहां गया-(उवागच्छित्ता तं करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी) वहां जाकर उसने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर राजा को नमस्कार किया बाद में जय विजय आदि शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर उस ने लाये हुए भेट को उन के समक्ष रख दिया। रख देने के बाद फिर उस

ત્યારબાદ ચિત્રકારે પગના અંગુઠાને અનુરૂપ વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી-કુમારીનું આબેહૂબ ચિત્ર દોર્યું.

(णिव्वत्तित्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ गिण्हित्ता, हत्थिणापुरं णयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव अदीणसत्तूराया तेणेव उवागच्छइ)

ચિત્ર દોર્યા પછી ચિત્રને બગલમાં દબાવીને મહાર્થ સાધક-બહુ જ મૂલ્યવાન ભેટ લીધી અને લઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં અદીનશત્રુ રાજા હતા ત્યાં ગયો.

उवागच्छित्ता तं करयल जाव वद्धावेइ वद्धावित्ता पाहुडं उवणेइ उवणित्ता एवं वयासी

ત્યાં જઈને તેણે બંને હાથોની અંજલી બનાવીને તેને માથે મૂકીને રાજા ને નમન કર્યા અને ત્યાર બાદ તેણે 'જય વિજય' વગેરે શબ્દોથી રાજા ને વધામણી આપી. વધામણી આપીને ચિત્રકારે પોતાની પાસેની ભેટ રાજાની સામે મૂકી. ભેટ અર્પણ કર્યા બાદ તેણે રાજાને આ પ્રમાણે વિનંતિ કરી કે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मवादीत्-हे स्वामिन्! एवं खलु अहं मिथिलातो राजधानीतः कुम्भकस्य राज्ञः पुत्रेण प्रभावत्या देव्या आत्मजेन=अङ्गजातेन, मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषयः= देशान्निर्गन्तुम्=आज्ञप्तः सन् इह= अस्मिन स्थाने, हव्यं=शीघ्रम् आगतः। तत्= तस्मात् हे स्वामिन्! इच्छामि खलु युष्माकं बाहुच्छाया परिगृहीतः-भुजबलाश्रयं गृहीत्वेत्यर्थः यावत् परिवस्तुम्, अत्र-यावच्छब्देन-निर्भयः, निरुद्विग्नः सन्, सुख सुखेन, इतिबोध्यम्। ततः खलु सोऽदीनशत्रूराजा, तं चित्रकरदारकमेवमवादीत् हे देवानुप्रिय! किं=कुतः, खलु त्वं मल्लदत्तेन निर्विषयः-देशाद् बहिर्गन्तुम्,

ने उन से इस प्रकार कहा-एवं खलु अहं सामी! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेणं, पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए) हे स्वामिन्! मिथिला राजधानी से वहां के कुंभक राजा के पुत्र और प्रभावती के अंगज मल्लदत्त कुमार से देश से निर्वासित किया गया यहां आये हैं।

(तं इच्छामिणं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परिवसित्तए) अतः हे स्वामिन्! मैं आपकी भुजच्छाया का आश्रय लेकर यहां रहना चाहते हैं। यहां "यावत्" शब्द से "निर्भयः" निरुद्विग्नः सन् सुखं सुखेन" इस पाठ का संग्रह किया गया है। (तएणं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! मल्ल दिन्नेणं निव्विसए आणत्ते) उस की इस प्रकार बात सुनकर अदीन शत्रु राजा ने उस चित्रकर दारक से इस प्रकार पूछा-

(एवं खलु अहं सामी! महिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए)

હે સ્વામીન્! મિથિલા રાજધાનીના પ્રભાવતી દેવીના ગર્ભથી જન્મ પામેલા કુંભક રાજાના પુત્ર મલ્લદત્તકુમારે મને દેશવટો આપ્યો છે તેથી હું અહીં તમારે શરણે આવ્યો છું.

(तं इच्छामि णं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परिवसित्तए)

એથી હે સ્વામી! હું તમારી બાહુચ્છાયાના આશ્રયમાં અહીં રહેવા ચાહું છું. અહીં 'यावत्' પદથી 'निर्भयः' 'निरुद्विग्नः सन् सुखं सुखेन' આ પાઠનો સંગ્રહ કરવામાં આવ્યો છે

(तएणं से अदीणसत्तूराया तं चित्तगरदारयं एवं वयासी किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते)

આ વાત સાંભળીને અદીનશત્રુ રાજાએ ચિત્રકારદારકને આ પ્રમાણે કહ્યું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज्ञप्तः ? ततः स चित्रकरदारकः, अदीनशत्रुं राजानमेवमवादीत्-हे स्वामिन् ! एवं खलु मल्लदत्तः कुमारोऽन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, चित्रकरश्रेणिं चित्रकारान् शब्दयति=आहूतवान् । शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु मम चित्रसभां चित्रयत तं चेव सव्वं भाणियव्वं ' तदेव सर्वं भणितव्यम्-इह चित्रकर विषयकं सकलं पूर्वोक्तमेव वृत्तान्तं वाच्यमित्यर्थः, ' जाव मम संडासगं छिंदावेइ ' यावन्मम सन्दंशकं छेदयति । चित्रयत ' इत्यादि,

---

हे देवानुप्रिय ! तुम किस कारण से मल्लदत्तकुमार से निर्वासित होने के लिये आज्ञप्त किये गये हो (तएणं से चित्तयरदारए अदीण सत्तू रायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ तं एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसये आणत्ते) उस चित्रकर दारक ने तब अदीन शत्रु राजा से कहा-हे स्वामिन् ! मल्लदत्त कुमार ने किसी एक समय चित्रकारों की श्रेणी को बुलाया और बुलाकर उस से ऐसा कहा कि हे देवानुप्रियों ! तुम लोग मेरे इस चित्रगृह को चित्रित करो इस तरह पहिले की सब घटना उस चित्रकार ने अदीनशत्रु राजा को उरू और जंघाओं को छेदने तक की सुना दी । छिदवा कर फिर उन्होंने मुझे

કે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશમાંથી નિર્વાસિત થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(तएणं से चित्तयरदारए अदीण सत्तूरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडाएगं छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ तं एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसये आणत्ते)

ચિત્રકારદારકે જ્યારે અદીનશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામીન્ ! મલ્લદત્ત કુમારે એક વખતે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે મારા ચિત્રગૃહને ચિત્રિત કરો. આ રીતે ચિત્રકારે અદીનશત્રુની સામે ઉરુઓ-જંઘાઓને કપાવવા સુધીની બધી વિગત રજૂ કરી. અને તેણે અંતે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જંઘાઓને કપાવીને મલ્લદત્તકુમારે મને પોતાના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छेदयित्वा निर्विषयम्=देशनिष्कासनमाज्ञापयति ' तदेवं खलु हे स्वामिन् ! अहं मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय आज्ञप्तः ।

ततस्तदनन्तरं खलु अदीनशत्रु राजा तं चित्रकारमेवं वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत् — हे देवानुप्रिय ! तत् कीदृशं खलु त्वया मल्ल्यास्तदनुरूपं रूपं =चित्रं निर्वर्तितम् ?, ततः खलु स चित्रकरदारकः कक्षान्तरात् = बाह्यमूलाभ्यन्तराद् चित्रफलकं यस्मिन् मल्ल्याश्चित्रं लिखितमासीत् तदित्यर्थः, 'णीणेइ' नयति = बहिर्नयति बहिष्करोतीत्यर्थः, ' णीणित्ता ' नीत्वा अदीनशत्रोः राज्ञ उपनयति=अग्रे स्थापयति, उपनीय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे स्वामिन् ! एष खलु मल्ल्या–विदेहराजवरकन्यायाः पादाङ्गुष्ठानुसारेण तदनुरूपस्य तत्सदृशस्य रूपस्य चित्रस्य ' केइ ' कोऽपि कश्चित्, किञ्चिन्मात्रः ' आगार

देश से बाहर निकल जाने के लिये आज्ञा दे दी । इस तरह मल्लदत्त कुमार से निर्वासित होता हुआ–मैं यहां आया हूँ ।

(तएणं अदीणसत्तूराया तं चित्तगरं एवं वयासी–से केरिसएणं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ) चित्रकर की इस बात को कर्णपथ करके अदीनशत्रु राजा ने उस चित्रकार से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ? मल्लीकुमारी का चित्र तुमने तदनुरूप कैसा बनाया था । इस प्रकार राजा का वचन सुनकर उस चित्रकरदारक ने अपनी कक्षा के भीतर से दबे हुए उस चित्र फलक को कि जिसमें मल्लीकुमारीका चित्र अंकित किया हुआ था बाहर निकाला और बाहर निकाल कर उसे अदीनशत्रु राजा के समक्ष रख दिया । (उवणित्ता एवं वयासी) रखकर वह फिर इस

દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાનો હુકમ કર્યો છે. ત્યાંથી તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે બહાર નીકળીને હું અહીં આવ્યો છું.

(तएणं अदीणसत्तूराया तं चित्तगरं एवं वयासी–से केरिसएणं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ)

ચિત્રકારની વાત સાંભળીને અદીનશત્રુ રાજાએ તે ચિત્રકારને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લીકુમારીનું આબેહૂબ ચિત્ર તમે કેવું દોર્યું હતું ? આ રીતે રાજાના વચનો સાંભળીને ચિત્રકારદારકે મલ્લીકુમારીનાં ચિત્રવાળું ફલક બગલમાંથી બહાર કાઢયું અને તેને અદીનશત્રુ રાજાની સામે મૂકી દીધું. (उवणित्ता एवं वयासी) મૂકીને તેણે રાજાને કહ્યું કે–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावपडोयारे ' आकारभावप्रत्यवतारः=आकृतिचेष्टयोराविर्भावः, निव्वत्तिए ' निर्वर्तितः, पादाङ्गुष्ठामात्रदर्शनानुमितत्वेन मत्कृतचित्रेण पूर्णरूपेणाकृति चेष्टयोराविर्भावः किंतु स्वल्प एव प्रकटीकृत इत्यर्थः नो खलु शक्यं केनापि देवेन वा यावत्-दानवेन वा गन्धर्वेण वा यक्षेण वा मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायास्तदनुरूपं रूपं निर्वर्तयितुम्, तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः स्वरूपं लोकोत्तरं वर्णनातीत मस्ति, दर्शनादेव तत्स्वरूपस्य पूर्णं ज्ञानं भवितुं शक्यते, इति भावः। ततः खलु अदीनशत्रुः ' पडिरूवजणियहासे ' प्रतिरूप जनितहर्षः=प्रतिरूपं=चित्रं तेन जनितस्तद्दर्शनसमुत्पन्नः, हर्षः=सुखं कार्ये कारणोपचारादनुरागोऽपि हर्ष इत्युच्यते, मल्लीविषयकानुराग इत्यर्थः, स यस्यास्ति स तथा, मल्लीचित्र दर्शन

प्रकार बोला-(एसणं सामी! मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडियारे निव्वत्तिए,णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए) हे स्वामिन्! मैंने विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी के इस पादांगुष्ठानुसार से अंकित किये गये चित्र का थोड़ा सा ही-किञ्चिन्मात्र-आकृतिएवं चेष्टाका आविर्भाव चित्रण किया है-मैंने यह चित्र मल्लीकुमारी का अंकित किया है-वह उनके अंगुष्ठ को देखकर अवशिष्ट अङ्गादि का अनुमान लगाकर बनाया है।

इसलिये इस चित्र में किञ्चिन्मात्रा में ही उनके आकारादिका अंकन हुआ है पूर्णरूप से नहीं। पूर्णरूप से उन विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी के तदनुरूप चित्र बनाने में न कोई देवता समर्थ है, न कोई दानव समर्थ है, न कोई गन्धर्व समर्थ है और न कोई यक्ष ही समर्थ

(एसणं सामी! मल्लीए विदेह राजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार भाव पडोयारे निव्वत्तिए णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए)

હે સ્વામીન્! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનું તેમના પગના અંગુઠાને જોઈને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મેં દોર્યું છે. તેમના અંગુઠાને જોઈને જ બાકીના બધા અંગોનું ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામાં આવ્યું છે.

એથી આ ચિત્રમાં તેમના આકાર વગેરેનું અંકન ઓછી માત્રામાં જ થયું છે. વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનું આબેહૂબ ચિત્ર બનાવવાનું સામર્થ્ય કોઇ દેવતામાં નથી કે નથી કોઈ દાનવમાં, નથી કોઇ ગાંધર્વમાં કે નથી કોઈ યક્ષમાં,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः। एवंभूतः सन् दूतं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-'तहेव' तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद् गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः। इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः॥ सू० २९॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे, तत्थणं जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई होत्था, तस्सणं जियसत्तूस्स धारिणी पामोक्खं देविसहस्सं ओरहे होत्था, तत्थणं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवे-

है। (तएणं अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा प्रदान कर दिया। चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शंख ने अपने दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा! की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर आरूढ हो जहां मिथिला नगरी थी उस ओर चल दिया॥ सूत्र २९॥

तएणं अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए)

આ રીતે ચિત્રકારના મોંથી બધી વિગત સાંભળીને રાજાએ તેને પોતાના રાજ્યમાં રહેવાની આજ્ઞા આપી દીધી. ચિત્રને જોઇને જ અદીનશત્રુ રાજાના મનમાં મલ્લિકુમારી માટેનો અનુરાગ ઉત્પન્ન થઇ ગયો. રાજાએ તુરત એક દૂતને બોલાવ્યો અને જેમ કાશીરાજ શંખે પોતાના દૂતને કહ્યું હતું તે પ્રમાણે જ તેણે પણ પોતાના દૂતને કહ્યું. આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો. ॥ સૂત્ર "૨૯" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–तुब्भेणं चोक्खे किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी–अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे, जण्णं अम्हं किंचि असुइ भवइ, तएणं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–चोक्खा ! से जहानामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावत्तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोवमाणस्स, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एवं वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्लीए णो संचाएइ किंचि वि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणिया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अप्पेगइया होरुयालंति अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइया वाघाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति ।

तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायकरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसियं गिण्हइ, गिण्हित्ता कणंतेउराओ पडिनिक्खमइ, परिनिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिव्वाइया संपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए, जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंपिलपुरे बहूणं राईसर० जाव परूवेमाणी विहरइ ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथ षष्ठस्य जितशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धपस्तावमाह-' तेणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पञ्चालः अधुना पंजाबनाम्ना

इस तरह यह पञ्चमराजा का संबंध प्रकट किया है । अब छठेराजा का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं:-

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे) पञ्चाल नामका देश (जो अभी पंजाब

આ રીતે પંચમરાજાનો સંબંધ પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે. હવે છઠ્ઠા રાજાનો સંબંધ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે—

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे) પંચાલ નામે દેશ-જે અત્યારે પંજાબ નામે પ્રસિદ્ધ છે,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसिद्धः जनपदः=देशः आसीत् तत्र= तस्मिन् देशे 'कंपिल्लपुरे' काम्पिल्यपुरे' =काम्पिल्यपुरनामके, 'नयरे' नगरे, जितशत्रुर्नाम राजा पञ्चालाधिपतिरासीत्, तस्य खलु जितशत्रो राज्ञो धारिणीप्रमुखा देवीसहस्रम् 'ओरोहे' अवरोधे=अन्तःपुरे आसन् ।

इतश्च मिथिलायां नगर्यां खलु 'चोक्खा' चोक्षा=चोक्षानाम्नी परिव्राजिका ऋग्वेद-यावत्-चतुर्वेद परिनिष्ठिता श्रुतिस्मृत्यादिसकलशास्त्राभिज्ञा चाप्यासीत्। ततस्तदन्तरं सा चोक्षा परिव्राजिका मिथिलायां नगर्यां बहूनां राजेश्वर-यावत् राजेश्वरतलवरकौटुम्बिकमाण्डविकश्रेष्ठिसार्थवाहप्रभृतीनां पुरतः = अग्रे, दानधर्मं च शौचधर्मं च तीर्थाभिषेकं तीर्थजलस्नानधर्मं च आख्यापयन्ती=आख्यानम् -आख्यातां कुर्वती कथयन्तीत्यर्थः, प्रज्ञापयन्ती=सम्यग बोधयन्ती, प्ररूपयन्ती=

नामसे प्रसिद्ध है) था। उस देशमें कांपिल्यपुर नामका नगर था। उसमें पंचाल देश के अधिपति जित शत्रु राजा रहते थे। (तस्सणं जियसत्तुस्स धारिणी पामोक्खं देवीसहस्सं ओरेहे होत्था) उस जित शत्रु राजा के अन्तः पुर में धारिणी प्रमुख ? एक हजार देवियां थीं। (तत्थणं मिहिलाए चोक्खानामं परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था) इस तरह मिथिला नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदों की तथा स्मृति आदि समस्त शास्त्रों की परिज्ञाता चोक्षा नाम की परिव्राजिका भी रहती थी-(तएणं सा चोक्खा परिवाइया मिहिलाए बहूणं राइसर जाव सत्थवाहपभिइणं पुरओ दाणधम्मंच सोयधम्मंच तित्थाभिसेयंच आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी, विहरइ)

હતો. તે દેશમાં કાંપિલ્યપુર નામે નગર હતું. તેમાં પંચાલ દેશના અધિપતિ જિતશત્રુ રાજા રહેતા હતા.

(तस्सणं जियसत्तुस्स धारिणी पामोक्खं देविसहस्सं ओरेहे होत्था)

જિતશત્રુ રાજાના રનિવાસમાં ધારિણી પ્રમુખ એક હજાર રાણીઓ હતી.

(तत्थणं मिहिलाए चोक्खानामं पहिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया याविहोत्था)

મિથિલા નગરીમાં ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદો તેમજ સ્મૃતિ વગેરે બધા શાસ્ત્રોને જાણનારી ચોક્ષા નામે એક પરિવ્રાજિકા રહેતી હતી.

(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाएं बहूणं राई सरजाव सत्थवाहपभिइणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च अघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दान स्वशास्त्रानुसारेण शौचादि धर्माणां विधि नियमभेदादि प्ररूपणां कुर्वती उपदर्शयन्ती=स्वाचरणेन साक्षात् कारयन्ती, विहरति=आस्तेस्म ।

ततस्तदनन्तरं सा चोक्षा परिव्राजिना अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये त्रिदण्डं=दण्डत्रयं च कुण्डिकां=कमण्डलु च यावत्-धातुरक्तानि वस्त्राणि गृह्णति, गृहीत्वा ' परिव्वाइगावसहाओ ' परिव्राजिकावसथात्=परिव्राजिकानां मठात् ' पडिनिक्खमइ ' प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पविरल परिव्वाइया ' प्रविरलपरिव्राजिकाभिः = अल्पसंख्यकसंन्यासिकाभिः सार्धं=सह, संपरिवृता=युक्ता मिथिलां राजधानीं मिथिलाया राजधान्या इत्यर्थः मध्यमध्येन यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव ' कण्णंते उरे ' कन्यान्तः पुरं, यत्रैव मल्ली विदेहवरकन्या, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' उदयपरिफासियाए ' उदकपरि

वह चोक्षा परिव्राजिका मिथिला नगरी में अनेक राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक, माण्डविक, श्रेष्ठी, सार्थवाह आदिकों के समक्ष दान धर्म शौच धर्म, और तीर्थाभिषेक का कथन करती थी, उन्हें अच्छी तरह समझाती थी उस शौचादि धर्मों की अपने शास्त्रानुसारविधि नियम आदि के भेद से प्ररूपणा करती थी और अपने आचरण से साक्षात उन का प्रदर्शन भी करती थी । (तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइयासद्धिं संपरिवुडा मिहिला रायहाणिं मज्झं मज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेह रायवरकन्ना-तेणेव उवागच्छइ) एक दिन वह चोक्षा परिव्राजिका अपने त्रिदंड कमण्डलु, तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को लेकर

મિથિલા નગરીમાં ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ઘણા રાજેશ્વર, તલવર, કૌટુંબિક માંડલિક, શ્રેષ્ઠિ, સાર્થવાહ વગેરેની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ અને તીર્થસ્થાન વિષે ધર્મ ચર્ચા કરતી હતી. તેમને તે સારી પેઠે શૌચ વગેરે ધર્મો તેમજ શાસ્ત્રાનુસાર વિધિ નિયમ વગેરેના ભેદોની બાબતમાં સમજાવતી હતી. અને જાતે બધા શૌચ વગેરે આચરણોને આચરીને પ્રત્યક્ષ રૂપમાં તેનો દેખાવ કરતી હતી.

(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा मिहिला रायहाणिं मज्झं मज्झेण जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवर कन्नातेणेव उवागच्छइ)

એક દિવસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પોતાના ત્રિદંડ, કમંડલુ તેમજ ગેરૂથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पृष्टायां=जलप्रक्षेपेण सिक्तायां, दर्भोपरि 'पच्चुत्थुयाए' प्रत्यस्तृतायां=प्रसारितायां 'भिसियायां' वृषिकायाम्=आसने निषीदति=उपविशति, निषद्य मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः पुरतो दानधर्मं च यावद् विहरति दानधर्मशौचधर्मादि-कमाख्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती सा चोक्षा परिव्राजिका आस्ते स्म।

ततः खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षां परिव्राजिकामेवमवादीत्–हे चोक्षे! तव खलु किं मूलो धर्मः प्रज्ञप्तः? ततः=मल्लीवचन, श्रवणानन्तरं खलु सा

परिव्राजकों के मठ से निकली और कितनीक परिव्राजिकाओं को साथ लेकर मिथिला राजधानी के बीचों बीच से होकर वह जहां कुंभक राजा का भवन था तथा उस में जहां कन्यान्तः पुर और उस में भी विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी थी वहां आई–(उवागच्छित्ता उदय परि फासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ वहां आकर वह जल से सिञ्चित हुए तथा दर्भ के ऊपर बिछाये गये आसन पर बैठ गई। (निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ) बैठकर उसने विदेह रायवर कन्याके समक्ष दान, धर्म शौचधर्म आदि की कथा की–प्ररूपणा की (तएणं मल्ली विदेहरायवर कन्ना–चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी) बाद में विदेह राज की उत्तम कन्या मल्लीकुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार कहा–(तुब्भेणं चोक्खे किं मूलए धम्मे पण्णत्ते?) हे चोक्षे! तुम्हारे यहां धर्म किं मूलक (किस मूलक) प्रज्ञप्त हुआ है।

રંગેલા વસ્ત્રોને લઈને પરિવ્રાજકોના મઠથી બહાર નીકળી અને કેટલીક પરિવ્રાજિકાઓની સાથે મિથિલા રાજધાની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુંભકરાજાનો મહેલ હતો તેમજ જ્યાં કન્યાન્તઃપુર અને તેમાં પણ વિદેહરાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારી હતી ત્યાં પહોંચી.

(उवागच्छित्ता उदय परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ)

ત્યાં આવીને તે પાણી છાંટેલા દર્ભના ઉપર પાથરવામાં આવેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ.

(निसित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ) બેસીને તેણે વિદેહરાજવર કન્યાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ વગેરેની વ્યાખ્યા કરી. (चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी) ત્યારપછી વિદેહરાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(तुमेणं चोक्खेकिं मूए धम्मे पण्णत्ते?) હે ચોક્ષે! તમારામાં ધર્મ કિં મૂલક પ્રરુપિત કરવામાં આવ્યો છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोक्षा परिव्राजका मल्लीं विदेहराजवरकन्या मेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! अस्माकं खलु शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, यत् खलु अस्माकं किंचिदशुचिभवति, तत् खलु उदकेन=जलेन च मृत्तिकया-यावत्-शुचिभवति,एवं खलु वयं जलाभिषेकपूतात्मानः अविघ्नेन स्वर्गं गच्छामः।

ततः=चोक्षापरिव्राजिकावचनश्रवणानन्तरं खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षां परिव्राजिकामेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे चोक्षे ! तद् यथानामकं-इदं दृष्टान्तोपन्यासे-दृष्टान्तं पदर्शयामि तावदित्यर्थः-यथा कोऽपि पुरुषो रुधिर-

(तएणं सा चोक्खो परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी) प्रत्युत्तर में उस चोक्षा परिव्राजिका ने विदेह राजवर कन्या उस मल्ली कुमारी से ऐसा कहा

(अम्हंणं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे, जण्णं अम्हं किंचि असुइ भवइ तएणं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी) हे देवानुप्रिये ! हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है। इसीलिये हमारी कोई वस्तु जब अशुचि हो जाती है- तब हम लोग उसे जल एवं मृत्तिका से पवित्र कर लेते हैं। इस तरह हम लोग जल स्नान से पवित्रात्मा होकर विना किसी विघ्न के शीघ्र ही स्वर्ग पहुँच जाते है।

इस प्रकार चोक्षा का कथन सुनकर विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से ऐसा कहा- (चोक्खा-से

(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी)

જવાબમાં ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાએ વિદેહ રાજવર કન્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(अम्हंणं देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे जण्णं अम्हं किं चि असुइ भवइ, तएणं उदएणं य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो तएणं मल्ली विदेहराय वरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયે ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે. એટલા માટે અમારી ગમે તે વસ્તુ જ્યારે અશુચિ થઈ જાય છે ત્યારે અમે તેને પાણી અને માટીથી પવિત્ર કરીએ છીએ. આ રીતે અમે પાણીમાં સ્નાન કરીને પવિત્રાત્મા થઈ જઇએ છીએ અને નિર્વિઘ્ન રૂપે જલદી સ્વર્ગમાં પહોંચી જઈએ છીએ.

આ રીતે ચોક્ષાનું કથન સાંભળીને વિદેહરાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લિકુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને કહ્યું કે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृतं=शोणितलिप्तं वस्त्रं रुधिरेणैव शोणितलिप्तस्य वस्त्रस्य रुधिरेण धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य काऽपि शोधिः ? नायमर्थःसमर्थः=रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण कापि शुद्धिर्न भवतीत्यर्थः । चोक्षे ! एवमेव=रुधिरसंसृष्टवस्त्रदृष्टान्तेनैव युष्माकं खलु प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन=अष्टादशपापस्थानसेवनेन नास्ति शुद्धिः= न भवति काचिदपि शुद्धि रात्मन इत्यर्थः, यथैव तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य रुधिरेणैव धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य नास्ति शुद्धिः । ततः खलु=तत्पश्चात् सा चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्या विदेहराजवरकन्या एवमुक्ता सति 'संकिया' शङ्किता 'कंखिया' कांक्षिता=यदि मनसि विचार्योत्तरं न दास्यामि तत्समीचीनं भविष्यति नवा ?' इति संशययुक्ता। 'यदि मद्विचारितमुत्तरं सम्यग् न भवेत्तर्हि

जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेव धोवेज्जा अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ? नो इणट्ठे समट्ठे एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स) चोक्षे ! जैसे कोई पुरुष रुधिर (खून) से लिप्त हुए वस्त्र को रुधिर (खून) से ही धोवे-तो क्या चोक्षे ! उस रुधिर लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोये जाने पर कोई शुद्धि हो सकती है ?। रुधिर से लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि होती है-यह बात तो कोई भी समझदार प्राणी नहीं मान सकता है। उसी तरह हे चोक्षे ! प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य के सेवन से-अष्टादश पापस्थानों के सेवन से-आप लोगों की आत्मा की भी किसी तरह से शुद्धि नही हो सकती है। जैसे उस रुधिर से सने हुए वस्त्र की रुधिर

(चोक्खा ! से जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ? नो इणट्ठे, समट्ठे एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थिकाई सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स)

હે ચોક્ષે ! જેમ કોઇ માણસ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવે તો શું લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવડાવવામાં આવે તો તેની શુદ્ધિ થઇ ગઈ કહેવાય ? આ વાત તો ગમે તે વ્યક્તિ પણ સમજી શકે તેમ છે. આ પ્રમાણે હે ચોક્ષે ! પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી તમારા જેવા લોકોની શુદ્ધિ કોઇપણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી. જેમ પેલા લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની શુદ્ધિ લોહીથી થઇ શકતી જ નથી તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી પણ શુદ્ધિ થતી નથી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किमन्यदुत्तरं दास्यामी ' त्येवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विइगिच्छिया ' विचिकित्सिता=' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्ल्या अत्र श्रद्धोत्पत्स्यते किं वा नोत्पत्स्यते ' इत्येवं विचिकित्सा=संशयः, संजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा-' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=भत्र भेदो मतेर्भङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभावाद् व्याकुलतारूपस्तं समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्याः समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृतं प्रश्नं समाधातुं व्याकुलीजाता, इति भावः मल्ल्याः ' णो संचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नही होती है। (तएणं सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एवं वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शंका से युक्त बन गई, कांक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति संदेह और भेद (अपने मंतव्य का विच्छेद) से समापन्न हो गई। मनसे सोचकर यदि मैं मल्ली कुमारीको उत्तर दूंगी-तो न मालूम वह उत्तर सच्चा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशंकित बन गई।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नही होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूंगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई। मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नही होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई।

(तएणं सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एवं वुत्ता संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

આ પ્રમાણે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી વડે સમજાવવામાં આવેલી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા શંકાથી યુક્ત થઈ ગઈ, કાંક્ષાથી યુક્ત થઇ ગઈ, વિચિકિત્સા (ફળ-પ્રાપ્તિ વિશે સંદેહ યુક્ત) અને ભેદ (પોતાની માન્યતાનો નાશ) સમાપન્ન થઈ ગઈ. મલ્લીકુમારીને જવાબમાં હું કોઈ પણ વસ્તુ રજૂ કરીશ તો તે સાચી હશે કે કેમ ? આ જાતની મુંઝવણથી ચોક્ષાનું મન શંકિત થઇ ગયું.

" જો મારો જવાબ બરોબર નહિ હોય તો બીજો શો જવાબ હું આપીશ ? આ પ્રમાણે તે જવાબના વિશે વાંચ્છાયુક્ત થઈ ગઇ. " મલ્લીકુમારીને જવાબ આપ્યા છતાં પણ તેને મારા જવાબ ઉપર વિશ્વાસ બેસશે કે કેમ ? " આ રીતે તે વિચિકિત્સા યુક્ત થઇ ગઈ. " આ પરિસ્થિતિમાં મારે શું કરવું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शक्नोति कंचिदपि ' पामोक्खं ' प्रमोक्षम्=प्रमुच्यते प्रश्नबन्धनादनेनेति-प्रमोक्षः प्रश्नस्य परिहारम्, उत्तरमित्यर्थः ' आइक्खित्तए ' आख्यातुं=कथयितुम्, यदा-चोक्खा परिव्राजिका मल्ल्याः प्रश्नस्योत्तरं वक्तुमसमर्था जाता, तदा सा ' तुसि णीया ' तूष्णीका=मौनावलम्बिनी भूता ' संचिट्ठइ ' संतिष्ठते संस्थिता। ततस्तदन्तरं खलु तां चोक्षां मल्ल्याबहव्यो दासचेटिकाः=दासपुत्र्यः ' हीलेंति ' हिलन्ति-अवमानयन्ति, निन्दन्ति-जात्याद्युद्घाटनेन कुत्सन्ति, खिंसन्ति-दोषकीर्तनेनोपहसन्ति, गर्हन्ते सर्वसमक्षं निन्द्रां कुर्वन्ति, अप्येकिकाः एकाः काश्चित्-क्रोधयन्ति तस्याः कोपमुद्भावयन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित्-'मुहमक्कडियंओ' मुखमर्कटिकाः=मुखानां तिर्यक्कानि कुर्वन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित् ' वग्घा-

अब इस समय मुझे क्या करना चाहिये इस तरह का वह निर्णय नही कर सकने के कारण व्याकुल बन जाने से भेद समापन्न बन गई।

(मल्लीए णो संचाएइ किंचि वि पामोक्खा माइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दास चेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिंसंति गरहंति) अतः वह मल्ली कुमारी को कुछ भी प्रमोक्षा प्रश्न का उत्तर-नहीं दे सकी, किन्तु चुपचाप बैठी रही। जब चोक्षा की ऐसी हालत मल्ली कुमारी की दास चेटियों ने देखी तो वे उसका अपमान रूप हीलना करने लग गई। जाती आदि के उद्घाटन से उस से घृणा रूप निंदा करने लगी। दोषों के कीर्तनसे उस का उपहास रूप खिंसना करने लगीं। सबके समक्ष उसके अवर्ण वादरूप गर्हणा करने लगी (अप्पेगइया हेरूयालंति, अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पे-गइया वग्घाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति) इन

लेवाय ? " આ જાતના વિવેકની શક્તિ પણ તેની નાશ પામી હતી એથી તે વ્યાકુળ થઇને ભેદ સમાપન્ન બની ગઇ હતી.

(मल्लीए णो संचाएइ किंचि वि पामोक्खामाइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिंसंति गरहंति) એથી મલ્લીકુમારીને તે જવાબમાં કંઈ પણ કહી શકી નહિ. તે સાવ મૂંગી થઇને બેસી જ રહી. મલ્લીકુમારીની દાસ ચેટીઓએ ચોક્ષાની આ પ્રમાણેની સ્થિતિ જોઇ ત્યારે તેઓ તેની અપમાનરૂપ હીલના કરવા લાગી જાતિ વગેરેનું ઉદ્ઘાટન કરીને તેની ઘૃણા રૂપ નિંદા કરવા લાગી. તેના દોષોને કહેતી ઉપહાસ રૂપ ખિંસના કરવા લાગી બધાની સામે તેની અવર્ણવાદ રૂપ ગર્હણા કરવા લાગી.

(अप्पेगइया हेरूयालंति, अप्पेगइय मुहमक्कडियाओकरेंति अप्पेगइया वग्घा-डीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डीओ' व्याघ्राटिका=उपहासार्थं शब्दविशेषान् कुर्वन्ति, अप्येकिकाः एकाः काश्चित् 'तज्जमाणीओ' तर्जयन्त्यः - दुर्वचनतः, 'मम प्रश्नस्योत्तरं देहि, नो चेत् पश्चाद् ज्ञास्यसि ' इत्यादिना भीषयन्त्य इत्यर्थः । निच्छुभंति निक्षिपन्ति=निस्सारयन्ति ।

ततस्तदन्तरं सा चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः दासचेटिकाभिः ' यावत्-हिल्यमाना निन्द्यमाना गर्ह्यमाणा, आशुरुक्षा=शीघ्रं क्रोधाविष्टा यावत् 'मिसमिसेमाणी ' मिसमिसन्ती क्रोधानलेन जाज्वल्यमाना मल्ल्यां विदेह राजवरकन्यायां ' पओसमावज्जइ ' प्रद्वेषमापद्यते=परमद्वेषवती जाता । ततः सा

में से किसी एक ने उसे क्रोध उद्भावित-किया, किसी एक ने उस के सामने अपना मुख मोड लिया, किसी एक ने उस की हँसी उड़ा ने के लिये विशेष शब्दों का प्रयोग किया, किसी एक ने दुर्वचनों से उसे तर्जित किया, किसी एक ने " मेरे प्रश्न का उत्तर दे, नही तो पीछे तुझे मालूम पडेगी " इस तरह कहकर उसे डराया और वहां से निकाल दिया । (तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसि मिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसियं णिण्हइ, णिण्हित्ता कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमइ) इस तरह विदेह राज कि वरकन्यामल्ली कुमारी की दास चेटियों से अपमानित घृणित, और निन्दित होती हुइ वह चोक्षा परिव्राजिका, क्रोध से लाल हो गई, और मिसमिसाती हुई क्रोध से जाज्वल्यमान होती हुई-वह विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के ऊपर परम द्वेषवती बन गई ।

તેઓમાંથી કોઇકે તેને ક્રોધિત કરી, કોઈ એ તેની સામેથી મોં ફેરવી લીધું. કોઇએ તેની મશ્કરી કરવા વિશેષ શબ્દોનો પ્રયોગ કર્યો, કોઈ એ દુર્વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, કોઇએ તેને " મારા સવાલનો જવાબ આપ નહિતર તારી ખબર લઇ લઈશું " આ રીતે ધીક બતાવી અને ત્યાંથી બહાર કાઢી મૂકી.

(तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्ज माणी हीलिज्जमाणी, आसुरुत्ता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसियं णिण्हइ, णिण्हित्ता कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमइ)

આ રીતે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીની દાસ ચેટીયોથી અપમાનિત, ધૃણિત અને નિંદિત થતી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગઇ અને ક્રોધમાં સળગતી તે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી પ્રત્યે ખૂબ જ ઈર્ષાળુ-દ્વેષ કરનારી થઈ ગઇ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोक्षा परिव्राजिका ' भिसियं ' दृषिका= आसनं स्वकीयमितिभावः, गृह्णाति गृहीत्वा ' कण्णंतेउराओ ' कन्यान्तः पुरात् मल्ल्या भवनात्, प्रतिनिष्क्रामति= निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य मिथिलातो निर्गच्छति, निर्गत्य परिव्राजिका संपरिवृता प्रविरलसंन्यासिकाभिर्युक्ता, यत्रैव पञ्चालजनपदः=पञ्चालनामको देशोऽस्ति, यत्रैव=यस्मिन् देशे काम्पिल्यपुर नाम नगरं, तत्र= तस्मिन् नगरे उपागच्छति, उपागत्यच काम्पिल्यपुरे नगरे बहूनां राजेश्वरादीनां पुरतः स्वमतं यावद्-आख्या-पयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरति=आस्तेस्म ॥ सू० ३० ॥

मूलम्–तएणं से जियसत्तू अन्नदा कयाइं अंतेउरपरियाल संपरिवुडे एवं जाव विहरइ, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया संप-

---

उस ने उसी समय वहां से अपना आसन उठाया-और उठाकर वह कन्यान्तः पुर से–मल्ली कुमारी के भवन से बाहिर निकल आई। (पडिनिक्खमित्ता) बाहिर निकलकर (मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिव्वाइया संपरिवुडा जेणेव पंचाल जणवए, जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंपिल्लपुरे बहूणं राईसर० जाव परूवेमाणी विहरइ) फिर वह मिथिला नगरी से चल दी।

चलकर परिव्राजिकाओं को साथ में लिये हुए जहां पांचाल देश और उसमें जहां कांपिल्य नगर था वहां आई। वहां आकर वह अपने मत की अनेक राश्वजेर आदिकों के समक्ष आख्यापना और प्ररूपणा करती हुई रहने लगी ॥ सू० ३० ॥

તેણે તરત જ પોતાનું આસન ત્યાંથી ઉપાડી લીધું અને કન્યાન્તઃપુરથી એટલે કે મલ્લીકુમારીના મહેલથી તે બહાર નીકળી ગઈ. (પડિનિક્ખમિત્તા) બહાર નીકળીને

(મહિલાઓ નિગ્ગચ્છઇ નિગ્ગચ્છિત્તા પરિવ્વાઇયા સંપરિવુડા જેણેવ પંચાલ જણવએ, જેણેવ કંપિલ્લપુરે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ ઉવાગચ્છિત્તા કંપિલ્લપુરે બહૂણં રાઈ સર૦ જાવ પરૂવેમાણી વિહરઇ)

તે મિથિલા નગરીમાંથી ચાલતી થઈ.

પરિવ્રાજિકાઓની સાથે તે ચાલતી ચાલતી રી જ્યાં પાંચાલ દેશ અને તેમાં પણ જ્યાં કાંપિલ્યનગર હતું ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તે પોતાના ધર્મની ઘણા રાજેશ્વર વગેરેની સામે આખ્યાપના, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરતાં રહેવા લાગી. ॥ સૂત્ર " ૩૦ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिवुडा जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ। तएणं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ, जियसत्तुं रायं रज्जे य जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं सा चोक्खा जियसत्तस्स रन्नो दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी–तुमंणं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागार० जाव अडसि, बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविसासि, ते अत्थियाइ ते कस्सवि रन्नो वा जाव कहिंचि एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे? तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियस ईसिं अवहासियं करेइ, करित्ता एवं वयासी–एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया! तस्स अगडदद्दुरस्स?, केणं देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे? जियसत्तु! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया तथेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेवं मण्णइ-अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा। तएणं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए, तएणं से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं एवं वयासी–से केसणं तुमं देवाणुप्पिया! कत्तो वा इह हव्वमागए? तएणं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया!

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अहं सामुद्दए दद्दरे, तएणं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दरं एवं वयासी-के महलए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, तएणं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी-महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे ! तएणं से दद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढित्ता एवं वयासी —एमहालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, महालएणं से समुद्दे ! तएणं से कूवदद्दुरे पुरमत्थिमिलाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी-ए महालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तहेव एवामेव तुमंपि जियसत्तू अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, तं एवं खलु जियस मिहिलाए नयरीये कुंभगस्स धूया पभावतीये अत्तया मल्ली नामंति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देयकन्ना या जारिसिया मल्ली, मल्लीए विदेह राययरकन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्स तमंपि कलं न अग्घइ त्तिकट्टु जामेय दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, तएणं से जियसत्तू परिव्वाइया जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३१ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततस्तदन्तरं स जितशत्रुः अन्यदा कदाचित्

' तएणं से जियसत्तू अन्नया कयाइं ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं)इसके बाद(से जियसत्तू)वह जितशत्रु (अन्नया कयाइं)

(तएणं से जियसत्तू अन्नया कयाइं । इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यार બાદ (से जियसत्तू) જિતશત્રુ (अन्नया कयाइं) કોઈ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये ' अंतेउरपरियालसंपरिवुडे ' अन्तः पुरपरिवार संपरि वृतः=अन्तः पुरस्य परिवारेण=स्त्रीजनैःसंपरिवृतः युक्तः, एवं यावद् विहरति-तिष्ठति । ' तए ' ततः=तदा, खलु सा चोक्खा परिव्राजिका परिवृता=स्वशिष्य-संन्यासिका सहित यत्रैव जितशत्रो राज्ञो भवनं=प्रासादः, यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थाने जितशत्रुः, तत्रैवोपागच्छति, जितशत्रु जयेन-विजयेन=जय विजय शब्द कीर्तनेन ' वद्धावेइ ' वर्धयति । ततः खलु स जितशत्रुश्चोक्षां परिव्राजिकाम् एजमानाम्=आगच्छतीं पश्यती, दृष्ट्वा सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय चोक्षां सत्करोति, सत्कृत्य आसनेन ' उवणिमंतेइ ' उपनिमन्त्रयति=उपवेशनार्थं प्रार्थ-

किसी एक दिन (अंतेउरपरियालसंपरिवुडे) अपने अन्तः पुर परिवार के साथ (एवं जाव विहरइ) बैठा हुआ था (तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया) इतने में वह चोक्षा परिव्राजिकाओंके साथर (जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिय-सत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ) जहां जितशत्रु राजा का महल था और जहां वे जितशत्रु राजा विराजमान थे वहां आई आकर उसने उन्हें जय विजय शब्दोंसे धन्यवाद दिया-(तएणं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ) जब चोक्षापरिव्राजिका को जितशत्रु राजाने आते हुए देखा था-तो वह देखते ही अपने सिंहा-सन से उठ बैठा था-और उठकर उसने चोक्षा परिव्राजिका का आदर सत्कार किया था। आदर सत्कार करके उसने उसे आसन पर

એક દિવસે (अंतेउरपरियाल संपरि वुडे) પોતાના રણુવાસના પરિવારની સાથે (एवं जाव विहरइ) બેઠો હતો. (तएणं सा चोक्खा परिवाइया) તેટલામાં ચોક્ષા પરિવ્રજિકાઓની સાથે

(जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तूं जएणं विजएणं वद्धावेइ)

જ્યાં જિતશત્રુ રાજાનો મહેલ હતો અને જ્યાં જિતશત્રુ રાજા બેઠા હતા ત્યાં ગઇ. ત્યાં પહોંચીને તેણે રાજાને જય વિજય શબ્દોથી વધાવ્યા.

(तएणं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहा-सणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ)

જિતશત્રુ રાજાએ જ્યારે ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આવતી જોઇ ત્યારે તેઓ પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઉભા થઇને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાનો તેઓએ આદર સત્કાર કર્યો. આદર સત્કાર કરીને રાજાએ તેને આસન ઉપર બેસવા માટે કહ્યું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यति। तएणं चोक्खा 'उदगपरिफासियाए, उदकपरिस्पृष्टायां=जलप्रक्षेपेण सिक्तायां यावत्-दर्भोपरि प्रत्यास्तृतायां 'भिसियाए' बृषिकायां 'निसीयइ' निषीदति=उपविशति। जितशत्रुं राजानं राज्ये च यावदन्तःपुरे च कुशलोदन्तं कुशलसमाचारं पृच्छति, ततः खलु सा चोक्षा जितशत्रोः राज्ञः पुरतो दानधर्मं च यावद्-शौचधर्मादिकमाख्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरती=आस्ते स्म। ततस्तदनन्तरं खलु स जितशत्रुः, आत्मानः स्वस्य, 'ओरोहंसि' अवरोधे=अन्तःपुरे यावद् विस्मितः= आश्चर्ययुक्तः सन् चोक्षाम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये! त्वं खलु-बहूनि, ग्रामाकर०यावत्=ग्रामाकरखेटकर्वटादीनि अटसि=गच्छसि बहूनि

बैठ जाने के लिये कहा-। (तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ) अतः वह चोक्षा परिव्राजिका जलसे सिञ्चित हुए यावत् आसन पर बैठ गई।

(जियसत्तू रायं रज्जे य जाव अंतेउरेय कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मंच जाव विहरइ) बैठने के बाद उसने जितशत्रु राजा से राज्य एवं अन्तःपुर की कुशलवार्ता पूछी बाद में उसने जितशत्रु राजा के समक्ष दान धर्म शौच धर्म आदिका कथन किया, प्ररूपणा किया प्रज्ञापन किया, (तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रू राजा ने अपने अन्तःपुर में विस्मित होकर उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार कहा-(तुमंणं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर० जाव अडसि बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविससि) हे देवाणुप्रियों! तुम अनेक

(तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ)

ચોક્ષા પરિવ્રાજીકા પાણી છાંટેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ.

(जियसत्तूरायं रज्जे य जाव अंते उरेय कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं चोक्खा जियसत्तूस्स रण्णो दाणधम्मं च जाव विहरइ)

ત્યાર બાદ તેણે રાજાને રાજ્ય તેમજ રણવાસની કુશળ વાર્તા પૂછી અને પરિવ્રાજીકાએ આ બધું કરીને જિતશત્રુ રાજાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ વગેરેનું કથન કર્યું, પ્રરૂપણ કર્યું અને પ્રજ્ઞાપન કર્યું.

(तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी)

રણવાસમાં બેઠેલા રાજા જીતશત્રુએ તેની વાત સાંભળીને વિસ્મય પામતા પરિવ્રાજીકાને કહ્યું કે—

(तुमणं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर० जाव अडसि बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविससि)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च 'राईसर०गिहाइं' राजेश्वरादीनां गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्मात् कथय-अस्ति चापि, 'ते' त्वया कस्यापि राज्ञो वा यावत्- ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वः, यादृशः खलु अयं ममावरोधः ? अन्तःपुरम् ततस्तदनन्तरं खलु सा चोक्षा परिव्राजिका जितशत्रुमीषदपहसितं करोति, कृत्वा एवं वयासी ।

हे देवानुप्रिय ! एवं च सदृशः खलु त्वं तस्य 'अगडदद्दुरस्स' अवटदर्दुरस्य =कूपमण्डूकस्य । चोक्षाया वचनं श्रुत्वा जितशत्रुश्चोक्षां पृच्छति-'केणं' इत्यादि । कः खलु हे देवानुप्रिये ! सोऽवटदर्दुरः=कूपमण्डूकः ?, चोक्षा परिव्राजिका कथयति-तद् यथानामकम् = यथानामकमितिपदं दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः

ग्राम, आकर, खेट कर्वट आदिस्थानों में जाती रहती हो, तथा अनेक राजेश्वर आदि जनों के गृहों में प्रवेश भी करती रहती हो (तं अत्थियाइ ते कस्स वि रन्नो वा जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठिपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे) तो कहो तुमनेकिसी राजा आदि का ऐसा अन्तः पुरपहिले कभी कहिं देखा है ? कि जैसा मेरा यह अन्तः पुर हैं। (तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसिं अवहासेयं करेइ, करित्ता एवं वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद उस चोक्षा परिव्राजिकाने पहिलेतो राजा को कुछ हँसाया बाद में हँसाते हुए उनसे ऐसा कहा-एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स) हे देवानुप्रिय ! तुम तो उस कूपमंडूक के समान हो ऐसी चोक्षा की बात सुनकर बीच मे ही राजा ने उससे कहा (केणं देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे ? देवानु-

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે ઘણા ગ્રામ,આકર, ખેટકર્વટ વગેરે સ્થાનોમાં અવર-જવર કરતા રહો છો તેમજ ઘણા રાજાઓ વગેરેના મહેલોમાં પણ જાઓ છો.

तं अत्थियाइ ते कस्स वि रन्नो वा, जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे)

તો બતાવો કે મારા જેવો રણવાસ કોઇપણ રાજા વગેરેનો તમે જોયો છે.

(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसिं अवहासेयं करेइ, एवं करित्ता वयासी)

આ રીતે સાંભળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાએ પહેલાં તો રાજાને થોડો હસાવ્યો ત્યાર પછી હસાવતાં તેમને કહ્યું કે-

(एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે તો પેલા કૂવાના દેડકા જેવા છો ! ચોક્ષાની આ વાત સાંભળીને રાજાએ વચ્ચેથી જ તેને કહ્યું કે (केणं देवाणुप्पिए से अगड

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथा-एकः कूपमण्डूकः स्यात्=आसीत्, स खलु 'तत्थ' तत्र=तस्मिन् कूपे जातः, तत्रैव कूपे एव 'वुड्ढे' वृद्धः=वृद्धिंगतः, अन्यम्-'अगडं' अवटं=कूपं वा, 'तलागं' तडागं=कमलयुक्तागाधजलाशयं वा, 'दहं' ह्रदं=प्रसिद्धं, 'सरं' सरः=सरोवरं वा, सागरं वा, अपश्यन्नेवं मन्यते-अयमेवावटो वा यावत् सागरो वा। एतस्मात् कूपान्महाजलस्थानमन्यन्नास्तीत्येवं मनसि जानातीति भावः। ततस्तदनन्तरं खलु तं कूपंपति, 'अण्णे' अन्यः सामुद्रकः=समुद्रे जातः 'ददुरे' दर्दुरः=मण्डूकः, हव्यमागतः=सहजगत्या समागतः। ततः खलु स कूपदर्दुरः=कूपमण्डूकः तं 'सामुद्ददुरं' सामुद्रनिवासिनं मण्डूकम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यथा क एष खलु त्वं हे देवानुप्रिय! 'कत्तो' कुतः=कस्मात्

प्रिय! वह कूपमंडूक कैसा होता है! (जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से णं तत्थ जाए तथेव वुड्ढे अन्नंअगडं वा तडागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेव मण्णइ अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा) इस प्रकार जितशत्रु राजा की बात सुनकर चोक्षा परिव्राजिका ने उससे कहा-जितशत्रो सुनो मैं तुम्हें समझाती हूँ-जैसे कोई एक कूपका मेंढक कि जो उसी में उत्पन्न हुआ हो और उसी में पलपुष कर बढा हुआ हो वह जैसे अपने कुए के सिवाय और किसी-कुए को, तडाग कमलयुक्त अगाध-सरोवर को द्रह को जलाशय विशेष को, अथवा समुद्रको कभी नहीं देखता हुआ ऐसा ही मानता है कि यही मेरा कुआ और दूसरा कुआ है? यावत् सागर है।

इस कुए के सिवाय और दुसरा कोई बड़ा भारी जलस्थान कहीं पर नहीं हैं (तएणं तं कूवं अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए-तएणं

ददुरे?) હે દેવાનુપ્રિય! કૂવાનો દેડકો કેવો હોય છે?

(जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से णं तत्थ जाए तथेव वुड्ढे. अन्नं अगडं वा तडागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेव मण्णइ अयं चेव अगडेवा जाव सागरे वा)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ રાજાની વાત સાંભળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાએ તેને કહ્યું કે જીતશત્રો! સાંભળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું. જેમ કોઇ એક કૂવાનો દેડકો કે જે કૂવામાં તે જન્મ્યો છે અને તેજ સ્થાંજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના કૂવા સિવાય બીજા કોઇપણ કૂવા, તળાગ-કમળોવ છું અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય વિશેષ અને સમુદ્રને કોઇપણ વખત ન જોવાથી એમ જ માને છે કે આ મારો કૂવો જ બીજો કૂવો છે યાવત્ સાગર છે.

આ મારા કૂવા સિવાય બીજુ કોઇ મોટું સરોવર કે જળસ્થાન જગતમાં નથી. (तएणं तं कूवं अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए) આ પ્રમાણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानाद् वा इह हव्यमागतः ?, ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः तं कूपदर्दुरमेवं= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे देवानुप्रिय ! अहं सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी मण्डूकोऽस्मि । ततः खलु स कूप दर्दुरस्तं सामुद्रं दर्दुरमेवमवादीत्–' के महालए' कियन्महालयः=कियान् विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्रः ?, ततस्तदनन्तरं खलु स सामुद्रो दर्दुरस्तं कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्णः, खलु देवा-

से कूवददुरे तं सामुद्ददुरं एवं वयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कुएपर उसी समय में कोइ दूसरा समुद्र में रहने वाला मेंढक आगया–उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा–(से केसणं तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो–इस समय कहां से आरहे हो ? (तएणं से सामुद्दे ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेंढक ने उस कूप मेंढक से ऐसा कहा (एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए ददुरे) हे देवानुप्रिय ! मैं समुद्र का रहने वाला मेंढक हूँ (तएणं से कूव ददुरे तं सामुद्दयं ददुरं एवं वयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेंढक ने उस समुद्र के निवासी ददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा हैं ? (तएणं से सामुद्दए ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी) प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा–(एवं खलु देवाणुप्पिया महालएणं

સંકુચિત વિચાર ધરાવતા કૂવાના દેડકાની પાસે બીજો કોઇ સમુદ્રમાં રહેનારો દેડકો આવ્યો. તેને આવેલો જોઇને કૂવાના દેડકાએ સમુદ્રના દેડકાને કહ્યું— (से केसणं तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?) હે દેવાનુપ્રિય ? તમે કોણ છો ? અત્યારે તમે કયાંથી આવો છો ? (तएणं से सामुद्दे ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी) જવાબમાં તે સમુદ્રમાં રહેનારા દેડકાએ કૂવાના દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए ददुरे) હે દેવાનુપ્રિય ! હું સમુદ્રમાં રહેનારો દેડકો છું (तएणं से कूवददुरे तं सामुद्दयं ददुरं एवं वयासी) તેની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને કૂવાના દેડકાએ તે સમુદ્રમાં રહેનારા દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (के महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) હે દેવાનુપ્રિય ? તે સમુદ્ર કેટલો મોટો છે ? (तएणं से सामुद्दए ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी) જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया, महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तंएण से ददुरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुप्रिय ! समुद्रः, ततस्तदनन्तरं खलु स दर्दुरः=कूपमण्डूकः, पादेन रेखां कर्षति, कृष्ट्वा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमंडूक आह-' नायमर्थः समर्थः ' इति अयं रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तारं बोधयितुं न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-' महालय खलु स समुद्रः ' खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्वं न केनापि निर्देष्टुं शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तरं खलु स कूपदर्दुरः पौरस्त्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = कूपस्य द्वितीयतीरमिति-भावः । गत्वा एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान्विशालः खलु हे देवानुप्रिय !

देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तएणं से ददुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढित्ता एवं वयासी, ए महालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएणं से समुद्दे) हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र तो बहुत बड़ा है । इस बात को सुनकर उस कूप मेढक ने अपने पैर से एक रेखा खेंची और खेंचकर बोला हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र इतना भारी विशाल है । प्रत्युत्तर में उस समुद्रवासी मेंढक ने उस कूप मेंढक से कहा-नहीं वह इतना बड़ा नहीं है-वह तो इस से भी अधिक बड़ा है अर्थात् रेखा से निर्दिष्ट जो विस्तार है वह समुद्र के विस्तार को बतलाने में समर्थ नही हो सकता है-उस का विस्तार तो क्या कहे-बहुत ही अधिक है । (तएणं से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी ए महालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे) समुद्रवासी मेंढक की बात सुनकर वह कूप मेंढक अपने अग्रवर्ती तीर से कूए के दूसरे तीर पर उछल गया-वहां

पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढित्ता एवं वयासी ए महालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएणं से समुद्दे)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો બહુ વિશાળ છે.

આ વાત સાંભળીને કૂવાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતાં પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અંકિત કરવામાં અશક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે.

(तएणं से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ गच्छित्ता एवं वयासी, ए महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स समुद्रः ?, एवं कूपमण्डूकस्य वचः श्रुत्वा समुद्रमण्डूकः पुनराह-' नायमर्थः समर्थः, इति दर्शनादेव समुद्रस्य महत्त्वं ज्ञातं भवति नतु तत् कथमपि निर्देष्टुं वक्तुं च शक्यं केनापीति भावः । तथैव=यथा स कूपमण्डूकस्तद्वदेव, एवमेव = उक्त प्रकारेणैव, त्वमपि हे जितशत्रो ! अन्येषां बहूनां राजेश्वर-यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां भार्यां वा भगिनीं वा दुहितरं वा स्नुषां वा अपश्यन् जानासि-यादृशं ममैव खलु अवरोधः =अन्तःपुरं, तादृशं नो अन्यस्य ।

जाकर कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हारे द्वारा निर्दिष्ट वह समुद्र क्या इतना बड़ा है ? इस प्रकार कूप मेंढ़क के वचन सुन कर उस सामुद्रिक मेंढ़क ने कहा-

भाई क्या बतलावें देखने से ही उस की महत्ता ज्ञात हो सकती है । यह कहने की और निर्दिष्ट करने की बात नही हैं । उस का निर्देश और कथन तो कोई कर ही नहीं सकता है । (तहेव एवामेव तुमंपि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणेसि-जारिसए मम चेव-णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स) इसी तरह हे जितशत्रो ! तुमने भी कभी और किसी राजेश्वर आदि सार्थवाह प्रभृतियों की भार्या को, भगिनी को, दुहिता को, स्नुषा को देखा नहीं है-इसीलिये ऐसा मान रहे हो कि जैसा अन्तः पुर हमारा हैं-वैसा और किसी का कहीं पर

સમુદ્રમાં રહેનારા દેડકાની વાત સાંભળીને તે કૂવાનો દેડકો પોતે જ્યાં બેઠો હતો તે કૂવાના કિનારા ઉપરથી કૂવાના બીજા કિનારા ઉપર કૂદી ગયો અને ત્યાં જઈને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જે સમુદ્રની વાત કરો છો તે શું આટલો મોટો છે ? આ રીતે કૂવાના દેડકાની વાત સાંભળીને સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું—

બાઇ શું કહીએ ? સમુદ્રને જોવાથી જ તેની વિશાળતાનું જ્ઞાન થઈ શકે તેમ છે.મુખેથી કહેવાની અને લીટીઓ વગેરેથી નિર્દેષ તો થઇ શકે તેમજ બનતું નથી.

(तहेव एवामेव तुमंपि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूणं राई सरजाव सत्थवाह पभिईणं भज्जंवा भगिणीं वा धूयं वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओराहे तारिसए णो अण्णस्स)

આ પ્રમાણે જ હે જિતશત્રો ! તમે પણ કોઇ દિવસ બીજા કોઈ રાજેશ્વર વગેરે તેમજ સાર્થવાહ વગેરેની સ્ત્રીઓને, બહેનને, દુહિતાને, સ્નુષા (પુત્રની વહુ) ને જોઇ નથી. એટલે જ તમે આમ માનો છો કે મારા જેવો રણવાસ બીજે ક્યાંય હોય જ નહિ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदेवं खलु हे जितशत्रो ! मिथिलायां नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञो दुहिता=पुत्री, प्रभावत्या आत्मजा=भङ्गजाता मल्ली नाम इति, रूपेण=सुन्दराकृत्या च यौवनेन च यावत् नो खलु अन्या कापि देवकन्या वा तादृशी विद्यते, यादृशी मल्ली। मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाच्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठस्यायं तवावरोधः शतसहस्रतमामपि कलां=लक्षांशमपि नार्हति ' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, सा चोक्षा परिव्राजिका यस्या दिशः प्रादुर्भूता, तामेव दिशं प्रतिगता। ततः खलु स जितशत्रुः परिव्रा-

भी नहीं है। (तं एवं खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामंति-रूवेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली) इसलिये हे जितशत्रो! सुनो- मिथिला नगरी में कुंभक राजा की पुत्री जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है मल्ली कुमारी है। वह रूप और यौवन से इतनी अधिक सुन्दरी है कि उस के समक्ष ऐसी कोई देव कन्या आदि कोई भी कन्या सुन्दरी नहीं है-(मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठस्स इमे तवारोहे सयसहस्सतमंपि कलं न अग्घइ, त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया तएणं से जियसत्तू परिव्वाइया जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए) उस विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के कटे हुए पादांगुष्ठ के एक लाख वें अंश बराबर २ भी यह आपका अवरोध अन्तपुर नहीं है।

इस प्रकार कहकर वह चोक्षा परिव्राजिका जिस दिशा से आई

(तं एवं खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामंति रूवेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली)

એટલા માટે હે જીતશત્રો ! સાંભળો, મિથિલા નગરીમાં પ્રભાવતીના ગર્ભથી જન્મેલી કુંભક રાજાની પુત્રી મલ્લીકુમારી પોતાના રૂપ અને યૌવનથી એટલી બધી સુંદરી છે કે તેની સામે તો દેવકન્યા પણ કંઈ જ નથી.

(मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठस्स इमे तवारोहे सयसहस्सतमं पि कलं न अग्घइ, त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया तएणं से जियसत्तू ! परिव्वाइया जणियहासे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए)

વિદેહ રાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારીના કપાએલા અંગૂઠાના એક લાખમા ભાગ બરાબર પણ આ તમારો અવરોધજન (રણવાસ) નથી.

આ પ્રમાણે કહીને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા જે દિશાથી આવી હતી તે દિશા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिका जनितहर्षः = चोक्षा परिव्राजिका वचनश्रवणानन्तरसंजातमल्लीविषयकानुरागः, दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा 'जाव पहारेत्थ गमणाए' यावत्–मिथिलां गन्तुमादिष्टवान् ततः स दूतस्तदाज्ञानुसारेण प्राधारयद् गमनाय मिथिलां गन्तु प्रवृत्तः। इति षण्णामपि राज्ञां सम्बन्धः पृथक् २ प्रोक्तः ॥ सू० ३१ ॥

मूलम्–तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं छप्पियदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छिंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं२ खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता मिहिलं रायहाणिं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं२ राईणं वयणाइं निवेदेंति, तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं

थी उसी दिशा तरफ वापिस चली गई। चोक्षा परिव्राजिका के वचन सुनने के बाद जिसे मल्ली कुमारी के विषय में अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस जितशत्रु राजा ने दूत को बुलाया–और उस से मिथिला जाने के लिये कहा–वह दूत भी अपने राजा की आज्ञानुसार मिथिला नगरी तरफ जाने के लिये वहां रवानो हो गया। सूत्र " ३१ "

તરફ પાછી જતી રહી. ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાના મોંથી મલ્લીકુમારીના સૌંદર્ય વિશે પ્રશંસાજનક શબ્દો સાંભળીને જેના મનમાં તેના માટે અનુરાગ ઉત્પન્ન થયો છે એવા તે જિતશત્રુ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો અને તેને મિથિલા જવા માટે આજ્ઞા કરી. દૂત પોતાના રાજાના હુકમ પ્રમાણે મિથિલા નગરી તરફ જવા ઉપડી ગયો. ॥ સૂત્ર " ૩૧ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिउंडि एवं वयासी–न देमिणं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहरायवरकण्णं तिकट्टु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइं२ णगराइं जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल परि० एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, तं ण देइणं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदेंति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति, करित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता पहाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं२ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलायित्ता जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—' तएणं तेसिं ' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ' प्राधारयद् गमनाय ' गन्तुमुद्यताः। ततः खलु षडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छंति, उपागत्य मिथिलाया ' अग्गुज्जाणंसि ' अग्रोद्यानेप्रधानोद्याने, प्रत्येकं २ 'खंधावारनिवेसं ' स्कन्धावारनिवेशं=शिबिरस्य ' छावनी ' इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेशं स्थापनं कुर्वन्ति, कृत्वा, मिथिलां राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

' तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं ' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं) उन जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं के (दूया) दूत (जेणेव मिहिला) जहां वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएणं छप्पियदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति) चलते २ वे छहों ही दूत एक ही साथ जहां मिथिला नगरी थी वहां आये। (उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता मिहिलं रायहाणिं अणुपविसंति) वहां आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी। छावनी डालकर फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया–(अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए

तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારપછી (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं) જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના (दूया) દૂતો (जेणेव मिहिला) જ્યાં મિથિલા નગરી હતી (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) તે તરફ પોતપોતાના સ્થાનેથી ઉપડી ગયા. (तएणं छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति) તે છએ દૂતો ચાલતા ચાલતા એકી સાથે જ જ્યાં મિથિલા નગરી હતી ત્યાં આવી પહોંચ્યા.

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावार निवेसं करेंति, करित्ता मिहिलं रायहाणिं अणुपविसंति)

ત્યાં પહોંચીને બધાએ મિથિલા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમાં પોતપોતાનો પડાવ નાખ્યો. પડાવ નાખીને તેઓ મિથિલા નગરીમાં ગયા. (अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति) અને જ્યાં કુંભક રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येकं २ करतल परिगृहीतं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा स्वेषां स्वेषां राज्ञां 'वयणाइं' वचनानि=कथनानि निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो मल्लीं ऊछन्ति' इत्येतद्रूपं वृत्तान्तं श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः, यावत्- त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रुकुटिं=भ्रुवः कौटिल्यं ललाटे कुर्वन् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्= हे दूताः 'नो दास्यामि खलु अहं युष्माकं राजभ्यो मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् षडपि दूतान् असत्कृत्य,

तेणेव उवागच्छंति) प्रवेश कर जहां कुंभक राजा थे-वहां आये (उवागच्छित्ता पत्तेयं २ करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति) वहां आकर उन सबोंने भिन्न २ रूप से कुंभक राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्हों ने क्रमशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी) जितशत्रु प्रमुख छहों ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर वह कुंभक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी त्रिवलियुक्त भ्रकुटि मस्तक पर चढ गई।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि णं अहं तुब्भं मल्ली विदेह रायवरकण्णं त्ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्का-

(उवागच्छित्ता पत्तेयं २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति)

ત્યાં જઈને તેઓ બધાએ જુદા જુદા રૂપમાં કુંભક રાજાને બંને હાથની અંજલિ બતાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને નમસ્કાર કરીને તેઓએ વારાફરતી પોતપોતાના રાજાનો સંદેશો તેમને કહી સંભળાવ્યો.

(तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्तेजाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારીને ચાહે છે આ જાતનો સંદેશ દૂતોના મોંથી સાંભળીને કુંભક રાજા એકદમ ગુસ્સે થઈ ગયા અને ત્રણે રેખાઓવાળી તેમની ભ્રકુટી ભમરો વક્ર થઈ ગઈ.

ક્રોધના આવેશમાં રાજાએ તે દૂતોને કહી સંભળાવ્યું કે—

(न देमि णं अहं तुब्भं मल्ली विदेहरायवर कण्णं त्ति कट्टु ते छप्पिदूए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असमान्य, च 'अवद्दारेणं' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां दूताः कुम्भकेन राज्ञा, असत्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदाः = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छंति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः – हे स्वामिन्!

रिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ) हे दूतों! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नही दूंगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतों का न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकालदिया। (तएणं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइं२ णगराइं जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छंति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुंभक राजा से असत्कृत एवं असंमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहां से प्रस्थित होकर जहां अपना २ जनपद था, वहां अपने २ नगर थे, और उन में भी जहां अपने २ राजा थे वहां आ गये।

असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ)

" હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજાઓને આપીશ નહિ. " આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો કોઈ પણ રૂપમાં સત્કાર અને સન્માન ન કરતાં તેઓને પોતાના મહેલના પાછળના નાના બારણેથી બહાર કાઢી મૂક્યા.

(तएणं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइं २ णगराइं जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુંભકરાજા વડે અસત્કૃત અને અસંમાનિત થતાં જ્યારે મહેલના પાછલા બારણેથી બહાર કાઢી મૂકવામાં આવ્યા ત્યારે તેઓ ત્યાંથી રવાના થઈને જ્યાં તેમનો જનપદ (દેશ) હતો, જ્યાં તેમનું નગર હતું અને તેમાં પણ જ્યાં તેમના રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं खलु वयं जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां दूताः 'जमगसमगं' युगपत् = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् – तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां राज्ञां वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्रं क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्याम्यहं मल्ली' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासंमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेइ' निःसारयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः। तत=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन्! कुम्भको मल्लीं विदेह राजवरकन्याम् इत्युक्त्वा षडपि दूताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतमुक्तमर्थं निवेदयन्ति कथयन्तिस्म।

(उवागच्छित्ता करयलपरि० एवं वयासी) वहां आकर उन्होंने उन्हें दोनों हाथों की अंजलि बनाकर नमस्कार किया (एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ) हे स्वामिन्! हम सब जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहां मिथिला नगरी थी–वहां पहुँचे–वहां पहुँचकर कुंभक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये वहां जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें कहकर सुनाये सुनते ही वे कुंभक राजा क्रोध से भर गये–और कहने लगे–हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देंगे ऐसा कहते हुए उन्हों ने बाद में हमलोगों को असत्कृत एवं असंमानित कर अपने महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया।

(उवागच्छित्ता करयल परि०" एवं वयासी) त्यां आवीने तेमणे बंने हाथोनी अंजली बतावीने नमन कर्यां.

(एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ)

अने कहुं के स्वामिन्! अमे बधा जितशत्रु प्रमुख छओ छ राजाओना दूतो एक ज समयमां ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां पहोंच्या, त्यां पहोंचीने कुंभकराजाना दर्शन माटे अमे राजमहेलमां गया. त्यां पहोंचीने अमे लोकोओ विनयनी साथे पोतपोताना राजाओनो संदेश तेमने कही संभळाव्यो. कुंभकराजा ते संदेशाओने सांभळतां ज गुस्से थई गया अने कहेवा लाग्या के हुं मारी पुत्री मल्लीकुमारी कोईने य आपीश नहि. आम कहेतां तेमणे अमने असत्कृत तेमज असंमानित करीने पोताना महेलना पाछळना नाना बारणांथी बहार काढी मूक्या.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य निशम्य=अर्थमवगम्य' आशुरुषाः=शीघ्रं क्रोधाविष्टाः ' अण्णमण्णस्स ' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंप्रेषणं कुर्वन्ति, कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः—हे देवानुप्रिया ! एवं खलु अस्माकं षण्णां राज्ञां दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासंमान्यापद्वारेण ' णिच्छूढा ' निक्षिप्ताः= निः

(तं ण देइणं सामी ! कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं साणं २ राइणं एयमट्ठं नि वेदेंति) अतः हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझें—कुंभकराजा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देना है। ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजाओं के समक्ष की। (तएणं से जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव णिच्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समचार कहलवाये—हे देवानुप्रियों ! देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुंभक राजा के पास

(तं ण देइणं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदेंति)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમે ચોક્કસપણે આ જાણીલો કે કુંભક પોતાની વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી આપશે નહિ આ પ્રમાણે કહીને છએ દૂતોએ પોતપોતાના રાજાઓની સામે પોતાના મતની પુષ્ટિ કરી.

(तएणं से जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एवमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्ण मण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति)

ત્યારબાદ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ દૂતોના મુખેથી આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને અને તેને બરોબર સમજીને ગુસ્સે થયા અને પોતપોતાના દૂતોને એક બીજા રાજાની પાસે મોકલ્યા.

(करित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं राईणं दूया जमगसमगंचेव जाव णिच्छूढा)

તેઓએ તે દૂતોની સાથે આ જાતનો સંદેશ મોકલ્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણા છએ રાજાઓના દૂતો એકી વખતે કુંભકરાજાની પાસે ગયા. ત્યાં તેણે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारिताः । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाः ! अस्माकं कुम्भकाय कुम्भक-राजयाय 'जत्तं' यात्रां=युद्धयात्रां ग्रहीतुं=स्वीकर्तुं श्रेय इति पूर्वसम्बन्धः । इति कृत्वा=इति परामृश्य-विचार्य, परस्परस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति, प्रति-श्रुत्य, ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः स्नाताः सन्नद्धाः=युद्धोपकरण-कवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीराः, हस्तिस्कन्धवरगताः=गजोपरिसमारूढाः, 'सकोरंट

पहुँचे-वहां उसने हमलोगों के दूतों का कोई भी सत्कार और सन्मान नहीं किया-किन्तु उन्हें अपमानित कर अपने महल के पिछले छोटे दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया-(तं) अतः-(सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्सजत्तं गेण्हित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडि-सुणेंति, पडिसुणित्ता, ण्हाया, सण्णद्धा हत्थिकंधवरगया सकोरंटमल्ल दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उद्धुयमाणाहिं सेयवरचामराहिं महया हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्वि-ड्ढीए जाव निग्गच्छंति) हम लोगोंका अब यही कर्तव्य श्रेयस्कर है कि हम लोग कुम्भक राजा को पराजित करने के लिये उन पर चढाइ कर दें ।

इस प्रकार का जब उन सब का परामर्श हो चुका तब सब ने एक मत हो इस बात को मान लिया । मन लेने के बाद वे जितशत्रु प्रमुख सब ही राजा नहा धोकर युद्धोपकरणों से सुसज्जित हो गये । और हाथियों के स्कंधों पर आरूढ होकर महान २ हयों से-गजों से रथों से

આપણા દૂતોનો સત્કાર કે સન્માન કંઈજ કર્યું નથી, અને તેમને અપમાનિત કરીને પોતાના મહેલના પાછલા નાના બારણેથી બહાર કાઢી મુકાવ્યા છે (तं) એથી

(सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्ण मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति,पडिसुणित्ता, ण्हाया सण्णद्धा, हत्थिकंधवरगया सको-रटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उद्धुयमाणाहिं सेयवरचामराहिं महया हय-गयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति)

હવે અમારા માટે એક જ કર્તવ્ય શ્રેયસ્કર લાગે છે કે અમે કુંભક રાજાને હરાવવા માટે તેમના ઉપર આક્રમણ કરીએ.

જ્યારે આ પ્રમાણે બધાએ વિચાર કર્યો ત્યારે સહુએ એકમત થઈને આ નિર્ણય સ્વીકારી લીધો. ત્યારપછી જીતશત્રુ પ્રમુખ બધા રાજાઓ સ્નાન કરીને યુદ્ધ માટેનાં બધાં સાધનોથી સુસજ્જ થઈ ગયા અને તેઓ બધા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्लदामेणं ' सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्ट पुष्पमाल्यदामयुक्तेन ' छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं' छत्रेण ध्रियमाणेन स्वस्वभृत्येन उद्धूयमानैः श्वेतवरचामरैश्चयुक्ताः, ' महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए ' महाहयगजरथप्रवरयोधकलितया=महान्तश्च हयगजरथप्रवरयोधाश्चेति समाहारद्वन्द्वः महाहयगजरथप्रवरयोधं, सेनाङ्गत्वादेकवद्भावः, तेन कलितया = युक्तया, अतएव-चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरि कृताः ' सव्विड्ढीए' सर्वद्धर्या = राजचिह्नादि रूपया युक्तः यावद्--रवेण = युद्धोत्साहवर्धकतुर्यादि शब्देन स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यो यावद् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य, एकतः एकत्र-एकस्मिन् स्थाने मिलन्ति, मिलित्वा ते जितशत्रुप्रमुखाःषडपि राजानो यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयन् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३२ ॥

प्रवर योधाओंसे कलित चतुरंगिणी सेना को साथ लेकर अपने २ नगरों से बाहिर निकले। हाथी पर जब ये राजा जन बैठे हुए थे उस समय इन के ऊपर छत्र धारी भृत्यों ने कोरंटक पुष्प माल्य दाम से युक्त छत्र ताना हुआ था। चामर ढोरने वाले भृत्यजन उस समय इन के ऊपर श्वेतवर चामर ढोर रहे थे। ये समस्त राजाजन राज्यार्थ आह्लाद जनक रूप सर्वर्द्धि से युक्त होकर ही उत्साह वर्धक तुर्यादि के शब्दों द्वारा संस्तुत होते हुए-अपने २ नगरों से निकले थे। (निग्गच्छित्ता एगयाओ मिलायंति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए) निकल कर ये सब एक स्थान पर मिल गये। मिलनेके बाद ये सब जितशत्रु प्रमुख-छहों राजा फिर वहांसे मिथिला नगरीकी ओर चल दिये ।सू.३२।

હાથીઓના ઉપર સવાર થઇને મોટા ઘોડાઓ, હાથીઓ, રથો અને બહાદુર યોદ્ધાઓની ચતુરંગિણી સેના સાથે લઇને પોતપોતાના નગરની બહાર નીકળ્યા. હાથીઓ ઉપર જ્યારે બધા રાજાઓ બેઠા હતા તે વખતે છત્રધારી ભૃત્યોએ તેમના ઉપર કોરંટક પુષ્પમાલ્ય દામવાળું છત્ર ધર્યું હતું. ચામર ઢોળનારા ભૃત્યજનો તે સમયે તેમના ઉપર સફેદ ચામરો ઢોળતા હતા. તે બધા રાજાઓ રાજ્યાર્થ આહ્લાદિરૂપ સર્વર્દ્ધિયુક્ત થઇને ઉત્સાહ વધારનાર તુર્યાદિના શબ્દો વડે સંસ્તુત થતા પોતપોતાના નગરોથી બહાર નીકળ્યા હતા.

(निग्गच्छित्ता एगयाओ मिलायंति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

બહાર નીકળીને તેઓ બધા એક સ્થાને એકઠા થયા. એકઠા થઇને તેઓ બધા જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ ત્યાંથી મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયા.॥સૂ૦૩૨॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव० हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरंट० सेयवरचामराहिं० महया मिहिलं मज्झंमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावरनिवेसं करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ. तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएणं रन्ना संद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडिसेहिंति, तएणं से कुंभए जियसत्तूपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमितिकट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिलातेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—' तएणं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स कुम्भको राजाऽभ्याः

'तएणं से कुंभए राया ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं इसके बाद (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

तएणं से कुंभएराया इत्यादि ।।

टीकार्थ–(त एणं) त्यार पछी (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कथाया लब्धार्थः= ज्ञातार्थः सन् 'बलवाउयं' बलव्यापृतं=सैन्यव्यापारपरायणं= सैन्यनायकमित्यर्थः, शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत् भो देवानुप्रिय ! क्षिप्रमेव 'हयजाव सेण्णं' हय०यावत्-सैन्यं-हयगजरथप्रवरयोधकलितं चतुरङ्गयुक्तं सैन्यं 'सन्नाहेह' संनाहय=सन्नद्धं कुरु-सज्जीकुर्वित्यर्थः। यावत् प्रत्यर्पयति, ततोऽसौ सेनापतिः सैन्यं सज्जीकृत्य, कुम्भकं राजानं निवेदयति-हे स्वामिन् ! सैन्यमस्माभिः सन्नद्धीकृतमिति। ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा स्नातः सन्नद्धः = युद्धोपकरणशस्त्रास्त्रकवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीरः हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टपुष्परचितमालायुक्तेन छत्रेण स्वभृत्येन

वाउयं सद्दावेइ) कुंभक राजा को जब यह पता चला-तब उस ने अपने सेना नायकको बुलाया-(सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह) भो देवानुप्रिय ! तुम जल्दी से जल्दी हय-गज-रथ एवं प्रवर योधाओं से युक्त चतुरंगिणी सेना को सजाओ। और इस की हमे पीछे आकर खबर दो-सेना नायक ने ऐसा ही किया-सेना सजा कर राजा को खबर दी कि हे स्वामिन् ! हमने आप की आज्ञानुसार सैन्य सज्जित कर दिया है। (तएणं कुंभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खंध० सकोरंट० सेयवर चामराहिं महया मिहिलं मज्झं मज्झेणं णिज्जाइ) इस के बाद कुंभक राजा ने स्नान कर अपने शरीर को युद्धोपकरणों से-शस्त्र अस्त्र एवं कवचादि के धारण से-सज्जित किया। बाद में हाथी के स्कंध पर

वाउयं सद्दावेइ) કુંભક રાજાને જ્યારે આ વાતની જાણ થઇ ત્યારે તેણે પોતાના સેનાપતિને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યું—

(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે ઘોડા, હાથી, રથ અને બહાદુર યોદ્ધાઓવાળી ચતુરંગિણી સેના તૈયાર કરો અને અમને ખબર આપો. સેનાપતિએ પોતાનું કામ પુરૂ કર્યું, અને રાજાને સૂચના આપી કે હે સ્વામિન્ ! તમારી આજ્ઞા પ્રમાણે અમે સેના તૈયાર કરી દીધી છે.

(तएणं कुंभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खंध० सकोरंट० सेयवरचामराहिं महया मिहिलं, मज्झं मज्झेणं णिज्जाइ)

ત્યારબાદ કુંભક રાજાએ સ્નાન કર્યું અને પછી પોતાના શરીરને યુદ્ધના સાધનોથી સુસજ્જ કર્યું. એટલે કે રાજાએ શસ્ત્ર, અસ્ત્ર, કવચ વગેરે ધારણ કર્યાં. તેઓ હાથીની ઉપર સવાર થયા, રાજાને હાથી ઉપર સવાર થયેલા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घ्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=वीज्यमानैः श्वेतवरचामरैर्युक्तः तथा-महाहयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया संपरिवृतः, सर्वद्धर्या संपन्नः तूरीभेर्यादिवाद्यमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमध्येन ' णिज्जाइ ' निर्याति=निर्गच्छति । निर्गत्य विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' खंधावारनिवेसं ' स्कन्धावारनिवेशं=स्कन्धावारस्य शिबिरस्य ' छावनी ' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेशं-स्थापनं, कुर्वन्ति । कृत्वा स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धसज्जः युद्धाय सज्जः शस्त्रास्त्रकवचबन्धेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रतितिष्ठति । ततस्तदनन्तरं

विराजमान हो गये । उन के बैठते ही। छत्र धारियों ने उन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र धारण किया चमर ढोर ने वालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारंभ कर दिया । इस प्रकार महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरंगिणी सेना से घिरे हुए अपनी पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले । (णिगच्छित्ता विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ) निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहां अपने देश की सीमा थी वहां पहुँचे ।

(उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसं करेइ) वहा पहुँच कर उन्होंने वहीं अपनी छावनी स्थापित कर दी-(करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

લેઈને છત્રધારીઓએ કોરંટ પુષ્પોની માળાથી શોભતું છત્ર ધર્યું. ચામર ઢોળનાર ભૃત્યોએ ચામરો ઢોળવાનું શરૂ કર્યું. આ રીતે મહાગજ હય રથ વગેરે તેમજ ચતુરંગિણી સેના યુક્ત થઈને પોતાની પૂરી તૈયારી સાથે મિથિલા નગરીની વચ્ચેના રાજમાર્ગ ઉપરથી બહાર નીકળ્યા.

(णिगच्छित्ता विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને વિદેહ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાના દેશની હદ હતી ત્યાં પહોંચ્યા. उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसं करेइ) ત્યાં પહોંચીને તેઓએ ત્યાં જ સેનાની છાવણી નાખી (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ)

ત્યારબાદ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓની પ્રતીક્ષા કરતાં તેઓ ત્યાંજ યુદ્ધને માટે કમ્મર કસીને રોકાયા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं ' संपलग्गा ' संप्रलग्नाः–युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः कुम्भकं राजानं ' हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचिंधद्धयछत्तपडागं ' हतमथितप्रवरवीरघातित–निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकं–हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिताः–ताडिताः. तथा घातिताः घातम् आघातं व्यथां प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटाः, यस्य स हतमथितप्रवरवीरघातितः, आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजछत्रपताकः, ततः कर्मधारयः, तमेवंभूतं नष्टसैन्यध्वजपताकमित्यर्थः ' किच्छप्पाणोवगयं ' कृच्छ्रप्राणोपगतं–कृच्छ्रे–कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति) इतने में वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा जहां वे कुंभक राजा पहुँचे हुए थे–वहां आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुंभकराजा के साथ युद्ध करना प्रारंभ कर दिया । (तएणं ते जियसत्तू पमोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीर घाइयनिवडियचिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडि सेहिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने कुंभकराजा के कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बूरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज–पताका एव छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति) એટલામાં તેઓ છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં કુંભકરાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યા.

(उवागच्छित्ता कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) અને તેઓએ તરત જ યુદ્ધ શરૂ કરી દીધું.

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो कुंभयं रायं हयमहिय पवरवीर घाइय निविडिय चिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति) યુદ્ધમાં તેઓ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ કુંભક રાજાના કેટલાક વીરોને જાનથી મારી નાખ્યા, કેટલાક વીરોને ભયંકર રીતે ટીપી નાખ્યા, અને કેટલાક વીરોને જખમી બનાવી દીધા તેમજ રાજ ચિહ્ન રૂપ ધ્વજ–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपगता यस्य स कुच्छ्रप्राणोपगतस्तं प्राणसंकटापन्नम् ' दिशः दिशं '=एकस्या दिशः-अपरां दिशं-' पडिसेहेंति ' प्रतिषेधयंति=निवारयन्ति ततस्तदनन्तरं खलु स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्हतमथित-यावत् प्रवरवीरघातित चिह्नध्वजछत्रपताकः कुच्छ्रप्राणोपगतः प्रतिषिद्धः सन् अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः अत एव ' अवीरिए '-अवीर्यः=उत्साहरहितः । यावत्-'आधारणिज्जं' अधारणीयम्-आत्माधार्यते स्थाप्यते यत्र तद् धारणीयं, न धारणीयमिति विग्रहः, अधारणीयं परबलम्-अत्र शत्रुसैन्ये ममात्मधारणमशक्यमित्यर्थः। इतिकृत्वा-एवं विचार्य, शीघ्रं त्वरितं यावत् चलितं वेगितं यत्रैव मिथिला तत्रैवो-

प्राण बहुत अधिक संकट में पड़ गये । वह वहां से दूसरी तरफ भागना भी चाहता था-तो भी उन्हों ने उसे दूसरी ओर भागने नहीं दिया। (तएणं से कुंभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्तिकट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ) इस तरह जितशत्रु आदि छहों राजाओ से हत मथित तथा धातित प्रवरवीरवाला और निपातित चिह्न ध्वज पताका वाला वह कुंभक राजा जब संकट युक्त प्राणोंवाला बन गया और युद्धभूमि से दूसरी ओर भागने के लिये असमर्थ हो गया तब आत्मबल और सैन्यबल से रहित बना हुआ वह उत्साह रहित हो गया। एवं परबल को अजेय मान कर वहां से शीघ्र ही त्वरा युक्त, वेगयुक्त चाल से जहां मिथिला नगर थी उस तरफ आया।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધાં. આ રીતે તેના પ્રાણ આફતમાં ફસાઇ ગયા. ત્યાંથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ.

(तएणं से कुंभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव महिला तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જીતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હત, મથિત તેમજ ઘાતિત યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજા પતાકાવાળા તે કુંભક રાજાના પ્રાણ પણ જ્યારે આફતમાં ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાંથી નાસી જવાની પણ તક ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મબળ અને સૈન્યબળ વગર બનેલા તેઓ સાવ નિરુત્સાહી થઇ ગયા. આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ઝડપભેર ચાલથી જ્યાં મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि 'पिहेइ' पिदधाति=आवृणोति । पिधाय 'रोहसज्जे' रोधसज्जः=रोधेन शत्रुभयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्जः=रक्षां कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्—तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति, तएणं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणिय छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहिं आएहिं य उवाएहिं य उप्पत्तियाहि य वेणइयाए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणे२ किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ । इमं च णं मल्लीं विदेहरायवरकन्नं ण्हायं जाव बहूहिं खुज्जाहिं संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ । तएणं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ । तएणं

वहां आते ही वह मिथिला नगरी में प्रविष्ट हो गया । (अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो गया ॥ सूत्र ३३ ॥

ત્યાં આવતાં જ મિથિલા નગરીમાં તેઓ પ્રવિષ્ટ થયા

(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)

પ્રવેશીને તેમણે મિથિલાના દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા અને શત્રુની બીકથી આવવા જવાના માર્ગોને પણ રોકીને પોતાની રક્ષા માટે તેઓ તત્પર થઈ ગયા. ॥ સૂત્ર " ૩૩ "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्ली विदेहरायवरकन्नाकुंभगं एवं वयासी-तुब्भेणं ताओ अण्णदा ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भं अज्ज ओहय मण संकप्पे जाव झियायह ?, तएणं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति। तएणं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि४ अलभमाणे जाव झियामि, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभयं रायं एवं वयासी-माणं तुब्भं ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भेणं ताओ तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं रहसियं दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वदह-तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्णं तिकट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणुसंसि निसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुंभए एवं० तं चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु जियशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलां राजधानीं

'तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यार बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' णिस्संचारं' निः संचारं=यथा जनानां प्रवेशनिर्गमरूपः संचारस्तत्र न स्यात् तथा, ' णिरुच्चारं ' निरुच्चारं-उत्-ऊर्ध्वं चरणं=प्राकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूपं जनानां यथा न भवेत् तथा, इदं दूयं क्रिया विशेषणं यद्वा-निरुच्चारम्-उच्चारः पुरीषं तद्विसर्गार्थं यज्जनानां बहिर्गमनं तद्रहितं यथा स्यात् तथा, सर्वतः सर्वदिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ' ओरुंभित्ताणं ' अवरुध्य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तरं खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवरुद्धां ज्ञात्वा ' अब्भंतरियाए ' आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरवर्तिन्याम् उपस्थानशालायाम्-आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थः, सिंहासनवरगतः-राज्ञः प्रधानासनसमुपविष्टः, तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि, विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपरः, अलभ-

मिहिला-तेणेव उवागच्छंति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे (उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति) वहां आकर उन्हों ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहां तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति कारण सर भी बाहर नही निकल सका (तएणं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए) इस के अनन्तर कुंभक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तब किले की भीतर रहे हुए सभामंडप में स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ મિથિલા નગરી તરફ વધ્યા.

(उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति)

ત્યાં મિથિલા નગરીની પાસે આવીને ચોમેર તેઓએ ઘેરો નાખ્યો. આ રીતે માણસોની અવર જવર સદંતર બંધ થઈ ગઈ.

तएणं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए)

ત્યારબાદ જ્યારે કુંભક રાજાએ પોતાની રાજધાની મિથિલા નગરીને શત્રુઓ વડે ઘેરાએલી જોઈ ત્યારે તેઓ કિલ્લાની અંદર સભામંડપમાં સિંહાસન ઉપર બેસીને

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानः=अप्राप्नुवन्, बहुभिः=, आयैः=इष्टसिद्धिउपायैः–साधनैश्च ' उप्पत्तियाहि ' औत्पत्तिकाभिः=स्वाभाविकीभिः–शास्त्राभ्यासेन विनैव समुत्पन्नाभिरित्यर्थः, ' वेणइयाहि ' वैनयिकीभिः=विनयतः प्राप्ताभिः, ' कम्मयाहि ' कार्मिकाभिः=अभ्यास लब्धाभिश्च अत्रापि चकारा वाक्यालङ्कार बोधकाः, बुद्धिभिः ' परिणामेमाणे २ ' परिणमयन परिणमनकुर्वन्–अमात्यैः सह विचारयन्नित्यर्थः, कमपि आयं वा उपायं वा अलभमानः ' ओहयमणसंकप्पे ' अपहतमनः संकल्पः=विध्वस्तमनोरथः सन् यावत् ' झियायइ ' ध्यायति=आर्तध्यानं कुर्वन्नास्तेस्म ।

जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अवसरों को, दूषणों को विवरों को.... ....एवं गुप्तदोषों को देखने की ताक में रहने लगा–परन्तु जब अपने इन शत्रुओं के उसे अवसर दूषण आदि देखने में नहीं आये तब उसने बहूहिं, आयेहिं य, उवाएहिं य, उप्पत्तियाहिं य, वेणइयाहि य, कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणे २) अनेकविध इष्ट सिद्धिकारक उपायों से उन्हें परास्त करने की बात सोची तथा औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी एवं परिणामि की बुद्धियों से मंत्रियों के साथ बैठकर बार २ इस बात का विचार भी किया परन्तु इस स्थिति में उसे (किं चि आयं वा उवायं वा अलभमाणे) जब इष्ट सिद्धिकारक कोई भी उपाय नजर नहीं आया तब वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) अपहत मनः संकल्प होकर अर्तध्यान करने लग गया–

જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના અવસરોને, દૂષણોને, વિવરોને અને ગુહ્ય દોષોને જોવા માટે લાગ જોતા બેસી રહ્યા. પણ જ્યારે આ કામમાં પણ તે સફળ થઈ શકયા નહિ એટલે કે શત્રુ પક્ષના દૂષણો વગેરે તે જાણી શકયા નહિ ત્યારે તેમણે

(बहूहिं, आएहिं य उवाएहिं य उप्पत्तियाहिय, वेणइयाहिय, कम्मयाहिय, परिणामियाहिय, बुद्धीहिं परिणामे माणे २)

જાતજાતના ઈષ્ટ સિદ્ધિ કરનારા ઉપાયોથી તેઓને હરાવવાની વાત ઉપર વિચાર કર્યો, તેમજ ઔત્પાતિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પારિણામિકી બુદ્ધિઓથી મંત્રીઓની સાથે બેસીને વારંવાર આ સમસ્યા ઉપર મંત્રણા પણ કરી પણ એવી ગંભીર હાલતમાં તેઓને (किं चि आयं वा उवायं वा अलभमाणे

જ્યારે ઈષ્ટ સિદ્ધિ માટેનો કોઇ પણ ઉપાય જણાયો નહિ ત્યારે (ओहयमण संकप्पे जाव झियायइ) દુઃખી થઇને આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'इमं च णं' अस्मिन् काले खलु, अत्रार्षत्वात्सप्तम्यर्थे द्वितीया मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावद् बहीभिः 'खुज्जाहिं' कुब्जाभिः=वक्रसंस्थानाभिर्दासीभिः संपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज्ञः पादग्रहणं – चरणस्पर्शपूर्वकं नमनं करोति । ततस्तदनन्तरं खलु कुम्भको राजा मल्लीं विदेहराजवरकन्यां 'णो आढाइ' नो आद्रियते नो परिजानाति, 'मल्ली समागता' इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहितः संतिष्ठतेस्म । ततस्तदन्तरं

दुःखित होने लगा (इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना, ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणों से अलंकृत शरीर होकर अनेक वक्र संस्थान वाली दासियोंके साथ जहां कुंभकराजा थे वहां आई । (उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ) आकर उसने अपने पिता कुंभक राजा के चरणों में नमे (तएणं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुंभक राजा ने कोई आदर नही किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी आई है । केवल वह मौनभाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं एवं वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जावबहूहिं खुज्जाहिं संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ)

આ અરસામાં વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ સ્નાન કર્યું અને ત્યાર પછી વસ્ત્રો, આભરણો તેમજ અલંકારોથી અલંકૃત થઈને ઘણી વક્ર સંસ્થાનવાળી દાસીઓની સાથે કુંભક રાજાની પાસે ગઈ.

(उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ) અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના પિતા કુંભક રાજાના ચરણોમાં નમન કર્યું.

(तएणं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ)

વ્યાકુળ ચિત્તવાળા કુંભક રાજાએ વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનો આદર કર્યો નહિ કે સત્કાર કર્યો નહિ રાજાને તો માત્ર આટલું જ ભાન થયું કે મલ્લીકુમારી આવી છે.

રાજા સાવ મૂંગા થઈને બેસી જ રહ્યા. (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं एवं वयासी) પિતાની આવી હાલત જોઈને વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ તેમને પૂછયું કે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकं राजानमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे तात! यूयं खलु अन्यदा=अन्यस्मिन् समये माम् 'एज्जमाणं' एजमानाम् आगच्छन्तीं यावत्-दृष्ट्वा, आद्रियध्वे, परिजानीथ, उत्सङ्गे 'निवेसेह' निवेशयथ, किं=केन कारणेन खलु यूयमद्योपहतमनः संकल्पो यावत्-ध्यायथ=आर्तध्यानं कुरुथ? ततः मल्लीवचनश्रवणानन्तरं कुम्भको राजा मल्ली विदेहराजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि! एवं खलु तव कार्ये विवाहरूपं कार्यं निमित्तीकृत्येत्यर्थः, जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्दूताः संप्रेषिताः, ते खलु मया 'असत्कारिया' असत्कृताः=अनादृता

को देखकर उस विदेहवरराजकन्या मल्लिकुमारी ने उन से पूछा-(तुब्भे णं ताओ अण्णया ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भं अज्जे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायह) हे तात! पहिले जब कभी आप मुझे आती हुई देखते थे तो उस समय मेरा आदर करते थे-मुझे जानलेते थे, और अपनी गोद में बैठा लेते थे-परन्तु आज क्या कारण है जो आप अपहतमनः संकल्प होकर चिन्ताग्रस्त बैठे हुए है

(तएणं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी) इस प्रकार सुन कर राजाने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी से कहा-(एवं खलुपुत्ता। तव कज्जे जिय सत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया- समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति) हे पुत्रि! तुम्हारे साथ वैवाहिक

(तुब्भे णं ताओ अण्णया ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह किण्णं तुब्भं अज्जे ओहयमण संकप्पे जाव झियायह

હે પિતા! પહેલાં અમે ત્યારે મને આવતી જોતા ત્યારે મારો તમે આદર કરતા હતા, મને જાણી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામાં બેસાડતા હતા પણ આજે શું કારણ છે કે તમે ઉદાસ થઈને આર્તધ્યાનમાં બેઠા છો. (तएणं कुंभएमल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी) આ રીતે રાજાએ વિદેહરાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે—

(एवं खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छुढा, तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत्-असंमानिता अपद्वारेण 'निच्छूढा' निक्षिप्ताः-निः सारिताः। ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषां दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुविया' परिकुपिताः =अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्तः, मिथिलां राजधानीं निःसंचारं यावत्-निरुच्चारं=सर्वतः समन्तादवरुध्य 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति। ततस्तस्मात् कारणात् खलवहं हे पुत्रि! तेषां जितशत्रु प्रमुखाणां षण्णां राज्ञां अन्तराणि४ अलभमानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिकयादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपायं वा अलभमान अपहतमनः संकल्पः सन् 'झियामि' ध्यायामि=आर्तध्यानं करोमि।

सबन्ध जोडने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओंने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एवं असंमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतों से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए। और इसी लीये उन्हों ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है। जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगों का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नही आती जाती है। (तएणं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणिं ४ अलभमाणं जाव झियामि) इसलिये हे पुत्रि! मैं अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमें रहा आया-परन्तु मुझे उसका

હે પુત્રિ! જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તમારી સાથે લગ્ન કરવાના વિચારથી મારી પાસે દૂતો મોકલ્યા હતા.

મેં તેમના પ્રસ્તાવને સ્વીકાર્યો નહિ અને તેમના દૂતોનો અનાદર અને અસંમાન કરીને મહેલના પાછળના નાના બારણેથી તેઓને બહાર કઢાવી મૂક્યા. પોતાના દૂતોની પાસેથી આ બધી વિગત જાણીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ ખૂબ જ ગુસ્સે થયા, અને હવે તેઓએ મિથિલા નગરીને ચારે બાજુથી ઘેરી લીધી છે. તેના પરિણામે લોકોની અવર જવર બંધ થઈ ગઇ છે. કોઈપણ કારણસર લોકો બહાર જઈ શકતા નથી એવી ભયંકર પરિસ્થિતિ ઊભી થઇ છે. (तएणं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि)

એટલા માટે હે પુત્રિ! હજી સુધી પણ હું જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના અન્તર વગેરેને એટલે કે અવસર વગેરેની લાગમાં રહ્યો પણ મને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकं राजानम् एवं= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे तात ! यूयं खलु मा अपहतमनः संकल्पो यावत्– ध्यायथ, हे तात ! यूयं खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां प्रत्येकं रहसि दूतसंप्रेषणं कुरुत, एकैकं प्रत्येवं वदत–' तव=तुभ्यं दास्यामि मल्लीं विदेहराजवर-कन्याम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, सन्ध्याकालसमये – सूर्येऽस्तंगतेसति ' पविरल-मणूसंसि ' प्रविरलमनुष्ये–मार्गादौ क्वचिद् क्वचिद् प्रविरला अल्पा मनुष्या यत्र स तथा तस्मिन्, रात्रिसद्भावे सतीत्यर्थः तथा निशान्ते=जनकलकले ध्वनिवर्जिते,

कोई भी छिद्र आदि नहीं मिल रहा है। मैंने अनेक विध उपायों से उन्हें परास्त करने का विचार भी किया–औत्पत्ति की आदि बुद्धियों से सचिवों के साथ उन्हें वश करने की मंत्रणा भी की परन्तु मुझे कछ भी उपाय इन्हें वश या परास्त करने का नजर नहीं आ रहा है–अतः अपहतमनः संकल्प वाला बना हुआ मैं इस समय चिन्ताग्रस्त हो रहा हूँ। (तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभयं रायं एवं वयासी) इस प्रकार अपने पिता कुंभक राजा की बात सुनकर उस विदेहराज-वर कन्या ने उन से कहा – (माणं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह) हे तात ! आप अपहत मनः संकल्प होकर यावत् चिन्तित न बने मैं इस विषयमें आपको उपाय बतलाती हूँ (तुब्भेणं ताओ तेसिं जिय सत्तू पामोक्खाणं छण्हं रायाणं पत्तेयं रहसियं दूय संपेसे करेह) हे पिताजी ! वह उपाय यह है कि आप उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं में से प्रत्येक राजा के पास एकान्त में अपना दूत

અત્યાર સુધી તેમનું એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની જાણ થઇ શકી નહિ ઘણા ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મેં કર્યા છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે બુદ્ધિઓથી મંત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી. એથી અપહતમનઃ સંકલ્પવાળો હું આર્તધ્યાનમાં તલ્લીન થઇને બેઠો છું. (तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभयं रायं एवं वयासी) આ રીતે પોતાના પિતા કુંભક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યું કે– (मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह) હે તાત ! અત્યારે તમે ચિંતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવું છું. (तुब्भेणं ताओ तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं रायाणं पत्तेयं रहसियं दूयसंपेसे करेह) હે પિતા ! તમે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાંથી દરેક રાજાની પાસે એકાંતમાં પોતાનો દૂત મોકલો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति निशान्ते जनानां निद्रोपगतत्वेन सर्वथा जनध्वनिसंचाररहिते यस्मिन् काले कोऽपि मार्गे दूतं न पश्येदिति भावः, प्रत्येकं मिथिलां राजधानीमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य गर्भगृहेषु अभ्यन्तरवर्तिभवनेषु अनुप्रवेशयत, ततो मिथिलाया राजधान्या द्वाराणि पिधत्त, आच्छादयत पिधाय रोधसज्जः-रोधेन प्रतिरोधेनाऽऽत्मरक्षां कुर्वन् तिष्ठत । ततः=मल्लीवाक्यश्रवणानन्तरं खलु कुम्भको राजा मल्ल्या

भेजिये (एगमेगं एवं वदह-तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्णं त्तिकट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनिसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह) वह दूत जाकर उन प्रत्येक से ऐसा-कहे कि हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी तुम्हें देंगें। ऐसा कहकर (दूतों से कहलवा कर) फिर उन राजाओं में से प्रत्येक राजा को आप ऐसे संध्याकाल के समय में-जब कि सूर्य बिलकुल अस्त हो गया हो-रात्रि का समय आ गया-हो मार्ग में भी कहीं कहीं पर ही थोड़े से मनुष्य का संचार हो रहा हो-मकान भी मनुष्यों की कल कल ध्वनि से रहित हो चुके हों-सबों के निद्राधीन बन जाने से जिन में से जन ध्वनि बिलकुल ही नहीं प्रकट हो रही हो अपनी मिथिला नगरी में बुलवाई थे-उन्हें प्रवेश कराईये (अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह तएणं कुंभए एवं तं चेव जाव पवे सेह, रोहसज्जे चिट्ठह) प्रवेश करवा कर उन्हें आप गर्भ गृहों में-ठहरा दीजिये।

(एगमेगं एवं वदह तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्णं त्तिकट्टु संझाकाल समयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनिसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह)

તે દૂત તેમની પાસે જઇને દરેકને આ પ્રમાણે કહે કે અમારી કન્યા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમને આપીશું. આ પ્રમાણે દૂત વડે દરેકની પાસે સંદેશ મોકલીને તે રાજાઓમાંથી દરેકને તમે સંધ્યાકાળના સમયે જ્યારે સુરજ બરોબર અસ્ત થઈ ગયો હોય, રાત્રિનો વખત થઈ ગઈ હોય, માર્ગમાં બહુ જ થોડા માણસોની અવર જવર થવા માંડી હોય, માણસોના ઘોંઘાટથી ઘરો પણ જ્યારે શાંત થઈ ગયા હોય ત્યારે મિથિલા નગરીમાં બોલાવો.

(अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह तएणं कुंभए एवं० तं चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ)

બોલાવીને તેઓને તમે ગર્ભગૃહોમાં રોકો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदेहराजवरकन्यायाः एवम्=उक्तप्रकारेणोक्तः सन् तदेव=तथैव कृत्वा यावत्-जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः प्रवेशयति, प्रवेश्य रोधसज्जस्तिष्ठति ॥सू० ३४॥

मूलम्—तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिद्दं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ, एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा२ चिट्ठंति ।

तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं उवणेइ, तएणं गंधे णिद्धावइ, से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव । तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभि-

---

बाद में मिथिला राजधानी के द्वारों को बन्द करवा दीजिये । इस प्रकार उन्हें यहां रोक कर आप अपनी आत्म रक्षा करिये । मल्ली कुमारी के इन वचनों को सुनने के बाद कुंभक राजा ने विदेह राजवर कन्या उस अपनी पुत्री मल्लीकुमारी के कहे अनुसार वैसा ही किया । अर्थात् दूतों द्वारा उन सब को अपने यहां बुलवा लिया एवं उन्हें तल घरों में ठहरा दिया । सूत्र " ३४ "

ત્યાર પછી મિથિલા રાજધાનીના દરવાજાઓ બંધ કરાવડાવી દો, આ રીતે તેઓને અહીં બંધ કરીને તમે આત્મરક્ષા કરો. વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીના વચનો સાંભળીને કુંભક રાજાએ તેણીએ કહ્યું તે મુજબ જ કર્યું. એટલે કે દૂતો વડે તેઓ બધાને પોતાને ત્યાં બોલાવી લીધા અને ગર્ભગૃહોમાં તેઓને રોકી લીધા. ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जएहिं णासाइं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तूप्पामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपूइयपुरिसपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ ?, तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह, एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावइंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सहजाया जाव पव्वइया, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि जइणं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेसं तहेव सव्वं, तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भं ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूद्दीवे२ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरंमि ।
वुत्था समयं निबद्धं देवा ! तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः कल्ये–द्वितीयदिवसे 'पाउप्पभायाए' प्रादुः प्रभातायां=प्रादुर्भूतः संजातः, प्रभातः–प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसानं प्राप्तायामित्यर्थः रजन्यां=रात्रौ, 'जलंते सूरिए' ज्वलति–उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मितां मस्तकछिद्रां–मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां 'पउमुप्पलपिहाणं' पद्मोत्पलपिधाना=छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमां=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, 'एषा–खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते' इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्ल्या विदेहराजवर-

---

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय अच्छी तरह हो चुका तब (जालं तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से (कणगमयं मत्थयछिद्दुं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ) कनक मय उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएणं जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।।

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यारબાદ (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए) તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ બીજે દિવસે જ્યારે રાત પૂરી થઈ અને સૂરજ ઉદય પામ્યો ત્યારે (जालंतरेहिं) બારીઓના કાણાઓમાંથી (कणगमयं मत्थयछिद्दुं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ) જેના માથામાં કાણું હતું તેવી સોનાની પ્રતિકૃતિ (મૂર્તિ) ને જોઇ.

(एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए रूवे य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कन्याया रूपे=मनोहाराकारे च यौवने वयसि लावण्ये–यौवनवयोजनितकान्तिविशेषे च मूर्छिता–रूपयौवनलावण्यदर्शनेन मोहिताः, 'गिद्धा' गृद्धाः=लोलुपाः, 'गढिया' ग्रथिताः=निबद्धचित्ता, अध्युपपन्ना=अत्यन्तासक्ताः अनिमेषया निमेषपातरहितया दृष्ट्या प्रेक्षमाणाः २ अनुक्षणं पुनः पुनर्विलोकयन्तस्तिष्ठन्ति स्म।

ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावत्–सर्वालंकारविभूषिता बहीभिः कुब्जिकाभि र्यावत्–दासीभिः 'परिक्खित्ता' परिक्षिप्ता=परिवेष्ठिता यत्रैव जालगृहं गवाक्षयुक्तं गृहं, यत्रैव कनकप्रतिमा=स्वकीया सुवर्ण-

---

का पद्मोत्पल से ढका हुआ था देखा (एसणं मल्ली विदेह रायवर कण्णत्ति कट्टु मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्ण अणिमिसाए दिट्ठए पेहमाणा २ चिट्ठंति

देख कर अरे ! यह तो विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी हैं, ऐसा जान कर वे सब उस विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी के रूप यौवन एवं लावण्य पर मूर्च्छित हो गये–मोहित हो गये, लोलुप हो गये। उन में उन का चित्त बंध गया। इस तरह अत्यंत आसक्त होकर वे सब के सब अनिमेष दृष्टि से बार २ उस की तरफ देखते रहे। (तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमं तेणेव उवागच्छइ) इस के पश्चात् विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी स्नान आदि कर के समस्त अलंकारों से विभूषित शरीर हो अनेक कुब्जक संस्थान वाली दासियों के साथ २ जहां वह जाल गृह और उस में भी

जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा २ चिट्ठंति)

જોઇને " અરે આ તો વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી જ છે. " આમ જાણીને તેઓ બધા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીના રૂપ યૌવન અને લાવણ્યના પ્રભાવથી મૂર્છિત થઇ ગયા. મોહિત થઈ ગયા. લોલુપ થઇ ગયા. તેમાં તેમનું ચિત્ત ચોંટી ગયું. આ રીતે ખૂબજ આસક્ત થઇને તેઓ બધા વારંવાર તેની તરફ જોતા રહ્યા.

(तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमं तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારપછી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ સ્નાન વગેરે પતાવીને બધા અલંકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને ઘણી કુબ્જક (કુબડા) સંસ્થાનવાળી દાસીઓની સાથે જ્યાં તે જાલગૃહ અને તેમાં પણ જ્યાં તે સોનાની પ્રતિમા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मयी प्रतिकृतिः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तस्याः कनकप्रतिमायाः मस्तकात् तत्-पिधानरूपं पद्मम् 'अवणेइ' अपनयति=दूरीकरोति, पद्मापसारणेन कनकमय-प्रतिकृतेर्मस्तकोपरिस्थितस्तन्द्रमुद्घाटयतीत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं खलु गन्धः=दुर-भिगन्धः, 'णिद्धावइ' निर्धावति=शीघ्रं बहिर्निःसरति, तद् यथा नामकम्-तथाहि-यथा-'अहिमडेति वा' अहिमृतक इति वा मृतसर्पस्य तीव्रदुर्गन्धः प्रस-रति, तद्वदित्यर्थः, स यावत्-गोमृतकइव, श्वमृतकइवेत्यादिबोध्यम् 'एत्तोवि'= एतस्मादपिदुर्गन्धात् अशुभतर एव-अत्यन्तं मनो विकृतिजनकस्तीव्रतरो दुःसहश्चैव वर्त्तते। तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेनाशुभेन गन्धेनाभिभूताः सन्त स्वकै स्वकै-रुत्तरीयैः उत्तरीयवस्त्रैः, 'णासाइं' नासिकाः पिदधति=आच्छादयति पिधाय 'परम्मुहा' पराङ्मुखाः परावर्तितमुखास्तिष्ठन्तिस्म।

जहां वह सुवर्णमयी प्रतिमा थी वहां आई। (उवागच्छित्ता तीसे कणग-पडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेइ) वहां आकर के उस ने उस कनक मय पुतली के मस्तक से उस कमल को हटाया (तएणं गंधे णिद्धावइ) ढक्कन के हटते ही उस में से बहुत भारी दुर्गन्ध निकली (से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव) वह दुर्गंध ऐसी अशुभतर थी कि जैसी मरे हुए सर्प के सड़े शरीर की होती है-तथा गोमृतक एवं श्वमृतक, की होती है। (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं णासाइं पिहेंति) उस दुर्गंध के निकलते ही उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने अपने २ उत्तरीय वस्त्रांचलों से अपनी २ नांक को ढक लिया।

(मूर्ति) हती त्यां गई. (उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं) अवणेइ) त्यां आवीने तेणे ते सोनानी प्रतिमापर रहेलुं सोनाना कमळवाळुं ढांकणुं उघाडयुं (तएणं गंधं णिद्धावइ) ढांकणुं दूर थतां ज तेमांथी अत्यंत खराब दुर्गंध नीकळवा लागी. से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव) ते दुर्गंध એટલી खराब हती के मरेला सापना सडी गयेला शरीरनी तेमज गोमृतक अने श्वमृतकनी होय छे.

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं णासाइं पिहेंति)

दुर्गंध બહાર આવતાંની સાથે જ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ પોતાના ઉત્તરીયવસ્ત્રના છેડાથી પોતપોતાનું નાક ઢાંકી દીધું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राज्ञ एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत् हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु यूयं स्वकैरुत्तरीयै यावत्-नासिकाः पिधाय पराङ्मुखास्तिष्ठथ ?, ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाऽऽ मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति-हे देवानुप्रिये ! एवं खलु वयमनेनाशुभेन-अनिष्टतरेण दुरभिगन्धेन, अभिभूताः सन्तः स्वकैः २ यावत्-उत्तरीयैः स्व स्व नासिकां पिदाय पराङ्मुखाः, 'चिट्ठामो' तिष्ठामः=स्थिताः स्मः ।

(पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति' तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी) और दूसरी तरफ मुख-करके बैठ गये । जब मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या ने उन्हें इस प्रकार देखा तो वह बोली- (किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लीं विदेह रायवर कन्नं एवं वयंति) हे देवानु प्रियो ! आप लोग क्यों अपने अपने उत्तरीय वस्त्रों से अपनी २ नाक को ढक कर और पुतली की ओर से मुँह फेरकर बैठ गये हैं । मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या की इस प्रकार बात सुन कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उससे ऐसा कहा

(एवं खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो) हे देवानुप्रिये ! हमलोगो से यह अशुभ गंध सहन नही हो रही है अतः हम लोग अपने २ उत्तरीय

(पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना तं जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी)

અને તેઓ બધાં મોં ફેરીને બેસી ગયા. જ્યારે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તેઓને આ પ્રમાણે કરતાં જોયા ત્યારે તેણે કહ્યું—

(किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો શા કારણથી પોતાનું નાક ઉત્તરીયવસ્ત્રના છેડાથી ઢાંકીને પ્રતિમાના તરફથી મોં ફેરવી બેસી ગયા છો?

વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તેને કહ્યું—

(एवं खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं तेषां राज्ञां वचनं श्रुत्वा खलु मल्लो विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राज्ञः प्रत्येवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! यदि तावत् अस्यां कनकमय्यां यावत्-प्रतिमायां 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्ये=प्रतिदिवसं तस्माद् मनोज्ञाद् अशनपानखाद्यस्वाद्यात्=चतुर्विधाऽऽहाराद् एकैकः पिण्डः=ग्रासः प्रक्षिप्यमाणः' अयमेतद्रूपः=मनोविकृतिकारकस्तीव्रतरो दुःसहो दुर्गन्धः, अशुभः=अनिष्टतरः पुद्गलपरिणामो जातः, तर्हि पुनरौदारिकशरीरस्य श्लेष्मास्रवस्य=यस्मात् कफप्रस्रावो भवति तस्य, वान्तास्रवस्य=वान्तम्-उद्गीर्णं तस्यास्रवः प्रस्रावो यस्माद् भवति तस्य, पित्तास्रवस्य=पित्तस्यास्रवो निःसरणं यावत् तस्येत्यर्थः। तथा शुक्रशोणित-पूयास्रवस्य दुरुपोच्छ्वास निःश्वासस्य=बाह्यवायुग्रहणमुच्छ्वासः, शरीरान्तर्गतस्य

वस्त्राचलों से नाक ढक और इस तरफ मुँह कर फेर कर बैठ गये हैं। (तएणं मल्ली विदेहरायवर कन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी) ईस के अनन्तर विदेहराजवर कन्या मल्ली कुमारी ने उन जितशत्रु प्रमुख राजों से कहा—(जइना देवाणुप्पिया! हमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्ला कल्लिं ताओ माणुण्णाओ असणपाणखाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे) हे देवानुप्रियो! इस कनकमयी पुतली में मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहारका डाला गया एक२ ग्रास जब इस प्रकारका मनोविकृति जनक अशुभ तर पुद्गल परिणामरूप दुर्गंधवाला बन गया है तो।

(इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स ऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपुरीय

હે દેવાનુપ્રિયે! આ ખરાબ ગંધ અમારા માટે અસહ્ય થઈ પડી છે. એથી અમે પોતપોતાના ઉત્તરીયના છેડાથી નાક ઢબાવીને અને આ તરફથી મોં ફેરવીને બેસી ગયા છીએ. (तएणं मल्ली विदेहराजवर कन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी) ત્યારપછી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને કહ્યું કે—

(जइता देवाणुप्पिया! हमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्ला कल्लिं ताओ मणुण्णाओ असणपाणखाइम साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे)

હે દેવાનુપ્રિયો! આ સોનાની પૂતળીમાં મનોજ્ઞ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારનો નંખાએલો એક એક કોળીયો જ્યારે આ પ્રમાણે મનોવિકૃતિજનક અશુભતર પુદ્ગલ પરિણામ રૂપ દુર્ગંધવાળો બની ગયો છે ત્યારે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वायोर्निर्गमनं निः श्वासः तौ दूरूपावनिष्टौ यस्य स तथा, तस्य दूरूपमूत्रपूतिकपुरीष पूर्णस्य=दूरूपेण पूतिकेन अनिष्टगन्धवता पुरीषेण पूर्णस्य, तथा तत्र-शटनपटनविध्वंसनधर्मस्य=शटनं-कुष्ठादिरोगाङ्गुल्यादेः पतनं ज्वरादिना शैथिल्यं, विध्वंसनं=नाशः एते शटनादयो धर्माः स्वभावा यस्य स तस्य, कीदृशः परिणामो भविष्यति? अशनाद्याहारादुद्धृतस्यैकैकग्रासस्य प्रतिदिवसं प्रतिकृतौ प्रक्षिप्तस्य यदि

पुरिसपुण्णस्स सडण पडण विद्धंसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ) इस औदारिक शरीर का पुद्गल परिणमन उसकी अपेक्षा भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गंध वाला नहीं होगा क्या ? अवश्य होगा-क्योंकी यह कफ का आश्रय भूत है। समय २ पर इससे वमन का निस्सरण होता रहता है। पित्त भी इस से निकलता रहता है। शुक्र, शोणित, एवं पीव इस में बाहिर बहता है। इसका जो श्वास और उच्छ्वास हैं वे महा दुरूप-अनिष्टतर हैं। यह दुरूप मूत्र एवं अनिष्ट गंध वाले मल से सदा भरा रहता है। यह शटन, पटन, तथा विध्वंसन धर्म वाला हैं। कुष्ठादि रोग द्वारा जो इस के अंगुलि आदि अवयव गिर जाते हैं उस का नाम शटन है। ज्वरादि अवस्था से जो इसमें शिथिलता आ जाती है उस का नाम पतन है। नाश होने का नाम विध्वंसन है। कारण इस का इस प्रकार है कि अशनादि रूप चतुर्विध आहार से उत्पन्न हुए एक २ ग्रास का जो प्रतिदिन इस प्रतिकृति में प्रक्षिप्त किया जाता है

(इमस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्क सोणिय पूयासवस्स दुरूव उसासनीसासस्स दुरूवमुत्त पूइयपूरिस पुण्णस्स सडण-पडण विद्धंसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ)

આ ઔદારિક શરીરનું પુદ્ગલ પરિણમન તેના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળું થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે. કેમકે આ કફનું આશ્રય છે. આમાંથી વારંવાર વમનનું નિસ્સરણ થતું રહે છે. પિત્ત પણ આમાંથી નીકળતું રહે છે. શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને પરૂ આમાંથી બહાર વહેતું રહે છે. આમ થી એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે. આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હંમેશા ભરાએલું રહે છે. આ શરીર શટન, પતન, તેમજ વિધ્વંસન ધર્મવાળું છે. કોઢ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આંગળીયો વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનું નામ શટન છે. ઘડપણને લીધે શરીરમાં જે શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે. નાશ થવું તે વિધ્વંસન કહેવાય છે આનું કારણ બતાવવામાં આવેલો કોળિયો જે એક એક કરીને દરરોજ આ પૂતળીમાં નાખવામાં આવ્યો છે. તે જ્યારે આવું તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुद्गलपरिणामस्तीव्रतरोऽनिष्टतरोदुर्गन्धः प्रसरति, तर्हि पुनरस्यौदारिकशरीरस्य श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपतनविध्वंसनस्वभावस्य पुद्गलपरिणामस्तस्मादप्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः। तस्मात् हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सङ्गं नो कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्बन्धः। 'रज्जह' रज्यत=रागं मा कुरुत, 'गिज्झह' गर्धध्वम् गृद्धिं तृष्णां मा कुरुत, 'मुज्झह' मुह्यत मोहं नो कुरुत विषयदोषं मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जह' अध्युपपद्यध्वम्=कामभोगानां ध्यानं मा कुरुतेत्यर्थः। हे देवानुप्रियाः! एवं खलु यूयं वयमितस्तृतीये भवग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिमीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां राजधान्यां महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयस्या राजानः=राजकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तीव्र अनिष्टतर दुर्गंध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एवं विध्वंसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध वाला ही होगा

(तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह) इसलिये हे देवानुप्रियों! तुम लोग मनुष्य भव संबधी काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो। (एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवर विदेहवासे सलिलावईसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियों!

રૂપ પુદ્ગલ પરિણામવાળું થાય ત્યારે આ ઔદારિક શરીરનું કે જે શ્લેષ્મ વગેરે ઘણા મળોથી ભરાએલું છે-અને શટન, પતન, અને વિધ્વંસન જેનું સ્વાભાવિક ધર્મ છે-પુદ્ગલ પરિણામ એના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળું હશે જ.

(तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह; रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે મનુષ્યભવના કામ ભોગોમા ફસાશો નહિ, તેમાં રાગ ઉત્પન્ન કરો નહિ, તેના પ્રતિ તૃષ્ણાનું વર્દ્ધન કરો નહિ, મુગ્ધ થાઓ નહિ અને તેનો કોઇ દિવસ પણ વિચાર કરો જ નહિ.

(एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेह वासे सलिलावईसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'होत्था' संजाताः कीदृशाः ? इत्याह-'सहजाया' सहजाता=सहोत्पन्नाः, यावत्-सहवर्धिताः सहक्रीडितकाः, 'पव्वइया' प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः। ततः खलु हे देवानुप्रियाः! अहं 'इमेणं कारणेणं' वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्रं कर्म निव्वत्तेमि' निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्रं कर्मनिःस्यर्थः। येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रकर्म निर्वर्तितं तदाह-'जइणं' इत्यादि। यदि खलु यूयं चतुर्थ=चतुर्थभक्तं तपः, उपसंपद्य विहरथ, 'तए' ततः=तदा खलु अहं षष्ठं=षष्ठभक्तंतपः, उपसंपद्य विहरामि=तिष्ठामि। शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में "बालवयस्य" सात राजपुत्र थे। उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पव्वइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे- और साथ ही बढे हुए थे। साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे। निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी। (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरई तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि सेसं तहेव सव्वं) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बंध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते। यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है।

હે દેવાનુપ્રિયો ! હું અને તમે આજથી ત્રીજા ભવમાં પશ્ચિમ મહાવિદેહક્ષેત્રમાં સલિલાવતી નામના વિજયમાં વિદ્યમાન વીતશોકા નામની રાજધાનીમાં 'બાલવયસ્ય' સાત રાજપુત્રો હતા તે સમયે અમારા નામો મહાબલ વગેરે હતા. (सहजाया जाव पव्वइया) અમે બધા સાથે જ જન્મ્યા હતા. અને સાથે સાથે જ મોટા થયા હતા. માટીમાં પણ આપણે બધા સાથે સાથે જ રમ્યા હતા. સમય આવતાં આપણે સાતે જણાએ દીક્ષા ધારણ કરી હતી.

(तएणं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयकम्मं निव्वत्तेमि जइणं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरई तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि सेसं तहेव सव्वं)

તે ભવમાં આ કારણથી સ્ત્રીનામ ગોત્ર કર્મનો બંધ કર્યો. તમે બધા જ્યારે ચતુર્થભક્ત કરતા ત્યારે હું પણ તમારી સાથે ચતુર્થભક્ત તો કરતોજ પણ ગમે તે બહાના હેઠળ પારણાના દિવસે પણ છઠ્ઠ વગેરે તપસ્યાઓ કરતો રહેતો હતો. (આ વિષેનું બધું વર્ણન આ અધ્યયનમાં પહેલાંજ કરવામાં આવ્યું છે.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्मिन्नेवाध्ययने प्रागुक्तवक्तव्योऽध्यम् । ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं कालमासे कालं कृत्वा जयन्ते विमाने उत्पन्नाः=देवभवं प्राप्ताः, तत्र खलु युष्माकं देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः, ततः खलु यूयं तस्मादेवलोकादनन्तरं चयं=देवशरीरं, त्यक्त्वा इहैव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे जन्मलब्धा यावत्-रवानि २ राज्यान्युपसंपद्य विहरथ, ततस्तदनन्तरं खल्वहं हे देवानुप्रियाः ! तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियत्ताए' दारिकतया स्त्रीभावेन पच्चायाया' प्रत्यायाता=संजाता-अथ तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः पुनः

(तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा-तत्थणं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) हे देवानुप्रियों ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहां आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जब यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहां से चवकर इसी जंबूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया) तुम लोगों के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियों ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्षय हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

(तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा तत्थणं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे२ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમાં મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જયંત વિમાનમાં દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા. ત્યાં તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતાં કંઈક ઓછી એટલી સ્થિતિ થઈ. જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાંથી ચવીને આ જંબૂદ્વીપમાં ઉત્પન્ન થયા છો અને પોતપોતાનાં રાજ્યોનું શાસન ચલાવવા લાગ્યા છો.

(तएणं अहं देवाणुप्पिया! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાંથી આયુક્ષય હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમાં જન્મ પામી છું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्वजन्मवृत्तान्तं स्मारयन्ती मल्ली यदवोचत् तद् गाथया माह-किं थ तयं इत्यादि। भो राजानः किं तद् विस्मृतं युष्माभिः तदा=तस्मिन् काले पूर्वभवे जयन्तवरे= जयन्तनामकेऽनुत्तरविमाने 'देवाः' देवाभूत्वा 'वुत्था' यूयम् उषितः = निवासं कृतवन्तः, 'थ' इति वाक्यालङ्कारे 'समयनिबद्धां=वयं परस्परेण प्रतिबोधनीया' इत्येवं संकेतेन निबद्धां = परिगृहीतां, तां देवसम्बन्धिनीं जातिं जन्म. 'संभरह' संस्मरतेति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्-तएणं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहावोहमग्गणगवेसणं करेमाणाणं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने. एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति, तएणं मल्लो अरहा जियसत्तूपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव

इसी पूर्वोक्त-पूर्व जन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत्रु प्रमुख राजाओं को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा "किं थ तयं पम्हुटुं' इत्यादि यह है। इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर रहे हैं। सो "हम परस्पर में एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे" ऐसी प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી મલ્લીકુમારીએ જે કંઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે- (किंथ तयं पम्हुटुं) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ ભવને ભૂલી ગયા છો કે જ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમાં દેવ થઈને રહ્યા હતા. તો "અમે એક બીજાને પ્રતિબોધિત કરીશું." આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને બોલવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો. ॥સૂ. "૩૫"॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तएणं महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तप्पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! संसारभयउविग्गा जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे ?, तएणं जियसत्तूप्पामोक्खा मल्लिं अरहं एवं वयासी – जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिए! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा जह चेव णं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणुप्पिये ! इण्हिपि जाव भविस्सह, अम्हे वि य णं देवाणु० ! संसार भयउव्विग्गा जाव भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो। तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तपामोक्खे एवं वयासी-जणं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया सएहिं२ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह, तएणं ते जियसत्तूपामुक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति, तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू० गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तूपामोक्खे विपुलेणं असण४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिता समाणा जेणेव साइं२ रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तएणं मल्ली अरहा 'संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि' त्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएणं तेसिं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां, मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः अन्तिके=समीपे 'एयमट्ठं' एतमर्थं=पूर्वभववृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृदयधार्य, शुभेन परिणामेन प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यन्तीः 'तयावरणिज्जाणं' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां, कर्मणां क्षयोपशमेन 'ईहावोहमग्गणगवेषणं' इहाऽपोहमार्गणगवेषणम्-ईहा-अर्थं विशेष विषयकसमालोचनाभिमुखो मतेर्व्या-

'तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं' इत्यादि

(तएणं) इस के बाद (तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहावोयमग्गणगवेसणकरेमाणाणं सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने) उस जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब उन्हों ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त अध्यवसाय से लेश्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहावोयमग्गणगवेसण करेमाणाणं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ જ્યારે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના મુખથી આ બધી પૂર્વભવની વિગત સાંભળી અને મનમાં તેના ઉપર સારી પેઠે વિચાર કર્યો ત્યારે શુભ પરિણામથી, પ્રશસ્ત અધ્યવસાયથી લેશ્યાઓની વિશુદ્ધિથી તેમજ તદાવરણીય કર્મોના ક્ષયોપશમથી, ઈહા, અપોહ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारः, विचार इत्यर्थः । स चात्र-" किं मल्ली कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा संजातः, अपिच देवभवं प्राप्य जयन्तविमाने किं वयमवस्थिता आस्मे " त्येवंरूपो बोध्यः । अपोहः-निश्चयः, स चेत्थम्-उक्तविचारे निरन्तरसंलग्नाया बुद्धेः परिणामः खल्वेवमभवत्-" मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन वयं सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन संजाता " इति । ईहापोहाभ्यां

क्षयोपशम से ईहा, अपोह मार्गण एवं गवेषण करने पर संज्ञि जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । अर्थ विशेष को विषय करने वाली समालोचना की तरफ झुकता हुआ जो मति व्यापार रूप विचार होता है उसका नाम ईहा हैं । यहां इसका समन्वय इस तरह से समझना चाहिये-मल्ली कुमारी ने जो पूर्वभवीय वृत्तान्त कहा है वह क्या उसी तरह से हुआ है क्या देव भव को प्राप्तकर हम लोग जयन्त विमान में साथ रहे हैं? ईहा के बाद जो निश्चय रूप बोध होता है उसका नाम अपोह है इसका संबंध यहां इस प्रकार से जानना चाहिये-जब उक्त विचार में बुद्धि संलग्न हो गई तो उसका परिणाम इस प्रकार निकला -ठीक है-मल्ली कुमारी के कथनानुसार हम सातों अनगारों ने तपोअनुष्ठान नियमतः किया है-इससे उसके प्रभाव से हम लोग काल मास में कालकर जयन्त विमान में देव की पर्याय अवश्य उत्पन्न हुए हैं । इस प्रकार का ईहित अर्थ में जो निश्चयात्मक विचार होता है वही अपोह है ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સંજ્ઞી-જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું. અર્થ વિશેષને વિષય બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે 'ઈહા' છે. અહીંયા ઇહા વિષેનો સંબંધ આ રીતે સમજવો જોઇએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વભવની વિગત સાંભળીને રાજાઓના મનમાં જે આ પ્રમાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વભવનું વૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું ખરેખર તેમજ હશે !

દેવભવ મેળવીને શું અમે બધા એકી સાથે જયંત વિમાનમાં રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેનો સંબંધ અહીં આ પ્રમાણે સમજવો જોઇએ કે જ્યારે પૂર્વભવના વિચારોમાં બુદ્ધિ સંલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રમાણેનો નિશ્ચય થયો કે ' ઠીક છે ' મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે લોકો કાળ માસમાં કાળ કરીને જયંત વિમાનમાં દેવની પર્યાયથી ચૌક્ષસપણે જન્મ પામ્યા હોઇશું. આ રીતે ઇહિત અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निश्चितोर्थो मार्गणगवेषणाभ्यां दृढीभवतीत्यतआह – 'मग्गणगवेसणं' इति, मार्गणं-ईहापोहाभ्यां निश्चितार्थेऽन्वयधर्मालोचनं अन्वयः-सद्भावः-यथा-अस्मासु सप्तसु परस्पर सुहृद्भाव विषयविरागदर्शनेन पूर्वभवे सहावस्थानपूर्वकं तपश्चरणं, तदनु जयन्तविमानावस्थानं दृढं निश्चीयते, गवेषणम्-ईहापोहाभ्यां निश्चितेऽर्थे व्यतिरेकधर्मालोचनम् व्यतिरेको नाम-अभावः, यथा-अस्मासु सप्तसु यदि परस्परसुहृद्भावो न स्यात्, तथा यदि विषयविरागो न स्यात्, तर्हि पूर्वभवसम्बन्धि सहावस्थानपूर्वकं तपश्चरणं जयन्तविमानावस्थानं च न स्यात्, इत्येवमन्वयव्यतिरेकधर्मालोचनादुक्तार्थस्य निश्चयो दृढतरो भवतीति तदेवमीहाऽपोहमार्गणगवेषणं

ईहा और अपोह से निश्चित किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है। मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा। और अपोह से निश्चित हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना। जैसे ऐसा विचार आना कि इन सातोंमें जब परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगों ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं। गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चित हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना। जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नहीं होता।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है। संज्ञी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઈ જાય છે. માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી. જેમકે અત્યારે સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત સ્પષ્ટરૂપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયંત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે. 'ગવેષણ' શબ્દનો અર્થ છે, ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી. જેમકે આ સાતેમાં હમણાં એક બીજા માટે સુહૃદ્‌ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમાં તેમનું સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયંત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ.

આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવવામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઈ જાય છે. સંજ્ઞી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुर्वता ' सण्णिजाइस्सरणे' संज्ञिनातिस्मरणं=संज्ञिनां मनोयुक्तानां जातिः प्राक्तनं जन्म तस्याः स्मरणं, जातिस्मरणं संज्ञिनामेवभवति नत्वसंज्ञिनामिति बोधयितुं संज्ञीति विशेषणं प्रयुक्तमितिभावः। समुत्पन्नं=संजातम्, ईहापोहादिकरणेन जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां पूर्वभवसम्बन्धि सकलवृत्तान्तस्मरणमभूदिति संक्षेपः। ' एयमट्ठ ' इत्यादि। एतमर्थं सम्यगभिसमागच्छन्ति तेन जातिस्मरणेन पूर्वभव सम्बन्धिसकलवृत्तान्तं सम्यग् ज्ञातवन्त इत्यर्थः।

ततस्तदनन्तरं मल्ली ' अरहा ' अर्हन् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः समुत्पन्न-जातिस्मरणान् ज्ञात्वा गर्भगृहस्य द्वाराणि ' विहाडावेइ' विघाटयति-उद्घाटयति ' ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छति, उपा-

---

जातो स्मरण ज्ञानी जीव को होता है-अर्थात् जाति स्मरण ज्ञानी संज्ञी जीव को ही होता है-असंज्ञी जीव को नहीं। इसी बात को प्रकट करने के लिये " संज्ञी " यह विशेषण दिया है। इस प्रकार ईहा, अपोह आदि के करने से उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को पूर्वभव संबंधी सकल वृत्तान्त स्मृत हो गया। यही बात " एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति " इस सूत्रांश द्वारा सूत्रकार ने प्रकट की है (तएणं मल्ली अरहा जियसत्तू पामोक्खे छप्पिरायाणो समुप्पन्नजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराइं दाराइं विहाडावेइ) इस के बाद मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को उत्पन्न जाति स्मरण ज्ञान वाला जान कर गर्भगृहों के द्वारों को उद्घाटित करवा दिया। (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति) द्वारों के उद्घाटित होते ही जितशत्रु प्रमुख सब ही राजा जहां मल्ली कुमारी थी वहां आये।

થાય જ આ જાતિસ્મરણ જ્ઞાન જીવને હોય છે એટલે કે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન સંજ્ઞી જીવોને જ થાય છે, અસંજ્ઞી જીવોને નહિ. એ વાતને સ્પષ્ટ કરવા માટે જ અહીં 'સંજ્ઞી' વિશેષણ આપવામાં આવ્યું છે. આ રીતે ઈહા અપોહ વગેરેથી જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓને પૂર્વભવ સંબંધી બધું જ્ઞાન થઈ ગયું. એ જ વાત (एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति) આ સૂત્રશ વડે સૂત્રકારે સ્પષ્ટ કરી છે.

(तएणं मल्ली अरहा जियसत्तू पामोक्खे छप्पिरायाणो समुप्पन्नजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराइं दाराइं विहाडावेइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરિહંતે છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને જાતિ-સ્મરણજ્ઞાનથી યુક્ત થયેલા જાણીને ગર્ભગૃહોના બારણાઓ ઉઘડાવી દીધા. (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति) બારણાઓ ઉઘડતાંજ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ મલ્લીકુમારી પાસેઆવી ગયા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गत्य तदनु पूर्वभवस्य महाबलप्रमुखाः सप्ताऽपि बालवयस्याः बालमित्राणि 'एगयओ' एकत्र एकस्मिन् स्थाने 'अभिसमन्नागया' अभिसमन्वागताः संमिलिताश्चाप्यभूवन्' ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः प्रत्येवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! एवं खलु अहं संसारभयोद्विग्ना=चतुर्गतिक भवभ्रमणभयाद्व्याकुला, यावत् प्रव्रजामि=दीक्षां ग्रहीष्यामि तत्=तस्माद्, यूयं खलु 'किं करेह' किं कुरुथ=किं करिष्यथ, वर्तमानसामीप्ये भविष्यति वर्तमानवत्प्रयोगः। 'किं च ववसह' किं च व्यवस्यथ, कं व्यवसायम् उद्यमं करिष्यथ, यावत्-किं भे हियसामत्थे' किं गृहे निवत्स्यथ, कामसुखानि किं भोक्ष्यथ किं वा प्रव्रजिष्यथ, किं युष्माकं हृदयसामर्थ्यम्-कीदृशं मनोबलं युष्माकम्। ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो मल्लीमर्हन्तं प्रत्येवमवदन्-हे देवानुप्रियाः! यदि

(उवागच्छित्ता तएणं महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसा एगयओ अभिसमन्ना गयायावि होत्था) वहां जाकर पूर्वभव के महाबल प्रमुख सातों ही बालवयस्य इस तरह एकस्थान पर संमिलित हो गये (तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी) इस के बाद मल्ली कुमारी अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं से इस प्रकार कहा (एवं खलु देवाणुप्पिया संसारभय उव्विग्गा जाव पव्वयामि) हे देवानुप्रियों! संसारभय से उद्विग्न बनी हुई मैं तो दीक्षित होती हूँ-(तं तुब्भेणं किं करेह किंच ववसह जाव किंभे हियमामत्थे) अब-तुम सब कहो क्या करोगे क्या उद्यम करोगे घर में रहोगे-काम सुखों को भोगोगे या संयम लोगे? कहो तुम्हारा मनोबल कैसा है? (तएणं जियससत्तू पामोक्खा मल्लिं अरहं एवं वयासी) मल्ली अरिहंत

(उवागच्छित्ता तएणं महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था)

આ રીતે પૂર્વભવના મહાબળ પ્રમુખ સાતે બાળમિત્રો એક સ્થાને ભેગા થયા.

(तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी)

ત્યારબાદ મલ્લીકુમારી અરિહંતે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે एवं खलु देवाणुप्पिया संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि) હે દેવાનુપ્રિયો સંસારના ત્રાસથી કંટાળીને હું તો હવે દીક્ષા ગ્રહણ કરું છું.

तुब्भेणं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे)

પણ હવે તમે બધા શું કરશો? શો ઉદ્યમ કરશો? ઘરમાં રહેશો, કામ સુખો ભોગવશો કે સંયમ ગ્રહણ કરશો? બતાવો તમારું સામર્થ્ય કેવું છે?

(तएणं जियसत्तू पामोक्खा मल्लिं अरहं एवं वयासी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यूयं संसारभयोद्विग्ना यावत् प्रव्रजथ=प्रव्रजिष्यथ, अस्माकं खलु हे देवानुप्रियाः ! किमन्यदालम्बनं वा सहायो वा कोऽन्य आधारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितुं धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु कार्येषु च मेधिः मेधिवदालम्बनम्-आधारो वा किं च यूयं प्रमाणं=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद्-चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुराः=धुरइव धुरः धर्मस्य धुरः=वाहका धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमासत, तथैव खलु हे देवानुप्रियाः !

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मल्ली अरिहंत से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवानुप्रिये ! जब तुम संसार के भय से उद्विग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमे तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा-कौन हमारा आलंबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा-कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा- । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलंबन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुभूत

મલ્લી અરિહંતના આ પ્રમાણે વિચારો સાંભળીને તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ મલ્લી અરિહંતને કહ્યું કે

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा तह चेव णं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था)

હે દેવાનુપ્રિય ! સંસાર ભયથી વ્યાકુળ થઇને જ્યારે તમે પોતે દીક્ષા સંયમ સ્વીકારવા ઇચ્છો છો ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયે ! બતાવો તમારા વગર અમારો સહાયક બીજો કોણ હશે ? અમારો આલંબન કોણ હશે ? અમારો આધાર કોણ હશે ? ખોટાં કામ કરતાં અમને રોકનાર કોણ હશે ? અમારા જેવા ને સન્માર્ગ તરફ વાળનાર ધર્મના ઉપદેશક કોણ હશે ? જેમ આજથી પહેલાંના ત્રીજા ભવમાં અમારા માટે ઘણાં કામોમાં તમે મેઘિની જેમ આલંબન રૂપ થયા, આધાર ભૂત થયા પ્રમાણ ભૂત થયા, સમવિષમ માર્ગને બતાવનાર હોવા બદલ ચક્ષુભૂત થયા, ધર્મની ધુરારૂપ થયા, ધર્મના માર્ગમાં પ્રવૃત્તિ કરાવનાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'इण्हिंपि' इदानीमपि यावद् भविष्यथ। वयमपि खलु हे देवानुप्रियाः! संसारभयोद्विग्नाः यावद् भीता 'जम्मणमरणाणं' जन्ममरणेभ्यः आर्षत्वात्पञ्चम्यर्थे षष्ठी, 'देवाणुप्पियाणं' देवानुप्रियैः युष्माभिः सार्द्धं मुण्डा भूत्वा यावत्-प्रव्रजामः=दीक्षां ग्रहीष्यामः, ततः-जितशत्रुप्रमुखानां तेषां वचनं श्रुत्वा, खलु मल्ली अर्हन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं संसारभयोद्विग्नाः यावद् मया सार्धं प्रव्रजथ, तत्=तस्मात् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! स्वेषु स्वेषु राज्येषु ज्येष्ठान् पुत्रान् राज्ये स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः दूरोहत=आरोहत, दूरूढाः सन्तो ममान्तिकंप्रादुर्भवतः आगच्छत। ततस्तदनन्तरं

हुए, धर्म की धुरा रूप हुए-धर्ममार्ग में प्रवृत्ति कराने वाले हुए (तहा चेव णं देवाणुप्पिए! इहिंपि जाव भविस्सह) उसी प्रकार इस भव में भी आप ही होवे (अम्हे वि य णं देवाणु० संसारभयउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो) इसलिये-हम भी हे देवानुप्रिये! संसारभय से उद्विग्न बने हुए यावत् जन्म मरण से भीत हुए आप देवानुप्रिय! के साथ ही मुंडित होकर यावत् जिन दीक्षा ग्रहण करेंगे।

(तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी-जण्णं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणीओ सीयाओ दुरूहह) इस के बाद मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं से इस प्रकार कहा-यदि तुम सब संसारभय से उद्विग्न

થયા (तहा चेव णं देवाणुप्पिए! इहिंपि जाव भविस्सह) તે પ્રમાણે આ ભવમાં પણ તમે જ અમને ધર્મમાં પ્રવૃત્તિ કરાવનાર થાઓ.

(अम्हे वि य णं देवाणु० संसारभयउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે! સંસાર ભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ મરણના ભયથી ત્રસ્ત થયેલા અમે પણ હે દેવાનુપ્રિય તમારી સાથે જ મુંડિત થઇને જિન દીક્ષા સ્વીકારીશું.

(तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी- जण्णं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणीओ सीयाओ दुरूहइ)

ત્યાર પછી મલ્લી અરિહંતે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તમે બધા સંસાર ભયથી વ્યાકુળ થઇને મારી સાથે જિન દીક્ષા ગ્રહણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः 'मल्लिस्स अरहतो' मल्ल्या अर्हतः, एतमर्थं=उक्तरूपमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति स्म ।

ततः खलु मल्ली अर्हन्, तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञो गृहीत्वा= सार्धंनीत्वा यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य पादयोः 'पाडेइ' पातयति=प्रणमयति, ततः खलु कुम्भको राजा तान् जितशत्रुप्रमुखान् विपुलेन=प्रचुरेण, अशनपानखाद्यस्वाद्येन=चतुर्विधाऽऽहारेण, पुष्पवस्त्रामाल्याल-

---

होकर मेरे साथ जिन दीक्षा धारण करना चाहते हो तो हे देवाणुप्रियो ! जाओ और अपने अपने राज्य में पहिले अपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करो-स्थापित करके फिर पुरुष सहस्र वाहिनी शिबिकाओं पर बैठो- (दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह) उन पर बैठे हुए फिर हमारे पास आओ। (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकार उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं ने मल्ली अरिहंत की इस बात को स्वीकार कर लिया। (तएणं मल्ली अरहा-ते जियसत्तू० गहाय जेणेव कुंभए-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ) इस के पश्चात् उन मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं को अपने साथ लिया और लेकर वे जहां कुंभक राजा थे वहां पहुँचे वहां पहुँच कर उन्हों ने कुंभक राजा के चरणोंमें झुका कर उन से वंदना करवाई ।

કરવા ઇચ્છતા હો તો હે દેવાનુપ્રિયો ! પોત પોતાના રાજ્યમાં તમે જાઓ અને ત્યાં પહેલાં રાજગાદીએ પોતપોતાના મોટા પુત્રને બેસાડો અને પછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં બેસો. (दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह) અને મારી પાસે આવો.

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति)

મલ્લી અરિહંતની આ વાતને બધા જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્વીકારી લીધી.

तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू० गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु, पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विउलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરહંતે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને પોતાની સાથે લીધા અને લઈને તેઓ જ્યાં કુંભક રાજા હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને કુંભક રાજાના ચરણોમાં વંદન કરાવ્યાં.

કુંભક રાજાએ પણ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓનો વિપુલ અશન વગેરે ચાર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ङ्कारेण सत्करोति, यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः कुम्भकेन राज्ञा विसर्जिताः सन्तः, यत्रैव स्वानि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वानि २ राज्यान्युपसंपद्य विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अर्हन् संवच्छरावसाणे 'संवत्सरावसाने=वर्षपूर्तौ सत्यां ' निक्खमिस्सामि ' त्ति ' निष्क्रमिष्यामीति दीक्षां ग्रहीष्यामीति मनसि प्रधारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुंभक राजाने भी उन जितशत्रू प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प; वस्त्र; गंध माल्यादि से सत्कार किया । (जाव पडिविसज्जेइ) यावत फिर उन्हे विसर्जित कर दिया । (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति तएणं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे णिक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ) कुंभक राजा के द्वारा विसर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहां अपने २ राज्य और उन में भी जहां अपने ५ महल थे वहां आये । वहां आकर वे सब अपने २ राज्य कार्यों मेंसंलग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूँगा ऐसा मल्लि प्रभुने निश्चित विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

આહારથી તેમજ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય વગેરેથી સત્કાર કર્યો. (जाव पडिविसज्जेइ) ત્યારબાદ તેઓને વિદાય કર્યા.

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तएणं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे णिक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ)

કુંભક રાજાને ત્યાંથી વિદાય થઇને જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોતપોતાનું રાજ્ય અને તેમાં પણ જ્યાં પોતપોતાના મહેલો હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઇને તેઓ બધા પોતપોતાના રાજકાજમાં પરોવાઈ ગયા.

એક વર્ષ પછી દીક્ષા ધારણ કરીશ, મલ્લી પ્રભુએ આ જાતનો નિશ્ચય વિચાર કરી લીધો હતો. ॥ સૂત્ર " ૩૬ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्सासणं चलइ, तएणं सक्के देविंदे३ आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणंसि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं३ अरहंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलित्तए, तं जहा–

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडिओ ।
असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवराएणं एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जंबूदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आसियं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरेइ, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेह, तएणं ते जंभगा देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ, तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागअहो पायरा सो त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयइ, तएणं से कुंभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ२ तहिं२ देसे२ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छंति तं जहा—पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं४ परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ-एवं भासइ, एवं पन्नवेइ,एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणु० ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं४ बहुणं समणाण य जाव परिविसज्जइ।

" वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जइ बहुविहीयं ।
सुरअसुरदेवदाणव नरिंद महियाणं निक्खमणे ॥१॥

तएणं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्निकोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडिओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थ संपयाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३७ ॥

टीका—' तेणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौधर्मकल्पे शक्रस्य=इन्द्रस्य आसनं चलति, ततः खलु शक्रो देवेन्द्रः=देवानां मध्ये परमैश्वर्यवान् देवराज आसनं चलितं पश्यति, दृष्ट्वा ' ओहिं ' अवधिं ' पउंजइ ' प्रयुङ्क्ते, केन कारणेन ममासनं चलतीत्येतस्मिन् विषये स्वकीयोपयोगं ददाति इत्यर्थः । प्रयुज्य=अवधिज्ञानेन ' आभोएइ ' आभोगयति=विलोकयति, मल्ली अर्हन् संप्रति

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (सक्कस्सासणं चलइ) इन्द्र का आसन चलायमान हुआ (तएणं सक्के देविंदे देवराया आसणं चालियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ) देवों के बीच में परम ऐश्वर्यवान्

" तेणं कालेणं तेणं समएणं " इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते કાળે અને તે વખતે (सक्कस्सासणं चलइ) ઇન્દ્રનું આસન ચલાયમાન થયું.

(तएणं सक्के देविंदे देवराया आसणं चालियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निष्क्रमणं कर्तुमुद्यक्तो वर्तत इति विजानाति स्मेत्यर्थः । 'आभोइत्ता' आभोगं कृत्वा 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः, आध्यात्मिकः=आत्मनिष्ठः, यावत् संकल्पः समुदपद्यत=संजातः-एवं खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बूद्वीपे भारते भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते, वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो भवने मल्ली अर्हन् मनसि प्रधारयति-"निष्क्रामिष्यामि=अहं दीक्षां ग्रहीष्यामि"

शक्र देवराज ने ज्यों ही अपने आसन को चलायमान देखा-तो देख कर उसने अपने अवधिज्ञान को जोडा-जोड कर मल्ली अरिहंत को उसने अवधिज्ञान से देखा।

यहां अवधिज्ञान को जोडने का तात्पर्य यह है कि जब इन्द्रने अपने आसन को चलायमान देखा तो "किस कारण से मेरा आसन कंपायमान हो रहा है" इस विषयमें अपने उपयोग को लगाया। इस प्रकार से अवधिज्ञान-उपयोग का लगाना ही अवधिज्ञान का जोडना है। (आभोइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था-एवं खलु जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रण्णो भवणंसि मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेइ) मल्ली अरिहंत संप्रति निष्क्रमण करने के लिये उद्युक्त हो रहे है-ऐसा जान करके उसके मन में इस प्रकार का यह मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-इस जंबूद्वीप नामके द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नामकी नगरी में कुंभक राजा के भवन

બધા દેવોમાં પરમ ઐશ્વર્યવાન દેવરાજ ઈન્દ્રે જ્યારે પોતાનું આસન ડોલતું જોયું ત્યારે તેઓએ અવધિજ્ઞાનના સંબંધથી મલ્લી અરહંતને જોયા.

અહીં અવધિજ્ઞાનને જોડવાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે ઈન્દ્રે પોતાના આસનને ડગમગ થતું જોયું ત્યારે શા કારણથી મારું આસન ડોલતું થયું છે?" આ વિશે પોતાનો ઉપયોગ (ધ્યાન) ને લગાવ્યો. આ રીતે અવધિજ્ઞાનને ઉપયોગમાં લગાવવું જ અવધિજ્ઞાનને જોડવું તેમ કહેવાયછે.

(आभोइत्ता, इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था एवं खलु जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रण्णो भवणंसि मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेइ)

મલ્લી અરિહંત હવે નિષ્ક્રમણના માટે તૈયાર થઈ રહ્યાં છે. આમ જાણીને તેના મનમાં આ જાતનો મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં, મિથિલા નામની નગરીમાં, કુંભકરાજાના ભવનમાં મલ્લીનામના અરિહંત પ્રભુ "હું દીક્ષા ધારણ કરીશ?" આ પ્રમાણે વિચાર કરી રહ્યાં છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेयं' जीतमेतत्-जीतं-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां =भूतवर्तमानभाविनां, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम् यद्-अर्हतां भगवतां निष्क्रामतामिमामेतद्रूपां=वक्ष्यमाणाम् 'अत्थसंपयाणं' अत्थसंपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसंपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो निष्क्रमणाभिमुखा भवन्ति, तदा तेषां मातापित्रोर्गृहेऽर्थसंपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः। इन्द्राः कियद्द्रव्यं ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-तं जहा-इत्यादि-तद् यथा ।

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥
त्रीण्येव च कोटिशतान्यष्टाशीतिश्च भवन्ति कोट्यः ।
अशीतिश्च शतसहस्राणि इन्द्रा ददति अर्हताम् ॥ १ ॥

त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीति कोट्यः, अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थंकराणां निष्क्रमणे वार्षिकदानाय दातव्यानि भवन्ति तानीन्द्रा अर्हतां भवने ददति=अर्पयन्ति ।

में मल्ली नाम के अरिहंत प्रभु "मैं दीक्षा धारण करूँगा" ऐसा विचार कर रहे हैं (तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थ संपयाणं दलित्तए) इस लिये कालत्रयवर्त्ती देवेन्द्रों का परम्परागत यह आचार है कि वे दीक्षा लेने के लिये तत्पर हुए तीर्थंकर प्रभुओं के माता पिताओं के घर अर्थ संपत्ति प्रदान करें देवेन्द्र जो अर्थ संपत् प्रदान करते हैं (तं जहा) उस का प्रमाण इस प्रकार है तीन सौ करोड, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें । वार्षिक दान में तीर्थंकरों के निष्क्रमण के समय में इतना द्रव्य इन्द्र उन के भवन पर लाकर रखतें हैं ।

(तं जीयमेयं तीय पच्चुपन्नमणा गयाणं सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणानां इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलित्तए)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરંપરાથી ચાલતો આવેલો આ પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થંકર પ્રભુઓના માતા-પિતાઓને અર્થ સંપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સંપત્તિ અર્પે છે (तं जहा) તેનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે. " ત્રણસો કરોડ, ઇક્યાશી કરોડ અને એંશી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ. વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं संपेक्षते=विचारयतिस्म। संपेक्ष्य वैश्रमणं देवं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय! एवं खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हतां भगवतां निष्क्रमतां त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटीः अशीतिशतसहस्राणि दातुं सर्वेषामिंद्राणां मर्यादाऽस्तीति भावः। तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकभवने इमामेतद्रूपामर्थसंपदं खलु 'साहराहि' संहर=मापय। संहृत्य क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तियं' आज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पणं कुरु।

ततस्तदनन्तरं खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एवं "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया। कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुबेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया। जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए) हे देवानुप्रिय! इस जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है। उस के राजा कुंभक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं। इसलिये इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

તે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए)

હે દેવાનુપ્રિય! આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં મિથિલા નામની નગરી છે. ત્યાંના રાજા કુંભકના મહેલમાં મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે. તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યાં છે. એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પરંપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇંકયાશી કરોડ અને એંશી લાખ સોના મહોરો વાર્ષિક દાનના રૂપમાં તેમને ત્યાં ઘેર પહોંચાડે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूयं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो भवने–त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्रूपामर्थसंपदं " साहरह " संहरत=प्रापयत संहृत्य ममाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत । ततः खलु ते जृम्भकादेवाः, ' वेसमणेणं ' वैश्रमणेन=एवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्टा यावत् प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, ' उत्तरपुरत्थिमं ' उत्तर पौरस्त्यम्=ईशानकोणरूपं ' दिसीभागं ' दिग्भागम् , ' अवक्कमंति ' अवक्रामन्ति, गच्छन्ति, अवक्रम्य=गत्वा यावत्–' उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं ' उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकुर्वन्ति विकुर्वणां कुर्वन्ति ' विकुर्वित्ता ' विकुर्वित्वा, ' विकुर्व ' इति सौत्रो धातुः, तेन स्वत्व न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि 'वीइवयमाणा' व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारतं वर्षं, यत्रैव मिथिला राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं, तत्रैवोपागच्छंति, उपागत्य कुम्भकस्य राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्–अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिलक्षाणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पदं ' साहरंति ' संहरन्ति=प्रापय । संहृत्य–यत्रैव वैश्रमणो देवस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं

कर पहुँचावें (तं गच्छहणं देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थ संपदाणं साहराहि) अतः हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ–और जंबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुंभक राजा के भवन पर इतनी पूर्वोक्त अर्थ संपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो । (तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवराएणं एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(तं गच्छहणं देवाणुप्पिया ' जंबू दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभग भवणंसि इमेयारूवे अत्थसंपदाणं साहराहि)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જાઓ અને જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં વિદ્યમાન મિથિલા નગરીના કુંભક રાજાના ભવન ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થ સંપત્તિ એટલે કે દ્રવ્ય તેમને ત્યાં પહોંચાડો. (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि) પહોંચાડીને તમે અમને સૂચિત કરો.

(तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवराएणं एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृत्वा यावत्-प्रत्यर्पयन्ति, भवदीयाज्ञानुसारेण सर्वंसाधितमस्माभिरिति निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तरं खलु स वैश्रमणो देवो यत्रैव शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं दशनखं यावत् प्रत्यर्पयन्ति।

गये उस वैश्रवण देव ने हर्षित एवं संतुष्ट होते हुए अपने दोनों हाथों की अंजलि बना कर उसे मस्तक पर रक्खा और नमस्कार कर देवेन्द्र की बात स्वीकार कर ली। "मैं ऐसा ही करूँगा" इस प्रकार कह कर उस ने उन की आज्ञा मान ली।

(पडिसुणित्ता जंभए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जंबूदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थ संपयाणं साहरेह) आज्ञा मानकर फिर उस ने जृंभकदेवों को बुलाया और बुला कर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम जंबूद्वीप नाम के इस द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्रान्तर्गत मिथिला नाम की राजधानी में जाओ-और जाकर वहां के कुंभक राजा के महल में तीन सौ अट्ठासी करोड़ ८०, अस्सी लाख सुवर्ण दीनारें पहुँचाओ (साहरित्ता) पहुँचा कर (मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेह) फिर मुझे इस आज्ञा पूर्ति की पीछे खबर दो। (तएणं

શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજ વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલા વૈશ્રવણ-દેવ-કુબેર હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને પોતાના બંને હાથોની અંજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને દેવેન્દ્રની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. "હું આમ જ કરીશ" આ પ્રમાણે કહીને તેમની તેણે આજ્ઞા સ્વીકારી.

(पडिसुणित्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जंबूदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरेह)

આજ્ઞા સ્વીકારીને તેણે જૃંભક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં વર્તમાન મિથિલા નામની રાજધાનીમાં જાઓ અને જઈને ત્યાંના કુંભક રાજાના મહેલમાં ત્રણસો કરોડ, ઇકયાશી કરોડ, એંશી લાખ સોના મહોરો પહોંચાડો. (मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेह) પહોંચાડયા બાદ મારી આજ્ઞા પ્રમાણે સંપૂર્ણપણે કામ પૂરું થઈ ગયું છે તેની મને ખબર આપો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते जंभगा देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं, रूवाइं विउव्वंति) इस के बाद वैश्रमण देव के द्वारा इस तरह अज्ञापित हुए उन जृंभक देवो ने हर्षित एवं संतुष्ट होकर उस की आज्ञा को मान लिया-स्वीकार कर लिया-। स्वीकार कर वे ईशान कोण की ओर गये। वहां जाकर उन्हों ने उत्तर वैक्रिय रूपों की विकुर्वणा की-(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति) विकुर्वणा करके फिर वे उस देव गति संबन्धी उत्कृष्ट गति से यावत् चलते हुए जहां जंबूद्वीप नाम का द्वीप भारत वर्ष नाम का क्षेत्र, उस में भी जहां मिथिला नाम की राजधानी उसमें भी जहां कुंभक राजा का राज प्रासाद था-वहां आये।

(उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति) वहां आकर उन्हों ने कुंभक राजा के भवन में तीनसौ अट्ठासी करोड और ८०लाख सुवर्ण दीनारसे भंडार भर दिया। (साहरि-

---

(तएणं जंभगा देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता जाव उत्तर-वे उव्वियाइं रूवाइं विउव्वं ति)

ત્યારબાદ વૈશ્રવણ દ્વારા આજ્ઞાપિત થયેલા જંભક દેવોએ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઇને તેની આજ્ઞાને માની લીધી એટલે કે તેની આજ્ઞા સ્વીકારી. સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ ઇશાન કોણ તરફ ગયા. ત્યાં જઇને તેઓએ ઉત્તર વૈક્રિય રૂપોની વિકુર્વણા કરી.

(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति)

વિકુર્વણા કર્યા પછી તેઓ દેવગતિ સંબંધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી ચાલતાં જ્યાં જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર અને તેમાં પણ જ્યાં મિથિલા નામની રાજધાનીમાં કુંભક રાજાનો મહેલ હતો ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति) ત્યાં જઇને તેઓએ કુંભક રાજાના મહેલમાં ત્રણસો એકયાશીકરોડ અને એંશી લાખ સોનામહોરો ભંડાર-ખજાનામાં મૂકી દીધી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् ' कल्लाकल्लिं ' कल्याकल्ये=प्रतिदिवसं ' जाव मागहओ पायरासोत्ति ' यावत्-मागधकं प्रातराशं, मगधदेशसम्बन्धिनं प्रातराशं -प्राभातिकं भोजनकालं यावत् आरभ्य प्रहरद्वयपर्यन्तं बहुभ्यः ' सणाहाण य ' सनाथेभ्यः-स्वस्वामिकेभ्यश्च ' अणाहाण य ' अनाथेभ्यश्च=रङ्केभ्यश्च, ' पंथियाण य ' पान्थिकेभ्यः पन्थानं नित्यं गच्छन्तीति पान्थास्त एव पान्थिकास्तेभ्यश्च, ' पहियाण य ' पथिकेभ्यः-पथि गच्छन्तीति पाथिकास्तेभ्यश्च, 'करोडियाण य ' कारोडिकेभ्यः=करोटया कपालेन चरन्तीति करोटिकास्तेभ्यश्च, ' खप्परधारी ' इतिभाषाप्रसिद्धेभ्यश्च, ' कप्पडियाण य ' कार्पटिकेभ्यः-कर्पटंश्चरन्तीति कार्पटिकास्तेभ्यः, कन्थाधारि-भिक्षुकेभ्यः, एकमेकहिरण्यकोटिम्, तथा-' अट्ठ च

त्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति) रखकर फिर वे जहां वैश्रमण देव था वहां गये वहा जाकर उन्हों ने हाथ जोडकर " आपकी आज्ञानुसार हमने कुंभक राजा के भवन अर्थ संपदा पहुँचा दी है, ऐसी खबर उसे पीछे कर दी। (तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथिया य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठय अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थ संपदाणं दलयइ) इसके बाद मल्ली अरिहंत प्रभु ने कल्याकल्य-प्रतिदिन प्रातः समय से लेकर दोपहर तक अपने सनाथों को, अनाथों को, पन्थिकों को, पथिकों, खप्पर धारियो को, कन्था धारियों को प्रतिदिवस १ वर्ष तक १ करोड ८० अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें दीं।

(साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति)

મૂકયા પછી તેઓ જ્યાં વૈશ્રમણ દેવો હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેઓએ હાથ જોડીને " તમારી આજ્ઞા મુજબ અમોએ કુંભક રાજાના ભવનમાં અર્થ-સંપત્તિ પહોંચાડી દીધી છે. " આ પ્રમાણેની સૂચના કરી.

(तएणं मल्ली अरहा ! कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूणं सणाहाणा य अणाहाण य पंथियाणय परियाण य करोडियाण य कप्पडियाणय एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરહંત પ્રભુએ કલ્યાકલ્ય દરરોજ સવારના વખતથી માંડીને બપોરસુધી ઘણા સનાથોને, અનાથોને, પંથોને અને પથિકોને, ખપ્પરધારીઓને, કન્યાધારીઓને એક વર્ષ સુધી એક કરોડ એંશી લાખ સોના મહોરો આપી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि '=लक्षाणि एककोटिमष्टलक्षाणि च स्वर्णदीनाराणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पदं ' दलयइ ' ददाति ।

ततस्तदनन्तरं खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्यां तत्र तत्र=अवान्तरपुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे=शृङ्गाटकादौ बह्वीर्महानसशालाः ओदनादीनां पाकगृहाणि=कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथंभूता इत्याह-' दिण्ण भइभत्तवेयणा ' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यं भोजनस्वरूपं वर्तनं मूल्यं येभ्यस्ते तथा, यद्वा-भृत्तिर्भरणं पोष्यवर्गार्थमन्नादिकं, भक्तं-स्वभोजनार्थं, वेतनं-अशनादि संस्कारकरणपारिश्रमिकं च तानि दत्तानि भृतिभक्तवेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यम्-' उवक्खडेंति ' उपस्कुर्वन्ति चतुर्विधाहारं निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति ' तंजहा ' तद् यथा-

---

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहां पान्थिक शब्द से, तथा जब कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए हैं। (तएणं से कुंभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थणं बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुंभक राजा ने मिथिला राजधानी में जहां तहां अवान्तर पुर आदि में-उस प्रदेश में शृंगाटक आदि रास्तों में अनेक रसोई घर स्थापित करवा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे।

इसके उपलक्ष्य में उन्हे तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहां से भोजन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहां से वेतन भी मिलता था। वे विपुल मात्रा में अशन पान, खाद्य, स्वाद्य तथा रूप

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાંથિક' શબ્દથી તેમજ કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવાં જોઇએ.

(तएणं से कुंभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थणं बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ)

ત્યારબાદ કુંભક રાજાએ મિથિલા નગરીમાં બધે અવાન્તરપુર વગેરેમાં તે પ્રદેશોમાં શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમાં ઘણાં રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યાં. તેઓમાં ઘણા રસોઇયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં ચારે જાતના આહારો તૈયાર કરતા હતા.

જેના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી ભોજન મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો. તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદના રૂપમાં ચાર જાતના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान्थिका वा, पथिका वा करोटिका वा कार्पटिका वा 'पासंडत्था वा' पाखण्डस्थाः पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगतानां, चकारः-समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखासनवरगतस्य तद् विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्तः =विभागं कुर्वन्तः 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्तः विहरन्ति=ये खलु मिथिलानगर्यां तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषणं कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः।

ततस्तदनन्तरं खलु मिथिलायां शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य =परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एवं 'भासइ' भाषते, साश्चर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वहां जो जैसे आते थे (तंजहा) यथा -चाहे वे (पंथियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा) पांथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर धारी भिक्षुक हो चाहे कंथाधारी भिक्षुक हो पाखंडी धर्म में स्थित हो, चाहे गृहस्थजन हो, (तेसिंय-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरंति) उन सबको तथा अन्य और भी उस उस देश में रहे हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को, विश्वस्तों को, एवं सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप आहार को बाँट देते थे तथा वहीं पर जिमा देते थे।

(तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ,-एवं खलु देवाणु०!

આહારો તૈયાર કરીને ત્યાં ગમે તેવા માણસો આવતા (तं जहा) જેમકે (पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा) પાંથિક જન, ખપ્પરધારી ભિક્ષુક, કંથાધારી ભિક્ષુક, પાખંડી ધર્મને આચરનારા અને ગૃહસ્થીઓ ગમે તે જાત પંથના લોકો ત્યાં આવતા.

(तेसिंय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं ४ परिभाएमाणा परिवेसेणा विहरंति)

તેઓ બધાને તેમજ તે દેશમાં રહેનારા બીજા ઘણા માણસોને, આશ્વસ્થોને, વિશ્વસ્તોને અને સુખાસનવર ગતોને તે પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવવામાં આવેલો આહાર વહેંચવામાં આવતો હતો તેમજ તેઓને ત્યાંજ જમાડવામાં પણ આવતા હતા.

(तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहु जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ,एवं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोजनदानं, न श्रुतं नापिदृष्टमित्याश्चर्यपूर्वकं वर्णयतीत्यर्थः। एवं 'पन्नवेइ' प्रज्ञापयति विस्तारेण बोधयति, एवं 'परूवेइ' प्ररूपयति-सदृष्टान्तं वर्णयति, किमाख्यातीत्याह-'एवं खलु' इत्यादि-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! कुम्भकस्य राज्ञो भवने 'सव्वकामगुणियं' सर्वकामगुणितं=सर्वेन्द्रियसुखजनकं 'किमिच्छयं' किमिच्छकम्=इच्छानुसारं विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यं बहुभ्यः श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च, यावत् यथा समागतेभ्यः सनाथानाथपान्थिकादिभ्यः परिवेष्यते।

"वरवरिया घोसिज्जइ किमिच्छयं दिज्जए बहुविहीयं।
सुरअसुरदेवदाणव नरिंदमहियाण निक्खमणे ॥१॥"

'वरवरिया' वरवरिका-वर वर=याचस्व याचस्व इति घोषणा, 'घोसिज्जइ'

कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्व कामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ बहूणं समणाणंय जाव परिवेसिज्जेइ) इस कारण मिथिलो नगरी में शृंगाटक आदि स्थानों पर अनेक जन मिल २ कर एक दूसरे से ऐसा कहने लगे, आश्चर्य युक्त होकर इस प्रकार बोलने लगे-विस्तार पूर्वक इस प्रकार एक दूसरे को समझाने लगे, तथा दृष्टान्त देकर २ इस प्रकार वर्णन करने लगे-हे देवानुप्रियों! कुंभक राजा के भवन पर सर्वेन्द्रिय सुख जनक, अशन पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार अनेक श्रमणों के लिये, ब्राह्मणों के लिये यावत् समागतों के लिये, सनाथों अनाथों के लिये और पांथिकोदिकों के लिये इच्छानुसार दिया जाता है (वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहू विहीयं, सुर असुर देव दाणवनरिंद महियाण निक्खमणे) सुर असुर, देव, दानव, एवं नरेन्द्रों द्वारा पूज्य तीर्थंकरों के निष्क्रमण के

भासइ एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणु० ? कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं४ बहूणं समणाणं य जाव परिवेसिज्जेइ)

એના લીધે મિથિલા નગરીના શૃંગાટક વગેરે સ્થાનોમાં નાગરિકોનાં ટોળે ટોળાં એકઠાં થઇને આશ્ચર્ય પામતાં વિસ્તારપૂર્વક એક-બીજાને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યાં, સમજાવવા લાગ્યાં તેમજ દૃષ્ટાન્તો આપીને આ પ્રમાણે વર્ણન કરવા લાગ્યાં કે હે દેવાનુપ્રિયો! કુંભક રાજાના મહેલમાં સર્વેન્દ્રિય સુખજનક અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતનો આહાર ઘણા શ્રમણો, બ્રાહ્મણો, સમાગતો, સનાથો, અનાથો અને પાંથિકો વગેરેને માટે ઇચ્છા મુજબ આપવામાં આવે છે.

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं, सुर असुर देव, दाणवनरिंदं महियाण निक्खमणे)

સુર, અસુર, દેવ, દાનવ અને નરેન્દ્રોવડે પૂજ્ય તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના સમયે "માંગો, માંગો" આ જાતની ઘોષણા કરવામાં આવી છે અને ઘણી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोष्यते किमिच्छयं=किमिच्छकम् इच्छानुसारं दीयते बहुविधिकम् । सुरासुरदेव दानवनरेन्द्र महितानां=अर्हतां तीर्थंकराणां निष्क्रमणे ॥ १ ॥

ततः खलु मल्ली अर्हन् अस्य–' मणं पहारेइ ' मनसि प्रधारयति, इत्यनेन सम्बन्धः । किं प्रधारयतीत्याह–'संवच्छरे' संवत्सरे खलु त्रीणि कोटिशतानि अष्टादश च भवन्ति कोट्यः । अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थंकरनिष्क्रमणे दातव्यानि भवन्ति इमामेतद्रूपामर्थसंपदं खलु दत्वा निष्क्रमामि दीक्षां ग्रहीष्यामि इति ॥ सू० ३७ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे सएहिं२ विमाणेहिं सएहिं२ पासायवडिंसएहिं पत्तेयं२ चउहिं सामाणियसाहस्सीहि तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहिं य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सहिं संपरिवुडा महया हयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं

समय में " मांगो मांगो " ऐसी घोषणा कराई जाती है और अनेक प्रकार का किमिच्छक (तुम्हारी क्या इच्छा है) दान भी दिया जाता है । (तएणं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थ संपयाणं दलइत्ता निक्खमोमित्ति मणं पहारेइ) अबमल्ली अरिहंत ने " एक साल में तीन सौ करोड़–तीन अरब अट्ठासी करोड़ ८० लाख स्वर्ण दीनारें तीर्थंकर निष्क्रमण (दीक्षा अवसर पर) में दातव्य होती हैं सो मैं इतनी अर्थ संपत्ति देकर दीक्षा ग्रहण करूँगा " ऐसा मन में निश्चित विचार किया । सूत्र " ३७ "

જાતનું ' કિમિચ્છક ' (તમારી શું ઇચ્છા છે ?) દાન પણ આપવામાં આવે છે.

(तएणं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलइत्ता निक्खमो मित्तिमणं पहारेइ)

હવે મલ્લી અરહંતે " એક વર્ષમાં ત્રણસો કરોડ, ત્રણ અબજ, અઠયાશી કરોડ એંશી લાખ સોના મહોરો તીર્થંકર નિષ્ક્રમણ (દીક્ષાના સમયે) માં આપવામાં આવે છે તો હું આટલી અર્થ સંપત્તિ આપીને જ દીક્ષા ગ્રહણ કરીશ " આ પ્રમાણે મનમાં ચોક્કસપણે વિચાર કર્યો. ॥ સૂત્ર " ૩૭ "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुंजमाणा विहरंति, तं जहा–' सारस्सयमाइच्चा वण्हि–वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाय ॥ १ ॥ " तएणं तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं२ आसणाइं चलंति तहेव जाव अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्त एत्ति तं गच्छामो णं अम्हेवि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमि त्तिकट्टु एवं संपेहेंति, संपेहित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एवं वयासी–बुज्झाहिं भयवं! लोगनाहा! पवत्तेहिं धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति, वयित्ता मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया । तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं करेहि, तएणं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के३ आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लिं अरहं सीहासणं पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचइ, तएणं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सब्भिंतरबाहिरियं जाव सव्वओ समंता परिधावंति, तएणं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति. तएणं सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगखंभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा ॥सू०३६॥

टीका—' तेणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये लोकान्तिका देवा ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानप्रतरे स्वकेषु स्वकेषु विमानेषु स्वकेषु

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पेरिट्ठविमाण पत्थडे) लोकान्तिक देवों के जो ब्रह्मलोक नाम के कल्प में स्थित रिष्ट विमान पाथडे में वर्तमान

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) इत्यादि ।

ટીકાર્થ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे) લૌકાંતિક દેવો કે જેઓ બ્રહ્મલોક નામના કલ્પમાંસ્થિત રિષ્ટ પાથડામાં રહેલા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वकेषु प्रासादावतंसकेषु प्रत्येकं२ चतुर्णां सामानिकसहस्रैः, तिसृभिः परिषद्भिः सप्तभिरनीकैः=हस्त्यश्वरथपदातिमहिषगन्धर्वनाट्यरूपैः सप्तकटकैः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिरात्मरक्षकदेवसहस्रैः, अन्यैश्च बहुभिर्लौकान्तिकैर्देवैः सार्धं संपरिवृताः, 'महया' महता 'अहयनट्टगीयवाइय रवेणं' अहत नृत्यगीतवादित्ररवेण=अहतः=अप्रतिहतः, नृत्यगीतवादित्राणां यो रवः = मधुरध्वनिस्तेन भोगभोगान्=दिव्यसुखभोगान्=भुञ्जाना विहरन्ति–आसते। तद्यथा-तेषां नामान्याह–

"सारस्सयमाइच्चा, वह्नि वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेवरिट्ठा य ॥१॥" इति ॥

(१) सारस्वताः, (२) आदित्याः, (३) वह्नयः, (४) वरुणाश्च, (५) गर्दतो-

(सएहिं २ विमाणेहिं, सएहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेयं २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहिं बहूहिं लोगंतएहिं देवेहिं सहिं संपरिवुडा) अपने २ विमानों में रहे हुए अपने २ श्रेष्ठ प्रासादों में अलग २ चार २ हजार सामानिक देवों के साथ, तीन २ परिषदाओं के साथ, सात २ अनीकों के साथ, सात २ अनीकाधिपतियों के साथ सोलह २ आत्म रक्षक देवों के साथ तथा और भी अन्य लोकान्तिक देवों के साथ रहते हैं (महया हयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति) एवं जो नृत्य गीत, तथा बाजों की अप्रितिहत ध्वनि पूर्वक दिव्य भोगों भोगा करते हैं। (तं जहा) इन लौकान्तिक देवों के आठ भेद होते हैं वे आठ भेद ये हैं– १ सारस्वत २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण–५ गर्दतोय, ६ तुषित,

(सएहिं, २ विमाणेहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेयं २ चउहिं समाणिय साहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं आयरक्खदेव साहस्सीहिं अन्नेहिं बहूहिं लोगंतएहि देवेहि सहिं सं परिवुडा)

પોતપોતાના વિમાનોમાંના ઉત્તમ પ્રાસાદોમાં જુદાજુદા ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે, ત્રણ ત્રણ પરિષદાઓની સાથે, સાત સાત અનીકોની સાથે, સાત સાત અનીકાધિપતીઓની સાથે, સોળ સોળ આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ લૌકાંતિક દેવોની સાથે રહે છે

(महया हयनट्टगीय वाइय जाव रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति)

અને જેઓ નૃત્ય, ગીત તેમજ વાજાંઓની અપ્રહિત ધ્વનિપૂર્વક દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતા રહે છે. (तं जहा) આ લૌકાંતિક દેવોના આઠ ભેદો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે–૧ સારસ્વત, ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ, ૪ વરુણ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याश्च, (६) तुषिताः, (७) अव्याबाधाः, (८) आग्नेयाश्च, एतेऽष्टौ कृष्णराज्य-वकाशान्तरस्थायि-विमानाष्टकवासिनः, तथा (९) रिष्टाश्च = रिष्टाख्यविमान-प्रतरवासिनः।

ततस्तदनन्तरं खलु तेषां लोकान्तिकानां देवानां प्रत्येकं२ आसनानि चलन्ति तथैव यावत्-सौधर्मेन्द्रवद्देवावधिं प्रयुञ्जते, प्रयुज्य मल्लीमर्हन्तमाभोगयति ततः खल्वेवं संकल्पः समुदपद्यत-मल्ली अर्हन्निष्क्रमितुमिच्छति, एवं मर्यादाऽस्ति

७ अव्याबाध ८ आग्नेय ये आठ लौकान्तिक देव कृष्ण राज्य..... भिन्न २ आठ विमानों में रहते हैं। तथा जो रिष्ट हैं वे रिष्ट नामक विमान प्रतर में रहते हैं। (तएणं) सो (तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं २ आसणाइं चलंति) इन लौकान्तिक देवों के प्रत्येक के आसान कंपित हुए।

(तहेव जाव अरहंताणं देवाणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामोणं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमि त्तिकट्टु एवं संपेहेंति) अतः इन्हों ने सब ने अपने २ अवधिज्ञान से विचार किया कि हमारे आसन कंपित क्यों हुए हैं सो जिस तरह से सौधर्मेन्द्र ने अपने आसन कंपित होने का कारण जान लिया था उसी प्रकार इन्हों ने भी जान लिया। इस तरह कारण जानकर इन्हों के मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि मल्ली अर्हन् घर से निकल ने की-दीक्षा अंगीकार करने की इच्छा कर रहे हैं-सो हम लौकान्तिक देवों की ऐसी

૫ ગર્તતોય, ૬ તુષિત, ૭ અવ્યાબાધ, ૮ આગ્નેય. એ આઠ લૌકાંતિક દેવ કૃષ્ણરાજ્ય.....જુદા જુદા આઠ વિમાનોમાં રહે છે. તેમજ જે રિષ્ટ છે તેઓ રિષ્ટ નામક વિમાન પ્રતરમાં રહે છે. (तएणं) તો આ પ્રમાણે (तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं २ आसणाइं चलंति) આ બધા લૌકાંતિક દેવોમાંથી દરેકના આસનો ડોલવા માંડયાં.

(तहेव जाव अरहंताणं देवाणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामोणं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमि त्ति कट्टु एवं संपेहेंति)

એટલા માટે આ બધા દેવોએ પોતપોતાના અવધિજ્ઞાન વડે વિચાર કર્યો કે અમારા આસનો શા માટે ડોલવા માંડયા છે? તો જેમ ઇન્દ્રે પોતાના આસનને ડોલવાનું કારણ જાણ્યું હતું તે પ્રમાણે આ બધાઓએ પણ જાણી લીધું.

આ પ્રમાણે કારણની ખાત્રી કરીને તેમના મનમાં આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો કે મલ્લી અર્હન્ ઘરથી નીકળી જવાની-દીક્ષા સ્વીકારવાની ઇચ્છા કરી રહ્યાં છે, તો આ સમયે અમારા જેવા બધા લૌકાંતિક દેવોની એવી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकान्तिकदेवानां, यद् अर्हतां निष्क्रामतां संबोधनं कर्तुमिति = दीक्षावसरं बोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गच्छामः खलु वयमपि मल्ल्या अर्हतो संबोधनं कुर्म इति कृत्वा एवं संप्रेक्षन्ते=विचारयन्ति संप्रेक्ष्य, उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम्= ईशानकोणम् अवक्रामन्ति, अवक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति उत्तरवैक्रियं कुर्वन्ति। समवहत्य संख्यातानि योजनानि यावत्–दण्डं निःसारयन्ति, दण्डं रत्नमयं कुर्वन्ति–कृत्वा च एवं यथा जृम्भकाः–जृम्भकदेववद् देवलोकसम्बन्धि दिव्यगत्या यावत्–यत्रैव मिथिला राजधानी यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नाः गगनस्थाः, सकि-

---

मर्यादा हैं कि वैराग्य की मन में भावना ज्यों ही तीर्थंकरों को आवे–तब उन्हें संबोधन करना–यह कहना कि भगवान्! यह दीक्षा के लिये उचित अवसर है। इसलिये हम लोग भी चलें और मल्ली अर्हंत को संबोधन करें। ऐसा विचार कर (उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति) वे सब के सब लोकान्तिक देव ईशान कोण में गये–वहां जाकर उन्हों ने वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की–विकुर्वणा कर के उन्हों ने समय दण्डाकार रूप में बाहर निकाला।

बाद में जृंभक देवों की तरह वे सब देव लोक संबन्धी उत्कृष्ट गति से जहां मिथिला राजधानी थी–उस में भी जहां कुंभक राजा का भवन

મર્યાદા (પ્રણાલિકા) હોય છે કે તીર્થંકરોના મનમાં જ્યારે વૈરાગ્યની ભાવના ઉદ્ભવે કે તરત જ તેમને સંબોધન કરવું–એટલે કે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરવી કે હે ભગવન! દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો આ ઉચિત અવસર (સમય) છે. એટલે અમે પણ ત્યાં જઈએ અને તેઓને સંબોધન કરીએ. આમ વિચાર કરીને

(उत्तर पुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमंति. अवक्कमित्ता, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता, संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति)

તેઓ બધા લૌકાંતિક દેવો ઈશાન કોણમાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે વૈક્રીય સમુદ્ઘાતથી ઉત્તર વૈક્રિયની વિકુર્વણા કરી, વિકુર્વણા બાદ તેમણે પોતાના આત્મપ્રદેશોને રત્નમય દંડાકાર રૂપમાં બહાર કાઢયા.

ત્યારપછી જૃંભક દેવોની જેમ તેઓ બધા દેવલોક સંબંધી ઉત્કૃષ્ટગતિથી જ્યાં મિથિલા રાજધાની હતી તેમાં પણ જ્યાં કુંભક રાજાનો મહેલ અને મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षिणीकानि=क्षुद्रघण्टिकायुक्तानि यावद् वस्त्राणि 'पवर परिहिया' प्रवरेण विधिना परिहिताः दिव्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, करतलपरिगृहीतदशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ताभिरिष्टाभि कमनीयाभिर्वाग्भिरेवमवादीत्–हे भगवन् ! हे लोकनाथ ! ' बुज्झाहि ' बोधय, भव्यजीवान् प्रवर्तय धर्मतीर्थचतुर्वर्धिसंघरूपं धर्मतीर्थप्रवर्तनस्य फलमाह—' जीवाणं ' इत्यादि, जीवानां ' हीयसुहनिस्सेयसकरं ' हितसुखनिश्रेयसकरं, हितकरं – नरकनिगोदादि दुःखनिवारकत्वात्,

था–उस में भी जहां मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये। (उवागंच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एवं वयासी–बुज्झाहिं भयवं। लोगनाहा ! पवत्तेहिं धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ) वहां आकर भी वे नीचे नहीं उत्तरे किन्तु आकाशमें अधर खड़े२ बोले। उस समय उन्हों ने बड़े सुन्दर वस्त्र जो कि क्षुद्र किंकिणियों से युक्त थे पहिर रखे थे। अधर रहे हुए ही उन्होंने दोनों हथोंकी अंजुलि बना और उसे मस्तक पर रख वहीं से मल्लि अर्हत को नमस्कार किया बाद में बडी मीठी २ मनोहर वाणियों द्वारा उन से इस प्रकार कहा–हे भगवान् हे लोक नाथ! भव्यजीवों को आप समझाओ चतुर्विध संघरूप धर्मतीर्थ की आप प्रवृत्ति करो। इससे जीवों नरक निगोद आदि के दुःखों से छुटकर वह धर्मतीर्थ हितकारी होगा। स्वर्ग आदि

(उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एवं वयासी बुज्झाहिं भयवं ! लोगनाहा पवत्तेहिं धम्मतित्थं जीवाणं हिय सुय निस्सेयसकर' भविस्सइ)

ત્યાં પહોંચીને તેઓ નીચે ઉતર્યા નહિ પણ આકાશમાં જ અદ્ધર ઊભા રહીને બોલ્યા–દેવોએ તે વખતે સુંદર વસ્ત્રો પહેરેલાં હતાં. તેમનાં વસ્ત્રો નાની નાની ઘૂઘરીઓથી શોભતાં હતાં. આકાશમાં અદ્ધર રહીને જ તેઓએ પોતાના બંને હાથોની અંજલી બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને ત્યાંથી જ મલ્લી અર્હંતને નમસ્કાર કર્યા. ત્યારપછી ખૂબ જ મીઠાં અને મનોહર વચનો દ્વારા તેઓ તેમને વિનંતી કરતાં કહેવા લાગ્યા–' હે ભગવન ! હે લોકનાથ ! તમે ભવ્યજીવોને જ્ઞાન આપો. ચતુર્વિધ સંઘ રૂપ ધર્મતીર્થની તમે પ્રવૃત્તિ કરો. એનાથી જીવોને નરક નિગોદ વગેરેના દુઃખોથી મુક્ત કરાવીને હિતકારી ધર્મ તીર્થ તરફ તેમને ઉન્મુખ કરો. તે ધર્મતીર્થ તે લોકોના માટે સ્વર્ગ વગેરેનો અમંદ (અતીવ) આનંદ આપનાર હોવાથી સુખકર થશે. તેમજ મુક્તિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखकरं स्वर्गापवर्गानन्दजनकत्वात्, निःश्रेयसकरं-मोक्षप्रापकत्वात्, भविष्यतीति कृत्वा=उक्त्वा, द्वितीयवारमपि, तृतीयवारमपि एवं वदन्ति, उक्त्वा, मल्लीम् अर्हन्तं वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव प्रतिगताः।

ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् तैर्लौकान्तिकैर्देवैः संबोधितः सन् यत्रैव मातापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरआवर्तं मस्त-

---

का अमन्द अत्यन्त अनन्द का प्रदाता होने से वह धर्मतीर्थ उन्हें सुख कर होगा। तथा मुक्ति प्राप्ति का कारण होने से वह धर्मतीर्थ उन भव्य जीवों को निःश्रेयसकर होगा (तिक्खुत्तो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति, वयित्ता मल्लिं अरहं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) इस प्रकार कह कर उन लोकान्तिक देवों ने दुबारा तथा तिबारा भी ऐसा ही कहा-कह कर फिर उन्हों ने मल्ली अरिहंत को वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये।

(तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छंति-उवागच्छित्ता करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणु० मा पडिबंधं करेहि) इस प्रकार उन लौकान्तिक देवों द्वारा संबोधित होते हुए वे मल्ली अरहंत जहां अपने माता पिता

મેળવવાનું કારણ હોવા બદલ તે ધર્મતીર્થ તે ભવ્ય જીવોના માટે નિઃશ્રેયસકર થશે.

(तिक्खुत्तो दोच्चंपि एवं वयंति, वयित्ता मल्लिं अरहं वंदंति, नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया)

આ રીતે કહીને તે લોકાંતિક દેવોએ બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ વિનંતી કરી વિનંતી કરીને મલ્લી અર્હંતને તે દેવોએ વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા.

(तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति-उवागच्छित्ता करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहा सुहं देवाणु० मा पडिबंधं करेहि)

આ પ્રમાણે લૌકાંતિક દેવો વડે સંબોધિત થતાં મલ્લિ અરહંત જ્યાં પોતાના માતાપિતા હતાં ત્યાં આવ્યાં. ત્યાં આવીને તેઓએ સૌ પહેલાં પોતાના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—इच्छामि खलु हे अम्ब ! हे तात ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजितुम् , मातापितरावूचतुः—हे देवानुप्रिय ! यथासुखं भवेत् तथा कुरु, मा प्रतिबन्धं=विलम्बं मा कुरु। ततः=मल्लीमर्हन्तमेवमुक्त्वा, खलु स कुम्भकः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेवाष्टसहस्रम्—अष्टाधिकसहस्रं(१००८) सौवर्णिकानां यावद्० अत्र यावदित्य

थे—वहां आये। वहां आकर उन्हों ने पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड कर चरणों में नमस्कार किया। बाद में वे बोले—कि हे अम्ब हे तात ! मैं आप लोगों से आज्ञा लेकर मंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती हूँ आपकी आज्ञासे मुझे दीक्षा लेना है इस प्रकार मल्ली अरिहंतकी बात सुन कर उन के माता पिता दोनों ने उन से "यथासुखं देवानुप्रिय !" जैसे तुम्हें सुख हो—तुम वैसा करो—देरी मत करो ऐसा कहा। (तएणं कुंभए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) इस के बाद कुंभक राजाने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुला कर उनसे ऐसा कहा—हे देवानु प्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही १००८ सुवर्ण निर्मित कलशों को रूप्यमय कलशोंको मणिमय कलशों का सुवर्ण रूप्य निर्मित कलशोंको, सुवर्ण मणि निर्मित कलशों को, रूप्यमणि निर्मित कलशों को, स्वर्ण,

માતાપિતાના ચરણોમાં નમસ્કાર કર્યા. ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યાં કે હે માતાપિતા ! હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને મુંડિત થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ચાહું છું. " મલ્લી અર્હંતના મોંથી આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને તેમના માતા પિતાઓએ તેમને કહ્યું " यथासुखं देवानुप्रिय ! " એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો અને મોડુ કરો નહિ.

(तएणं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति)

ત્યારપછી કુંભક રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક હજાર આઠ (१००८) સોનાના કળશો, ચાંદીના કળશો, મણિમય કળશો, સોના અને ચાંદીથી બનાવેલા કળશો, સોના અને મણિઓથી બનાવવામાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेनेदं बोध्यम्-रूप्यमयाणां, मणिमयानां. सुवर्णरूप्यनिर्मितानां सुवर्णमणिनिर्मितानां, रूप्यमणिनिर्मितानां, स्वर्णरूप्यरत्नमयानामिति। भौमेयानाम् पार्थिवानां घटानामिति अन्यच्च महार्थं यावत्-तीर्थकराभिषेकम् तीर्थकरनिष्क्रमणाभिषेकसाधनम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत, प्रापयत, यावत्-उपस्थापयन्ति।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये चमरोऽसुरेन्द्रः यावद्-अच्युत पर्यवसानाः= चमरेन्द्रादारभ्याच्युतेन्द्रपर्यन्ताश्चतुः षष्टि संख्यका इन्द्राः, आगताः। ततस्तदनन्तरं खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजः=सौधर्मेन्द्रः, आभियोगिकान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेवाष्टसहस्रं सौवर्णिकानां यावत्-अन्यच्च तद्

रूप्य, मणि निर्मित कलशों को मिट्टी के कलशों को तथा और भी महार्थ-महा प्रयोजन साधक भूत-तीर्थ कर-निष्क्रमणाभिषेक (दिक्षाके) साधनों को उपस्थित करो। राजा की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर उन लोगो ने आज्ञानुसार सब साधनों को उपस्थित कर दिया।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के३ आभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) उस काल में और उस समय में चरमेन्द्र से लेकर अच्युतेन्द्र पर्यन्त ६४ इन्द्र आ गये। इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र देव राज ने-सौधर्मेन्द्र ने-आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह, जाव उवट्ठवेंति) तुम लोग शीघ्र ही १००८, सुवर्ण आदि के निमित्त कलशों को तथा और भी विपुल मात्रा में तीर्थंकर

આવેલા કળશો, સોના ચાંદી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશો, માટીના કળશો તેમજ બીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થંકર નિષ્ક્રમણાભિષેકના સાધનો લાવો. રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ બધા સાધનો લઈ આવ્યા.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के ३ अभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માંડીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે ઇન્દ્રો આવી પહોંચ્યા.

ત્યારબાદ શક્ર દેવેન્દ્ર અને દેવરાજે-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति)

તમે લોકો સત્વરે એક હજાર આઠ (૧૦૦૮) સોના વગેરેથી બનાવવામાં આવેલા કળશો તેમજ બીજા પણ તીર્થંકરોના અભિષેક માટેનાં સાધનો પુષ્કળ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपुलं तीर्थकराभिषेकसाधनमुपस्थापयत, यावद्-उपस्थापयन्ति । तेऽपिदेवोपस्थापिताः सर्वेऽपि कलशास्तानेव-कुम्भकोपस्थापितानेव कलशान् अनुप्रविष्टाः, दिव्याः कलशा दिव्यानुभावेन कुम्भककलशेषु प्रविष्टास्तेन कुम्भककलशानां शोभतिशयः संजात इति भावः ।

ततस्तदन्तरं खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजः कुम्भको राजा च मल्लीमर्हन्तं सिंहासने पौरस्त्याभिमुखं=पूर्वदिशाऽभिमुखं निवेशयति=उपवेशयति । अष्टसहस्रेण=अष्टाधिकसहस्रेण, सौवर्णिकानां यावत् अभिषिञ्चति, अष्टाधिकसहस्रसंख्यकैः प्रत्येकं कलशैः सौवर्णिकादि स्नपयतीत्यर्थः ततस्तदनन्तरं खलु मल्ल्या भगवतो-

---

के अभिषेक के साधनों को उपस्थित करो । उन सब ने वैसा ही किया। (ते वि कलसा तेचेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लिं अरहं सीहासणं पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ) इस तरह कुंभक राजा द्वारा उपस्थापित कलशों के साथ २ वे सब दिव्य कलशएक जगह मिलाकर रख दिये गये ।

इससे कुंभक राजा के कलशों की शोभा और अधिक बढ गई । बाद में शक्र देवेन्द्र देवराज ने और कुंभक राजा ने मल्ली अर्हन्त को सिंहासनके उपर पूर्वाभिमुख करके बैठा दिया । (अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचइ, तएणं मल्लीस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिलं च सब्भिंतरबाहिरियं जाव सव्वओ समंता परिधावंति) बैठा ने के बाद फिर उन्हों ने उन१००८, सुवर्ण आदि के प्रत्येक कलशों से उनका अभिषेक किया ।

પ્રમાણમાં લાવો. તેઓ બધાએ તેમ જ કર્યું.

(ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लिं अरहं सीहासणं पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ)

આ રીતે કુંભકરાજા વડે મૂકાએલા કળશોની સાથે જ તે દિવ્ય કળશો પણ એક જ સ્થાને ગોઠવી દીધા.

એનાથી કુંભક રાજાના કળશોની શોભા ખૂબ જ વધી ગઇ. ત્યાર પછી શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજ અને કુંભક રાજાએ મલ્લી અર્હંતને સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ મોં રાખીને બેસાડી દીધાં.

(अट्ठ सहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचइ, तएणं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिलं च सब्भिंतरबाहिरियं जाव सव्वओ समंता परिधावंति)

બેસાડીને તેઓએ એક હજાર આઠ સોના વગેરેના દરેક દરેક કળશથી તેમનો અભિષેક કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऽभिषेके वर्तमानेऽप्येककाः=अन्येके-केचन देवाः मिथिलां राजधानीं च साभ्यन्तरं बाह्यं=अन्तर्बहिश्च यावत्-सर्वतः=समन्तात्=दिक्षु विदिक्षु परिधावन्ति=इषौतिशयेन कूर्दन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं कुम्भको राजा द्वितीयवारमपि 'उत्तरावक्कमणं' उत्तरावक्रमणम्=उत्तराभिमुखं मल्लीं निवेश्य यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितां करोति । कृत्वा, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव मनोरमां शिबिकामुपस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु शक्रो देवे-

---

इस प्रकार जब मल्ली अर्हंत का अभिषेक हो रहा था-तब कितनेक देव हर्षातिशयके वशवर्ती होकर मिथिला नगरीमें भीतर और बहार सब ओर इधर से उधर कूद रहे थे । (तएणं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी) जब अभिषेक क्रिया समाप्त हो चुकी-तब कुंभक राजाने दूसरी बार फिर मल्ली अरिहंत को पूर्वकी ओर मुख करके सिंहासन पर बैठाया-और उन्हें समस्त अलंकारो से विभूषित किया बाद में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति तएणं सक्के २ आभियोगिए ० खिप्पामेव अणेग खंभ ० जाव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सा वि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा) तुम लोग शीघ्र ही अनेक स्तम्भ शत युक्त एक शिबिका को उपस्थित करो-उन लोगों ने भी राजा की आज्ञानुसार शीघ्र वैसीही शिबिका लाकर उपस्थित कर दी । इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र

આ પ્રમાણે જ્યારે આબાજુ મલ્લી અર્હંતનો અભિષેક થઇ રહ્યો હતો ત્યારે મિથિલા નગરીની બહાર અને અંદર ચોમેર હર્ષાતિરેકથી કેટલાક દેવતાઓ આમતેમ કૂદી રહ્યા હતા.

(तएणं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

જ્યારે અભિષેકની વિધિ પૂરી થઈ ત્યારે કુંભક રાજાએ બીજી વખત મલ્લી અર્હંતને પૂર્વની તરફ મોં રાખીને બેસાડયા અને તેમને બધાં ઘરેણાંઓથી શણગાર્યા. ત્યારપછી કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવીને તેઓને હુકમ કર્યો કે

(खिप्पामेव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति, तएणं सक्के ३ आभियो-
(खिप्पा० खिप्पामेव अणेग खंभ० जाव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा)

તમે જલ્દીથી સેંકડો થાંભલાઓવાળી એક પાલખી સત્વરે લાવો. કૌટુંબિક પુરૂષો પણ જલ્દીથી રાજાની આજ્ઞા મુજબ પાલખી લઈ આવ્યા. ત્યારબાદ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्रो देवराजः-आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव ' अणेगखंभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह ' अनेकस्तम्भशत संनिविष्टां यावद्-मनोरमां शिबिकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो पस्तापितापि शिविका तामेव-कुम्भकोपस्थापितामेवशिबिकामनुपविष्टा दिव्यानुभावेनेति भावः । सू०३८ ॥

मूलम्-तएणं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएणं कुंभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह. जाव परिवहंति, तएणं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति । "पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं । पच्छावहंति सीयं, असुरिंदसुरिंद नागिंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुंडलधरा,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया-और उनसे अनेक स्तम्भशत युक्त शिबिका (पालखी) ले आने को कहा-उन्होंने भी शीघ्र वैसी ही शिबिका (पालखी) लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिबिका अपने दिव्य प्रभाव से कुंभक राजाकी शिबिका के साथ मिल गई । सूत्र " ३८ "

શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પણ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને તેમને સેંકડો થાંભલાઓવાળી પાલખી લાવવાનો હુકમ કર્યો. તે લોકો પણ સત્વરે પાલખી લઈ આવ્યા. દેવરાજની તે પાલખી પોતાની દિવ્ય પ્રભાથી કુંભક રાજાની પાલખી સાથે ભળી ગઇ. ॥ સૂત્ર " ૩૮ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहंति सीयं जिणिंदस्स ॥ २ ॥ " तएणं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिलं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्तसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव परिधावंति, तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुंचइ, तं पभावई पडिच्छइ । तएणं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ । तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा 'णमोऽत्थुणं सिद्धाणं त्तिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाणं माणुस्साण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वेयणं संदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइय चरित्तं पडिवन्नं तं समयं च णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने । मल्लीणं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोगसुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए, तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए। मल्लिं अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइंसु—तं जहा—" णंदेय णंदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य। अमरवइ, अमरसेणे, महसेणे, चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ " तएणं से भवणवइ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति करित्ता जाव पडिगया। तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स चरमहकालसमयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ सू० ३९ ॥

टीका-' तएणं मल्ली ' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय यत्रैव मनोरमाशिविका तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य मनोरमां शिविकां ' अणुप्पयाहिणी करेमाणा ' अणुप्रदक्षिणी कुर्वाणा=आनुकूल्येन

' तएणं मल्ली अरहा-इत्यादि। '

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) मल्ली अर्हंत सिंहासन से उठे (अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीयं दुरुहइ; दुरूहित्ता सीहासणवरगये पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

" तएणं मल्ली अरहा " इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यारभाद (मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) भल्ली अर्हंत सिंहासन ઉપરથી ઉભા થયાં.

(अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीयं दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वशुभवाञ्छया-स्वदक्षिणभागे कुर्वती, मनोरमां शिबिकां 'दुरुहइ' दूरोहति= आरोहति, दूरूह सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिङ्मुखः सन् सन्निषण्णः। ततः खलु कुम्भकोऽष्टादश 'सेणिप्पसेणीओ' श्रेणि-प्रश्रेणीः=शिबिकावाहकान् -अवान्तरजातीयपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्=हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिताः मल्ल्याः शिबिकां परिवहत, स्कन्धोपरिधारयत यावत्-परिवहन्ति।

उठकर वे जहां वह मनोरम शिबिका थी वहां गये। वहां जाकर वे उस मनोरम शिबिका को अपने शुभ की वाञ्छा से अपने दक्षिण भाग में करते हुए उस शिबिका पर आरूढ हो गये आरुढ हो कर फिर वे पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के उस पर रखे हुए सिंहासन पर बैठ गये। (तएणं कुंभए अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद कुंभक राजा ने १८, श्रेणी प्रश्रेणी जनों को-शिबिका वाहक १८ प्रकार के अवान्तर जातीय पुरुषों को बुलाया-और बुला कर उन से ऐसा कहा-(तुब्भेणं देवाणुप्पिया! ण्हाया जाव सव्वालंकार विभूसिया मल्लीस्स सीयं परिवहह, जाव परिवहंति) हे देवानुप्रियो! तुम लोग स्नान कर तथा समस्त अलंकारों सेविभूषित होकर मल्ली अर्हत की पालखी को उठाओ राजा की इस प्रकार आज्ञा पाकर उन लोगों ने उस पालखी को अपने २ स्कंधो पर उठा कर रख लिया (तएणं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं

અને ઉભા થઇને જ્યાં મનોરમ પાલખી હતી ત્યાં પહોંચ્યાં. ત્યાં પહોંચીને તેઓ તે મનોરમ પાલખીને આત્મશ્રેયની ઇચ્છાથી પોતાની જમણી બાજુએ રાખીને તે મનોરમ પાલખી ઉપર ચઢીને તેઓ પૂર્વદિશા તરફ મોં કરીને તેના ઉપર મૂકેલા સિંહાસન ઉપર બેસી ગયાં.

(तएणं कुंभए अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યાર પછી કુંભક રાજાએ અઢાર શ્રેણી પ્રશ્રેણીજનોને પાલખી ઉચકનારા અઢાર પ્રકારના અવાંતર જાતિના પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આદેશ આપ્યો કે—

(तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिहंति)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સ્નાન કરો અને ત્યારબાદ બધા અલંકારોથી અલંકૃત થઇને મલ્લી અર્હંતની પાલખીને ઉંચકો. રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ લોકોએ તરત સ્નાન કરીને પાલખીને પોતપોતાના ખભા ઉપર ઉચકી લીધી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मनोरमायाः शिबिकाया दक्खिणिल्लं= दाक्षिणात्यं-दक्षिणदिग्भागस्थम्:, 'उत्तरिल्लं' उपरितनं उपरिभागस्थं 'बाहं' बाहुं=दण्डं गृह्णाति ईशानः-ईशानेन्द्रः-'उत्तरिल्लं' उत्तरदिग्भास्थम् उपरितनं बाहुं=दण्डंगृह्णाति, चमरः=चमरेन्द्रः 'दाहिणिल्लं' दाक्षिणात्यं=दक्षिणदिग्भागस्थं 'हेट्ठिल्लं' अधस्तनं दण्डं गृह्णाति, वली=बलीन्द्रः 'उत्तरिल्लं' उत्तरीयम्=उत्तरभागस्थम् अधस्तनं दण्डं गृह्णाति अवशेषा देवाः भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिकेन्द्राः, 'जहारिहं' यथाऽर्हं-यथायोग्यं स्व स्व योग्यताऽनुसारं मनोरमां शिबिकां परिवहन्ति।

"पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं।
पच्छा वहंति सीयं असुरिंद-सुरिन्द-नागिंदा ॥ १ ॥

बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं अवसेसा देवा जहारिहं मनोरमं सीयं परिवहंति) बाद में शक्र देवेन्द्र देव राजा ने उस मनोरमा शिविका के दक्षिण दिग्भागवर्ती ऊपरके दण्डे को पकडा, ईशानेन्द्र ने उत्तर दिग्भागस्थ ऊपर के दण्डे को पकड़ा चमरेन्द्र ने दक्षिणदिग्भागवर्ती नीचे के दण्डे को पकड़ा।

अवशिष्ट भवन पति, व्यन्तर ज्योतिष्क एवं वैमानिक इन्द्रों ने अपनी २ योग्यताके अनुसार उस शिविका का परिवहन किया। (पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिंतो हट्ठ रोमकूवेहिं। पच्छावहंति सीयं असुरिंद सुरिंद नागिंदा) सब से प्रथम हर्षके वश से रोमाञ्च युक्त हुए मनुष्यों ने उस शिविका को अपने स्कंधो पर रखा-बाद में असुरेन्द्रों ने, सुरेन्द्रों

(तएणं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं बली० उत्तरिल्लं हट्ठिल्लं अवसेसादेवा जहारिहं मनोरमं सीयं परिवहंति)

ત્યાર બાદ શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે તે મનોરમ પાલખીના દક્ષિણ બાજુના દંડાને ગ્રહ્યો, ઈશાનેન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના ઉપરના દંડાને ગ્રહ્યો, ચમરેન્દ્રે દક્ષિણ દિશા તરફના નીચેના દંડાને ગ્રહ્યો, બલીન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના દંડાને ગ્રહ્યો.

બાકીના બધા ભવનપતિ, વ્યંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક ઈન્દ્રોએ પોતપોતાની યોગ્યતા મુજબ પાલખીનું પરિવહન કર્યું.

(पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिंतो हट्ठरोम कूवेहिं पच्छा वहंति सीयं असुरिंदसुरिंदनागिंदा)

પુલકિત અને હર્ષઘેલા થયેલા માણસોએ સૌથી પહેલાં પાલખીને પોતાના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चलचवलकुंडलधरा सच्छंद विउव्वियाभरणधारी।
देविंद दाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥ २ ॥

'पुव्विं' पूर्वं 'उक्खित्ता' उत्क्षिप्ता स्कन्धोपरिनीता मनुष्यैः, सा शिविका, मनुष्यैः कथंभूतैरित्याह–'हट्ठरोमकूवेहिं' हृष्टरोमकूपैः हर्षवशेन रोमाञ्चयुक्तैः, पश्चात्–असुरेन्द्र–सुरेन्द्र–नागेन्द्राः शिबिकां वहन्ति–स्कन्धोपरि नयन्तिस्म ॥ १ ॥ देवेन्द्र–दानवेन्द्राः जिनेन्द्रस्य शिविकां वहन्ति ' इत्यन्वयः । ते देवेन्द्रादयः कथंभूता इत्याह–चलेत्यादि चलचपल कुण्डलधराः=चलाश्च ते चपल कुण्डलधराश्चेति विग्रहः । पुनः किं भूता इत्याह–' सच्छंदविउव्वियाभरणधारिणः " स्वच्छन्दविकुर्वितााभरणधारिणः=स्वच्छन्देन–स्वेच्छया विकुर्वितानि–वैक्रिय शक्तिसमुत्पादितानि आभरणानि–भूषणानि धारयितुं शीलं येषां ते तथा भूताः ॥ २ ॥

ततः खलु मल्लया अर्हतो मनोरमां शिविकां दूरूढस्य=समारूढस्य सतः 'तप्पढमयाए' तत्प्रथमतया=सर्वतः पूर्वम् इमानि अष्टाष्टमङ्गलकानि=अष्टगणितानि

ने और नागेन्द्रों ने रखा । (चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्विया भरणधारी, देविंदं दाण विंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स) इन देवेन्द्रा दिकों के कुंडल उस समय इधर से उधर अत्यन्त चंचल हो रहे थे। उन्हों ने जो आभरण धारण कर रखे थे वे अपनी इच्छानुसार वैक्रिय शक्ति से समुत्पादित किये हुए थे। इस तरह देवेन्द्रों और दानवेन्द्रों ने जिनेन्द्र की शिविका को अपने २ स्कंधों पर रखा। (तएणं मल्लीस्स अरहओ मनोरमं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ ट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया) इस के अनन्तर उस मनोरम शिबिका पर

ખભા ઉપર ઉચકી, ત્યારપછી અસુરેન્દ્રોએ, સુરેન્દ્રોએ અને નાગેન્દ્રોએ ઉચકી.

(चलचवल कुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी, देविंदं दाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स)

તે વખતે દેવેન્દ્ર વગેરેના કુંડળો આમ તેમ ખૂબ હાલી રહ્યા હતા.

ધારણ કરેલા આભરણોને દેવોએ પોતાની ઇચ્છા મુજબ વૈક્રિય શક્તિ વડે ઉત્પન્ન કરેલાં હતાં. આ પ્રમાણે દેવેન્દ્રો અને દાનવેન્દ્રોએ જિનેન્દ્રની પાલખી પોતપોતાના ખભે ઉચકી હતી.

(तएणं मल्लिस्स अरहाओ मनोरमं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ अट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया)

ત્યારબાદ મનોરમ પાલખી ઉપર બેઠેલા મલ્લી અર્હંતની સામે સૌ પ્રથમ અનુક્રમે આઠ આઠ મંગળ દ્રવ્યો મૂકવામાં આવ્યાં–તે દ્રવ્યોના નામો આ પ્રમાણે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अष्टसंख्यकानि मङ्गलानि पुरतः=अग्रे ' अहाणुपुव्वीए ' यथानुपूर्व्या=अनुक्रमेण संप्रस्थितानि-चलितानि, एवं तेषां नामानि-(१) सोवत्थिय ' स्वस्तिकः, (२) सिरिवच्छा ' श्रीवत्सः, (३) णंदियावत्त ' नन्द्यावर्तः, (४) वद्धमाणग ' वर्धमानः (५) भद्दासण ' भद्रासनम् (६) ' कलस ' कलशः, (७) ' मच्छ ' मत्स्ययुग्मम् , (८) ' दप्पण ' दर्पणश्चेति । एवं निर्गमो यथाजमालेः जमालिनिर्गमनं=निर्गमन वर्णनं विज्ञेयम् ।

ततः खलु मल्लया अर्हतो निष्क्रामतः=निष्क्रमणं कुर्वतः, अप्येककाः-केचन-देवा स्वस्ववैक्रियशक्त्या मिथिलां राजधानीम्-' सब्भिंतरबाहिरियं ' साभ्यन्तरबाह्याम् = अन्तर्बहिः ' आसित्तसंमज्जिओवलित्तं ' आसिक्तसंमार्जितोपलिप्ताम् आसिक्तां=भूर्वमलकणैरभिषिक्ताम् , पश्चात् संमार्जितां=कचवराद्यपनयनेन संशोधिताम् , ततः उपलिप्तां खटिका चूर्णादिना संलिप्तां कुर्वन्ति. कृत्वा यावत्-परिधावन्ति=हर्षोत्कर्षेणेतस्ततः कुर्वन्ति ।

आरूढ हुए मल्ली अर्हंतके आगे सब से पहिले क्रमानुसार आठ २ मंगल द्रव्य उपस्थित हुए । उनके नाम ये हैं

(१) सोवत्थिय-स्वस्तिक (२) सिरिवच्छा-श्री वत्स (३) णंदियावत्त-नन्दिकावर्त (४) वद्धमाणग-वर्धमान (५) भद्दासण-भद्रासन (६) कलस-कलश (७) मच्छ-मत्स्य युग्म (८) और दप्पण-दर्पण (एवं निग्गमो जहा जमालिस्स) मल्ली अर्हंत के निर्गम का वर्णन जमालिके निर्गम की तरह ही जानना चाहिये । (तएणं मल्लीस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिलं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव परिधावंति) जब मल्लि अर्हंत का निष्क्रमण हो रहा था उस समय कितनेक देवों ने अपनी वैक्रियश-

---

(१) सोवात्थिय,-स्वस्तिक, (२) सिरिवच्छा-श्रीवत्स, (३) णंदियावत्त-नंदिकावर्त्त (४) वृद्धमाणग-वर्धमान, (५) भद्दासण-भद्रासन, (६) कलस-कळश, (७) मच्छ-मत्स्ययुग्म, (८) अने दप्पण-दर्पण (अरीसो). (एवं निग्गमो जहा जमालिस्स) मल्ली अर्हंतना निर्गमनुं वर्णन जमालिना निर्गमनी जेम ज जाणवुं जोइओ.

(तएणं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिलं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव परिधावंति)

જ્યારે મલ્લી અર્હંતની નિષ્ક્રમણવિધિ ચાલતી હતી ત્યારે કેટલાક દેવોએ પોતાની વૈક્રિય શક્તિ વડે મિથિલા રાજધાનીની અંદર અને બહાર બધે જળ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु मल्ली अर्हन् यत्रैव सहस्राम्रवणमुद्यानं यत्रैवाशोकवरपादपः, तत्रैोपागच्छति. उपागत्य शिबिकातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्याभरणालंकारं मुञ्चति तदाभरणालंकारं प्रभावती=मल्ल्या जननी प्रतीच्छति वस्त्राञ्चले धारयति ततः खलु मल्ली अर्हन् स्वयमेव=स्वहस्तेनैव पञ्चमुष्टिकं लोचं शिरः केशलुञ्चनं करोति।

क्ति से मिथिला राजधानी को भीतर बाहिर मे जलकणों से सिञ्चित कर दिया था, कूडा करकट के अपनयन से उसे बिलकुल साफ सुथर कर दिया था और चूना आदी से उसे लीप पोत दिया था। यावत् हर्षोत्कर्ष सेवे इधर उधर उसमें इच्छानुसार खूब कूंदे और उछले थे।

औपपातिक सूत्र में निष्क्रमण का जैसा वर्णन यहां भी जानना चाहिये। (तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुयइ, तं पभावई पडिच्छई) वे मल्ली अर्हत जहां सहस्राम्रवन नामका उद्यान और उसमे जहां अशोक वृक्ष था वहां पहुँचे वहां पहुँच कर वे उस शिविका से नीचे उतरे उतर कर उन्होंने अपने आभरण और अलंकारों को उतारा-उतारे हुए उन आभरण और अलंकारों को उनकी माता प्रभावती ने अपने वस्त्राञ्चल में रख लिया (तएणं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) इसके बाद उन मल्ली अर्हत ने अपने केशों का पंचमुष्टि लोच किया।

સિંચન કર્યું હતું. કચરો વગેરે વાળીને તેને સ્વચ્છ બનાવી અને ચુના વગેરેથી ધોળી નાખ્યું હતું. યાવત્ હર્ષઘેલા થઈને તેઓ ખૂબ ઇચ્છા મુજબ ઉછળ્યા અને કૂદ્યા હતા.

ઔપપાતિક સૂત્રમાં નિષ્ક્રમણનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, અહીં પણ તે મુજબ જ સમજી લેવું જોઇએ.

(तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुंचइ, तं पभावई पडिच्छई)

મલ્લી અર્હંત જ્યાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન અને તેમાં પણ જ્યાં અશોક નામે વૃક્ષ હતું ત્યાં પહોંચ્યાં, ત્યાં પહોંચીને તેઓ પાલખીમાંથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને તેમણે પોતાનાં આભરણ અને ઘરેણાંઓ ઉતાર્યા. મલ્લી અર્હંતના આભરણ અને ઘરેણાંઓને તેમના માતા પ્રભાવતીએ પોતાના વસ્ત્રના છેડામાં લઇ લીધાં. (तएणं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) ત્યારપછી મલ્લી અર્હંતે પોતાના વાળોનું પંચમુષ્ટિ લુંચન કર્યું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मल्ल्या अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्चितान् केशान् वस्त्रे धरति, प्रतिच्छ्य, क्षीरोदसमुद्रे प्रक्षिपति । ततः खलु मल्ली अर्हन्— 'णमोऽत्थुण सिद्धाणं' नमोऽस्तु खलु सिद्धेभ्यः इति कृत्वा सामायिकचारित्रं प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन समये च खलु मल्ली अर्हन् चारित्रं प्रतिपन्नः, तस्मिन्नेव समये खलु देवानां मनुष्याणां च 'णिग्घोसे' निर्घोषः शब्दः, 'तुरिय णिणाय गीयवाइय निग्घोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च, शक्रवचनसंदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिलुक्के' निलीनः=तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग समुद्दे पक्खिवइ) उन मल्लि प्रभुके लुंचित केशोंको शक्र देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र में रख लिया और रखकर क्षीर सागर मे उन्हे प्रक्षिप्त कर दिया । (तएणं मल्ली अरहा " णमोत्थुणं सिद्धाणंसिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ) मल्ली अर्हंतने " सिद्धों को नमस्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र को धारण किया । (जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाणं माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसणं णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हंत ने चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवों और मनुष्यो का निर्घोष हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ)

તે મલ્લી પ્રભુના લુંચિત વાળોને શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પોતાના વસ્ત્રમાં લઇ લીધા અને લઇને ક્ષીર સાગરમાં તેઓને નાખી દીધા.

(तएणं मल्ली अरहा " णमोत्थुणं त्ति कट्टु सामाइय चारित्तं पडिविसज्जइ)

મલ્લી અર્હંતે " સિદ્ધોને મારા નમસ્કાર " આ પાઠનું વાંચન કરતાં સામાયિક ચારિત્ર ધારણ કર્યું

(जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाणं माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयण संदेसणं णिलुक्के यावि होत्था)

જ્યારે મલ્લી અર્હંતે ચારિત્રનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે દેવો અને માણુસોના થયેલા હર્ષ નિર્ઘોષને તેમજ વાજાંઓ અને ગીતોના ધ્વનિને શક્રેન્દ્રે પોતાના હુકમથી બંધ કરાવી દીધો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्मिन् समये च खलु मल्ली अर्हन् सामायिकं चारित्रं प्रतिपन्नः=प्राप्तवान्, तस्मिन् समये च मल्ल्या अर्हतो मानुष्यधर्मादुत्तारं=प्रधानं मनःपर्यवज्ञानं समुत्पन्नम्, गृहस्थदशायां ज्ञानत्रयमासीत् चारित्रग्रहणानन्तरं तु तदानीमेव चतुर्थज्ञानमभवदिति भावः। मल्ली खलु अर्हन् 'जेसे' यः सः हेमन्तानां मार्गशीर्षादि मासचतुष्टयात्मकानां शीतकालानाम् द्वितीयो मासः चतुर्थः पक्षः-मार्गशीर्षस्याद्यपक्षतश्चतुर्थः पक्षः 'पोस सुद्धे' पौष शुद्धः, पौषमासस्य शुक्लः पक्षः, तस्य खलु पौषशुद्धस्य एक्कारसीपक्खेणं' एकादशीपक्षे खलु एकादशीतिथेः पक्षः-अर्धां

(जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने) सामायिक चारित्र को अंगीकार करते ही मल्ली अर्हतको चौथा मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया! गृहस्थ अवस्था में मल्ली अर्हत के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान जन्म जात थे। परन्तु ज्यों ही इन्होंने चारित्र ग्रहण किया उसी समय इनको मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया। (मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोस सुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थी सएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए) मल्ली अर्हत ने जिस समय सर्व विरतिरूप चारित्र अंगीकार किया था उस समय हेमंतकालका द्वितीय मास था, चौथा पक्ष था उसका नाम पौष मास था-पौष मासका शुक्ल

(जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समयं च णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने)

સામાયિક ચારિત્રને સ્વીકારતાની સાથે જ મલ્લી અર્હંતને ચોથું મનઃ પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું. ગૃહસ્થ અવસ્થામાં મલ્લી અર્હંતને મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન આ ત્રણે જ્ઞાન જન્મજાત હતાં. પણ જ્યારે તેઓએ ચારિત્ર અહણ કર્યું ત્યારે તેમને મનઃપર્યવજ્ઞાન થઈ ગયું.

(मल्ली णं अरहा जेसे हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसी पक्खे णं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए)

મલ્લી અરહંતે જ્યારે સર્વ વિરતિ રૂપ ચારિત્ર સ્વીકાર્યું, ત્યારે હેમંત કાળનો બીજો મહીનો હતો. ચોથું પખવાડિયું હતું. તે મહિનાનું નામ પોષ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शकाले, पूर्वाह्णकालसमये, अष्टमेन भक्तेन 'अपाणएणं' अपानकेन जलरहितेन अश्विनीनक्षत्रेण 'जोगं' योगं=चन्द्रयोगम् उपागतेन त्रिभिः स्त्रीशतैः आभ्यन्तरिकया परिषदा, सार्धं तथा-त्रिभिः पुरुषशतैः बाह्यया परिषदा सार्धं मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः=दीक्षां गृहीतवान्। मल्ल्या अर्हत् आभ्यन्तरिका परिषत् स्त्रीभिः, अन्येषां तीर्थंकराणांतु पुरुषैराभ्यन्तरिका परिषत संजाता। मल्लीमर्हन्तमिमे वक्ष्यमाणा अष्ट राजकुमारा अनुव्रजिताः, तद् यथा-तेषां नामान्ये वम्—

णंदे य णंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य।
अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए॥ १॥

पक्ष था एकादशी का दिन था, पूर्वाह्णकालका समय था। अपानक चौविहार अष्टम भक्त इन्हों ने धारण कर रखा था अश्विनी नक्षत्रका चन्द्रमाके साथ शुभ योग वर्त रहा था।

तीन सौ इनकी अभ्यन्तर परिषदकी आर्यिका थी और बाह्य परिषद के तीन सौ पुरुष थे। सो उन सबके साथ इन्होंने दीक्षा धारण की थी। अन्यतीर्थंकरो की आभ्यन्तर परिषद में स्त्रियां नहीं रहीं हैं ये तो इन्हीं की आभ्यन्तर परिषद में कही गई हैं। वहां तो आभ्यन्तर परिषदा में पुरुष ही रहे हैं। (मल्लि अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइंसु-तं जहा - णंदे य णंदिमित्ते सुमित बलमित्त भाणुमित्तेय, अमरवइ अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए) मल्ली अर्हंत ने जिस समय दीक्षा धारण की उस समय इनके साथ जो आठ राजकुमार दीक्षित हुए थे-उनके नाम ये हैं।

હતું. પોષ મહિનાનો શુકલ પક્ષ હતો, અગિયારસનો દિવસ હતો, પૂર્વાહ્ન કાળનો વખત હતો, અપાનક અષ્ટમ ભક્ત તેમણે ધારણ કરેલું હતું. અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે શુભયોગ થઈ રહ્યો હતો.

તેમની આભ્યંતર પરિષદાની ત્રણસો આર્યિકાઓ હતી અને બાહ્ય પરિષદાના ત્રણસો પુરૂષો હતા. તેઓ બધાની સાથે તેમણે દીક્ષા ધારણ કરી હતી. બીજા તીર્થંકરોની આભ્યંતર પરિષદામાં સ્ત્રીઓ ન હતી. એમની આભ્યંતર પરિષદામાં સ્ત્રીઓ વિષે વર્ણન કરેલ છે. બીજા તીર્થંકરોની પરિષદામાં માત્ર પુરુષો જ રહ્યા છે.

(मल्लि अरहं इमे अट्ठरायकुमारा अणुपव्वइंसु तं जहा णंदेय णंदिमित्ते सुमित्तबलमित्तभाणुमित्तेय। अमरवइ, अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए)

જે વખતે મલ્લી અર્હંતે દીક્ષા ધારણ કરી હતી તે સમયે તેમની સાથે જ દીક્ષિત થયેલા આઠ રાજકુમારોના નામો આ પ્રમાણે છે—(૧) નન્દકુમાર,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१) नन्दः-नन्दकुमारः, (२) नन्दिमित्रः-नन्दिमित्रकुमारः, (३) सुमित्रः-सुमित्रकुमारः, (४) बलमित्रः-बलमित्रकुमारः, (५) भानुमित्रः-भानुमित्रकुमारः, (६) अमरपतिः,-अमरपतिकुमारः, (७) अमरसेनः-अमरसेनकुमारः, (८) महासेनः-महासेनकुमार इति।

ततस्तदनन्तरं खलु ते भवनपत्यादयश्चतुर्विधा देवा मल्ल्या अर्हतो निष्क्रमणमहिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरं नामाद्वीपस्तत्राष्टाह्निकाम्=अष्टाहसाध्यमुत्सवं कुर्वन्ति कृत्वा च यावत्-यस्यादिशः प्रदुर्भूतास्तां दिशं प्रतिगताः, ततः खलु मल्ली अर्हन् यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रजितः=दीक्षां गृहीतवान् तस्यैव दिवसस्य पश्चाद् पराह्णकाल समये-पश्चिमे प्रहरे, अशोकवरपादपस्याधः पृथिवीशिलापट्टके

(१) नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र कुमार (३) सुमित्र कुमार (४) बालमित्र कुमार (५) भानुमित्र कुमार (६) अमरपति कुमार (७) अमरसेन कुमार और (८) महासेन कुमार। (तएणं से भवणवइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति, करित्ता जाव पडिगया) भवनपति आदि चारों प्रकार के देवों ने मल्ली अर्हत के निष्क्रमण महोत्सव की खूब २ महिमा की और करके फिर वे आठ वां जो नंदीश्वर द्वीप है वहां गये -वहां जाकर उन्हों ने अष्टान्हिक महोत्सव किया। यह महोत्सव आठ दिनतक लगातार होता है। अष्टाह्निक महोत्सव करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा तरफ वापिस चले गये। (तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरग-

(२) नंदि मित्रकुमार, (३) सुमित्रकुमार, (४) बालमित्र कुमार, (५) भानुमित्र कुमार, (६) अमरपति कुमार, (७) अमरसेन कुमार, (८) महासेन कुमार.

(तएणं से भवणवइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति करित्ता जाव पडिगया)

ભવનપતિ વગેરે ચાર જાતના દેવોએ મલ્લી અર્હંતના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવનો ખૂબ જ મહિમા ગાયો અને ત્યારપછી તેઓ આઠમા નંદીશ્વર દ્વીપમાં ગયા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે અષ્ટાહ્નિક મહોત્સવ ઉજવ્યો. આ મહોત્સવ આઠ દિવસ સુધી સતત ઉજવાય છે. અષ્ટાહ્નિક મહોત્સવ જ્યારે પૂરો થયો ત્યારે તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ જતા રહ્યા.

(तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए, तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखासनवरगतस्य शुभेन परिणामेन 'पसत्थेहिं' प्रशस्तैः=श्रेष्ठैः-शुभैः, 'अज्झवसाणे' अध्यवसानैः=आत्मपरिणामैः, प्रशस्ताभिः लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यन्तीभिः 'तयावरणकम्मरयविकरणकरं' तदावरणकर्मरजोविकरणकरं-ज्ञानावरणीयादिकर्मरजोविक्षेपकं 'अपुव्वकरणं' अपूर्वकरणम्=अष्टमगुणस्थानकम् अनुप्रविष्टस्यानन्तं विषयानन्तत्वात्, यावत्-अनुत्तरं-समस्तज्ञानप्रधानं, निर्व्याघातम्-अप्रतिहतं, निरावरणं=क्षायिकं, कृत्स्नं=सर्वार्थग्राहकत्वात्, प्रतिपूर्णं=सकलांशयुक्तत्वात् पूर्णचन्द्रवत्, 'केवलवरनाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम्॥सू०३९॥

यस्स, सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मस्स विकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने) मल्ली अर्हत ने जिस दिन दीक्षा धारण की उसी दिन पश्चिम प्रहर में अशोक वृक्षने नीचे रहे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर सुखासन से विराजमान उन्हें शुभ परिणाम प्रशस्त अध्यवसान-आत्म परिणाम-एवं विशुद्ध -प्रशस्त-लेश्याओ के प्रभावसे समस्त ज्ञानावरणीय दर्शनावणीय मोहनीय और अन्तराय कर्मरूप रजके विक्षेपक अनन्त केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गये। अर्थात् दीक्षा लेते ही एक प्रहरके बाद केवलज्ञान पाए। क्षपकश्रेणी पर आरूढ हुई आत्माओं को ही ये दोनों केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त होते हैं अन्य को नहीं -तथा यह श्रेणी ८वें अपूर्वकरण गुणस्थान से ही प्रारंभ होती है अन्य गुणस्थान से नहीं मल्ली अर्हत ने भी इसी श्रेणी पर आरोहण

मेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने)

જે દિવસે મલ્લી અર્હંતે દીક્ષા ધારણ કરી તે જ દિવસે છેલ્લા પહોરમાં અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વી શિલાપટ્ટક ઉપર સુખાસન પૂર્વક બેઠેલા તેઓને શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન આત્મપરિણામ અને વિશુદ્ધ પ્રશસ્ત લેશ્યાઓના પ્રભાવથી સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય મોહનીય અને અંતરાય કર્મરૂપ રજનું વિક્ષેપક અનંત કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થયું. ક્ષપક શ્રેણી ઉપર આરૂઢ થયેલા આત્માઓને જ આ કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન મળે છે બીજાઓને નહીં, તેમ જ આ શ્રેણી આઠમા અપૂર્વકરણ ગુણ સ્થાનથી જ આરંભે છે, બીજા કોઈ પણ ગુણ સ્થાનથી નહીં. મલ્લી અર્હંતે પણ આ શ્રેણી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं सव्वदेवाणं आसणाइं चलंति समोसढा केवलमहिमं करेंति करित्ता जेणेव नंदीसर० अट्ठाहिय महामहिमं करेंति करित्ता जामेव दिसं पाउ० परिसा-णिग्गया कुंभएवि निग्गच्छइ । तएणं ते जियसत्तूपा० छप्पि-जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ जाव पज्जुवासंति । तएणं मल्ली अ० तीसे महइ महालयाए० कुंभगस्स तेसिं च जियसत्तू पामु-क्खाणं धम्मं कहेइ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया । कुंभए समणोवासए जाए । पभावईय । तएणं जियसत्तूप्पा० छप्पिराया धम्मं सोच्चा एवं वयासी–आलित्तेणं

कर दिया था तभी जाकर उन्हें इनकीप्राप्ति हुई यही बात " अपुव्वकरन अणुपविट्ठस्स ' इन पदोंद्वारा प्रदर्शित की गई है। "अणंते जाव " यहां जो "जाव" पद रखा गया है उससे "अनुत्तरं निर्व्याघातम् निरावरणं , कृत्स्नं, प्रतिपूर्णं ' इन पदों का ग्रहण किया गया है । ये दोनों अनंत विषयों को जानते हैं और देखते हैं इसलिये ये अनंत हैं। समस्त ज्ञान और दर्शनों में ये प्रधान हैं इसलिये अनुत्तर हैं। अप्रतिहत होने से ये दोनों निर्व्याघात, क्षायिक होने से निरावरण सर्वार्थ ग्राहक होने से कृत्स्न, सकलांश युक्त होने से पूर्ण चन्द्र की तरह प्रतिपूर्ण कहे गये हैं ॥ सूत्र ३९ ॥

ઉપર આરોહણ કરી દીધું હતું ત્યારે જ તેમને એમની પ્રાપ્તિ થઈ હતી. એ જ વાત–" अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स " આ પદોવડે દર્શાવવામાં આવી છે. " अणंते जाव " અહીં જે ' जाव ' પદ છે તેનાથી " अनुत्तरं निर्व्याघातं निरावरणं, कृत्स्नं, प्रतिपूर्णं, આ પદો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે. આ બંને અનંત વિષ-યોને જાણે છે અને જુએ છે એટલા માટે તેઓ અનંત છે. સમસ્ત જ્ઞાન અને દર્શનોમાં તેઓ પ્રધાન છે એટલા માટે અનુત્તર છે. અપ્રતિહત હોવા બદલ આ બંને નિર્વ્યાઘાત, ક્ષાયિક હોવાથી નિરાવરણ, સર્વાર્થ ગ્રાહક હોવાથી કૃત્સ્ન, સકલાંશયુક્ત હોવાથી પૂર્ણ ચન્દ્રની જેમ પ્રતિપૂર્ણ કહેવામાં આવ્યા છે. ૩૯

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भंते ! लोए पलित्तेणं भंते लोए जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणंते केवले० सिद्धा ।

तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ । मल्लिस्सणं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसगणहरा होत्था । मल्लिस्सणं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसेणं, बधुमइपामोक्खाओ पणपण्णं अज्जिया साहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा सायसाहस्सी, चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्नि सयसाहसीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीससया ओहिनाणीणं, बत्तीसं सया केवलणाणीणं,पणतीणं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसयामणपज्जवणाणीणं, चोद्दससया वाईणं,वीसं सया अणुत्तरोववाइणं । मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था तं जहा –जुयंतकरभूमी, परियायंतकरभूमी य। जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी । दुवासपरियाए अंतमकासी । मल्लीणं अरहा पणुवीसं धणूइ मुइं उच्चत्तेणं । वण्णेणं पियंगुसमे, समचउरससंठाणे, वज्जरिसभणारायसंघयणे, मज्झदेसे सुहं सुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे। मल्लीणं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे वसित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं वाससयऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइंसव्वा उयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे, तस्स णं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार सएहिं बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवे पण्णत्तीए नंदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नामज्झेयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ४० ॥

टीका—' तेणं कालेणं ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सर्वदेवनां= शक्रस्य देवेन्द्रस्य तथाऽन्येषां सर्वेषामिन्द्राणां च, आसनानि चलन्ति स्म। तदाऽवधिं प्रयुज्य मल्लया अर्हतः केवलोत्पत्तिं ज्ञात्वा यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैव ' समो-

' तेणं कालेणं तेन समएणं ' इत्यादि।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (सव्वदेवाणं आसणाइं चलंति, समोसढा केवलं महिमं करेंति) करित्ता जेणेव नंदीसरे० अट्ठाहिय महामहिमं करेंति, करित्ता जामेव दिसंपाउ० परिसा णिग्गया कुंभएवि निग्गच्छइ) समस्त देवों के शक्र देवेन्द्र के तथा अन्य समस्त इन्द्रों के आसन कंपायमान हुए। आसनोंके कंपित होने का क्या कारण है इस प्रकार जब जानने की उन्हों ने इच्छा की तो उसी समय उन्हों ने अपने २ अवधिज्ञान से देखा

' तेणं कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-तेणं कालेणं तेणं समएणं ते કાળે અને તે સમયે

(सव्वदेवाणं आसणाइं चलंति, समोसढा केवलमहिमं करेंति करित्ता जेणेव नंदी सरे० अट्ठाहिय महामहिमंकरेंति, करित्ता जामेव दिसं पाउ०परिसाणिग्गया कुंभए वि निग्गच्छइ)

બધા દેવતાઓના, શક્ર દેવેન્દ્રના તેમજ બીજા બધા ઇન્દ્રોના આસનો ડોલવા માંડયાં. તેમનાં આસનો શા કારણથી ડગમગવા માંડયા છે ? આ જાતની જ્યારે તેમના મનમાં જિજ્ઞાસા ઉત્પન્ન થઈ ત્યારે તરત જ તેમણે પોતપોતાનું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूढा ' समवसृताः=आगताः, आगत्य ' केवलमहिमं ' केवलज्ञानोत्सवं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरो द्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अट्ठाहिमं ' अष्टाह्निकाम हिमानं अष्टदिवससाध्यमुत्सवं कुर्वन्ति, कृत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिशं प्रतिगताः । तदनन्तरं परिषत्-मिथिलाराजधान्या जनसमूहः मल्ल्या अर्हतो वन्दनार्थं निर्गता-मिथिलाराजधानीतो निःसृता । कुम्भकोऽपि निर्गच्छति स्म ।

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः स्वं स्वं ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिकाः समारूढाः सर्वर्द्धया सर्वद्युत्या सकलबलेन सहिता यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्-पर्युपासते ।

ही मल्ली अर्हंत को केवल ज्ञान की उत्पत्ति हुई है । सो जहां मल्ली अर्हंत थे वे सब वहां पर आये-आकर उन्हों ने केवलज्ञान की महिमा का उत्सव किया उत्सव कर जहां नंदीश्वर द्वीप था फिर वे वहां आये वहां आकर उन्हों ने लगातार आठ दिन तक उत्सव किया । उत्सव कर के फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये । इस के बाद मिथिला राजधानीसे जन समुदाय मल्ली अर्हंत को वंदना करने के लिये निकला । कुंभक राजा भी निकले । (तएणं ते जियसत्तूपा० छप्पि जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ आरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ०जाव पज्जुवासंति) इसके अनंतर वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा अपने२ ज्येष्ठ पुत्रको राज्यपदमें स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिबिकापर आरूढ हो सर्व ऋद्धि एवं सकलबल

અવધિજ્ઞાન જોડ્યું. અવધિજ્ઞાનથી તેઓએ જાણ્યું કે મલ્લી અર્હંતમાં કેવળ જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થઈ છે. તેઓ બધા જ્યાં મલ્લી અર્હંત હતાં ત્યાં આવ્યાં. ત્યાં પહોંચીને તેઓએ કેવળ જ્ઞાનના મહિમાનો ઉત્સવ ઉજવ્યો. ઉત્સવ ઉજવ્યા પછી તેઓ નંદીશ્વર દ્વીપમાં ગયા, ત્યાં જઈને તેઓએ સતત આઠ દિવસ સુધી ઉત્સવો ઉજવ્યા. ઉત્સવની સમાપ્તિ પછી તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ જતા રહ્યા. ત્યારબાદ મિથિલા રાજધાનીથી મલ્લી અર્હંતનાં વંદન માટે જનસમુદાય નીકળ્યો. કુંભક રાજા પણ નીકળ્યો.

(तएणं ते जियसत्तूपा० छप्पि जेट्ठे पुत्ते ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासंति)

ત્યારપછી જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ પોતપોતાના મોટા પુત્રને રાજગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં બેસીને સર્વઋદ્ધિ અને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु मल्ली अर्हन् तस्या महाति महालयायाः-अतिविस्तीर्णायाः पर्षदोऽग्रे कुम्भकस्य राज्ञस्तथा तेषां च जितशत्रुप्रमुखाणां राज्ञां धर्मं=कथयति, परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूताः, तामेव दिशं प्रतिगता। कुम्भकः श्रमणोपासको जातः, देशविरतिरूपं धर्मं स्वीकृतवान्, प्रतिगतः। प्रभावती च श्रमणोपासिका जाता, प्रतिगता प्रभावती कुम्भकौ स्वस्थानं गतवन्तौ। ततः खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो धर्मं श्रुत्वा, प्रतिबुद्धा एवमवादिषुः ' आलित्तेणं भंते लोए पलित्तेणं भंते

के साथ जहां मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये वहां आकर उन सबने मल्ली अर्हत की अच्छी तरह उपासना की। (तएणं मल्ली तीसे महइ इमहालयाए ०००० धम्मं कहइ) इसके बाद मल्ली अर्हत ने उस अति विस्तीर्ण जनमेदिनी के समक्ष कुंभक राजा तथा जितशत्रु प्रमुख उन छहों राजाओं के समक्ष श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया। (पारिसा जामेव दिसिं पा०तामे दि०पडि०) उपदेश सुनकर वह जनमेदिनीरूप परिषदा जिस दिशासे आई थी उसी दिशा तरफ वह वापिस चली गई। (कुंभए समणोवासए जोए) कुंभक राजा श्रमणोपासकबन गये। अर्थात् देशविरतिरूप धर्म उन्होंने स्वीकार कर लिया। (पभावईय) प्रभावती भी श्रमणोपासिका बन गई।

(तएणं जियसत्तूप्पा० छप्पि राया धम्मं सोच्चा एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं धर्म का उपदेश सुनकर प्रतिबुद्ध हो इस प्रकार कहा-(अलित्तेणं भंते ! लोए पलित्ते णं

સકળ જનની સાથે જ્યાં મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધાએ મલ્લી અર્હંતની સારી પેઠે ઉપાસના કરી

(तएणं मल्ली अ०तीसे महइ महालयाए०.....धम्मं कहइ) ત્યાર પછી મલ્લી અર્હંતે તે વિશાળ જન સમુદાય, તેમજ કુંભક રાજા અને જિતશત્રુ પ્રમુખ તે છએ રાજાઓની સામે શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. (परिसा जामेव दिसिं पा. तामेव दिसिं पडि०) ઉપદેશ સાંભળીને જનસમુદાય જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો. (कुंभए समणोवासए जाए) કુંભક રાજા શ્રમણોપાસક થઇ ગયા હતા. એટલે કે દેશ વિરતિરૂપ ધર્મનો તેઓએ સ્વીકાર કર્યો હતો. (पभावईय) પ્રભાવતી પણ શ્રમણોપાસિકા થઇ ગયા.

(तएणं जियसत्तू प्पा. छप्पिराया धम्मं सोच्चा एवं वयासी) ત્યાર પછી જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ ધર્મના ઉપદેશથી પ્રતિબુદ્ધ થઇને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(आलित्तेण भंत ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए जाव पव्वइया, चोद्दस पुव्वि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोए' इति हे भदन्त ! भगवन् ! 'अलोत्ते' आदीप्तः=भा=समन्ताद् दीप्तः=ज्वलितः खल्वयं लोकः, तथा हे भदन्त ! 'पलित्ते' प्रदीप्तः=प्रकर्षेण ज्वलितः=खदिर कार्पासकाष्ठाग्निज्वालयैव तीव्रज्वालया युक्तः खल्वयं लोकः, जन्मजरामरणादिदुःखानि वहन्तीव्रज्वाला इवास्मिन् लोके जीवान् प्रदहन्तीत्यर्थः। यावत्-प्रव्रजिताः=यथा कश्चिदादीप्ते गृहे प्रसुप्तं नरं बोधयेत् तथा हे भगवन्-आदीप्ते लोके मोहनिद्रावशगतानस्मान् प्रतिबोध्य युष्माभिः श्रेयस्करो मोक्षमार्गः प्रदर्शितः तस्माद् भवतामन्तिके प्रव्रजिष्यामः' इत्युक्त्वा ते षडपि राजानः प्रव्रजितादीक्षां गृहीतवन्तः। ततश्चतुर्दशपूर्विणः=चतुर्दशपूर्वधारिणो भूत्वाऽनुक्र-

---

मेते लोए जाव पव्वइया चोद्दसपुव्विणो अर्णते केवले सिद्धी) हे भदंत ! यह चतुर्गति रूप लोक आ – समन्तात् – ज्वलित हो रहा है। हे भदंत ! यह लोक अत्यंत ज्वलित हो रहा है। कार्पास काष्ठ की अग्निज्वालाके समान तीव्र ज्वालासे यह लोक व्याप्त हो रहा है अग्नि की तीव्र ज्वाला जैसे जन्म, जरा एवं मरण आदि के दुःख जीवोंको सदा उस लोक में जलाते रहते हैं। हे भगवान ! जैसे कोई व्यक्ति घर में आग लग जाने पर उसमें सुप्त हुए व्यक्ति को सचेत कर देता है–इसी तरह आदीप्त हुए इस लोक में मोह-निद्राधीन बने हुए हम लोगों को प्रतिबोधित कर आपने श्रेयस्कर मोक्षमार्ग प्रदर्शित किया है– इसलिये हम आपके पास दीक्षा अंगीकार करेंगे। इस प्रकार कह कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने मल्ली अर्हत के समीप दीक्षा धारण करली। चौदह पूर्व के पाठी होकर उन्हों ने निरतिचार

णो अर्णते केवले० सिद्धा)

હે ભદન્ત ! આસમંતાત્ (ચોમેર) આ ચતુર્ગતિરૂપ લોક સળગી રહ્યો છે. હે ભદન્ત ! આ લોક અત્યંત જ્વલિત થઇ રહ્યો છે. ૩ અને લાકડાની અગ્નિ જ્વાળાઓની પેઠે તીવ્ર જ્વાળાઓથી આ લોક વ્યાપ્ત થઇ રહ્યો છે. અગ્નિની તીવ્ર જ્વાળાઓની જેમ હંમેશા જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરેના દુઃખો આ લોકને સળગાવતા રહે છે. હે ભગવન્ ! જેમ કોઇ માણસના ઘરમાં અગ્નિ સળગી ઉઠે ત્યારે સૂતેલા માણસને બીજો કોઇ જાગ્રત કરે છે તે પ્રમાણે જ પ્રજ્વલિત થતા આ લોકમાં મોહ નિદ્રાવશ થયેલા અમારા જેવા લોકોને બોધ આપીને તમે શ્રેયસ્કર મોક્ષ માર્ગ બતાવ્યો છે તેથી અમે હવે તમારી પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરીશું. આ પ્રમાણે વિનંતિ કરીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ મલ્લી અર્હંતની પાસેથી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી. ચૌદ પૂર્વના પાઠી થઇને તેમણે નિરતિચાર ચારિત્રનું પાલન કર્યું. અને આ પ્રમાણે ધીમે ધીમે અનુક્રમે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेण निरतिचारं चारित्रं पालयित्वाऽनन्तं केवलं=केवलवरज्ञानदर्शनं यावत्-सिद्धाः सिद्धिस्थानं गताः।

ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् सहस्राम्रवणाद् निष्क्रामति=निर्गच्छति, निष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरति। मल्ल्याः खलु भिषगप्रमुखाः अष्टाविंशतिर्गणाः, अष्टाविंशतिर्गणधरा अभवन्। मल्ल्याः खलु अर्हतश्चत्वारिंशत् श्रमणसहस्राणि 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण उत्कृष्टा श्रमणसंपदभवत्। तथा-बन्धुमतिप्रमुखाः पञ्च-

---

चारित्र का पालन किया। और इस तरह धीरे२ क्रमशः वे छहोंके छहों केवल ज्ञान और केवल दर्शनके अधिकारि बन गये और अन्तमें सिद्धस्थान पर पहुँच गये। -(तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ) मल्ली अर्हत उस सहस्राम्र वनसे बाहर निकले (निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ) निकलकर उन्होंने बाहरके जनपदों में तीर्थंकर परम्पराके अनुसार विहार करना प्रारंभ करदिया। (मल्लिस्सणं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसं गणहरा, होत्था मल्लिस्सणं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसेणं बंधुमइपामोक्खाओ पणपन्नअज्जिया साहस्सीओ उक्कोसेणं सावयाणं एगासाय साहस्सी चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्निसयसायसीओ पण्णट्ठं च सहस्सा) इन मल्ली अर्हत के भिषग प्रमुख २८, गण (गच्छ) थे और २८, गणधर थे। उत्कृष्ट से इन मल्ली अरहंत प्रभु की श्रमण संपत्ति ४० हजार की थी। तथा उत्कृष्ट की अपेक्षा बंधुमती

તેઓ છએ છ રાજાઓ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન માટે અધિકારી થઈ ગયા અને છેવટે સિદ્ધસ્થાને પહોંચી ગયા. (तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ) મલ્લી અર્હંત તે સહસ્રામવનથી બહાર નીકળ્યા. (निक्खमित्ता बहिया जणवय विहारं विहरइ) નીકળીને બહારના જનપદોમાં તેમણે તર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરવો શરૂ કર્યો.

(मल्लिस्स णं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसं गणहरा, होत्था मल्लिस्सणं अरहओ चत्तालीसं समण साहस्सीओ० उक्कोसेणं बंधुमइ पामोक्खाओ पणपण्ण अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसेणं सावयाणं एगा साय साहस्सी, चुल सीइं सहस्सा सावियाणं एगा साय साहस्सी चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्निसय सायसीओ पण्णट्ठं च सहस्सा)

મલ્લી અર્હંતને ભિષગ્ પ્રમુખ અઠ્ઠાવીશ (૨૮) ગણ (ગચ્છ) હતા અને અઠ્ઠાવીશે (૨૮) ગણધર હતા. ઉત્કૃષ્ટથી મલ્લી અર્હંત પ્રભુની શ્રમણ સંપત્તિ ચાળીસ હજાર હતી તેમજ ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ બંધુમતી પ્રમુખ ૫૫

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चाशत् अर्यिकासहस्राणि उत्कर्षेण, उत्कृष्टा साध्वीसम्पत् पञ्चपञ्चाशत्सहस्रपरिमिता जातेत्यर्थः, तथा-श्रावकाणामेकशतसहस्राणि=एकं लक्षम्, 'चुलसीर्ति' चतुरशीतिः सहस्राणि, श्रमणोपासकसंपदभूत्। तथा-श्राविकाणां त्रीणिशतसहस्राणि=त्रीणि लक्षाणि, पञ्चषष्टिसहस्राणि उत्कर्षेण, तथा-षट्शतानि चतुर्दश पूर्विणां-चतुर्दश पूर्वधारिणां, तथा-विंशतिशतानि अवधिज्ञानिनां, तथा-पञ्चत्रिंशत्-शतानि 'वेउव्वियाणं' वैकुर्विकाणां=वैक्रियलब्धिधारिणां, तथा-अष्टशतानि -मनः पर्ययज्ञानिनां, तथा-चतुर्दशशतानि वादिनां, तथा-विंशतिशतानि अनुत्तरोपपातिकानाम्। मल्ल्या अर्हतः 'अंतगडभूमी' अन्तकृद्भूमिः=अन्तकृतः-

આદિ ૫૫ હજાર આર્યિકાએં થી। ઇનકે શ્રાવકોં કી સંખ્યા ૧ લાખ ૮૪ હજાર થી। શ્રાવિકાએં ઇનકી ૩, લાખ ૬૫, હજાર થી। (छस्सया चोद्दस पुव्वीणं, वीससया ओहिनाणीणं बत्तीसं सया केवलणाणीणं पणतीणं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवणाणीणं चोद्दस सयावाईणं वीसं सया अणुत्तरोववाइणं (६००, चतुर्दश पूर्व के धारी मुनि गण थे। बीस सौ अर्थात् २०००, अवधिज्ञानीं थे। ३२ सौ अर्थात् ३, हजार दो सौ केवल ज्ञानी थे ३५ सौ वैक्रिय लब्धि के धारी थे। ८००, सौ मन पर्यव ज्ञानी थे। चौदह सौ वादी थे। बीस सौ अनुत्तरोपपातिक थे। (मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी य जाव वीसइमाओ पुरिस जुगाओ जुयंतकर भूमी) इन मल्लीअर्हत की अतः कृद्भूमि-उसी भव से मोक्ष जानेवलों का काल-दो प्रकारकी थी-(१) युगान्तकर भूमि

હજાર આર્યિકાઓ હતી. તેમના શ્રાવકોની સંખ્યા એક લાખ ચોરાશી હજાર હતી. અને ત્રણ લાખ પાંસઠ હજાર તેમની શ્રાવિકાઓ હતી.

(छस्सया चोद्दस पुव्वीणं वीससया ओहिनाणीणं बत्तीसं सया केवलणाणीणं पणतीसं सया वेउव्वियाणं अट्ठ सया मण पज्जवणाणीणं, चोद्दस सया वाईणं वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं)

છસો ચતુર્દશ પૂર્વનાધારી મુનિગણો હતા. ૨૦ સો એટલે કે બે હજાર અવધિજ્ઞાની હતા. ૩૨ સો એટલે કે ત્રણ હજાર બસો કેવળજ્ઞાની હતા. ૩૫ સો વૈક્રિય લબ્ધિનાધારી હતા. આઠસો મનઃપર્યવજ્ઞાની હતા. ૧૪ સો વાદી હતા. ૨૦ સો અનુત્તરોપપાતિક હતા.

(मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी य जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी)

મલ્લી અર્હંતથી અંતઃકૃદ્ભૂમિ-તે ભવમાં જ મોક્ષ મેળવનારાઓનો કાળ-બે પ્રકારની હતી. (૧) યુગાન્તકર ભૂમિ (૨) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ. ભૂમિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवान्तकारिणः तस्मिन्नेव जन्मनि मुक्तिगामिनः, तेषां भूमिः-कालः, कालस्य चाधारत्वेन कारणत्वाद् भूमित्वेन व्यपदेशः । द्विविधा=द्विप्रकारा, अभवत् , तद् यथा-युगान्तकरभूमिः, पर्यान्तकरभूमिश्च । यावद्-विंशतितमात् पुरुषयुगाद् युगान्तकरभूमिः-अत्र द्वितीयार्थे पञ्चमी यावद् विंशतितमं पुरुषयुगं-विंशतितमं शिष्यं यावदित्यर्थः। युगानि-कालमानविशेषाः, तानि क्रमानुसारिणि, युगानीव युगानि, युगसादृश्याद् गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषाअपि युगानि व्यवह्रियन्ते, तैः प्रमितायाऽन्तकरभूमिः स, युगान्तकरभूमिः । मल्लीजिनादारभ्य तत्तीर्थं पट्टानुपट्टक्रमेण विंशतितमं पट्टपुरुषं यावत् साधवः सिद्धा अभूवन , ततः परं सिद्धिगमनव्यवच्छेदोऽभूदितिभावः । पर्यायान्तकरभूमिमाह-' दुवासपरियाए अन्तमकासी ' इति, द्विवर्षपर्यायेऽन्तमकार्षीत्-इति अनेन-वाक्येन पर्यायान्तकरभूमिः प्रोच्यते । पर्यायस्तीर्थंकरस्य केवलित्व कालस्तमाश्रित्य याऽन्तकभूमिः सा पर्यायान्तकर-

(२) पर्यायान्तकर भूमि । भूमि शब्द से काल तथा युग शब्द से गुरु शिष्य प्रशिष्यादि रूप पुरुषों का ग्रहण हुआ है । अतः इन गुरु शिष्य प्रशिष्यादि रूप पुरुषों को आरंभ कर जिस में उसी भव से मोक्ष जाने वालोंका प्रमाण प्रमित किया जावे वह युगान्तकर भूमि है ऐसा युगान्तकर भूमि शब्दका वाच्यार्थ निकलता है मल्ली जिनसे लगाकर इनके तीर्थमें पट्टानुपट्ट क्रमसे विंशतितम पट्टपुरुष तक (वीसपेदि)साधु सिद्ध हो चुके हैं । उसके बाद सिद्धि में जानेका व्यवच्छेद हो गया । (दुवासपरियाए अंतमकासी) इस वाक्यसे पर्यायान्तकर भूमि सूत्रकार ने प्रकट की है ।

तीर्थंकर की केवली अवस्था के पर्यायरूप समय को लेकर जो अन्त कर भूमि होती है उसका नाम पर्यायान्तकर भूमि है ऐसा इस शब्दका

શબ્દથી કાળ તેમજ યુગ શબ્દથી ગુરુ-શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરૂષોનું ગ્રહણ થયું છે. એથી આ બધા ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરૂષોને આરંભીને જેમાં તે ભવથી જ મોક્ષ મેળવનારાઓનું પ્રમાણ પ્રમિત (કેટલું છે તેની ગણત્રી) કરવામાં આવે તે યુગાંતકર ભૂમિ શબ્દનો વાચ્યાર્થ થાય છે. મલ્લીજીનથી માંડીને એમના તીર્થમાં પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમથી વિંશતિતમપટ્ટ પુરૂષ સુધી સાધુઓ સિદ્ધપદ પામી ચૂકયા છે. ત્યારપછી સિદ્ધિમાં જવા માટે વ્યવચ્છેદ થઇ ગયો. (દુવાસ પરિયાએ અંતમકાસી) આ વાકયથી સૂત્રકારે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ પ્રકટ કરી છે.

તીર્થંકરની કેવળી અવસ્થાના પર્યાયરૂપ સમયથી લઇને જે અન્તકર ભૂમિ હોય છે, તેનું નામ પર્યાયાન્તર ભૂમિ છે. આ શબ્દનો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमिः । मल्ल्या अर्हतः केवलज्ञानस्य द्विवर्ष-पर्यायेसती तत्तीर्थे साधुः अन्तमकार्षीत्-भवान्तमकरोत् न ततः पूर्वं कश्चिदपीत्यर्थः ।

मल्ली खलु अर्हन् पञ्चविंशतिर्धनूंषि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन=मल्ल्या अर्हतः शरीरमुच्चत्वेन पञ्चविंशतिर्धनुः परिमितमासीदित्यर्थः । वर्णेन प्रियङ्गुसमः नीलवर्णइत्यर्थः । समचतुरस्रसंस्थानः, वज्रऋषभनाराचसंहनन मध्यदेशे ग्रामानुग्रामं सुखंसुखेन विहृत्य यत्रैव समेतः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, समेतशैलशिखरे पादपोपगमनोपपन्नः पादपोपगमन संस्तारकं स्वीकृतवान् । मल्ली खलु अर्हन् एकं वर्षशतम् अगारवासमध्ये

थाय छे. मल्ली अर्हंतने केवळज्ञान उद्भव्युं, तेना बे वर्ष पछी ज तेमना तीर्थमां पोताना भवमां अंतकर साधुजनोओ मुक्ति लाभ मेळव्यो. एना पहेलां कोई साधुओ मुक्ति मेळवी नथी, ओ ज पर्यायान्तकर भूमि छे. मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूइ मुद्धं उच्चत्तेणं) मल्ली अर्हंतना शरीरनी ऊंचाई २५ धनुष प्रमाण हती. (वण्णेणं पियंगुसमे, समचउरंससंठाणे; वज्जरिसभणाराय संघयणे) शरीरनो रंग प्रियंगुना जेवो नीलो हतो. संस्थान समचतुरस्र हतुं. संहनन वज्र ऋषभ नाराच हतुं.

(मज्झदेसे सुहं सुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे)

सुख शांतिपूर्वक मध्य देशमां विहार करीने मल्ली प्रभु समेत पर्वत उपर पहोंच्यां. त्यां पहोंचीने तेओश्रीओ समेत शैल शिखर उपर पादपोपगमन संथारो धारण कर्यो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उषित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतोनानि यावत्–केवलिपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः सः ग्रीष्माणां-ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्षः चैत्रशुद्धः=चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्यां नक्षत्रो भरणीनामकनक्षत्रो खलु चन्द्रयोगमुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैर्बाह्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

---

रहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णंवास सहस्साइं वाससय ऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे–बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कम ५५, हजार वर्षतक केवलि पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्ता कालसमयंसि पंचहिं अज्जिया सएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) उन्हों ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था – अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पांचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर-

---

(मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णंवाससहस्साइं वाससयऊणाइं केवलि परियागं पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता)

મલ્લી અર્હંત પ્રભુ ૧ સો વર્ષ ઘરમાં રહ્યા ત્યારપછી દીક્ષા ગ્રહણ કરીને ૫૫ હજાર વર્ષમાં એકસો વર્ષ ઓછા એટલે કે ૪૯૦૦ વર્ષનું આયુષ્ય ભોગવીને કેવલી પર્યાયમાં રહ્યા આ રીતે ૫૫ પંચાવન હજાર વર્ષનું આયુષ્ય ભોગવીને

(जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स णं चेत्त सुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जिया सएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

તેમણે ગ્રીષ્મકાળના પહેલા મહિનાના બીજા પખવાડીયામાં એટલે કે ચૈત્ર શુકલ પક્ષમાં તેમાં પણ ચોથના દિવસે જ્યારે ભરણી નક્ષત્રનો ચંદ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો, અર્દ્ધ રાત્રિના વખતે આભ્યંતર પરિષદ હતી ત્યારે પાંચસો આર્યિકાઓની સાથે ૧ મહિનાનું પાન રહિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः, व्याधारितपाणिः=मलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्म्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एवं परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाह्निका महिमा=अष्टाहसाध्यमहोत्सवः देवैः कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्तां दिशं प्रतिगताः=प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनों हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एवं गोत्र कर्मके नष्ट होते हीं सिद्धि अवस्था प्राप्त करली । (एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबूदीवपण्णत्तीए) जिस प्रकार जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्ली भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान नीचाहिये । (नंदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्ली प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नंदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमें वे वहांसे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महवीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं इस आठवें ज्ञाताध्य-

---

બંને હાથો ફેલાવતાં અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ થતાં જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી.

(एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबूदीवपण्णत्तीए)

જે પ્રમાણે જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમાં ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામાં આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઇએ. (नंदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કલ્યાણકારક મહિમાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નંદીશ્વર દ્વીપમાં સતત આઠ દિવસો સુધી ઉજવ્યો. ત્યારપછી તેઓ ત્યાંથી જે દિશામાંથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા. હવે સુધર્માસ્વામી જંબૂસ્વામીને કહે છે—

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधर्मास्वामी प्राह-' एवं खलु जंबू ' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण-यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन, अष्टमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः उक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः कथितः इति ब्रवीमि अस्य व्याख्यानं पूर्ववत् ॥ सू० ४० ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां अष्टममध्ययनं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

धन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्ररूपित किया है । अतः जैसा प्रभुने अपने मुखारविन्द से कहा और जैसा उनसे मैंने सुना- वैसा ही यह तुम से कहा है । सू० " ४० "

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासी लालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का आठवा अध्ययन समाप्त ॥ ८ ॥

થઇ ગયેલા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર લખ્યા મુજબનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. એટલા માટે પ્રભુએ પોતાના મુખારવિંદથી જે પ્રમાણે મને કહ્યો અને મેં સાંભળ્યો તે પ્રમાણે જ તમને મેં કહ્યો છે. ॥ સૂત્ર ૪૦ ॥

આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ नवमम् अध्ययनम् ॥

गतमष्टममध्ययनं, साम्प्रतं नवमं प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः—पूर्वस्मिन् मायावतोऽनर्थः प्रोक्तः, इह च भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थः प्रोच्यते, इति सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्—'जइणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्—जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं२ चंपा नामं नयरी पुण्णभद्दे चेइए तत्थणं माकंदी नामं सत्थवाहे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं भद्दा

—नववा अध्ययन प्रारंभ—

अष्टम अध्ययन समाप्त हुआ। अब नौवां अध्ययन प्रारंभ होता है इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस तरहसे संबंध है पूर्व अध्ययन में कहा गया है कि जो साधु मायावी होते है वे अनर्थ के पात्र होते हैं अर्थात् यदि उसके महाव्रतों में थोड़ा सा भी माया शल्य है तो वे उसे यथावत् फल जनक नही होते हैं—अब सूत्रकार इस अध्ययन द्वारा यह प्रकट करेंगे कि जो साधु भोगों से विरक्त नही होता है वह अनर्थका स्थान होता है और जो विरक्त होता है वह अपने प्रयोजनरूप अर्थको प्राप्त कर लेता है। इसी संबन्धको लेकर प्रारंभ हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है (जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं) इत्यादि ।

॥ नवमुं अध्ययन प्रारंभ ॥

આઠમું અધ્યયન પુરું થયું છે. નવમું અધ્યયન હવે આરંભ થાય છે. આઠમા અધ્યયનની સાથે આ અધ્યયનનો સંબંધ આ પ્રમાણે છે કે આઠમા અધ્યયનમાં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે જે સાધુઓ માયાવી હોય છે તેઓ અનર્થના પાત્ર હોય છે એટલે કે જો તેના મહાવ્રતોમાં થોડું પણ માયાશલ્ય (માયા રૂપ કાંટો) હોય ત્યારે તેઓ તેમાં યોગ્ય ફળના અધિકારી થતા નથી. હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનમાં એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે જે સાધુ ભોગોથી વિરક્ત થતો નથી તે અનર્થનું સ્થાન થઈ પડે છે અને જે વિરક્ત હોય છે તે પોતાના પ્રયોજન રૂપ અર્થને મેળવી લે છે. આ વિષયને લઈને પ્રારંભ થતા નવમા અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नामं भारिया, तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा–जिणपालिए य जिणरक्खिए य, ततेणं तेसिं मागंदियदारगाणं अन्नया कयाई एगयओ साहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया तं सेयं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए–त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए । तएणं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी–इमे य ते जाया! अज्जग जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढी सक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं ?, एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सावसग्गा यावि भवइ, तं माणं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमंपि लवण० जाव ओगाहेह, माहु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तएणं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवारा लवणं जाव ओगाहित्तए,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तएणं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहिं य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था। तएणं तं मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोअणसयाइं ओगाढा ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन—अष्टमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, नवमस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? श्री सुधर्मास्वामी माह—एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पानामनगरी। पूर्णभद्रं चैत्यम्। तत्र खलु माकन्दीनाम सार्थवाहः परिवसति 'अड्ढे' आढ्यः = प्रभूतधनधान्यसंपन्नः, 'जाव अपरिभूए' यावदपरिभूतः केनाऽप्यपरिभवनीयः—सर्वजनमान्य इत्यर्थः। तस्य खलु भद्रानाम भार्या। तस्याः ख भार्यायां आत्मजौ द्वौ सार्थवाहदारकौ

टीकार्थ—जंबूस्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि (भंते) भदन्त ! (जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्सणं केअट्ठे पण्णत्ते) यदि श्रमण भगवान् महवीरने कि जो सिद्धि स्थान के भोक्ता बन चुके हैं अष्टम ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है तो हे भदंत ! उन्ही श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं नौवें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? (एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थणं माकंदी नामं सत्थवाहे

ટીકાર્થ—' जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं ' इत्यादि ॥

જંબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે (भंते!) હે ભદન્ત !

(जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેઓ સિદ્ધસ્થાનના ઉપલોક્તા અર્થ પામ્યા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ ઉપર કહ્યા મુજબ નિરુપિત કર્યો છે તો નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ તેઓએ કેવી રીતે પ્રગટ કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी पुण्णभद्दे चेइए, तत्थणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आस्ताम्, 'तं जहा' तद्यथा=तथाहि-जिनपालितश्च जिनरक्षितश्च । ततः खलु तयोर्माकन्दिकदारकयोरन्यदा कदाचित् एकतः सहितानामयमेतद्रूपो मिथः कथासमुल्लापः समुदपद्यत-एवं खलु आवां लवणसमुद्रं पोतवहनेन एकादशवारान्

परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स भद्दा नामं भारिया) इस प्रकार जंबू स्वामी का प्रश्न सुन कर श्री सुधर्मी स्वामी उन्हे समझाते हैं कि जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस तरह से हैं, उस काल और उस समय मे चंपा नामकी नगरी थी । उसमें पूर्णभद्र नामका उद्यान था । उस चंपा नगरी में माकंदी नामका सार्थवाह रहता था । यह धनधान्य से खूब पूर्ण था। अतः अपरि भवनीय था। कोई भी मनुष्य इसका तिरस्कार नहीं कर सकता था-सर्वजन मान्य था । इनकी भार्याका नाम भद्रा था। (तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाह दारया होत्था तं जहा जिणपालिएय जिण रक्खिएय व) उस भद्रा के दो पुत्र थे (१) जिन पालित (२)जिनरक्षित (तत्तेणं तेसिं मागंदिय दारगाणं अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था) एक दिन की बात हैं कि जब ये दोनो माकंदी सार्थवाह के पुत्र एक जगह मिलकर बैठे हुए थे-तब इनमें परस्पर में इस प्रकार की बातचीत चली-(एवं खलु अम्हे

माकंदीनामं सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्सणं भद्दा नामं भरिया)

આ રીતે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને સમજાવતાં કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી. તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું. માકંદી નામે એક સાર્થવાહ તે ચંપા નગરીમાં રહેતો હતો. તે ધનધાન્યથી પૂર્ણરૂપે સમૃદ્ધ હતો, એટલા માટે તે અપરિભવનીય હતો. કોઈ પણ માણસની શક્તિ નહોતી કે તેનો તિરસ્કાર કરી શકે. તે સર્વજન માન્ય હતો. તેમનાં પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું.

(तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाह दारया होत्था तं जहा जिणपालिएय जिणरक्खिएय व)

તે ભદ્રાને બે પુત્રો હતા-જિનપાલિત અને જિન રક્ષિત.

(तत्तेणं तेसिं मागंदियदारगाणं अन्नया कयाई एगयओ साहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)

એક દિવસે માકંદી સાર્થવાહના બંને પુત્રો એક જગ્યાએ બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત કરવા લાગ્યા કે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ओगाढा' अवगाहितवन्तौ=उत्तीर्णौ, सर्वत्रापि च खलु सर्वयात्रासु आवां 'लद्धट्ठा' लब्धार्थौ=प्राप्तप्रचुरधनौ, 'कयकज्जा' कृतकार्यौ=साधितधनोपार्जनादिसकलकार्यौ, 'अणहसमग्गा' अनघसमग्रौ = तस्करादिहेतुकविघातरहितसर्वस्वौ सतौ पुनरपि निजगृहं हव्यमागतौ=सर्वथा सकुशलं समायातौ, तत्=तस्मात् 'सेयं' श्रेयः=उचितं खलु आवयोः देवानुप्रियः ? 'दुवालसमंपि' द्वादशमपि वारं लवणसमुद्रं पोतवहनेनावगाहितुम्, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति विचार्याऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुतः = स्वीकुरुतः प्रतिश्रुत्य यत्रैव अम्बापितरौ भद्रा माकन्दी च स्तः, तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्यैवमवादिष्टाम्-एवं खलु आवां

लवणसमुद्धं पोयवहणेणं एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियगघरं हव्वमागया) जहाज द्वारा हम लोग लवण समुद्र से होकर ११ बार परदेश जा चुके है-जब २ हम लोग बाहर परदेश गये-तब २ हमने वहां पर प्रचुर धन कमाया है और कृत कार्य होकर वहां से निर्विघ्न रूप में अपने घर पापिस सकुशल आये हैं-(तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया । दुवालसमंपि लवण समुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए) इसलिये हे देवाणुप्रिय अब १२वी बार भी हम लोग जहाज द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर व्यपार करने के लिये चले-तो अच्छा है । (त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकार का विचार कर उन दोनों ने एक दूसरे की बात को मान लिया (पडिसुणित्ता जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी एवं खलु अम्मयाओ एक्कारस वारा तं चेव जाव

(एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियगघरं हव्वमागया)

વહાણ વડે અમે લોકો ૧૧ વખત દેશાવર ખેડવા નીકળ્યા હતા અને આ પ્રમાણે ત્યાંથી પુષ્કળ ધન મેળવ્યું છે. અમે પોતાના વેપારનાં પૂર્ણરૂપે સફળ થઈને સકુશળ પાછા ઘેર ફર્યા છીએ.

(तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! ૧૨મી વખત પણ આપણે વહાણમાં બેસીને લવણ સમુદ્રમાં થઈને વેપાર કરવા દેશાવર માટે નીકળી પડીએ તો સારૂં થાય.

त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति)

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેઓએ એક મત થઈને આ વાત સ્વીકારી લીધી.

(पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् तदेव यावत् निजकं गृहं हव्यमागतौ, तद् इच्छावः खलु हे अम्बतातौ ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातौ सन्तौ द्वादशं वारं समुद्रं पोतवहनेन-अवगाहितुं=समुत्तर्तुं समुद्रयात्रां कर्तुमभिलषाव इत्यर्थः ।

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्-इदं च ते 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ ! ' ते ' युवयोः' अज्जग जाव ' आर्यक यावत्, अत्र यावच्छब्देन ' अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागए य बहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिय संखसिलप्पवालरत्तरयणमाइए संतसारसावएज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं " इति

नियगं घरं हव्व मागया-तं इच्छामो ण अम्मयाओ तुब्भे हिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए) मान कर फिर वे दोनों जहां माता पिता थे वहा गये वहां जाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात । हम लोग ११ वार पोतवहन द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जा चुके हैं वहां हमने अच्छी तरह से प्रचुर धन कमाया है और बिना किसी विघ्न बाधा के वहां से वापिस घर सकुशल लौट आये हैं अब हमारा विचार १२ वी बार भी पोतवहन द्वारा लवण समुद्र को पार कर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जानेका हो रहा है सो हम आपकी इस विषय में आज्ञा चाहते हैं-(तएणं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी-इमेय ते जाया ! अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं मे सपच्चवाएणं

एवं खलु अम्मयाओ एक्कारसवारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया तं इच्छामोणं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए)

એક મત થઈને તેઓ બંને ત્યાંથી માતા પિતાની પાસે ગયા અને તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે માતા પિતા ! અમે અત્યાર સુધીમાં અગિયાર વખત વહાણ વડે લવણ સમુદ્રમાં થઈને બહાર પરદેશમાં વેપાર કરવા ગયા છીએ. ત્યાં જઈને અમોએ પુષ્કળ પ્રમાણમાં ધન મેળવ્યું છે અને ત્યાંથી પાછા ક્ષેમ કુશળ નિર્વિઘ્ન રૂપે ઘેર આવ્યા છીએ. હમણાં અમારો વિચાર વહાણ વડે જ ૧૨ મી વખત લવણ સમુદ્રને પાર કરીને પરદેશમાં વેપાર કરવા માટે જવાનો થઈ રહ્યો છે. તો એ માટે અમે તમારી આજ્ઞા માંગીએ છીએ.

(तएणं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी इमेय ते जाया ! अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि सक्कार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सङ्ग्रहः, अस्य छाया— 'आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागतं च बहु हिरण्यं च सुवर्णं च कांस्यं च दूष्यं च विपुलधनकनकरत्नमणिमौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालरक्तरत्नादिकं सत्सारस्वापतेयम्, अलं यावत् आसप्तमात् कुलवंश्यात् प्रकामं दातुं, प्रकामं भोक्तुं, प्रकामं " इति । ' अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए ' आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागतम्, आर्यकः-पितामहः, प्रार्यकः=पितुः पितामहः, पितृप्रार्यकः = पितुः प्रपितामहः, तेभ्यः सकाशाद् आगतं=वंशपरम्परया प्राप्तं, 'बहु' प्रमाणतो बहुलं 'हिरण्णं' हिरण्यं=रजतं, ' सुवण्णं ' सुवर्णं=प्रतीतं, ' कंसं ' कांस्यं=धातुविशेषः, उपलक्षणं ताम्रादीनाम्, ' दूसं ' दूष्यं=वस्त्रं चीनांशुकादिकं ' विउलं ' विपुलं=प्रचुरं धणकणग ' धनं=गवादि, कणकं=धान्यं, ' रयण ' रत्नानि = कर्केतनादीनि, ' मणि ' मणयः=चन्द्रकान्ताद्याः, ' मोत्तिय ' मौक्तिकानि प्रतीतानि, ' संखा ' शङ्खा=दक्षिणावर्त्ताः, प्रसिद्धाः, यत्प्रभावाद् विघ्न निवृत्तिः कुशलप्रवृत्तिश्च भवति ' सिलप्पवाल ' शिलाप्रवालानि=विद्रुमाणि, 'रत्तरयण' रक्तरत्नानि=पद्मरागाः, तान्यादौ-यस्य तत्तादृशं ' संतसारसावएज्जे ' सत्सारस्वापतेयं, सत्=विद्यमानं स्वाधीनमित्यर्थः, ' सारं '=प्रधानं स्वापतेयं=द्रव्यं, ' अलाहि ' अलं=परिपूर्णम् अस्ति कियत्परिमितम् ? इत्याह—' जाव ' इत्यादिना, ' जाव ' यावत्=यावत्परिमितम् ' आसत्तमाओ कुलवंसाओ ' आसप्तमात् कुलवंश्यात्=अद्यतनादारभ्य भविष्यत्स-

निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं) इस प्रकार अपने दोनों पुत्रों के वचन सुनकर उनसे माता पिता ने इस प्रकार कहा—हे पुत्रों अपने यहां आर्यक, प्रार्यक एवं पितृप्रार्यकों से चला आया बहुत सा हिरण्य सुवर्ण, कांसा तांबा आदि तथा चीन आदि के वस्त्र, गाय भैंस आदि धन, गेहूँ आदि धान्य, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणिगण, मौक्तिक, दक्षिणावर्त शंख, मूंगा, पद्मराग आदि उत्तम से उत्तम द्रव्य खूब भरा पड़ा है—इस पर अपने सिवाय किसी और दूसरे का अधिकार नहीं हैं। वह प्रमाण में इतना अधिक है कि आजकी पीढीसे लेकर

समुदए किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं)

આ પ્રમાણે પોતાના બંને પુત્રોની વાત સાંભળીને માત પિતાઓએ આ રીતે કહ્યું કે હે પુત્રો ! આપણે ઘેર આર્યક, પ્રાર્યક અને પિતૃ પ્રાર્યકોથી એકઠું કરેલું ખૂબ જ સોનું, કાંસુ, તાંબુ વગેરે તેમજ ચીન વગેરે દેશોનાં વસ્ત્રો, ગાય, ભેંસ વગેરે ધન, ઘઉં વગેરે ધાન્ય, કર્કેતન વગેરે રત્નો, ચંદ્રકાંત વગેરે મણિઓ, મોતીઓ, દક્ષિણાવર્ત શંખ, પરવાળાં પદ્મરાગ વગેરે ઉત્તમોત્તમ દ્રવ્ય પુષ્કળ પ્રમાણમાં ભર્યું છે. આ સંપત્તિ ઉપરનો બીજા કોઇનો અધિકાર નથી. અને તે પ્રમાણમાં એટલી બધી છે કે તમારી આજની પેઢીથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तमपुरुषपर्यन्तं 'पकामं दाउं' प्रकामं दातुम्=दीनदुःखिभ्योऽत्यर्थं वितरीतुम्, एवं प्रकामं भोक्तुम्=अत्यर्थं स्वस्योपभोगार्थम्, प्रकामम्=अत्यर्थं 'परिभाएत्तए' परिभाजयितुं=दायादादिभ्यो विभागं कर्तुम्, पूर्वपरम्पराप्राप्तमिदं द्रव्यं हे पुत्रौ! युवयोर्भविष्यत्सप्तमपुरुषपर्यन्तं प्रकामदानाद्यर्थं परिपूर्णमस्तीति भावः। 'तं' तत्—तस्माद् युवाम् 'अणुहोह' अनुभवतं 'ताव' तावत्=प्रथमं 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ! विपुलं=प्रचुरं माणुस्सकं=मनुष्यसम्बन्धीकम् 'इड्ढीसक्कारसमुदए' ऋद्धिसत्कारसमुदयम्, ऋद्ध्या—वस्त्र सुवर्णादिना, सत्कारः=मानकृतबहुमानस्तस्य समुदयः—बाहुल्यं तम्, मनुष्यसम्बन्धिन ऋद्धिसत्कारसमुदायस्यानुभवं कुरुतं युवामिति भावः, अतः 'भे' युवयोः 'सपच्चवायेणं' सप्रत्यपायेन=विघ्नबहुलेन 'निरालंबणेणं' निरालम्बनेन=निष्कारणेन, विघ्नबाधोपस्थितौ त्राणार्थमालम्बनीय-

तुम्हारी सात पीढी तक के लोग उसे दीन दुःखियों को दान में देवें बैठे २ इच्छानुसार खावें पीवें हिस्सेदारों में उसका विभाग भी कर देवें तौभी वंश परम्परा से चला आया हुआ यह द्रव्य कभी समाप्त नहीं हो सकता है—हे पुत्र! तुम्हारी सात पीढी तक के पुरुषों को यह दानादिक में वितरण करने के लिये पर्याप्त हैं। पितामह—दादा का नाम आर्यक है। पिता के पिता के पिता का नाम प्रार्यक है। पिता के प्रपितामह का नाम पितृ प्रार्यक हैं यह सब पाठ "परिभाएत्तए" के पहिले का यावत् शब्द से यहां गृहीत हुआ है। इस लिये हे पुत्रों! तुम दोनों पहिले मनुष्य भवसम्बन्धी ऋद्धि सत्कार समुदाय का अनुभव करो। विघ्न बहुल तथा विघ्नबाधा के उपस्थित होने पर त्राण के लिये आलम्बनीयवस्तु से वर्जित ऐसे लवण समुद्र के उत्तरण से क्या तात्प

ભાંડીને સાત પેઢી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ દુઃખી માણસોને દાનમાં આપે, બેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીવે લેવડે અને ભાગ પડાવનારાઓમાં પણ તેની વહેંચણી કરે છતાંએ વંશપરંપરાથી સંગ્રહાયેલી સંપત્તિ સમાપ્ત થઈ જવાની નથી. હે પુત્ર! તમારી સાત સાત પેઢી સુધીના પુરૂષોને માટે આ સંપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમાં વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે. પિતામહ એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનું નામ પ્રાર્યક છે. પિતાના પ્રપિતામહનું નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે. આ પાઠ અહીં "परिभाएत्तए" ના પહેલાના 'यावत्' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે. એટલા માટે હે પુત્રો! તમે બંને પહેલાં મનુષ્ય ભવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાયનો અનુભવ કરો. બહુ વિઘ્નો યુક્ત તેમજ વિઘ્નો બાધાઓ આવી પડે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तुवर्जितेन वा ' लवणसमुद्दोत्तारेणं ' लवणसमुद्रोत्तारेण = लवणसमुद्रोत्तरणेन ' किं ' किं प्रयोजनम् ? न किमपीत्यर्थः, युवाभ्यामत्रैवस्थातव्यं न कुत्रापि गन्तव्यमिति भावः । पुनश्च–एवं खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रौ ! द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विघ्नबहुला चापि भवति ' तं ' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवां द्वावपि द्वादशं ' लवण० जाव ' लवण यावत्–लवणसमुद्रं पोतवहनेन अवगाहेथाम् , युवाभ्यां द्वादशवारं समुद्रावगाहनं न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु ' न खलु युवयोः शरीरस्य ' वावत्ती ' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे काऽपि व्यापत्तिर्न भवतु ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः ।

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादिष्टाम्–एवं खलु आवां हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् ' लवण जाव ' लवण

र्य है। कारण इसका यही है कि तुम दोनों यहीं पर रहो कहीं भी मत जाओ। (एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ तं माणं तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमंपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भं सरीरस्स वावत्तीं भविस्सइ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रों ! बारहवीं यात्रा सोपसर्ग–विघ्नबहुल–भी होती है। इसलिये हे पुत्रो ! तुम अब १२ वीं बार लवणसमुद्र की पोत वहन से यात्रा मत करो। मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ। यही हमारी भावना है। (तएणं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि एवं वयासी) ऐसा सुनकर उन माकंदि दारकों ने अपने उन माता पिता से दुबारा तिबारा भी ऐसा ही कहा–(एवं खलु अम्हे अम्मयाओ

ત્યારે તેમાંથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યાં સદંતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને ઓળંગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બંને પુત્રો અહીં જ રહો, કયાંએ જાઓ નહિ.

(एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ तं माणं तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमंपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भं सरीरस्स वावत्तीं भविस्सइ)

અને બીજું એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામાં વિઘ્નો પણ બહુજ નડતા રહે છે. એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માંડી વાળો. તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે.

(तएणं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी)

આ પ્રમાણે સાંભળીને માકંદી દારકોએ બીજી અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના માતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्तौ यावत् तर्क्षेयः खलु आवयोर्द्वादशं वारं पोतवहनेन लवणसमुद्रमवगाहितुमिति ॥

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ यदा नो शक्नुतः बहीभिः 'आघवणाहिं' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभिः, 'पण्णवणाहि य' प्रज्ञापनाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आघवित्तए वा' आख्यापयितुं सामान्यतः प्रतिबोधयितुं वा 'पण्णवित्तए वा' प्रज्ञापयितुं=विशेषतः प्रतिबोधयितुं वा लवणसमुद्रोत्तरणतो निवर्तयितुं न शक्नुत इत्यर्थः, तदा 'अकामाचेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उक्तमर्थम् 'अणुजाणित्था' अनुजानीतः=स्वीकृतवन्तौ। ततः खलु

एक्कारसवारा लवणं जाव ओगाहित्तए) कि हे मात तात! जब हम लोगों ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने में क्या भय है। इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेयस्कर ही है। आप हमारी कोइ चिन्ता न करें। (तएणं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएं ति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहिं य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रों को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने में समर्थ नहीं हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नहीं बदल सकें तब उन्हों ने उन्हें इच्छा नही होने पर भी इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एवं खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारसवारालवणं जाव ओगाहित्तए)

હે માતા પિતા! અમે ૧૧ વખત લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરી આવ્યા છીએ તો ૧૨ મી વખત યાત્રા કરવામાં ભય શાનો હોય? ૧૨ મી વખતની વહાણ વડે યાત્રા અમારા માટે તો મંગળકારી જ થશે. અમારી તમે કોઈ પણ જાતની ચિંતા કરતા નહિં

(तएणं ते मगंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था)

આ પ્રમાણે પોતાના બંને પુત્રોને તેઓ અનેકવિધ આખ્યાપનોથી સામાન્ય કથનથી-અને પ્રજ્ઞાપનાઓથી-વિશેષ કથનથી સમજાવવામાં અસમર્થ થઈ ગયા, લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરવાના તેમના નિશ્ચયને તેઓ ફેરવી શકયા નહિ ત્યારે તેઓએ પોતાની ઈચ્છા ન હોવા છતાં વહાણ વડે લવણસમુદ્રની યાત્રા કરવાની આજ્ઞા આપી દીધી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञातौ सन्तौ एकद्वित्रिचतुरादिसंख्याक्रमेण गणयित्वा दीयमानं क्रयाणकं=नालिकेर पूगीफलादिकम् , ' मेज्जं च ' मेयं च=यत् पल-सेटिका-हस्तादिना मानं कृत्वा दीयमानं वस्तुजातं-दुग्धघृततैलवस्त्रादिकम् , ' पारिच्छेज्जं ' परिच्छेद्यं च=प्रत्यक्षतो निकषादि परीक्षया यदीयमानं तत्-सुवर्णमणिमुक्तादिकं च, एतत्सर्वं गरिमधरिमादिकं वस्तुजातं गृहीत्वा ' जहा अरहण्णगस्स ' यथा अरहन्नकस्य यथा=येन प्रकारेण अरहन्नकस्य=अस्यैवाष्टमाध्ययने वर्णितस्य श्रावकस्य वर्णनं तथैवात्र विज्ञेयं, ' जाव ' यावत् लवणस-

---

देदी। (तएणं ते मागंदिय दारगा अम्मा पिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोयणसयाइं ओगाढा) इस तरह माता पिता से आज्ञापित हुए वे दोनों माकंदी सार्थवाह के पुत्र, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्य रूप क्रयाणक वस्तुओं को पोतमें भरकर अरहन्नक सार्थवाह की तरह अनेक योजनों तक लवण समुद्रमें निकल गये। एक दो तीन चार इस रूप से गिनकर जो वस्तु दी जाती है वह गणिम है जैसे नारिकेल, सुपारी आदि। जो तौल कर दी जाय वह धरिम है और नापकर दी जाती है वह मेय-जैसे दुग्ध, घृत, तैल, वस्त्र, आदि । जो प्रत्यक्षसे परीक्षित कर या कसौटी आदि पर कस कर दी जाती है वह परिच्छेद्य है-जैसे सुवर्ण मणि मुक्ता आदि। अरहन्नक श्रावकका वर्णन इसी ज्ञाताध्ययनके अष्टम अध्ययनमें किया है ॥सू १॥

(तएणं ते मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहुइं जोयणसयाइं ओगाढा)

આ રીતે બંને માકંદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમાં ભરીને અરહન્નક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોજનો સુધી લવણ સમુદ્રમાં પહોંચી ગયા. ગણત્રી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામાં આવે છે તે ' ગણિમ ' છે જેમ કે નારિયેર, સોપારી વગેરે. જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામાં આવે છે તે ' ધરિમ ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી, તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસોટી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેદ્ય છે-જેમ કે સોનું, મણિ, મોતી, વગેરે. અરહન્નક શ્રાવકનું વર્ણન જ્ઞાતાધ્યયનનાજ આઠમા અધ્યયનમાં કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुद्रं बहूनि योजनशतानि 'ओगाढा' अवगाढौ=अवगाहितवन्तौ नौकाया तेन गतवन्तावित्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तएणं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाति, तं जहा—अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियावाए तत्थ समुट्ठिए, तएणं सा णावा तेणं कालियावाएणं आहुणिज्जमाणी२ संचालिज्जमाणी२ संखोभिज्जमाणी२ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी२ कोट्टिमंसि फरयलाहए विव तेंदूसए, तत्थेव२ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गगणतलाओ भट्ठविज्जाविज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महागरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविवमहाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी, णिगुंजमाणीविव गुरुजणदिट्ठा वराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचोपहारसयतालिया गलियलंबणाविव गगणतलाओ रोयमाणिविव सलिलगंट्ठिविप्पइरमाणघोरंसुवाएहिं णववहू उवरमयभत्तुया विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी झायमाणाविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया णिसासमाणीविव महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववरवहूसंचुण्णियकट्ठकूवरा भग्गमेढीमोडियसहस्समाला सूलाइयवंकपरिमासा फलहंतरतडतडेंतफुट्टंतसंधिवियलंतलोहकीलिया सव्वंगवियंभिया परिसडियरज्जुविसरं-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तसंत्रगत्ता आमगमल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव चिंतिज्जमाणगुरुई हाहाकयकरुणधारणावियवाणियगजणकम्मगारविलविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहिं एगं महं अंतो जलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियझयदंडा वलयसयखंडिया करकरकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया, तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणियं भंडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जावि य होत्था ॥ सू० २ ॥

टीका—ततः खलु तयोर्माकन्दिकदारकयोरनेकानि योजशतानि यावल्लवणसमुद्रमवगाहितयोः सतोः 'अणेगाइं' अनेकानि=नानाविधानि 'उप्पाइयसयाइं' उत्पातशतानि=उपद्रवशतानि प्रादुर्भूतानि, 'तंजहा' तद्यथा–'अकालेगज्जिए' अकाले गर्जितम्=असमये मेघगर्जनम् १, 'जाव' यावत्–'अकाले विज्जुए' अकाले विद्युत्=असमये विद्युद्विद्योतनम् २, 'अकाले थणियसद्दे' अकाले स्तनि-

'तएणं तेसिं मागंदिय दारगाणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (तेसिं मागंदियदारगाणं) उन माकंदीके पुत्रों को जब कि वे (अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं) लवण समुद्र में अनेक योजनों तक निकल चुके थे (अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं) अनेक-सैकड़ों उत्पात प्रादुर्भूत हुए (तं जहा) जैसे (अकाले गज्जियं जाव थणियसद्देकालियावाए तत्थ समुट्ठिए) असमय में मेघगर्जना हुई! यावत्–अकाल में बिजली चमकने लगी। बिना समय के

(तएणं तेसिं मागंदियदारगाणं ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારપછી (तेसिं मागंदियदारगाणं) માકંદી પુત્રોને– કે જ્યારે તેઓ (अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं લવણ સમુદ્રમાં ઘણા યોજનો સુધી દૂર પહોંચી ગયા હતા (अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पउब्भूयाइं) ઘણા સેંકડોની સંખ્યામાં ઉત્પાતો થવા માંડ્યા. (तं जहा) જેમ કે (अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियावाए तत्थ समुट्ठिए) અકાળે મેઘ ગર્જના થવા માંડી, યાવત્–અકાળે આકાશમાં વીજળી ઝબૂકવા માંડી. વર્ષાકાળ હતો નહિ છતાંએ ભયંકર ગર્જનાઓ થવા માંડી. અકાળે જ ભયંકર વાવાઝોડાથી વાતાવરણ આક્રાંત થઈ ગયું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तशब्दः=असमये निष्ठुरगर्जनम् ३, 'कालियावाए' कालिकावातः=असमये-महावातश्च ४, तत्र समुत्थितः। ततः खलु सा 'णावा' नौका=यस्यां माकन्दिकदारकौ स्थितौ, तेन कालिकावातेन 'आहुणिज्जमाणी २' आधूयमाना २ पुनः पुनः कम्पमाना 'संचालिज्जमाणी २' सञ्चाल्यमाना २=स्थानात्-स्थानान्तरनयनेन मुहुर्मुहुः प्रचाल्यमाना, 'संखोभिज्जमाणी' सङ्क्षोभ्यामाना=अधोनिपत्यपुनरूर्ध्वमुत्पतनेन पुनः पुनः क्षोभं प्राप्यमाणा 'सलिलतिक्खवेगेहिं' सलिलतीक्ष्णवेगैः-जलतीव्रतरङ्गवेगैः 'आयट्टिज्जमाणी २ आवर्त्यमाना २ इतस्ततो वारं वारं चक्राकारेण भ्राम्यमाणा 'कोट्टिमे' कुट्टिमे=पाषाणबद्धभूमौ 'करयलाहए' करतलाहतः=हस्ततलास्फालितः 'तेंदूसए विव' कन्दुकइव 'तत्थेव २' तत्रैव-तत्रैव-'ओवयमाणीए' अवपतन्ती = अधः पतन्ती 'उप्पयमाणीय' उत्पतन्ती=

ही घनघोर गर्जना होने लगी। विना कालके ही भयंकर आँधी आ गइ। (तएणं सा णावा तेणंकालियावाएणं आहुणिज्जमाणी २ संचालिज्जामाणी संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी २ कोट्टिमंसि करयलाहए विव तेंदूसए तत्थेव२ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय) इस कारण वह नौका उस अकालिक भयंकर आँधी से बार बार कंपित हो उठी बार २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डगमगाती हुई आने जाने लगी। बार बार कभी वह नीचे आती तो कभी ऊपर उठती।

जल के तीक्ष्णवेग से वह कभी २ बार २ चक्राकार से इधर उधर घूमने लग जाती। जिस प्रकार पाषाणबद्ध भूमि ऊपर गेंद हाथसे आहत होकर नीचे ऊँचे बार २ उछलती है उसी तरह वह नौका भी कभी

(तएणं सा णावा तेणं कालियावाएणं आहूणिज्जामाणी २ संचालिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि करयलाहएविव तेंदूसए तत्थेव २ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय)

અસમયના વાવાઝોડાથી વહાણ સતત ડગમગવા લાગ્યું, વારંવાર એક જગ્યાએથી ખસીને બીજા સ્થાને ડગમગતું જવા લાગ્યું. સતત રૂપમાં કોઈ વખત તે નીચે તો કોઇ વખત ઉપર આ રીતે નીચે ઉપર થવા માંડયું.

પાણીના તીવ્ર વેગથી કયારેક તે નાવ વારંવાર પૈડાની જેમ આમતેમ ફરવા માંડી. જેમ પથ્થરવાળી નક્કર જમીન ઉપર દડો હાથ વડે ફેંકાય અને તે વારંવાર નીચે ઉપર થાય તેમજ નાવ પણ નીચે ઉપર ઉછળવા માંડી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊर्ध्वंगच्छन्तीव, तथा सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेव धरणीतलाद् उप्पयमाणी' उत्पन्ती=ऊर्ध्वमुच्छलन्ती, 'भट्ठविज्जा' भ्रष्टविद्या=विस्मृतविद्या विद्याधरकन्यकेव गगनतलाद् 'ओवयमाणी' अवपतन्ती=अधोनिपतन्ती, 'महागरुलवेगवित्तासिया' महावरुडवेगवित्रासिता=महागरुडवेगेन भयाक्रान्ता 'भुयगवरकन्नगाविव' भुजगवरकन्यकेव नागकन्येव 'विपलायमाणी' विपलायन्यी, 'महाजणरसियसद्दवित्तत्था' महाजनरसितशब्दवित्रस्ता=जनसमूहकोलाहलशब्देनभीता 'ठाणभट्ठा' स्थानभ्रष्टा =स्वस्थानच्युता 'आसकिसोरीविव' अश्वकिशोरीव=अश्ववत्सावत् 'धावमाणी' धावमाना, गुरुजणदिट्ठावराहा' गुरुजनदृष्टापराधा=गुरुजनैः=मातापित्-श्वशुरा-

२ वहीं २ बार २ नीचे ऊँचे उछलने लगती। (सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव) उस समय वह नौका ऐसी ज्ञात होती थी कि मानो सिद्ध विद्यावाली कोई विद्याधर कन्या ही धरणीतल से निकलकर ऊपरको उठ रही है (भट्ठ विज्जाहरकन्नगागगणतलाओ ओवयमाणी विव) या जिसकी विद्याभ्रष्ट हो चुकी है जिसे विद्या विस्मृत हो गइ है-ऐसी कोइ विद्याधर कन्या मानों आकाश से नीचे उतर रही है-(महागरुलवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्नगाइव) या गरुड़ के भयोत्पादक वेगसे आक्रान्त हुइ मानों कोई नागकन्या ही इधर उधर भाग रही है (महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा धावमाणी आस किसोरी विव) या जनसमूह के कोलाहल से भय भीत होकर मानों कोई घोडी की बछेरी ही अपने स्थान से भ्रष्ट होकर इधर उधर दौडती फिर रही है (गुरुजणदिट्ठावराहा णिगुंज माणी

(सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव) તે વખતે મોલંઓમાં ઉછળતી તે નાવ સિદ્ધ વિદ્યાવાળી કોઇ વિદ્યાધર કન્યા પૃથ્વી ઉપરથી નીકળીને ઉપર ઉઠતી હોય તેમ લાગતી હતી (भट्ठविज्जा विज्जाहर कन्नगा गगणतलाओ ओवयमाणीविव અથવા તો વિદ્યાભ્રષ્ટ થયેલી, વિદ્યા વિસ્મૃત થયેલી એવી કોઇ વિદ્યાધર કન્યા આકાશમાંથી નીચે ઉતરતી હોય, (महागरुलवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्नगा इव) અથવા તો ગરુડના ભયોત્પાદક વેગથી આક્રાંત થયેલી કોઈ નાગકન્યા જ આમતેમ નાસભાગ કરતી હોય, (महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा धावमाणी आसकिसोरी विव) અથવા તો માણસોના ઘોંઘાટથી ભયભીત થઇને કોઈ ઘોડીનું વછેરું તબેલામાંથી નાસીને આમતેમ કૂદતું ઉછળતું હોય, (गुरुजणदिट्ठा वराहा णिगुंज माणी सुयणकुलकन्नगा विव) અથવા તો કુટુંબના વડાઓ જેઓનું જુદું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिमिर्दृष्टः=अवलोकितः अपराधः=असत्यवचनादिरूपो यस्याः सा तथोक्ता 'सुयणकुलकन्नगाविव' सुजनकुलकन्यकेव=कुलवतीकन्येव 'णिगुंजमाणी' विगुञ्जन्ती =अव्यक्तशब्दंकुर्वती, अधोनमन्ती वा, 'वीचीपहारसयतालियाविव' वीचीप्रहारशततालितेव=अनेकशतजलतरङ्गप्रहारैस्ताडितेव 'घुम्ममाणी' घूर्णमाना=थरथरेति कम्पमाना, 'गगणतलाओ' गगनतलात् 'गलियबंधणाविव' गलितबन्धनेव=त्रुटितबन्धनेव-आकाशात् टित्वा पतितेवदृश्यमानेत्यर्थः, रोयमाणीविव सलिलगंठिविप्पइरमाणघोरंसुवाए हिं णववहू उवरयभत्तुया' रूदतीवसलिलग्रन्थिविप्रकिरद् घोरांश्रुपातैर्नववधूरुपरतभर्तृका, 'उवरयभत्तुया' उपरतभर्तृका=मृतभर्तृका नववधूरिव=नवपरिणीता वनितेव=सलिलभिन्नाग्रन्थियः सलिलग्रन्थियः= सलिलार्द्रग्रन्थयः, तेभ्योविप्रकिरन्तः=क्षरन्तिः, जलबिन्दवः तएव घोराश्रुपातास्तैः

सुयण कुलकन्नगाविव) या गुरुजनों द्वारा जिसका असत्य वचनादिरूप अपराध देख लिया गया है ऐसी कोई कुलवंती कन्या ही मानों लज्जावश नीचे की ओर झुकी जा रही है। (वीचीपहार सयतालीया विव घुम्ममाणी) हजारों जलतरंगो के प्रहारों से ताडित होने की वजह से ही मानो थर थर कँपती हुई वह नौका (गगणतलाओ गलियबंधणा विव) ऐसी दिखलाई दे रही थी कि बन्धन टूट जाने से आकाश से गिर सी पड़ी हो।

अर्थात्-जिस प्रकार बंधन टूट जाने से कोइ वस्तु ऊपर से नीचे गिर पड़ती है-उसी तरह यह नौका भी अपना बंधन टूट जाने से मानों आकाश से-ऊपर से-नीचे गिर पड़ी हैं। (रोयमाणीविव सलिल गंठि विप्पइरमाण घोरंसुवाएहिं णववहू उपर यभत्तुया) जिस प्रकार अपने पतिदेव के मरजाने पर नवोढा आँसुओं को वहाती हुई रोती है

બોલવું વગેરે અપરાધો જાણી ગયા છે તેવી કોઇ લાજથી મોં નીચું ઘાલીને કુળવંતી કન્યા જતી હોય, (वीचीपहारसयतालिया विव घुम्ममाणी) હજારો મોજાંઓના પ્રહારોથી અથડાઈને થર થર ધ્રૂજતી તે નાવ (गगणातलाओ गलिय बंधणा विव) એવી લાગતી હતી કે જાણે દોરી તૂટી જવાથી આકાશમાંથી નીચે પડી ગઈ હોય.

એટલે કે જેમ બંધન તૂટી જવાથી કોઈ વસ્તુ ઉપરથી નીચે આવી પડે છે તેવી જ રીતે જાણે કે આ નાવ પણ બંધન તૂટી જવાથી આકાશમાંથી નીચે પડી ગઇ ન હોય?

(रोयमाणीविव सलिल गंठिविप्पइरमाणा घोरंसुवाएहिं णववहू उपरयभत्तुया)

પોતાના પતિના મૃત્યુ પામ્યા બાદ જેમ કોઇ નવોઢા-જુવાન પત્ની-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुदतीव, 'विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहियापरममहब्भयाभिद्दुयामहापुरवरी' विलपन्तीव परचक्रराजाभिरुद्धा परममहाभयाभिद्रुतामहापुरवरी-शत्रुभूतैः परचक्रराजैरभितः सर्वतो रुद्धा परिवेष्टिता, अतएव परममहाभयादभिद्रुता तत्रत्यजनानां-भयार्तानां सर्वदिक्षु कोलाहलपूर्वकं यद् अभिद्रवणं पलायनं तेनाभिद्रुता अतएव विलपन्ती जनानां सभयकोलाहलैः विलापं कुर्वतीव यथा महापुरवरी महानगरी

उसी प्रकार उस नौका से भी सलिल से आर्द्र हुई संधियों से जल विन्दु समूह टपटप बरस रहा था-अतः मालूम पड़ता था कि मानों यह आंसुओं को छोड़ती हुइ रोही रही है। (विलवमाणी विव परचक्क रायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी) जिस प्रकार शत्रु भूत परचक्र राजाओं से सर्व ओर से घिरी हुइ कोई महानगरी बहुत अधिक भयसे अभिद्रुत होती हुई विलाप करती है अर्थात् जब कोई महानगरी शत्रु भूत राजाओं के द्वारा चारों ओर से घेरली जाती है तब वहां का प्रत्येक जन भय से आर्त होकर जहां जिस से भागते बनता है वह वहां रोता विलपता हुआ भाग जाता है-जनता में इस से अधिक अधिक विक्षोभ उत्पन्न होकर हाय २ आदिका शब्द उसके मुख से स्वतः निकलने लगता है अतः वह नगरी जैसे उससे आकुल व्याकुल बनजाती है-उसी प्रकार इस नौका में बैठे हुए यात्रियों के मुख से भी इस आपत्ति के समय मे हाय २ आदि शब्दों के कोलाहल से वहां का वातावरण आकुल व्याकुल बन रहा था अतः सूत्र कार ने इस नौका के

આંખોમાંથી શ્રાવણ, ભાદરવાની જેમ આંસુઓની ધારા વહાવતી ઉભી હોય તેમજ તે વહાણ પણ પાણીથી ભીનું થઈને સાંધાઓમાંથી સતત જળપ્રવાહ વહાવી રહ્યું હતું એટલે એમ જણાતું હતું કે તે રડતું જ ન હોય!

(विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भया भिद्दुया महापुरवरी)

શત્રુ બની ગયેલા બીજા બહારના ઘણા રાજાઓથી ઘેરાયેલી કોઇ મહાનગરી અત્યંત ભયત્રસ્ત થઈને વિલાપ કરવા માંડે છે એટલે કે જ્યારે કોઈ મહાનગરી શત્રુ રાજાઓથી ચોમેર ઘેરાઈ જાય છે ત્યારે નગરીમાં રહેનારી દરેક વ્યક્તિ જેમ ભયભીત થઈને જ્યાં જેને નાસી જવાનું સરળ પડે છે ત્યાં તે રડતી વિલપતી નાસી જાય છે, પ્રજાજનોમાં એનાથી ખૂબ જ ત્રાસ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને તેઓના મોંથી 'હાય' 'હાય' ના શબ્દો પોતાની મેળે નીકળવા માંડે છે. આ પ્રમાણે તે નગરી જેમ વ્યાકુળ થઈ જાય છે તેમ જ નાવમાં બેઠેલા યાત્રીઓના મોંથી નીકળતા 'હાય', 'હાય' ના શબ્દોથી ત્યાંનું વાતાવરણ વ્યાકુળ થઈ રહ્યું હતું. સૂત્રકારે આ નાવને અનેક દુશ્મન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवति, तद्वत्०, 'झायमाणीविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया' कपट-छद्मप्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजकाध्यायन्तीव कपटध्यानं=कुर्वन्तीव, अतएव परमकपट-प्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजिकेव=योगिनीवदृश्यमाना, 'णीसासमाणीविव महाकंतार विणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया' निःश्वसतीव महाकान्तारविनिर्गतपरिश्रान्ता परिणतवयस्का अम्बा यथा-महाकान्तारविनिर्गतेन=महावनविनिर्गमनेनापरिश्रान्ता= खिन्ना परिणतवयस्का=वृद्धावस्थापन्ना अम्बेव=पुत्रवती मातेव निःश्वसतीव ऊर्ध्वाधो-

---

विषय में ऐसी कल्पना की है कि मानों यह नौका परचक्र के राजाओं से सर्व ओर से रोकी हुई महानगरी के समान अत्यन्त भय से अभि भूत बन कर विलाप ही कर रही है। (झायमाणी विव कवडच्छोभ-वप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया) यह नौका बकवत् कपट ध्यानकरने वाली योग परिव्राजिकाके समान दिखलाई देती थी-जिस प्रकार कपट से ध्यान करने वाली परिव्राजिका क्षण भर के लिये कभी स्थिर हो जाती है और कभीअस्थिर-एक सी वृत्ति उसकी नही रहती इसी तरह तरोङ्गों से चंचल बनी हुई वह नौका भी क्षण भरके लिये स्थिर हो जाती थी और फिर अस्थिर बन जाती थी एक सी वृत्ति उसकी नहीं थी।

(णीसासमाणी विव महा कंतार विणिग्गय परिस्संता परिणयवया अम्मया) महा-भयंकर जंगल में ऊची नीची भूमि पर चलने से परि श्रान्त हुई जैसे वृद्धावस्थापन्न पुत्र वती माता दीर्घ निश्वासो को छोड़-

---

રાજાઓથી આક્રાંત થયેલી તેમજ ભયત્રસ્ત થયેલી મહાનગરીની સરખામણી એટલા માટે જ કરી છે.

(झायमाणी विव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया)

આ નાવ બગલાની જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી યોગ પરિવ્રાજીકાની જેમ લાગતી હતી એટલે કે જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી પરિવ્રાજીકા થોડી ક્ષણો માટે સ્થિર થઈ જાય છે અને પછી તરત જ અસ્થિર મનવાળી થઈ જાય છે. તે સ્થિરતાપૂર્વક મનને સ્થિર રાખી શકતી નથી તેમ આ નાવ પણ મોજાંઓથી ચંચળ થઈને થોડી ક્ષણો સ્થિર બની જતી અને પાછી તરત જ અસ્થિર થઈ જતી હતી, એક સરખી સ્થિતિમાં રહી શકતી જ નહોતી.

(णीसासमाणी विव महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया)

મહા ભયંકર વનવગડામાં ઊંચી નીચી ધરતી પર ચાલનારી પરિશ્રાન્ત થયેલી, ઘરડી થયેલી પુત્રવતી માતા જેમ દીર્ઘ નિશ્વાસો બહાર કાઢતી હોય-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गमनवती, 'सोयमाणी विव तव चरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववरवहू' शोचन्तीव तपश्चरणक्षीणपरिभोगा च्यवनकाले देववरवधूः-तपश्चरणक्षीणपरिभोगा=भुक्ततपश्चरणफला च्यवनकाले=देवभवस्थितिक्षयसमये देववरवधूरिव शोचन्ती=तद्भवस्थितजनविषादयोगात् शोकं कुर्वतीव दृश्यते। पुनः सा नौका कीदृशी जाता इत्याह-'संचुण्णियकट्ठकूवरा' इत्यादि। 'संचुण्णियकट्ठकूवरा' संचूर्णितकाष्ठकूवरा संचूर्णितानि=अत्यर्थं चूर्णी भूतानि काष्ठानि कूवरं च=मुखं यस्याः सा तथा, 'भग्गमेढी' भग्नमेधिः भग्नः= टितः मेधिः=सकलनौकाधारभूतः स्तम्भो यस्याः सा तथा, 'मोडियसहस्समाला' मोटितसहस्रमाला-मोटितः=भग्नः सहस्रमालः=सहस्रसंख्यजनाधारभूतो मालः=उपरितनभागो यस्याः सा तथा, 'सूलाइयवंकपरिमासा' शूलाचितवक्रपरिमासा शूलाचितइव=शूलारोपितइव वक्रः=कुब्जः परिमासः

ती हुई लड़खडाने लग जाती है-उसी प्रकार यह नौका भी तरंगो से आहत होकर मानों थकावट की वजह से ही चलने में लड़खड़ा रही थी। (सोयमाणी विव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववरवहू) तपश्चरणका जिसने फल भोग लिया है-और अब जिसके च्यवन का समय आ गया है ऐसी देवाङ्गना जिस प्रकार शोक से व्याकुल-चंचल-बन जाती है उसी प्रकार यह नौका भी बिलकुल चंचल बन गई थी। (संचुण्णिय कट्ठकूवरा) उस समय इस नौका के कष्ट और कूबर मुख-चूर्णी भूत बन चुके थे। (भग्गमेढी) इसका अपना सकल आधार भूत स्तंभ टूट चुका था। (मोडिय सहस्स माला) सहस्रसंख्यजनों का आधार भूत उपरितन भाग इसका भग्न हो चुका था। (सूलाइय वंक परिमासा) शूल पर आरोपित किये हुए के समान इसका परि-

ડીયાં ખાવા માંડે છે તેમજ તે નાવ પણ મોજાંઓથી અથડાઈને જાણે કે થાકીને લથડીયાં ખાવા ન માંડી હોય!

(सोयमाणी विव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववर वहू)

તપનું ફળ જેણે ભોગવી લીધું છે અને હવે પતન થવાનો સમય આવવાથી દેવાંગના જેમ શોક વ્યાકુળ-ચંચળ થઈ જાય છે, તે પ્રમાણે જ આ નાવ પણ ચંચળ બની ગઈ હતી. (संचुण्णियकट्ठकूवरा) મોજાંઓથી અથડાતાં અથડાતાં ત્યાં સુધી નાવના કાષ્ટ અને કૂબર-મુખ નાશ પામ્યાં હતાં. (भग्गमेढी) નાવનો આધાર ભૂત સ્તંભ (થાંભલો) તૂટી પડયો હતો. (मोडियसहस्समाला) હજારો માણસો જ્યાં આશ્રય મેળવી શકે તેવો નાવનો ઉપરનો ભાગ તૂટી ગયો હતો. (सूलाइयवंकपरिमासा) શૂલ ઉપર ખૂકવામાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

=काष्ठविशेषो यस्याः सा तथा, 'फलहंतरतडतडेंतफुट्टंतसंधिविगलंतलोहकीलिया' फलकान्तरेषु संयोजितफलकविवरेषु 'तडतडे' ति शब्दं कुर्वन्त्यः, स्फुटन्तो= विघटमानाः सन्धयः, अतएव विगलन्त्यो=निस्सरन्त्यो लोहकीलिका यस्याः सा तथा, 'सव्वंगवियंभिया' सर्वाङ्ग विजृम्भिता=सर्वाङ्गैः=सर्वावयवैः वि॒म्भिता= विवृतमुखा जाता या सा तथा, 'पडिसडियरज्जू' परिशटितरज्जुः=गलितरज्जुवती अतएव 'विसरंतसव्वगत्ता' विसरत्सर्वगात्रा=विशीर्यमाणसर्वावयवा, आमगमल्लगभूया' आमकमल्लभूता=अपक्वशरावसदृशा, 'अकयपुण्णजणमणोरहो विव' अकृतपुण्यजनमनोरथ इव, अकृतपुण्यः=हीनपुण्यो यो जनस्तस्य मनोरथ इव 'चिंतिज्जमाणगुरुई' चिन्त्यमानगुर्वी चिन्त्यमाना-'कथमेतामापदं तरिष्यामी' ति-विचार्यमाणेव गुर्वी=चिन्ताभारेणेव गुरुका, 'हाहाकयकण्णधारणावियवाणिय-

मास काष्ठविशेष टेढा हो गया था। (फलहंतरतडतडेंतफुट्टंतसंधिविगलंतलोहकीलिया) काष्टके पटियोंको परस्पर जोडनेके लिये जो संधियों में लोहेके बडेर कीले लगे हुए थे वे सब जब उसकी संधिया-जोड विघटित हो गई तब उनमें बाहर निकल आये थे (सव्वंगवियंभिया) अतः समस्त इसके जुड़े हुए अवयव खुल गये थे। (परिसडियरज्जू) जितनी भी इस में रस्सियां लगी हुई थी वे सब की सब गल चुकी थीं। (विसरंतसव्वगत्ता) इससे समस्त जोड़ खुल गये थे। (आम गमल्लक भूया) यह कच्चे मिट्टी के शरवाके समान हो गइ थी। (अकय पुण्ण जणमणोरहो विव) अकृत पुण्य वाले मनुष्य के मनोरथ के समान यह निष्फल बन गई थी। (चिंतिज्जमाण गुरुई) मैं इस आपत्ति को अब कैसे पार करूँगी इस चिंता से ही मानों यह बहुत भारी

આવેલાની જેમ પરિમાસ નામનું કાષ્ટ વિશેષ-વાંસુ થઈ ગયું હતું. (फलहंतर तडतडेंत फुट्टंत संधि विगलंतलोहकीलिया) લાકડાના પાટીયાઓને એક બીજાની સાથે તેનો સાંધા મેળવવા જે લોખંડના મોટા ખીલાઓ કામમાં લેવાય છે તે બધા પાટિયાઓ જ્યારે જુદા જુદા થઈ ગયા ત્યારે બહાર નીકળી આવ્યા હતા. (सव्वंग वियंभिया) આ પ્રમાણે નાવના બધા જોડાએલા સાંધાઓ જુદા થઈ ગયા હતા. (परिसडियरज्जू) તેની બધી દોરીઓ કહોવાઇ ચૂકી હતી. (विसरंतसव्वगत्ता) તેના બધા સાંધાઓ છૂટા પડી ગયા હતા. (आम गमल्लकभूया) તે માટીના કાચા કોડિયાંની જેમ થઈ ગઈ હતી. (अकयपुण्ण जण मणोरहाविव) કોઈ પણ દિવસે જેણે એકેય પુણ્યનું કામ કર્યું નથી એવા માણસના મનોરથની જેમ તે નિષ્ફળ થઈ ગઈ હતી. (चिंतिज्जमाण गुरुई) આવી પડેલી આફતનો સામનો હું કેવી રીતે કરીશ? જાણે કે આ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गजणकम्मगारविलविआ ' हाहाकृतकर्णधारनाविकवाणिजकजनकर्मकरविलपिता हाहाकृतैः=हाहाकारयुक्तैः कर्णधारैः=निर्यामकैः, नाविकैः=पोतवाहकैः, वाणिजकजनैः=व्यापारिजनैः, कर्मकरैः=भृत्यैः विलपिता=विलापयुक्ता-कर्णधारादीनां हाहाकारेण विलापं कुर्वतीवेत्यर्थः 'णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा' नानाविधैः रत्नैःपण्यैश्च=विक्रेयवस्तुजातैः सम्पूर्णा=सम्भृता, बहुभिः पुरुषशतैः रुदद्भिः क्रन्दद्भिः शोचद्भिः, 'तिप्पमाणेहिं' तेपमानैः=अश्रुणि मुञ्चद्भिः विलपद्भिः,=विलापं कुर्वद्भिः, एकं महत् ' अंतोजलगयं ' अन्तर्जलगतं=जलमध्यस्थितं गिरिशिखरमासाद्य=संघट्य ' संभग्गकूवतोरणा ' संभग्नकूपतोरणा-संभग्नः=त्रुटितः कूपः=कूपस्तम्भः-यत्र सितपटो

बन गई थी (हा हा कयकण्णधारणा विव वाणियगजणकम्मगार विलविया) इस में जो कर्ण धार, नाविक, व्यापारिजन एवं नौकर-चाकर बैठे हुए थे वे सब के सब हाहाकार करते हुए विलाप कर रहे थे— अतः ऐसा मालूम होता था कि उनके हाहाकार विलापों से यह नौका स्वयं विलाप कर रही है। (णाणा विहरयणपणिय संपुण्णा) अनेक प्रकार के रत्नों से एवं पण्य द्रव्यों से-विक्रेयवस्तुओं से-यह नौका भरी हुई थी। (रोयमाणेहिं कंद० सोय तिप्प० विलवमाणेहिं बहूहिं पुरिसएहिं एगं महं अंतोजलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता) रुदन करनेवाले, आक्रन्दन करनेवाले, शोक करनेवाले, आंसुओं को बहानेवाले ऐसे सैंकड़ों पुरुषों से भरी हुई यह नौका एक बड़े भारी जलके भीतर रहे हुए गिरिके शिखर से टकरा गई-टकराते ही (संभग्गकूव-

જાતની ચિંતાથી જ તે નાવ ભારે વજનદાર થઇ પડી હતી. (हा हा कय कण्णधारणा विव वाणियगजणकम्मगारविलविया)

તેમાં બેઠેલા કર્ણધાર, નાવિક, વેપારીઓ અને બીજા નોકર ચાકરો હાય, હાય, કરીને વિલાપ કરી રહ્યા હતા એથી એમ લાગતું હતું કે જાણે તેઓના વિલાપથી જ આ નાવ પોતે વિલાપ કરતી ન હોય ! (णाणाविहरयण पणिय संपुण्णा) ઘણી જાતનાં રત્નો અને વેચાણની વસ્તુઓથી આ નાવ પૂરેપૂરી ભરી હતી. (रोयमाणेहिं कंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहिं बहूहिं पुरिसएहिं एगं महं अंतोजलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता)

રડનારા, કરુણ આક્રંદ કરનારા, શોકથી પીડાતા, ચોધાર આંસુઓ વહેવડાવનારા, વિલાપ કરનારા એવા સેંકડો માણસોથી ચિક્કાર ભરેલી તે નાવ આખરે પાણીની અંદરના જ પર્વત શિખર (ખડક) સાથે અથડાઈ પડી અને અથડાતાંની સાથે જ (संभग्गकूवतोरणा તેના કૂપસ્તંભો અને તોરણો તૂટી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बध्यते सः, तथा तोरणानिच त्रुटितानि यस्याः सा तथा-'मोडियझयदंडा' मोटितध्वजदण्डा=त्रुटितध्वजकाष्ठा, 'वलयसयखंडिया' वलकशतखण्डिता वलकानां=दीर्घदारूणां शतानि खण्डितानि यस्याः सा, 'करकरस्स' करकरेति शब्दं कुर्वाणा तत्रैव समुद्रे 'विद्दवं=विलयम् उपगता=प्राप्ता जले बुडितेत्यर्थः। ततः खलु तस्यां नौकायां भिद्यमानायां=बुडितायां सत्यां बहवः पुरुषाः 'विउलपणियं' विपुलपणितं-विपुलं=प्रचुरं पणितं=पण्यद्रव्यं विक्रय द्रव्यम् यस्मिन् तत् तादृशं भाण्डमादाय 'अंतोजलंसि' अन्तर्जले=जलमध्ये 'निमज्जाविय' निमग्नाः=बुडिता अपि चाभूवन्॥ सू०२॥

मूलम्-तएणं ते मागंदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणसंपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति, जंसि च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसि च णं पदेसंसि एगे महं रयणदीवे णामं दीवे होत्था अणेगाइं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं

तोरणा) इसके कूपस्तंभ और तोरण भग्न हो गये (मोडियझयदंडा) ध्वजा दंड टूट गया (वलयसयखंडिया) बडे २ लंबे २ सैकड़ों काष्ठखंडित हो गये (करकरस्सतत्थेव विद्दवं उवगया) और यह कर २ शब्द करती हुई वहीं पर डूब गई। (तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणियं भंडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जाविय होत्था) इस तरह उस नौका के डूब जाने पर अनेक पुरुष प्रचुरपण्य द्रव्यवाले भाण्ड को लेकर जलके बीच में निमग्न हो गये॥ सूत्र २॥

ગયાં. (मोडियझयदंडा) ધ્વજા દંડ તૂટી ગયો. (वलयसयखंडिया) મોટાં મોટાં વિશાળ લાંબાં સેંકડો કાષ્ઠ તૂટી ગયાં (करकरास तत्थेव विद्दवं उवगया) અને તે નાવ 'કર કર' શબ્દ કરતી ત્યાં પાણીમાં ડૂબી ગઈ.

(तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणियं भंडमायाए अंतो जलंमि णिमज्जाविय होत्था)

આ રીતે નાવ ડૂબી જવાથી ઘણા માણસો પુષ્કળ પ્રમાણમાં દ્રવ્યોથી ભરેલા વાસણો સાથે પાણીમાં નિમગ્ન થઈ ગયા. ॥ સૂત્ર "૨" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेंसए होत्था अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४, तत्थणं पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति पावा चंडा रुद्दा साहसिया, तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउद्दिसि चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मागंदियदारगा तणं फलयखंडेणं उव्वुज्झमाणा२ रयणदीवं तेणं संवूढा यावि होत्था, तएणं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति लभित्ता मुहुत्तंतरं आससंति आससित्ता फलखंडं विसज्जेंति विसज्जित्ता रयणदीवे उत्तरंति उत्तरित्ता फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति करित्ता फलाइं गिण्हंति गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराणं मग्गणगवेसणं करेंति करित्ता नालिएराइं फोडेंति फोडित्ता नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति अब्भंगित्ता पोक्खरणी ओगाहिति ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति करित्ता जाव पच्चुत्तरंति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउ आपुच्छणं च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं च पोतवहणविवत्ति च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचितेमाणा२ ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएइ आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालप्पमाणं उड्ढं वेहासं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उप्पयइ२ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी२ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एवं वयासी–हं भो मागंदियदारया ! अप्पत्थियपत्थया जइ णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअं, अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं निलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासेणं असिणा खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तएणं ते मागंदियदारगा रयणदीव देवयाए अंतिए सोच्चाभीया करयल० एवं जण्णं देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति२ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ२ असुभपोग्गलावहारं करेइ२ सुभपोग्गलपक्खेवं करेइ करित्ता पच्छा तेहिं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति कल्लाकल्लिं च अमयफलाइं उवणेइ ॥ सू०३ ॥

टीका—ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ ' छेया ' छेकौ=चतुरौ ' दक्खा ' दक्षौ=निपुणौ, ' पत्तट्ठा ' प्राप्तार्थौ–प्राप्तः=ज्ञातः अर्थः=भावो याभ्यां तौ 'कुसला'

' तएणं ते मागंदिय दारगा ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते मागंदियदारगा) उनदोनों माकंदियदारकों ने कि जो (छेया,दक्खा,पत्तट्ठा, कुसला, मेहावी, निउणसिप्पो-

' तएणं ते मागंदियदारगा ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यार पाछ (ते मागंदियदारगा) तेओ બંને માગંદિય દારકોએ–કે જેઓ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशलौ=सकलकलाविज्ञौ 'मेहावी' मेधाविनौ=सुधियो णिउणसिप्पोवगया' निपुणशिल्पोपगतौ=तरणादिविद्यानिपुणौ बहुसु=अनेकेषु 'पोयवहणसंपरायेसु' पोतवहनसंपरायेषु = पोतवहनस्य=नौकातरणस्य संपरायेषु = विघ्नेषु समुपस्थितेषु 'कयकरणा' कृतकरणौ=कृतकार्यौ बहुशोऽनुभूतसंतरणकार्यौ, 'लद्धविजया' लब्धविजयौ=समुद्रपारगमनेन प्राप्तविजयौ 'अमूढा' अमूढौ=तरणादिक्रिया विवेकसम्पन्नौ 'अमूढहत्था' अमूढहस्तौ=तरणक्रियाकुशलहस्तौ एकंमहत् फलकखण्डं काष्ठमयम् 'आसादेंति' आसादयतः=आलम्बितवन्तौ० । यस्मिंश्च खलु प्रदेशे तत् पोतवहनं=पवहणं 'विवन्ने' विपन्नं=भग्नं तस्मिंश्च खलु तस्मिन्नेव प्रदेशे एको महान् रत्नद्वीपो नाम द्वीपः 'होत्था' आसीत्, स कीदृशः ? इत्याह-

---

वगया, बहुसु पोतवहणसंपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा, अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति) बडे चतुर थे, दक्ष थे, भावों को जानने वाले थे, सकल कलाओं के ज्ञाता थे, मेधावी थे, तरणादि विद्या में विशिष्ट योग्यता संपन्न थे, पोत संचालन मे उपस्थित हुए विघ्नों को पार करने वाले थे, अर्थात् ऐसी स्थितिमें जिन्होंने संस्तरण कार्य अनेक बार अभ्यस्त कर रखा था, समुद्रपार करने में जिन्हें विजय मिली थी, तरणादि क्रिया का विवेक जिन्हें बहुत अच्छी तरह था, जिनके हाथ तैरने में कभी थकते नहीं थे-जो तरण क्रिया में बडे कुशल थे, एक बडे भारी काष्टफलक खंड को प्राप्त कर लिया। (जंसिंच णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसिंच णं पदेसंसि एगे महं रयणदीवे-णामं दीवे होत्था, अणेगाइं जोअणाति आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोअ-

---

(छेया, दक्खा पत्तट्ठा, कुसला मेहावी निउण सिप्पोवगया बहुसु पोतवहण संपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलग खंडं आसादेंति

ખૂબ જ ચતુર હતા, દક્ષ હતા, ભાવોને જાણનારા હતા, બધી કળાઓમાં નિષ્ણાત હતા, મેધાવી હતા, તરવા વગેરેની કળાઓમાં નિપુણ હતા, પોત સંચાલનમાં વચ્ચે આવી પડેલા વિઘ્નો દૂર કરી શકવાની શક્તિ ધરાવતા હતા એટલે કે એવી પરિસ્થિતિમાં પણ હિંમત ન હારતાંગમે તે રીતે તરીને પણ સમુદ્ર પાર કરવામાં શક્તિશાળી હતા. તરવાની ક્રિયામાં જેઓ વિશેષ કુશળ હતા, તરતી વખતે પણ જેમના હાથો કોઈ પણ સ્થિતિમાં થાકતા જ નહિ. તરવામાં જેઓ ખૂબ જ કુશળ હતા-એક મોટા લાકડાના પાટિયાને પકડી લીધું

(जंसिं च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तं सि च णं पदेसंसि एगेमहं रयणदीवे णामं दीवे होत्था, अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं णाणा दुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'अणेगाइं' इत्यादि-अनेकानि योजनानि आयामविष्कम्भेण=दैर्ध्यपरिणाहेन, अनेकानि योजनानि परिक्षेपेण=परिधिना, नानाद्रुमषण्डमण्डितोद्देशः=अनेकवनषण्डमण्डितप्रदेशः सश्रीकः=शोभासम्पन्नः, प्रासादीयः-मनः प्रसन्नता हेतुत्वात्, दर्शनीयः=नेत्राह्लादकत्वात्, अभिरूपः=अपूर्वसौन्दर्यवत्त्वात्, प्रतिरूपः=प्रशस्ताकृतिकत्वात्०। तस्य खलु द्वीपस्य बहुमध्यदेशभागे=मध्यस्थले तत्र खलु एको महान् प्रासादावतंसकःश्रेष्ठप्रासादो आसीत्०। स कीदृशः ? इत्याह-'अब्भुगय ! इत्यादि -'अब्भुगयं' अभ्युद्गतः=विशालः 'ऊसियए' उच्छ्रितकः=गगनतलस्पर्शी यावत् सश्रीकः-सुरूपः=शोभनाकारः प्रासादीयः ४। तत्र खलु प्रासादावतंसके रत्नद्वीपदेवता नाम देवता 'रयणादेवी' इति प्रसिद्धा देवी परिवसति=निवासं

णाइं परिक्खेवेणं णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४) जिस प्रदेश में वह पोतवहन भग्न हुआ था, उसी प्रदेश में एक बड़ा भारी रत्नद्वीप नाम का द्वीप था। इसका आयाम और विष्कंभ अनेक योजन का था। परिधि भी इसकी अनेक योजन की थी। नाना प्रकार के वृक्षों के समूह से इस का भीतरी बाहिरी प्रदेश हरा भरा बना हुआ था। यह द्वीप बहुत ही शोभासंपन्न था। मन को प्रसन्न करनेवाला था। दर्शनीय था। तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त था। एवं आकृति में भी यह बड़ा अभिराम था। (तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४) इस द्वीप के ठीक मध्य भाग में एक विशाल श्रेष्ठ प्रासाद था। यह बहुत अधिक ऊँचा था। अपनी ऊँचाई से यह आकाश तक को स्पर्श करता था। बहुत सुन्दर था। दर्शनीय आदि विशेषणों वाला था। (तत्थ णं

નાવ જ્યાં ડૂબી હતી તેની આસપાસના પ્રદેશમાં એક બહુ મોટો રત્નદ્વીપ નામે દ્વીપહતો. આ દ્વીપનો આયામ અને વિષ્કંભ ઘણા યોજનો સુધી વિસ્તાર પામેલો હતો. આ દ્વીપની પરિધિ પણ ઘણા યોજનો સુધીની હતી. ઘણી જાતના વૃક્ષોના સમૂહોથી તે દ્વીપનો અંદર અને બહારનો ભાગ લીલો છમ દેખાતો હતો. તે દ્વીપ ખૂબ જ સુંદર હતો. મનોહર હતો, મનને પ્રસન્ન કરે તેવો હતો, દર્શનીય હતો. અપૂર્વ સૌંદર્યથી તે યુક્ત હતો તેમજ આકારમાં પણ તે અત્યંત સુંદર હતો.

(तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थणं एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अब्भुग्गय मूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४)

તે દ્વીપની વચ્ચે એક વિશાળ ઉત્તમ મહેલ હતો. તે ખૂબ જ ઊંચો હતો. પોતાની ઊંચાઈથી તે આકાશને પણ સ્પર્શતો હતો તે ખૂબ જ સુંદર હતો. દર્શનીય વગેરે વિશેષતાઓથી યુક્ત હતો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करोति । सा कीदृशी ? इत्याह-' पावा ' इत्यादि-' पावा ' पापा=पापकर्मकर्त्री स चण्डा=अत्यन्तकोपशीला, रौद्रा=हिंसादिक्रूरकर्मकारिणी, साहसिका=अविचार्यकारिणी । तस्य खलु प्रासादावतंसकस्य चतुर्दिक्षु चत्वारो वनषण्डा आसन्, ते कीदृशाः ? इत्याह-' किण्हा ' इत्यादि-कृष्णाः=नूतनमेघवर्णाः, कृष्णावभासाः= अतिहरितत्वेनावभासमानकृष्णकान्तयः, इत्यादि । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तेन फलकखण्डेन ' उव्वुज्झमाणा २ ' उद्बुध्यमानौ २ उपरिजले वहन्तौ २ तरन्तौ२, रत्नद्वीपान्ते खलु=रत्नद्वीपसमीपे ' संबूढा ' संव्यूढौ=समागतौ चाप्यास्ताम् ।

ततः खलु तत्र तौ माकन्दिकदारकौ 'थाहं ' स्ताघं=समुद्रतलं लभेते=पादाभ्यां स्पृष्टवन्तौ लब्ध्वा मुहूर्तान्तरम्=अन्तर्मुहूर्तम् आश्वस्तः=विश्रामं कुरुतः, आश्वस्य

पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति, पावा, चंडा रुद्दा, साहसिया तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउदिसिं चत्तारिवणसंडा किण्हा, किण्हाभासा, तएणं ते मागंदियदारगा तेणं फलयाखंडेणं उव्वुज्झमाणा २ रयणदीवंतेणं संबूढा यावि होत्था) उस श्रेष्ठ प्रासाद में रत्न द्वीप देवता नाम की एक देवी कि जिस का प्रसिद्धनाम 'रत्नदेवी' "ऐसा था" रहती थी ॥

यह अत्यंत पापकर्म करती थी, सदा गुस्से में भरी रहती थी, हिंसादिक्रूरकर्म करने में बड़ी निपुणमति थी-जो मन में आता वही कर डालती थी। उस श्रेष्ठ प्रासाद की चारों दिशाओं में चार वनखण्ड थे। वे नवीन मेंघ के वर्ण समान काले थे और सदा हरे भरे रहने के कारण इनकी कांति भी काली ही निकलती थी। ये दोनों माकंदी दारक उस फलक खंड की सहायता से जल पर-तैरते हुए-उस रत्नद्वीप के

(तत्थणं पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति, पावा चंडा रुद्दा साहसिया तस्सणं पासायवडिंसयस्स चउदिसिं चत्तारि वणसंडा, किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उव्वुज्झमाणा २ रयणदीवं तेणं संबूढा यावि होत्था)

તે શ્રેષ્ઠ મહેલમાં રત્નદ્વીપ દેવતા નામની એક દેવી-કે જે ' રયણા દેવી ' નામે પ્રસિદ્ધિ પામેલી હતી-રહેતી હતી. હંમેશા તે ગુસ્સામાં જ રહેતી હતી. તે હિંસા વગેરે ક્રૂર કર્મો કરવામાં ખૂબ જ ચતુર હતી. તે ઈચ્છા મુજબ આચરણ કરતી હતી. તે ઉત્તમ મહેલની ચારે દિશાઓ તરફ ચાર વનખંડો હતા. જે નવા વાદળના રંગના જેવા શ્યામ હતા અને હંમેશાં લીલા છમ રહેવા પહલ તેમની કાંતિ પણ શ્યામ રંગની જ હતી. બંને માકંદી દારકો લાકડા ઉપર તરતા-તરતા રત્ન દ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યા હતા.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फलकखण्डं 'विसज्जेंति' विसर्जयतः=परित्यक्तवन्तौ, विसृज्य रत्नद्वीपम् उत्तरतः= प्राप्तौ उत्तीर्य=प्राप्य फलानां मार्गणगवेषणं कुरुतः=इतस्ततः फलानि गवेषितवन्तौ, कृत्वा फलानि गृह्णीतः, गृहीत्वा आहारतः=भुक्तवन्तौ, तदनु नालिकेराणां मार्गणगवेषणं कुरुतः, कृत्वा नालिकेराणि स्फोटयतः, ततः नालिकेरतैलेन अन्योन्यस्य

पास में आ पहुँचे। (तएणं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति, लभित्ता मुहुत्तंतरं आससंति, आससित्ता फलगखंडं विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणदीवं उत्तरंति, उत्तरित्ता फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति) वहां आते ही उन्हें स्थल मिल गया–थाह मिलते ही उन्होंने वहां एक मुहूर्त्त तक विश्राम किया, विश्राम करके फिर उस काष्ठ खंड को छोड दिया। छोड़ करके फिर वे दोनों रत्नद्वीप में उतर–गये–वहां जाकर उन्होंने फलों की इधर उधर मार्गणागवेषणा की–(करित्ता फलाइं गिण्हंति, गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराणंमग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता नालिएराइं फोडेंति, फोडित्ता नालिएरतेल्लेणं–अण्णमण्णस्स गत्ताइंअब्भंगेंति, अब्भंगित्ता पोक्खरणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति, पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति निसीइत्ता आसत्था वीसत्था) मार्गणा गवेषणा करने से उन्हें फल मिल गये। मिलते ही उन्होंने उनका आहार किया। जब उनका पेट अच्छी तरह भर चुका तब फिर उन्होंने नारिकेल फलों की–नारियलों की–तलाश

(तएणं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति, लभित्ता मुहुत्तंतरं आससंति, आससित्ता फलगखंडं विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणदीवं उत्तरंति उत्तरित्ता फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति)

ત્યાં પહોંચતાં જ તેઓને સ્થળ મળી ગયું, સ્થળ મળતાં જ તેઓએ એક મુહૂર્ત્ત ત્યાં વિસામો લીધો અને ત્યાર પછી લાકડાને છોડી દીધું. પાણીમાંથી તેઓ બંને રત્ન દ્વીપમાં આવ્યા અને આમ તેમ ફળો શોધવા લાગ્યા.

(करित्ता फलाइं गिण्हंति, गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराणं मग्गणगवेषणं करेंति करित्ता नालिएराइं फोडेंति फोडित्ता नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति अब्भंगित्ता पोक्खरणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति, पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि नीसीयंति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था)

શોધ કરતાં કરતાં તેમને ફળો મળી ગયાં. તેમણે ફળોનો આહાર કર્યો જ્યારેફળોના આહારથી તેઓ ધરાઈ ગયા ત્યારે નાળિયેરના ફળોની શોધ કરવા લાગ્યા. આખરે નાળિયેરનાં ફળો તેઓએ મેળવ્યાં અને તેને ફોડીને અંદરથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परस्परस्य 'गत्ताइं' गात्राणि=अङ्गोपाङ्गानि अभ्यञ्जयतः=मर्दयतः, तदनु पुष्करिणीं=वापीं अवगाहेते=अन्तः प्रविशतः, अवगाह्य जलमज्जनं=स्नानं कुरुतः, कृत्वा यावत् प्रत्युत्तरतः=वापीतो बहिर्निस्सृतौ, प्रत्युत्तीर्य=बहिर्निःसृत्य पृथिवीशिलापट्टे निषीदतः=उपविष्टौ, निषद्य 'आसत्था' आस्वस्थौ=ईषत्स्वस्थौ 'वीसत्था' विस्वस्थौ रमणीयनिर्भयस्थानं मत्वा विशेषेण विश्रामं प्राप्तौ सुखासनवरगतौ=सुखदासने समुपविष्टौ सन्तौ चम्पानगरीम्, अम्बापित्रा पृच्छनम्=समुद्रोत्तरणविषये तन्निषेधेऽपि द्वित्रिवारं तदाज्ञायाचनंच, लवणसमुद्रोत्तारं च, कालिकावातसमुत्थानं

की-तलश करने पर वे भी उन्हें मिल गये। मिलते ही उन्होंने उन्हें फोड़ा-फोड कर उनमेंसे तेल निकाला-तेलनिकाल कर परस्पर में उन्हेंने एक दूसरेके शरीर पर उससे मर्दन कीया-मर्दन करनेके बाद फिरवे पुष्करिणी में प्रविष्ट हुए-प्रविष्ट होकर उसमें उन्हों ने स्नान किया स्नान करके फिर वे उससे ऊपर आये। ऊपर आकर पृथिवी शिलापट्टक पर बैठ गये। बैठकर वे वहां अश्वस्त बने। बाद में (सुहासणवरगया) सुखद आसन से बैठ कर उन दोनों ने (चंपानयरिं अम्मापिउ आपुच्छणं लवणसमुद्दोत्तारणं च कालियवायसमुत्थणं च पोत वहणविवत्तिंच फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचिंते माणा २ ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेंति) चंपानगरी का माता पिता से पूछने का-लवण समुद्र कि यात्रा करने के विषय में पूछने पर और उनके निषेध करने पर पुनः दुबारा तिबारा उनसे आज्ञा प्राप्त करने का-लवण समुद्र में उतरने का कालिका वायु के उत्थान का पोतके डूब जानेका फलक खंड की प्राप्ति

તેલ ઠાઢીને ખૂબ જ સરસ રીતે એક બીજાના શરીરે તેલ ચોળવા લાગ્યા. બરોબર તેલની માલિશ કરીને તેઓ પુષ્કરિણીમાં ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ સ્નાન કર્યું સ્નાન કરીને તેઓ બહાર આવ્યા અને એક શિલા ઉપર બેસી ગયા. ત્યાં બેસીને તેઓ આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત બન્યા અને ત્યાર પછી (સુહાસણ વર ગયા) સુખાસન પૂર્વક બેસીને તેઓ બંને

(चंपानयरिं अम्मापिउआपच्छणं लवणसमुद्दोत्तारणं च कालिय वाय समुत्थणं च पोतवहणविवत्तिं च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचिंतेमाणा २ ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेंति

ચંપા નગરીનો, લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરવા માટે માતાપિતાએ રોકવી ના કહેવા છતાં બે ત્રણ વખત તેની તેજ વાત તેમની સામે મૂકીને આજ્ઞા મેળવવાનો, લવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરવાનો, અકાળે વાવાઝોડાથી નાવ ડૂબી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च, पोतवहनविपत्तिंच, फलकखण्डस्याऽऽपादनं=स्वीकरणंच, रत्नद्वीपोत्तारंच 'अणुचिंतेमाणा' अनुचिन्तयन्तौ=पुनः पुनः स्मरन्तौ 'ओहयमणसंकप्पा' अपहतमनःसंकल्पौ=आर्त्तध्यानसम्पन्नौ यावत् 'झियाएंति' ध्यायतः=पूर्ववृत्तान्तं स्मृतवन्तौ। ततः खलु तस्मिन् समये सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति, आभोगयित्वा=दृष्ट्वा 'असिफलगवग्गहत्था' असिफलकव्यग्रहस्ता=असिना=तीक्ष्णखड्गेन फलकेन='ढाल' इति प्रसिद्धेन व्यग्रौ = चञ्चलौ हस्तौ यस्याः सा तथा, सत्तट्ठतालप्पमाणं' सप्ताष्टतालप्रमाणं, सप्ताष्टताडवृक्षपरिमितम्, 'उड्ढं' ऊर्ध्वम्=ऊर्ध्वभागं 'वेहासं' वैहायसं=गगनसम्बन्धिकम्-अत्युच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति,=उच्छलति, उत्पत्य तया=प्रसिद्धया उत्कृष्टया यावद् देवगत्या 'वीइवयमाणी' व्यतिव्रजन्ती २ =

का और उसके सहारे से रत्न द्वीपमें आकर उतर जानेका बार२ विचार-स्मरण किया। स्मरण करते २ अपने मनोरथ की पूर्त्ति न होनेके कारण वे दोनों आर्त ध्यान मे पड़ गये। (तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिदारए ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालपमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ, आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहिं एवं वयासी) इतने में उस रत्नद्वीप की देवी ने उन दोनों मागंदिदारकों को अपने अवधिज्ञान से देखा-देख कर वह तलवार और ढाल को हाथों में लेकर आकाश में सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर तक उछली उछल कर फिर वह उस उत्कृष्ट देव संबंधि गति से शीघ्रता पूर्वक चलती २

જવાનો, લાકડું મેળવીને તેની સહાયથી તરતાં તરતાં રત્નદ્વીપમાં આવીને ઉતરવા સુધીનો વારંવાર તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા. આ બધી ઘટનાઓનું તેઓ સ્મરણ કરવા લાગ્યા. આમ સ્મરણ કરતાં કરતાં જ્યારે પોતાના મનોરથો સફળ થતા ન જોયા ત્યારે તેઓ આર્તધ્યાનમાં ડૂબી ગયા.

(तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिदारए ओहिणा अभोएइ, अभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालपमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ, आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते मागंदियदारए खरफरुस निट्ठुरवयणेहिं एवं वयासी)

એટલામાં તે રત્ન દ્વીપની દેવીએ તે બને માકંદી દારકોને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધા અને જોઈને તે તરવાર અને ઢાલ હાથમાં લઈને આકાશમાં સાત આઠ તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઉપર ઉછળી અને ત્યારબાદ તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीघ्रमभिगच्छन्ती यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रोपागच्छति, उपागत्य 'आसुरुत्ता' आशुरुप्ता=शीघ्रं क्रुद्धा सती तौ माकन्दिकदारकौ खरफरुषनिष्ठुरवचनैः=कर्कशकठोररूक्षवचनैरेवमवादीत्-'हंभो' इति सगर्वमामन्त्रणम्, हंभो माकन्दिकदारकौ! युवाम् 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणवाञ्छकौ स्थः, यदि खलु युवां मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जानौ विहरतं 'तो' तदा 'भे' युवयोरुभयोरस्ति जीवितम्०, अथ खलु युवां मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानौ नो विहरन्तं 'तो' तदा 'भे' युवयोर्द्वयोरपि अनेन 'नीलुप्पलगवलगुलिय—अयसिकुसुमप्पगासेण' नीलोत्पलगवलगुलिकाऽतसीकुसुमप्रकाशेन-नीलोत्पलं=नीलकमलं, गवलं=महिषशृङ्गं, गुलिका=नीली 'गुली' इति प्रसिद्धा, अतसीकुसुमम् -'अलसी' इति प्रसिद्ध धान्यवि-

---

जहां वे दोनों मकंदी सार्थवाह के दारक थे वहां आई वहां आकर वह क्रोध से क्रोधित हुई और उन माकंदीदारकों से कर्कश-कठोर एवं रूक्ष वचन बोलती हुई इस प्रकार कहने लगी-(हं भो मागंदिदारया! अपत्थिय पत्थिया जईणं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलियअयसियकुसुमप्पभासेणं असिणा खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं ताल फलाणीवसी साइं एगंते एडेमि) अरे ओ मागंदी के दारको! मालूम पड़ता है कि तुम दोनों अप्रार्थित-मृत्यु-के प्रार्थक-वाञ्छक बन रहे हो-। यदि तुम लोग मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयों को भोगो तब ही तुम दोनों का जीवन सुरक्षित बच सकता है यदि मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयोंको नहीं भोग सकते हो तो देखो-नील

ઉત્કૃષ્ટ દેવની ગતિથી ઝડપથી ચાલતી ચાલતી જ્યાં તેઓ બંને માકંદી સાર્થવાહના પુત્રો હતા ત્યાં આવી પહોંચી. અને કર્કશ-કઠોર તેમજ રુક્ષ વચનોનો પ્રયોગ કરતી માકંદી દારકોને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(हं भो मागंदिदारया! अपत्थियपत्थिया जइणं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिय कुसुमप्पगासे णं असिणा खुरधारेणं आसिणा रत्तगंड मंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं ताल फलाणीव सीसाइ एगंते एडेमि)

અરે ઓ માકંદી દારકો! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત મૃત્યુને ઈચ્છી રહ્યા છો. હવે જો તમે મારી સાથે રહીને પુષ્કળ પ્રમાણમા શબ્દાદિ વિષયોને ભોગવવા માટે તૈયાર થાઓ તો જ તમારું જીવન બચી શકે તેમ છે, જો તમે મારી સાથે શબ્દ વગેરે વિષયોને ભોગવામાં અસમર્થ હો તો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शेषपुष्पं, तद्वत् प्रकाशः=अतिश्यामवर्णो यस्य स तथा, तेन ' खुरधारेण ' क्षुर-धारेण क्षुरवत्तीक्ष्णधारेण ' असिणा ' असिना=खड्गेन ' रत्तगंडमंसुयाइं ' रक्तगण्ड-श्मश्रुके रक्तौ=तरुणावस्थत्वेन लालिमायुक्तौ गण्डौ=कपोलौ, श्यामानि श्मश्रूणि च ययोस्ते, ' माउयाहिं ' मातृकाभ्यां=स्वस्व मातृभ्यां ' उवसोहियाइं ' उपशोभिते शृङ्गारार्थं समारचितकेशवेशत्वादपूर्वशोभासम्पन्ने ' सीसाइं ' शीर्षे=उभयोर्मस्तकौ ' तालफलाणीव ' ताडफलेइव छित्वा एकान्ते ' एडेमि '=प्रक्षिपामि । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवतया अन्तिके एतद्वचनं श्रुत्वा भीतौ करतलपरि-

---

कमल, महिष शृंग, नीली, अलसी पुष्प के समान अतिशय श्याम वर्ण वाली इस तलवार से कि जो छुरा की धार के समान तीक्ष्ण धार वाली है तुम दोनों के मस्तकों को कि जो तरूणाई से लाल हुए कपोलों से युक्त हैं, तथा अपनी २ जननियों-माताओं-द्वारा जिन पर शोभा निमित्त समारचित केशवेश से अपूर्व सौंदर्य वाला है, ताड फल के समान काटकर एकान्त स्थान में फेंकदूंगी (तएणं ते मागंदिय दारगा रयणदीव देवयाए अंतिए सोच्चा भीया करयल० एवं जण्णं देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणा उववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो-तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति, २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभ पोग्गलावहारंकरेइ २ सुभपोग्गल पक्खेवं करेइ करित्ता पच्छाते हिं विउलाइं भोगभोगइं भुंजमाणि विहरइ कल्लाकल्लिं च अमय फलाइं उवणेइ) इस प्रकार वे दोनों माकंदी दारक

જુઓ નીલકમળ, મહિષશૃંગ, નીલી અળશીના પુષ્પની જેમ ખૂબજ શ્યામ રંગવાળી આ તરવારથી-કે જે છરાની ધારના જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી છે-તમારા બંનેના માથાઓ કે જેઓ જવાનીથી લાલ લાલ થયેલા કપોલોવાળા છે, કાળી દાઢી અને મૂછોથી શોભી રહ્યા છે તેમજ પોતપોતાની માતાઓ વડે કેશ વિન્યાસ કરવાથી અપૂર્વ સૌંદર્યથી જેઓ દીપી રહ્યા છે તાડફળની જેમ કાપીને હું નિર્જન સ્થાન ફેંકી દઈશ

(तएणं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए सोच्चा भीया करयल. एवं जण्णं देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणा उववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभपोग्गलावहारं करेइ २ सुभपोग्गलपक्खेवं करेइ करित्ता पच्छाएहिं विउलाइं भोग भोगाइं भुंजमाणी विहरइ कल्लाकल्लिं च अमयकलाइं उवणेइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृहीतं शिरआवर्त्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-एवंच यं खलु कञ्चित्प्रेष्याणामपि प्रेष्यं हे देवानुप्रिये ! त्वमस्मदर्थं वदिष्यसि यदुत ' युवयोरयमाराध्यः ' इति, तदा ' तस्स ' तस्यापि ' आणाउववायवयणनिद्देसे ' आज्ञोपपातवचननिर्देशे-आज्ञा=विधेयतयाऽऽदेशः, उपपातः=सेवा, वचनम्=अनियत आदेश एव निर्देशः=नियतार्थमुत्तरम् , एतेषां समाहारः, तत्र स्थास्यावः=उपस्थास्यावः किं पुनर्भवत्याः ? त्वदनुमत्या तव दासानुदासस्यापि दासत्वं स्वीकरिष्याव इति भावः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वस्य प्रासादावतंसकः=प्रधानवासभवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तयोः शरीरे अशुभपुद्गलापहारं करोति, कृत्वा शुभ पुद्गलप्रक्षेपं करोति कृत्वा पश्चात् ताभ्यां

रयण देवी (रत्नद्वीपदेवी) के वचन सुनकर भयभीत हो गये । पश्चात् उन्हों ने दोनों हाथोंकी अंजलि बनाकर और उसे अपने मस्तक पर रखकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । आपका यदि कोई नौकर का भी नौकर होगा और आप उसकी सेवा करनेके लिये भी हमसे कहेंगी-तो हम उसकी भी आज्ञा सेवा, आदेश और निर्देश करने के लिये कटिबद्ध हैं-तो फिर आपकी सेवा करने आदि की तो बात ही क्या है ।

आपकी आज्ञा से तो हम आपके दासों के भी दासों की दासता स्वीकार करने के लिये तैयार है । तो फिर आपकी दासता के लिये तो कहना ही क्या है । इस प्रकार माकंदी-दारकों की बात सुनकर उस रयणादेवी (रत्न द्वीप देवी) ने उन्हें अपने साथ लिया और लेकर वह अपने श्रेष्ठ प्रासाद में आगई । वहां आकर उसने उन दोनों के शरीर में से अशुभ पुद्गलों को दूर किया और शुभ पुद्गलों को डाल दिया।

રયણાદેવીના વચનો સાંભળીને બંને માકંદી દારકો ભયભીત થઈ ગયા. તેઓ બંનેએ હાથોની અંજલી બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમારા નોકર ના પણ કોઈ નોકર હોય અને તમે અમને તેની નોકરી પણ કરાવશો તો અમે તેની પણ આજ્ઞા, આદેશ અને હુકમ પ્રમાણે અનુસરવા તૈયાર છીએ તો તમારી સેવાની વાત જ શી કહેવી !

તમારા હુકમથી તો અમે તમારા દાસોના દાસોની દાસતા સ્વીકારવા તૈયાર છીએ. તો તમારી દાસતા માટે હવે અમારે કહેવાનુંજ શું રહે ? આ પ્રમાણે માકંદી દારકોની વાત સાંભળીને રયણા દેવી (રત્ન દીપ દેવી) એ તેઓને પોતાની સાથે લીધા અને લઈને તે પોતાના એક સૌથી સારા મહેલમાં ગઈ. ત્યાં જઈને તેણે તેમના શરીરમાંથી અશુભ પુદ્ગલો દૂર કર્યા અને શુભ .

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सार्द्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना विहरति=आस्तेस्म, 'कल्लाकल्लिंच' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उवणेइ' उपनयति=आनीय ददाति, तौ च प्रतिदिनं तानि फलानि भुञ्जानौ तया सार्धं कामभोगान् सेवमानौ तिष्ठतः इतिभावः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसंदेसणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय२ तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वंतिकट्टुणिउत्ता, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्ठिएणं तं चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अहं देवा० ! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ सया साहीणा तं जहा-पाउसे य वासारत्तेय,—(गाहा) तत्थ उ कंदलसिलिंधदंतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनों के साथ विपुल भोग भोगों—शब्दादि विषयों को —भोगने लगी। प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलों को लाकर देती और वे दोनों उन्हें खाते। इस प्रकार वे दोनों सार्थवाह दारक उसके साथ वहां कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे। "सू० ३"

પુદ્ગલોને મૂકી દીધા. ત્યાર પછી રયણા દેવી તેઓ બંનેની સાથે વિપુલ કામ ભોગો શબ્દ વગેરે વિષયોનો ઉપભોગ કરતી રહેવા લાગી. હંમેશા તે તેઓ બંનેને અમૃત ફળો લાવીને આપતી અને તેઓ પણ ફળો ખાતા. આ રીતે બંને સાર્થવાહ પુત્રો તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવતાં રહેવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊगयवरो साहिणो ॥१॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो ददुर कुलरसियउज्झररवो । बरहिणविंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो उऊपव्वतो साहिणो ॥२॥ तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहुसु आलीघरएसु य माली-घरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहं सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं० सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो । सारसचक्क-वायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥१॥ तत्थ य सिय-कुंदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंडमंडलतलो । तुसारदग-धारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणा ॥ २ ॥ तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया! वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे तत्थवि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकण्णि-यारासोगमउडो । ऊसिततिलगवउलायवत्तो वसंतउऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मालियावासंति-यधवलवेलो । सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसा-गरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जइ णं तुब्भे देवा० ! तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवालेमा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णा२ चिट्ठेज्जाह, माणं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थणं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनिगरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडविथडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधमेंतघोसे अणागलियचंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसति, माणं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ वइत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहइ समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयं पयत्ता यावि होत्था ॥ सू०४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता=रत्नद्वीपदेवी ' सक्कवयणसंदेसेण ' शक्रवचनसंदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया ' सुट्ठिएणं ' सुस्थितेन= सुस्थितनामकदेवेन, ' लवणाहिवइणा ' लवणाधिपतिना=लवणसमुद्रस्वामिना नियुक्तेत्यन्वयः नियोजनप्रकारमाह–लवणसमुद्रः ' तिसत्तखुत्तो ' त्रिसप्तकृत्वः–एकविंशतिवारम् ' अणुपरियट्टियव्वे ' अनुपर्यटितव्यः समन्तात्परिभ्रमणीयः इति,

"तएणं सा रयण दीव देवया" इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (सक्कवयणसंदेसेणं) देवेन्द्रकी आज्ञासे (लवणाहिवइणा) लवणाधिपति (सुट्ठिएणं) सुस्थित देवने (सा रयणदीवदेवया) उस रत्नद्वीप देवता–रयणा देवी को (लवणसमुद्दे तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति) लवणसमुद्र के तुम २१ बार

(तएणं सा रयणदीव देवया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) त्यार બાદ (सक्कवयणसंदेसेणं) દેવેન્દ્રની આજ્ઞાથી (लवणाहिवइणा) લવણ સમુદ્રના અધિપતિ (सुट्ठिएणं) સુસ્થિત દેવે (सा रयणदीवदेवया) તે રત્ન દ્વીપ-દેવતા–રયણા દેવીને लवणसमुद्दे ति सत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति) કહ્યું કે લવણ સમુદ્રની ચારે બાજુએ તમે એકવીશ વખત ચક્કર લગાવો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किमर्थं ? मित्याह–' जंकिंचि ' इत्यादि । यत्किञ्चित्तत्र तृणं वा, पत्रं वा, काष्ठं वा, कचवरं वा, अशुचि=विष्टा, पूतिकं=अर्धपक्वशोणितं, दुरभिगंधं=दुर्गन्धयुक्तं वस्तुजातम् ' अचोक्खं ' अचोक्षम्=अपवित्रं तिष्ठति तत्सर्वम् ' तिसत्तखुत्तो ' त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम्० ' आहुणिय २ ' आधूय २ अपनीय २ एकान्ते ' एडेयव्वं ' त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्थं कर्तुं ' णिउत्ता ' नियुक्ता=अधिकृता= आज्ञप्तेत्यर्थः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्– एवं खलु देवानुप्रियौ ! शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्–अहं नियुक्ता, तद् यावदहं देवानुप्रियौ ! लवणसमुद्रे ' जाव ' यावत्–यावच्छब्देन तत्र गत्वा

चारों तरफ से चक्कर लगाओं (जं किंचि तत्थतणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वंति कट्टु निउत्ता) उसमें जो कुछ भी तुम्हें वहां तृण, पत्र, काष्ठ, कूडा, विष्टा अर्धपक्व शोणित अथवा दुर्गंधित वस्तु अदि अपवित्र पदार्थ नजर आवें उन सबको तुम एकवीस बार में वहां से हटा २ कर एकान्त में डाल देना " इस काम पर नियुक्त किया । (तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी– एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्ठिएणं तं चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता–रयणा देवीने उन माकंदी दारकों से ऐसा कहा–देवानु प्रियों ! मैं सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ बार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आज्ञप्त की गई हूँ अतः (तं जाव अहं देवाणु० लवणसमुद्दे

(जं किं चि तत्थ तणंवा पत्तंवा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंध मचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु निउत्ता)

અને તેમાં ગમે ત્યાં તૃણ, પત્ર, કાષ્ઠ, કચરો, વિષ્ટા અર્ધપક્વ શોણિત (લોહી) અથવા તો દુર્ગંધિત વસ્તુ અપવિત્ર પદાર્થ દેખાય તો તેને તમે એકવીશ વખત ફરતાં ફરતાં ત્યાંથી લઈને એકાંતમાં દૂર ફેંકી દો. સુસ્થિત દેવે દેવેન્દ્રની આજ્ઞાથી આ કામ રયણાદેવીને સોંપ્યું.

(तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया सक्क० सुट्ठिए णं तं चेव जाव णिउत्ता)

ત્યાર પછી તે રત્નદ્વીપ દેવતા રયણા દેવીએ માકંદીદારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મને સૌધર્મેન્દ્રની આજ્ઞાથી લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવ વડે લવણ સમુદ્રની ચારે બાજુએ એકવીશવાર ચક્કર મારવાની આજ્ઞા મળી છે. એટલા માટે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तृणादिकमपनीय चैकान्ते त्यजामि तावद् युवाम् इहैव प्रासादावतंसके सुखसुखेनाभिरममाणौ तिष्ठतम्, यदि खलु युवाम्, एतस्मिन्नन्तरे 'उव्विग्गावा' उद्विग्नौवा=अत्रावस्थानेन खिन्नौ, 'उस्सुया वा=उत्कण्ठितौ मनोरञ्जनमनस्कावित्यर्थः, 'उप्पुया वा' उत्प्लुतौ क्रीडोत्कण्ठितमानसौ वा 'भवेज्जाह' भवेतम् यद्यत्रास्थानेन युवयोर्मनस्युद्वेग उत्कण्ठ क्रीडनेच्छा वा भवेत् 'तोणं' तदा खलु युवां 'पुरत्थिमिल्लं' पौरस्त्यं=पूर्वदिशासंस्थितं वनषण्डम्=उद्यानं 'गच्छेज्जाह' गच्छतं युवाभ्यां रम्यं पूर्वदिशोद्यानं गन्तव्यमित्यर्थः, यतोहि तत्र खलु द्वौ ऋतू सदा 'साहीणा' स्वाधीनौ=वर्त्तमानौस्तः, तद्यथा-'पाउसेय वासारत्तेय' प्रावृड्ढ वर्षारात्रश्च । तत्र प्रावृड्-अषाढ श्रावणौ वर्षारात्रः-भाद्रपदाश्विनौ, तस्मिन् वनषण्डे

जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहं सुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तोणं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, मैं जबतक २१ बार चक्कर लगाकर वहांके तृण काष्ठ आदि दूर फेंकनेके काममें लगी रहूं तब तक हे देवानुप्रियो! तुम दोनों इसी श्रेष्ठ प्रासादमें आनन्दसे रहना। यदि यहां रहते२ तुम्हारे चित्त उद्विग्न हो जावे अथवा मनोरंजनके लिये उत्कंठित हो जावे अथवा क्रीडाकरने के लिये लालायित बन जावे तो तुम दोनों पूर्व दिशा में संस्थित उद्यान में चले जाना (तत्थणं दो ऊ ऊ सया साहीणा तं जहा पाउसेय वासारत्ते य) वहां सदा दो ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं। एकतो प्रावृड् ऋतु दूसरी वर्षा रात-आषाढ श्रावण ये नो महिने प्रावृड ऋतु के हैं-तथा भाद्रपद एवं आश्विन ये दो मास

(तं जाव अहं देवाणु० लवणसमुद्दे जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पसायवडिंसए सुहं सुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गावा अस्सुया वा उप्पुयावा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसडं गच्छेज्जाह)

હું જ્યાં સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચક્કર મારી ત્યાંના તૃણ કાષ્ઠ વગેરેને દૂર ફેંકવાના કામમાં પરોવાઈ રહું ત્યાં સુધી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે બંને આજ શ્રેષ્ઠ મહેલમાં સુખેથી રહેજો. અહીં રહેતાં જો તમને કંટાળો આવવા લાગે, મન તમારૂં ઉદ્વિગ્ન થઈ જાય મનોરંજન કરવાની તમારી ઇચ્છા થાય કે ક્રીડા કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામાં ઉત્પન્ન થાય તો બંને પૂર્વ દિશાના ઉદ્યાનમાં જતા રહેજો. (तत्थ णं दो ऊ ऊ सया साहीणा तं जहा पाउसेय वासारत्तेय) તે ઉદ્યાનમાં હરહંમેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે. એક પ્રાવૃડ્ ઋતુ અને બીજી વર્ષા. અષાઢ શ્રાવણ આ બે મહિના પ્રાવૃડ્ ઋતુના છે અને ભાદરવો અને આસો આ બે મહિના વર્ષા ઋતુના છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावणादि मासचतुष्टयसदृशो रमणीयः समयः सदा वर्त्तत इतिभावः । अत्र वनषण्डे प्रावृड्ऋतुर्गजरूपकेण वर्ण्यते-तत्रतु=तस्मिन् ' पाउसऊऊगयवरो ' प्रावृड्ऋतुगजवरः ' साहीणो ' स्वाधीनः अस्तिस्त्वेन स्वायत्तः सदा वर्त्तते । स कीदृशः ? इत्याह-' कंदलसिलिंधदंतो ' कंदलसिलिन्ध्रदन्तः-कन्दलाः=नूतनलताः, तत्प्रधानाः सिलिन्ध्राः ये प्रावृषि पुष्यन्ति श्वेतकुसुमयुक्ताश्च भवन्ति तएव धवलत्वसाधर्म्यात् दन्ता यस्य स तथोक्ता, पुनः ' णिउरवरपुप्फपीवरकरो ' निकुरवरपुष्पपीवरकरः निकुरः=वृक्षविशेषस्तस्य वरपुष्पाणि=प्रायामस्त्वेन-एकैकोपरि निस्सृतानि शुण्डाकारेण परिणतानि तान्येव पीवरः=स्थूलः करः=शुण्डा यस्य स तथोक्तः। पुनः ' कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो ' कुटजार्जुननीपसुरभिदानः-कुटजार्जुननीपवृक्षपुष्पाणि, तेषां सुरभिः=सुगन्धः स एवदानं=मदजलं यस्य स तथोक्तः । एतादृशो वर्षा ऋतु गजराजः सदैव तत्र वर्त्तत इतिभावः ॥ १ ॥ अथ वर्षाऋतुः पर्वत,

---

वर्षा रात के हैं। (तत्थउ-कंदला सिलिंधदंतो णिउरवरपुप्फपीवर करो, कुडयज्जुणणीव सुरभिदाणो पाउस ऊऊ, गयवरो साहीणो " १ " इन चार महिनों में जैसा समय रमणीय रहता है-वैसा समय वहां सदा रमणीय बना रहता है। सूत्रकार वनषंड वर्तमान प्रावृड ऋतु का गज के रूपक से वर्णन करते हुए कहते हैं-कि कंदल-नवीन लताएँ और सिलिंध्र-जो वर्षा में फूलते हैं और फूल जिनका सफेद होता है -ये दोनों ही जिसके दांत हैं। निकुर-वृक्ष विशेष-के उत्तम पुष्प ही जिसके पीवर शुण्डादंड हैं तथा कुटज अर्जुन एवं नीप वृक्षोंके पुष्पोंकी सुगंधि ही जिसका मदजल है ऐसा वर्षाऋतु रूप गजराज उस वनमें सदा विचरण करता रहता है। निकुरवृक्षके पुष्प एक एकके ऊपर निकलते हैं।

(तत्थ उ कंदलसिलिंधदंतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो कुडयज्जुणणीव सुरभिदाणो पाउस ऊ ऊ गयवरो साहीणो ॥ १ ॥

એ ચાર મહિનામાં વાતાવરણ જેવું સોહામણું રહે છે. તેવું ત્યાં હરહંમેશા સોહામણું રહે છે. સૂત્રકાર વનખંડમાં વર્તમાન પ્રાવૃડ્ ઋતુનું હાથીના રૂપકથી વર્ણન કરતાં કહે છે કે-કંદલ-નવી લતાઓ-અને સિલિંધ્ર-કે જે વર્ષા કાળમાં ફૂલે છે અને જેના ફૂલ સફેદ હોય છે-આ બંને જ જેના દાંતો છે. નિકુર-વૃક્ષ વિશેષ-ના ઉત્તમ પુષ્પો જ જેની સુડોળ સૂંઢ છે. તેમજ કુટજ, અર્જુન અને નીપ વૃક્ષોના પુષ્પોની સુવાસ જ જેનો મદ છે. વર્ષા ઋતુ રૂપી એવો ગજરાજ તે વનમાં હંમેશા વિચરણ કરતો જ રહે છે. નિકુર વૃક્ષના પુષ્પો એક એકનાઉ પર નીકળે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपकेण वर्ण्यते-' तत्थय ' तत्रच=तस्मिंश्च= वनषण्डे वर्षारात्रऋतुपर्वतः स्वाधीनो वर्त्तत इत्यग्रेण सम्बन्धः । सकीदृशः ? इत्याह-' सुरगोवमणिवित्तो ' सुगोपमणिविचित्रः-सुरगोपाः=इन्द्रगोपाः वर्षाकाले समुत्पद्यमाना रक्तवर्णा जीव विशेषास्तएव मणयः=पद्मरागादयस्तैर्विचित्रः=कर्बुरो यः स तथा। 'ददुरकुलसियउज्झररवो ' ददुरकुलरसितोज्झररवः=दर्दुरकुल=मण्डूककसमूहस्तस्य रसितं=निरन्तरं शब्दः, तदेव उज्झररवः=निर्झरशब्दो यत्र स तथा । ' बरहिणविंदपरिणद्धसिहरो ' बर्हिवृन्दपरिणद्धशिखरः- बर्हिवृन्देन=मयूरसमूहेन परिणद्धाः=युक्ताः वृक्षाग्रमएव शिखराणि यत्र स तथा । एतादृशो वर्षारात्रपर्वतस्तत्र सदैव वर्त्तत इतिभावः ॥ २ ॥ तत्र खलु

इस लिये वे लंबाईमें शुण्डादंड जैसे प्रतीत होते है । (तत्थ य -सुरगोव मणिविचित्तो ददुर कुलरसिय उज्झररवो । बरहिणविंद परिणद्धसिहरो वासारत्तो ऊऊ पव्वतो साहीणो) इस आर्या द्वारा सूत्रकार वर्षाऋतु का पर्वत के रूपक से वर्णन करते हैं-वे कहते हैं कि वर्षा काल में इन्द्रगोप नामक कीडा उत्पन्न होकर इधर उधर चमकते हुए रात्रिमें दिखलाई पड़ते हैं । सो ये इन्द्रगोप कीडे ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत में पद्मराग आदि मणियों के स्थानापन्न हैं । तथा पर्वत निर्झरों (झरना) के शब्दों वाला होता है सो इस वर्षा ऋतु रूप पर्वत में दर्दुरों का जो निरन्तर शब्द होता रहता है वही मानो निर्झरों का शब्द हैं । वर्षा ऋतु में मयूरों से वृक्ष युक्त रहा करते हैं क्यों कि वृष्टि होनेपर वे उन पर उड़ कर बैठ जाते हैं-सो ये मयूर युक्त वृक्ष ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत की चोटियां हैं । ऐसा वर्षा रात्र रूप पर्वत उस वन में सदा काल रहता है । यह बात उन दोनों सार्थवाह

એટલા માટે નિકુરવૃક્ષના પુષ્પો લંબાઇની દૃષ્ટિએ સૂંઢ જેવા લાગે છે.

(तत्थ य सुरगोव मणिविचित्तो ददुरकुलरसियउज्झररवो । बरहिण विंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो ऊऊ पव्वतो साहीणो)

આ આર્યા વડે સૂત્રકાર વર્ષા ઋતુનું પર્વતના રૂપકથી વર્ણન કરે છે. તેઓ કહે છે કે વર્ષાકાળે ઇન્દ્રગોપ નામે કીડા ઉત્પન્ન થાય છે અને તે આમ તેમ ચમકતો રાતમાં દેખાય છે. આ ઇન્દ્રગોપ કીડાઓ જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતમાં પદ્મરાગ વગેરે મણિઓના રૂપમાં છે. પર્વતોમાં નિર્ઝરો (ઝરણાઓ) નો ધ્વનિ થતો રહે છે. તો આ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વત ઉપર દેડકાઓનો જ નિરંતર શબ્દ થતો રહે છે તેજ ઝરણાંઓના શબ્દના રૂપમાં છે. વર્ષાઋતુમાં વૃક્ષો ઉપર મોરો ઉડી ઉડીને બેસી જાય છે તો એ મોરો જેના ઉપર બેઠાલા છે એવા વૃક્ષો જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતના શિખરો છે. એવો વર્ષાઋતુ રૂપી પર્વત તે વનમાં હંમેશા નિવાસ કરતો રહેતો હતો. આ વાત તેઓ બંને સાર્થવાહ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युवां देवानुप्रियौ ! बहीषु वापीषु च यावत् 'सरसरपंतियासु' सरः सरः पङ्क्तिकासु परस्परं संलग्नेषु बहुषु सरस्सु, यत्रैकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन् तस्मादपरस्मिन्, एवं संचरणपरम्परयोदकं संचरति, तासु । बहुषु 'आलिघरएसु य' आलिगृहेषु आलिः=रम्यवनस्पतिविशेषस्तस्य गृहेषु 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन-कदलीगृहेषु च लतागृहेषु च-अच्छणगृहेषु च प्रेक्षणगृहेषु च प्रसाधनगृहेषु च मोहनगृहेषु च शाला (शाखा) गृहेषु च जालगृहेषु च इति संग्रहः, कुसुमगृहेषु=पुष्पगृहेषु च सुखसुखेन=सुखपूर्वकम् 'अभिरममाणा' अभिरममाणौ=क्रीडां कुर्वाणौ विहरतं=तिष्ठतम् ।

पुत्रों को वह रयणादेवी समझा रही है। और साथ में यह भी कह रही है; कि (तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावी सु य जाव सरसरपंतियासु बहुसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहं सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियो ! वहां तुम अनेक वापिकाओं में यावत् अनेक सर सर पंक्तियों में अलिघरों में कदली गृहों में लता गृहों में अच्छण गृहों में प्रक्षण गृहों में, प्रसाधन गृहों में, मोहन घरों में, शाखा गृहों में, जाल गृहों में, तथा पुष्प गृहों में, सुखपूर्वक क्रीडा करते हुए अपने संयम को व्यतीत करते रहना। अनेक तालाब जहां पंक्ति बद्ध श्रेणीमें स्थित रहते हैं उस का नाम सरपंक्ति है। इन पंक्ति आकार स्थित तालाबों में एक एक दूसरे तालाब का जल आता जाता रहता है। रम्यवनस्पति विशेष के जो गृह होते हैं उनका नाम आलि गृह है। (जइणं) यदि (तुब्भे

પુત્રોને રયણા દેવી સમજાવી રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે (तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहुसु आलीघरएसुय मालीघदएसुय जाव कुसुमघरएसुय सुहं सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યાં તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) માં યાવત્ ઘણી સરઃ સરપંક્તિઓ (સરોવરો) માં, આલિઘરોમાં, કદલીગૃહોમાં, લતાગૃહોમાં, અચ્છણગૃહોમાં, પ્રેક્ષણગૃહોમાં, પ્રસાધનગૃહોમાં, મોહનઘરોમાં, શાખાગૃહોમાં, જાલગૃહોમાં તેમજ પુષ્પગૃહોમાં સુખેથી ક્રીડા કરતાં પોતાના સમયને પસાર કરજો. જ્યાં ઘણાં તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પંક્તિબદ્ધ હોય છે તેનું નામ સરઃ સરપંક્તિ છે. આ પંક્તિ આકારમાં સ્થિત તળાવોમાં એક બીજાના તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે. રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે. (जइणं) જો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदि खलु पुनर्युवाम् ' तत्थवि ' तत्रापि=पूर्वदिशावनषण्डेऽपि उद्विग्नौ वा, उत्सुकौ वा, उत्प्लुतौ=क्रीडार्थिनौ वा भवतं तदा खलु युवां द्वावपि ' उत्तरिल्लं ' उत्तरीयम्=उत्तरदिक्संस्थितं वनषण्डं 'गच्छेज्जाह' गच्छतम्, युवाभ्यां तत्र गन्तव्यमित्यर्थः तत्र खलु द्वौ ऋतू सदा स्वाधीनौ वर्त्तेते, तद्यथा-शरच्च हेमन्तश्च, तत्र शरदृतुः=कार्तिकमार्गशीर्षरूपः, हेमन्तर्तुश्च=पौषमाघरूप इति। अथ शरदृतुं वृषभरूपकेण वर्णयति-तत्र तु वनषण्डे ' सरयउउ गोवई ' शरदृतुगोपतिः शरदृतुरूपोवृषभः ' साहिणो ' स्वाधीनः स्वायत्तः सदा वर्त्तेते, इत्यग्रेण समन्वयः। स कीदृशः ? इत्याह—' सणसत्तवण्णकउओ ' सनसप्तपर्णककुद्, सनः=वल्कलप्रधानो वनस्पतिविशेषः, सप्तपर्णः=सप्तच्छदाभिधवनस्पतिविशेषः तयो पुष्पाण्यपि

एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह, तोणं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊसया साहीणा, तं०सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ-सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो। सारस चक्कवायरवितघोसो सरय ऊऊ गोवती साहीणो) तुम दोनोंजनों का पूर्वदिशा के वनषंड में मन न लगे, चित्त उद्विग्न बन जाय, मनोरंजन न हो अथवा और अधिक क्रीड़ा करने के लिये मन उत्कंठित बन जाय तो तुम वहां से उत्तर दिशा में रहे हुए वनखंड में चले जाना। वहां सदा दोऋतुएं वर्तमान रहती है-१ शरद ऋतु २. हेमंत ऋतु, कार्तिक और मार्गशीर्ष ये दो महिने शरदऋतु केहैं, पौष और भाग ये दो महिने हेमन्तऋतु के हैं। रयणादेवी शरदऋतु का वृषभ के रूपक से और हेमंतऋतुका चन्द्रमाके रूपकसे वर्णन करती हुई उन्हें समझाती है

(तुब्भं एत्थपि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं० सरदो य हेमंतो य तत्थ उ सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो। सारस चक्कवायरवित घोसो सरय ऊऊ गोवती साहिणो)

પૂર્વ દિશા તરફના વનખંડમાં તમને ગમતું ન હોય, ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થઈ જતું લાગતું હોય, ત્યાં તમારું મનોરંજન થતું ન હોય, કે વધારે ક્રીડા કરવા માટે મન ઉત્કંઠિત થઈ જતું હોય તો તમે ત્યાંથી ઉત્તર દિશા તરફ. આવેલા વનખંડમાં જતા રહે જે ત્યાં હર હંમેશ બે ઋતુઓ હાજર રહે છે-(૧) શરદઋતુ અને (૨) હેમંતઋતુ. કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ આ બે માસ શરદઋતુના છે. તેમજ પોષ અને માઘ આ બે માસ હેમંતઋતુના છે રયણા દેવી તેઓને શરદઋતુ વૃષભના રૂપકથી અને હેમંતઋતુ ચન્દ્રમાના રૂપકથી નિરૂપિત કરતાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सनसप्तपर्णानि, तान्येव गोलाकारोन्नतत्वसाधर्म्यात् ककुत्-स्कन्धदेशो यस्य स तथोक्तः। पुनः 'नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो' नीलोत्पलपद्मनलिनशृङ्गः-नीलोत्पलपद्मनलिनानि=नीलकमलविशेषास्तान्येव तीक्ष्णोन्नततया शृङ्गाकारपरिणतत्वात् शृङ्गे यस्य स तथोक्तः। पुनः-'सारसचक्कवायरवियघोसो' सारसचक्रवाकरुतघोषा-सारसचक्रवाकपक्षिणां रुतमेव=शब्द एव उच्चैस्त्वगाम्भीर्यसादृश्याद् घोषो = ध्वनिर्यस्य स तथोक्तः। एतादृशः शरदृतु वृषभस्तत्र सदैव विद्यत इतिभावः ॥१॥

सम्प्रति हेमन्तऋतु राशिरूपकेण माह-'तत्थउ' तत्र तु वनषण्डे 'हेमंत ऊऊ ससी' हेमन्तऋतुशशी=हेमन्तर्तुरूपश्चन्द्रः सदा स्वाधीन इत्युत्तरेण सम्बन्धः। स कीदृशः ? इत्याह-'सियकुंदधवल जोण्हो' सितकुन्दधवलज्योत्स्नः-सितकुन्दानि =श्वेतपुष्पाणि तान्येव धवला=उज्ज्वल ज्योत्स्ना=चन्द्रिका यस्य स तथोक्तः। पुनः -'कुसुमियलोद्धवणसंडमंडलतलो कुसुमितलोध्रवनषण्डमण्डलतलः-कुसुमितः= पुष्पितः लोध्रवनषण्डः, स एव श्वेतत्वसाधर्म्यात् - मण्डलतलं = बिम्बं यस्य स तथोक्तः। 'तुषारदगधारपीवरकरो' तुषारदकधारापीवरकरः - तत्र तुषारा= हिमकणाः, 'दकधाराः = जलबिन्दुप्रवाहास्ता एव दैर्घ्य शैत्यसादृश्यात् पीवराः= पुष्टाः कराः = किरणा यस्य स तथोक्तः। एवं भूतो हेमन्तर्तुरूपश्चन्द्रस्तत्र सदैव वर्त्तत इत्यर्थः ॥ २ ॥

कहती है-कि देखो शरऋतुको हमने वृषभका रूप इसलिये दिया है कि इस ऋतुमें सन और ससपर्ण फूलते हैं इनके फूल गोल आकारके और ऊँचे होते हैं। सो ये पुष्प ही जिस ऋतुरूप वृषभके ककुद (खंदौला) है। नीलोत्पल आदि कमल ही जिस के शृंग हैं। सारस और चक्रवाक पक्षियों के शब्द ही जिसकी ध्वनि हैं ऐसा शरदऋतु रूप वृषभ उस वन में सदा विचरण करता रहता है। (तत्थ य सिय कंद धवलजोण्हो-कुसुमिय लोद्धवणसंडमंडल तलो.....साहीणो) सितकुंद-श्वेतपुष्प-ही जिस की धवलज्योत्स्ना (चांदनी) है, कुसुमित लोध्रवनखंडुडी जिसका मंडल है, हिमकण और बिन्दु प्रवाह ही जिस की पुष्ट किरणें हैं ऐसा

સમજાવે છે કે જુઓ શરદઋતુને અમે વૃષભનું રૂપ એટલા માટે આપ્યું છે કે આ ઋતુમાં શણ અને સપ્તપર્ણ ખીલે છે. એમના પુષ્પો ગોળાકારના તેમજ ઊંચા હોય છે. તો આ પુષ્પોજ શરદઋતુ રૂપ વૃષભની ખાંધ (ककुद) છે. નીલોત્પલ વગેરે કમળો જ જેના સિંગડા છે. સારસ અને ચક્રવાક પક્ષીઓ ના શબ્દો જ જેનો ધ્વનિ છે એવો શરદઋતુ રૂપ વૃષભ તે વનમાં હંમેશા વિચરતો જ રહે છે. (तत्थ य सियकंद धवल जोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंड मंडल तलो....साहीणो) सितकुंद-સફેદ પુષ્પો જ જેની સ્વચ્છ ચંદ્રિકા (ચાંદની) છે, ખીલેલું લોધ્ર વનજ જેનો મંડળ છે, હિમકણ અને પાણીના વહેતાં ટીપાંઓ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र खलु युवां हे देवानुप्रियौ ! बहीषु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ विहरतम् = तत्र क्रीडां कुर्वन्तौ तिष्ठतम् ।

यदि खलु युवां तत्रापि=उत्तरीयवनषण्डेऽपि उद्विग्नौ वा यावद् उत्प्लुतौ वा भवेतं तदा खलु युवाम् ' अवरिल्लं ' अपरीयं = पश्चिमदिशासम्बन्धिकं वनषण्डं गच्छतम् , तत्र खलु द्वौ ऋतू स्वाधीनौ=स्वायत्तौ सर्वदा वर्त्तमानौ स्तः, तद्यथा-वसन्तश्च ग्रीष्मश्च, वसन्तः=फाल्गुनचैत्रलक्षणः, ग्रीष्मः=वैशाखज्येष्ठलक्षणः । पूर्वं वसन्तऋतुं नरपतिरूपकेण वर्णयति-'तत्थउ' तत्र तु पश्चिमदिग्वर्तिवनषण्डे वसन्तर्तु-

हेमंतऋतु रूप चन्द्रमा उस्सवन में सदा प्रकाशित रहता है। (तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियों ! वहां अनेक वापिकाएँ यावत् पुष्पघर भी हैं। सो तुम उनमें भी आनंद से विहार करना। (जइणं तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अविरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह-तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा) यदि तुम दोनों जनों का मन उत्तरीयवनषंड में भी न लगे-वहां वह उद्विग्न यावत् उत्प्लुत हो जावे-तो तुम दोनों पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनखंडमें चले जाना। वहां दो ऋतुएँ सदा वर्तमान रहती है (तं जहा-वसन्ते गिम्हे य, तत्थ उ-सहकार चारूहारो, किंसुय कण्णिया रासोगमउडो, उसित तिलग बउलायवत्तो वसंत उऊणरवइ साहिणो) वे दो ऋतुएँ ग्रीष्म और वसन्त हैं।

फाल्गुन चैत्र ये दो महिने वसन्तऋतु के है। वैशाख और ज्येष्ठ ये दो मास ग्रीष्मऋतु के हैं। इस पश्चिमदिशा संबन्धी वनखंड में वस-

જેની પુષ્ટ કિરણો છે. એવો હેમંતઋતુ રૂપ ચંદ્ર તે વનમાં હંમેશા પ્રકાશતો રહે છે. (तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जा ह હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યાં ઘણી વાવો યાવત્ પુષ્પગૃહો પણ છે તમે તેઓમાં પણ વિહાર કરજો.

(जइणं तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सु या वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अविरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह-तत्थ णं दो ऊऊ साहिणा)

ઉત્તરના વનખંડમાં પણ જો તમને બરોબર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે બંને પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં જતા રહેજો. ત્યાં બે ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે.

(तं जहा वसन्ते गिम्हे य, तत्थ उ सहकार चारूहारो, किंसुय कण्णिया रासोगमउडोउसित तिलग बउलायवत्तो वसंत ऊऊ णरवइ साहीणो)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસંત છે. ફાગણ અને ચૈત્ર આ બે માસ વસંત ઋતુના છે. જ્યારે વૈશાખ અને જેઠ આ બે માસ ગરમીની ઋતુના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरपतिः=वसन्तऋतुरूपो राजा स्वाधीनो वर्त्तत इति सम्बन्धः। स कीदृशः? इत्याह-'सहकारचारुहारो' सहकारचारुहारः-सहकाराणि-सहकार पुष्पाणि-आम्रमञ्जर्यः, तान्येवबहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा। पुनः -' किंसुयकण्णियारासोगमउडो ' किंशुककर्णिकाराशोकमुकुटः-किंशुकानि=पलाशकुसुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुटं=किरीटं यस्य स तथा। ' ऊसियतिलगबउलायवत्तो ' उच्छ्रितातिलकबकुलातपत्रः-उच्छ्रितानि=उन्नतानि तिलकबकुलानि=तिलकबकुलपुष्पाणि, तान्येव आतपं=छत्राकारपरिणतत्वेन छत्रं यस्य स तथोक्तः। एतादृशो वसन्तर्त्तनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्त्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण वर्ण्यते-' तत्थय ' तत्र च पश्चिमदिग्वनषण्डे ' गिम्हउउसागरो ' ग्रीष्मर्तुरूपः सागरः=समुद्रः स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरतं वर्त्तमानोऽस्ति। स कीदृशः? इत्याह-' पाडलसिरीससलिलो ' पाटलशिरीषसलिलः-पाटलशिरीषाणि=पाटलाशिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिलं=जलराशिरूपं यस्य स तथा। ' मल्लियवासंतियधवलवेलो ' मल्लिकावासन्तिकाधवलवेलः-मल्लिका वासन्तिका च लता-

---

न्तऋतु नरपति के समान सदा विचरण करती रहती है-सहकार (आम्र) की मंजरियां ही इस वसन्तऋतु रूपी राजा के सुन्दर हार हैं। किंशुक-कर्णिकार एवं अशोकके पुष्प ही इस राजा के मुकुट हैं। उन्नत तिलक वृक्ष एवं बकुल वृक्ष के पुष्प ही इसके छत्र है। (तत्थ य-पाडलसिरीससलिलो मल्लियवासंतियधवलवेलो, सीयलसुरभिअनिल मगरचरिओ गिम्हऊऊ सागरो साहीणो) उस पश्चिमदिशा सम्बन्धी वनषंड में ग्रीष्मऋतु समुद्र के सामान सदा पसरा रहता है-गुलाब और शिरीष पुष्प ये इस ग्रीष्मऋतु रूप समुद्र के जल हैं। मल्लिका एवं वास

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમાં વસંતઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હંમેશા વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આંબો) ની મંજરીઓજ આ વસંત ઋતુ રાજાના સુંદર હારો છે. કિંશુક કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ રાજાના મુકુટ છે ઊંચા તિલક વૃક્ષો અને બકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે.

तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मल्लिया वासंति य धवलवेलो सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्ह ऊ ऊ सागरो साहिणो)

તે પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હંમેશા પ્રસરાયેલો રહે છે. ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી છે. મલ્લિકા અને વાસંતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે. ઠંડો અને સુવાસિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषः, ता एव तरङ्गाकारपरिणतत्वाद् धवला=शुभ्रा वेला यस्य स तथा। 'सीयलसुरभि अनिलमगरचरियो' शीतलसुरभ्यनिलमकरचरितः – शीतलः सुरभिश्च योऽनिलः=वायुः स एव इतस्ततोभ्रमणसादृश्यात् मकरचरितं=मकरसञ्चारो यत्र स तथोक्तः। एवंविधो ग्रीष्मऋतुसागरस्तत्र सदैव विद्यत इति०। तत्र खलु बहीषु वापीषु यावद् अभिरममाणौ विहरतम्=क्रीडन्तौ तिष्ठतम्। लोके तु मार्गशीर्षादिक्रमेण द्वौ द्वौ मासौ हेमन्तशिशिर–वसन्तग्रीष्म–वर्षा–शरत्संज्ञकाः षड् ऋतवो गण्यन्ते। यदि खलु युवां देवानुप्रियौ! तत्रापि=पाश्चिमदिग्वनषण्डेऽपि उद्विग्नौ उत्प्लुतौ

न्ति का लताये ही जिस की वेलाएँ हैं–तट हैं–शीतल सुरभि पवन ही जिसमें मगरों का संचार हैं। ऐसा ग्रीष्मऋतु रूप सागर उस वनखंड में सदा वर्तमान रहता है। (तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह) वहींपर अनेक वापिकाएँ आदि भी हैं। सो उन में भी तुम दोनों आनन्द के साथ विचरण करते रहना। (जइणं तुब्भे देवो०—तत्थ वि—उव्विग्गा, उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह, माणं तुब्भे दक्खिणिल्लं वनसंडं गच्छेज्जाह तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे, महाविसे, अइकाय महाकाए जहा तेय निसग्गे मसिमहि सामूसा कालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे, धरणियलवेणिभूए, उक्कडपुडकुडिल जडिलककखडवियडफणाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधम-धमेंतघोसे अणागलियचंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धम

પવન જ જેમાં મગરોનું સંચરણ છે. એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખંડમાં સદા હાજર રહે છે. (तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह) ત્યાંજ ઘણી વાવો વગેરે છે. તમે બને તેઓમાં પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો.

(जइणं तुब्भे देवा० तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासाय वडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह माणं तुब्भे दक्खिणिल्लं वनसंडं गच्छेज्जाह तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेय निसग्गे मसि महिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंत जी हे, धरणियलवेणि भूए उक्कड पुडकुडिल जडिलककखड वियडफ णाडोव करण दच्छे लोगाहार धममाणधम्मधमेंतघोसे अनागलियचंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंत दिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ)

હે દેવાનુપ્રિયો! ત્યાં પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा भवेतं तदा खलु युवां यत्रैव प्रासादावतंसकः=स्वावासभवनं तत्रैव उपागच्छतं पुनः स्वप्रासादावतंसके समागत्य स्थातव्यमित्यर्थः, 'ममं' मां च 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्तौ २=प्रतीक्षमाणौ २ तिष्ठतं, किन्तु मा खलु युवां 'दक्खिणिल्लं' दाक्षिणात्यं=दक्षिणदिशासम्बन्धिकं वनषण्डं गच्छतं=युवाभ्यां दक्षिणदिग्वर्त्तिवनषण्डे न गन्तव्यमित्यर्थः। कस्मात्? इत्याह-तत्र खलु महानेकः-'उग्गविसे' उग्रं विषं यस्य स तथोक्तः। विषस्य-उग्रत्वं दुर्जरत्वात्। एवमग्रेऽपि संयोज्यम्। एवं 'चंडविसे' चण्डविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेशव्यापकत्वात्। 'घोरविसे' घोरविषः, घोरत्वं परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात्। 'महाविसे' महाविषः, महत्त्वं जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशकत्वात्। 'अइकाए' अतिकायः-अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः-अन्यसर्पापेक्षया स्थूल शरीरत्वात्। 'मसिमहिसमूसाकालए' मषीमहिषमूषाकालकः-मषी=कज्जल, महिषः प्रसिद्धः, मूषा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे मषीमहिषमूषा,

---

घमंतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ) यदि हे देवानुप्रियो! तुम्हारा वहां न लगे-उद्विग्न एवं उत्सुक बन जावे तो फिर तुम अपने इसी श्रेष्ठ प्रासाद में वापिस आ जाना और यहीं पर रहते हुए हमारी प्रतीक्षा करना। दक्षिण दिशा संबन्धी वनषंड में मत जाना। कारण वहां एक ऐसा बड़ा भारी सर्प रहता है कि जिस का विष बहुत अधिक दुर्जर होने से उग्र है। बहुत शीघ्र प्रति प्रदेशमें फैल जाने से चण्ड है। परम्परा से पुरुष सहस्र का घातक होने से घोर है, जंबूद्वीप के बराबर शरीर का भी विनाशक होने से महान् हैं। अन्य सर्पों की अपेक्षा यह सर्प बहुत लंबा है। तथा बहुत स्थूल है। मषी-कज्जल-महिष-भैंसा और मूषा-सुवर्ण के पिघलाने का पात्र विशेष के समान यह अत्यन्त श्यामवर्ण वाला है। इस की दोनों आँखो में विष रहता है

પાછા આવતા રહેજો અને અહીંજ રહીને મારી રાહ જોજો દક્ષિણ દિશાના વનખંડમાં તમે જતા નહિ. કેમ કે ત્યાં એક બહુ મોટો સાપ રહે છે. તેનું ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉગ્ર છે. પ્રતિ પ્રદેશમાં તે સત્વરે પ્રસરી જાય છે. એટલા માટે તે ચંડ છે. પરંપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી ઘોર છે. જંબૂદ્વીપ જેટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાશ કરી શકે તેમ છે તેથી તે મહાન્ છે. બીજા સાપો કરતાં તે બહુ જ લાંબો તેમજ ખૂબ જ મોટો છે. મષી-કાજળ, મહિષ-ભેંસો, અને મૂષા-સોનાને ઓગળાવવા માટેનું પાત્ર વિશેષ-ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રંગ વાળો છે. તેની બંને આંખોમાં પણ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ता इव कालकः=श्यामवर्णः ' नयणविसरोसपुण्णे ' नयनविषरोषपूर्णः – नयनयो र्विषं रोषश्च, ताभ्यां पूर्णः ' अंजणपुंज निगरप्पगासे ' अञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशः– कज्जलपुञ्जानां निकरः= राशिः तद्वत्प्रकाशः=कान्तिर्यस्य स तथोक्तः–अत्यन्त श्याम इत्यर्थः । ' रत्तच्छे ' रक्ताक्षः = रक्तनेत्रः । ' जमलजुयलचंचलचलंतजीहे ' यमलयुगलचञ्चलचलज्जिह्वः–यमले=सहवर्तिनौ युगले=उभे चञ्चले=चपले चलन्त्यौ पुनःपुनर्बहिर्निस्सरन्त्यौ जिह्वे यस्य स तथा । ' धरणीयलवेणिभूए ' धरणितलवेणी भूतः अतिदैर्घ्यश्यामत्वादिसादृश्यात् पृथिव्याः केशपाशसदृशः ' उक्कडफुड कुडिलजडिलकक्कडवियडफडाडोवकरणदक्खे ' उत्कटस्फुटकुटिलजटिल कर्कश-विकटस्फटाटोपकरणदक्षः – उत्कटः = बलवताऽपि ध्वंसयितुमशक्यः, स्फुटः व्यक्तः कुटिलः=वक्रः, जटिलः–सिंहवत् शटायुक्तः, कर्कशः=कठोरः, विकटश्च= भयङ्करो यः फटाटोपः=फणाडम्बरः तस्य करणे विस्तारणे दक्षः=निपुणः । लोहा-गरधम्ममाणधमधमंत घोसे ' लोहाकरध्मायमान धमधमायमान घोषः – लोहा-

---

यह बड़ा गुस्से बाज है । कज्जल पुंज की राशि के समान यह बिलकुल काला है । इस के दोनों नेत्र सदा लाल रहते हैं । इस की साथ २ रही हुई दोनों चंचल जिह्वाएँ बार २ बाहर निकलती रहती हैं । अत्यन्त दीर्घ एवं श्याम होने के कारण यह देखने में ऐसा लगता है कि जैसे मानो पृथिवी रूप स्त्री की वेणी चोटी ही हो । बलवान् पुरुष भी जिसे नष्ट नहीं कर सकता है जो व्यक्त है, कुटिल–वक्र–है, सिंह के समान शटा संपन्न है, कर्कश है, और विकट–भयंकर है–ऐसी अपनी फणा के फैलाने में यह बड़ा भारी दक्ष है । भट्टी में तपते हुए लोहे का जैसे धम धम शब्द होता है उसी प्रकार इस से निकला हुआ शब्द भी धम धम ऐसी आवाज करता हुआ ही निकलता है । इस का अत्यन्त जो

ઝેર રહે છે. તે બહુ જ ક્રોધી છે. કાજળના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે. તેના બંને નેત્રો હંમેશા રાતાં રહે છે. તેની સાથે રહેનારી બંને જીભો ચંચળ તેમજ વારંવાર બહાર નીકળતી રહે છે. બહુ લાંબો અને કાળો હોવાથી તે જોવામાં એવો લાગે છે કે જાણે પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન હોય. બળવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ વક્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સંપન્ન (કેશવાળી) છે, કર્કશ છે, અને વિકટ-ભયંકર-છે એવી પોતાની ફણાને ફેલાવવામાં તે ભારે દક્ષ છે. ભઠ્ઠીમાં તપા-વવામાં આવેલા લોખંડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ તેમાંથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો નીકળે છે. તેનો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रसिद्धे ध्मायमानः=परिताप्यमानो लोहः तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् घोषः=शब्दो यस्य स तथा। 'अणागलियचंडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीव्ररोषः, अनाकलितः=अपरिमितः चण्डतीव्रः= अत्यन्तोग्रो रोषो यस्य स तथा.। 'समुहिं' श्वमुखिकां= श्वमुखस्येवाऽऽचरणं शुन इव भषणम्, 'तुरियं' त्वरितम्, 'चवलं' चपल यथा स्यात्तथा 'धमधमंतदिट्ठिविसे' धमधमायमानदृष्टिविषः-धमधमायमानं=जाज्वल्यमानम् दृष्टौ विषं यस्य स तथोक्तः, एतादृशः सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद् 'माणं' मा खलु युवां तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः। अन्यथा-तत्र गमने-युवयोः शरीरस्य व्यापत्ति भविष्यति। एवं सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चंपि तच्चंपि' द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं द्वित्रिवारमित्यर्थः, एवं वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घातं करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता समवहत्य=समुद्घातं कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्रं त्रिस-प्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टेउं' अनुपर्यटितुं परितोऽटितुं प्रवृत्ता चाप्यासीत्. ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोष है वह अनाकलित-अपरिमित-है। कुत्ते के भौंकने के समान इस की आवाज निकलती है। यह त्वरा संपन्न और बहुत ही चपल है। इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माणं तुब्भे सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ२ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ२ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयं पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों वहां मत जाना। नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी। इसी प्रकार उस रयणा देवी ने उन माकंदि दारकों को दुबारा भी-तिबारा भी-समझाया बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

ઉગ્રરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-છે. કૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ નીકળતો રહે છે. આ ત્વરા સંપન્ન અને ખૂબ જ ચપળ છે. એની આંખમાં ઝેર હંમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે.

(माणं तुब्भे सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ. ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-समुद्दंति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टेयं पयत्ता यावि होत्था)

એટલા માટે તમે બંને ત્યાં જતા નહિ. નહિતર તમારા શરીરનું કુશળ રહેશે નહિ. આ પ્રમાણે જ તે રયણા દેવીએ માકંદીદારકોને બે વાર ત્રણ વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનું કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! रयणद्दीवदेवया अम्हे एवं वयासी--एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंतिर२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंतिर२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएणं ते मागंदिय० तत्थवि सतिंवा जाव अलभ० अण्णमण्णं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीविदेवया एवं वयासी--एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवहिणा जाव माणं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति तं भवियव्वं एत्थकारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं

किया। समुद्घात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई॥ सू० ४॥

સમુદ્ઘાત કરીને તે પોતાની પ્રસિદ્ધ દેવ ગતિથી એકવીશ વખત લવણસમુદ્રની ચારે બાજુએ ભ્રમણ કરવામાં પ્રવૃત્ત થઈ ગઈ. ॥ સૂત્ર " ૪ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वणसंडं गमित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए चेव, तएणं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति२ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एगं आघायणं पासंति अट्ठियरासिसयसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एगं च तत्थ सूलायतयं पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कुज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीता जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति२ ते सूलाइयं एवं वयासी—एसणं देवाणुप्पिया! कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवत्तिं पाविए?, तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागंदियदारए एवं वयासी—एसणं देवाणुप्पिया! रयणदीवेदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुलं पणियभंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए, तएणं अहं पोयवहणविवत्तीए निव्बुड्डभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि, तएणं अहं उवुज्झमाणे२ रयणदीवंतेणं संवूढे, तएणं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ२ ममं गेण्हइ२ मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति, तएणं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवत्तिं पावइ, तं ण णज्जति णं देवाणुप्पिया!

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ?, तएणं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं वयासी—कहण्णं देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवे देवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थरिज्जामो ?, तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वयासी—एसणं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसति, तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महया२ सद्देणं एवं वदति कं तारयामि कं पालयामि ?, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा—कं तारयामि कं पालयामि?, ताहे तुब्भे वदह—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे परं रयणदीविदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ॥सू०५॥

टीका—' तएणं ते ' इत्यादि-ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ततः=

' तएणं ते मागंदिय दारया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) उस रयणा देवीके चले जाने के बाद (ते मागंदिय

(तएणं ते मागंदिय दारया ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यार पछी (ते मागंदियदारया) બંને માકંદીના પુત્રોએ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पश्चात मुहूर्तान्तरात्=घटिकाद्वयरूपमुहूर्तानन्तरमित्यर्थः पासादावतंसगे 'सइंवा' स्मृति अतिव्याकुलचित्ततया भविष्यत्कालिकसुखबाहुल्यरूपां वा, 'रइं वा' रतिं=मनोमुदं वा 'धिइं वा' धृतिं=चित्तस्वास्थ्यं वा 'अलभमाणा' अलभमानौ सन्तौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! रत्नद्वीपदेवता अस्मानेवमवादीत्-एवं खलु अहं शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावद् व्यापत्तिर्भविष्यति, 'तं' तत्=तस्मात्कारणात् श्रेयः खलु आवयो र्हे देवानुप्रिय! पौरस्त्यं=पूर्वस्यां दिशिस्थितं वनषण्डं गन्तुम्। अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रृणुतः=

दारया) उन दोनों माकंदी के पुत्रो ने (तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी) एक मूहूर्त भी उस श्रेष्ठ प्रासाद में अति व्याकुलित चित्त होने के कारण भविष्यत्कालिक सुख बाहुल्य रूप स्मृति को मनोमुद (मन को प्रसन्न करने वाला) रूप रति को और चित्तस्वास्थ्य रूप धृति को नहीं पाते हुए परस्पर में ऐसा विचार किया- (एवं खलु देवाणुप्पिया! रयणदीवदेवया अम्हे एवं वयासी) हे देवानुप्रिय! रयणा देवी ने हम लोगों से ऐसा कहा है कि (एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ-तं सेयं खलु अहं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए) "मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञानुसार लवण समुद्राधिपति सुस्थित देव ने ऐसा आदेश दिया है कि मैं २१ बार लवण समुद्र की प्रदक्षिणा करूँ" इत्यादि से लेकर

(तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी)

તે મહેલમાં એક મુહૂર્ત જેટલા પ્રમાણના સમયમાં પણ શાંતિ મેળવી નહિ તેઓ વ્યાકુળ ચિત્ત હોવાથી ભવિષ્યમાં પ્રાપ્ત થનારા સુખ રૂપ સ્મૃતિને મનોમુદ (મનને આનંદિત કરનાર) રૂપ રતિને અને ચિત્ત સ્વાસ્થ્ય રૂપ ધૃતિ પ્રાપ્ત ન કરતાં એક બીજાની સાથે વિચાર કરવા લાગ્યા. (एवं खलु देवाणुप्पिया! रयणदीव देवया अम्हे एवं वयासी) હે દેવાનુપ્રિય! રયણા દેવીએ અમને કહ્યું છે કે

(एवं खलु अहं सक्कवयण संदेसेणं सट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ- तं सेयं खलु अहं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए)

મને શક્રેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઈને લવણસમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે હુકમ કર્યો છે કે મારે એકવીશ વખત લવણ સમુદ્રની પ્રદક્ષિણા કરવી જોઈએથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वीकुरुतः, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यत्रैव पौरत्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ आलिगृहेषु च यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैवोत्तरीयो

शरीर का विध्वंस न हो यहां तक का रयणा देवी का सब कथन यहाँ इन दोनों की बात चीत में लगा लेना चाहिये। इसलिये हे देवानुप्रिय! हम लोगों को यही अब उचित है कि हम लोग पूर्वदिशा संबन्धी वनखंड में चलें। (अण्ण मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति) इस प्रकार परस्पर में किये इस विचार को उन दोनों ने मान लिया और मान कर जहां पूर्वदिशा संबन्धी वनषंड था वहां गये-वहां जाकर उन्हों ने बावड़ी आदि में खूब मन चाहा क्रीडा की बाद में वे रम्य वनस्पति विशेष के घरों आदि में क्रीडा करने लगे। (तएणं मागंदियदारया तत्थ वि सर्तिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति) परन्तु उन माकंदी दारकों को वहां जब भविष्यत्कालीन सुख बाहुल्य रूप स्मृति आदि कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहां से निकल कर जहां उत्तर दिशा

ભાંડીને તમારું શરીર નષ્ટ થાય નહિ ત્યાં સુધીની રયણા દેવીની ઉપર કહ્યા મુજબની બધી વિગત અહીં સમજવી જોઇએ એવી ઇ દેવાનુપ્રિય! હવે અમને એજ યોગ્ય દેખાય છે કે અમે પૂર્વ દિશાના વનખંડમાં જઇએ.

(अण्ण मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलिघरएसु य जाव विहरंति)

આ પ્રમાણે બંને એક બીજાના વિચારોથી સંમત થયા અને ત્યાર પછી જ્યાં પૂર્વ દિશાનો વનખંડ હતો ત્યાં ગયા, ત્યાં જઇને તેઓએ વાવો વગેરેમાં ખૂબ જ પ્રમાણમાં ક્રીડાઓ કરી અને પછી તેઓ ત્યાંના જ રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના ગૃહો વગેરેમાં ક્રીડા કરવા લાગ્યા.

(तएणं मागंदियदारया तत्थ वि सर्तिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति तत्थणं वावीसु य जाव आलिघरए सु य जाव विहरंति)

પણ માકંદી દારકોને ત્યાં પણ જ્યારે ભવિષ્યનું સુખ બાહુલ્ય રૂપ સ્મૃતિ વગેરે કંઈ મળ્યું નહિ ત્યારે તેઓ ત્યાંથી નીકળીને ઉત્તર દિશાના

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीषु च यावद् आलिगृहेषु च यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैव पाश्चात्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! आवां रत्नद्वीपदेवता-एवमवदत्-एवं खलु अहं देवानुप्रियौ! शक्रस्य वचनमन्देशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावत् मा खलु युवयोः

संबन्धी वनषंड था वहां आये। वहां आकर उन्हों ने वावडिओं में स्नान किया-यावत् आलिघरों में क्रीडा किया। (तएणं ते मागंदियदारगा तत्थ वि सइं वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा० २ जाव विहरंति) परन्तु जब उन्हें वहां भी स्मृति आदि रूप कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहां से निकल कर पश्चिम दिशा संबन्धी वनषंड था वहां आये।

वहां आकर उन्हों ने वावडिओं में स्नान किया और आलिघरों आदि में परिभ्रमण किया। (तएणं ते मागंदिय० तत्थ वि सइं वा जाव अलभ० अण्णमण्णं एवं वयासी) फिर भी उन माकंदी-के उन दोनों पुत्रों को वहां शांति आदि कुछ भी नही मिला जब इस प्रकार की परिस्थिति उन्हों ने देखी तो परस्पर में ऐसा विचार किया (एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठएण लवणाहिवइणा जाव माणं

વનખંડમાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓએ વાવોમાં સ્નાન કર્યું યાવત આલિધરોમાં ક્રીડાઓ કરી

(तएणं ते मागंदियदारगा तत्थ सइं वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा० २ जाव विहरंति)

પણ ત્યાં પણ તેમને જ્યારે સ્મૃતિ વગેરે રૂપ કંઈ પણ સુખ મળ્યું નહિ ત્યારે તેઓ ત્યાંથી નીકળીને પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં પહોંચ્યા.

પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં જઇને તેઓએ વાવોમાં સ્નાન કર્યું અને આલિધરો વગેરેમાં વિચરણા કર્યું.

(तएणं ते मागंदिय० तत्थवि सइं वा जाव अलभ० अण्णमण्णं एवं वयासी)

ત્યાં પણ પહેલાંની જેમજ માકંદી પુત્રોને કંઈ પણ જાતની શાંતિ વળી નહિ. આવી પરિસ્થિતિમાં તેઓએ પરસ્પર મળીને વિચાર કર્યો કે

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी- एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठएण लवणाहिवइणा जाव माणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरीरस्य व्यापत्तिर्भविष्यति, ' तं ' तत्=तस्मात्-कारणाद् भवितव्यमत्र कारणेन, तच्छ्रेयःखलु आवयो दाक्षिणात्यं वनषण्डं गन्तुम्, 'इतिकट्टु' इतिकृत्वा इतिविचार्य अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुतः, प्रतिश्रुत्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनषण्डस्तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए ' प्रधारयतो गमनाय=गन्तुं प्रवृतौ प्रस्थितावित्यर्थः । ततः खलु=तदनु

तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) हे देवानुप्रिय यह तो तुम्हें ज्ञात ही है कि रयणद्वीप देवता-रयणादेवी-ने जो हमलोगों से ऐसा कहा था कि मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवने लवणसमुद्र की २१ बार पर्यटना करने के लिये कहा है इत्यादि २ । सो तुम दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनषंड के सिवाय तीन दिशा सम्बन्धी वनषंडों में ही चित्त के उद्विग्न आदि होने पर जाना वहां की बावड़िओं आदि में भी स्नान आदि कर अपने मन को आनंदित करना दक्षिणदिशा सम्बन्ध वनषंड में नहीं जाना वहां एक महाकाय विकराल सर्प रहता है। कहीं ऐसा न हो कि वहां जाने पर उसके द्वारा तुम्हारी मृत्यु हो जाय-सो उसके इस कथन में कोईन कोई कारण अवश्य होना चाहिये। अतः इस कारण की जांच के लिये हमें दक्षिणदिशा सम्बन्धीवनखंड में जाना श्रेयस्कर है। ऐसा उन्होंने परस्पर में विचार किया। और इस विचार को

तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं अलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति)

હે દેવાનુપ્રિય! એ વાત તમે જાણતા જ હશો કે રત્નદ્વીપના દેવતા રયણા દેવીએ અમને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શક્રેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઇને લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે એકવીશ વાર સમુદ્રની ચારે બાજુ ભારે પરિભ્રમણ કરવું છે વગેરે. તો તમે દક્ષિણ દિશા તરફના વનખંડ સિવાય બાકીના ત્રણે દિશાના વનખંડોમાં ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થાય ત્યારે જાને ત્યાંની વાવો વગેરેમાં સ્નાન વગેરે કરીને પોતાના મનને પ્રસન્ન કરજો દક્ષિણ દિશા તરફના વનખંડમાં તમારે જવું નહીં કેમ કે ત્યાં એક મોટો મહાકાળ વિકરાળ સાપ રહે છે. કંઈ એવું થાય નહિ કે તમે ત્યાં જાઓ અને તેની લપેટમાં આવીને તમારું મૃત્યુ થઈ જાય. તો તેનો આ વાતમાં કંઈક રહસ્ય ચોક્કસ હોવું જોઈએ. એટલા માટે આ રહસ્ય વિશે ત્યાં જઈને આપણે કંઈક જાણવું તો જોઈએ જ. આમ પરસ્પર વિચાર કરીને તેઓએ ત્યાં જવાનો મક્કમ વિચાર પણ કરી જ લીધો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र-गमनमार्गे गन्धः ' णिद्धाइ ' निर्धावति=सावेगं समायाति, कीदृशो गन्धः ? इत्याह-' से जहानामए ' तद् यथनामकम्-तथाहि-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा=मृतसर्पकलेवरमिति वा यावत् ' एत्तो वि ' तस्मादपि मृतसर्पादिकलेवरादपि ' अणिट्ठतराए चेव ' अनिष्टतर एव=यन्नामश्रवणेऽपि मनोऽतिविकृतं जायते । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तेनाशुभेन गन्धेन ' अभिभूयसमाणा ' अभिभूतौ=व्याकुलौ सन्तौ स्वकेन उत्तरीयेण=उत्तरासङ्गेन ' दुपट्टा ' इति प्रसिद्धेन आस्यं=मुखैकदेशरूपं स्व स्व नासिकामित्यर्थः ' पिहेंति ' पिधत्तः=समाच्छादयतः, पिधाय=नासिकामाच्छाद्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागतौ । तत्र खलु

उन्होंने आपस में निश्चित भी कर लिया। (पडिसुणित्ता जेणेव दाक्खणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएणं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्ठतराए चेव, तएणं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एगं आघायणं पासंति) विचार निश्चित कर फिर वे दोनों जहां दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनषंड था उस ओर चल दिया। चलते २ उन्हें मार्ग में बहुत बडी दुर्गन्ध आई। जैसी दुर्गंध मृत सर्प आदि सड़े हुए कलेवर से आती है उससे भी अधिक अनिष्टतर वह दुर्गन्ध थी।

इस के अनन्तर उन दोनों माकंदिके दारकों ने उस अशुभ गंधसे व्याकुल होकर अपने अपने मुख के एक देशरूप भाग नासिका को दुपट्टे के एकदेश से ढक लिया। ढक कर फिर वे दक्षिण दिशा संबन्धी

(पडिसुणित्ता जेणेव दाक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएणं गंधे, निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्ठतराए चेव तएणं ते मागंदिय दारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति२ जेणेव दाक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एगं आघायणं पासंति)

અને ત્યાર પછી તેઓ બંને જે તરફ દક્ષિણ દિશા સંબંધી વનખંડ હતો તે તરફ રવાના થયા. રસ્તામાં ચાલતાં ચાલતાં તેઓને એકદમ ખરાબ દુર્ગંધ આવી. મરીને સડી ગયેલા સાપના શરીરની જ જેવી અનિષ્ટતા દુર્ગંધ હોય છે તેવી જ તે દુર્ગંધ પણ હતી. માકંદી દારકોએ તે અશુભ ગંધથી વ્યાકુળ થઈને પોતાના મોંના એક દેશ રૂપ ભાગ નાકને બેસના છેડાથી ઢાંકી દીધું. ઢાંકીને તેઓ આગળ દક્ષિણ દિશાના વનખંડમાં ગયા. ત્યાં જતાં જ તેઓએ એક શૂળી ચઢાવવાની જગ્યા જોઈ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महदेकम् ' आघायणं ' आघातनम्=आघातस्थानं वधस्थानमित्यर्थः पश्यतः, तत् स्थानं कीदृशम् ? इत्याह-' अट्ठियरासिसयसंकुलं ' अस्थिराशिशतसङ्कुलम्-अस्थ्नां राशिः=पुञ्जः, तेषां शतानि, तैः सङ्कुलं=व्याप्तम् ' भीमदरिसणिज्जं ' भीमदर्शनीयम्-दर्शनमात्रेऽपि भयजनकम्। पुनश्च तत्रैकं ' सूलाइयं ' शूलाचितकं=शूलारोपितं पुरुषं ' कलुणाइं ' करुणानि=करुणाजनकानि ' कट्ठाइं ' कष्टानि=हृदयदुःखोत्पादकानि ' विस्सराइं ' विस्वराणि=विकृतध्वनिकानि वचनानि ' कुज्जमाणं ' कूजन्तम्=अव्यक्तरूपेणोच्चरन्तं पश्यतः। दृष्ट्वा च भीतौ ' जाव ' यावत्-यावच्छब्देन-त्रस्तौ त्रसितौ=त्रासं प्राप्तौ उद्विग्नौ इति, ' संजायभया ' सञ्जातभयौ=प्राप्तभयौ तौ यत्रैव स शूलाचितपुरुषस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तं शूलाचितं पुरुष-

उस वनषंड में गये। वहां जाते ही उन्हों ने एक शूली चढानेका का स्थान देखा। (अट्ठियरासिसयसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एगंच तत्थ सूलाइयं पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कुज्जमाणं पासंति पासित्ता भीया जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति) जिस में सैकडों हड्डियों के ढेर लगे हुए थे। एवं जो देखने में बडा भयप्रद था। वहीं पर उन्हों ने शूली पर चढे हुए एक पुरुष को देखा जो बहुत बुरी तरह चिल्ला चिल्ला रहा था। उसके इस चिल्लाने की आवाज को सुनकर हृदय में दया का प्रवाह बहने लग जाता था। साथ २ में चित्तमें दुःख भी होने लगता था। उसको देखकर ये दोनों भयभीत हो गये। त्रास एवं उद्वेगसे युक्त बन गये। इसी स्थितिमें ये दोनों जहां वह शूलीपर चढा हुआ पुरुष था, वहां पहूचे (उवागच्छित्ता) वहां पहूँच कर (तं सूलाइयं एवं वयासी) उन्हों ने उस शूलारोपित मनुष्य से इस

(अट्ठियरासिसयसंकुलं भीमदरसणिज्जं एगं च तत्थ सूलाइयं पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं कुज्जमाणं पासंति पासित्ता भीया जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति)

ત્યાં સેંકડો હાડકાંઓના ઢગલા પડયા હતા. ત્યાંનું દૃશ્ય એકદમ ભયપ્રદ હતું. તેઓએ ત્યાં શૂળી ઉપર ચઢેલા એક માણસને જોયો કે જે બહુજ ખરાબ રીતે કરુણ ક્રંદન કરી રહ્યો હતો. તેની કરુણ ભર્યા અવાજને સાંભળીને હૃદયમાં દયાનો પ્રવાહ વહેવા લાગતો હતો. અને સાથે સાથે તેની એવી દુર્દશા જોઇને મનમાં દુઃખ પણ થતું હતું. તેઓ બંને તેને જોઇને ડરી ગયા. ત્રાસ અને ઉદ્વેગ યુક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે તેઓ બંને જ્યાં તે માણસ શૂળી ઉપર લટકી રહ્યો હતો ત્યાં ગયા. (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઇને (तं सूलाइयं एवं वयासी) તેઓએ શૂળી ઉપર લટકતા માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेवमवादिष्टाम्-एतत्खलु हे देवानुप्रिय ! कस्याघातनं=वधस्थानम् ? त्वं च खलु कोऽपि कुतो वा कस्मात्स्थानात् इह हव्यमागतः समागतः ? केन वा इमामेतद्रूपामापत्तिं प्रापितः ? । ततः खलु स शूलाचित्तकः=शूलारोपितः पुरुषो माकन्दिकदारकावेवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियौ रत्नद्वीपदेवताया आघातनं=रत्नद्वीप देवतया स्थापितं वधस्थानम्-अहं खलु हे देवानुप्रियौ ! जम्बूद्वीपात्=जम्बूद्वीपाभिधानाद् द्वीपाद् भारतात् वर्षाद्=भरतक्षेत्रात् काकन्दीनगर्या 'आसवाणियए' अश्ववाणिजकः=अश्वव्यापारी विपुलं 'पणियभांडं' पणितभाण्डं=विक्रेय वस्तुजातम्, आदाय=गृहीत्वा पोतवहनेन लवणसमुद्रम् 'ओवाए' अवयातः=अवगा-

---

प्रकार कहा-(एस णं देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुमं च णं केकओवा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवत्तिं पाविए ? तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागंदियदारए एवंवयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियाए विपुलं पणिय भंडमायाए पोहवहणेणं लवणसमुद्दं ओवाए) हे देवानुप्रिय ! 'कस्साघयणे' यह शूली स्थान किसका हैं। तुम कौन हो ? यहां कहांसे आये हो ? और किसने तुम्हें इस आपत्तिमें डाला है। उन की इस बात को सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन दोनों माकंदी-दारकों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! यह शूली स्थान रयणादेवीका है, में हे देवानुप्रियो ! जंबूद्वीप नाम के द्वीपमें वर्तमान भरत क्षेत्रस्थ काकंदी नाम की नगरी का निवासी अश्ववणिक्-घोडों का व्यापारी हूँ। मैं वहां से विक्रेयवस्तु समूह को लेकर नौकाद्वारा इस

(तएणं देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुमं च णं के कओवा इहं हव्वमागए केणवा इमेयारूवं आवत्तिं पाविए ? तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागंदियदारए एवं वयासी- एसणं देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबू दीवाओ दीवा-ओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियाए विपुलं पाणिय भंडमायाए पोयवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ શૂળી સ્થાન કોનું છે ? તમે કોણ છો ? અહીં તમે કયાંથી આવ્યા છો ? અને કોણે તમારી આવી હાલત કરી છે ? તેઓની વાત સાંભળીને શૂળી ઉપર લટકતા માણસે માકંદીદારકોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ શૂળી-સ્થાન રયણા દેવીનું છે. હે દેવાનુપ્રિયો ! હું જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રનો કાકંદી નામની નગરીનો રહીશ છું. હું અશ્વ વણિક-ઘોડાનો વેપારી-છું. ત્યાંથી હું વેચાણની વસ્તુઓ સાથે લઈને નાવવડે આ લવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરતો આવ્યો હતો. (तएणं अहं पोय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थितवान् । ततः खलु अहं 'पोतवहणविवत्तीए' पोतवहनविपत्तौ, नौकायां भग्नायां सत्यां 'निब्बुडभंडसारे' निर्बुडितभाण्डसारः जलनिमग्नवस्तुसारः, एकं फलक-खण्डमासादयामि । ततः खलु अहं 'उव्वुज्झमाणे २ उद्वुध्यमानः २ उत्तरन् २ रत्नद्वीपान्ते=रत्नद्वीपसमीपे खलु 'संवूढे' संव्यूढः=तीरं प्राप्तः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता माम् 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन मक्षयति, दृष्ट्वा मां गृह्णाति, गृहीत्वा मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् 'भुंजमाणी' भुञ्जाना 'विहरइ' विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता, अन्यदा कदाचित् 'अहालहुसगंसि' यथालघुस्वके यथाप्रकारके लघुस्वरूपे स्तोकमात्रोऽपराधे परिकुपि-

---

लवणसमुद्र में उत्तरा (तएणं अहं पोयवहणविवत्तीए) भाग्यवशात् मेरी नौका इस समुद्र में टकरा जाने से डूबगई। (निब्बुडभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि) इस तरह जिसका समस्त वस्तुसार जलनिमग्न हो चुका है ऐसे मुझे वहीं पर एक काष्ठफलक प्राप्त हो गया। (तएणं अहं उव्वुज्झमाणे२ रयणदीवं तेणं संवूडे) उसकी सहायतासे तैरताहुआमैं इस रत्नद्वीपके पास आपहुँचा। (तएणं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ) इतने में उस रत्नद्वीपदेवी ने मुझे अपने अवधिज्ञान से देख लिया- (पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ तएणं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाइं अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवत्तिं पावेइ तं न णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ?) देखकर उसने मुझे अपने पास रख लिया। रखकर मेरे साथ उसने मन चाहे खूब कामभोगोंको भोगा। किसी एक

वहणं विवत्तीए) દુર્ભાગ્યથી મારી નાવ આ સમુદ્રમાં અથડાઈને ડૂબી ગઈ. (निब्बुडभंडसारे एगं फलग-खंडं आसाएमि) આ રીતે વેચાણની બધી જ વસ્તુઓ જ્યારે પાણીમાં ડૂબી ગઈ ત્યારે પાણીમાંજ એક લાકડું મને મળી ગયું. (तएणं अहं उव्वुज्झमाणे २ रयणदीवं तेणं संवूडे) તેના ઉપર તરતો હું આ રત્નદ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યો. (तएणं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ) એટલામાં તે રત્નદ્વીપ દેવીએ મને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધો.

(पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ तएणं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाइं अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवत्तिं पावेइ तं न णज्जति णं देवाणुप्पिया ! तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं कामण्णे आवत्ती भविस्सइ ?)

જોઈને તેણે મને પોતાની પાસે રાખી લીધો અને રાખીને મારી સાથે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हा सती मामेतद्रूपमापत्तिं प्रापयति तन्न ज्ञायते खलु हे देवानुप्रियौ ! युवयोरप्ययोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

ततः खलु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियौ ! पौरस्त्ये वनषण्डे शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतने शैलको नाम अश्व-

---

समय मेरे द्वारा उसका थोड़ा सा अपराध बन गया सो उस थोड़े से अपराध के बन जाने पर वह बहुत अधिक कुपित हो गई। कुपित होकर उसने मुझे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है। अतः हे देवानुप्रियों। तुम दोनों के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन जान सकता है-मैं इसीका विचार कररहा हूँ। (तएणं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइसयं पुरिसं एवं वयासी) इस तरह उस शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी तरह हृदय से विचार कर वे दोनों माकंदी-दारक बलिततर- अत्यंत-भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्हों ने फिर उस शूलारोपित पुरुष से इस प्रकार कहा (कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ?) हे देवानुप्रिय ! हम लोग कैसे इस रयणा देवी के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकते हैं- (तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! पुर

તેણે ઈચ્છા મુજબ કામ ભોગો ભોગવ્યા. કોઈ એક વખતે મારાથી સહેજ ભૂલ થઈ ગઈ. તે મારી સહેજ ભૂલથી પણ અત્યધિક ગુસ્સે થઈ ગઈ અને તેણે ત્યાર પછી મારી આવી હાલત કરી છે. એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારા શરીરની પણ શી દશા થશે ? તે કોણ જાણી શકે તેમ છે. હું અત્યારે એજ વિચાર કરી રહ્યો છું.

(तएणं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइसयं पुरिसं एवं वयासी)

આ શૂળી ઉપર લટકતા માણસના મોંથી આ બધી વિગત જાણીને તેના ઉપર ખૂબ જ ગંભીરતાથી વિચાર કરીને તેઓ બંને માકંદી દારકો ખૂબ જ-ભયભીત થઈ ગયા. યાવત્ ભયત્રસ્ત થઈને તેઓ બંનેએ શૂળી ઉપર લટકતા માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो)

હે દેવાનુપ્રિય ! રયણા દેવીના હાથમાંથી અમે જલ્દી કેવી રીતે મુક્ત થઇ શકીએ ?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्त्तते । ततः खलु स शैलको यक्षः 'चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् 'उद्दिष्ट' त्ति अमावास्यायां पूर्णिमायां च तिथौ 'आगयसमए' आगतसमये=आसन्नीभूतावसरे 'पत्तसमए' प्राप्तसमये उपलब्धावसरे साक्षादेवावसरे, यथोचितसमयं सम्प्राप्येत्यर्थः महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एवं वदति-'कं तारयामि? कं पालयामि=रक्षयामि?, इति, 'तं' तत् तस्मात् गच्छतं खलु युवां हे देवानुप्रियौ! पौरस्त्यं वनषण्डं, शैलकस्य यक्षस्य 'महरिहं' महार्हां महायोग्यां 'पुप्फच्चणियं'

च्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसइ) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन माकंदी दारकों से इस प्रकार कहा। हे देवानुप्रियों! पूर्व दिशा की वनषंड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है। उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है। (तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया२ सद्देणं एवं वयइ, कं तारयामि, कं पालयामि? तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा कं तारयामि कं पालयामि? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णमासी

(तएणं से मूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया! पुराच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसइ:)

તેઓની આ પ્રમાણેની વાત સાંભળીને તે શૂળી ઉપર લટકતા પુરુષે માકંદી દારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! પૂર્વ દિશાના વનખંડમાં એક શૈલક યક્ષનું યક્ષાયતન છે. ત્યાં અશ્વરૂપધારી શૈલક નામે યક્ષ રહે છે.

(तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया२ सद्देणं एवं वयइ, कं तारयामि कं पालयामि? तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा कं तारयामि कं पालयामि? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्पार्चनिकां कुरुतं, कृत्वा जानुपादपतितौ=जानुनीपादौच भूमौ निधाय विनम्रीभूतौ पंजलिउडा' प्राञ्जलिपुटौ संयोजितकरपुटौ, हस्तौ संयोज्येत्यर्थः 'विणएणं' विनयेन=नम्रभावेन 'पज्जुवासमाणा' पर्युपासीनौ=तं सेवमानौ तिष्ठतम्, यदा खलु स शैलको यक्ष आगतसमये=अवसरे समागते प्राप्तसमये=उपलब्धावसरे एवं वदेत्-'कं तारयामि कं पालयामि ?' इति, तदा युवां वदतम्-हे शैलक यक्ष ! आवां तारय, आवां पालय। शैलको 'मे' युवाभ्यामाराधितो यक्षः 'परं' समर्थः, स युवां रत्नद्वीपदेवतायाः हस्तात् 'साहत्थिं' साक्षात् 'णित्थारेज्जा' निस्तारयिष्यति=पारं नेष्यति, सङ्कटान्मोचयिष्यतीत्यर्थः, अन्यथा=एवमकरणे मे' युवयोः न जानामि अनयोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति 'मन्ने' मन्ये=अहं चिन्तयामि ॥ सू० ५ ॥

के दिन उचित समय प्राप्त होने पर बडे जोर २ से ऐसा कहता है कि मैं किसको तारूं किसकी रक्षा करूँ ? इस लिये हे देवानुप्रियो! तुम दोनों पूर्वदिशा संबन्धी वनषंड में जाओ और वहां उस शैलक यक्ष की आराधना करो। आराधन करके फिर उस के समक्ष दोनो घुटनों को और पैरों को टेककर- भूमिपर रखकर- अत्यन्तनमे हुए बडे विनय के साथ दोनों हाथों को जोड़ कर उसकी उपासना करने में लग जाओं। जब वह शैलक यक्ष अवसर आने पर वैसा कहे कि मैं किसे तारूं किसे रक्षित करू ? तो तुम दोनों कहना हे शैलक यक्ष ! हम दोनों को यहां से तारों हमारी रक्षा करो। (सेलए मे जक्खे परं रयण दीव देवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा अण्णहा मे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ) इस तरह तुम

તે શૈલક યક્ષ ચૌદશ, આઠમ, અમાવસ્યા અને પૂનમના દિવસે ઉચિત સમય પ્રાપ્ત થતાં બહુ મોટેથી આ પ્રમાણે કહે છે કે કોને હું પાર પહોંચાડું ? કોની હું રક્ષા કરું ? એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બને પૂર્વ દિશાના વનખંડમાં જાઓ અને ત્યાં તે શૈલક યક્ષની આરાધના કરો. આરાધના કરીને તેની સામે બંને ઘૂંટણો અને પગો ટેકાંને ઘણા જ નમ્ર શબ્દોમાં વિનયની સાથે બંને હાથ જોડીને તેની ઉપાસના કરવા લાગો. જ્યારે તે શૈલક-યક્ષ સમય આવતાં આ પ્રમાણે કહેવા લાગે કે કોને હું પાર ઉતારું અને કોની રક્ષા કરું ? ત્યારે તમે બંને વિનંતી કરતાં કહેજો કે-હે શૈલક યક્ષ ! અમો બંનેને અહીંથી પાર ઉતારો અમારી રક્ષા કરો.

सेलए मे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा अण्णहा मे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं ते मागंदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणि तेणेव उवा० पोक्खरिणिं ओगाहंति२ जलमज्जणं करेंति२ जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति२ जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उ०२ आलोए पणामं करेंति२ महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति२ जाणुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमये पत्तसमए एवं वयासी–कं तारयामि कं पालयामि ?, तएणं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एवं वयासी –एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणाणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिइ, तं जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा

दोनों के द्वारा आराधित हुआ वह शैलक यक्ष तुम दोनों के रयणादेवी के हाथ से साक्षात् निस्तारित करवा देगा–अर्थात् उस के संकट से तुम्हे छुडवा देगा–नहीं तो कौन कह सकता है कि तुम्हारे शरीर की क्या दशा हो। मैं इसी बात का विचार कर रहा हूँ। सूत्र "५"

આ પ્રમાણે તમારા વડે આરાધાયેલો તે શૈલક યક્ષ રયણા દેવીના હાથમાંથી સાક્ષાત્ તમને બંનેને મુક્ત કરશે. એટલે કે તેના સંકટમાંથી તમને તે છોડાવશે. નહિતર તમારા શરીરની શી દશા થશે ? તે કોણ જાણી શકે તેમ છે. હું એજ વિચાર કરી રહ્યો છું. ॥ સૂત્ર "૫" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी-जण्णं देवाणुप्पिया! वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ२ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरेइ निस्सरित्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एवं वयासी–हं भो मागंदिया! आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि, तएणं ते मागंदिय० हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति२ सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तएणं से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएणं ते ' इत्यादि । ' तएणं ' ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तस्य शूलाचितकस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य शीघ्रं, चण्डं=प्रचलं, चपलं,

' तएणं ते मागंदिय० ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (ते मागंदिय दारया) वे दोनों माकंदी के दारक (तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा) उस शूलारोपित

' तएणं ते मागंदिय ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ– (तएणं) त्यारपछी (ते मागंदियदारया) तेओ બંને માકંદી દારકોએ (तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा) शूળी ઉપર ચઢેલા પુરૂષની વાત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्वरितं, 'वेइयं' वेगितं=सवेगं यथास्यात्तथा शीघ्रातिशीघ्रमित्यर्थः यत्रैव पौरस्त्यं वनषण्डं, यत्रैव पुष्करिणी=वापी तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य पुष्करिणीमवगाहेते=अन्तः प्रविशतः, अवगाह्य जलमज्जनं=जलस्नानं कुरुतः, कृत्वा यानि तत्र उत्पलानि वा पद्मानि वा यावद् गृह्णीतः, गृहीत्वा यत्रैव शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'आलोए' आलोके यक्षदर्शने सति प्रणामं कुरुतः, कृत्वा महार्हं=महायोग्यां पुष्पार्चनिकां कुरुतः, कृत्वा जानुपादपतितौ=विनम्रकायौ 'सुस्सूसमाणा' शुश्रूषमाणौ=यक्षसेवां कुर्वाणौ 'णमंसमाणा' नमस्यन्तौ=नमस्कारं कुर्वाणौ 'पज्जुवासंति' पर्युपासातेस्म, सेवां कृतवन्तौ। ततः खलु स शैलको यक्ष आगतसमये प्राप्तसमये एवमवादीत्-'कं तारयामि कंपाला-

---

पुरुष के मुख सें इस बात को सुनकर (निसम्म) और उसे अपने चित्त में निश्चित कर (सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, करित्ता जाइं तत्थ-उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेंति) शीघ्र ही वहां से बहुत जल्दी त्वरायुक्त बन जल्दी २ दौड़ते हुए से होकर जहां वह पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड-तथा पुष्करिणी थी वहां आये। वहां आकर उन्होंने पुष्करिणी में अवगाहन किया फिर स्नान किया। फिर उस से कमल थे वहां से लिया और लेकर जहां शैलक यक्ष का यक्षायतन था उस ओर चलदिये। वहां पहुँचते ही उन्हों ने यक्ष के दिखलाइ पड़ते नमस्कार किया। (करित्ता महरिहं

સાંભળીને (निसम्म) અને તેને પોતાના મનમાં ઠસાવીને

(सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्लो वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जल मज्जणं करेंति, करित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्सं जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेंति)

સત્વરે ત્યાંથી શીઘ્ર ચાલથી દોડતા દોડતા જ્યાં તે પૂર્વ દિશા સંબંધી વનખંડ તેમજ પુષ્કરિણી હતી ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ પુષ્કરિણીમાં ઉતર્યા અને સ્નાન કર્યું. પુષ્કરિણીમાં જેટલાં કમળો ખીલેલાં હતાં તેઓને લઈ લીધાં અને ત્યાર પછી શૈલક યક્ષના યક્ષાયતન તરફ રવાના થયા. ત્યાં પહોંચીને તેઓએ યક્ષની સામે જતાં જ નમન કર્યું.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यामि ?' इति । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ 'उट्ठाए' उत्थया स्वकीयौत्थानशक्त्या 'उट्ठेति' उत्तिष्ठतः, उत्थाय करतलपरिगृहीतं शिरआवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-'आवां तारय, आवां पालय' इति । ततः खलु स शैलको यक्षस्तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियौ ! युवयो मया सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन=अन्तरामार्गेण 'वीइवयमाणाणं' व्यति-

---

पुप्फचणियं करेंति-करित्ता जाणु पायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वयासी-कं तारयामि कं पालयामि तएणं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एवं वयासी-अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहि) नमस्कार कर फिर उन्हों ने उस की आराधना-की। आराधन कर के फिर वे दोनों अपने घुटने और पैर टेक कर उस के चरणों पर पड़ गये। इस प्रकार बार २ उस की सेवा करते हुए वे वहां रहने लगे-जब उचित अवसर प्राप्त हुआ और उस शैलकयक्ष ने ऐसा कहा-कि-मैं किस को तारू, किस को पार उतारूँ-तो उसी समय उठ कर इन दोनों माकंदी दारकों ने उस से दोनों हाथ जोड़ कर ऐसा कहा-आप हमें तारिये हमें पार उतारिये-(तएणं से सेलए जक्खे ते मागंदिय० एवं वयासी) उस दोनों माकंदी-दारकों की इस बात को सुनकर उस शैलक यक्ष ने उन से ऐसा कहा- (एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मएसद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं २ वीइवयमाणाणं सा रयणदीवदेवया

(करित्ता महरिहं पुप्फचणियं करेंति-करित्ता जाणुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगत समए पत्तसमए एवं वयासी कं तारयामि कं पालयामि तएणं ते मागंदिय दारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एवं वयासी- अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं)

નમન કરીને તેઓએ તેની આરાધના કરી. આરાધના કરીને તેઓ બંને જમીન ઉપર ઘૂંટણો ટેકીને તેના ચરણોમાં આળોટી ગયા. આ રીતે વારંવાર તેની ઉપાસના કરતાં તેઓ બંને ત્યાં જ રહેવા લાગ્યા. જ્યારે ઉચિત સમય આવ્યો ત્યારે શૈલક યક્ષે એમ કહ્યું-કે કોને હું તારૂં અને કોને પાર ઉતારૂં ? તરત જ માકંદી દારકો ઊભા થયા અને બંને હાથ જોડીને યક્ષને વિનંતી કરવા લાગ્યા કે તમે અમને તારો અને પાર ઉતારો. (तएणं से सेलए जक्खे ते मागंदिय० एवं वयासी) બંને માકંદી દારકોની વિનંતી સાંભળીને શૈલક યક્ષે તેઓને કહ્યું કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं २ वीइवयमाणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रजतोः=गच्छतो सतोः सा रत्नद्वीपदेवता पापा=पापिष्ठा चण्डा=कोपशीला, रुद्रा=क्रूरा क्षुद्रा=तुच्छस्वभावा साहसिका=अविचारितकारिणी बहुभिः 'खरएहिय' खरकैः=कठोरैः, 'मउएहिय' मृदुकैः=सुकोमलैः, 'अणुलोमेहिय' अनुलोमैः=मनोऽनुकूलैः, 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमैः=मनः प्रतिकूलभूतैश्च 'सिंगारेहिय' शृङ्गारैः=कामरागजनकैः 'कलुणेहिय' करुणैः=करणाजनकैश्च 'उवसग्गेहिय' उपसर्गैः=उपसर्गजनकवचनैः 'उवसग्गं' उपसर्गम्=उत्पातं 'करेहिइ' करिष्यति, तद् यदि खलु युवां हे देवानुप्रियौ ! रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थम् 'आढाहवा' आद्रि-

---

पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया, बहूहिं खरएहिं य मउएहिं य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य उवसग्गं करेहिइ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरे साथ लवण समुद्र में बीचों बीच के मार्ग से होकर चलो-उस समय वह पापिष्ठ, कोपशील, क्रूर, क्षुद्र एवं अविचारित कारिणी रयणा देवी तुम्हारे ऊपर अनेक कठोर, सुकोमल, मनोऽनुकूल, मनः प्रतिकूल कामराग जनक एवं करुणोत्पादक ऐसे उपसर्ग वचनों द्वारा उवसर्ग-उत्पात-करेगी। (तं जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणादीव देवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि अहणं तुब्भे रयण दीव देवयाए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो भे रयण दीव देवया इत्थाओ-साहत्थिं णित्थरेमि) सो यदि हे देवानुप्रियो ! तुम लोग रयणा देवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से

णं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया, बहूहिं खरएहिं य मउएहिं य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य उवसग्गं करेहिइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી સાથે લવણ સમુદ્રની વચ્ચેના માર્ગમાં થઈને તમે ચાલશો તે વખતે તે પાપિષ્ઠ, કોપશીલ, ક્રૂર, ક્ષુદ્ર અને અવિચારિતકારિણી રયણાદેવી ઘણા કઠોર, સુકોમળ, મનગમતા, મનને પ્રતિકૂલ, કામરાગને ઉત્પન્ન કરનારા અને કરુણોત્પાદક ઉપસર્ગ વચનો વડે ઉપસર્ગ-ઉત્પાત કરશે.

(तं जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाहवा परियाणहवा अवयक्खहवा तो भे अहं पिट्ठातो विहणामि अहणं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणाह णो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवया इत्थाओ साहत्थिं णित्थरेमि)

જો હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો રયણા દેવીના આ ઉપસર્ગ રૂપ અર્થને સન્માનની દૃષ્ટિએ જોશો એટલે કે તેના વચનોને તમે સત્કારશો, સ્વીકારશો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

येथे तदादरं करिष्यथः, वा=अथवा 'परियाणह वा' परिजानीथः=स्वीकरिष्यथः वा, अथवा 'अवदक्खह वा' पश्यथः= अवलोकयिष्यथः 'तो' तदा 'भे' युष्माकं 'पिट्ठाओ' पृष्ठात्=मम पृष्ठभागात् 'विहुणामि' विधुनामि पातयिष्यामि। अथ खलु यदि युवां रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं नो आद्रियेथे, नो परिजानीथः, 'नो अवयक्खह' तां प्रति नो पश्यतः, तदुपसर्गं सहिष्येथे इत्यर्थः 'तो' तदा 'भे' युवां रत्नद्वीपदेवताहस्तात् 'साहत्थिं' स्वहस्तेन 'णित्थारेमि' निस्तारयामि=पारं नेष्यामि। ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ शैलकं यक्षमेवमवादिष्टाम्—यं कञ्चन खलु हे देवानुप्रिय! त्वमाराध्यत्वेन वदिष्यति, यत्खलु 'युवयोरयमाराध्यः' इति तस्य खलु=तस्यैव उपपातनिर्देशे=सेवावचनाज्ञायां 'चिट्ठिस्सामो' स्थास्यावः किंपुनर्भवतः! भवदाज्ञानुसारेणैव वर्त्तिष्यावहे इत्यर्थः। ततः खलु स शैलको यक्षः 'उत्तरपुरत्थिमं' उत्तरपौरस्त्यम् ईशानकोणसम्बन्धिनं 'दिसीभागं' दिग्भागम् 'अवक्कमइ' अपक्रामति=गच्छति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति, समवहत्य=वैक्रियसमुद्घातं कृत्वा सङ्ख्येयानि योजनानि यावत् सङ्ख्येय-

---

देखोगे-अर्थात् उन वचनों का आदर करोगे-उन्हें स्वीकार करोगे, उन पर ध्यान दोगे, तो मैं अपने पृष्ठ भागसे तुम लोगको उतार दूगा-नीचे पटक दूँगा-और यदि तुम लोग उस रयणादेवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ का आदर नहीं करोगे, उन्हें स्वीकृत नही करोगे, उसकी तरफ नहीं देखोगे -उसके द्वारा कृत उपसर्गको सहन कर लोगे मैं तुम लोगोंको रयणादेवी के हाथ से देखते २ छुडा दूंगा। (तएणं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवंवयासी-जण्णं देवाणुप्पिया! वइस्सइ तस्सणं उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ संखेज्जाइं जोय-

---

અને તેના ઉપર વિચાર કરશો તો હું પોતાની પીઠ ઉપરથી તમને ઉતારી પાડીશ અને નીચે ફેંકી દઈશ. અને જો તમે બંને રયણા દેવીના ઉપસર્ગ રૂપ તે વચનોનો આદર કરશો નહિ, સ્વીકારશો નહિ, તેની તરફ જોશો નહિ, તે જે કંઈ પણ ઉપસર્ગ-ઉત્પાત-કરે તે તમે ખમી લેશો તો હું તમને રયણા દેવીના હાથમાંથી જોતજોતામાં મુક્ત કરાવી દઈશ.

(तएणं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जण्णं देवाणुप्पिया! वइस्सइ तस्सणं उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योजनपरिमितमित्यर्थः दण्ड 'निस्सरेइ' निस्सारयति, निस्सार्य द्वितीयमपिवारं वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति, समवहत्य=द्विर्नीयवारं वैक्रियसमुद्घातं कृत्वा एकं महत्-अश्वरूपं विकुर्वति-अश्वरूपस्य विकुर्वणां करोतीत्यर्थः, विकुर्वित्वा अश्वरूपं कृत्वा तौ माकन्दिकदारकौ एवमवदत्-'हंभो' हे देवानुप्रियौ माकन्दिकदारकौ!

णाइं दंडं निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमु० २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ, २ ते मागंदियदारए एवं वयासी) शैलक यक्ष की इस प्रकार की बात सुनकर उन माकंदी दारकों ने उस शैलक यक्ष से फिर इस प्रकार से कहा-हे देवानुप्रिय! आप जिसके लिये हमें आराध्यत्वेन कहेंगे-हम लोग उसी की सेवा करने में उसी के वचन मानने में और उसी की आज्ञानुसार वर्तमान करने में लग जावेंगे तो फिर आपकी तो बात ही क्या है। आप तो हम से जैसे कहेंगे हम लोग सर्वथा उसी के अनुसार चलेंगे। इस के बाद वह शैलक यक्ष ईशान कोण संबन्धी दिग्भाग की ओर गया। वहां जाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के फिर उस ने अपने आत्मप्रदेशों का संख्यात योजन पर्यंत दण्डाकार रूप में बाहिर निकला-निकाल कर के फिर दुबारा भी वैक्रिय समुद्घात किया और फिर एक बड़े भारी अश्वरूप की उस ने विकुर्वणा की। अश्वरूप बनाकर फिर वह उन माकंदी दारकों से बोला-

संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमु० २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ २ ते मागंदियदारए एवं वयासी)

શૈલક યક્ષની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને માકુંદી દારકોએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે અમને જે કોઇને આરાધવાનો હુકમ કરશો, અમે લોકો તેની સેવા કરવામાં, તેની જ આજ્ઞા સ્વીકારવામાં અને તેની આજ્ઞા પ્રમાણે જ આચરણ કરવામાં તત્પર થઈ જઇશું. ત્યારે તમારી તો વાત જ શી કહેવી? તમે અમને જેમ કહેશો તેમ અમે સંપૂર્ણપણે અનુસરીશું. ત્યારબાદ શૈલક યક્ષ ઈશાન કોણના દિગ્ ભાગ તરફ ગયો. ત્યાં જઈને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાતથી ઉત્તર વૈક્રિયાની વિકુર્વણા કરી અને વિકુર્વ્યા કર્યા બાદ તેણે પોતાના આત્મપ્રદેશોને સંખ્યાત યોજન સુધી દંડાકાર રૂપે બહાર કાઢયા. બહાર કાઢીને તેણે બીજી વાર પણ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો અને ત્યાર પછી તેણે એક બહુ મોટા અશ્વરૂપ (ઘોડાના રૂપ) ની વિકુર્વણા કરી અશ્વનું રૂપ બનાવીને તેણે માંકંદી દારકોને કહ્યું કે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरोहतं खलु युवां मम पृष्ठे । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ हृष्टतुष्टौ शैलकस्य यक्षस्य प्रणामं कुरुतः, कृत्वा शैलकस्य पृष्ठं दूरूढौ पृष्ठप्रदेशे समारूढौ । ततः खलु स शैलकस्तौ माकन्दिकदारकौ दूरूढौ=स्वपृष्ठारूढौ ज्ञात्वा 'सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं' सप्ताष्टतालप्रमाणमात्रान्=सप्ताष्टतालवृक्षपरिमितान् गगनभागान् यावत् 'उड्ढं वेहासं' ऊर्ध्वं विहायसि=उच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति, उत्पइत्ता, उत्पत्य च तया प्रसिद्धया उत्कृष्टया त्वरितया देवगत्या लवणसमुद्रं मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारतो वर्षः=भरतक्षेत्रं, यत्रैव चम्पानगरी तत्रैव प्रधारयति=गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सू० ६ ॥

(हं भो मागंदिया ! आरुहह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि-तएणं से मागंदिय० हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति करित्ता सेलगस्स पिट्ठिं दुरुढा, तएणं से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए-उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) अरे ओ देवानुप्रिय माकंदी दारको ! तुम दोनों मेरी पीठ पर चढ जाओ । इस के बाद वे दोनों माकंदी दारक हर्षित एवं संतुष्ट होते हुए प्रणाम कर उस शैलक यक्ष की पीठ पर आरुढ हो गये । जब शैलक यक्ष ने उन्हें अपनी पीठ पर चढा जाना तो जानकर वह सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण बराबर क्षेत्रमें ऊपर आकाश में उछला । उछलकर फिर वह अपनी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगति से लवणसमुद्र के ठीक बीचों

(हं भो मागंदिया ! आरुहणं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि-तएणं ते मागंदिय० हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति करित्ता सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तएणं से सेलए ते मागंदिय दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी तेणेव पहारेत्थगमणाए)

અરે ઓ દેવાનુપ્રિય માકંદી દારકો ! તમે મારી પીઠ ઉપર બેસી જાઓ. ત્યાર પછી માકંદી દારકો હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થતાં પ્રણામ કરીને શૈલક યક્ષની પીઠ ઉપર બેસી ગયા. શૈલક યક્ષે તેઓને પોતાની પીઠ ઉપર સવાર થઇ ગયેલા જાણીને તે સાત આઠ તાલવૃક્ષ પ્રમાણ જેટલા ક્ષેત્રમાં આકાશમાં ઉછળ્યો અને ઉછળીને તે પોતાની પ્રસિદ્ધ ઉત્કૃષ્ટ ત્વરાયુક્ત દેવગતિથી લવણસમુદ્રની બરોબર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेतिं२ तेसिं मागंदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ गेण्हित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी–हं भो मागंदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणा तं एवमवि गए। जइणं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवल जाव एडेमि, तएणं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो० णिस० अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो

बीच के मार्ग से चलता हुआ जहां जंबूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें जहां भरत क्षेत्र और उसमें भी जहां चंपानगरी थी उस ओर चल दिया ॥ सूत्र ६ ॥

વચ્ચેના માર્ગમાંથી પસાર થતો જ્યાં જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ તેમજ જ્યાં ભરત ક્ષેત્ર અને તેમાં પણ જ્યાં ચંપા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો. ॥સૂત્ર "૬"॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आढंति नो परि० णो अवयक्खंति, आणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयंति, ततेणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय० जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गोहि य उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था, हं भो मागंदियदारगा ! जइणं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति अमणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह, तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स ममं ओहिणा आभोएइ आभोएत्ता एवं वयासी—णिच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा५ निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५ निच्चंपिय णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा५ निच्चंपिय णं मम जिणरक्खिए इट्ठे५, जइणं ममं जिणपालिए रोयमाणीं कंदमाणीं सोयमाणीं तिप्पमाणीं विलवमाणीं णावयक्खइ किण्णं तुमं जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि ?, तएणं—

सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं।
नाऊण वधनिमित्तं उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥
दोसकलिया सलीलयं णाणाविहचुण्णवासमीसं दिव्वं। घाणमण निव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥
णाणामणिकणगरयणघंटियखिखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेणं। दि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा साकलुसा ॥३॥ होल–वसुल–गोल–णाह–दइत–रमण–कंत–सामिय–णिग्घिण णिच्छक्क । थिण्ण णिक्किव अकयण्णुय सिढिल भाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खियं मज्झं हिययरक्खगा! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अबंधवं तुज्झचलणओवायकारियं उज्झिउ महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमं बिहूणा ण समत्थावि जीविउं खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविह सावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झं पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलागारं सस्सिरीयं सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभनयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ताइओ ममं णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणयसरलमहुराइं पुणो२ कलुणाइं वयणाइं जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहिययया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिए चलमाणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं विव्वोयविलसियाणि य विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलियं, तएणं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं२ उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसद्धं, तएणं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहति अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेति तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तबलि चउद्दिसिं करेंति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि-ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्रं त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्येटति, अनुपर्येत्य यत्तत्र तृणं वा यावत् सर्वं पत्र काष्ठादिकमपनीय-एकान्ते ' एडेइ ' एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावतंसकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिकदारकौ प्रासादावतंसके-अपश्यन्ती

' तएणं सा रयणदीवदेवया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ -(तएणं) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने (लवण समुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) लवण समुद्र की २१ बार प्रदक्षिणा की-(जं तत्थं तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहां पर जो तृणकाष्ठ पत्र आदि मिला उस-सबको वहां से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में डाल दिया। डालकर फिर वह जहां अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहां आई-

' तएणं सा रयणदीव देवया ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यारबाद (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीओ(लवण समुद्दं ति सत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) લવણ સમુદ્રની એકવીશ વાર પ્રદક્ષિણા કરી. (जं तत्थं तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ) પ્રદક્ષિણા કરતી વખતે રયણા દેવીને ત્યાં તૃણ, કાષ્ઠ પત્ર વગેરે જે કંઈ પણ જોવામાં આવ્યું તેને ત્યાંથી દૂર એકાંતમાં ફેંકી દીધું. ફેંકીને તે પોતાના ઉત્તમ મહેલમાં આવતી રહી.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यत्रैव पौरस्त्यं वनषण्डं यावत्सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणां करोति सामान्य विशेषतयाऽन्वेषयति, कृत्वा तयोर्मार्कन्दिकदारयोः कुत्रापि 'सुइंवा' श्रुतिं वा= वार्त्तां, 'खुइं वा' क्षुतिं=तत्सम्बन्धिनीं छिक्कम्, अव्यक्तभाषणं तच्चिह्नं वा, 'पउत्तिं वा' प्रवृत्तिं=वृत्तान्तं वा 'अलभमाणी' अलभमाना=अप्राप्नुवन्ती सती यत्रैवोत्तरीये=उत्तरदिग्भवे वनषण्डे एवमेव=पूर्ववदेव पाश्चात्येऽपि यावद् अपश्यन्ती 'ओहिं' अवधिम्-अवधिज्ञानं 'पउंजइ' प्रयुनक्ति=व्यापारयति, प्रयुज्य तौ

(उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया, पासायवडिंसए अपासमाणी, जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वओ समंतामग्गणगवेसणं करेइ करित्ता तेसिं मायंदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ) वहां आकर उसने उसमें माकंदी दारकोंको नहीं देखा-सो इस कारण वह जहां पूर्वदिशा संबन्धी वनषंड था वहां आई वहां आकर उसने उनकी सघतरफ चारों ओर तपास की मार्गणा गवेषणा की-परन्तु वहां कहीं पर भी माकंदी दारकों की उसे न कोई बात सुनने में आई और न उनकी चिह्नरूप छींक या अव्यक्त भाषण या कोई विशेष चिह्न ही देख ने में आया। और न उनकी वहां उसे कोई खबर ही मिली-इस तरह इन सब बातोंको नही प्राप्त करती हुई वह जहां उत्तर दिशा सम्बन्धी वनषंड था वहां इसी तरह जहां पश्चिम दिशा सिम्बन्धी वनषंड था वहां आई वहां कहीं पर भी उसे उनकी कोइ बात वगैरह सुनने में देखने में जब नहीं आई-तब उसने अपने अवधिज्ञान को

(उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता तेसिं मायंदियदारगाणं कत्थेइ सुइं खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ)

ત્યાં આવીને તેણે માકંદી દારકોને જોયા નહિ ત્યારે તે પૂર્વ દિશા તરફ વનખંડમાં પહોંચી. ત્યાં તેણે તેઓની ચોમેર તપાસ કરી, માર્ગણ ગવેષણા કરી. પણ માકંદી દારકોનો પત્તો મળ્યો નહિ રયણાદેવીને માકંદી દારકોની વાતચીત પણ સાંભળવામાં આવી નહિ તેમજ તેઓની હયાતીના પણ કોઇ ચિહ્નો જેમકે છીંક અથવા તો ધીમેથી વાતચીત વગેરે દેખાયા નહિ. આ રીતે તે ત્યાંથી ઉત્તર દિશા તરફના વનખંડમાં ગઇ. ત્યારપછી પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં તે ગઇ ત્યાં પણ રયણા દેવીને તેઓની કોઈ પણ વાતચીત વગેરે સાંભળાઇ નહિ ત્યારે તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનનો ઉપયોગ કર્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माकन्दिकदारकौ शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन्तौ=गच्छन्तौ पश्यति, दृष्ट्वा 'आसुरुत्ता' अशुरुप्ता=शीघ्रकुपिता 'असिखेडगं' असिखेटकम्, असिश्चखड्गः खेटकश्च फलकः 'ढाल' इतिप्रसिद्धः एतयो समाहारे-असिखेटकम् गृह्णाति, गृहीत्वा 'सत्तट्ठतालं' सप्ताष्ट यावत्, सप्ताष्टतालप्रमाणान् गगनभागान् यावद् ऊर्ध्वं विहायसि उत्पतति, उत्पत्य तया उत्कृष्टया देवगत्या यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यैवमवादीत्-'हंभो' हे माकन्दिक दारकौ! 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणाभिलाषिणौ किं खलु युवां

उपयुक्त किया। (पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरत्ता असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्त अट्ठ जाव उप्पयइ उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा० २ एवं वयासी-हंभो मागंदिय० अप्पत्थियपत्थिया किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं.....एवमविगए) उपयुक्त करके उसने उन माकंदीदारकों को शैलक के साथ लवणसमुद्र में होकर ठीक बीचों बीच के मार्ग से जाते हुए देखा। देखकर वहक्रोध से क्रोधित हो गई। उसने उसी समय अपनी तलवार और ढाल उठा ई। उठाकर वह सात आठा ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर की ओर आकाश में उछली। उछलकर फिर वह उत्कृष्टदेव सम्बन्धी गति से चल कर जहां वे माकंदी-दारक थे वहां आई। वहां आकर उसने उनसे इस प्रकार कहा। अरे ओ माकंदि-दारक! मालूम पड़ता है तुमलोग अप्रार्थित प्रार्थक बन रहे हो-जिसे कोई भी नहीं चाहे वह अप्रार्थित-मृत्यु

(पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणो पासइ, पासित्ता, आसुरत्ता आसिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता, सत्तअट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय तेणेव उवा० २ एवं वयासी हं भो मागंदिय०अप्पत्थिय पत्थया किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं एवमविगए)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકંદી દારકોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતાં જોયા. જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઇ. તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તરવાર હાથમાં લીધી. લઈને તે સાત આઠ તાલવૃક્ષ જેટલું આકાશમાં ઊંચે ઉછળી, ઉછળીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસંબંધી ગતિથી જ્યાં માકંદી દારકો હતા ત્યાં પહોંચી ગઈ. ત્યાં પહોંચીને તેણે તેઓને એમ કહ્યું કે અરે ઓ! માકંદી દારકો! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો. એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કોઈ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जानीथः—यत् 'ममं' मां ' विप्पजहाय ' विप्रहाय=परित्यज्य शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन ' वीईवयमाणा ' व्यतिव्रजन्तौ स्वः तद् एवमपि=अनेनप्रकारेण यक्षपृष्ठावलम्बनेन ' गए ' आवां गतौ=गृहं प्राप्तौ, इति, युवां जानीथः तद् भ्रान्तौस्थः। यदि खलु युवां ' ममं ' माम् ' अवयक्खह ' पश्यतं ' तो ' तदा ' भे ' युवयोरस्ति जीवितम्, अथ खलु मां न पश्यतं ' तो ' तदा ' भे ' युवयोः अनेन ' नीलुप्पलगवल जाव ' नीलोत्पलगवल यावत् अतिश्याम सुतीक्ष्ण खड्गेन शिरश्छित्त्वा एकान्ते एडेमि=प्रक्षिपामि=द्वयोरपि शिरश्छेत्स्यामीत्यर्थः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवताया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अभीतौ अत्रस्तौ अनुद्विग्नौ, अक्षुब्धौ असम्भ्रान्तौ सन्तौ रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं

है। उस के भी तुम चाहने वाले हो रहे हो। जो तुमलोग मुझे छोड़कर यक्ष शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर जा रहे हो। तो क्या इस तरह के जाने से तुमलोग हम घर पहुँच गये? यह मान रहे हो सो यह तुम्हारा भ्रम है। (जइणं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थिजीवियं अहणं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलजावएडेमि) यदि तुम मेरी ओर देखो-मुझे चाहो-तो ही तुम्हरा जीवन बच सकता है-यदि तुम मुझे नहीं चाहते हो-मेरी तरफ नहीं देखते हो-तो-देखो इस नीलकमल तथा महिष के शृंगके जैसे वर्णवाली-अतिश्याम सुतीक्ष्ण तलवार से मैं अभी तुम दोनों के मस्तक को छेदकर उसे ऐसे स्थान में डाल दूंगी कि जहां उसका पता भी नहीं लगेगा। (तएणं ते माकंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो० णीस० अभीया

ઇચ્છતું નથી તેવી મૃત્યુ 'અપ્રાર્થિત' થયું અને તે માકંદી દારકો તેને ઇચ્છનાર થયા. કેમકે તમે મને છોડીને યક્ષ શૈલકની સાથે લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને જઇ રહ્યા છો. તમે અત્યારે એમ સમજી રહ્યા હશો કે અમે હેમખેમ (સકુશળ) પોતાને ઘેર પહોંચી ગયા છીએ તો તમે ભ્રમમાં છો.

(जइणं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे आत्थि जीवियं अह णं णावयक्खह तो भे इमेणं नोलुप्पलगवल जाव एडेमि)

જો તમે મને જ ચાહો-મને જ જુઓ-તો તમારા જીવનની સત્તામતી છે. જો તમે મને ઇચ્છતા નથી, મારી તરફ જોતા નથી તો જુઓ આ નિલકમળ તેમજ લેંઢાના શિંગડા જેવા રંગની ખૂબ જ શ્યામ રંગવાળી તેજ તરવારથી હું તમારા બંનેનાં માથાં કાપીને એવી જગ્યાએ ફેંકી દઇશ કે તેની કોઇને ખબર પણ પડી શકે નહિ.

(तएणं ते माकंदिय दारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो० णिस०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो आद्रियेते नो परिजानीतः 'नो अवयक्खंति' नो पश्यतः, 'अणाढायमाणा' अनाद्रियमानौ=तमर्थं प्रति-आदरं न कुर्वाणौ 'अपरियमाणा' अपरिजानानौ तमर्थमस्वीकुर्वाणौ 'अणवयक्खमाणा' तत्संमुखमप्यपश्यन्तौ शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयंति' व्यतिव्रजतः=सुखपूर्वकं गच्छतः। ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ यदा नो शक्नोति बहुभिः 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमैश्च=प्रतिकूलैरुपसर्गैश्चालयितुं वा-क्षोभयितुं वा 'विपरिणामित्तए वा' विपरिणामयितुं=मनोवृत्तिं परावर्त्तयितुं 'लोभित्तए वा' लोभयितुं=लुब्धौ कर्तुं वा

अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति, णो परि०णो अवयक्खंति अणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयंति) इस प्रकार वे माकंदी-दारक रयणा देवी के मुख से इस बात को सुन कर और उसे हृदय में अवधृत कर भयभीत नही हुए त्रस्त नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए क्षुभित नही हुए, संभ्रान्त नहीं हुए घबड़ाये नहीं-और न उन्हों ने रयणा देवी के इस अर्थ को आदर की दृष्टि से देखा न उसे स्वीकार किया, और न उस तरफ लक्ष्य ही दिया। इस तरह उस के वचनों का अनादर करते हुए उन्हें स्वीकार नहीं करते हुए तथा उनकी ओर लक्ष्य नहीं देते हुए वे दोनों उस शैलक यक्ष के साथ लवणसमुद्र के बीच में चलते ही गये।

(तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय० जाहे णो संचाएंति, बहूहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विप·

अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीव देवयाए एयमट्ठं नो आढंति णो परि० णो अवयक्खंति अणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलए जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयंति)

માકંદી દારકોએ રયણા દેવીના મુખેથી આ પ્રમાણે સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ભય પામ્યા નહિ. ત્રસ્ત થયા નહિ, ઉદ્વિગ્ન થયા નહિ ક્ષુભિત થયા નહીં સંભ્રાત થયા નહિ, ગભરાયા નહિ અને તેઓએ રયણાદેવીના અર્થને ન તો સન્માનપૂર્વક જોયો અને ન તેનો સ્વીકાર કર્યો. તે તરફ તેઓએ સહજ પણ લક્ષ્ય આપ્યું નહિ. લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને તેઓ બંન શૈલક યક્ષની સાથે પોતાનો પંથ કાપતા જ ગયા.

(तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय० जाहे णो संचाएंति, बहूहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तएवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदा मधुरैः ' सिंगारेहिय ' शृङ्गारैः कामरागोत्पादकैः ' कलुणेहिय ' करुणैः करुणरसजनकैश्चोपसर्गैः ' उपसग्गेउं ' उपसर्गयितुम् = उत्पातयितुं प्रवृत्ता वाऽभवत् – हंभो देवानुप्रियौ माकन्दिकदारकौ ! यदि खलु युवाभ्यां मया सार्द्धं ' हसियाणिय ' हसितानी च ' रमियाणिय ' रतानि=रमणानि अक्षादिभिद्यूतादिखेलनानि, 'ललियाणिय' ललितानि च-ईप्सितानि लीलया भोजनादिरूपाणि ' कीलियाणिय ' क्रीडितानि=जलावगाहनादिरूपक्रीडनानि 'हिंडियाणिय'

रिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे मधुरेहिं सिंगारेहिं, कलुणेहि य उवसग्गेहिं य उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था) इस तरह जब वह रयणा देवी उन माकंदी दारकों को प्रतिकूल अनेक उपसर्गों द्वारा चलायमान करने के लिये क्षुभित करने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब उसने काम रागोत्पादक, तथा करुणारस जनक उत्पातों द्वारा उपद्रव करना प्रारंभ कर दिया। (हं भो मागंदियदारगा ! जइणं तुब्भे हिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य, हिंडियाणि य, मोहयाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयह तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मनं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एवं वयासी) वह कहने लगी अरे ओ देवानुप्रिय ! माकंदी दारकों। यदि तुम दोनों ने मेरे साथ हँसी मजाक किया है, काम सुखों को भोगा है, अथवा अक्षादिकों द्वारा द्यूतादि क्रीडायेंकी है, साथ २ बैठकर इच्छानुसार विविध प्रकार की भोजनादि करने रूप

ताहे मधुरेहिं सिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहिं य उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था)

રયણા દેવી માકંદી દારકોને આ જાતના ઘણા પ્રતિકૂળ ઉપસર્ગોથી વિચલિત કરવામાં કે ક્ષુભિત કરવામાં સમર્થ થઈ શકી નહી ત્યારે તેણે કામરાગોત્પાદક તેમજ કરુણારસ જનક ઉત્પાતો વડે ઉપદ્રવો શરૂ કર્યા.

(हं भो मागंदियदारगा ! जइणं तुब्भे हिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणिय रमियाणिय ललियाणी य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहयाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयह तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स ममं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता एवं वयासी)

તે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! માકંદી દારકો ! જો તમે બંને મારી સાથે હસી મજાક કરી છે, કામ સુખો ભોગવ્યા છે, અક્ષાદિકો વડે જુગાર વગેરે ક્રીડાઓ કરી છે, સાથે સાથે બેસીને મનગમતી અનેક જાતના આહારો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिण्डितानिच=उद्यानादिषु भ्रमणानि 'मोहियाणिय' मोहितानि च=मोहनानि कामरागजनकहावभावादीनि कृतानि 'ताहे' तदा-तादृशे समये एतादृश सुखानुभवावस्थायां खलु युवां सर्वाणि=मया सार्द्धं हसितादीनि 'अणेगमाणा' अनागयन्तौ=अनादियमाणौ 'ममं' मां निराधारां 'विप्पजहाय' विप्रहाय=परित्यज्य शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन व्यतिव्रजथः=गच्छथः । ततः खलु पुनः सा रत्नद्वीपदेवता जिनरक्षितस्य लघुभ्रातुः 'मणं' मनः=अन्तः करणम् 'ओहिणा' अवधिना अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति आभोगयित्वा=दृष्ट्वा-एवमवदत्-नित्यमपि च=पूर्वमपि सदैव च अहं जिनपालितस्य-तवज्येष्ठभ्रातुः अनिष्टा, अक्रान्ता, अप्रिया अमनोज्ञा, अमनोमा=मनः प्रतिकूलाऽभवम्, नित्यं च मम जिनपालितः-अनिष्टः, अक्रान्तः, अप्रियः, अमनोज्ञः, अमनोऽमः=मनः-खेदजनक आसीत् । नित्यमपि च खलु अहं जिनरक्षितस्य तव इष्टा यावद् मनोऽमा, नित्यमपि च खलु मम जिनरक्षितस्त्वम् इष्टो यावद् मनोऽमः, यदि खलु यथा मां जिनपालितो रुदतीं, क्रन्दन्तीं=शोकं कुर्वाणां, 'तिप्पमाणीं' तेपमानाम्=

लीलाएँ की हैं, जलावगाहनादि रूप नाना प्रकार की चेष्टाएँ की हैं, उद्यान आदिकों में साथ २ भ्रमण किया है, तथा काम राग जनक हाव भाव आदि क्रियाएँ की हैं तो फिर क्यों अब उन सब हसितादि चेष्टाओं की उपेक्षा करके तुम दोनों मुझे निराधार छोड़कर शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर चले जा रहे हो । इस प्रकार कह कर उस रयणा देवी ने जिन रक्षित के अन्तः करण को अपने अवधि ज्ञान के द्वारा देखा-देख कर वह फिर इस तरह कहने लगी-(णिच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५, णिच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे-णिच्चंपि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा, णिच्चंपि णं अह जिणरक्खिए इट्ठे ५, जइणं ममं जिणपालिए रोयमाणी, कंदमाणी, सोयमाणी तिप्पमाणी विलवमाणी णोवयक्खइ, किण्णं तुमं जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव

વગેરે રૂપ લીલાઓ કરી છે, જલાવગાહન વગેરેની ઘણી જાતની ચેષ્ટાઓ કરી છે, સાથે સાથે ઉદ્યાન વગેરેમાં ફર્યા છો તેમજ કામરાગજનક હાવભાવ વગેરેની ક્રિયાઓ કરી છે ત્યારે હવે શું કામ તે બધી હસિતાદિ ચેષ્ટાઓની ઉપેક્ષા કરીને મને એકલી નિરાધાર બનાવીને શૈલક યક્ષની સાથે લવણસમુદ્રની વચ્ચે થઈને જઈ રહ્યા છો. આ પ્રમાણે કહીને તે રયણા દેવીએ જીનરક્ષિતના મનને પોતાના અવધિજ્ઞાન વડે જોયું અને જોઈને તે ફરી કહેવા લાગી કે-

(णिच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५ णिच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे णिच्चंपि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा णिच्चंपि य णं मम जिणरक्खिए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरहजनितार्त्तध्यानं कुर्वाणां, विलपन्तीं=विलापं कुर्वाणां 'णावयक्खइ' न पश्यति तथा किं खलु त्वमपि हे जिनरक्षित ! मां रुदतीं यावद् विलपन्तीं 'णावयक्खसि' न पश्यसि ? एवं सा रत्नद्वीपदेवता सोपालम्भं वदति स्मेति ।

ततः खलु तदनन्तरम्-अथ प्रचलितमानसं जिनरक्षितं विज्ञाय सा यद्वदति तद् गाथाष्टकेनाह—

णावयक्खसि) यह तो निश्चित है कि मैं पहिले से जिनपालित के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम-मनः प्रतिकूलवह रही हूं और जिनपालित भी मेरे लिये सदा अनिष्ट' अकान्त आदि रूप बना रहा है, मैं तो जिन रक्षित के लिये ही सदा इष्ट आदि रूप रही हूँ और जिनरक्षित मेरे लिये इष्ट आदि रूप सदा रहा है तो हे जिन रक्षित ! यदि मुझ रोती हुई आक्रन्दन करती हुई, शोक करती हुई विरह जनित आर्तध्यान करती हुई और विलाप करती हुई की और जिन पालित नहीं देखता है तो क्या तुम भी मुझ रोती हुई यावत् विलाप करती हुई की ओर नहीं देखते हो (तएणं सा पवररयण-दीवस्स देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स मणं नाऊणं वधनिमित्तं उवरिं मागंदिय दारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥) इस तरह उस रयणादेवी ने ताने मारते हुए जब कहा तब जिनरक्षित का मन चलायमान हो गया। इस स्थिति में जो कुछ उस ने कहा वह सूत्रकार आठ गाथाओं

इट्ठे ५, जइणं मम जिणपालिए रोयमाणी, कंदमाणीं, सोयमाणीं तिप्पमाणीं, विलवमाणीं,णावयक्खइ,किण्णं तुमं जिणरक्खिया ! मम रोयमाणिं जाव णावयक्खसि)

એ વાત તો ચોક્કસ પણે કહી શકાય કે હું શરૂઆતથી જ જીનપાલિતને માટે હંમેશા અનિષ્ટ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ-મનને પ્રતિ-કૂળ જ બની રહું છું અને જીનપાલિત પણ મારા માટે હમેશાં અનિષ્ટ, અકાંત વગેરે જ રહ્યા છે. હું તો જીનરક્ષિતને માટે હમેશાં ઇષ્ટ વગેરે રૂપમાં રહી છું અને જીનરક્ષિત મારે માટે ઇષ્ટ વગેરે રૂપમાં સદા રહી છે ત્યારે હે જીનરક્ષિત ! મને જોઇ રડતી, આક્રંદ કરતી, શોક કરતી, વિરહમાં આર્ત્તધ્યાન કરતી અને આ રીતે વિલાપ કરતી કે જીનપાલિત મારી સામું જોતા નથી તો શું તમે પણ મને રડતી યાવત્ વિલાપ કરતી જોતા નથી.

(तएणं सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा ३ जिणरक्खियमणं नाऊण वधनिमित्तं उवरिं मागंदिय दारगाणं दोण्हंपि " १ " ॥)

રયણા દેવીએ એ પ્રમાણે કટાક્ષ યુક્ત વચનો કહ્યાં ત્યારે જીનરક્ષિતનું મન ડગમગવા લાગ્યું. આવી પરિસ્થિતિમાં જે કંઈ તેણે કહ્યું તે સૂત્રકાર આઠ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा प्रवर रत्नद्वीपस्य देवताऽवधिना तु जिनरक्षितस्य मनः । ज्ञात्वा वधनिमित्तम्=मारणार्थम् उपरि माकन्दिकदारकयो र्द्वयोरपि ॥ १ ॥ ' दोसकलिया ' द्वेषकलिता=द्वेषयुक्ता ' सलीलयं ' सलीलं=सक्रीडं ' नानाविहचुण्णवासमीसं ' नानाविधचूर्णवासमिश्रं नानाविधाः चूर्णवासाः=चूर्णगन्धाः-पिष्टगन्धद्रव्याणि, तैर्मिश्रां=युक्तां दिव्याम् । घ्राणमनोनिर्वृतिकरां = घ्राणमनसोस्तृप्तिकरां तादृशीं सर्वर्तुकसुरभिकुसुमवृष्टिं=सर्वऋतुसमुत्पन्नसुगन्धितपुष्पवृष्टिं ' पमुंचमाणी ' प्रमुञ्चन्ती ॥ २ ॥ नानामणिकनकरत्नघण्टिकाकिङ्किणीनूपुरमेखलाभूषणरवेण, तत्र-नानाविधमणिकनकरत्नानां घण्टिकाः, किङ्किण्यः=क्षुद्रघण्टिका । नूपुरं-चरणभूषणम् , मेखलाभूषणं=कटिभूषणम् , तेषां रवेण=शब्देन मञ्जुलध्वनिना दिशो विदिशश्च पूरयन्ती=सशब्दं कुर्वन्ती वचनमिदं=वक्ष्यमाणं ब्रवीति सा सकलुषा=

द्वारा कहते हैं-वह प्रवर रत्न द्वीप की देवता अवधिज्ञान से जिन रक्षित के मन को जान कर मारने के लिये उन दोनों माकंदी दारकों के ऊपर (दोस कलिया) विद्वेषवती बन गई (सलीलयं णाणाविहचुण्णवास मीसं दिव्वं ! घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिंपमुंचमाणी २) फिर उस ने उन के ऊपर बड़ी भारी लीला के साथ नाना विधचुर्णवास मिश्रित एवं घ्राण और मन को तृप्ति कारक ऐसी दिव्य सर्वऋतु संबन्धी सुरभित कुसुमों की वृष्टि की । (णाणा मणिकणगरयण घंटियखिखिणिणेऊर मेहलभूसणरवेणं ' दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा साकलुसाइं) इस के बाद नाना प्रकार के मणियोंकी, सुवर्णकी एवं रत्नोंकी घंटिकाओंके क्षुद्र घंटिकाओंके नूपुरों के कटिभूषण के शब्द से-मंजुल आवाज से दिशाओं एवं विदिशाओं

ગાથાઓ વડે કહે છે-તે પ્રવર રત્નદ્વીપની દેવતા અવધિજ્ઞાનથી જીનરક્ષિતના મનની વાત સમજીને મારી નાખવાના વિચારથી તેઓ બંને માકંદી દારકો ઉપર (दोसकलिया) દ્વેષ ધરાવતી થઈ ગઈ. (सलीलयं णाणाविहचुण्णवासदिव्वं ! घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउय सुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी २) ત્યાર પછી તેણે તેઓના ઉપર ભારે લીલાઓની સાથે ઘણી જાતના સુગંધિત દ્રવ્યોમિશ્રને નાક તેમજ મનને તૃપ્ત કરે તેવા દ્રવ્યો અને બધી ઋતુઓના સુગંધિત પુષ્પોની વર્ષા કરી.

(णाणामणिकणगरयणघंटियखिखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेणं । दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा साकलुसाइं)

ત્યાર બાદ ઘણી જાતના મણિઓની, સોનાની અને રત્નોની ઘંટડીઓના, ઘુઘરીઓના, ઝાંઝરોના, કંદોરાના શબ્દથી મંજુલ અવાજથી દિશાઓ તેમજ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-होल !=हे मुग्ध !, वसुल=हे सुकुमार ! गोल=हे कठोर ! हे नाथ ! दयित !=हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निछक !=हे अवसरज्ञानशून्य ! ' थिण्ण ! ' हे स्त्यान= हे निर्दयहृदय ! ' णिक्किव ' निष्कृप !=हे निष्करुण ! ' अकयण्णुय ' अकृतज्ञ ! हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः ' सिढिलभाव ' शिथिलभाव !=हे मन्द-भाव ! ' निल्लज्ज ' हे निर्लज्ज ! ' लुक्ख ' रूक्ष !=हे प्रेमशून्य ! ' अकलुण ' अकरुण !=हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम ' हिययरक्खगा ' हृदयरक्षक !=हे प्राण-रक्षक ! ॥४॥ ' न हु जुज्जसि ' नैव युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एकि-काम्-अनाथां=निराधाराम् , अबान्धवाम्=अबहायां तव ' चलण ओवायकारियं ' चरणावपातकारिकां=चरणसेविकां=माम् 'उज्झिउं=त्यक्तुम् , कथम्भूताम् ? 'अहण्णं'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा-(होलवसुल-गोलणाह, दइत, पिय, रमण, कंत सामिय, णिग्घण णिच्छक्क, थिण्ण णिक्किव अकयण्णुयसिढिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार । गोल-हे कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निछक्क-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे शिथिलभाव ! हे निर्लज्ज ! हे रूक्ष-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन-रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः-(णहुज्जसि एक्किय अणाहं अबंधवं तुज्झ चलण ओवाय कारियं उज्झिउ अहण्णं गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउं खणं पि ५) तुम्हें मुझ चरण सेविका

વિદિશાઓને મુખરિત કરતી તે પાપીણીએ આ પ્રમાણે કહ્યું—

(होलवसुलगोलणाहदइतपिय, रयत, कंत,सामिय,णिग्घणणिच्छक्क ! थिण्णणिक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निलज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा४)

હોલ-હે મુગ્ધ !, વસુલ-હે સુકુમાર !, ગોલ-હે કઠોર !, હે નાથ !, દયિત-હે દયાલો ! હે પ્રિય ! હે રમણ ! હે કાંત ! હે સ્વામીન્ ! હે નિર્ઘૃણ ! સ્નેહરહિત ! હે નિછક્ક-અવસર જ્ઞાન શૂન્ય ! થિણ્ણ-હે નિર્દય હૃદય ! હે નિષ્કૃપ ! હે અકૃતજ્ઞ, કરેલા ઉપકારોને નહિ માનનારા, કૃતઘ્ન-હે શિથિલ-ભાવ ! હે નિર્લજ્જ ! હે રુક્ષ ! હે પ્રેમશૂન્ય, હે અકરુણ-નિર્દય ! જીનરક્ષિત ! મારા પ્રાણ રક્ષક તમે જ છો. એટલા માટે—

(ण हुज्जसि एक्किय अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउ अहण्णं गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउं खणंपिय)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधन्याम्=अपूर्णमनोरथाम् । ' गुणसंकर ' गुणसङ्कर=हे गुणसागर ! अहं ' तुमे विहणा ' त्वयाविहीना=त्वद्वियुक्ता न समर्थाऽपि जीवितुं क्षणमपि-त्वां विना क्षणमपि न जीविष्यामीत्यर्थः ॥ ५ ॥ पश्य, अधुनैव अहम् ' इमस्स उ ' अस्य तु ' अणेगझसमगरविविहसावयसयाकुलगिहस्स ' अनेकझषमकरविविधश्वापदशता कुलगृहस्य अनेके झषाः=मत्स्याः, मकराः=ग्राहाः, विविधश्वापदाः=नानाविध-हिंसकजलचरजन्तवः, तेषां शतानि, तैः आकुलं=व्याप्तं गृहम्=अन्तर्भागो यस्य स तस्य रत्नाकरस्य=लवणसमुद्रस्य मध्ये आत्मानं ' वहेमि ' हन्मि=नाशयामि तव पुरतः, अतः हे जिनरक्षित ! त्वम् एहि=आगच्छ ' णियत्ताहि ' निवर्त्तस्व पुरतो-गमनात्, यद्यसि त्वं केनापिकारणेन कुपितः, तर्हि ' खमाहि ' क्षमस्व ' एका-वराहं ' एकापराधम्-अज्ञानवशात्सञ्जातमेकमपराधं मे=मम ॥ ६ ॥ ' तुज्झय ' तव

को असहाय निराधार अकेली छोड़ना योग्य नहीं है। मेरे अभीतक कोई भी मनोरथ पूर्ण नहीं हुए हैं। हे गुणसागर ! मैं तुम्हारे विना १ एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती हूँ। (इमस्स २ अणेगझसमगर विविह सावय सयाउलघरस्स। रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओएहिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहंमे ६) देखो मैं इसी समय अनेक प्रकार की-सैकड़ों मछलियों से मगरों से विविध हिंसक जलचर जन्तुओं से व्याप्त हुए अन्तर्भाग वाले इस समुद्रके बीच में तुम्हारे देखते २ अपने आपको डाल देती हूँ-अतः हे जिनरक्षितत्तुम आओ-आगे मत बढो, तुम यदि किसी कारण वश मेरे ऊपर कुपित हो गये हो-तो मेरे अज्ञानवश हुए उस अपराधको क्षमा करो। (तुज्झ

મારા જેવી ચરણોની દાસીને અસહાય, નિરાધાર અને એકલી મૂકીને જતા રહેવું તમારા જેવાને માટે યોગ્ય કહી શકાય નહિ હજી મારી એક પણ ઇચ્છા પૂરી થઈ નથી. હે ગુણસાગર ! તમારા વગર એક ક્ષણ પણ હું જીવી શકું તેમ નથી.

(इमस्स उ अणेगझसमगरविविहसावयसयाउलघरस्स ! रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहंमे६)

જુઓ, હું અત્યારે જ ઘણી જાતની સેંકડો માછલીઓ, મગરો, ઘણી જાતના હિંસક જળચર પ્રાણીઓથી યુક્ત આ સમુદ્રની વચ્ચે તમારી સામે જ ડૂબી મરું છું. માટે હે જીનરક્ષિત તમે આવો, આગળ જશો નહિ. ગમે તે કારણથી જો તમે મારા ઉપર નારાજ થઈ ગયા હો તો મારા અજ્ઞાનથી થયેલી ભૂલોને તમે માફ કરો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च 'विगयघणविमलससिमंडलागारं' विगतघनविमलशशिमण्डलाकारम्-विगतघनं=मेघरहितम् अतएव विमलं=निर्मलं शशिमण्डलं=चन्द्रमण्डलं, तस्येवाकारः=आकृतिर्यस्य तत्तथोक्तम्, ससिरीयं' सश्रीकं=शोभासम्पन्नम्, 'सारयनवकमलकुमुय कुवलयविमलदलनिगरसरिसनिभनयणं' शारदनवकमलकुमुदकुवलय विमलदल निकरसदृशनिभनयनम् तत्र शारदं=शरत्कालसमुत्पन्नं यन्नवं नूतनं कमलं=सूर्यविकाशिपद्मं कुवलयं=चन्द्रविकाशिपद्मं, तेषां विमलदलनिकरः = निर्मलदलसमूहः, तत्सदृशे=तत्तुल्ये निभे-नितरां दीप्तियुक्ते च नयने=नेत्रे यस्मिन् तत् तथोक्तम्, एतादृशशोभासम्पन्नं 'वयणं' वदनं=मुखम्, 'पिवासागयाए' पिपासागतायाः=दर्शनौत्सुक्येन समागतायाः श्रद्धा=वाञ्छा मे=मम 'पेच्छिउं' प्रेक्षितुं=विलोकितुं वर्त्तते 'जे' यस्मात् 'अवलोहि' अवलोकय=पश्य 'ता' तावत् 'इओ मम' इतो मम=मदाभिमुखं 'णाह' हे नाथ! 'जा' यावत्=यावत्कालं ते=तव 'पेच्छामि' प्रेक्षे=पश्यामि 'वयणकमलं' वदनकमलं=मुखकमलम्, ॥ ७ ॥

य विगय-घण-विमल-ससिमंडलागारं ससिरीयं सारय नवकमल कुमुय-कुवलय-विमलदल-निकरसरिस-निभनयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ताइओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयण कमलं ७) दर्शन की उत्सुकता से आई हुई मेरीइच्छा तुम्हारे मुख को देखने के लिये हो रही है। तुम्हारा वह मुख मेघ रहित निर्मल चन्द्रमंडल के समान आकृति वाला एवं विशिष्ट शोभा संपन्न है। इसके दोनों नेत्र शरदकालीन नवीन कमल, कुमुद, एवं कुवलय के दलनिकर के समान अत्यन्त दीप्ति शाली हैं। सूर्यविकाशीपद्म का नाम कमल, चन्द्र विकाशी पद्म का नाम कुवलय है। इसलिये हे नाथ! इस तरफ तुम मेरी ओर देखो जबतक तुम मेरी ओर देखते रहोगे-तबतक मैं तुम्हारे

(तुज्झ य विगय घणविमलससिमंडलागारं ससिरीयं सारय नव कमल कुमुय-कुवलय-विमलदल-निकर-सरिस-निभनयणं वयणं पिवासा गयाए सद्धामे पेच्छिउं जे अवलोएहि ताइओ ममं णाह ते पेच्छामि वयण कमलं ७)

દર્શનના ઉમળકાથી પ્રેરાઈને આવેલી મારી ઈચ્છા તમારા મુખને જોવાની થઈ રહી છે તમારું મુખ મેઘ રહિત નિર્મળ ચંદ્રમંડળની જેમ આકારવાળું અને સવિશેષ સૌંદર્ય યુક્ત છે. બંને નેત્રો શરદ-ઋતુના નવીન કમળ, કુમુદ અને કુવલયના દલનિકરની જેમ ઘણા દ્યુતિમાન છે. સૂર્ય વિકાશી પદ્મનું નામ કમળ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મનું નામ કુવલય છે. એટલા માટે હે નાથ! તમે મારી તરફ જુઓ. જ્યાં સુધી તમે મારી તરફ જોતા રહેશો ત્યાં સુધી હું પણ તમારું મુખકમળ જોઈ લઈશ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण ' सप्पणयसरलमहुराइं ' सप्रणयसरलमधुराणि-स्नेहसहित सुखार्थबोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः ' करुणाइं ' करुणानि=करुणरसजनकानि ' वयणाइं ' वचनानि ' जंपमाणी ' जल्पन्ती सा पापा ' मागओ ' मार्गतः मार्गे इत्यर्थः ' समण्णेइ ' समन्वेति=पश्चाद्गच्छति ' पावहियया ' पापहृदया=कुटिलान्तःकरणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

ततः खलु स जिनरक्षितश्चलमनास्तेनैव भूषणरवेण कर्णसुखदेन मनोहरेण, तथा तैश्चैव सप्रणयसरसमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्टः सन् रत्नद्वीपस्या देवतायास्तस्याः सुन्दरस्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनश्रियं च दिव्याम्, तथा ' सरभसउवगूहियाइं ' सरभसोपगूहितानि=ससम्भ्रमकृताश्लेषाणि, यानि च ' विब्बोयविलसियाणिय ' विब्बोक विलसितानि=विब्बोकाः=

मुखकमल को देखलूंगी (एवं सप्पणयसरलमहुराइं पुणो २ कलुणाइं वयणाइं जंपमाणी सा पावमग्गओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार -कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता बार २ स्नेह सहित, सुखार्थ बोधक, मधुर एवं करुणारसजनक वचनों को बोलती हुई मार्ग में उसके पीछे २ चलने लगी। (तएणं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजाय विगराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथणजहणवयण कर चरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं विब्बोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवललिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलियं) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एवं सप्पणयसरलमहुराइं पुणो २ कलुणाइं वयणाइं जंपमाणी सा पावमग्गओ समण्णेइ पावहियया ८)

આ રીતે કુટિલ હૃદયવાળી તે રત્નદ્વીપ દેવતા વારંવાર સ્નેહસહિત, સુખાર્થ બોધક મધુર અને કરૂણા-રસજનક વચનો કહેતી માર્ગમાં તેને અનુસરતી ચાલવા લાગી.

(तएणं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहण वयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूव जाव्व णसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं विब्बोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्ससिय मलिय उवललिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खत्ति मग्गतो सविलियं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्रीचेष्टा विशेषाः, विलसितानि=नेत्रविकारादि लक्षणानि च ' विहसिय सकडक्ख-दिट्ठिनिस्ससियमलिय उवललियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य ' विहसित सकटाक्षदृष्टिनिः श्वसितमलित उपललितस्थितगमनप्रणयखिज्जित प्रसादितानि च-विहसितानि=हास्यानि, सकटाक्षदृष्टयः=सविकारविलोकनानि, निः श्वसितं=निः श्वासमोचनम्, मलितं=पुरुषाभिलषितमर्दनम्, उपललितानि=क्रीडाविशेष-रूपाणि, स्थितम्=भवननिवसनादिकम्, गमनं=हंसगत्यासञ्चरणम्, प्रणयः=स्नेह, वचनम्, खिसनं=कामकलहः, प्रसादितं=प्रसन्नतारूपम्, एतानि सर्वाणि च ' सर-माणे ' स्मरन्=पुनः पुनः स्मृतिपथमानयन् ' रायमोहियमई ' रागमोहितमतिः= कामरागमूर्च्छितमतिः, ' अवसे ' अवशः=विवशः कामपराधीनः ' कम्मवसगए ' कर्मवशगतः=कर्मगतिपरवशः सन् असौ जिनरक्षितस्तां ' अवयक्खइ ' पश्यति ' मग्गओ ' मार्गतः पृष्टतः ' सविलियं ' सव्रीडं=सलज्जं दृष्टवानित्यर्थः ।

सुख देने वाले और मन को हरण करने वाले उन्हीं भूषणो के शब्दों से तथा उन्हीं सप्रणय सरल मधुर भाषणों से जिसका रागभाव द्विगुणित हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चंचल मनवाला बन गया। सो उस रयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनों की, वदन की दोनों करों की दोनों चरणों की, लावण्य की, रूप एवं यौवन की दिव्य श्री का तथा उसके ससंभ्रमकृत आलिङ्गनों का, विव्वोक तथा विलासों का, हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित-मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितों का भवनादिकों में निवास करने आदि का उसकी हंसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनों का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह काम राग से मोहित मतिवाला बन गया। इस तरह काम से पराधीन

ત્યાર પછી કાનોને ગમતા અને મનને આકર્ષનારા ઘરેણાંઓના શબ્દોથી તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગ-ભાવ અમણો વધી ગયો છે એવો તે જીનરક્ષિત ચંચળ મનવાળો થઈ ગયો. તે રયણા દેવીનાં બંને સુંદર સ્તનોનું, જઘનોનું, વદનનું, બંને હાથોનું, બંને ચરણોનું, લાવણ્યનું રૂપ તેમજ યૌવનનું, દિવ્યશ્રીનું, તેના સસંભ્રમકૃત આલિંગનોનું, વિબ્લોકનું, વિલાસોનું, હાસ્યનું, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનું, શ્વાસ મોચનનું, પુરૂષાભિલષિત મર્દનનું, ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલલિતોનું ભવનો વગેરેમાં રહેવા કરવાનું, તેની હંસ જેવી ગતિનું, તેના પ્રણયપૂર્ણ વચનોનું કામકલહનું, તેની પ્રસન્નતાનું વારંવાર સ્મરણ કરતો કામરાગથી મોહિત મતીવાળો થઈ ગયો. આ રીતે કામવશ થયેલો

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु जिनरक्षितं समुत्पन्नकरुणभावं तां प्रति संजातदयार्द्रहृदयम्, अत एव 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं' मृत्युगलत्थल्लानोदितमतिः, मृत्युना=मृत्युराक्षसेन 'गलत्थल्ला'=कण्ठग्रहणरूपा, तया नोदिता=स्वदेशगमनवैमुख्यतया मृत्युमुखप्रवेशसंमुखीकृता मतिर्यस्य स तथा तम् 'अवयक्खंतं' तां रत्नद्वीपदेवतां पश्यन्तं तथैव=तथारूपेणैव यक्षश्च शैलकः 'जाणिऊण' ज्ञात्वा 'सणियं२' शनैः शनैः 'उव्विहइ' उद्विजहाति=उच्छालयति-'नियगपिट्ठाहि' निजकपृष्ठाद् 'विगयसद्धं' विगतश्रद्धं विगता=नष्टा श्रद्धा विश्वासो यक्षवचने यस्य स तम्, स यक्षस्तं स्वपृष्टात्पातयामासेत्यर्थः।

ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता 'निस्संसा' नृशंसा=निर्दया 'कलुणं' करुणं=दयनीयं जिनरक्षितं 'सकलुसा' सकलुषा=कलुषितहृदया शैलकपृष्ठात्

थना वह विचारा जिनरक्षित अशुभकर्म के चक्कर में पड़कर मार्ग में चलते २ उसकी ओर बार २ लज्जा सहित देखने लग गया। (तएणं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं २ उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगय सद्धं) उत्पन्न हुआ है रयणा देवी के प्रति दया भाव जिसको ऐसे उस जिनरक्षित को कि जिस की मति कंठ पकड कर मृत्यु रूपी राक्षस ने अपने मुख में प्रवेश के सन्मुख कर ली है रयणा देवी की ओर बार २ निहारता हुआ देखकर-जानकर धीरे २ अपनी पीठ पर से अपने वचनों में श्रद्धा विहीन जान उछाल दिया। पटक दिया (तएणं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि

બિચારો જીનરક્ષિત અશુભ કર્મની લપેટમાં આવીને માર્ગમાં ચલતો ચાલતો તેની સામે વારંવાર લજ્જાયુક્ત થઈને જોવા લાગ્યો.

(तएणं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊ ण सणियं२ उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगयसद्धं)

રયણા દેવીના માટે જેના મનમાં દયા ભાવ જન્મ્યો છે એવા તે જીનરક્ષિતને-કે જેની મતિનું ગળું દબાવીને મૃત્યુરૂપી રાક્ષસે ગળી જવા માટે પોતાના મોંની સામે કરી લીધી છે-રયણાદેવીની તરફ વારંવાર જોતા જાણીને, તેના (યક્ષના) વચનોમાં અશ્રદ્ધાળુ થઈ ગયેલો સમજીને ધીમે ધીમે જીનરક્ષિતને યક્ષે પોતાની પીઠ ઉપરથી ફેંકી દીધો. પટકી દીધો.

(तएणं सा रयणादीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतं दास! मओसिति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ओवयंतं' अवपतन्तम्=समुद्रे पतन्तम्, 'दास' हे दास! हे नीच! 'मओसि' मृतोऽसि त्वम्, इति जल्पन्ती सती 'अप्पत्तं सागरसलिलं' अप्राप्तं सागरसलिलं समुद्रनीरमप्राप्तमेव मध्य एव 'गेण्हिय बाहाहिं' गृहीत्वा बाहुभ्याम्। आरसन्तं= सकरुणं रुदन्तं=चीत्कुर्वन्तमित्यर्थः ऊर्ध्वम् 'उव्विहइ' उद्विजहाति=उच्छालयति अम्बरतले=गगनतले, 'ओवयमाणं च' अवपतन्तं च पश्चादधः पतन्तं च 'मंडलग्गेण' मण्डलाग्रेण=खड्गेन 'पडिच्छित्ता' प्रतिच्छिद्य=छित्त्वा नीलोत्पल गवलासीप्रकाशेन=अतिश्यामेन असिवरेण=सुतीक्ष्णखड्गेन खण्डाखण्डि=खण्डं-खण्डं करोति

ओवयंतं दास! मओसिति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहति अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेइ तत्थ विलवमाणं तस्स य सरस वहियस्स घेत्तूणअंग मंगातिं सरूहिराइं उक्खित्त बलिं चउद्दिसिं करेइ सा पंजली पहिट्ठा) इसके बाद नृशंस-हत्यारी-तथा कलुषित हृदयवाली उस रयणादेवीने शैलक यक्ष की पीठ से समुद्र में गिरते हुए जिनरक्षित को जब तक वह समुद्र में नहीं गिर पाया तब तक बीचमें ही अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और कहने लगी हे नीच अब तुं मर गयो। इस प्रकार सुनकर सकरूण विलाप-चित्कार-करते हुए उस जिनरक्षित को उसने ऊपर उछाल दिया पश्चात् निचे गिरते समय उसने अपनी तलवार से दो टुकडे कर दिये। दो टुकड़े करके फिर उसने नीलोत्पल, गवल एवं अतसी के पुष्प के जैसी वर्णवाली तीक्ष्ण तलवार से उसके खंड २ कर दिये। इस तरह

आरसंतं उड्ढं उव्विहति अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल गवल अयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेइ तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसव हियस्स घेत्तूण अंगमंगातिं सरूहिराइं उक्खित्त बलिं चउद्दिसिं करेइ पंजली पहिट्ठा)

ત્યારપછી નૃશંસ-હત્યારી-તેમજ કલુષિત હૃદયવાળી રયણા દેવીએ શૈલક યક્ષની પીઠ ઉપરથી ઍસીને સમુદ્રમાં પડતાં જોયો ત્યારે તે સમુદ્રમાં પડે નહિ તે પહેલાં તેણે પોતાના બંને હાથોથી તેને પકડી લીધો, અને તે કહેવા લાગી કે હે નીચ! હવે તુ મરાયો જ સમજ. રયણા દેવીની વાત સાંભળીને જીનરક્ષિત કરૂણ વિલાપ કરવા લાગ્યો. તે દેવીએ તે સ્થિતિમાં જ તેને ઉપર ઉછાળ્યો. અને ત્યારપછી નીચે પડતા જીનરક્ષિતના તેણે પોતાની તલવારથી બે કકડા કરી નાખ્યા. બે કકડા કર્યા બાદ પણ તેને નીલોત્પલ, ગવલ અને અતસીના પુષ્પ જેવી રંગવાળી તીક્ષ્ણ તલવારથી તેના શરીરના કકડે કકડા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र 'विलवमाणं' विलपन्तं=विलापं कुर्वन्तमित्यर्थः। तस्य च 'सरसवहियस्स' सरसवधितस्य साभिमानं वधं प्रापितस्य 'घेत्तूण' गृहीत्वा 'अंगमंगाइं' अङ्गाङ्गानि अङ्गोपाङ्गानि=करचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=रुधिरलिप्तानि 'उक्खित्तबलिं' उत्क्षिप्तबलिम्=आकाशप्रक्षेपणरूपं वायसबलि-मिवबलिं 'चउद्दिसिं' चतुर्दिक्षु करोति सा 'पंजली' प्राञ्जलिः=संयोजित करपुटा 'पहिट्ठा' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का सती घातरूपं स्वाभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थः ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं४ जाव संसार० अणुपरियट्टिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं। तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खंता पडंति संसारसायरे घोरे। भोगेहि निरवयक्खा तरंति संसारकंतारं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तदृष्टान्तेनैव 'समणाउसो!' हे श्रमणा

अपने घातरूप अभिलषित कार्य को संपन्न करती हुई वह बहुत अधिक हर्षित हुई। उस रयणादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन रक्षित के रुधिर लिप्त अंग उपांगों की चारों दिशाओं में वायस बलि के जैसी बलिकी और दोनों हाथों को जोड़कर फिर बडी आनन्द मग्न हुई। ॥सू०७॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि।

टीकार्थ-(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो!

કરી નાખ્યા. આ રીતે પોતાની ઘાતકી ઇચ્છા પૂરી કરતાં તે અત્યધિક પ્રસન્ન થઈ. તે રયણા દેવીએ લોહીથી ખરડાએલા કકડે કકડા થયેલા જીનરક્ષિતનાં અંગો, ઉપાંગોને સગર્વ ચાર દિશાઓમાં કાગડા વગેરેને માટે બલિ રૂપમાં ફેંકી દીધા. અને પછી બંને હાથોને જોડીને તે આનંદમગ્ન થઈ ગઈ। સૂત્ર "૭॥"

(एवा मेव समणाउसो " इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(एवामेव) આ પ્રમાણે (समणाउसो) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान्=पूर्वत्यक्तान् ' आसायइ ' आसादयति=स्वीकरोति, ' पत्थयइ ' प्रार्थयते=अमुकान् याचते, ' पीहेइ ' स्पृहयति-' अयाचितं-एवायं मह्यं भोगान् ददाति तदा समीचीनं स्यात् ' इत्यादि रूपां स्पृहां करोति ' अभिलसइ ' अभिलषति=दृष्टादृष्टशब्दादि-विषयेषु वाञ्छां करोति, स खलु इह भव एव बहूनां श्रमणानां, बहीनां श्रमणीनां, बहूनां श्रावकाणां बहीनां श्राविकाणां मध्ये ' जाव ' यावत्-यावच्छब्देनेदं दृश्यम् - हीलनीयः, निन्दनीयः, खिंसनीयः=भर्त्सनीयः, गर्हणीयः, परिभवनीयः=तिरस्करणीयो भवति, परलोकेऽपि च खलु आगमिष्यति काले बहूनि दण्डानि=कर्णनासाच्छेदनरूपाणि प्राप्नोति यावत्-अनादिकम्-अनवदग्रम्=अनन्तं, दीर्घाध्वानं=दीर्घमार्गं, दीर्घाद्धं वा दीर्घकालिकं चातुरन्तसंसारकान्तारं=चातुर्गतिकसंसाराटवीम् ' अणुपरियट्टिस्सइ ' अनुपर्यटिष्यति=पुनः पुनर्भ्रमिष्यति, यथा वा स जिनरक्षितः । अत्रार्थे दृष्टान्तयोजनागाथाद्वयेनाह—

(जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए) जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी जन आचार्य तथा उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ (पुणरवि माणुसए कामभोगे आसायइ पत्थइ, पीहेइ, अभिलसइ) पुनः मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों-पूर्वत्यक्त वैषयिक सुखों को-स्वीकार कर लेता है उनकी चाहना करता है " बिना याचना किये ही यह मेरे लिये भोगों को देदेवे तो अच्छा है " इस प्रकार की जो स्पृहा इच्छा करता है, या दृष्टादृष्ट शब्दादि विषयों में वाञ्छा करता है (से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव संसार० अणुपरियट्टिस्सइ जहा व से जिणरक्खिए छलिओ

(जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय उव्वज्झायाणं अंतिए पव्वइए) જે અમારા નિર્ગ્રંથ કે નિર્ગ્રંથી જન આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજીત થઇને

(पुणरवि माणुसए कामभोगे आसायइ पत्थयइ, पीहेइ, अभिलसइ)

ફરી તે મનુષ્યભવના કામભોગો-પ્રવ્રજીત થતી વખતે છોડેલા મનુષ્યભવના વિષમ સુખો-ને સ્વીકારે છે, તે સુખોની ઇચ્છા કરે છે. " હું વિષય સુખની એની પાસેથી માંગણી કરું નહિ ને એની મેળે તે મને વિષમ સુખો આપે તો કેટલું સારું થાય ' આ રીતે જે સ્પૃહા કરે છે, અથવા તો દૃષ્ટાદૃષ્ટ શબ્દ વગેરે વિષયોની ઇચ્છા કરે છે.

(से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव संसार० अणुपरियट्टिस्सइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" छलिओ अवयक्खंतो, निरावयक्खो गओ अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारे, निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥
भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसायरे घोरे ।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ॥ २ ॥ " इति ॥

अस्य व्याख्या—छलितः=वञ्चितः, कः ? अवयक्खंतो ' पश्यन् रत्नद्वीपदेवताम्—अवलोकयन् जिनरक्षितो विप्रतारितः । यः ' निरावयक्खो ' अपश्यकः—तस्या देवताया अदर्शकः तां न दृष्ट्वेत्यर्थः, स जिनपालितः गतः=गृहं प्राप्तः ' अविग्घेणं ' अविघ्नेन=निर्विघ्नतया, सुखसुखेन स्वस्थानं प्राप्त वानित्यर्थः । अथोपदेशमाह—तस्मात् कारणात् प्रवचनसारे=चारित्रे लब्धे सती 'निरवयक्खेण'

अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं ! तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं) वह इस भव में ही अनेक श्रमणों अनेकश्रमणियों अनेक श्रावकों एवं अनेक श्राविकाओं के बीच में हीलनीय होताहै, निंदनीय होता है, खिसनीय होता है, तथा परभव में भी अनेक कर्णनासिकाच्छेदन आदि रूप दंडों को भोगता है ऐसा जीव अनादि अनन्त रूप इस दीर्घ मार्ग या काल वाले चतुर्गतिक संसार कान्तार में पुनः पुनः भ्रमण करेगा । जिन रक्षित का जो इस विषय में दृष्टान्त दिया गया है उसकी योजना इस प्रकार है—जैसे रयणा देवी की तरफ देखता हुआ जिनरक्षित ठगा गया—और उसकी तरफ नहीं देखता जिनपालित शीघ्र अपने घर पहुँच गया—इसी तरह चारित्र के प्राप्त करलेने पर जो व्यक्ति शब्दादि विषयों की वाञ्छा से रहित होता है

जहाव से जिणरक्खिए छलिओ अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं ! तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं)

તે આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તેમજ ઘણા શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓની સામે હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિંસનીય હોય છે. (ભર્ત્સનીય હોય છે.) તિરસ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, તથા બીજા જન્મમાં પણ ઘણા કાન, નાક કપાવવા વગેરે રૂપ સજાને ભોગવતો રહે છે. આ જાતનો જીવ અનાદિ અનંતરૂપ આ દીર્ઘ માર્ગ અથવા કાળવાળા ચતુર્ગતિક સંસાર કાંતારમાં વારંવાર ભ્રમણ કરશે. અહીં જીનરક્ષિત વિશે જે દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે તેને આ પ્રમાણે સમજવું જોઇએ. જેમ રયણા દેવીની તરફ જોતાં જીનરક્ષિત ઠગાયો અને તેની તરફ ન જોતાં જીનપાલિત એકદમ પોતાને ઘેર પહોંચી ગયો તેમજ ચારિત્ર મેળવવા બાદ જે માણસ શબ્દાદિ ભોગોની ઇચ્છા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपश्यकेन=प्राप्ताप्राप्त-दृष्टादृष्टशब्दादि विषयाणामदर्शकेन शब्दादिविषयवाञ्छा-रहितेनेत्यर्थः भवितव्यम् , चारित्रं गृहीत्वा विषयवासनासु लेशतोऽपि मुनिना मूर्छा न विधातव्येति भावः ॥ १ ॥ अतएव भोगे ' भोगान्=शब्दादिकान् ' अपश्यकखंता ' पश्यन्तः=वाञ्छन्तो जीवाः पतन्ति संसारसागरे घोरे । ये भोगेषु निरपश्यकखाः' अपश्यकाः=वाञ्छारहिताः सन्ति ते तरन्ति पारयन्ति संसारकान्तारं =भवाटवीम् ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणद्दीविदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा० बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरम-हुरसिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभि० विप्प० ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, तएणं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धं ल-वणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीयवयइ२ जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठातो ओयारेइ ओयारित्ता एवं वयासी—एसणं देवानुप्पिया ! चंपानयरी दीसइ त्तिकट्टु जिणपालियं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० ९ ॥

वह इस संसार रूप अटवी से पार हो जाता है और जो उस अवस्था में शब्दादि विषय भोगोंकी वाञ्छा करता है वह संसार रूप अटवी में डूबता रहता है-पडता रहता है । सूत्र " ८ "

રાખતો નથી તે આ સંસાર રૂપી અટવીની પાર પહોંચી જાય છે અને જે શબ્દ વગેરે વિષય-ભોગોની ઇચ્છા કરે છે તે સંસાર રૂપી અટવીમાં ફસાઈને તેમાં જ ડૂબતો રહે છે. ॥ સૂત્ર " ૮ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततः खलु तदनन्तरं जिनरक्षितवधानन्तरं सा रत्नद्वीपदेवता यत्रैव जिनपालितस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य बहुभिः-अनुलोमैः=अनुकूलैश्च, प्रतिलोमैः=प्रतिकूलैश्च ' खरमहुरसिंगारेहिं ' खरमधुरशृङ्गारैः खरैः=कर्कशैः, मधुरैः=मिष्टैः कर्णसुखदैरित्यर्थः, शृङ्गारैः=शृङ्गाररसोत्पादकैः, करुणैश्च=करुणाजनकैः उपसर्गैरनुकूलरूपैश्च यदा तं नो शक्नोति ' चालित्तए वा ' चालयितुम्=अधीरतामुत्पादयितुम्, ' खोभित्तए वा ' क्षोभयितुं=क्षुब्धं कर्तुम्, विपरिणामित्तए ' विपरिणमयितुम्=मनः परिणामं परावर्त्तयितुं न समर्थोऽभूत् तदा सा ' संता ' शान्ता=शिथिला हतोत्साहा, श्रान्ता वा=परिश्रमिता तान्ता=खिन्ना, परितान्ता=सर्वथा खेदमापन्ना ' निव्विण्णा ' निर्विण्णा=विमनस्का सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता=समागता तामेव दिशं प्रतिगता=प्रतिनिवृत्ता ।

तएणं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा वच्छइ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) वह रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहां जिन पालित था (तेणेव उवागच्छइ) वहां आई (बहूहिं अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहिं य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएहिं चालित्तए वा खोभि० विप्प० ताहे संतातंत्ता परितंता निव्विणा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसं पडिगया) वहां आकर उन से अनेक अनुकूल प्रतिकूल, कर्कश, मधुर-कर्णसुखद-शृंगार रसोत्पादक, एवं करुणारस जनक उपसर्ग वचनों द्वारा उसे चलायमान करने का क्षुभित करने का और उसकी मोनवृत्ति को बदल ने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब वह उसे चलायमान करने के लिये, क्षुभित करने के लिये एवं उस की मनोवृत्ति बदलने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब हतोत्साह परिश्रमित

तएणं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (सा रयणदीवदेवया) તે રયણા દેવી (जेणेव जिणपलिए) જ્યાં જીન પાલિત હતો (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવી.

(बहूहिं अणुलोमेहिं कलुणेहिं य उवसग्गे हि य जाहे नो संचाएहिं चालित्तए वा खोभि० विप्प ताहे संतातंत्ता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसं पडिगया)

ત્યાં આવીને ઘણા અનુકૂળ, પ્રતિકૂળ, કર્કશ, મધુર, કર્ણસુખદ શૃંગાર રસોત્પાદક, અને કરૂણા રસજનક ઉપસર્ગ વચનો વડે તેને પોતાના નિશ્ચયથી ચલિત કરવાના ક્ષુભિત કરવાના અને તેની મનોવૃત્તિને ફેરવી નાખવાના ખૂબજ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु स शैलको यक्षो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयइ व्यतिव्रजति=गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चम्पाया नगर्याः 'अग्गुज्जाणंसि' अग्रोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालितं पृष्ठात् अवतारयति, अवतार्य-एवमवदत्-एषा=पुरोवर्त्तिनी खलु हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा जिनपालितम् 'आपुच्छइ' आपृच्छति= तदनुज्ञां गृह्णाति, आपृच्छ्य यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ।सू०९॥

खिन्न, परितान्त एवं विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी उसी दिशा की तरफ चली गई। (तएणं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ २ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! दीसइ त्ति कट्टु जिणपालियं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के बीच में चलने लगा और चल कर जहां चंपा नगरी थी-वहां आ पहुँचा आकर के उसने चंपा नगरी के प्रधान बगीचे में जिन पालित को अपनी पीठ पर से उतार दिया। उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चंपा नगरी दिखलाई देती है। ऐसा कह कर फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहां से चला गया। सूत्र ॥ ९ ॥

પ્રયત્નો કર્યા પણ તે ત્યાં ફાવી નહિ. છેવટે તે હતાશ, થાકેલી, ખિન્ન, પરિતાંત અને વિમનસ્ક થઈને તે જે દિશા તરફથી આવી હતી તે જ દિશા તરફ પાછી જતી રહી.

(तएणं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ२ जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! चंपानयरी दीसइ त्तिकट्टु जिनपालियं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યાર બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને આગળ વધતો જ રહ્યો. અને અંતે જ્યાં ચંપા નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને ચંપા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમાં જીનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી દીધો, ઉતારીને તેણે જીનપાલિતને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સામે ચંપા નગરી દેખાય છે. ત્યારબાદ યક્ષે જીનપાલિતને જવા માટે પૂછયું અને પૂછીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો.॥સૂ૦૯॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्—तएणं से जिणपालिए चंपं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणाइं जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणा बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति करित्ता कालेणं विगयसोया जाया, तएणं जिणपालियं अन्नया कयाइं सुहासणवरगतं अम्मापियरो एवं वयासी—कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?, तएणं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवया गिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाए आघायणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया उवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ, तएणं से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा पव्वइए एक्कारसंगवी मासिकयाएणं सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ से णं जाव वीइवइस्सइ जहा वा से जिणपालिए । एवं खलु जंबू !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तएणं जिणपालिए ' इत्यादि । ततः खलु जिनपालितश्चम्पामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अम्बापित्रोः समीपे रुदन् यावद् विलपन्=विलापं कुर्वन् जिणरक्षितव्यापत्तिं=जिणरक्षितमरणं निवेदयति=कथयति, ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापितरौ च मित्रज्ञातियावत्परिजनेन सार्द्धं रुदन्तः सर्वे बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि

' तएणं से जिन पलिए ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से जिनपालिए चंपं अणुपविसइ, वह जिन पालित चंपा नगरी में अनुप्रविष्ट हुआ । (अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट होकर वह जहां अपना घर और उस में भी जहां अपने माता पिता थे वहाँ गया । (उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियव वावत्तिं निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणा बहूहिं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति) वह जाकर उस ने रोते हुए यावत् विलाप करते हुए माता पिता से जिनरक्षित की मृत्यु हो जानेके समाचार कहे । इस के बाद रोते हुए उस जिनपा-

' तएणं से जिनपालिए ' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यारબાદ (से जिनपालिए चंपं अणुपविसइ) જીનપાલિત ચંપા નગરીમાં ગયો.

(अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાં જઈને જ્યાં તેનું ઘર અને તેમાં પણ જ્યાં તેના માતાપિતા હતા ત્યાં પહોંચ્યો.

(उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणा बहूहिं लोइयाइं मम किच्चाइं करेंति)

ત્યાં તેણે રડતાં યાવત્ વિલાપ કરતાં પોતાના માતાપિતાને જીનરક્ષિતના મૃત્યુના સમાચાર કહ્યા. ત્યારપછી જીનપાલિત અને માતાપિતાઓએ રડતાં મિત્રજ્ઞાતિ યાવત્ પરિજનોને ભેગા કરીને મરણ પછીની બધી વિધિઓ પૂરી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुर्वन्ति, कृत्वा कालेन=कतिपय दिवसानन्तरेण विगतशोकाः=शोकरहिता जाताः। ततः खलु जिनपालितम् अन्यदा कदाचित् सुखासनवरगतं=सुखोपविष्टम् अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्-कथं=केन प्रकारेण खलु हे पुत्र ! जिनरक्षितः कालगतः= मृतः ?, ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापित्रोः-लवणसमुद्रोत्तारं च, कालिकवात-समुत्थानं, पोतवहनव्यापत्तिं=नौकाभङ्गं च, फलकखण्डासादनं=फलकखण्डावलम्बनं च, रत्नद्वीपोत्तारं च, रत्नद्वीपदेवताग्रहणं च, भोगविभूतिं=भोगसम्पत्तिं च, रत्न-द्वीपदेवतायाः 'आघायणं' आघातनं=वधस्थानं च, शूलाचितपुरुषदर्शनं च, शैलकयक्षारोहणं च, रत्नद्वीपदेवतोपसर्गं च जिनरक्षितविपत्तिं=जिनरक्षितमरणं

लित, और उनके माता पिता ने मित्र ज्ञाति यावत् परिजनों के साथ समस्त अनेक लौकिक मृतक कृत्य किये। (करित्ता कालेणं विगय सोया जाया) बाद में जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ ये सब शोक रहित बन गये और फिर बिलकुल शोक शून्य भी हो गये। (तएणं जिन पालियं अन्नया कयाइं सुहासणवरगयं अम्मा पियरो एवं वयासी कहण्णं पुत्ता जिणरक्खिए कालगए) एक दिन की बात है कि जब जिनपालित आनन्द से बैठा हुआ था तब माता पिता ने उस से पूछा पुत्र ! जिनरक्षित किस प्रकार से काल कवलित हुआ ? (तएणं से जिनपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमु-त्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवया गिण्हणं च भोगविभूइं च रयण दीवदेवयाएआघा-यणं च सूलाइय पुरिसदरिसणं सेलगजक्ख आरुहणं च रयण-

કરી. (करित्ता कालेणं विगय सोया-जाया) ત્યારબાદ જેમ જેમ સમય પસાર થતો ગયો તેમ તેમ તેઓ પોતાનું દુઃખ પણ ભૂલતા ગયા અને છેવટે જીન-રક્ષિત વિશેનું દુઃખ તેઓના હૃદય પટલ ઉપરથી સાવ ભુસાઈ ગયું.

(तएणं जिनपालियं अन्नया कयाइं सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी कहण्णं पुत्ता जिणरक्खिए कालगए)

જ્યારે એક દિવસે જીનપાલિત આનંદપૂર્વક બેઠો હતો ત્યારે માતા-પિતાઓએ તેને પૂછયું કે હે પુત્ર ! જીનરક્ષિત કઈ રીતે મરણ પામ્યો છે ?

(तएणं से जिनपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमु-त्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडं आसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीव देवयागिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाए आघायणं च सूलाइय पुरिसदरिसणं सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया उवसग्गं च जिणरक्खिय-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च, स्वस्य लवणसमुद्रोत्तरणं च, चम्पागमनं परावृत्त्यचम्पानगरी समागमनं च, शैलकयक्षापृच्छनं=शैलकयक्षस्य जिनपालितं प्रति स्वस्थानगमननिवेदनं च, एतत्सर्वं वृत्तान्तं 'जहाभूयं' यथाभूतं=यथाजातम्, 'अवितहं' अवितथं=सत्यम्, 'असंदिद्धं' असंदिग्धं-संदेहरहितं परिकथयति। ततः खलु स जिनपालितो यावद् 'अप्पसोए' अल्पशोकः=विगतशोकः यावद् विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादि विषयान् भुञ्जानो विहरति०।

दीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्द उत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ) तब जिनपालित ने माता पिता से लवणसमुद्र में उतरने से लेकर अचानक कालिक वायुका उठना नौका का नष्ट होना काष्ट फलक का मिलना उसकी सहायता से रत्नद्वीप में उतरना वहां रयणा देवी के द्वारा अपना ग्रहण होना उस के साथ भोग रूप विभूति का भोगना, बाद में रयणा देवी के वधस्थान का देखना वहां शूलारोपित पुरुष को देखना, शैलक यक्ष की पीठ पर चढना रयणा देवी का उपसर्ग करना, जिन रक्षित का मरण होना अपना लवणसमुद्र का पार करना चंपा नगरी में पीछे आना और शैलकयक्ष का पुछ कर अपने स्थान वापिस चले जाना यहां तक का सब वृत्तान्त जैसा हुआ था ठीक २ विना किसी संदेह के उस ने सुना दिया। (तएणं से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ) इस के बाद शोक रहित बना हुआ वह जिनपालित विपुल शब्दादि विषयों

विवत्तिं च लवणसमुद्दं उत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ)

ત્યારે જીનપાલિતે માતાપિતાને લવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરતી વખતે ઓચિંતા પવનની અથડામણથી નાવ ડૂબી જવાના અકસ્માતથી ભાડીને લાકડાની સહાયતાથી રત્નદ્વીપના કિનારા સુધી પહોંચવું, રયણા દેવીની લપેટમાં ફસાવવું, તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવવા, રયણા દેવીના વધસ્થાનને જોવું, શૂળી ઉપર લટકતા માણસને જોવું, શૈલક યક્ષની પીઠ ઉપર બેસવું, રયણા દેવીનો ઉત્પાત કરવો, જીનરક્ષિતનું મરણ થવું, સકુશળ પોતાની લવણ સમુદ્ર યાત્રા પૂરી કરવી, ચંપા નગરીમાં આવવું અને શૈલક યક્ષનું તેને પૂછીને ફરી રત્નદ્વીપ તરફ રવાના થવું અહીં સુધીની એકે એક વાત તેણે કહી સંભળાવી.

(तएणं से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

ત્યારબાદ નિશ્ચિંત થયેલો જીનપાલિત શબ્દ વગેરે વિષયોને પુષ્કળ પ્રમા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=चम्पायां समागतः। जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि श्रुत्वा ज्ञाननिपुणो जातः। मासिक्या संलेखनया कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेवलोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमकः=द्विसागरोपमस्थितिकः देवो जातः। महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति। एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रव्रजितः सन् मानुष्यकान् कामभोगान् परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायइ' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स खलु यावद् 'वीईवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति संसारस्य पारं गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः। इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-काम सुखों को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगा। (तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा पव्वाइए, एक्कारसंगवी मासिकयाएणं सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, सेणं जाव वीइवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए! एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण भगवान महावीर चम्पा नगरी में आये। जिन पालित धर्म का उपदेश सुन कर दीक्षित हो गया। ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन गया। अन्त में एक मास की संलेखना की संलेखना से ६० साठ भक्तों का छेदन कर जब काल किया-तो प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ। यह महा विदेह में सिद्धी गति को

ણમાં ભોગવતો સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગ્યો.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा पव्वाइए एक्कारसंगवी मासिकयाएणं सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, से णं जाव वीइवइस्सइ, जहावा से जिणपालिए! एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ચંપાનગરીમાં આવ્યા. જીનપાલિત તેમનો ઉપદેશ સાંભળીને દીક્ષિત થઇ ગયો. ધીમે ધીમે તેણે અગિયારે અંગોનું જ્ઞાન મેળવી લીધું. છેવટે એક માસની તેણે સંલેખના કરી. સંલેખનાથી ૬૦ સાઠ ભક્તોનું છેદન કરીને કાળ કર્યો ત્યારે પ્રથમ દેવલોકમાં બે સાગરોપમની સ્થિતિવાળા દેવ તરીકે તે ઉત્પન્ન થયો. ભવિષ્યમાં તે મહા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथा लाभार्थिनौ वणिजौ तथा शिवसुखार्थिनौ जीवौ। यथा समुद्रयात्रा तथा संसारयात्रा यथा रत्नद्वीपदेवता महापापा तथा अविरति रापातसुखा परिणामदुःखा०। यथा – आघातस्थानभयं तथा जन्ममरणभयम्। यथा रत्नादेवी चरितानुभवी शूलारोपितपुरुषस्तथा अविरति परिणामबोधकं भयम्। यथा देवीहस्तान्निस्तारकः शैलकयक्षस्तथा धर्मोपदेशकोऽत्राविरतिपरिणामजनित

को प्राप्त करेगा। इस तरह हे आयुष्मंत श्रमणो! जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा निग्रन्थ श्रमणी जन यावत् प्रव्रजित होता हुआ परित्यक्त मनुष्य भव संबन्धी कामभोगों का पुनः सेवन नहीं करता है वह जिन पालित की तरह इस संसार के पार पहुँचेगा। दृष्टान्त की योजना यहां इस प्रकार से कर लेनी चाहिये जिस प्रकार लाभ के अर्थी वणिक् जन होते हैं उसी प्रकार शिव सुख के अर्थी जीव होते हैं। जिस प्रकार समुद्र यात्रा है उसी प्रकार संसार यात्रा है। समुद्र यात्रा में जैसे पापिनी रयणा देवी का मिलाप हुआ-उसी प्रकार इस संसार यात्रा में आपात सुख दायक और परिणाम में दुःखदायक अविरति का जीवों को समागम हो रहा है। वहां जैसे वध्यस्थान का भय जिन पालित एवं जिन रक्षित को हुआ, उसी तरह इस संसार यात्रा में भी प्रत्येक जीव को जन्म मरण का भय लगा हुआ है। जिस प्रकार रयणा देवी के चरित का अनुभवी वह शूलारोपित पुरुष हमें वहां दिखाई देता है इसी प्रकार यहां भी अविरति के परिणाम का बोधक भय हमें सतत सचेत करता

विदेहमां सिद्धि गति मेळवशे. आ रीते हे आयुष्मंत श्रमणो! जे अमारा निर्ग्रंथ श्रमण अथवा निर्ग्रंथ श्रमणीओनो प्रव्रजित थईने दीक्षा पर्यंते त्यजेला मनुष्य भव संबंधी कामभोगोनुं फरी सेवन करतो नथी ते जिनपालितनी जेम आ संसारने पार थशे. आ दृष्टांतने अहीं आ रीते बेसाडवुं जोईए के जेम वणिकजनो (वेपारीओ) लाभने इच्छनारा होय छे तेम शिवसुखने इच्छनारा जीवो होय छे. समुद्र यात्रानी जेम ज आ संसार यात्रा पण छे. समुद्र यात्रामां जेम पापणी रयणा देवी मळी तेम आ संसार यात्रामां शरुआतमां सुखदायक अने परिणाममां दुःखदायक अविरतिनो समागम जीवने थतो रहे छे. वधस्थानमां जेम जिनपालित अने जिनरक्षित भयत्रस्त थया तेम आ संसार यात्रामां पण दरेके दरेक जीवने जन्म-मरणनी बीक रहे छे. जेम रयणा देवीना क्रूर व्यवहारने अनुभवनारो शूळी उपर लटकतो मानुस तेमणे जोयो तेम आ संसारमां पण अविरतिना परिणामनो बोधक भय आपणने सतत सावध करतो रहे छे. जेम देवीनी लपेटमांथी मुक्त करनार शैलक यक्षने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुःख निस्तारको गुरुः । यथा देवीमोहितर्जिनरक्षितस्तथा-अविरतिमोहितमति-र्मुनिः । यथा शैलकरूपाश्वपृष्ठच्युतो जिनरक्षितस्तथा गुरूपदिष्टज्ञानादिपञ्चाचार भ्रष्टो मुनिः । यथा रत्नादेव्या तीक्ष्णकरवालेन गगने खण्डशः कृतं तदङ्गं परितः प्रक्षिप्तं नानाविधमकरादि श्वापदसंकुले समुद्रे पतति तथा-अविरत्या विषमपरिणा-मेन नरकावासे खण्डशः कृतं शरीरमनुभवन्नसौ जन्मजरामरणाद्यनन्तदुःखसमाकुले संसारे निपतति । यथा देवी कृतोपसर्गैरक्षुब्धो जिनपालितः स्वस्थानं जीवित-

रहता है । जिस प्रकार देवी के हाथ से छुडाने वाला वहां शैलक यक्ष कहा गया है इसी प्रकार यहां भी धर्म के उपदेशक एवं अविरति परिणाम जनित दुःखसे निस्तारक ये गुरुजन प्रकट किये गये हैं । जिस प्रकार जिन रक्षित देवी के द्वारा मोहित किया गया हमें कहा गया है उसी प्रकार यहां भी अविरति के द्वारा मोहित मुनिजन समझाये गये हैं । जिस प्रकार शैलक रूप अश्व की पीठ पर से जिन रक्षित च्युत हुआ प्रकट किया गया है उसी प्रकार गुरूपदिष्ट ज्ञानादिक पांच आचार से भ्रष्ट बना हुआ मुनि यहां हमे समझाया गया है । जिस प्रकार रत्ना देवी की तलवार से खंड २ किये गये जिन रक्षित के अंग उपांग इधर उधर प्रक्षिप्त होकर नाना विध मकरादिश्वापद से संकुल हुए समुद्र में गिरे हैं उसी प्रकार अविरति के विषम परिणाम से नरकावास में खंड २ किये गये शरीरका अनुभव करता हुआ भी यह जीव जन्म, जरा, और मरण, आदि अनन्त दुःखों से व्याप्त हुए संसार में पतित होता है । जिस प्रकार रयणा देवी कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध

આપણે જોયેા તેમ અહીં પણ ધર્મના ઉપદેશક અને અવિરતિ પરિણામ જનિત દુઃખમાંથી મુક્ત કરનારા ગુરૂજનેા પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે. જેમ દેવીના મેાહવાશની લપેટમાં પડેલેા જીનરક્ષિત છે તેમજ અહીં પણ અવિરતિ વડે મેાહિત થયેલા મુનિઓ જોવામાં આવે છે. જેમ શૈલક યક્ષ રૂપી ઘેાડાની પીઠ ઉપરથી ખસી પડેલા જીતરક્ષિતનું વર્ણન ઉપર પ્રગટ કરવામાં આવ્યું છે તેમજ આ સંસારમાં પણ ગુરૂપદિષ્ટ જ્ઞાન વગેરે પાંચ આચારેાથી ભ્રષ્ટ થયેલેા મુનિ સમજવેા જોઈએ. જેમ રત્નાદેવીની તલવારથી કકડા થયેલા જીનરક્ષિતનાં અંગેા ઉપાંગેા ઘણી જાતના મગર વગેરે જીવેાથી વ્યાપ્ત સમુદ્રમાં આમતેમ ફેંકવામાં આવ્યા છે તેમ જ અવિરતિના વિષમ પરિણામથી નરકવાસમાં શરીરના કકડાઓ કરવામાં આવે છે છતાંએ તે દુઃખને અનુભવતેા આ જીવ જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે અનંત દુઃખેાથી વ્યાપ્ત થયેલા આ સંસારમાં ફરી આવી પડે છે. જેમ રયણા દેવીના ઉપસર્ગેાથી અક્ષુબ્ધ થઈને જીનપાલિત પેાતાને ઘેર સકુશળ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखं च प्राप्तः सन् पश्चान्मोक्षपदगाम्यभवत्, तथा-अविरति कृतोपसर्गैरक्षुब्धः सुसंयमी मुनिर्मोक्षस्थानं शिवसुखं च प्राप्स्यतीति ।

एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः ।'त्तिबेमि' इतिब्रवीमि पूर्ववत् ।सू०१९॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां नवममध्ययनं संपूर्णम् ॥ ९ ॥

बना जिन पालित अपने स्थान पर सकुशल लौट आया और वहां उस ने अपने जीवन का सुख भोगा-पश्चात् वही मोक्षपद गामी भी हुआ उसी तरह अविरति कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध बना हुआ सुसंयमी मुनि मोक्षस्थान को प्राप्त कर शिव सुख को भोक्ता बनेगा । इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने इस नवम ज्ञाताध्ययन का यह-पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है । उसी के अनुसार यह मैंने तुम्हें समझाया है । सूत्र ॥ १० ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का नववां अध्ययन समाप्त ॥ ९ ॥

પાછો આવ્યો, ત્યાં તેણે સુખેથી પોતાના દિવસો પસાર કર્યા અને છેવટે મોક્ષ મેળવ્યો તેમજ અવિરતિકૃત ઉપસર્ગોથી નિર્ભીક થયેલો સુસંયમી મુનિ મોક્ષસ્થાનને મેળવીને શિવસુખનો ઉપભોગ કરશે. આ રીતે હે જંબૂ ! શ્રમણ-ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. તે મુજબ જ મેં તને બધી વિગત સમજાવી છે. ॥ સૂ૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું નવમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ दशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गतं नवममध्ययनम् , साम्प्रतं दशममारभ्यते, तस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–पूर्वमविरति–विरतिमतोर्हानिलाभौ प्रोक्तौ, अत्रतु. प्रमादाप्रमादवतोर्गुणहानि–तद् वृद्धिरूपावनर्थार्थौवर्ण्यते, तत्र जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिनं पृच्छति–'जइणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दसमस्स के अट्ठे०?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वयासी–कहण्णं भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायंति वा?, गो० ! से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणो वण्णेणं हीणे सोम्मयए हीणे निद्धयाए

दशम अध्ययन प्रारंभ ।

नौवां अध्ययन समाप्त हो चुका–अब दशमां अध्ययन प्रारंभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार संबन्ध है–पहिले अविरति वाले को हानि एवं विरति वाले को लाभ की प्राप्ति होना कहा गया है अब इस अध्ययन में यह कहते हैं कि जो प्रमादि होता है उसके गुणोंकी हानि होती है, और जो अप्रमादी होता है उस के गुणों की वृद्धि होती है । इस तरह गुण हानि और तद् वृद्धि रूप अर्थ अनर्थ का वर्णन सूत्रकार इस अध्ययन में कर रहे हैं । जंबू स्वामी इसी बात को श्री सुधर्मा स्वामी से पूछ रहे हैं ।

દશમું અધ્યયન પ્રારંભ

નવમું અધ્યયન પૂરું થયું છે અને હવે દશમું અધ્યયન પ્રારંભ કરીએ છીએ. દશમા અધ્યયનનો એના પહેલાંના અધ્યયન સાથે આ પ્રમાણેનો સંબંધ છે—પહેલાંના અધ્યયનમાં અવિરતિવાળાને હાનિ (નુકસાન) અને વિરતિવાળાને લાભની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમ દર્શાવવામાં આવ્યું છે. હવે આ અધ્યયનમાં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવશે કે જે પ્રમાદી હોય છે તેના ગુણોને હાનિ પહોંચે છે અને જે અપ્રમાદિ હોય છે તેના ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે. આ રીતે સૂત્રકાર આ અધ્યયનમાં ગુણોની હાની અને ગુણોની વૃદ્ધિરૂપ અર્થ અનર્થનું વર્ણન કરી રહ્યા છે. જંબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને એ જ વાત પૂછી રહ્યા છે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराय वण्णेणं जाव मंडलेणं तयाणंतरं च णं तइआचंदे बिइयाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे२ जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसं-चंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचयणयाए बंभचेरवासेणं तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेर वासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे२ णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं, जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहियययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दंसि चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेर वासेणं, तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे२ जाव पडिपुन्ने बंभचेरवासेणं, एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० १ ॥

॥ दसमं णायज्झयणं समत्तं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, स मया श्रुतः, किन्तु दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे ' सामी ' स्वामी= श्रीमहावीरस्वामी 'समोसढे' समवसृतः=समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत्— कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः ' वड्ढंति वा ' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नुवन्ति वा, ' हायंति वा ' हीयन्ते=हानिं प्राप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन, प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानी प्राप्तुं नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

' जइणं भंते ! समणेणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जइणं भंते) यदि हे भदंत ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अट्ठे)० ? दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्हों ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के अभिप्राय से कहते हैं कि (एवं खलु जबू !) हे जंबू सुनों तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है- (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे-गोयमसामी एवं वयासी) उस काल में और उस समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहण्णं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा ? गो० से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवया

" जइणं भंते ! समणेणं " इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(जइणं भंते !) હે હે ભદન્ત ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો (दसमस्स के अट्ठे ?) દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો તેઓએ શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્માસ્વામી તેમને બધી વાતની સ્પષ્ટતા કરવાના હેતુથી કહે છે કે (एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ સાંભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वयासी) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગરમાં શ્રી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની પધરામણી થઇ. તે સમયે ગૌતમ સ્વામીએ તેમને પ્રશ્ન કર્યો કે—

(कहण्णं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंतिवा ? गो० से जहानामए बहुल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्रार्थे भगवान् पूर्वहानिदृष्टान्तमाह – हे गौतम ! ' से जहानामए ' तद्यथा–नामकम्–यथा च बहुलपक्षस्य = कृष्णपक्षस्य ' पाडिवयाचंदे ' प्रतिपच्चन्द्रः पूर्णिमाचन्द्रं प्रणिधाय=अपेक्ष्य, ' प्रणिधाये ' ति ' अपेक्ष्ये ' त्यर्थकमव्ययम् ' पूर्णिमाचन्द्रापेक्ष्येत्यर्थः हीनः = न्यूनः, वर्णेन=शुक्लतारूपेण, हीनः

चंदे पुण्णिमा चंदं पणिहाय हीणो वण्णेणं हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं) हे भदंत ! जीव किस प्रकार से बढते हैं और किस प्रकार से घटते हैं ? जीव द्रव्य की अपेक्षा अनंत होने से और प्रदेश की अपेक्षा प्रत्येक जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेश वाला होने से सदा अवस्थित परिणाम वाला कहा गया है–अतः इस स्थिति में न तो उस की वृद्धि हो सकती है और न उस की हानी ही । किन्तु यहां जो इस प्रकार का प्रश्न किया गया है उस का मत इस प्रकार है, कि जब आत्मा में क्षांत्यादि गुणों की वृद्धि हो जाती है तो उन की वृद्धि से " जीव बढ़ता है " ऐसा मान लिया जाता है और जब इन्हीं आत्मिक गुणों की वृद्धि आत्मा में नहीं होती है–किन्तु हानि रहती है तो इस से जीव में हानि हो रही है ऐसा मान लिया जाता है । इसी अपेक्षा को लेकर यह प्रश्न किया गया है । अब भगवान् हानि को स्पष्ट करने के लिये पहिले उसे ही दृष्टान्त द्वारा समझाते हैं-वे कहते हैं–हे गौतम ! जैसे

पक्खस्स पाडिवया चंदे पुण्णिमाचंदं पाणिहाय हीणो वण्णेणं हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं)

હે ભદંત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે એાછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હમેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામાં આવ્યો છે. એથી આવી સ્થિતિમાં તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ. પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામાં ક્ષાંતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામાં આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામાં થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માંડે છે ત્યારે " જીવમાં હાનિ થઈ રહી છે " એવું માનવામાં આવે છે. આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે. ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલાં દૃષ્ટાંત વડે સમજાવતાં કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કૃષ્ણપક્ષની એકમનો ચંદ્ર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'सोम्मयाए' सौम्यतया=नेत्राह्लादकतया, हीनः 'निद्धयाए' स्निग्धतया=स्नेहोत्पादकतया, हीनः=न्यूनः 'कंतीए' कान्त्या=कमनीयतया। एवम्=अनेन प्रकारेण हीनशब्दः सर्वत्र बोध्यः, यथा-हीनो दीप्त्या=प्रकाशेन, हीनः 'जुईए' द्युत्या=चाकचिक्येन, हीनः छायया= शोभया, हीनः प्रभया=ज्योतिषा, हीनः 'ओयाए' ओजसा=दाहशमनरूपेण, हीनः लेश्यया=किरणरूपया, हीनो=न्यूनो मण्डलेन=वृत्ताऽऽकृतया, पूर्णिमाचन्द्राऽपेक्षया, प्रतिपच्चन्द्रः सर्वथा न्यूनो भवतीत्यर्थः। तदनन्तरं च खलु द्वितीयाचन्द्रः प्रतिपदं=प्रतिपत्सम्बन्धिनं चन्द्रं 'पणिहाय' प्रणिधाय=अपेक्ष्य हीनतरो=न्यूनतरो वर्णेन यावद् मण्डलेन भवति०। तदनन्तरं च खलु तृतीयाचन्द्रो द्वितीयाचन्द्रं पणिधाय हीनतरो वर्णेन यावद्

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा का चंद्रमा पूर्णिमा के चन्द्रमाकी अपेक्षा शुक्लता रूप वर्ण से हीन होता है, सौम्यता-नेत्राह्लादकता-से हीन होता है, स्निग्धता-स्नेहोत्पादकता-से हीन-न्यून-होता है, कांतिकमनीयता से हीन होता है, इसी तरह दीप्ति से,-द्युति से-(चमक से)-छाया-शोभा से) प्रभा से-(ज्योति से) दाहशमन रूप ओजस से, किरण रूप लेश्या से, एवं वृत्ताकाररूप अपने परिमंडलसे हीन रहता है-(तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराय वण्णेणं जाव मंडलेणं-तयाणंतरं चणं तइआचंदे बिइया चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडले णं एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ जाव अमावस्सा चंदे चाउद्दसं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं) इसके बाद कृष्ण पक्ष के प्रतिपदा के चन्द्रमा की अपेक्षा द्वितीया चन्द्रमा वर्ण से लेकर यावत् परिमंडल तक और अधिक न्यून बन जाता है-इसके बाद द्वितीया के चन्द्रमा की अपेक्षा तृतीया का चन्द्रमा वर्ण से लेकर परि-

---

પૂનમના ચંદ્રની અપેક્ષા શુકલતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે. સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્રાહ્લાદકતાના ગુણથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાંતિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકાશથી), છાયા (શોભા) પ્રભાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂપ ઓજથી, કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતાના પરિમંડળથી હીન રહે છે.

(तयाणंतरंच णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराय वण्णे णं जाव मंडले णं तयाणंतरं च णं तइआचंदे बिइयाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे२ जाव अमावस्सा चंदे चाउद्दसं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતાં બીજનો ચન્દ્ર વર્ણપરિમંડળ વગેરે બધી વિશેષતાઓમાં વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે. એ પછી બીજના ચન્દ્ર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मण्डलेन । एवं खलु एतेन क्रमेण परिहीयमानः २ यावद् अमावास्यायाचन्द्रः ' चाउद्दसिं ' चातुर्दशं=चतुर्दशीसम्बन्धिन चन्द्रंप्राणिधाय=अपेक्ष्य ' नट्ठे ' नष्टः=विलुप्त वर्णेन यावत् नष्टो मण्डलेन=वृत्ताकाररूपेण ।

' एवामेव '–एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजितः सन् हीनः ' खंतीए ' क्षान्त्या=क्षमया, एवं हीनः ' मुत्तीए ' मुक्त्या=निर्लोभतया ' गुत्तीए ' गुप्त्या=मनोयोगादीनां कुशलप्रवृत्तिलक्षणया, योगनिरोधलक्षणया वा, ' अज्जवेणं ' आर्जवेन=स्फटिकवद् बाह्याभ्यन्तरसरलभावरूपेण, ' मद्दवेणं ' मार्दवेन=निरभिमानतालक्षणेन, ' लाघवेणं ' लाघवेन=द्रव्यभावलघुतासंपन्नेन–तत्र–द्रव्यतोऽल्पोपधिकत्वेन भावतो राग-द्वेषरहितत्वेन, ' सच्चेणं ' सत्येन=अमृषाभाषणरूपेण, ' तवेणं ' तपसा=अशनादि

मंडल तक और अधिकन्यून हो जाता है । इस तरह क्रमशः हीन ही होता हुआ अमावस्या का चन्द्रमा चतुर्दशी के चन्द्रमा की अपेक्षा बिलकुल वर्ण आदि से लगाकर अपने परिमंडल तक विलुप्त बन जाता है । (एवामेव समणाउसो। जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतिए एवं मुत्तीए अज्जवेणं, मद्दवेणं, लाघवेणं सच्चेणं, तवेणं, चियाए, अकिंचणयाए, बंभचेरवासेणं) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थीजन यावत् प्रव्रजित होता हुआ यदि क्षमा से हीन है, मुक्ति–निर्लोभता अथवा मनोयोगादिकों की कुशल प्रवृत्ति रूप अथवा योगनिरोध रूप गुप्ति से स्फटित की तरह बाह्य एवं आभ्यन्तर में सरल परिणाम रूप आर्जव से, निरभिमानता रूप मार्दव से, अल्प उपधि रूप द्रव्यलघुता से राग द्वेषरहित रूप भाव लघुता से, अमृषाभाषण रूप सत्य से, अन-

---

કરતાં ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમંડળ બધી બાબતમાં વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે. આ રીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતાં અમાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર કરતાં વર્ણ પરિમંડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે.

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं, मद्दवेणं, लाघवेणं, सच्चेणं तवेणं, चियाए, अकिंचणयाए, बंभचेरवासेणं)

આ રીતે જ હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ અથવા નિર્ગ્રંથી જન યાવત્ પ્રવ્રજીત થઈને જો ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ–નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ ગુપ્તિથી, સ્ફટિકની જેમ બાહ્ય તેમજ આભ્યંતરમાં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિરભિમાનતા રૂપ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वादशविधेन 'चियाए' त्यागेन=मुनिवैयावृत्त्यकरणलक्षणेन 'अकिंचणयाए' अकिञ्चनतया निष्परिग्रहतया बंभचेरवासेणं' ब्रह्मचार्यवासेन-ब्रह्मणि=कामसेवन-परित्यागरूपे चरणं=विचरणं चर्य ब्रह्मचर्यं, तत्र वासस्तेन नववाटिका विशुद्धमैथुन विरमणरूपेण 'हीनः' इति सर्वत्र सम्बन्धः क्षान्त्यादिदशविधश्रमणधर्मरहितो भवतीत्यर्थः ।

तदनन्तरं च खलु स निर्ग्रन्थो वा० हीनतरः क्षान्त्या यावत् हीनतो ब्रह्मचर्यवासेन । एवं खलु एतेन क्रमेण=क्रमशः परिहीयमानः २ सन् नष्टः=सर्वथा रहितः क्षान्त्या, यावत् नष्टो ब्रह्मचर्यवासेनापि भवति । क्षान्त्यादि सर्वगुणरहितो भवतीत्यर्थः, यथा चन्द्रो नित्यराहुसंसर्गेण कृष्णप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसं कलाभिः क्षीयमाणः सन् कृष्णचतुर्दश्यपेक्षयाऽमावास्यायां वर्णादिना यावन्मण्डलेन नष्टो

शनादि रूप १२ प्रकार के तप से, मुनिजनों की वैयावृत्ति करने रूप त्याग से निष्परिग्रह रूप अकिञ्चन्य धर्म से काम सेवन परित्याग रूप ब्रह्मचर्य में वास कर ने से-नव कोटिसे विशुद्ध बने हुए ब्रह्मचर्य के पालन से-हीन हैं-अर्थात् क्षान्ति आदि रूप दश प्रकार के यति धर्म से रहित हैं-(तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं) अथवा जो साधु या साध्वी क्षान्ति से लेकर ब्रह्मचर्य वे इस तरह क्रमशः हीन२ होते हुए क्षान्ति आदि धामसे हीनतर हैं। से लेकर ब्रह्मचर्यवास पर्यंतके समस्त गुणोंसे रहित हो जाते हैं। जिस प्रकार नित्य राहु के संसर्ग से कृष्णपक्षकी प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन कलाओं से परिक्षीण होता हुआ चन्द्र कृष्णचतुर्दशी की अपेक्षा अमा-

---

માર્દવથી, અલ્પ ઉપાધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ ભાવલઘુતાથી અમૃષા ભાષણ રૂપ સત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રકારના તપથી, મુનિજનોની વૈયાવૃત્તિ કરવા રૂપ ત્યાગથી નિષ્પરીગ્રહ રૂપ અકિંચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરવાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાંતિ વગેરે રૂપ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે.

(तयाणंतरं चणं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं)

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાંતિથી માંડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના ગુણોથી હીન છે. તેઓ આ ચંદ્રની પેઠે જ અનુક્રમે હીન થતાં ક્ષાંતિ વગેરેથી માંડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના સર્વે ગુણોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હંમેશા રાહુના સંસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માંડીને દરરોજ કળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચંદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણ પરિમંડળ વગેરે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवति, तथैव मुनिः कुगुरुसंसर्गात् अवसन्नपार्श्वस्थादि सङ्गात्, वान्तसम्यक्त्वसम्बन्धात्, प्रमादस्थानसेवनात्, चारित्रावरणकर्मोदयाच्च क्रमशः क्षान्त्यादिगुणहानिं प्राप्तः सन् नष्टो भवतीति भावः।

अथ वृद्धिदृष्टान्तमाह—

यथा वा शुक्लपक्षस्य प्रतिपच्चन्द्रोऽमावास्यायाश्चन्द्रं प्रणिधाय=अपेक्ष्य-अमावास्या चन्द्रापेक्षयेत्यर्थः 'अहिए' अधिको वर्णेन यावद् अधिको=वर्द्धमानो

वस्या के दिन वर्णादि से लेकर परिमंडल तक के अपने समस्त गुणों से नष्ट हो जाता है। उसी तरह मुनि कुगुरुके संसर्ग से अथवा अवसन्न पार्श्वस्थादिकी संगति से सम्यक्त्व के छूट जाने के कारण और प्रमादस्थानों के सेवन करने के कारण उदित हुए चारित्र मोहनीय कर्म के प्रभाव से क्रमशः क्षान्त्यादिगुणों की हानि को प्राप्त करता हुआ नष्ट हो जाता है। अब सूत्रकार वृद्धि को स्पष्ट करने के लिये उसे दृष्टान्त से समझाते हैं-(जहावा सुक्कपक्खस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बिइया चंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहियपराए वण्णेणं जाव अहियपराए मंडलेणं-एवं खलु एएणं कमेणं पडिवुड्ढेमाणे२ जाव पुण्णिमा चंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं, एवामेव समणाउसो। जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं तयाणंतरं च णं अहियपराए खंतिए जाव बंभचेरवासेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढे माणे २.....बंभचेरवासेणं) जैसे शुक्ल पक्ष

પોતાના બધા ગુણોથી રહિત બની જાય છે તેમજ મુનિ પણ કુગુરૂના સંસર્ગથી અથવા અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ વગેરેની સંગતિથી સમ્યક્ત્વ રહિત થઈને પ્રમાદ સ્થાનોના સેવનથી ઉદય પામેલા ચારિત્ર મોહનીય કર્મના પ્રભાવથી અનુક્રમે ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોથી રહિત થઈને નાશ પામે છે. હવે સૂત્રકાર વૃદ્ધિને સ્પષ્ટ કરવાની ઇચ્છાથી દૃષ્ટાંત પૂર્વક સમજાવતાં કહે છે—

(जहावा सुक्कपक्खस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवया चंदं पणिहाय अहियपराए वण्णेणं जाव अहियपराए मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं पडिवुड्ढे माणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णेणं वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं तयाणंतरं च णं अहियपराए खंतीए जाव बंभचेरवासे णं एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढमाणे २ .... बंभचेरवासेणं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मण्डलेन=वृत्ताकारतया भवति। तदनन्तरं च खलु द्वितीयाचन्द्रः प्रतिपच्चन्द्रं प्रणिधाय अधिकतरः पूर्वदिनापेक्षया वर्णनान्यधिको भवति यावद् अधिकतरो मण्डलेन भवति। क्रमशो वृद्धिं प्राप्नोति एवं खलु एतेन क्रमेण 'परिवुड्ढेमाणे २' परिवर्धमानः २ प्रतिदिनं वृद्धिं लभमानो २ यावत् पूर्णिमाचन्द्रः 'चाउद्दसिं' चातुर्दशं चतुर्दशी सम्बन्धिनं चन्द्रं प्रणिधाय 'पडिपुण्णे' प्रतिपूर्णः=सम्पूर्णो वर्णेन यावत् प्रतिपूर्णो मण्डलेन-वृत्ताकाररूपेण भवति, पूर्णिमाचन्द्रः सकलकलाकलापकलिततया परिपूर्ण मण्डलवान् भवतीत्यर्थः।

'एवामेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः! 'जाव' यावत्-योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा २ आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् अधिकः=वृद्धिं सम्पन्नः क्षान्त्या यावद् अधिको ब्रह्मचार्यवासेन। तदनन्तरं च खलु

की प्रतिपदा का चन्द्रमा अमावास्या के चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मंडल तक वर्द्धमान होता हुआ अधिक होता है, और उसके बाद द्वितीया का चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मंडल तक अधिकतर हो जाता है-इस तरह के क्रम से जैसे प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त करता हुआ वह चन्द्रमा जब पूर्णिमा तिथि तक पहुँच जाता है तो चतुर्दशी तिथि के चन्द्रमा की अपेक्षा उस दिन वर्ण से लेकर अपने मंडल से परिपूर्ण बन जाता है। उसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु अथवा निर्ग्रन्थी साध्वी आचार्य उपाध्याय से दीक्षित बनकर क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के गुणों से वृद्धिसंपन्न होता है। और इस तरह इन सब से धीरे धीरे वह पहिले की अपेक्षा और अधिकतर सम्पन्न बन जाता है। इस प्रकार क्रमशः सम्पन्न बनता हुआ

જેમ શુકલ પક્ષની એકમનો ચંદ્ર અમાસના ચંદ્ર કરતાં વર્ણ મંડળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે. અને બીજનો ચંદ્ર જેમ એકમના ચંદ્ર કરતાં વર્ણ પરિમંડલ વિગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી દરરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચંદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોંચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચંદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વર્ણ પરિમંડળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે. આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુ કે નિર્ગ્રંથી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસેથી દીક્ષા મેળવીને ક્ષાંતિ ગુણથી માંડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા ગુણોથી વૃદ્ધિસંપન્ન થઈ જાય છે.

અને આ રીતે આ બધા ગુણોથી ધીમે ધીમે તે પહેલાં કરતાં વધુ સંપન્ન થઈ જાય છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે ગુણ સંપન્ન થતો તે ક્ષાંતિ બ્રહ્મ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिकतरः=अत्यधिकः क्षान्त्या यावद् अधिकतरो ब्रह्मचर्यवासेन। एवं खलु एतेन क्रमेण 'परिवड्ढमाणे २' परिवर्धमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पडिपुन्ने' प्रतिपूर्णः=सम्पन्नो ब्रह्मचर्यवासेन, क्षान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः।

यथा चन्द्रो नित्यराहुसंसर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभिर्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमायां वर्णादिना यावन्मण्डलेन परिपूर्णो भवति तथैव मुनिः कुगुरुसंसर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणकर्मक्षयोपशमादिना क्रमशः क्षान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुवन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति।

एवं खलु=जीवा अनेन प्रकारेण क्षान्त्यादि गुणवृद्ध्या वर्द्धन्ते वा तेषां हान्या

वह क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के समस्त गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। जिस प्रकार राहु के संसर्ग के अपनयन से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपनी कलाओं से अभिवर्धमान होता हुआ चन्द्रमा क्रमशः शुक्लचतुर्दशी कि अपेक्षा पूर्णिमासी के दिन वर्णादि से लगाकर मण्डल तक की अपनी समस्त कलाओं से परिपूर्ण हो जाती है

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के संसर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। (एवं खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा, एवं खलु जंबू समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते

ચર્યવાસ વગેરે બધા ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે. જેમ રાહુના સંસર્ગરહિત થઇને શુકલ પક્ષની એકમથી માંડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતો ચંદ્ર અનુક્રમે શુકલ પક્ષની ચૌદશ કરતાં પૂનમના દિવસે વર્ણ પરિમંડળ વગેરેની પોતાની સંપૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે.

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સોબત વગેરેને ત્યજીને તેમજ ચારિત્રાવરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિ કરતો કેવળજ્ઞાન, કેવળ દર્શન વગેરે ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે.

(एवं खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीयन्ते वा। एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः। 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि पूर्ववत् ॥सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां दशममध्ययनं समाप्तं ॥ १० ॥

त्तिबेमि) इस प्रकार क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि से जीव बढ़ते हैं और उनकी हानि से जीव घटते हैं यह कथन बन जाता है इस तरह हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीरने दशवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। मैंने उन्हीं के मुख से जैसा सुना है उसी के अनुसार यह कहा है ॥ सू० १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र "की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका दशवां अध्ययन समाप्त ॥ १०॥

ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિથી જીવો વૃદ્ધિ પામે છે અને ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની હાનિથી જીવો ઘટે છે. આમ આ કથનની સાર્થકતા સિદ્ધ થઈ જાય છે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરુપિત કર્યો છે. આ અર્થ મેં તેમના મુખેથી જે પ્રમાણે સાંભળ્યો છે તે જ પ્રમાણે તમારી સામે રજૂ કર્યો છે. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું દશમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૦॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकादशमध्ययनं प्रारभ्यते–

गतं दशममध्ययनं, साम्प्रतमेकादशमारभ्यते । पूर्वस्मिन्नध्ययने कृष्णशुक्लपक्षचन्द्रदृष्टान्तेन प्रमादाप्रमादवतोः क्षान्त्यादिगुणहानिवृद्धिभ्यामनर्थार्थौ प्रतिपादितौ, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थौ प्रदर्श्येते, अथ जम्बूस्वामी पृच्छति–' जइणं भंते ' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं२ रायगिहे गोयमे एवं वयासी–कहणं भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?, गो० ! से जहा णामए एगंसि समुद्दकुलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता किण्हा जाव निउरुंबभूया पत्तिया

दाव द्रव (वृक्ष) नामक ग्यारहवां अध्ययन प्रारंभ

दशवां अध्ययन समाप्त हो चुका–अब ग्यारहवां अध्ययन प्रारंभ होता है । इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस प्रकारसे संबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में कृष्ण और शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के दृष्टान्त से प्रमादी और अप्रमादी संयमी के क्षान्त्यादि गुणों की हानि एवं वृद्धि रूप अनर्थ एवं अर्थ की प्राप्ति होनी प्रतिपादित की गई है । अब इस अध्ययन द्वारा यह कहा जा रहा है कि जो संयम मार्ग की आराधना तथा विराधना करते हैं वे अर्थ और अनर्थ की प्राप्ति के पात्र होते हैं। जंबू स्वामी श्री सुधर्मासे पूछते हैं कि 'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમું અધ્યયન પ્રારંભ.

દશમું અધ્યયન પુરૂં થઈ ચૂકયું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરંભ થાય છે. આ અધ્યયનનો પહેલાંના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સંબંધ છે. પહેલાંના અધ્યયનમાં કૃષ્ણ અને શુકલ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાંતથી પ્રમાદી અને અપ્રમાદી સંયમીને ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. હવે આ અધ્યયનમાં જે સંયમ માર્ગની આરાધના તેમજ વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે. જંબૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(जइणं भंते ! समणेणं " इत्यादि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव२ उवसोभेमाणा चिट्ठंति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणोउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइये समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्मं सहति जाव अहियासे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा-ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हे निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो ! जयाणं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति तयाणं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहइ एसणं मए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्वविराहए पण्णत्ते । समणाउसो! जयाणं दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तया णं सव्वे दावद्दव्वा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो जो अम्हं जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते! एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया० एक्कारसस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एक्कारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिं सम्प्राप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिवृद्धिरूपः अर्थः भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, अथ एकादशस्याध्ययनस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले

टीकार्थ–(जइणं भंते !) यदि हे भदंत ! (समणेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स णं भंते । णायज्झयणस्सके अट्ठे पण्णत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने कि जो मुक्तिको प्राप्त हो चुके हैं, दशवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है– उन्हों श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि (एवं खलु जंबू !) सुनो जो उन्हों ने ग्यारहवें

ટીકાર્થ—(जइणं भंते !) હે ભદંત !

(समणेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते)

મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તેઓશ્રીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને સુધર્મા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मिन् समये राजगृहे नगरे गौतम एवमवादीत्-एवमपृच्छत्-कथं खलु भदन्त ! हे भगवान् ! जीवा आराधकाः=ज्ञानादि रत्नत्रयरूपमोक्षमार्गसाधकाः, विराधकाः= तद्विपरीता भवन्ति ? । एतमर्थं भगवान् दृष्टान्तेन वर्णयति-हे गौतम ! तद्यथा नामकं=यथा दृष्टान्तम्-एकस्मिन् समुद्रकूले=सागरतटे ' दावद्दवा ' दावद्रवाः, नाम=एतन्नामधेया वृक्षाः प्रज्ञप्ताः । कीदृशाः ? इत्याह-' किण्हा ' कृष्णाः= कृष्णवर्णा यावत् महामेघनिकुरम्बभूताः=जलसम्भृतमेघवृन्दसदृशा ' पत्तिया '

ज्ञानाध्ययन का अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे गोयमे एवं वयासी) उस काल और उस समय में राजगृहनगर में श्रमण भगवान् महावीर प्रभु पधारे—उनसे गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा- (कहण्णं भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?) हे भदंत ! जीव ज्ञानादि रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग के आराधक साधक-और विराधक कैसे-किस कारण से-होते है ? (गोयमा ! से जहानामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता) प्रभु ने उनकी इस बात का उत्तर इस तरह के दृष्टान्त से दिया-हे गौतम ! समुद्र के तटपर " दावद्रव " इस नामके बहुत से वृक्ष खड़े हुए थे (किण्हा जाव निऊरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति) ये सब जल से भरे हुए मेघों के समूह जैसे कृष्ण वर्ण के थे

સ્વામી તેને કહે છે કે (एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ! સાંભળો, પ્રભુએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे० गोयमे एवं वयासी)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા. ગૌતમ સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો—(कहण्णं भंते ! जीवा आराहगावा विराहगावा भवंति ? હે ભદંત ! જીવ જ્ઞાન વગેરે રત્નત્રય રૂપ મોક્ષ માર્ગના આરાધક-સાધક અને વિરાધક કેવી રીતે-શા કારણથી થાય છે ?

(गो० ! से जहानामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता)

પ્રભુએ તેમના તે પ્રશ્નનો જવાબ દૃષ્ટાન્તના આધારે આપતાં કહ્યું-હે ગૌતમ ! સમુદ્રને દ્રાવદ્રવ જાતિનાં ઘણાં વૃક્ષો હતાં.

(किण्हा जाव निऊरंब भूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरे रिज्जमाणा, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति)

એ બધાં વૃક્ષો જળપૂર્ણ મેઘ સમૂહોની જેમ કાળા રંગનાં હતાં. બધાં વૃક્ષો, પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ હતાં. લીલા રંગથી એ વૃક્ષો શોભતાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्रिता=पत्रयुक्ता 'पुप्फिया' पुष्पिताः=पुष्पयुक्ताः, 'फलिया' फलिताः=फल समृद्धाः, 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकरारायमानाः = हरितकेन = हरितवर्णेनातिशयशोभमानाः 'सिरीए' श्रिया = पत्रपुष्पादि शोभया अतीवातीव=अत्यन्तम् उपशोभमानाः शोभासंमन्नः, तिष्ठन्ति । यदा खलु=यस्मिन् काले 'दीविच्चगा' द्वैप्याः=द्वीपसम्भवाः 'ईसिंपुरेवाया' 'ईषत्पुरोवाताःस्वल्पाः पूर्वदिग्वायवः, 'पच्छावाया' पश्चाद्वाताः=पश्चिमदिग्वायवः 'मंदावाया' मन्दवाताः=शनैः शनैः सञ्चारिणो वायवः, 'महावाया' महावाताः=प्रचण्डवायवः 'वायंति' वान्ति=चलन्ति तदा खलु बहवो दावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् श्रियाऽतीवातीवोपशोभमानास्तिष्ठन्ति । 'अप्पेगइया' अप्येकका:=कतिपयाः=स्तोका

पत्र युक्त थे, पुष्प युक्त थे फलों से समृद्ध थे। हरित वर्ण से ये सब अतिशय शोभायमान हो रहे थे। इस तरह पत्र पुष्पादि की शोभा से इनकी शोभा अत्यंत निराली बनी हुई थी। इस कारण ये विशिष्ट शोभा संपन्न बने हुए थे। (जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्त पुप्फफलासुक्करुक्खाओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति) जिस समय द्वीप से उत्पन्न हुई पूर्व दिशा संबन्धी स्वल्प हवाएँ, पश्चिम दिशा संबन्धी स्वल्प हवाएँ, धीरे २ चलने वाली वायुएँ तथा प्रचण्ड वायुएँ चलने लगती तो उस समय अनेक दावद्रव वृक्ष पत्र पुष्पादि की शोभा से निराले, बने हुए ज्यों के त्यों खड़े रहते थे उनमें कुछ भी विकार नहीं होता था। तात्पर्य इसका यह है कि जब टापू से पूर्व दिशा

હતાં. પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી. એથી એઓ અવિશેષ શોભા-સંપન્ન લાગતાં હતાં.

(जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय पंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खाओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રચંડ પવનો ફૂંકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેરાં લાગતાં દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમાં ઊભાં હતાં તે જ સ્થિતિમાં વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને ઊભાં જ રહેતા હતાં. કહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મંદ, સુગંધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સંપન્ન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यर्थः दावद्दवा वृक्षा ' जुन्ना ' जीर्णाः=चिरकालीनाः ' झोडा ' झोडाः=शटनं, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडाः=शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, ' परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला ' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफलाः-परिशटितानि=शीर्णानि-अतएव पाण्डूनि= ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषां ते तथोक्ताः, ' सुक्कारुक्खओविव निलायमाणा ' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः २=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण ' समणाउसो ' हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत्प्रव्रजितः सन् बहूनां श्रमणानां बहीनां श्रमणीनां बहूनांश्रावकाणां बहीनां श्राविकानां कर्कशकठोर वचनाद्युपसर्गान् 'सम्मं' सम्यक्

पश्चिम दिशा संबन्धी मंद सुगंध शीतल समीर चलने लगता तो उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष थे वे ज्यों के त्यों अधिक शोभा संपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते। परन्तु उनमें जो दाव द्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सडे हुए थे जिनका मूल और स्कंध दोनो खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एवं फल परिशटित हो झड़-चुके थे वे शुष्क वृक्षो के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणाउसो ! जो अम्मं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वाइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं-समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा साध्वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावको के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वचचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલાં દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમાં જ સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાંછમ દેખાતાં હતાં. પણ તેઓમાં જે દાવદ્રવ વૃક્ષો જીર્ણ હતાં-જૂનાં હતાં-શીર્ણ-સડી ગયેલાં હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ ખોખલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાંદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશટિત થઈને ખરી પડ્યાં હતાં. તે તો સુકાઈ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને ઊભાં હતાં.

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वाइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ, કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मध्यस्थभावेन 'सहइ' सहते=मुखाद्यविकारकरणेन मर्षयति, 'खमइ' क्षमते क्रोधाभावेन, तितिक्खइ, तितिक्षते-अदीनाभावेन, 'अहियासेइ' अध्यास्ते निर्जराभावनयाऽन्तःकरणेन सहते। अथ च बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूनां गृहस्थानाम् प्रतिकूलवचनानि नो सम्यक्=सम्यग्भावेन सहते यावत् नो अध्यास्ते, एष खलु=एवम्भूतः पुरुषः 'मए' मया 'देसविराहए' देशविराधकः प्रज्ञप्तः।

पुनश्च हे श्रमणाः-आयुष्मन्तः! यदा खलु 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्रसम्बन्धिनः ईषत्पुरोवाताः स्वल्पपूर्वदिग्वायवः 'पच्छावाया' पश्चाद्वाताः=पश्चिम-

से सहन करता है उन वचनों को सुनकर जिनके मुख आदि में कोई विकार नही झलकता है क्रोध नहीं उत्पन्न होता है, अदीन भावसे जो उन्हें सहन करता है, निर्जरा की भावना से जो उन्हें अपने अन्तः करण से सहलेता है-तथा कुतीर्थिकों के गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को जो सहन नहीं करता है-यावत् उन्हें अध्यासित नहीं करता है ऐसा व्यक्ति मैंने देश विराधक प्रज्ञप्त किया है। (समणाउसो! जयाणं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते) पुनश्च-हे आयु-

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાંભળીને જેના મોં વગેરે અંગો ઉપર કોઇ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અંતરથી સહન કરી લે છે, તેમજ કુતીર્થિકોના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મેં દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે

(समणाउसो! जयाणं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिक् संभवा वायवः मन्दवाता महावाता वान्ति=प्रवहन्ति तदा खलु बहवे दावद्रवा वृक्षा जीर्णा झोडा शटितपूतस्कन्धाः यावत् म्लायन्त स्तिष्ठन्ति । तत्र 'अप्पेगइया' अप्येकका:=कतिपयाः दावद्रवा वृक्षाः पत्रिता यावत् उपशोभमानाः २ स्तिष्ठन्ति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा प्रव्रजितः सन् बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूनां गृहस्थानां प्रतिकूलवचनानि सम्यक् सहते, बहूनां श्रमणानां ४-श्रमणादीनां=चतुर्विधसङ्घस्येत्यर्थः वचनानि नो सम्यक् सहते एष खलु पुरुषो 'मए' मया देशाराधकः प्रज्ञप्तः । हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ! यदा खलु नो 'दीविच्चगा' द्वैप्याः=द्वीपसम्बन्धिनः नो 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्रसम्बन्धिन ईषत्पुरोवाताः पश्चाद्वाता यावत् महावाता वान्ति तदा खलु सर्वे द्रोवद्रवृक्षा जीर्णाः

ष्मंत श्रमणों ! जिस समय समुद्र से उत्थित पूर्व दिशा संबन्धी वायु स्वल्प पश्चिम दिशा संबंधी वायु, मन्द वायु एवं महा वायु चलती है उस समय कितनेक जीर्ण-पुराने-शीर्णदाव द्रव वृक्ष झोडा-पत्र पुष्पादि वर्जित वृक्ष तो म्लान के म्लान ही-शोभा रहित ही खड़े रहते हैं और कितनेक दाव द्रव वृक्ष जो पत्र पुष्पों से युक्त होते हैं वे हरेभरे सुन्दर ही प्रतीत होते रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु एवं साध्वी जन प्रव्रजित होता हुआ अनेक अन्यतीर्थिको के अनेक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को तो अच्छी तरह से सहन कर लेता है परन्तु अनेक श्रमण आदिकों के चतुर्विध संघ के-वचनों को सहन नही करता है-वह मेरे द्वारा देशाराधक प्रज्ञप्त हुआ है । (समणा उसो ! जया णं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छा

અને હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જ્યારે સમુદ્ર ઉપર થઇને વહેતો આવેલો પૂર્વ દિશાનો પવન, મંદ પવન અને પ્રચંડ પવન ફૂંકાય છે ત્યારે કેટલાક જીર્ણ-જૂના, શીર્ણ પાંદડાં અને પુષ્પો રહિત થયેલાં દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઇને શોભાહીન થઇને જ ઊભાં રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાંદડાંઓ પુષ્પોવાળાં છે-લીલાંછમ અને સુંદર જ લાગે છે. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થઇને ઘણા અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઇને સહન કરી લે છે પણ તેઓમાંથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સંઘના વચનોને જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે.

(समणाउसो ! जायाणं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति तयाणं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झोडा यावद् म्लान्तस्तिष्ठन्ति, अप्येककाः=कतिपयाः यावद् उपशोभमानास्तिष्ठन्ति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! यावत् प्रव्रजितः सन् बहूनां श्रमणानां ४ चतुर्विधसङ्घस्य, बहूनाम् अन्यतीर्थिकगृहस्थानां वचनानि नो सम्यक् सहते, एष खलु पुरुषः ' मए ' मया सर्वविराधकः प्रज्ञप्त । श्रमणा आयुष्मन्तः । यदा खलु ' दीविच्चगावि ' द्वैप्या अपि 'सामुद्दगावि ' सामुद्रका अपि ईषत्पुरोवाताः पश्चाद्वाता यावद् वान्ति तदा खलु सर्वे द्रावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् श्रिया उपशोभमानाः २ तिष्ठति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं यावत् प्रव्रजितः सन् बहूनां श्रमणानां ४=चतुर्विधसङ्घस्य बहूनाम् अन्यतीर्थिकगृहस्थानां प्रतिकूल वचनानि

वाया जाव महावाया वायंति–तयाणं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे सव्व विराहिए पण्णत्ते) हे आयुष्मंत श्रमणो जिस समय न तो द्वीपोत्थ पूर्व दिशा संबंधी स्वल्प वायुएँ, पश्चिम दिशा संबन्धी स्वल्प वायुएँ, धीरे २ चलने वाली वायुएँ एवं प्रचण्ड वेग शाली वायुएँ चलते हैं और न समुद्रोत्थ पूर्व दिशा संबन्धी स्वल्प वायुएँ, पश्चिम दिशा संबन्धी स्वल्प वायुएँ धीरे २ चलने वाली वायुएँ एवं प्रचंड वेग शाली वायुएँ चलते हैं उस समय भी जीर्ण शीर्ण दावद्रव वृक्ष म्लान ही रहते हैं–और जो पत्र पुष्पादिकों से युक्त होते हैं वे भी जैसे होते हैं वैसे ही बने रहते हैं इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एवं निर्ग्रन्थ साध्वी जन दीक्षित होता हुआ भी चतुर्विध संघ के और

मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहइ एस णं मए पुरिसे सव्व विराहिए पण्णत्ते)

હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપોના પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના પવનો ધીમે, ધીમે વહેતા પવનો, અને પ્રચંડ વેગથી ફૂંકાતા પવનો વહેતા નથી અને સમુદ્ર પર થઈને વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો, અને પ્રચંડ વેગે ફૂંકાતા પવનો વહેતા નથી ત્યારે પણ જીર્ણ, શીર્ણ દાવદ્રવ વૃક્ષો તો મ્લાન (કરમાયેલાં) રહે છે અને પત્રપુષ્પ વગેરેથી સંપન્ન દાવદ્રવ વૃક્ષો પણ જેવાં છે તેવાં જ રહે છે, આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ અને નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ દીક્ષિત થઈને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्यक् सहते एष खलु=एवम्भूतः पुरुष 'मए' मया सर्वाराधकः प्रज्ञप्तः, एवं खलु=अनेन प्रकारेण हे गौतम ! जीवा आराधका वा विराधका भवन्ति । सुधर्मा

अन्यतीर्थिक गृहस्थों के वचनों को अच्छी तरह सहन आदि नहीं करता है ऐसा यह साध्वादिजन मेरे द्वारा सर्व विराधक प्रज्ञप्त किया गया है । (समणा उसो ! जयाणं दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरे वाया पच्छा वाया जाव वायंति, तया णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणा उसो ! जो अम्हं जाव पव्वत्तिए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थिय गिहत्थाणं सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते । एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरे णं एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जिस समय द्वीपोत्थ भी तथा समुद्रोत्थ भी ईषत्पुरोवात पश्चाद्वात यावत् बहते हैं उस समय पुष्पित पत्रित आदि समस्त दावद्रव वृक्ष शोभा संपन्न ही बने रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो ! जो हमारा साधु साध्वीजन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमणादिकों के चतुर्विध संघ के–तथा अन्यतीर्थिक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को अच्छी तरह सहन कर लेता है ऐसा साधु आदि जन मेरे द्वारा सर्वाराधक

પણ ચતુર્વિધ સંઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે. એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કરવામાં આવ્યા છે.

(समणाउसो ! जयाणं दीविच्चगावि सामुद्दगा वि ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव वायंति, तया णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं जाव पव्वत्तिए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ! एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચંડ પવનો ફૂંકાય છે ત્યારે પાંદડાં અને પુષ્પોવાળાં બધા દાવદ્રવ વૃક્ષો શોભા સંપન્ન થઈને જ ઊભા રહે છે. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સંઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનો સાંભળીને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी प्राह-एवं खलु=पूर्वोक्तप्रकारेण हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगतिं संप्राप्तेन एकादशस्य अयं=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः। 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि, इति पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां एकादशमध्ययनं समाप्तम् ॥११॥

रूप से प्रज्ञप्त हुआ है। इस प्रकार हे गौतम ! जीव आराधक और विराधक होते हैं। सुधर्मा स्वामी जंबू स्वामी से कहते है कि हे जंबू ! इस पूर्वोक्त रूप से श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धि गति को प्राप्त कर चुके हैं ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का यह अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने तुम से जैसा सुना है वैसा यह कहा है। इस में निज की कुछ भी कल्पना नही है। सूत्र ॥ १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का ग्यारहवां अध्ययन समाप्त ॥ ११ ॥

સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વારાધક રૂપે પ્રજ્ઞપ્ત થાય છે. આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો હોય છે. સુધર્મા સ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જંબૂ ! સિદ્ધિગતિ પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે. મેં જે રીતે સાંભળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એમાં મેં મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેર્યું નથી. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત. ॥૧૧॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ द्वादशमध्ययनं प्रारभ्यते–

गतमेकादशमध्ययनं, साम्प्रतं द्वादशमारभ्यते, पूर्वस्मिन्नध्ययने चारित्रस्याराधकत्वं तद् विराधकत्वं च प्रोक्तम् इह तु उदकदृष्टान्तेन मलोमलपरिणामपरिणमितान्तःकरणानामपि भव्यानां सुगुरुपरिकर्म तत्राविराधकत्वं भवतीति प्रदर्श्यते-अत्रेदमादिसूत्रम्—'जइणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणंर चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जितसत्तू राया धारिणीदेवी, अदीण-

---

बारहवां अध्ययन प्रारंभ "

जितशत्रु राजा सुबुद्धि प्रधान का वर्णन

ग्यारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका अब बारहवां अध्ययन प्रारंभ होता है। इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है–पूर्व अध्ययन में जो जीव चारित्र का पालन करता है वह आराधक और जो इससे विपरीत भाव वाला होता है वह विराधक है यह प्रकट किया गया है। अब इस अध्ययन में उदक के दृष्टान्त से यह प्रकट किया जायगा कि जिन भव्य जीवों का अन्तः करण मलीन परिणामों से परिणत हो रहा है–परन्तु उनमें यदि सुगुरु परिकर्मता–गुण विशेष का ग्रहण करना है तो उससे वहां चारित्राराधकता आ जाती है 'जइणं भंते !' इत्यादि ।

જીતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ પ્રધાનનું બારમું અધ્યયન.

અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત થઈ ચૂકયું છે અને હવે બારમું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. આનો પહેલાં અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણે સબંધ છે કે પહેલાંના અધ્યયનમાં જે જીવ ચારિત્રનું પાલન કરે છે તે આરાધક અને જે એના વિપરીત ભાવવાળો હોય છે તે વિરાધક છે એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે. આ અધ્યયનમાં ઉદકના દૃષ્ટાંતથી આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ થશે કે જે ભવ્ય જીવોનું અન્તઃકરણ (અંતર) ખરાબ પરિણામોથી પરિણત થઈ રહ્યું છે, પણ તેમનામાં જો સુગુરુ પરિકર્મતા ગુણ વિશેષનું ગ્રહણ કરવું છે તો ત્યાં ચારિત્રારાધકતા આવી જાય છે. જ ઇ ણં ભંતે ઇત્યાદિ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्तू नामं कुमारं जुवराया यावि होत्था, सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुरांचिंतए समणोवासए, तीसेणं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेय-वसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्थदरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव फासेणं पण्णत्ते ॥सू० १॥

टीका—जम्बूस्वामीप्राह-यदि खलु भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन एकादशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः द्वादशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? श्री सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी, पूर्णभद्रं चैत्यं, जितशत्रूराजा,

जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते है कि (जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्ते णं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ?) हे भदंत ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से भाव अर्थ निरूपित किया है-तो कहिये उन्हों ने बारहवें ज्ञाताध्ययनका क्या अर्थ

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રીસુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू !)

હે ભદંત ! સિદ્ધગતિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અગિયારમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તેઓશ્રીએ બારમા અધ્યયનનો શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે હે જંબૂ સાંભળો તેઓ શ્રીએ બારમા અધ્યયનનો જે રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તે આ પ્રમાણે છે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुर्नाम कुमारः=जितशत्रुराजपुत्रः 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्यः औत्पातिक्यादिबुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रज्जधुराचिंतए' राज्यधुराचिन्तकः=राज्यभारचिन्तकः 'समणोवासए' श्रमणोपासकः=श्रावकोऽभिगतजीवाजीवआसीत् । तस्याश्चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये एकं 'परिहोदए' परिखोदकं परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीनां प्रवेष्टुमशक्या गर्त्तरूपावेष्टनाकारभूमिः, तत्र सम्भृतमुदकं परिखोदकं 'खाईजल' इतिभाषाप्रसिद्धं चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ?। हे जंबू ! सुनो–जो उन्होने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है– (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी। उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी। अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था। यह युवराज था। (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था। यह औत्पत्तिकी आदि चारों प्रकार की बुद्धि से संपन्न था। यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था। जीव अजीव आदि तत्त्वों का यह ज्ञाता था और श्रमणोपासक था। (तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चंपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में–ईशानकोण में–परिखोदक–खाईमें जल भरा था। दुर्ग (किल्ला)के चारों और बाहरकी तरफ

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો. તે નગરીના રાજાનું નામ જીતશત્રુ હતું. ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી. તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું. અને તે યુવરાજ હતો. (सुबुद्धि अमच्चे जाव रज्जधुरा चिंतए समणोवासए) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મંત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસંપન્ન હતો અને રાજ્યનું શાસન તેના હાથમાં જ હતું. જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेणं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था)

ચંપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિશામાં–ઈશાન કોણમાં–પરિખોદક ખાઇમાં પાણી ભર્યું હતું. દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादि, ' मेयवसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडं ' मेदोवसामांसरुधिरपूयपटलपोच्चडं ' मेदः=शरीरस्थधातुविशेषः, वसा=अस्थिगतस्निग्धधातुविशेषः, ' चर्बी ' इति प्रसिद्धः मांसं=प्रसिद्धं रुधिरं=शोणितं, पूयं=विकृतरुधिरम् , तेषां पटलेन=समूहेन पोच्चडं=मिश्रितं सबुद्बुदमित्यर्थः। ' मयगकलेवरसंछण्णे ' मृतककलेवर संछन्नं=श्वमार्जारादिमृतकलेवरसंभृतम् । ' अमणुण्णं ' अमनोज्ञम्-अरुचिकरं वर्णेन ' जाव ' यावत्-गन्धेन रसेन स्पर्शेन च मनोविकृतिजनकमित्यर्थः। तदेव सदृष्टान्तं प्रश्नोत्तरेण वर्णयति-' से जहानामए ' तद् यथा नामकम्-यथा दृष्टान्तम्-यथा-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतकमिति वा=सर्पमृतकम् , ' गोमडेइ वा ' गोमृतकमिति वा ' जाव ' यावत्-एवं यावच्छब्देन श्वमृतकं, मार्जारमृतकं, मनुष्यमृतकं, महिष-

उस से लगा हुआ एक गोलाकार बड़ी भारी खाई थी। इस की वजह से शत्रु उस दुर्ग-किल्ले में सहसा-एका एक प्रविष्ट नहीं हो सकते। इस में पानी भरा रहता है। इस का नाम खातिकोदक भी है। (मेयवसामंसरुहिर-पूय-पडल-पोच्चडे मयगकलेवरसंछन्ने अमणुन्ने वण्णेणं जाव फासेण-से जहा नामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे, किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णोइणट्ठे समट्ठे एतो अणिट्ठत्तराए चेव जाव फासेणं पण्णत्ते यह परिखा का पानी, मेदावसा-चर्बी-मांस, रुधिर, पूय-पीप, के समूहसे मिश्रित था। कुत्ते, मार्जार आदि के मृत शरीरों से युक्त था। अरुचिकारक था गन्ध, रस एवं स्पर्श से यह मनो विकृति जनक बना) हुआ था। इसी बात को दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया जाता है-जिस प्रकार मर जाने के बाद श्वमृतक-मरे हुए कुत्ते का कलेवर बिल्ली का

ગોળાકારે એક મોટી ખાઈ હતી. તેથી શત્રુ એકાએક સરળતાથી દુર્ગમાં પ્રવેશવાની હિંમત કરી શકતા નહોતા, તેમાં પાણી ભરેલું હતું આનું બીજું નામ ' ખાતિકોદક ' પણ છે.

(मेयवसा मंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछन्ने अमणुन्ने वण्णेणं जाव फासेणं से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय कुहिय विणट्ठ किमिणवावण्णदुरभिगंधे, किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, एतो अणिट्ठत्तराए चेव जाव फासेणं पण्णत्ते)

આ પરિખા-ખાઈનું પાણી પુષ્કળ પ્રમાણમાં મેદા, વસા, ચરબી, માંસ, રુધિર, લોહી, પૂય,-પરુથી મિશ્રીત હતું કૂતરા, બિલાડા વગેરેના મરી ગયેલા શબોથી તે યુક્ત હતું. તે અરુચિકારક હતું અને ગંધ, રસ તથા સ્પર્શથી મનોવિકૃતિજનક હતું. એ જ વાત દૃષ્ટાંત વડે અહીં રજુ કરવામાં આવે છે. જેમ મરી ગયા પછી શ્વમૃતક મરી ગયેલા કૂતરાનું કલેવર (શરીર) બિલાડીનું કલેવર,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृतकं, मूषकमृतकम्, अश्वमृतकं, हस्तिमृतकं, सिंहमृतकं, व्याघ्रमृतकं, वृकमृतकं= वृकः 'भेडिया' इति प्रसिद्धः-श्वापदविशेषस्तस्य मृतकलेवरम्, द्वीपिकमृतकं= द्वीपिकः=चित्रकः 'चीता' इतिप्रसिद्धः श्वापदविशेषस्तस्य मृतशरीरम्-, इति संग्राह्यम्, कीदृशावस्थापन्नं तदहिमृतादिकम् ? इत्याह--'मयकुहियविणट्ठ किमिणवावण्णदुरभिगंधे' मृतकुथितविनिष्टकृमिमद् व्यापन्नदुरभिगन्धम्=मृतं= जीवविप्रमुक्तमात्रमेव कुथितं शटितं, विनष्टं=स्वाकारतो नष्टं वायुजलभरणेन इति-वत्स्थूलतामुपगतमित्यर्थः, कृमिवत्=चिरकालिकत्वात्कृमिसंकुलम्, अतएव व्यापन्नं= सर्वदिक् प्रसृतं दुरभिगन्धम्=अतिशयदुर्गन्धयुक्तम्। 'किमिजालाउले' कृमिजाला-

कलेवर, मनुष्य का कलेवर महिष भैंसे का कलेवर, चुहा का कलेवर, घोड़े का कलेवर, हाथी का कलेवर, सिंह का कलेवर, व्याघ्र का कलेवर, वृक का कलेवर, द्वीपिक का कलेवर कुथित, विनष्ट, कृमिमत, व्यापन्न एवं दुरभिगंध युक्त कृमिजालाकुल-कीड़ों से व्याप्त तन्मय, अशुचि, विकृत एवं बीभत्स, दृश्य रूप हो जाते हैं-सो इन सब से भी अधिक अनिष्टतर-अत्यंत घृणा जनक-वह खाई का जल था। मरने के बाद शरीर जो सड़ने लग जाता है इस का नाम कुथित है। वायु और जल के भर जाने से जिस प्रकार मशक फूल जाती है उसी प्रकार जीव रहित होने के बाद जो शरीर फूल जाता है इस का नाम विनष्ट है। इस स्थिति में वह पदार्थ अपने पूर्वाकार से भिन्नाकार वाला हो जाता है। जो शरीर बहुत दिनों तक जीव रहित पड़ा रहता है इस में सड़ जाने की वजह से कीड़े पड़ जाते हैं-इस का नाम कृमिमत् है। जिस में से

માણસનું કલેવર, પાડાનું કલેવર, ઉંદરનું કલેવર, ઘોડાનું કલેવર, હાથીનું કલેવર, સિંહનું કલેવર, વાઘનું કલેવર, વરુનું કલેવર અને દીપડાનું કલેવર, કુથિત, વિનષ્ટ, કીડાઓવાળું, વ્યાપન્ન અને દુરભિ-ગંધયુક્ત કૃમિઓથી આક્રાંત કીડાઓથી વ્યાપ્ત-તન્મય, અશુચિ વિકૃત અને બીભત્સ દૃશ્યવાળું થઈ જાય છે તેમ એના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટતર અત્યંત ઘૃણાજનક તે ખાઈનું પાણી હતું. મરણ પછી શરીર સડવા માંડે છે તેને 'કુથિત' કહે છે. જેમ પવન અને પાણીથી ભરાએલી મશક ફૂલીને મોટી થઈ જાય છે તેમજ નિર્જીવ થયેલું શરીર પણ ફુલાઈને મોટું થઈ જાય છે તેનું નામ 'વિનષ્ટ' છે. પદાર્થની જ્યારે આવી સ્થિતિ થાય છે ત્યારે તે પહેલાંના આકાર પ્રકારથી સાવ ભિન્ન આકાર વાળો થઈ જાય છે. શરીર બહુ દિવસો નિર્જીવ થઈને મડદાનાં રૂપમાં પડી રહે છે ત્યારે તે સડી જવાથી તેમાં કીડાઓ પડી જાય છે, એને કૃમિમત્ કહે છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुलं= कृमिपुञ्जयुक्तं यत्र तत्रावयवे पुञ्जीभूतकृमिव्याप्तम्, अतएव 'संसत्तं' संसक्तं तन्मयमित्यर्थः, 'असुइ विगयबीभत्थदरिसणिज्जं' अशुचिविकृतबीभत्स-दर्शनीयम् अशुचि=अस्पृश्यत्वादपवित्रं, विकृतं=विकारयुक्तं, बीभत्सं=घृणितं दर्शनीयं=दृश्यं यस्य तत्तथोक्तम् 'एयारूवेसिया' एतद्रूपं स्यात्-किम् अहिमृतादि-सदृशं स्यात्-अस्ति ?, इति प्रश्नो भवेत् भगवानाह-'नो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः-नैतादृशं किन्तु-'एत्तो' एतस्मादपि अणिट्ठतराए चेव' अनिष्टतरमेव अत्यन्तघृणाजनकं यावत् स्पर्शेन प्रज्ञप्तम् ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइं ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राई-सर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विपुलं असणं४ जाव विहरति, जिमियभुत्तुत्त-रागए आयंते चोक्खे परमसुइभूये तंसि विपुलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिइए एवं वयासी-अहो णं देवाणुप्पिया! इमे मणुण्णे असणं४ वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हाय-णिज्जे, तएणं ते बहवे ईसर जाव पभिइओ जियसत्तू एवं वयासी-तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे वयह अहो णं इमे मणुण्णे असणं४ वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे, तएणं

चारों ओर दुर्गंध फैल रही हो उस का नाम दुरभिगंध है। सड जाने के बाद जिस के अंग उपांग सब तरफ बिखरे हुए पड़े हों उस का नाम व्यापन्न हैं। यहां मृतक शब्द से जीव रहित शरीर लिया गया है। सूत्र ॥१॥

જેમાંથી ચોમેર દુર્ગંધ પ્રસરી રહે છે તેને 'દુરભિગંધ' કહે છે. મડદું સડી જાય છે અને તેનાં બધાં અંગો ઉપાંગો ચોમેર વિખેરાઈ જાય તેને 'વ્યાપન્ન' કહે છે. અહીં મૃતક શબ્દથી નિર્જીવ શરીર સમજવું જોઇએ. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जितसत्तू सुबुद्धिअमच्चं एवं वयासी—जहा णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणं४ जाव पल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी जितसत्तूस्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं जितसत्तू सुबुद्धिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुन्ने तं चेव जाव पल्हायणिज्जे, तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे जितसत्तूं रायं एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असणं ४ केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधावि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तएणं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठं नो अढाइ नो परियाणई तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से जितसत्तू अण्णया कयाई ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचरगर आसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ । तएणं जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, एगंतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ एवं वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए ! अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते बहवे राईसरपभिइओ जाव एवं वयासी–तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव अमणामतराए चेव, तएणं ते बहवे राईसर पभिइओ जाव एवं वयासी–तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी – अहो णं सुबुद्धि ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए, चेव, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी --अहो णं तं चेव, तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी--मा णं तुमं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि, तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो णं जियसत्तू संते तच्चे ताहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पच्चंतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि णिसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ दोच्चंपि नवएसु घडएसु, गालवेइ गालवित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता सज्जक्खारं पक्खिवावेइ लंछियमुद्दिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ तच्चंपि णवएसु घडएसु जाव संवसावेइ एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त२ राईंदिया विपरिवसावेइ, तएणं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा०२ करयलंसि आसादेइ आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिइज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहि संभारेइ संभारित्ता जितसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि२ जियसत्तूस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तएणं से पाणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता तं उदगरयणं गिण्हाइ गिण्हित्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असण४ आसाएमाणे जाव विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए यावि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एवं वयासो–तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हाणिज्जे, तएणं जियसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तएणं से पाणियघरिए जियसत्तुं एवं वयासी–एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–अहो णं सुबुद्धी केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे५ जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणं कओ उवलद्धे ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी-- एसणं सामी ! से फरिहोदए, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी-एवं खलु सामी! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठं नो सद्दहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, अहोणं जियसत्त संते जाव भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स रन्नो संताणं जाव सब्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेमि२ तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी–तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तूस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएणं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठं नो सद्दहइ३ असद्दहमाणे३ अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एवं वयासी--गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह तेऽवि तहेव संभारेंति संभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेंति, उवणित्ता तएणं जियसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएइ आसायणिज्जं जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वयासी–सुबुद्धी ! एएणं तुमं संता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी–एएणं सामी! मए संता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खइ जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयाइं, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी –सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं३ जाव से जहेव जं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवा-णुप्पिया ! मा पडिबंधं० तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्च-स्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडि-वज्जइ, तएणं जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं सामी संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामिणं तुब्भेहि अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–अच्छासु ताव देवाणु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्पिया ! कइवयाइति वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालसवासाइं वीइक्कंताइं. तेणं कालेणं२ थेरागमणं तएणं जियसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं आमंतेमि, अहासुहं, तएणं जियसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी—जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि, तं जइणं देवाणुप्पिया जाव पव्वयहि तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरुहित्ताणं मम अंतिए पाउब्भवइ, तएणं जियसत्त कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वइए। तएणं जियसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे तएणं सुबुद्धी एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ५ ॥

॥ बारसमं नाअज्झयणं समत्तं ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स जितशत्रू राजा=चम्पाधिपतिः अन्यदा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कदाचित्=एकदा स्नातः ' कयबलिकम्मे ' कृतबलिकर्मा=कृत वायसाद्यर्थमन्नादि विभागः यावद् अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः बहुभिः राजेश्वर यावत् सार्थवाह प्रभृतिभिः सार्द्धं भोजनवेलायां भोजनमण्डपे सुखासनवरगतो विपुलम् अशनम्= अन्नादिकं, पानं=पानीयमपाणकादिकं, खाद्यं=द्राक्षाबादामादिकं स्वाद्यं=लवंग पूगीफलादिकं चतुर्विधमप्याहारमास्वादयन् ' जाव विहरइ ' यावत् विस्वादयन्, परिभोगयन्, परिभाज्यमानः, परिभुञ्जानो विहरति । ' जिमियभुत्तुत्तरागए '

' तएणं से जियसत्तू राया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से जियसत्तू राया) वे जितशत्रु राजा (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घा भरणालंकियसरीरे बहूहिं राइसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयण मंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं४ जाव विहरइ) स्नान करके तथा बलिकर्म-वायस आदि के लिये अन्नादि का विभाग-देन करके अल्प भारवाले बहुमूल्य अलंकरोंको पहिने हुए भोजन करने के समय में भोजन शाला में सुन्दर आसन पर आकर बैठ गये। उस समय उनके साथ में और भी अनेक राजेश्वर आदि सार्थवाह पर्यन्त समस्त जन थे। वहां इन सबके साथ वे वहां आशनपान आदि चारों प्रकार का आहार करने लगे। अन्नादिक अशन पीने योग्य पदार्थ पान, द्राक्षा बादाम आदि स्वाद्य एवं लवंग सुपारी आदि स्वाद्य है।

' तएणं से जियसत्तू राया ' इत्यादि

ટીકાર્થ—(तएणं) त्यारपछी (से जियसत्तू राया) ते शत्रुराजा (अन्नया कयाइं) કોઈ વખતે

(ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राइसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા અલંકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રસોઈ ઘરમાં આવીને સુંદર આસન ઉપર બેસી ગયા. તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્થવાહો વગેરે હતા. રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો જમવા લાગ્યા. અન્ન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાક્ષ, બદામ વગેરે ખાદ્ય અને લવિંગ-સોપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिमितभुक्तोत्तरागतः-जिमितः=भुक्तवान् , भुक्तोत्तरं= भोजनानन्तरम् आगतः= उपवेशनस्थानं प्राप्तः, किम्भूतः सन् ? इत्याह-' आयंते ' आचान्तः शुद्धोदकेन कृतचुलुकः, ' चोक्खे ' चोक्षः=सिक्थादिलेपरहितः, अतएव ' परमसुइभूए ' परमशुचिभूतः = परमशुद्धः तस्मिन् विपुलेऽशनपानखाद्यस्वाद्ये यावद् ' जायविम्हए ' जातविस्मयः=समुत्पन्नपरमाश्चर्यो जितशत्रू राजा तान् बहून् ईश्वर यावत्-प्रभृतीन्-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-श्रेष्ठि सेनापति सार्थवाह प्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! इदं ' मणुण्णे ' मनोज्ञं=सर्वथा

(जिमियभुत्तुत्तरागए आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिइए एवं वयासी) जब अच्छी तरह भोजन हो चुका-वे सबके सब बैठक में आये। बैठक में आने के पहिले ये हाथ मुँह धोकर बिलकुल साफ हो चुके थे। अन्नादिकके सीत जो इनके हाथ पैरों में कहीं २ पड़ गये थे-उन्हें जल से इन्होंने साफ कर दिया था-धो दिया था। इस तरह परम शुचीभूत होकर राजाने उस विपुल आशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में विस्मित आश्चर्ययुक्त बन कर उन ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक,श्रेष्ठी, सेनापति एवं सार्थवाह आदिकों से इस प्रकार कहा-(अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणं४वण्णेणं उववेए जाव फासे णं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पणिज्जे मयणिज्जे, बिंहणिज्जे, सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे) देवानु-

(जिमियभुत्तुत्तरागए आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण-४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसरजाव पभिइए एवं वयासि)

જ્યારે તેઓ સરસ રીતે તૃપ્ત થઈને જમી રહ્યા ત્યારે તેઓ સર્વે બેઠકમાં આવ્યા બેઠકમાં આવતાં પહેલાં તેઓ હાથ મોં ધોઈને સ્વચ્છ થઈ ચૂકયા હતા. અન્ન વગેરેના દાણા તેમના શરીર ઉપર જમતી વખતે પડી ગયા હતા તેઓને પાણીથી ધોઇને સાફ કર્યા. આ રીતે એકદમ પવિત્ર થઇને પુષ્કળ પ્રમાણમાં તૈયાર કરવામાં આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારોથી નવાઈ પામેલા રાજાએ બીજા સાથે રહેલા ઈશ્વર, તલવર, માંડલિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠ, સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनस्तृप्तिकरम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं वर्णेन=शुभवर्णेन उपपेतं यावत् स्पर्शेनोपपेतम्, 'आसायणिज्जे' आस्वादनीयम्=आस्वादनयोग्यम्, 'विस्सायणिज्जे' विस्वादनीयं=विशेषत आस्वादनयोग्यम्, 'पीणणिज्जे' प्रीणनीयं=समस्तेन्द्रिय प्रीतिजनकम्, 'दीवणिज्जे' दीपनीयं = जठराग्निदीपनकं शरीरसौन्दर्यजनकं वा, 'दप्पणिज्जे' दर्पनीयं=बलजनकम्, मयणिज्जे' मदनीयं=कामोद्दीपकम् 'बिंहणिज्जे' बृंहणीयं=सकलधातूपचयजनकम्, सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयं=सकलेन्द्रियशरीरसुखजनकं वर्त्तते। ततः खलु ते बहवः ईश्वर यावत् सार्थवाहप्रभृतयो जितशत्रुं प्रत्येवमवदन् 'तहेवं' तथैव तादृशमेव खलु हे स्वामिन्! यत्खलु यूयं वदथ, अहो! खलु इदं मनोज्ञमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विधमप्याहारं वर्णेन उपपेतं

प्रियो! मनको तृप्ति करने वाला यह अशनादि रूप चतुर्विध आहार कितने अच्छे शुभवर्ण से युक्त था, कितने अच्छे शुभ स्पर्श से युक्त था कितना अच्छा आस्वादनीय एवं विशेषरूप से स्वादनीय था इसे खाकर समस्त इन्द्रियां तृप्त हो गई हैं। यह जठराग्नि का दीपक है, अथवा शारीरिक सौन्दर्य का जनक है। बलवर्धक है। कामोद्दीपक है। इसे खाने वाले की समस्त धातुएं उपचित हो जाती हैं। समस्त इन्द्रियों एवं शरीर को इसके खाने से आनन्द पहुँच रहा है। तात्पर्य यह चतुर्विध आहार बड़ा ही आश्चर्यकारक है (तएणं ते बहवे ईसर जाव पभिइओ जियसत्तू एवं वयासी) और अधिक क्या कहूँ यह तो बहुत ही अधिक उत्तम था। राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन ईश्वर आदि अनेक सार्थवाहोंने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा (तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे वदह-अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं

હે દેવાનુપ્રિયો! મનને તૃપ્ત કરનારો આ અશન વગેરેનો ચાર જાતનો આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો સરસ આસ્વાદનીય અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો. આ આહારને જમીને ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઇ ગઈ છે. આ જઠરાગ્નિનો ઉદ્દીપક છે તેમજ શારીરિક સૌંદર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે. બળવર્ધક અને કામોદ્દીપક છે. એને જમવાથી બધી ધાતુઓ ઉપચિત (વૃદ્ધિ પામવું) થઇ જાય છે. આ આહારથી બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે. મતલબ એ છે કે આ ચાર જાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે. (तएणं ते ईसर जाव पभिइओ जियसत्तू एवं वयासी) અને વધારે શું કહી શકીએ. તે બહુ જ ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શંકા નથી. રાજાની આ વાત સાંભળીને તે ઇશ્વર વગેરે ઘણા સાર્થવાહોએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे वदह-अहोणं इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेतमर्थं नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः=सन्मौनः संतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिममात्यं द्वितीयमपि तृतीयमपिवारमेवमवादीत्–अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इदं मनोज्ञं तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम् , ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जितशत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन जितशत्रुं राजानमेवमवादीत्–नो उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हां स्वामिन् ! जैसा आप कहते हैं आहार वैसा ही था। वह बड़ा ही मनोज्ञ एवं शुभवर्ण से युक्त था। यावत् समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था ! (तएणं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) अपनी बात का ईश्वर आदि समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से भी यही बात कही कि (अहो णं सुबुद्धी–इमे मणुण्णे असणं ४ जाव पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध अशनादि रूप यह आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था ! (तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठं णो आढाइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठई) इस प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशंसा सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने राजा की इस बातकी अनुमोदना नहीं की–प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा–(तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी

उववेए जाव पल्हायाणिज्जे)

હા સ્વામિન્ ! ખરેખર જેમ તમે કહો છો તેમ આહાર પણ એવો જ હતો તે ખૂબ જ મનોજ્ઞ અને શુભવર્ણ વાળો હતો. યાવત્ સંપૂર્ણ શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ પમાડનાર હતો. (तएणं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) પોતાના કથન વિશે ઈશ્વર વગેરે બધાઓથી સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને રાજાએ પોતાના અમાત્ય (મંત્રી) સુબુદ્ધિને પણ એજ વાત કહી કે

(अहोणं सुबुद्धी इमे मणुण्णे असणं ४ जाव पल्हायणिज्जे)

હે સુબુદ્ધિ ! બતાવો, મનોજ્ઞ ચાર જાતનો અશન વગેરે રૂપ આ આહાર કેટલો બધો શુભવર્ણો યુક્ત યાવત્ આનંદ આપનાર હતો.

(तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठंणो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ)

આ રીતે રાજાના મુખેથી આહાર વિશેનાં વખાણ સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તો તેમની વાત ને ટેકો આપ્યો નહિ પણ તે માત્ર મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો

तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–अहो णं सुबुद्धी ! इमे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन् मनोज्ञे-अशनपानखाद्यस्वाद्ये कोऽपि विस्मयः; एवं खलु हे स्वामिन् ! सुब्भिसद्दा सुरभिशब्दाः=प्रशस्तशब्दा अपि पुद्गलाः शुभाः शब्दपुद्गला अपीत्यर्थः ' दुब्भिसद्दत्ताए ' दुरभिशब्दतया परिणमन्ति, दुरभिशब्दा अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरभिशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति।

-अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तू रायं एवं वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु राजाने दुबारा एवं तिबारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ चतुर्विध आहार कितना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचा ने वाला था। इस प्रकार दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा-(नो खलु सामी अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असणं ४ केइं विम्हए-एवं-खलु सामी सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति) स्वामिन् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार में कोइ आश्चर्य नहीं हो रहा है। कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं।

मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे-तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तूं रायं एवं वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચાપ બેઠેલો જોઇને જિતશત્રુ રાજાએ બીજી ત્રીજી વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર જાતનો આહાર કેટલો બધો સરસ શુભવર્ણોપેત યાવત્ આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ આપનાર છે. આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(नो खलु सामी अम्हं एयंसि मणुण्णं सि असणं ४ केइं विम्हए एवं खलु सामी सुब्भि सद्दा वि पुग्गला दुब्भि सद्दत्ताए परिणमंति दुब्भि सद्दावि पोग्गला सुब्भि सद्दत्ताए परिणमंति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર જાતના આહાર વિશે મને કંઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે. અને જે અશુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरूपा अपि पुद्गलाः दुरूपतया=कुत्सितरूपतया परिणमन्ति दूरूपा अपि पुद्गलाः सुरूपतया परिणमन्ति । सुरभिगंधा अपि पुद्गलाः शुभगन्धवन्तः पुद्गला अपि दुरभिगन्धतया परिणमन्ति. दुरभिगन्धा अपि पुद्गलाः सुरभिगन्धतया=सुगन्धरूपेण परिणमन्ति। सुरसा अपि=शुभरसवन्तोऽपि पुद्गलाः दूरसतया=अशुभरसतया=परिणमन्ति, दूरसा अपि पुद्गला सुरसतया शुभरसरूपेण परिणमन्ति। शुभस्पर्शा अपि पुद्गलाः दुस्पर्शतया परिणमन्ति, दुस्स्पर्शा अपि पुद्गला शुभस्पर्शतया परिणमन्ति। 'पओग-

इसी तरह (सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति.....परिणमंति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते हैं वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते है वेअशुभ रूप से परिणम जाते हैं। (सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति, दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति, पओगवीससा परिणया वि य णं सामी पोग्गला पण्णत्ता) जो पुद्गल सुरभि गंध रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल दुरभि गंध रूप से परिणम जाते हैं। इसी तरह जो पुद्गल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल कुत्सितरुप से परिणम जाते हैं और जो कुत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते हैं। जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

જાય છે આ પ્રમાણે (सुरूवा वि पोग्गला दुरुवत्ताए परिणमंति..... परिणमंति) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે.

(सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति. सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसावि पोगला सुरसत्ताए परिणमंति दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति, पओगवीससा परिणया वि य णं सामी पोग्गला पण्णत्ता)

જે પુદ્ગલો સુરભિગંધ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગંધ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે. આ રીતે જે પુદ્ગલો સરસ રૂપમાં પરિણત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કુત્સિત (ખરાબ) રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે. અને જે કુત્સિત રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો થઈ જાય છે. જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે. અને જે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीससापरिणयावि' प्रयोगविस्रसा परिणता अपि, प्रयोगेण=प्रयोगपरिणामेन जीवकृतव्यापारेण विस्रसया=विस्रसापरिणामेन स्वभावेनैव च परिणताः=एकावस्थाया अवस्थान्तरं प्राप्ताः सुशब्दादयः पुद्गलाः दुःशब्दादित्वेन दुःशब्दादयश्च सुशब्दादिरूपेण परिणता इत्यर्थः पुद्गलाः खलु भवन्तीति हे स्वामिन् ! प्रज्ञप्ताः=भगवता कथिताः । ततः खलु स जितशत्रुः सुबुद्धेरमात्यस्य एवम्=उक्तरूपेण 'आइक्खमाणस्स' आचक्षाणस्य=कथयतः, एतम्=पूर्वोक्तम् अर्थम्=शब्दादिपुद्गलानां शुभाशुभपरिणामरूपं भावं नो आद्रियते=तद्वाक्यस्याऽऽदरं न करोति, नो परिजा

जाते हैं और जो पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल शुभस्पर्शरूप में परिणम जाते है। इस प्रकार का परिणमन पुद्गलों में जीवकृत व्यापाररूप परिणाम से और स्वाभाविक रूप से होता रहता है । एक अवस्था से अवस्थान्तर की प्राप्ति प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है। इस परिणमन से कोई भी द्रव्य अछूता नहीं है। इसी परिणाम का नाम स्वाभाविक परिणमन है। यह बात प्रभुने स्वयं प्रतिपादित की है। (तएणं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणई, तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से जियसत्तू अण्णया कयाई ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगर आसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंते णं वीइवयइ) अमात्य सुबुद्धि की इस बात को सुनकर जितशत्रु राजा ने उसकी इस बात का आदर नही किया-उसकी बातको स्वीकार नही किया। केवल

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે આ જાતનું પુદ્ગલોમાં પરિણમન જીવકૃત વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમાં થતું રહે છે એક અવસ્થામાંથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમાં થતી રહે છે. આ પરિણમન એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પણે સમજવું જોઇએ. દરેકે દરેક દ્રવ્યમાં આ જાતનું પરિણમન થતું જ રહે છે. પ્રભુએ સ્વયં આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે.

(तएणं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणई, तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से जियसत्तू अण्णया कयाई ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरआसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો આદર કર્યો નહિ, ફક્ત સાભળીને તે ચૂપચાપ બેસી જ રહ્યો. એક દિવસે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः संतिष्ठते=मौनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वस्कन्धवरगतः =जात्याश्वपृष्ठारूढः 'महया भडचडगर०' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः 'आसवाहणियाए' अश्ववाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडायां 'निज्जायमाणे' नि-र्यान्=निर्गच्छन तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन= पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । ततः तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन 'अभिभूए समाणे' अभिभूतः=व्याकुलित-चित्तः सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयवस्त्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन आस्यं-सामीप्यसंयोगान्नासिकां पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-च्छति अपक्राम्य तान् बहून राजेश्वर यावत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर निकला । उनके साथर महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते २ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएणं जियसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जेणं आसगं पिहेइ, एगंत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एवं वयासी-अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते बहवे राईसर पभिइओ एवं वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने उस परिखोदक की अशुभ गंध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

જીતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા માટે ઘેરથી બહાર નીકળ્યા. તેમની સાથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ ચાલતો હતો. ચાલતાં ચાલતાં તેઓ તે જ પરિખોદક-ખાઈ-ની પાસે થઈને નીકળ્યા

(तएणं जितसत्तू तस्स फरिहोगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जेणं आसगं पिहेई एगंतं अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एवं वयासी-अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते बहवे राई सर पभिइओ एवं वयासी)

જીતશત્રુ રાજાએ પરિખોદક-ખાઈ-ની ખરાબ ગંધથી વ્યાકુળ થઈને પોતાના ખેસથી નાકને ઢાંકી લીધું. અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઈની પાસેથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौटुम्बिक-श्रेष्ठि-सेनापति सार्थवाहादीन् एवमादीत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रियाः ! कीदृग् इदं परिखोदकममनोज्ञं वर्णेन गन्धेन रसेन स्पर्शेन, तद् यथानामकम् । तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद् एतस्मादपि अनिष्टतरअमनोज्ञतरमनआमतरकमेवास्ति । ततः खलु ते बहवो राजेश्वरप्रभृतयो यावदेवमवादिषुः-तथैव खलु तत् हे स्वामिन् ! यत्खलु यूयमेवं वदथ-अहो ! खलु इदं परिखोदकममनोज्ञं वर्णेन रसेन गन्धेन स्पर्शेन, तद् यथा नामकम्-तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद्

चलने लगे । चलते २ उन्होंने अपने साथ रहे हुए राजेश्वर २, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति, एवं सार्थवाह आदिसे कहा हे देवानुप्रियो! देखो-यह परिखोदक(खाईका जल)वर्णसे गंधसे, रससे एवं स्पर्शसे कितना अधिक अमनोज्ञ बन रहा है । जैसे मरे हुए सर्प आदिके सड़े विनष्ट आदि अवस्थापन्न कलेवर की दुर्गंध आती है-उस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध इस जल को आ रही है । राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने इस प्रकार कहा- (तहेव णं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए, अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी-तएणं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ) हे स्वामिन्! आप जैसा कहते हैं यह परिखोदक वैसा ही वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से अम-

---

દ્વર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતાં ચાલતાં તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિખોદક-ખાઈ-વર્ણથી, ગંધથી, રસથી, અને સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે. મરેલા સાપ વગેરેના સડી ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપન્ન કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે તેના કરતાં પણ વધારે ખરાબ ગંધ આ પાણીમાંથી આવી રહી છે. રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું —

(तहेव, णं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी-तएणं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી અમનોજ્ઞ આ બાઈ છે. મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના કલેવરોના જેવી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमनआमतरकमेवास्ति। ततः खलु स जितशत्रुः सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–अहो! खलु हे सुबुद्धे! इदं परिखोदकममनोज्ञं वर्णेन ४, कीदृशम्? इत्याह–'से जहा नामए' तद् यथा नामकं=यथादृष्टान्तं निरूप्यते–अहिमृतकमिति वा यावद् एतस्मादपि=अहिमृतकादिभ्योऽपि अनिष्टतरम् अमनोज्ञतरम् अमनआमतरमेव वर्त्तते। ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु स जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्यं द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादीत्–अहो! खलु 'तं चेव' तदेव पूर्ववदेव राजा वदति। ततः तदनन्तरं खलु स सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रुणा

नोज्ञ है। जैसे मरे हुए सर्पादिक के सड़े आदि अवस्थापन्न कलेवर से दुर्गंध आती है उसी तरह की इस से भी अधिक अनिष्टतर असह्य दुर्गंध इस से आ रही है! इस प्रकार अपनी बात का समर्थन प्राप्तकर जितशत्रु राजा ने अपने सुबुद्धि अमात्य प्रधान से कहा- हे सुबुद्धे! यह परिखोदक वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से बिलकुल अमनोज्ञ बन रहा है। जिस प्रकार मरे हुए सर्प आदि के सडे गले आदि अवस्था पन्न कलेवर से अधिक अनिष्ट तर दुर्गंध निकलती है उससे भी अधिक अनिष्टतर दुर्गंध इससे निकल रही है। इस प्रकार अपने राजाकी बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उसका आदर नहीं किया–उसे स्वीकार नहीं किया केवल चुपचाप ही रहा। (तएणं से जियसत्तूराया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-अहोणं तंचेव, तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तू रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे एवं वयासी नो खलु सामी! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं

અનિષ્ટતર, અસહ્ય દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતાં પણ વધારે ખરાબ આ દુર્ગંધ છે. આ રીતે પોતાની વાતનું સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને જીતશત્રુ રાજાએ પોતાના સુબુદ્ધિ અમાત્ય પ્રધાનને કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે! આ પરિખોદક–ખાઈ–વર્ણ, રસ ગંધ અને સ્પર્શમાં એકદમ અમનોજ્ઞ–ખરાબ–થઈ ગઇ છે. મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના અવસ્થાપન્ન કલેવરો–શરીરો–થી જેવી અનિષ્ટતર દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટતર–ખરાબ–દુર્ગંધ આ ખાઈ–માંથી આવી રહી છે. આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેનો આદર કર્યો નહિ, તેનો સ્વીકાર કર્યો નહિ પણ ચૂપચાપ થઈને જ ચાલતો રહ્યો.

(तएणं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी अहोणं तं चेव तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी नो खलु सामी! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्ञा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् एवमुक्तः=सन् एवमवदत्-नो खलु हे स्वामिन्! मम एतस्मिन् परिखोदके कोऽपि विस्मयः, कथम् ? इत्याह-एवं खलु हे स्वामिन् ! सुरभिशब्दाः=शुभशब्दाः अपि पुद्गलाः शुभा अपि शब्दपुद्गला इत्यर्थः 'दुब्भिसद्दत्ताए' दुरभिशब्दतया=अशुभशब्दतया परिणमन्ति एवं 'तं चेव' तदेव सर्वं रूपरसगन्धस्पर्शसम्बन्धिनः शुभाः अपि पुद्गला अशुभरूपादितया परिणमन्तीत्यर्थः यावत् प्रयोगविस्रसा परिणता जीवकृतप्रयोगेण स्वभावत एव वा परिवर्त्तनशीलाः अपि च खलु हे स्वामिन् ! पुद्गलाः प्रज्ञप्ताः भगवद्भिः कथिताः।

खलु सामी ! सुब्भि सद्दावि पोग्गला दुब्भि सद्दत्ताए परिणमंति, तंचेव जाव पओगवीससा परिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता) अमात्य को चुपचाप बैठा हुआ देखकर जितशत्रु राजा ने उस अमात्य सुबुद्धि से दुबारा और तिबारा भी पहिले ही जैसा कहा इस तरह दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये उस सुबुद्धि अमात्य ने ऐसा कहा कि स्वामिन्। हमे इस परिखा के उदक में कोई आश्चर्य नही हो रहा है कारण कि जो पुद्गल पहिले शुभ शब्द रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही कालान्तर में प्रयोग और विस्रसा परिणाम से अशुभ शब्द रूप परिणम जाते हैं। इस तरह जैसा उसने मनोज्ञ चतुर्विध आहार के विषय में पहिले प्रतिपादन किया है वैसा ही यहां पर भी उसने प्रतिपादित किया। पुद्गलों का यह इस तरह को परिणमन मैं अपनी निज कल्पना से नही कह रहा हूँ प्रत्युत इस में वीतराग प्रभु की आज्ञा हैं। उन्हों ने इसी तरह का पौद्गलिक परिण-

एवं खलु सामी ! सुब्भि सद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति तं चेव जाव पओगवीससा परिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચુપચાપ જોઈને રાજા જીતશત્રુએ બીજી અને ત્રીજી વાર પહેલાંની જેમ જ કહ્યું. પૂછાએલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્! આ ખાઈના પાણીમાં મને કંઈ નવાઈ જેવું લાગતું નથી કેમકે જે પુદ્ગલો પહેલાં શુભ શબ્દ રૂપમાં પરિણત થયેલાં હોય છે તે પુદ્ગલો જ કાલાન્તરમાં પ્રયોગ અને વિસ્રસા (સ્વાભાવિક રીતના) પરિણામથી અશુદ્ધ શબ્દ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે. આ રીતે અમાત્યે મનોજ્ઞ ચાર જાતના આહારો વિશે જે જાતના વિચારો રજૂ કર્યા હતા તે જ જાતના વિચારો આ અશુભ રૂપ ખાઈ જોઈને પણ પ્રકટ કર્યા. અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે પુદ્ગલોના આ રીતે પરિણમનની વાત મારી પોતાની કલ્પનાથી પણ વીતરાગ પ્રભુની જ એ આજ્ઞા છે. તેઓશ્રીએ પૌદ્ગલિક પરિણમન આ રીતે જ પોતાની દેશના વડે નિરૂપિત કર્યા છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्–मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! आत्मान= स्वकं च परम्=अन्यं च तदुभयं=स्वपररूपं समकमेव वा बहीभिश्च ' असब्भावुब्भावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभिः असताम्=अविद्यमानानां भावानां=वस्तुधर्माणां या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभिः=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः ' मिच्छत्ताभिणिवेसेण य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासावशेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः ' वुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्यं ग्राहयन् ' वुप्पाएमाणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिं जनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणां कुर्वन् मा तिष्ठेत्यर्थः ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है। (तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–माणं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाहेमाणे विहराहि, तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए–अहो णं जियसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभंति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावनोद्भावक वचनों से–अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से–वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नही है–उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एवं मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार की प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फंदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–माणं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो णं जियसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभंति)

જીતશત્રુ રાજાએ આ પ્રમાણે સાંભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ રીતે અસદ્ભાવના ભાવક વચનોથી–અવિદ્યમાન વસ્તુધર્મોથી પ્રતિપાદનાઓથી વસ્તુનું જે સ્વરૂપ વસ્તુમાં હાજર નથી તે સ્વરૂપને વસ્તુમાં બતાવનારી વાણીઓથી અને મિથ્યાત્વાભિનિવેશના આગ્રહથી આ જાતનું નિરૂપણ કરો નહિ. આવી પ્રરૂપણાથી પોતાની જાતને બચાવતા રહો અને બીજાઓને પણ આવી જૂઠી પ્રરૂપણામાં ફસાવવાની ચેષ્ટા કરો નહિ, તમે એકલી સાથે પોતાની જાતને કે બીજા માણસને આવી પ્રરૂપણાની લપેટમાં લેવાની કોશિશ કરો નહિ રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ પ્રધા-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः=तदनन्तरं राज्ञा सहवार्त्तालापानन्तरं खलु सुबुद्धेः=सुबुद्धिनामामात्यस्य अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिकः, चिन्तितः, प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतसंकल्पश्च नानारूपो विचारः समुदपद्यत अहो !=आश्चर्यमेतद् यत्खलु जितशत्रु राजा 'संते' सतः = विद्यमानात् 'तच्चे' तत्त्वानि = तत्त्वरूपान् तत्त्ववतो वा स्वत्वपरत्वयुक्तान् 'तहिए' तथ्यान् = सत्यान् यद्वा—'तहिए' तथा च—इतिच्छाया, तथेति चिनोतीति, अव्ययमिदम्—मात्रयाऽप्यन्यूनाधिकान् 'अवितहे' अवितथान् = अविद्यमानासत्यान् 'सब्भूए' सद्भूतान्=सत्तायुक्तान् 'जिणपण्णत्ते' जिनप्रज्ञप्तान् = जिनभाषितान् भावान् 'नो उवलभइ' नोपलभते, तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः = समीचीतं खलु मम यत्—जितशत्रोः राज्ञ सतां तत्त्वानां तथ्यानाम् अवितथानां सद्भूतानां जिनप्रज्ञप्तानां भावनाम् 'अभिगमणट्ठयाए' अभिगमनार्थतायै=सम्यगवबोधाय एतमर्थम्=पुद्गलानामपरा-

साथ इस प्रकार की प्ररूपणा के जाल में न डालो। राजा की इस प्रकार वाणी सुनकर सुबुद्धि प्रधान के मन में ऐसा विविध प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-यहाँ विचार के इन और विशेषणों का ग्रहण कर लेना चाहिये—"चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितः"। यह बडे आश्चर्य की बात है जो जितशत्रु राजा विद्यमान, तत्त्वरूप-अथवा विविध प्रकार की विवक्षा से स्वत्व परत्व रूप से युक्त, तथ्य-सत्य, न न्यून और न अधिक, अवितथ, सत्ता युक्त ऐसे जिन प्रज्ञप्त, भावों को नही समझ रहा है-अर्थात् जितशत्रु राजा के ध्यान में यह बात नही आ रही है कि जिन प्रज्ञप्त (प्ररूपित) भाव सत्य होते है, अवितथ होते हैं अन्यून अनतिरिक्त होते हैं, अनेक विवक्षाओं को लेकर उन में नानो धर्म विशिष्टता होती है-(तं) इस लिये (सेयं खलु मम, जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावा-

નના મનમાં અનેક વિચારો ઉછળ્યા. અહીં વિચાર સંબંધી આ વિશેષણોનું ગ્રહણ પણ કરીલેવું જોઇએ કે "चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितः" આ એકદમ નવાઈ જેવું લાગે છે કે જીતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન તત્ત્વ રૂપ-અથવા તો વિવિધ પ્રકારની વિવક્ષાથી સ્વત્વ પરત્વ રૂપથી યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ઘણું ઓછું પણ નહિ અને ઘણું વધારે પણ નહિ, અવિતથ સત્તા યુક્ત એવા જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવોને સમજી રહ્યા નથી. એટલે કે જીતશત્રુ રાજા આ વાતને સમજી શકયા નથી કે જીન પ્રજ્ઞપ્ત વડે નિરૂપિત થયેલા ભાવો સત્ય હોય છે, અવિતથ હોય છે, અન્યૂન અનતિરિક્ત હોય છે, અનેક વિવક્ષાઓને લઇને તેમનામાં નાના ધર્મવિશિષ્ટતા હોય છે.(तं)માટે

(सेयं खलु मम जियसत्तूस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परपरिणमनरूपं भावम् ' उवाइणावित्तए ' उपादापयितुं=ग्राहयितुं मम श्रेयः, इति पूर्वेण सम्बन्धः। स सुबुद्धिरमात्यः एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य ' पच्चंतिएहिं ' प्रत्यन्तिकैः=समीपस्थैः प्रतिक्षणनिदेशवर्त्तिभिः पुरुषैः सार्द्धम् ' अंतरावणाओ ' अन्तरापणात्=हट्टमार्गात् ' बाजार ' इति भाषा प्रसिद्धात्, यद्वा-ग्रामान्तरालवर्तिकुम्भकारहट्टात् नवकान्=नूतनान् घटांश्च गृह्णाति, गृहीत्वा सन्ध्याकालसमये सूर्यास्तकाले ' पविरलमणुस्संसि ' प्रविरलमनुष्ये प्रविरलाः=स्तोकाः मनुष्या यस्मिन् समये स प्रविरलमनुष्यस्तस्मिन्=सन्ध्याकाले हि मनुष्याणां गमनागमनं स्वल्पं भवति तादृशे समय इत्यर्थः, पुनः ' णिसंतपडिणिसंतंसि ' निशान्त प्रतिनिशान्ते=मनुष्यसंचारभावसमये यत्रैव परिखोदकं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तत् परिखोदकं ग्राहयति, ग्राहयित्वा नवकेषु=नूतनेषु घटेषु ' गालावेइ ' गालयति, वस्त्रादिपूतं कारयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तान् ' लंछियमुद्दिए ' लाञ्छितमुद्रितान्-लाञ्छितान् लाक्षादिलेपयुक्तान्

णं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावित्तए एवं संपेहेइ) मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु राजा को सत्स्वरूप, भाव युक्त तथ्यरूप, अवितथ, और सद्भूतरूप ऐसे जिन प्रज्ञप्त भावों का अच्छी तरह बोध कराने के लिये और इस पुद्गलों के-अपरापर परिणमन रूप भाव को ये ऐसे ही हैं, इस तरह मनवाने के लिये उन्हें समझाऊँ। इस प्रकार उस ने विचार किया- (संपेहित्ता पच्चंतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए, घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गाला-

---

सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावित्तए एवं संपेहेइ)

હવે મારે જીતશત્રુ રાજાને સત સ્વરૂપ, ભાવયુક્ત તથ્ય રૂપ, અવિતથ અને સદ્‌ભૂત રૂપ એવા જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવોને સારી પેઠે સમજાવવા જોઇએ તેમજ પુદ્‌ગલોના અપરાપર પરિણમન રૂપ ભાવ વિશે પણ "તેઓ તો એવા જ છે" આ રીતે સમજાવવાની કોશિશ કરવી જોઈએ. અમાત્યે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો.

(संपेहित्ता पच्चंतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि पविरल मणुस्संसि निसंत पडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेइ, गलावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुद्रितान्=मुद्राद्यङ्कितान् कारयति, कारयित्वा 'सत्तरत्तं' सप्तरात्रं=सप्तरात्रिन्दिव पर्यन्तं परिवसावेइ' परिवासयति=स्थापयति, तदनु 'दोच्चंपि' द्वितीयमपि वारंपुनरपरेषु नवकेषु घटेषु गालयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तेषु घटेषु 'सज्जखारं' सर्जक्षारं='सज्जीखार' इतिप्रसिद्धम्; सद्यो भस्म वा प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य लाञ्छितमुद्रितान् कारयति, कारयित्वा सप्तरात्रं यावत् परिवासयति, स्थापयति। एवं 'तच्चंपि' तृतीयमपि वारं पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु यावत् संवासयति=सम्यक्स्थापयति। एवं खलु एतेन उपायेन=अनेनैव क्रमेण अन्तरा=मध्येमध्ये गालयन्, अन्तरा=मध्येमध्ये प्रक्षेपयन् अन्तरा च विपरिवसावेमाणे' विपरिवासयन् २ स्थापयन् २ सप्त सप्त रात्रिन्दिवानि= अहोरात्रिणि विपरिवासयति। ततः खलु तत्परिखोदकं 'सत्तमसत्तयंसि' सप्तम-

---

वेइ, गलावित्ता, लंछियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ) विचार करके फिर उसने अपने समीपस्थ रहे हुए पुरुषो से-सेवकों से बाजार से अथवा ग्रामान्तरवर्ती कुंभकार के हाट से नवीन घडों को मंगवाया। उन्हें लेकर वह सूर्यास्त काल के समय जब कि मनुष्यों का आना जाना स्वल्प हो गया और धीरे २ वह जब बिलकुल बंद हो गया जहां परिखोदक था वहां पहुँचा। वहां पहुँच कर उसने उन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उसे और दूसरे घडों में भरवाया। भरवा कर फिर उन पर उसने लाक्षादिक की मुहर लगवाई। लगवा कर उन्हें सात दिनरात तक एक

लंछियमुद्दिते, करावेइ करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ)

વિચાર કરીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બજાર અથવા ગામના નજીક કુંભારની દુકાનમાંથી નવા માટલાંઓ મંગાવડાવ્યા. માટલાંઓને લઈને તે જ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બંધ થઈ ગઇ ત્યારે તે ખાઈની પાસે પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને તેણે માટલાંઓમાં પાણી ગાળીને ભરાવ્યું. ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમાં પણ પાણી ગાળીને ભરાવ્યું. પાણી ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાંઓને બરાબર બંધ કરાવડાવીને સાત દિવસ સુધી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तके परिणम्यमानेसति एकोनपञ्चाशद्दिवसेषु व्यतीतेषु सत्सु तत्परिखोदकम्-उदकरत्नं जातं चाप्यभवत्। कीदृशं जातम् ? इत्याह-'अच्छे' अच्छं=स्वच्छं

जगह रखवा दिया। फिर दुबारा भी उसने और दूसरे नवीन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उस जल को उसने और दूसरे घडों में भरवाया। (पक्खिवावित्ता) भरवा कर (सज्जखारं पक्खिवावेइ लंछिय मुद्दिते कारवेइ) उन में उसने सज्जीखार डलवा दिया। डलवा कर उन पर लाक्षादिक के लेप की मुहर लगवा दी। (कारवित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ) लगवा कर उन्हें एक ओर रखवा दिया (तच्चंपि नवएसु घडएसु जाव संवसावेइ; एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेइ) तीसरी बार भी उसने उपर नवीन घड़ों में छानकर पानी भरवाया-भरवाकर पहिले की तरह ही उसने सब काम करवाया-फिर उन्हे अच्छी तरह एक ओर रखवा दिया। इस तरह के उपाय से उसने बीच २ में उस जल को पुनः २ छानकर उनमें भरवाया और भरवा २ कर सात २ दिन तक उन घड़ों को एक २ ओर रखवा दिया। (तएणं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाये) इस प्रकार करते २ जब ४९ दिन समाप्त हो

એક જગ્યાએ માટલાંઓને મૂકાવડાવ્યાં. ત્રીજી વખત તેણે બીજા નવા ઘડાઓમાં પાણી ગાળીને ભરાવડાવ્યું. ભરાવડાવીને તે પાણીને ગાળીને ત્રીજાં માટલાઓમાં ભરાવડાવ્યું. (पक्खिवावित्ता) ભરાવડાવીને

(सज्जखारं पक्खिवावेइ लंछियमुद्दिते कारवेइ)

તેણે માટલાઓમાં સાજીખાર નંખાવડાવ્યો. સાજી ખાર નંખાવડાવીને તેણે માટલાઓને બરાબર બંધ કરાવડાવી (कारवित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ) સીલ કરાવડાવીને માટલાંઓને એકબાજુ મૂકી દીધાં.

(तच्चंपि नवएसु घडएसु जाव संवसावेइ, एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे२ सत्त२ राई दिया विपरिवसावेइ)

ત્રીજી વખત પણ તેણે બીજા નવા માટલાઓમાં પાણી ભરાવડાવ્યું. ભરાવીને પહેલાંની જેમજ બધી વિધિ કરી અને માટલાંઓને એક તરફ મૂકાવી દીધાં. આ પ્રમાણે કરતાં તેણે વચ્ચે વચ્ચે કેટલીએ વખત વારંવાર ગાળીને માટલાઓમાં પાણી ભરાવ્યું અને ત્યારપછી સાત દિવસ માટે માટલાઓને એક બાજુ મૂકાવી દીધાં.

(तएणं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाये)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्मलत्वात्, 'पत्थे' पथ्यम्=आरोग्यजनकत्वात्, 'जच्चे' जात्यम्=उत्तमगुणवत्त्वात्, 'तणुए' तनुकं=भारेणलघुकं पाचकत्वात्, 'फलिहवण्णाभे' स्फटिकवर्णाभं=स्फटिकमणिवर्णतुल्यं वर्णेन-उपपेतम् ४ = प्रशस्तवर्णगन्धरसस्पर्शैर्युक्तम् 'आसायणिज्जे' आस्वादनीयम्=आस्वादयोग्यं यावत् सर्वेन्द्रिय गात्रप्रह्लादनीयं जातम्। ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यत्रैव तद् उदकरत्नं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतले=हस्ततले गृहीत्वा तद् 'आसाएइ' आस्वादयति आस्वाद्य तद् उदकरत्नं वर्णेनोपपेतम् ४ वर्णादुपपेतम् – आस्वादनीयं यावत् सर्वेन्द्रियगात्र

चुके तब वह परिखोदक उदकरत्न श्रेष्ठजल रूपमें परिणमित हो गया। (अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे) वह उदकरत्न निर्मल होने से बिलकुल स्वच्छ हो गया आरोग्य जनक होने से पथ्य रूप बन गया उत्तम गुणवाला होने से श्रेष्ठ दिखनेलगा शीघ्र पचने के योग्य हो जाने के कारण भार में वह बहुत हलका हो गया, और स्फटिकमणि के वर्ण समान वर्ण से युक्त हो गया। इसके वर्ण, गंध, रस और स्पर्श सब प्रशस्त-श्रेष्ठ बन गये। यह आस्वादनीय हो गया यावत् समस्त इन्द्रियों को एवं शरीर को तृप्ति करने वाला बन गया। (तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादित्तातं उदगरयणं वण्णे णं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठ तुट्ठे बहूहिं

આ રીતે જ્યારે ૪૯ દિવસો પૂરા થયા ત્યારે તે બાદનું ઉદકરત્ન (પાણી) ઉત્તમ પાણીના રૂપમાં પરિણત થઈ ગયું.

(अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे)

તે ઉદકરત્ન (પાણી) નિર્મળ હોવા બદલ એકદમ સ્વચ્છ થઈ ગયું હતું, આરોગ્યજનક હોવાથી પથ્ય રૂપ થઈ ગયું હતું, ઉત્તમ ગુણ-સંપન્ન હોવાથી શ્રેષ્ઠ દેખાતું હતું, શીઘ્ર પાચન થાય તેવું હોવાથી વજનમાં તે ખૂબ જ હલકું થઈ ગયું હતું પાણીના વર્ણ ગંધ, રસ અને સ્પર્શ આ બધા ગુણો પ્રશસ્ત શ્રેષ્ઠ રૂપમાં પરિણત થઈ ગયા હતા. તે આસ્વાદનીય થઈ ગયું હતું યાવત્ બધી ઇન્દ્રિયોને તેમજ શરીર તૃપ્ત કરનાર બની ગયું હતું.

(तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्लादनीयं ज्ञात्वा हृष्ट-तुष्टः बहुभिः ' उदगसंभारणिज्जेहिं ' उदकसंभारणीयैः= जलसुगन्धकरणयोग्यैः केतकीपाटलादिद्रव्यैः ' संभारेइ ' संभारयति = संस्कारयति संभारयित्वा जितशत्रोः राज्ञः ' पाणियघरयं ' पानीयहारकं यस्य हस्तादारा पानीयं पिबति तं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-त्वं च खलु हे देवानुप्रिय ! इदमुदकरत्नं गृहाण, गृहीत्वा जितशत्रोः राज्ञो भोजनवेलायाम् उपनय । ततः खलु पानीयहारकः सुबुद्धिकस्य = सुबुद्धिनामकामात्यस्य एतमर्थं=राज्ञः पानीय-

उदगसंभारणिज्जेहिं संभारेइ संभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—तुमंच णं देवाणुप्पिया इमं उदगरयणं गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि) इसके बाद वह सुबुद्धि अमात्य जहां वह उदक रत्न था वहां गया । वहां जाकर उसने उस उदकरत्न को हाथ में लेकर चखा । चख कर जब उसे यह ज्ञात हो चुका कि यह उदक रत्न वर्णादि से युक्त यावत् सर्वेन्द्रिय गात्र प्रल्हादनीय बन गया है तो वह बहुत ही आनन्दित एवं संतुष्ट हुआ बाद में उसने उस जल को सुगंधित करने वाले केतकी पाटल (गुलाब) आदि द्रव्य से संस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उसने जितशत्रु राजा का जो पानी पिलाने वाला भृत्य था उसे बुलाया बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवाणुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को लो-और लेकर जब जितशत्रु राजा के भोजन करने का समय होवे तब इसे उनके पास ले जाना । (तएणं से पणियघरिय सुबुद्धिय-

संभारेइ संभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुमं च णं देवाणुप्पिया इमं उदगरयणं गेण्हाहि२ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि)

ત્યારપછી અમાત્ય સુબુદ્ધિ જ્યાં ઉદકરત્ન (પાણી) હતું ત્યાં ગયેા. ત્યાં જઈને તેણે ઉદકરત્ન (પાણી) ને હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યું. ચાખ્યા બાદ તેને એમ લાગ્યું કે ખરેખર આ ઉદકરત્ન (પાણી) વર્ણ વગેરે ગુણેાથી યુક્ત યાવત્ બધી ઇન્દ્રિયેા અને શરીરને આનંદ પમાડે તેવું થઇ ગયું છે ત્યારે તે ખૂબ જ પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ થયેા ત્યાર પછી તેણે પાણીને સુવાસિત કરનારા કેતકી પાટલ (ગુલાબ) વગેરે દ્રવ્યેાથી પાણીને સંસ્કારિત કર્યું. પાણીને સંસ્કરિત કર્યા બાદ અમાત્યે જીતશત્રુ રાજાને પાણી પીવડાવનાર નેાકરને બેાલાવ્યેા અને બેાલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાને જમવાનેા વખત થાય ત્યારે તુ આ ઉદકરત્ન (પાણી) તેમની પાસે લઈ જજે.

(तएणं से पणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता तं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पानरूपं भावं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य तदुदकरत्नं गृह्णाति, गृहीत्वा जितशत्रोः राज्ञो भोजनवेलायाम् उपस्थापयति । ततः खलु स जितश राजा तद् विपुलम् अशनपान-खाद्य-स्वाद्याम्-आस्वादयन् यावद् विहरति । 'जिमियभुत्तुत्तरागए वि' जिमितभुक्तोत्तरागतोऽपि च खलु-जिमितम्=आस्वादितं भुक्तम् उदरपूरणपूर्वकम्, तदुत्तरम् आगतः=स्वोपवेशनस्थाने प्राप्तः, कीदृशः सन्? इत्याह-यावत्-आचान्तः=कृतचुलुकः, अतएव चोक्षः=निर्लेपः स्वच्छः परमशुचि-

स्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता तं उदगरयणं गिण्हाइ, गिण्हित्ता जिनसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे जाव विहरइ) इस प्रकार उस पानीय हारक ने सुबुद्धि अमात्य की इस बातको मान लिया और मानकर उस उदकरत्न को-श्रेष्ठ निर्मलजल को-ले लिया-लेकर उसने उसे जितशत्रु राजा के भोजन करने के समय उपस्थापित कर दिया-ताकि वे इस जल को पीवें। इसके बाद जितशत्रु राजा का जब भोजन करने का समय आया तब उसने अशनादि रूप ४ चारों प्रकार का आहार खूब इच्छानुसार किया और उस उदकरत्न को पिया। (जिमिय भुत्तुत्तरागए यावियणं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जाव विम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी) जब जितशत्रु राजा अच्छी तरह खा पी चुके तब वे अपने उपवेशन के स्थान में बैठक में-आये। बैठक में आने के पहिले उन्होंने कुल्ला आदि करके अपने मुख को अच्छी तरह धो लिया था और हाथ वगैरह भी अच्छी तरह प्रक्षालित कर (धोकर)

उदगरयणं गिण्हाइ गिण्हित्ता, जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे जाव विहरइ)

આ રીતે પાણીવાળા નોકરે સુબુદ્ધિ અમાત્યની વાત સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તે ઉદકરત્નને-શ્રેષ્ઠ નિર્મળ પાણીને-ત્યાંથી લઇને જમવાની વખતે જીતશત્રુ રાજાની સામે તેમને પીવા માટે પહોંચાડી દીધું. ત્યાર પછી જ્યારે જીતશત્રુ રાજાનો જમવાનો વખત થયો ત્યારે રાજા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારે ખૂબ તૃપ્ત થઇને ઇચ્છા મુજબ જમ્યા અને તે ઉદકરત્ન (પાણી) ને પીધું.

(जिमियभुत्तुत्तरागए यावि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जाव विम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी)

રાજા જીતશત્રુએ આમ સારી રીતે જમવાનું પતાવી દીધું ત્યારે તેઓ ત્યાંથી પોતાના ઉપવેશનના સ્થાનમાં એટલે કે બેઠકમાં આવ્યા. બેઠકમાં આવતા પહેલાં તેઓએ કોગળા વગેરે કરીને મોં અને હાથોને ધોઇને સ્વચ્છ બનાવી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूतः=परमपवित्रः स राजा तस्मिन् उदकरत्नजातविस्मयः=संजातजलस्वादकौतुकः तान् बहून् राजेश्वर यावत्-राजेश्वर-तलवर -- माडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहप्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! आश्चर्यमेतत् खलु हे देवानुप्रियाः ! इदमुदकरत्नम् अच्छं यावत्-सर्वेन्द्रियगात्रमह्लादनीयमस्ति । तत, खलु बहवो राजेश्वर यावत्सार्थवह-प्रभृतय एवमवादिषुः-तथैव खलु हे स्वामिन् ! यत् खलु यूयं वदथ यावद् एवमेव सर्वेन्द्रियगात्रमह्लादनीयं वर्त्तते । ततः खलु जितशत्रु

लिये थे। इस परम शुचिभूत बनकर अपनी बैठक पर बैठे हुए उन जितशत्रु राजा को उस उदकरत्न के आस्वादन में बड़ा ही आश्चर्य हो रहा था। उसी आश्चर्य में डूबे हुए उन राजा ने अपने पास बैठे हुए राजेश्वर तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति और सार्थवाहक आदि जनों से इस प्रकार का (अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एवं वयासी-तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे तएणं जियसत्तूराया पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एसणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए ?) देवानुप्रियो ! देखो यह उदकरत्न (श्रेष्ठ जल) कितना अच्छा निर्मल यावत् समस्त इन्द्रियों एवं शरीर को आनन्द देनेवाला है। इस प्रकार राजा का कथन सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने उस राजा से ऐसा कहा-स्वामिन् आप जैसा कहते है, यह जल

દીધાં હતાં. આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઇને પોતાની બેઠકમાં બેઠેલા રાજા જીતશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદકરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઇ જેવું લાગતું હતું. ઉદકરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઇના વિચારો કરતાં રાજાએ પોતાની પાસે બેઠેલા રાજેશ્વર, તલવર, માંડલિક, કૌટુંબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणं अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हाणिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एवं वयासी तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे तएणं जियसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेइ,सद्दावित्ता एवं वयासी एसणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જમતી વખતે પીધેલું ઉદકરત્ન (પાણી) કેટલું બધું નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદ પમાડનાર છે. આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ યથાર્થ છે. પાણી ખરેખર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा पानीहारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–एतत् खलु त्वं हे देवानुप्रिय! उदकरत्नं प्रधानमुदकं कुतः कस्मात्स्थानात् 'आसाइए' आसादितं=प्राप्तम्?। ततः खलु स पानीयहारको जितशत्रुमेवमवादीत्–एतत् ख हे स्वामिन्! मया उदकरत्नं सुबुद्धेरन्तिकादासादितम्। ततः खलु जितशत्रू सुबुद्धिरमात्यं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–अहो! खलु हे सुबुद्धे! केन कारणेनाहं तवानिष्टः,

---

वैसा ही है–बहुत अधिक स्वच्छ एवं समस्त इन्द्रियों को, शरीर को आनंद दायक है इसके बाद जितशत्रु राजाने पानीयहारक को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा–हे देवानु प्रिय! यह उदक रत्न (श्रेष्ठ जल)– तुमने कहां से प्राप्त किया है। (तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं वयासी–एसणं सामी! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धि अमच्चं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्ला कल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?) राजाकी इस बात को सुनकर उस पानीयहारक ने उनसे कहा–हे स्वामिन्! मैंने यह उदक रत्न सुबुद्धि प्रधान के पास से पाया है। इसके बाद जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान को बुलाया–बुलाकर उससे इस प्रकार कहा–हे सुबुद्धे! मैं किस कारण से तुम्हारे लिये अनिष्ट, अकान्त,

---

તેવું જ હતું. તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનંદ આપનાર હતું. ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે કયાંથી મેળવ્યું છે?

(तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं सुबुद्धिस्स अंतियाओ असाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धि अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरणं न उवट्ठवेसि! तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धइ?)

રાજાની આ વાત સાંભળીને પાણીવાળાએ જવાબમાં રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામિન્! આ ઉદક રત્ન (પાણી) હું સુબુદ્ધિ અમાત્યની પાસેથી લાવ્યો છું. રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સુબુદ્ધિ! શા કારણથી હું તમારા માટે અનિષ્ટ, અકાંત,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकान्तः, अप्रियः, अमनोज्ञः, अमनआमोऽस्मि येन त्वं मम 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं भोजनवेलायामिदमुदकरत्नं नोपस्थापयसि, तदेतत् खलु त्वया हे देवानुप्रिय ! उदकरत्नं कुत उपलब्धम् ? । ततः खलु सुबुद्धि र्जितशत्रुमेवमवादीत्-एतत्खलु हे स्वामिन् ! तत्=यद् भवद्भिः=पूर्वदृष्टं मेदोवसादिदुर्गन्धयुक्तं तदेव परिखोदकं=परिखाजलं वर्त्तते । ततः खलु स जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवदत्-केन कारणेन हे सुबुद्धे ! एतत्तत् परिखोदकम् ? । ततः खलु हे स्वामिन् ! यूयं तदा मम एवमाचक्षाणस्य प्रज्ञापयतः, संज्ञापयतः विज्ञापयतः=वारंवारं प्रतिपादयत

अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमन आम बन रहा हूँ कि जिससे तुम प्रतिदिन मेरे लिये भोजन वेला में इस उदक रत्न को उपस्थापित नही करते हो ? तो कहो हे देवानुप्रिय ! यह उदक रत्न तुमने कहां से पाया है ? (तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी एसणं सामी ! से फरिहोदए, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एससे फरिहोदए? तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वसासीएवं-खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सद्दहह, तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) तब सुबुद्धि प्रधानने जितशत्रु रजा से कहा-हे स्वामिन् ! यह उदक रत्न वही परिखोदक है । जितशत्रु ने कहा यह परिखोदक किस कारण से ऐसा उदक रत्न बन गया है । सुबुद्धि अमात्य ने तब ऐसा कहा- हे स्वामिन् ! जब मैंने आपसे इस प्रकार कहा था इस प्रकार प्ररूपित किया था, इस प्रकार संज्ञापित किया था, विज्ञापित किया था- बार बार आपसे प्रतिपादित किया था

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમન આમ થઈ પડયો છું. કેમ કે હું મેશા જમવાના વખતે મારા માટે આજના જેવું ઉદક રત્ન (સારું પાણી) તમે ઉપસ્થાપિત કરતા નથી-મૂકાવડાવતા નથી. ? હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, આવું ઉદક રત્ન તમોએ કયાંથી મેળવ્યું છે ?

(तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी एसणं सामी ! से फरिहोदए, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-केणं कारणेणं सुबुद्धी एस से फरिहोदए ? तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सद्दहह, तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था)

ત્યારે સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામી ! આ ઉદકરત્ન (સારું પાણી) તે જ ખાઈનું પાણી છે. રાજાએ અમાત્યને ફરી પૂછયું કે ખાઈનું પાણી આવું સરસ કેવી રીતે થઈ ગયું ? જવાબમાં સુબુદ્ધિ અમાત્યે કહ્યું કે હે સ્વામિન ! પહેલાં મેં તમારી સામે આ પ્રમાણે પ્રરૂપિત કર્યું હતું, આ પ્રમાણે સંજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વિજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વારંવાર પ્રતિપાદિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यर्थः एतम्=पुद्गलानां शुभाशुभरूपेण परिवर्त्तनलक्षणम् अर्थम्=भावं नो श्रद्दत्थस्म=मद्वाक्योपरिश्रद्धां नो कृतवन्तः, ततः=तदा खलु मम अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणः-आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः नानाविधो मानसिको विकल्पः इत्यर्थः समुदपद्यत-अहो ! खलु जितशत्रू राजा सतो यावद् भावान् नो श्रद्दधाति नो प्रत्येति नो रोचयति तत् श्रेयः खलु मम जितशत्रोः राज्ञः सतां यावत् सद्भूतानां जिनप्रज्ञप्तानां भावानाम् अभिगमनार्थाय=अवबोधाय एतमर्थम् ' उवाइणावेत्तए '-उपादाययितुं=ग्राहयितुं श्रेयइति पूर्वेण सम्बन्धः, एवं संप्रेक्षे=अहं पर्यालोचितवान्, संप्रेक्ष्य तदेव यावत् पानीय-

कि पुद्गलों का शुभाशुभ रूपसे परिणमन होता रहता है- नाना रूप से उनका परिवर्तन होता रहता है यह परिवर्तन होना उनका स्वाभाविक लक्षण है परन्तु जब आपने उस भाव को श्रद्धा में परिणत नहीं किया-मेरे वचनों पर आपको विश्वास नहीं जमा तब मुझे इस प्रकार का आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत नाना प्रकार को विचार उत्पन्न हुआ (अहोणं जियसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहइ, नो पत्तियाइ, रोएइ, तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स रण्णो संताणं जाव सब्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए) देखो यह कितने आश्चर्य की बात है कि जो जितशत्रु राजा सद्भूत विद्यमान यावत् जिन प्रज्ञप्त भावों को अपनी श्रद्धा का विषय भूत नही बना रहे हैं उन पर प्रतीति नहीं कर रहे हैं, उन पर अपनी रुचि नही जमा रहे हैं। इसलिये मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु

કર્યું હતું કે શુભાશુભ રૂપમાં પુદ્ગલોનું પરિણમન થતું જ રહે છે. અનેક રૂપમાં તેઓમાં પરિવર્તન થતું જ રહે છે. આવું પરિવર્તન તેઓનું એક સ્વાભાવિક લક્ષણ છે. પણ જ્યારે તમે મારી આ વાત શ્રદ્ધાપૂર્વક સાંભળી નહિ, મારા કથન ઉપર વિશ્વાસ કર્યો નહિ, ત્યારે મારા મનમાં આ જાતના આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત મનોગત ઘણા વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે—

(अहोणं जियसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहइ, नो पत्तियाइ, नो रोएइ, तं सेयं खलु ममं जियसत्तूरस रण्णो संताणं जाव सब्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए)

જુઓ આ કેવી આશ્ચર્યની વાત છે કે જીતશત્રુ રાજા સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત્ જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવો ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવતા નથી, તેમના ઉપર વિશ્વાસ મૂકતા નથી અને પોતાની રૂચિ પણ તેમના પ્રત્યે જમાવતા નથી. એટલે મારે હવે જીતશત્રુ રાજાને સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત જીનપ્રજ્ઞપ્તભાવોનો બોધ આપવા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवं वदामि-त्वं खलु हे देवानुप्रिय ! उदकरत्नं जितशत्रो राज्ञो भोजनवेलायामुपनय तदेतेन कारणेन हे स्वामिन् ! एतत्तत्=तदेव यद्भवद्भिः दृष्टपूर्वं परिखोदकम् । ततः खलु जितशत्रू राजा सुबुद्धेरमात्यस्य एवमाचक्षाणस्य ४ एतमर्थम्-' इदमेतदेव परिखोदकम् ' इत्येवं रूपं भावं नो श्रद्दधाति.

राजा को सद्भूत विद्यमान- यावत् जिन प्रज्ञप्त भावों का बोध कराने के लिये और उनसे इन्हें ये ऐसे हीं हैं, इस रूप से मनवाने के लिये ऐसा प्रयत्न करूँ कि जिससे उनकी श्रद्धा आदि उन पर जम जावे और वे इस बात को मानने लग जावे । (एवं संपेहेमि २ नंचेव जाव पाणिय घरियं सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी तुमंणं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए ! तएणं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सद्दहइ ३) ऐसा मैंने विचार किया विचार करके फिर मैंने पानीयहारक को बुलाया- बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को जितशत्रु राजा के भोजन के समय पर ले जाना । इस कारण से हे स्वामिन् । जो आपने पहिले परिखोदक देखा था-वही यह परिखोदक है—और इस रूप में परिणत हो गया है । जितशत्रु राजा ने इस प्रकार कहने वाले ४ सुबुद्धि अमात्य के इस अर्थ को कि यह वही परिखोदक है अपनी श्रद्धा का विषय नहीं बनाया प्रतीति का विषय नहीं बनाया, अपनी

માટે અને એ ભાવો ખરેખર એવા છે, એવું ઠસાવવા માટે પ્રયત્નો કરવા જોઈએ જેથી તેઓને આ ભાવો ઉપર સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ બેસી જાય અને તેઓ આ વાતને સ્વીકાર પણ કરે.

(एवं संपेहेमि २ तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी तुमंणं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएणं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एवमट्ठं नो सद्दहइ ३)

આ પ્રમાણે મેં વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને મેં પાણી લાવનારને બોલાવ્યો અને બોલાવીને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ ઉદકરત્ન (સારા પાણી) ને જીતશત્રુ રાજા જ્યારે જમવા માટે બેસે ત્યારે લઈ જજો. એટલા માટે હે સ્વામી ! તમે પહેલાં ખાઈનું જે પાણી જોયું છે તે જ આ પાણી છે અને આ તો તે પાણીનું જ રૂપાંતર છે. સુબુદ્ધિ અમાત્યની આ વાત પર-કે આ પાણી તે જ ખાઇનું છે. રાજા જીતશત્રુને વિશ્વાસ થયો નહિ. રાજાએ અમાત્યની વાત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो प्रत्येति, नो रोचयति, अश्रद्दधानः, अप्रतियन्, अरोचमानः, 'अब्भंतरठाणिज्जे' अभ्यन्तर स्थानीयान्=स्वसमीपस्थितान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिय! 'अंतरावणाओ' अन्तरापणात्= ग्राममध्यस्थित कुम्भकारहट्टात् नवघटकान् 'पडए य' पटकांश्च=जलगालनवस्त्र-खण्डान् गृह्णीत यावद् उदकसंभारणीयैः उदकसंस्कारयोग्यैः द्रव्यैः संभारयत=

रूचिका विषय नहीं बनाया (असद्दहमाणे ३) इस प्रकार श्रद्धा रहित रुचि रहित, प्रतीति रहित बने हुए राजा जितशत्रुने (अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ) अपने पास में सदा रहने वाले पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—(गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया। अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह, जाव उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह ते वि तहेव संभारेंति, संभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेंति, उवणित्ता तएणं जियसत्तू राया तं उदकरयणं करयलंसि आसाएइ, आसायणिज्जं जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) हे देवानुप्रियों! तुम जाओ और बाजार से नवीन घडों को एवं जल छान ने के लिये वस्त्रों के खंडों को छन्नों को-ले आओ। यहां अन्तरापण का अर्थ "ग्राम के मध्य में स्थित कुम्हारों का हाट या सामान्य बाजार है। ऐसा ही अर्थ इस शब्द का पहिले किया गया है। यावत् उदक संस्कार योग्य द्रव्यों से

ઉપર ન તો પ્રતીતિ પણ થઈ અને ન તે પ્રત્યે પોતાની અભિરુચિ બતાવી. (असद्दहमाणे ३) આ રીતે શ્રદ્ધા, રુચિ અને પ્રતીતિ રહિત થયેલા રાજા જીતશત્રુએ (अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ) હંમેશા પોતાની પાસે રહેનારા માણસોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदग संभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह ते वि तहेव संभारेंति संभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेंति, उवणित्ता तएणं जियसत्तूराया तं उदकरयणं करयलंसी आसाएइ आसायणिज्जं जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે બજારમાં જાઓ અને ત્યાંથી નવાં માટલાઓ તેમજ પાણી ગાળવા માટે વસ્ત્રોના કકડા ખરીદી લાવો. 'अन्तरायणु'નો અર્થ ગામની વચ્ચેનું કુંભારોનું બજાર કે સામાન્ય બજાર છે. પહેલાં પણ આ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે જ કરવામાં આવ્યો છે. ત્યારબાદ પાણીને સ્વચ્છ બનાવવા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्कुरुत । तेऽपि तथैव संभारयंति, संभार्य जितशत्रोः ' उवणेंति ' उपनयन्ति= समीपमानयन्ति । ततः खलु शितशत्रू राजा तदुदकरत्नं करतले आस्वादयति, आस्वादनीयं यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयं तदुदकं ज्ञात्वा सुबुद्धिममात्यं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–हे सुबुद्धे ! एते खलु त्वया सन्तः=विद्यमानाः 'जाव' यावत् सद्भूताः भावाः कुत उपलब्धाः ? । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रुमेवमवदत्– एते खलु हे स्वामिन् ! मया सन्तः यावत् सद्भूता भावाः जिनवचनत उपलब्धाः

फिर उसे संस्कारित करो । इस पाठ को समुचित रूप से समन्वित करने के लिये जैसा पीछे लिखा गया है वैसा ही संबन्ध यहां जान लेना चाहिये । राजा की आज्ञानुसार उन लोगों ने वैसा ही किया । संस्कारित करके फिर वे लोग उसे जितशत्रु राजा के पास ले गये । जितशत्रु राजा ने उस संस्कारित उदक को अपनी हथेली पर रक्खा– और उसे चखा–जब चख कर उसे यह विश्वास हो गया कि यह जल आस्वादनीय एवं सर्वेन्द्रिय–गात्र प्रह्लादनीय बन गया है तब उस ने सुबुद्धि अमात्य को बुलवाया। बुलवा कर उस से ऐसा कहा– (सुबुद्धी ! एएणं तुमे संता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी–एएणं सामी मए संता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा, एएणं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी–तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए) सुबुद्धे ! ये विद्यमान यावत् सद्भूत भाव तुमने कहां से उपलब्ध किये है ? तब सुबुद्धि ने

માટેના બધા ઉપાયો તેમજ દ્રવ્યોથી પાણીને નિર્મળ બનાવો. પહેલાંની જેમજ અહીં પણ આગળની બધી વિગત જાણી લેવી જોઇએ. તે લોકોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધું કામ પૂરું કર્યું. પાણી જ્યારે નિર્મળ થઈ ગયું ત્યારે તે લોકો પાણીનાં માટલાંઓને રાજાની સામે લઈ આવ્યા. રાજાએ અનેક સંસ્કારો વડે નિર્મળ બનાવેલા પાણીને હથેળી ઉપર લીધું અને તેને ચાખ્યું. ચાખ્યા બાદ રાજાને આ પ્રમાણે વિશ્વાસ થઇ ગયો કે ખરેખર આ પાણી આસ્વાદનીય અને સર્વેન્દ્રિય-ગાત્ર–પ્રલ્હાદનીય થઈ ગયું છે ત્યારે તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો. અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું.

सुबुद्धी ! एएणं तुमे संता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी एएणं सामी मए संता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा एएणं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए)

હે સુબુધ્ધે ! એ વિદ્યમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવો તમે કયાંથી મેળવ્યા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवदत्–तद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय ! तवान्तिके जिनवचनं ' निसामेत्तए ' निशामयितुं=श्रोतुम् । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रोर्विचित्रं=अदृश्रुतं पूर्वमश्रुतं केवलिप्रज्ञप्तं=जिनभाषितं धर्मं=श्रुतचारित्रलक्षणं परिकथयति, ' तमाइक्खइ ' तमाख्याति=तदेव प्रतिपादयति–' जहा ' यथा= येन–कर्मसंयोगेन जीवा बध्यन्ते येन च मुच्यन्ते यावत् पञ्चाणुव्रतानि । ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धेरन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य=हृदिसमवधार्य हृष्टतुष्टचित्तान-

जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा–हे स्वामिन् ! ये विद्यमान यावत् सद्भूत भाव मैंने जिन प्रवचन से उपलब्ध किये हैं । जितशत्रु ने तब सुबुद्धि अमात्य से कहा–हे देवानुप्रिय ! मैं तुम्हारे पास जिन प्रवचन को सुनना चाहता हूँ । (तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलीपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खइ, जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयाइं,तएणं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी) सुबुद्धि प्रधान ने तब जितशत्रु राजा को पूर्व में कभी नहीं सुना गया ऐसा केवलि प्रज्ञप्त–सर्वज्ञ जिनेन्द्रद्वारा प्रतिपादित चातुर्याम वाला श्रुतचारित्र रूप धर्म सुनाया । उसे ही विस्तार रूप से उन्हें समझाया । जीव जिस प्रकार कर्मों से बंधते हैं, और जिस प्रकार कर्मों से मुक्त होते हैं–छूटते हैं यह सुनाया समझाया यावत् श्रावक धर्मरूप पंचम अणुव्रतों को समझाया इस तरह जितशत्रु राजा सुबुद्धि अमात्य के मुख से धर्म का व्याख्यान

છે ? જવાબમાં સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિદ્યમાન યાવત્ સદ્ભૂત ભાવ મેં જિન પ્રવચન માંથી મેળવ્યા છે. ત્યારે જીતશત્રુએ સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું જીનપ્રવચન સાંભળવાની ઇચ્છા રાખું છું.

(तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयाइं, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને પહેલાં કોઇપણ વખતે સાંભળેલો નહિ એવો કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત–સર્વજ્ઞ જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામવાળો શ્રુત–ચારિત્ર રૂપ ધર્મ સંભળાવ્યો. અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો. જે પ્રમાણે જીવ કર્મો વડે બંધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત કહી સંભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાંચ અણુવ્રતોને સમજાવ્યા. આ રીતે જીતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्दितः हर्षवशविसर्पद् हृदयः सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु हे देवानुप्रिय ! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं ' तथ्यमेतत् ' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदथ, तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि खलु तवान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं यावद् एवं द्वादशविधं श्रावकधर्मम् ' उपसंपज्जित्ता ' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहर्तुम् । यथा सुखं हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु. तत्र माम-

सुनकर और उसे हृदय में अवधारित कर बहुत ही अधिक प्रसन्न एवं तुष्ट हुए। हर्ष से गद्गद होकर उन्होंने सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार काहा–(सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं ३ जाव से जहेव जं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं० तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, तएणं जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभे माणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ इस पर रुचि करता हूँ यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वथा सत्य है इत्यादि यावत् जैसा तुम कहते हो वह वैसा ही है। इस लिये मैं तुम्हारे पास पञ्च अणुव्रत सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश विध श्रावक धर्म को स्वीकार करना चाहताहूँ । इस प्रकार राजा की बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उससे कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम्हें जिस प्रकार सुख ह–वैसा करो प्रमाद न करो शुभ कर्म में

સાંભળીને એને તેને શરીરમાં અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ થયો. હર્ષથી ગળગળો થઈને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે––

(सद्दहामिणं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं ३ जाव से जहेवं जं तुब्भे वयह तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं० तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ तएणं जियसत्त समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં હું શ્રદ્ધા રાખું છું, આમાં હું રુચિ રાખું છું. આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે જેવું તમે કહો છો તેવું જ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન છે. એથી હું તમારી પાસેથી પંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા ચાહું છું. આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરો. પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમાં મોડું કરવું યોગ્ય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिबन्धं कुरु=शुभकार्ये विलम्बो न करणीयइत्यर्थः। ततःखलु स जितशत्रुः सुबुद्धेरमात्यस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावद् द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते। ततः खलु जितशत्रुः श्रमणोपासकः 'अभिगयजीवाजीवे' अभिगतजीवाजीवः=परिज्ञातजीवाजीवस्वरूपः यावत् प्रासुकैषणीयैरशनादिभिः श्रमणनिर्ग्रन्थान् प्रतिलाभयन् =आहारादि ददन् विहरति=तिष्ठतिस्म। तस्मिन् काले जितशत्रुराज्यशासनकाले तस्मिन् समये=श्रावकधर्मपतिपालनसमये 'थेरागमणं' स्थविरागमनं=स्थविरमु-

विलम्ब करना योग्य नही है–इस तरह सुबुद्धि अमात्य के मुख से सुनकर जितशत्रु राजा ने उस सुबुद्धि अमात्य से पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया। इस तरह वे जितशत्रु राजा श्रमणोपासक बन गये। और जीव एवं अजीव तत्त्व के स्वरूप ज्ञाता भी हो गये। प्रसुक एषणीय आहरादि श्रमण निर्ग्रन्थ साधुओं के लिये प्रदान करने लगे। (तणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, एवं वयासी–एवं खलु सामी! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य, धम्मे इच्छिए पडिच्छिए,अभिरुइए, तएणं अहं सामी! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामिणं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए स० जाव पवइत्तए) उस काल जितशत्रु राजा के राज्यशासन काल में–उस स-

લેખાય નહિ. આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્ય પાસેથી પાંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ બાર પ્રકારનો ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકારી લીધો. આ પ્રમાણે તે જીતશત્રુ રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને જીવ તેમજ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને સમજનારા પણ થઇ ગયા પ્રાસુક એષણીય આહાર વગેરે શ્રમણ નિર્ગ્રંથ સાધુઓને આપવા લાગ્યા

(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं जियसत्तूराया सुबुद्धी य निगच्छइ, सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी एवं खलु, सामी मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छए, अभिरुइए, तएणं अहं सामी! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामिणं अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए)

તે કાળે અને તે સમયે એટલે કે જીતશત્રુ રાજા જ્યારે શાસન કરતા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीनां समवसरणं जातम्। जितशत्रु राजा सुबुद्धिरमात्यश्च निर्गच्छति=धर्मश्रवणार्थं ग्रामाद्बहिर्निस्सरति सुबुद्धिः धर्मंश्रुत्वा 'अन्यत्सर्वं पूर्ववत्, नवरं=विशेषस्त्वयम् यत् जितशत्रुं राजानमापृच्छामि यावत्-युष्माकं समीपे प्रव्रजामि दीक्षां ग्रहिष्यामीत्यर्थः। स्थविराऊचुः-यथासुखं हे देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं कुरु। ततः खलु सुबुद्धि र्यत्रैव जितशत्रुस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एवं खलु हे स्वामिन्! जितशत्रो! मया स्थविराणामन्तिके धर्मः निशान्तः=श्रुतः सोऽपिच धर्मोमे 'इच्छिए' इष्टः=वाञ्छितः, 'पडिच्छिए' प्रतीष्टः=विशेषतो वाञ्छितः, 'अभिरुइए' अभिरुचितः=आसेवनरूपेण सर्वथा वाञ्छितः। ततः खलु तस्मात् कारणात् अहं हे स्वामिन्! संसारभउव्विग्गे' संसारभयोद्विग्नः=संसारभयत्रस्तः

मय में-और उनके श्रावक धर्म के पालन करने के समय में-स्थविर मुनियों का वहां आगमन हुआ। जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप आये। सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियों से निवेदन किया-भदंत! मैं जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ। स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय! तुम्हे जिससे सुख हो वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है। इस तरह सुबुद्धि वहां से आकर जहां जितशत्रु राजा थे वहां आया वहां आकर कहा-स्वामिन्! मैंने स्थविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना है। वह मुझे बहुत ही रुचा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है, मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ गई है। मैं चाहता कि मैं

હતા તે કાળે અને તેઓ જ્યારે શ્રાવક ધર્મનું પાલન કરતા હતા તે સમયે-ત્યાં સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા. જીતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ માટે પોતપોતાને ત્યાંથી નીકળીને તેમની પાસે પહોંચ્યા. ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળીને સુબુદ્ધિએ મુનિઓને વિનંતી કરી કે હે ભદંત! જીતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા ચાહું છું. સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો જાણીને કહ્યું કે હે દેવ નુપ્રિય! તમને જેમાં સુખ મળતું હોય તેમ કરો. સારાં કામોમાં મોડું કરવું યોગ્ય કહેવાય નહિ. આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાંથી આવીને જીતશત્રુ રાજાની પાસે પહોંચ્યો અને તેણે રાજાને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે સ્વામી! સ્થવિર મુનિઓના મોંથી મેં ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે. મારી ઇચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે. વિશેષ રૂપમાં હું તેને ચાહવા લાગ્યો છું. મારી ઇચ્છા છે કે સંયમ ધારણ કરીને પોતાનું જીવન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'भीए' भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भयं प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुम् । ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-' अच्छाहि ' तिष्ठेम वयं तावद् गृहे हे देवानुप्रिय ! कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः, ततः पश्चात्=तदनन्तरं शब्दादिविषयोपभोगानन्तरम् ' एगयओ ' एकतः=सार्द्धम् स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजिष्यामः । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रोरेतमर्थं=पश्चाद्दीक्षाग्रहणरूपं भावं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जितशत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

संयम धारण कर अपने जीवन को सफल बनाऊँ । इस लिये हे स्वामिन् ! संसार भय से उद्विग्न बना हुआ मैं जन्म मरण के दुखो से भय भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरो के पास दीक्षा धारण करलू । (तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी अच्छामु ताव देवाणुकइवयाइंति वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो) अमात्य कि इस बात को सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहा । देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव संबन्धी प्रचुर काम भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें । इस के बाद एक साथ स्थविरों के पास मुण्डित होकर यावत् फिर दीक्षित हो जायेंगे । (तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमट्ठं पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं, माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवाल

સફળ બનાવવું. માટે હે સ્વામી ! સંસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના દુઃખોથી ભય પામેલો હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખું છું.

(तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-अच्छाहि ताव, देवाणुप्पिया ! कइवयाइंति वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो)

અમાત્યની એ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યભવના કામસુખોની મજા માણવા માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમાં રહીએ તો સારું. ત્યારપછી એકી સાથે આપણે બંને સ્થવિરોની પાસે મુંડિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું.

(तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्स०पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालसवासाइं वीइक्कंताइं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्षाणि व्यतिक्रान्तानि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वादश वर्षव्यतिक्रान्ते सतीत्यर्थः स्थविरागमनं संजातं, तएणं=तदा खलु परिषन्निर्गता । जितशत्रुरपि स्थविरान्तिके धर्मं श्रुत्वा 'एवं' एवमेव पूर्वोक्त सुबुद्धि वदेव सर्वं नवरं=विशेषस्त्वयम्-यत् हे देवानुप्रियाः ! सुबुद्धिम् आमन्त्रयामि, ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयामि, ततः खलु=तत्पश्चात् युष्माकमन्तिके यावत्-मुण्डो भूत्वा आगारात्=अगारभावात् अनगारितां=साधुतां प्रव्रजामि । स्थविरा ऊचुः- हे देवानुप्रिय ! यथासुखं=यथा

सवीसाइं वीइक्कंताइं ताइं तेणं कालेणं २ थेरागमणं तएणं जियसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धि आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि, तएणं तुब्भं अंतिए जाव पव्वयामि) इस प्रकार सुबुद्धि अमात्य ने जितशत्रु राजा की इस बात को स्वीकार कर लिया । इस तरह सुबुद्धि अमात्य के साथ विपुल मनुष्य भव संबन्धी काम भोगो का अनुभव करते हुए जितशत्रू राजाके १२ वर्ष निकल गये । उसकाल और उस समय में-अर्थात् १२ वर्ष व्यतीत हो जाने के समय में स्थविरोंका वहां आगमन हुआ । नगर की परिषद् स्थविरों का आगमन सुनकर धर्म सुनने की भावना से उन स्थविरों के पास आई । जितशत्रु राजा भी आये उनसे धर्म का उपदेश सुनकर जितशत्रु राजा सचेत हो गये । उन्हों ने कहा हे देवानुप्रियो ! मैं आपसे दीक्षा लेना चाहता हूँ अतः पहिले सुबुद्धि अपने अमात्य से पूछलूँ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य में स्थापित करदूँ-बाद में आप के पास मुंडित होकर अगार भाव से अनगार अवस्था स्वीकार करलूंगा । (अहासुहं,

---

तेणं कालेणं २ थेरागमणं तएणं जियसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवाणुप्पिया सुबुद्धिं आमंतेमि जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि तएणं तुब्भं अंतिए जाव पव्वयामि)

આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યે જીતશત્રુ રાજાની વાતને માની લીધી સુબુદ્ધિ અમાત્યની સાથે કામભોગો ભોગવતાં જીતશત્રુ રાજાને આમને આમ જ બાર વર્ષ પસાર થઈ ગયાં. તે કાળે અને તે સમયે એટલે કે કામસુખો ભોગવતા જીતશત્રુ રાજાને જ્યારે બાર વર્ષો પસાર થઈ ગયાં ત્યારે ત્યાં સ્થવિરો આવ્યા. નગરની પરિષદો સ્થવિરોનું આગમન સાંભળીને ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે સ્થવિરોની પાસે પહોંચી. જીતશત્રુ રાજા પણ ત્યાં ગયા અને ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળીને રાજા સાવધાન થઈ ગયા. તેઓએ સ્થવિરોને વિનંતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હું તમારી પાસેથી દીક્ષા લેવા ચાહું છું. હું પહેલાં સુબુદ્ધિ અમાત્યને પૂછી લઉ અને પછી મારા જ્યેષ્ઠ પુત્રને રાજ્યભાર સોંપી દઉં. ત્યારબાદ તમારી પાસે આવીને મુંડિત થઈશ ને અગારભાવથી અનગાર અવસ્થા સ્વીકારીશ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते मनसि सुखं स्यात्तथा कुरुष्वेत्यर्थः। ततः खलु जितशत्रुर्यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुबुद्धिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके धर्मोनिशान्तः, सोऽपि च धर्मे इष्टः, प्रतीष्टः, अभिरुचितः, तस्मादहं मुण्डो भूत्वा अगाराद् अनगारितां प्रव्रजामि, त्वं च खलु किं करोषि=तव का वाञ्छा वर्त्तते इत्यर्थः। ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रुमेवमवादीत्-

तएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वज्जामि, तं जइणं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठं पुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरूहित्ता णं ममं अंतिए पाउब्भवह) स्थविरों ने कहा-हे देवानुप्रिय ! यथा सुखं-तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो-हितावह कार्य में विलंब करना उचित नहीं है। इसके अनंतर वे जितशत्रु राजा वहां से अपने घर पर आये। वहां आकर उन्होने अपने अमात्य सुबुद्धि को बुलाया बुलाकर उससे इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैंने स्थविरों से श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है। वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रतीच्छित हुआ है। मेरे अन्तः करण में वह समा गया है। इस लिये मैं अब मुंडित होकर इस अगार अवस्था का परित्याग

(अहा सुहं, तएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी, जाव के अन्ने आहारे वा जाव वज्जामि तं जइणं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं तं गच्छहणं देवाणुप्पिया ! जेट्ठं पुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए पाउब्भवइ)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! 'યથા સુખ' એટલે કે તમને જેમાં સુખ મળતું હોય તેમ કરો. સારા કામોમાં મોડું કરવું યોગ્ય નથી. ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં સ્થવિરોની પાસેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે. તે ધર્મ મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે. મારા અંતરમાં તે ખૂબ જ ઊંડે પહોંચી ગયો છે. એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમાં તે વ્યાપ્ત થઈ ગયો છે. માટે હું હવે મુંડિત થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યજીને જીન-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदि भवान् प्रव्रजति तदा मे कोऽन्य आधारो वा यावत्-अहमपि ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा भवता सार्द्धं प्रव्रजामि । जितशत्रुः प्राह- तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रव्रजेः तद् गच्छ खलु हे देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्रं च कुटुम्बे स्थापय, स्थापयित्वा शिबिकां दूरुह्य ममान्तिके प्रादुर्भव, इति श्रुत्वा स सुबुद्धिरमात्यः राजाज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा यावत् प्रादुर्भवति । ततः खलु जितशत्रुः कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! अदीनशत्रोः कुमारस्य राज्याभिषेकमुपस्थापयत यावत् ते राजाज्ञां प्राप्यादीनशत्रुं

कर जिन दीक्षा धारण करना चाहता हूँ । कहो तुम्हारी क्या राय है ? जितशत्रु राजा की इस बात को सुनकर अमात्य सुबुद्धि ने उनसे कहा—यदि आप दीक्षा धारण करना चाहते हैं, तो अब मेरे लिये आपके सिवाय और कौन दूसरा आधार हो सकता है । अतः मैं भी अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुंब में अपने स्थान पर स्थापित कर आपके साथ ही दीक्षित होना चाहता हूँ । अमात्य सुबुद्धि की इस भावना को सुन कर जितशत्रु ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! यदि तुम मेरे साथ ही दीक्षित होना चाहते हो तो जाओ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करो-स्थापित कर फिर शिबिका पर आरूढ हो मेरे पास आ जाओ । (जाव पाउब्भवइ, तएणं जियसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी – गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह, जाव अभिसिंचंति, जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ) सुबुद्धि अमात्य ने राजा

દીક્ષા ધારણ કરવા ઇચ્છું છું. બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જીતશત્રુ રાજાની આ વાત સાંભળીને અમાત્ય સુબુધ્ધિએ તેને કહ્યું કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હું પણ મોટા પુત્રને કુટુંબના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉં છું. અમાત્ય સુબુધ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુટુંબના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાલખી ઉપર સવાર થઈને મારી પાસે આવી જાવ.

(जाव पाउब्भवइ, तएणं जीवसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्येऽभिषिञ्चति यावत्-जितशत्रू राजा सुबुद्धिनाऽमात्येन सह प्रव्रजितः। ततः खलु जितशत्रुरेकादशाङ्गानि अधीते। बहूनि वर्षाणि पर्यायः=श्रामण्यपर्यायः। मासिक्या संलेखनया सिद्धः। ततः खलु सुबुद्धि रेकादशाङ्गानि-अधीते, बहूनि-वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यावत्सिद्धः। सुधर्मास्वामी कथयति-एवम्=

के कहे अनुसार सब कार्य वैसा ही किया। बाद में वह जितशत्रु राजा के पास आ गया। जितशत्रु राजा ने इस के अनंतर कौटुंबिक पुरुषो को बुलाया-बुलाकर उनसे ऐसा कहा-देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ और युवराज अदीन शत्रु कुमारका राज्याभिषेक करो। राजाकी आज्ञानुसार उन लोगोने वैसा ही किया -अदीन शत्रु राजा सुबुद्धि अमात्य के साथ दीक्षित हो गये। राजर्षी जितशत्रुने ११ ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया। (बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे,तएणं सुबुद्धी एगारस अंगाइं अहिज्जइ,बहूणि वासाइं जाव सिद्धे! एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं बारमस्स णायज्झयणस्स एयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अनेक वर्षोंतक श्रामण्यपर्याय का पालन किया। बादमें एक मास की संलेखनासे ६०भक्तोका अनशन द्वाराछेदन कर वे सिद्धावस्थापन्न हो गये। सुबुद्धि मुनिराज ने ११ ग्यारह अंगों का अच्छी तरह अध्ययन किया-और बहुत वर्षोंतक श्रामण्य पर्याय का पालन कर सिद्ध अवस्था

સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાની આજ્ઞા મુજબ જ બધું કામ પતાવી દીધું. ત્યાર પછી તે રાજાની પાસે આવ્યો. જીતશત્રુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો જાઓ અને યુવરાજ અદીનશત્રુ કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરો. રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ બધી વિધિ પૂરી કરી દીધી. આ પ્રમાણે અદીનશત્રુકુમારને રાજ્યાસને બેસાડીને જીતશત્રુ રાજા સુબુધ્ધિ અમાત્યની સાથે દીક્ષિત થઈ ગયા. રાજઋષિ જીતશત્રુએ અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું.

(बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे, तएणं सुबुद्धी एगारसअंगाइं अहिज्जइ, बहुणि वासाइं जाव सिद्धे! एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं बारमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તેઓએ ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું. ત્યારપછી એક માસની સંલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન દ્વારા છેદન કર્યું અને ત્યારબાદ તેઓ સિદ્ધ થઈ ગયા. મુનિરાજ સુબુદ્ધિએ પણ સારી પેઠે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन द्वादशस्य उदकाख्यस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयं=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः ' त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि यथा भगवान्मुखाच्छ्रुतं तथैव तुभ्यं प्रतिपादयामि ॥ सू० २ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां द्वादशमध्ययनं संपूर्णम् ॥१२ ॥

को प्राप्त कर लिया। सुधर्मा स्वामी जंबू स्वामी से कहते हैं-हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस द्वादश उदकाख्य ज्ञाताध्ययन का इस प्रकार से यह पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित किया है। सो जैसा मैंने उन भगवान् के मुख से सुना है वैसा ही यह तुम से कहा है। अपनी तरफ से इस में कुछ भी मिलावट नहीं की है। सूत्र ॥ २ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका बारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી. સુધર્મા સ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જંબૂ ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકાખ્ય જ્ઞાતા-અધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. મેં ભગવાનના શ્રીમુખથી જેવો અર્થ સાંભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે. મેં આમાં પોતાની મેળે કોઈ પણ વાત ઉમેરી નથી. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું બારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ त्रयोदशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गतं द्वादशमध्ययनम्, सम्प्रति त्रयोदशमारभ्यते–अस्याध्ययनस्य पूर्वेण सहाऽयं सम्बन्धः–पूर्वस्मिन् अध्ययने संसर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरुक्ता, इह तु त्रयोदशेऽध्ययने तदभावात् गुणहानिरुच्यते इत्येवं पूर्वाध्ययनेन सह अयमेव संबद्धः तस्येदमादि सूत्रमाह–' जइ णं भंते ' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरणं, परिसा निग्गया । तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे, चउहिं समाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

–: णंद मणियार नाम का तेरहवां अध्ययन प्रारंभः–

१२बारवां अध्ययन समाप्त हो चुका । अब तेरहवां अध्ययन प्रारंभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में संसर्ग (सत्संग) विशेष के वश से० गुण वृद्धि कही गई है–यहां इस तेरहवें अध्ययन में उस के अभाव से गुण हानि कही जावेगी । ' जइणं भंते ! समणेणं ' इत्यादि । सूत्र ॥ १ ॥

णंद मणियार नामे तेरभु अध्ययन प्रारंभ.

બારમું અધ્યયન પૂરૂ થઇ ચૂકયું છે. હવે તેરમું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. આ અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલાંના અધ્યયનમાં સંસર્ગ (સોબત) વિશેષથી ગુણ વૃદ્ધિ બતાવવામાં આવી છે. આ તેરમા અધ્યયનમાં સંસર્ગ વિશેષના અભાવથી ગુણ–હાનિ નિરૂપવામાં આવશે.

जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीका—जम्बू स्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् संप्राप्तेन, सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं गतेन, द्वादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः = संसर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरूपोऽर्थः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः= प्ररूपितः, तर्हि तदनन्तरम् त्रयोदशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताऽध्ययनस्य, श्रमणेन भगवता महावीरेण कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्।

टीकार्थ-(जइणं भंते) हे भदंत ! यदि (समणेणं भगवया महावीरेणं) श्रमण भगवान महावीर ने (जाव सम्पत्तेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तेरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते) कि जो सिद्धि गति नामक स्थान के भागी बन चुके हैं बारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ निर्दिष्ट किया है-तो हे भदंत उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने उस तेरहवें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव-अर्थ प्ररूपित किया है ? (एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरणं, परिसा निग्गया) इस प्रकार जंबू स्वामी का प्रश्न सुनकर श्री सुधर्म स्वामी उन्हें समझा ने के निमित्त कहते हैं कि जंबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उस नगर के बहिर्भाग में गुणशिलक नाम का चैत्य था। उस में भगवान् महावीर प्रभु आये। प्रभु के

टीकार्थ-(जइणं भंते !) હે ભદન્ત ! જો (समणेणं भगवया महावीरेणं) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—

(जाव सम्पत्तेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तेरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते)

કે જેઓ સિધ્ધગતિ મેળવેલા છે-બારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે હે ભદન્ત ! તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरणं परिसा निग्गया)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીનો પ્રશ્ન સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને સમજાવવા માટે કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરની

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्य नगरस्य बहिर्भागे गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्। तत्र भगवतो महावीरस्य समवसरणं संजातम्। भगवद्दर्शनार्थं परिषन्निर्गता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'सोहम्मेकप्पे' सौधर्मे कल्पे=सौधर्मनाम्नि देवलोके दर्दुरावतंसके विमाने, सभायां सुधर्मायां दर्दुरे सिंहासने दर्दुरो दर्दुरनामको देवः 'चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं' चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः चतुस्सहस्रसंख्यकैः-सामानिकदेवैः, तथा 'चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं' चतसृभिरग्रमहिषीभिः सपरिषद्भिः= स्वस्व परिषत्सहिताभिश्चतुः संख्यकाभिः पट्टदेवीभिः संपरिवृतः 'एवं जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं' भुंजमाणो विहरइ' एवं यथा सूर्याभो राजप्रश्नीयसूत्रे-सूर्याभदेवस्य वर्णनं प्रोक्तं तद्वदत्रापि बोद्धव्यम्, यावत्-दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति॥ सू० १॥

वंदना करने के लिये परिषद आयी और देशना सुनकर वापिस चली आयी (तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दद्दुरंसि सीहासणंसि, दद्दुरे देवे चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ) उसी काल और उसी समय में सौधर्म नाम के देव लोक में दर्दुरावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में दर्दुर सिंहासन पर दर्दुर नाम का देव चार हजार सामानिक देवो के एवं अपनी २ परिषद सहित चार पट्ट देवियों के साथ सूर्याभदेव की तरह दिव्य काम भोगों का अनुभवन करता हुआ बैठा था। राज प्रश्नीय सूत्र में सूर्याभ देव का वर्णन यहां पर भी जानना चाहिये। सूत्र॥ १॥

બહાર ગુણશીલક નામે ચૈત્ય (જૈન દેરાસર) હતું. તેમાં ભગવાન મહાવીર આવ્યા. પ્રભુને વંદન કરવા માટે નગરની પરિષદ આવી અને દેશના સાંભળીને પાછી જતી રહી.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दद्दुरंसि सीहासणंसि, दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે સૌધર્મ નામના દેવલોકમાં દર્દુર સિંહાસન ઉપર દર્દુર નામે દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવોની અને પોતપોતાની પરિષદા સહિત ચાર પટ્ટ દેવીઓ (પટરાણીઓ) ની સાથે સૂર્યાભ દેવની જેમ દિવ્ય કામ સુખોને અનુભવતો બેઠો હતો. " રાજ પ્રશ્નીય સૂત્ર " માં સૂર્યાભ દેવનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. અહીં પણ તે પ્રમાણે જ વર્ણન જાણી લેવું જોઇએ. ॥ સૂ. "૧"॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे२ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए। जहा सूरियाभे। भंतेति भगवं गोयमे समणे भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–अहो णं भंते! दद्दरे देवे महड्ढिए महज्जुइए महाबले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स सा दिव्वा देवड्ढी देवज्जुई कहिंगया कहिं पविट्ठा गोयमा! सरीरं गया सरीरं अणुप्पविट्ठा, कूडागारदिट्ठंतो। दद्दुरेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देवड्ढी देवज्जुई, किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया? एवं खलु गोयमा! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। तत्थ णं रायगिहे णयरे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०। तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! समोसढे, परिसा णिग्गया। सेणिए राया णिग्गए तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ। णंदे धम्मं सोच्चा णिसम्म समणोवासए जाए। तएणं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारं विहरामि, तए णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं२ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था तएणं नंदे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ परिगेण्हित्ता पोसहसालाए जाव विहरइ, तएणं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाइ य पियइ य पाणियं च संवहइ, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० सेणियं आपुच्छित्ता रायगिहस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ कल्लं पाउ० जाव पोसहं पारेइ पारित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्ठवेइ उवट्ठवित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं सामी! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया!, तएणं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था, तएणं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला संछण्णपत्तबिसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसो गंधियपुंडरिय महापुंडरीय सयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोव-वेया परिहत्थभमंतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-रियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ॥ सू० २ ॥

टीका—' इमं च णं ' इत्यादि । स दर्दुरको देवः इमं च खलु ' केवल-कप्पं ' केवलकल्पं = सम्पूर्णं जम्बूद्वीपं द्वीपं विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना --अवधिज्ञानेन ' आभोएमाणे २ ' आभोगयन् आभोगयन् = वारंवारमव-लोकयन् ' जाव ' ' नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए ' यावन्नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगतः ' जहा सुरियाभे ' यथा सूर्याभः, सूर्याभदेववत् । तद् गमना-नन्तरं भदन्त ! इति संबोध्य भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं— वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-अहो ! खलु भदन्त ? दर्दुरो

' इमं च णं केवलकप्पं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-वह दर्दुरकदेव (इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं २) इस केवल कल्प-संपूर्ण-जंबूद्वीप नाम के द्वीप को (विउलेणं ओहिणा) अपने विपुल अवधिज्ञान से (आभोए माणे २) बार २ देखता हुआ (जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए) यावत् नाट्य विधि को दिखला कर चला गया (जहा सूरियाभे) सूर्याभदेव की तरह (भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) उस के चले जाने के बाद हे भदंत ! इस प्रकार से संबोधित करके भगवति गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु से इस प्रकार पूछा (अहो णं भंते ! ददुरे देवे महड्ढिए महज्जुइए महाबले, महाजसे

' इमं चणं केवलकप्पं ' इत्यादि

તે દર્દુરક દેવ (इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं २) આ કેવલ કલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને (विउलेणं ओहिणा) પોતાના અવધિજ્ઞાનથી (आभोएमाणं २) વારંવાર જોતો (जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए) યાવત્ નાટ્ય વિધિનું પ્રદર્શન બતાવીને જતો રહ્યો. (जहा सूरियाभे) સૂર્યાભ દેવની જેમ (भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) તેના જવા પછી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુના ચરણોમાં ભગવાન ગૌતમે ' હે ભદંત ! ' એવી રીતે સંબોધીને તેઓએ પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवो महर्द्धिको महाद्युतिकः, आश्चर्यकारि महद्धर्यादियुक्तोऽयं वर्त्तते दर्दुरस्य खलु भदन्त ! देवस्य सा दिव्या देवर्द्धिर्देवद्युतिः कुत्र गता कुत्र प्रविष्टा ? या पूर्वं दृष्टेति भावः । भगवानाह-हे गौतम ! सा दिव्या देवर्द्धिः देवद्युतिश्च तस्य शरीरं गता शरीरमनुप्रविष्टा । अत्र 'कूडागारदिट्ठंतो' कूटागारदृष्टान्तो बोध्यः । कूटागारदृष्टान्तसमन्वयाय गौतमस्य भगवतो महावीरस्य च उक्तिःप्रयुक्तिरधोनिर्दिष्टप्रकारेण ज्ञेया-गौतमस्वामी पृच्छति हे भदन्त !=हे भगवन् ! दर्दुरेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः देवद्युतिः कथं=केन प्रकारेण लब्धा=समुपार्जिता प्राप्ता= आयत्तीभूता अभिसमन्वागता=सम्यक्स्वभोगविषयीकृता ? भगवानाह—

महासोक्खे, महाणुभावे, ददुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई कहिं गया, कहिं पविट्ठा) हे भदंत ! अभी२यह दर्दुर देव आश्चर्यकारी महद्धर्यादि से युक्त था, सो इस समय उस दर्दुर देव की हे भदंत ! वह पूर्वदृष्ट दिव्य देवर्द्धि, देवद्युति कहां गई, कहां प्रविष्ट हो गई ? (गोयमा ! सरीरं गया, सरीरं अणुप्पविट्ठा) इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर प्रभु ने उन से कहा-हे गौतम ! वह दिव्यदेवर्द्धि और दिव्य देवद्युति उस दर्दुर देव के शरीर में चली गई है, शरीर में प्रविष्ट हो गई है । (कूडागार दिट्ठंतो) इस विषय में कूटागार दृष्टान्त प्रयुक्त हुआ है । इसी कूटागारदृष्टान्त के समन्वय के लिये भगवान् गौतम और महावीर प्रभु की यह उक्ति प्रयुक्ति अधोनिर्दिष्ट प्रकार से जाननी चाहिये (दर्दुरे णं भंते देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई किण्णा लद्धा किण्णा

(अहोणं भंते ! ददुरे देवे महड्ढिए महज्जुइए, महाबले, महाजसे, महासोक्खे, महाणुभावे ददुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई कहिं गया, कहिं पविट्ठा)

હે ભદંત ! હમણાં તો આ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી મહર્દ્ધિ વગેરેથી સંપન્ન હતો આ સમયે દર્દુરક દેવની હે ભદંત ! તે પૂર્વ દૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ, દેવદ્યુતિ ક્યાં જતી રહી છે ? ક્યાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગઈ છે ? (गोयमा ! सरीरं गया, सरीरं अणुप्पविट्ठा) આ રીતે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ અને દિવ્ય દેવદ્યુતિ તે દેવ દર્દુરકના શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગઇ છે. શરીરમાં જતી રહી છે (कूडागारदिट्ठंतो) આ વિશેષ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે. આ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્તના સમન્વય માટે ભગવાન ગૌતમ અને મહાવીર પ્રભુની ચર્ચા નીચે લખ્યા મુજબ જાણવી.

(ददुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं खलु हे गौतम ! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यं, श्रेणिको राजाऽऽसीत् । तत्र खलु राजगृहे नगरे नन्दनामा मणिकारश्रेष्ठी आढ्यो दीप्तोऽपरिभूतः परिवसति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहं तत्र राजगृहे समवसृतः परिषन्निर्गता श्रेणिको राजा निर्गतः । ततः खलु स नन्दो मणिकार श्रेष्ठी अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् स्नातः पादचारेण= पादाभ्यामेव न तु रथाश्वादि यानेन ' जाव पज्जुवासइ ' मम वन्दनार्थमागतो वन्दित्वा नमस्यित्वा च यथास्थानमुपविश्य पर्युपास्तेस्म । नन्दः नन्दमणिकारश्रेष्ठी धर्मं = श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा श्रमणोपासकः = श्रावको जातः । ततः खलु अहं (महावीरस्वामी) राजगृहात् प्रतिनिष्क्रान्तो बहिर्जनपद-

---

पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नयरे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०) गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं भदंत ! दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि और दिव्य देवद्युति किस प्रकार से उपार्जितकी, किस प्रकार से अपने आधीन की और किस प्रकार उसे अपने भोग के विषय भूत बनाई ? प्रभु ने कहा गौतम ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में, भरत क्षेत्र में, राजगृह नाम के नगर में गुण शिलक नाम का चैत्य था । नगर के राजा का नाम श्रेणिक था । उस राजगृह नगर में नन्द नामका मणिकार श्रेष्ठी रहता था । यह बहुत ही आढ्य-धन संपन्न-एवं अपरि भूत-जनमान्य-था (तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए, राया णिग्गए, तएणं से णंदे मणि-

---

किण्णा अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नयरे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०)

ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદંત ! દર્દુર દેવે તે દિવ્ય દેવર્ધિ અને દિવ્યદ્યુતિ કેવી રીતે મેળવી. કેવી રીતે પોતાને આધીન બનાવી અને કેવી રીતે તેને પોતાના ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી ? પ્રભુએ કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે એ જ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભરતક્ષેત્રમાં, રાજગૃહ નામના નગરમાં ગુણશીલક નામે ચૈત્ય હતું. તે નગરના રાજાનું નામ શ્રેણિક હતું. તે રાજગૃહ નગરમાં નન્દ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ રહેતો તે બહુ જ આઢય-ધનવાન-અપરિભૂત-જનમાન્ય (નગરમાં પૂછાતો) હતો.

तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहारं विहरामि। ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् 'असाहु-दंसणेणय' असाधुदर्शनेन=कुगुरुसंसर्गेण 'अपज्जुवासणाए' अपर्युपासनया च= सुगुरोरनासेवनेन 'अणणुसासणाए य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन 'असुस्सूसणाए य' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मश्रवणाभावेन च, तथा 'सम्मत्तपज्जवेहिं' सम्यक्त्वपर्यवैः 'परिहायमाणेहिं' परिहीयमानैः २ क्रमशः क्षीयमाणैः 'मिच्छत्तपज्जवेहिं मिथ्यात्वपर्यवैः 'परिवड्ढमाणेहिं' परिवर्द्धमानैः= पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिमुपगतैः सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिथ्यात्वं मिथ्यात्वभावं प्रतिपन्नः=प्राप्तः=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत्। ततः खलु नन्दोमाणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जु-वासइ, णंदे धम्मं सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए) उसी काल में और उसी समय में हे गौतम! मैं उस राजगृह नगर में विहार करता हुआ पहुँचा। वहां का समस्त परिषदा वंदना नमस्कार करने के लिये गुणशिलक चैत्य में आई। श्रेणिक राजा भी आया। जब उस मणि कार श्रेष्ठी नंद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान आदि से निश्चिन्त होकर पैदल ही मेरी वंदना करने के लिये आया। वहां आकर वह वंदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया। उसने श्रुत चारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया। (तएणं अहं रायगिहाओ पडि निक्खंते बहिया जणवयविहारं विहरामि) इसके बाद मैं वहां से राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णंदे धम्मं सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए)

તે કાળે અને તે સમયે હે ગૌતમ! હું વિહાર કરતો કરતો રાજગૃહ નગરમાં પહોંચ્યો. નગરની પરિષદા ગુણશીલક ચૈત્યમાં વંદના અને નમસ્કાર કરવા માટે આવી. શ્રેણિક રાજા પણ વંદન તેમજ નમન કરવા માટે આવ્યા હતા. મણિ-યાર શ્રેષ્ઠિ નંદને જ્યારે મારા આવવાના સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પગપાળા જ મને વંદન કરવા માટે આવ્યો. ત્યાં આવીને વંદન તેમજ નમન કરીને તે ઉચિત સ્થાને બેસી ગયો. શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળીને તેણે ગૃહસ્થ ધર્મ ધારણ કરી લીધો એટલે કે તે શ્રમણો-પાસક થઈ ગયો. (तएणं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारं विहरामि) ત્યારપછી હું ત્યાંથી-રાજગૃહ નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને બહાર જનપદોમાં વિહાર કરવા લાગ્યો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यदा=एकस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेट्ठामूलंसि मासंसि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य या चन्द्रेण सह योगो भवति पौर्णमास्यां यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलस्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, 'अट्ठमभत्तं' अष्टमभक्तम्-उपवासत्रयरूपं तपः परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालायां 'जाव विहरइ' यावत् पौषधिकः=समाश्रितपौषधः विहरति। ततः खलु नन्दस्य= नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृष्णया क्षुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सतः अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिकः=

लगा (तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइं असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य, अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहां से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नंद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के संसर्ग से-सद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्त्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एवं मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिंगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया= मिथ्यात्वी हो गया। (तएणं णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठा मूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएणं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि, परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइं असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था)

ત્યાંથી મારા વિહાર કર્યા પછી કોઈ વખતે અસાધુના દર્શનથી, કુગુરુના સંસર્ગ (સોબત) થી, સદ્‌ગુરુઓની અનાસેવનાથી, સુગુરુના ઉપદેશને સાંભળવાની તક નહિ મળવાથી, સુગુરુની પાસેથી ધર્મ નહિ સાંભલવાથી તેમજ સમ્યકત્વ રૂપ પર્યવ-પરિણામ અનુક્રમે ક્ષીયમાણ (નષ્ટ) હોવાથી અને મિથ્યાત્વરૂપ પર્યવ પરિણામ અનુક્રમે વૃદ્ધિ પામવાથી મિથ્યાત્વ દશાપન્ન થઈ ગયો-મિથ્યાત્વી બની ગયો. (तएणं णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठामूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएणं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) કોઈ એક દિવસે ઉનાળાના જેઠ મહિનામાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्मगतोविचारः समुदपद्यत । तदेवाह-' धन्नाणंतं ' इत्यादि-धन्याः खलु ते राजेश्वरयावत्सार्थवाहप्रभृतयः, येषां खलु राजगृहस्य बहिः बह्व्यो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्यः=कमलयुक्ताः यावत्-सरः सरः पङ्क्तिकाः=यत्रैकस्मात्सरसोऽस्मिन् सरसि जलं प्रवहति, एवं सरसां जलाशयानां पङ्क्तयः पङ्क्तिभूता जलाशया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिबति च तथा-पानीयं च संवहति=ततो जलं नयति । तत्=तस्मात्श्रेयः=उचितं खलु मम कल्ये= प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां सूर्योदये सतीत्यर्थः, श्रेणिकं राजानमापृच्छ्य राजगृहस्य

जेठ मास में मणिकार श्रेष्ठी नंद ने अष्टम भक्त किया तीन उपवास किये— और पौषध शाला में रहा- । जब उसकी यह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी तब उसे तृष्णा पिपासा और क्षुधा ने व्याकुल कर दिया। उस समय उसे इस प्रकार का विचार आया- (धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहपभियओ जेसिणं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थणं बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणियं च संवहइ तं सेयं ममं कल्लं पाउ० सेणियं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ) राजेश्वर से लेकर सार्थवाह प्रभृति वे जन धन्यवाद के पात्र हैं कि जिनकी राजगृह नगर के बाहर अनेक वावडियां है,-पंक्ति भूत जलाशय हैं कि जिन में अनेक मनुष्य स्नान करते हैं, अनेक जन पानी पीते है अनेक उन में से पानी ले जाते हैं । तो मुझे भी

મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો-ત્રણ ઉપવાસ કર્યા-અને પૌષધશાળામાં રહ્યો. જ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો. તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (धन्ना णं ते राई सर जाव सत्थवाहपभियओ जेसिणं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणियं च संवहइ तं सेयं कल्लं पाउ० सेणियं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ) રાજેશ્વરથી માંડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ઘણી વાવો છે, પંક્તિભૂત જળાશયો છે-કે જેમાં ઘણા માણસો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણસો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાંથી પાણી લઇ જાય છે. તો હવે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्वभागे इत्यर्थः ' वत्थुपाढगरोइयंसि ' वस्तुपाठकरुचिते=वस्तुपाठकानां=गृहादिनिर्माणशास्त्रनिपुणानां=भूगर्भविद्याविशारदानां रुचितः=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन् तादृशे भूमिभागे=भूमदेशे यावत् नन्दां=नन्दाभिधां पुष्करिणीं=वापीं खनयितुम् । इति कृत्वा=इति मनसिनिधाय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण संप्रेक्षते,=विचारयति, संप्रेक्ष्य कल्ये प्रादुष्प्रभातायां यावत्-रजन्यां तेजसा ज्वलितसूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्संपरिवृतः महार्थं ' जावरायारिहं ' महार्घं महार्हं विपुलं राजार्हंप्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अब यही उचित है कि मैं भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार पर्वत की तलहटी- पार्श्व भाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता पास करे उस स्थान पर एक नंदा नामको वावडी को खुदवाऊ । इस प्रकार उस ने अपने मन में विचार किया । (संपेहित्ता कल्लं पा० जाव पोसहं पारेइ पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एवं वयासी- इच्छामिणं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !) विचार करके उसने प्रातः काल सूर्योदय होने-पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवट कर काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું પણ આવતી કાલે સવાર થતાં જ શ્રેણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઇશાન કોણમાં વૈભાર પર્વતની તળેટીમાં વાસ્તુશાસ્ત્રને જાણનારા જે સ્થાનને પસંદ કરે તે સ્થાન ઉપર એક નંદા નામે વાવ ખોદાવું. આ રીતે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો. (संपेहित्ता कल्लं पा० जाव पोसहं पारेइ पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्ठवेइ. उवट्ठवेत्ता एवं वयासी इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !) વિચાર કરીને તેણે બીજા દિવસે સવારે સૂર્યોદય થતાં પૌષધ પાળ્યો અને પૌષધ પાળીને તેણે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી કાગડા વગેરે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत्प्राभृतम् उपस्थापयति उपस्थाप्य एवमवादीत्–इच्छामि खलु हे स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् राजगृहस्य बहिः 'जाव खणावेत्तए' यावत्–उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्याऽदूरसामन्ते वास्तु पाठकरुचिते भूमिभागे यावत् नन्दां पुष्करिणीं खनयितुम् । श्रेणिको प्राह– यथासुखं हे देवानुप्रिय ! इच्छानुसारं कुरु । ततः खलु नन्दः श्रेष्ठी श्रेणिकेन राज्ञाऽभ्यनुज्ञातः सन् हृष्टतुष्टः राजगृहस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य वास्तुपाठकरुचिते भूमिभागे नन्दां पुष्करिणीं खनयितुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत् । ततः खलु सा

मित्रादिजनों से परिवृत होकर उसने महार्थ साधक यावत् बहुत कीमती राजा को भेंट करने योग्य पदार्थ लिया । लेकर वह जहां श्रेणिक राजा था वहां गया । वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर वह भेंट उनके समक्ष रखी । बाद में राजा से उसने इस प्रकार कहा हे स्वामिन् मैं आपसे आज्ञा प्राप्तकर राजगृह नगर के बाहर ईशान कोण में वैभार गिरि के पार्श्वभाग में एक पुष्करिणी बनवाना चाहताहूँ । राजा ने उस की बात सुनकर उससे कहा हे देवानुप्रिय ! यथासुखम्– तुम्हारी जैसी इच्छा हो उस के अनुसार वैसा ही करो । (तएणं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था) इस प्रकार श्रेणिक राजा से आज्ञा प्राप्त कर वह मणिकार श्रेष्ठी नंद बहुत ही अधिक आनंदित एवं संतुष्ट हुआ । बाद में वहां से आकर वह राजगृह नगर के बीच से

પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું. ત્યારબાદ પોતાની મિત્ર–મંડળીને સાથે લઈને મહાર્થ સાધક યાવત બહુ કિમતી રાજાને ભેટ કરવા યોગ્ય પદાર્થો લીધા. લઇને તે જ્યાં શ્રેણિક રાજા હતા ત્યાં ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે બંને હાથ જોડીને રાજાને નમસ્કાર કર્યા અને પછી ભેટ તેમની સામે અર્પણ કરી. ત્યારબાદ રાજાને વિનંતી કરતાં તેણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! તમારી આજ્ઞા મેળવીને હું રાજગૃહ નગરની બહાર ઈશાન કોણમાં વૈભાર પર્વતની તળેટીમાં એક પુષ્કરિણી (વાવ) ખોદાવવાની મારે ઇચ્છા છે રાજાએ તેની વાત સાંભળીને તેને કહ્યું–કે હે દેવાનુપ્રિય ! " यथा सुखम् " તમારી જેવી ઇચ્છા હોય ખુશીથી તમે તે પ્રમાણે કરો. (तएणं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था) આ રીતે શ્રેણિક રાજા પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદ ખૂબજ આનંદિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો. ત્યારપછી ત્યાંથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्, सा कीदृशी जाता ? इत्याह-' चाउक्कोणा ' इत्यादि-' चाउक्कोणा ' चतुष्कोणा= समतीरा समम् = उन्नतत्वावनतत्वरहितं तीरं=तटप्रदेशो यस्याः सा तथोक्ता, ' अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला ' अनुपूर्वे सुजातवप्रगम्भीरशीतलजला- अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभावरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप्रः= केदाराकारं जलस्थानं तत्र गम्भीरम्=अगाधं शीतलं च जलं यस्यां सा तथा, ' संछण्णपत्तविसमुणाला ' संछन्नपत्रविसमृणाला=संछन्नानि=जलेनान्तरितानि जलमग्नानीत्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि विसानि=कमलकन्दाः मृणालानि=कमल-

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-वहां पहुँचकर उसने नंदा नाम की बावडी खुदवानी प्रारंभ कर दी। (तएणं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्व सुजायवप्पगंभिरसीयलजला, संछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नंदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस बावडी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

આવીને તે રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો. નીકળીને તે વાસ્તુશાસ્ત્રના નિષ્ણાતો વડે બતાવવામાં આવેલા સ્થાન ઉપર પહોંચ્યો અને ત્યાં જઈને તેણે નંદા નામની વાવ ખોદાવવી શરૂ કરી દીધી. (तएणं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावी होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला संछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थयमंतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविचरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) આમ દરરોજ ખોદતાં ખોદતાં છેવટે એક દિવસે નંદા પુષ્કરિણી વાવ) સંપૂર્ણપણે ખોદાઈ ગઈ. તેને ચાર ખુણા હતા. કિનારાનો ભાગ તેનો એક સરખો હતો એટલે કે ઊંચો નીચો નહોતો. આ વાવનું અગાધઠંડા પાણીથી ભરેલું નીચેનું જળ સ્થાન ખૂબ જ ઊંડું

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नालानि यस्यां सा तथा । ' बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीय महापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपप्फुल्लकेसरोववेया ' बहूत्पलपद्मकुमुदनलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रप्रफुल्लकेशरोपपेता–बहूनि = बहूविधानी उत्पलानि पद्मानि च=सामान्यकमलानि कुमुदानि=चन्द्रविकासिकमलानि नलिनानि=विशिष्टगन्धयुक्तकमलानि सुभगानि=सुन्दराणि सौगन्धिकानि=सन्ध्याविकासिकमलानि, पुण्डरीकाणि=श्वेतकमलानि, महापुण्डरीकाणि=महाश्वेतकमलानि, शतपत्राणि=शतदलकमलानि सहस्रदलकमलानि, कीदृशानि एतानि ? इत्याह– प्रफुल्लकेशराणि=विकसितकेशराणि, तैरुपपेता=व्याप्ता । ' परिहत्थभमंतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइय महुरसरनाइया ' परिहत्थभ्रमन्मत्तषट्पदानेकशकुनगणमिथुनशब्दोन्नतिकमधुरस्वरनादिता– ' परिहत्थ ' इतिदेशीशब्दोऽयम् , परिहत्था '=प्रचुराः, भ्रमन्तः=इतस्ततो विचरन्तः मत्ताः=मकरन्दपानोन्मत्ताः षट्पदाः=भ्रमरास्तेषाम् , तथा–अनेकेषां=नानाविधानां शकुनगणानां= हंससारसादिपक्षिसमूहानां मिथुनानां=युगलरूपाणां शब्दोन्नतिकाः=उत्कृष्टयुक्ता ये मधुरस्वरः तैः नादिता=शब्दायमानेत्यर्थः प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा– प्रतिरूपा–अत्यन्तरमणीयेत्यर्थः ॥ सू० २ ॥

कमल दल कमल कंद और कमल नाल सदा जल से अन्तरित हो रहे थे। यह अनेक प्रकार के विकसित केशरों वाले उत्पलों से, कमलों से, चन्द्रविकाशी कुमुदों से, विशिष्ट गंध वाले कमलों से सन्ध्या विकाशी सुन्दर सौगंधिको से श्वेतकमलो से, महा पुण्डरीकों से, शतपत्र वाले कमलों से और सहस्र पत्र वाले कमलों से आच्छादित हो रही थी। इधर भ्रमण करते हुए अनेक भ्रमरों के कि जो मकरंद पान से उन्मत्त बन रहे थे, तथा नाना प्रकार के पक्षिगणों के–हंस, सारस आदि पक्षि समूह के–युगलों के उत्कृष्ट शब्द युक्त मधुर स्वरों से वाचालित

હતું, ગંભીરહતું અને અનુક્રમે નિષ્પન્ન કરવામાં આવ્યું હતું આમાં કમળદલ, કમળકંદ, અને કમળનાળ હંમેશા પાણીથી ઢંકાયેલાં (અંતરિત) રહેતાં હતાં. આ વાવ ઘણી જાતના વિકસિત કેશરોવાળા ઉત્પલોથી, કમળોથી, ચંદ્રવિકાસી કુમુદોથી વિશિષ્ટ સુગંધવાળા કમળોથી, સંધ્યા વિકાસી સુંદર સૌગંધિકોથી સફેદ કમળોથી, મહા પુંડરીકોથી, શતપત્રવાળા કમળોથી અને સહસ્ર (હજાર) પત્રવાળા કમળોથી ઢંકાયેલી હતી. આ વાવ મકરંદ (પુષ્પરસ) નો સ્વાદ લઈને ઉન્મત્ત થઈ ગયેલા આમતેમ ઉડતા ઘણા ભમરાઓના તેમજ ઘણી જાતના પક્ષીઓના હંસ, સારસ વગેરે પક્ષી સમૂહોના પક્ષીયુગલોના ઉત્કૃષ્ટ અને મધુર

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलम्–तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेइ । तएणं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति । तएणं नंदे मणियासेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तकम्माणि लेप्पकम्माणि गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाइं उवदंसिज्जमाणाइं२ चिट्ठंसि, तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थणं बहवे णडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहूजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संन्निसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—' तएणं ' इत्यादि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी नन्दायाः पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चतुरो वनषण्डान् रोपयति कारयतीत्यर्थः । ततः खलु

बनी हुई थी । यह बहुत प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप थी–तात्पर्य अत्यंत रमणीय थी ॥ सूत्र २ ॥

' तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी '–इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं)इसके बाद(से णंदे मणियारसेट्ठी) उस मणिकार श्रेष्ठी

સ્વરોથી મુખરિત (શબ્દયુક્ત) થઈ રહી હતી આ વાવ ખૂબ જ પ્રાસાદીય, દર્શનીય, અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતી એટલે કે તે અત્યંત રમણીય હતી. સૂત્ર ૨

(तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी–इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારબાદ (से णंदे मणियारसेट्ठी) તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते वनषण्डाः 'अणुपुव्वेणं' अनुपूर्वेण = अनुक्रमेण 'सारक्खिज्जमाणा' संरक्ष्यमाणाः = पशुपक्ष्याद्युपद्रवतः 'संगोविज्जमाणा' संगोप्यमानाः हिमवनदवादिभ्यः, 'संवड्ढिज्जमाणा य' संवर्ध्यमानाश्च=जलसेकादिना वृद्धिं प्राप्ता सन्तः वनषण्डाः पूर्णरूपेण परिणता जाताः। कीदृशास्ते जाताः? इत्याह –'किण्हा' इत्यादि 'किण्हा' कृष्णाः=हरितत्वातिशयेन कृष्णवर्णा 'जाव' यावत्–'निकुरुंबभूया' महामेघनिकुरम्बभूताः सजलजलधरनिकरसदृशाः पत्रिताः पुष्पिताः 'जाव उवसोभेमाणा २' यावत्–श्रिया=वनषण्डश्रिया अतीव उपशोभमानाः २ तिष्ठन्ति। ततः खलु नन्दः मणिकार श्रेष्ठी पौरस्त्ये वनषण्डे एकां महतीं चित्रसभां कारयति। कीदृशाम्? इत्याह–'अणेगे' त्यादि–'अणेगखंभ-

---

नंदने (णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं) नंदा पुष्करिणी की चारों दिशाओं में (चत्तारिवणसंडे रोवावेइ) चार वनषंड आरोपित करवाये (तएणं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति) आरोपित किये गये वे चारों वनषंड क्रमशः संरक्षित होते हुए–पशु पक्षी आदि के उपद्रव से बचते हुए–एवं हिमवर्षा—दवाग्नि आदि से रहित होते हुए खूब वृद्धिंगत हो गये। इन में चारों ओर हरियाली २ छा गई–इस से ये काले काले दिखलाई देने लगे–ऐसे मालूम देते थे मानों जल से भरे हुए मेघहों। पत्र और पुष्पों से युक्त होने के कारण इन की शोभा कुछ निराली ही बन गई थी। (तएणं णंदे मणियार सेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्त-

---

(णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं) નંદા પુષ્કરિણી (વાવ) ની ચારે બાજુ (चत्तारि वणसंडे रोवावेइ) ચાર વનષંડો રોપાવડાવ્યાં. (तएणं ते वनसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंब-भूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति) રોપાયેલા તે ચારેચાર વનષંડો અનુક્રમે સંરક્ષિત થતા–પશુપક્ષી વગેરેના ઉપદ્રવોથી સંરક્ષાયેલા અને હિમ, વનનો અગ્નિ (દાવાનલ) વગેરેથી સંરક્ષિત થઈને ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા. તેઓમાં ચોમેર હરીયાળી પ્રસરી ગઈ. તેથી તેઓ શ્યામ દેખાવા લાગ્યા હતા જાણે કે પાણીથી ભરેલા મેઘ હોય. પાંદડાં અને પુષ્પોથી યુક્ત હોવા બદલ તેઓની શોભા એકદમ નિરાળી થઈ ગઇ હતી. (तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेइ, अणेगखंभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सयसंनिविट्ठं ' अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां=नानाविधमणिमाणिक्यादि निर्मितस्तम्भशतसंनिबद्धां प्रासादीयां दर्शनीयाम्, अभिरूपां, प्रतिरूपाम्। तत्र खलु चित्रसभायां बहूनि=बहुविधानि कृष्णानि च ' जाव ' यावत्-नीलानि च, पीतानि च, रक्तानि च, शुक्लानि च, ' कट्ठकम्माणिय ' काष्ठकर्माणि च=काष्ठशिल्पानि ' पोत्थकम्माणि ' पुस्तकर्माणि=पुस्तेषु वस्त्र ताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि=लेखन कर्माणि, चित्रकर्माणि=भित्त्यादिषु चित्ररूपाणि, लेप्यकर्माणि=मृत्तिकासेटिकादिनां वल्ल्याद्याकाररचनाविशेषरूपाणि ' गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाइं ' ग्रन्थिम-वेष्टिमपूरिम-संघातिमानि, तत्र ग्रन्थिमानि-कौशल्यातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानि, वेष्टिमानि=यानि लतादिवेष्टनतो निष्पादितानि तानि. पूरिमाणि यानि छिद्रादिपूरणेन निष्पाद्यन्ते कनकादि पुतलिकावत् तानि. संघातिमानि=यानि-

सभं करावेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं-पडिरूवं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तकम्माणि, लेप्पकम्माणि गंथिमवेढिम पूरिम संघाइमाइं उवदंसिज्जमाणाइं २ चिट्ठंति) उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड में एक बड़ी भारी चित्रसभा बनवाई। यह चित्रसभा नाना प्रकार के मणिकयादि निर्मित हुए सैकड़ों स्तंभों से युक्त थी। प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप थी। उस चित्र सभा में उसने अनेकविध कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और लाल रंगों से काष्ठ के ऊपर शिल्प कार्य करवाये, पुस्त कर्म करवाये-वस्त्र, ताड पत्र, कागज आदिकों में लेख लिखवाये, चित्र कर्म करवाये-भित्ति आदिकों के ऊपर नाना प्रकार के चित्र अंकित करवाये, लेप्य कर्म करवाये-

सयसंनिविट्ठं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं तत्थणं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठ कम्माणिय पोत्थ कम्माणि चित्तकम्माणि लेप्पकम्माणि गंथिम-वेढिम-पूरिमसंघाइमाइं उवदंसिज्जमाणाइं २ चिट्ठंति) मणिकार श्रेष्ठी नंदे ते पूर्व दिशा तरफना वनषंडमां એક બહુ ભારે ચિત્રસભા બનાવડાવી. તે ચિત્રસભા ઘણી જાતના મણિઓ માણિકો વગેરેથી બનાવવામાં આવેલા એવા સેંકડો થાંભલાઓવાળી હતી. તે પ્રાસાદીય દર્શનીય. અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતી. તે ચિત્રસભામાં તેણે ઘણી જાતના કૃષ્ણ. નીલ. પીત (પીળા), શ્વેત (સફેદ) અને લાલ રંગોથી કાષ્ઠ (લાકડા) ના ઉપર શિલ્પ-કામ કરાવડાવ્યાં, પુસ્તકર્મ કરાવડાવ્યા, વસ્ત્ર, તાડપત્ર. કાગળ વગેરે ઉપર લેખો લખાવડાવ્યા-ચિત્રો દોરાવડાવ્યાં, ભીતો વગેરે ઉપર અનેક જાતના ચિત્રો દોરાવડાવ્યા, લેપ્ય કર્મ કરાવડાવ્યા, માટી લાલ માટી વડે વલ્લી વગેરેની તેમાં

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तुसमूहेन निष्पाद्यन्ते लोहकाष्ठादिभीदयादिवत्, तानि, एतानि पशुपक्ष्यादिरूपाणि 'उवदंसिज्जमाणाइं २' उपदर्श्यमानानि २ लोकैरन्योन्यं पुनः पुनरुपदर्श्यमानानि तिष्ठन्ति=सन्ति। तत्र खलु बहूनि 'आसणाणिय' आसनानि=वेत्रकाष्ठादिनिर्मितानि चतुष्कोणादिरूपाणि शयनानि=शयनयोग्यानि सार्द्धतृतीयहस्तपरिमितानि फलकादीनि, कीदृशानीत्याह-'अत्थुय' इत्यादि-'अत्थुयपच्चत्थुयाइं' आस्तृतप्रत्यास्तृतानि, आस्तृतानि मृदुलवस्त्रादिनाऽऽच्छादितानि, प्रत्यास्तृतानि = तदुपरि पुनःपुनर्दुकूलादिनाऽऽच्छादितानि तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते। पुनश्च-तत्र खलु बहवो नटाश्च=गाननृत्यकर्त्तारः 'णट्टा य' नृत्ताः केवलमङ्गविक्षेपमात्रेण नर्त्तनशीलाश्च यावत् 'दिन्नभइभत्तवेयणा' दत्तभृतिभक्तवेतनाः-दत्ताः

मिट्टी, खरियामिट्टी से बल्ली आदि की उसमें रचना करवाई। ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम, एवं संघातिम आदि अनेक खेल भी उस में दिखलाए (तत्थणं बहूणि आसणाणि य, सयणाणि य, अत्थु य पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति तत्थणं बहवे णडाय णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्मं करेमाणा विहरंति) अनेक आसन, शयन, जो आस्तृत प्रत्यास्तृत थे वे भी उसमें रखवाये, वेत्र अथवा काष्ठ आदि से निर्मित चतुष्किकादि रूप-कुर्सी आदिरूप जो होते हैं वे आसन हैं एवं साढे तीन हाथ के जो काष्ठ फलक-तख्ता आदिरूप होते हैं कि जिन पर अच्छी तरह सोया जा सकता है वे शयन हैं। इन आसन शयनों के ऊपर मृदुल वस्त्रादि, बिछा हुआ था इसलिये ये आस्तृत थे, और उन मृदुल वस्त्रादिकों के ऊपर और भी दूसरा पलंग पोस बिछा हुआ था इस लिये वे प्रत्यस्तृत थे। नंद सेठ ने उस चित्र सभा में नटों को नर्त्तों को-नृत्य-

---

રચના કરાવડાવી. ગ્રંથિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સંઘાતિમ વગેરે ઘણી જાતની રમતો પણ તેમાં દેારાવડાવી (तत्थणं बहूणि आसणाणि य, सयणाणि, य, अत्थुय पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थणं बहवे णडाय णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्मं करेमाणा विहरंति) ઘણા આસનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તૃત પ્રત્યાસ્તૃત હતા-પણ તેમાં મૂકાવડાવી. વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામાં આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ ખુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે. અને સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખતા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી રીતે સૂઇ શકાય-તે શયન છે. આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલાં હતાં. એટલા માટે જ તેઓ આસ્તૃત હતા તે કોમળ વસ્ત્રો વગેરે ઉપર એક બીજું વસ્ત્ર પાથરેલું હતું એટલા માટે એઓ પ્રત્યાસ્તૃત હતા. નંદ શેઠે તે ચિત્રસભામાં નટો, નૃત્તો-નાચનારા માણસો-ભૃતિ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृतिः=धान्यादिरूपं पारिश्रमिकम्, भक्तम्=ओदनादिरूपं वेतनं=रूप्यकादिरूपं परिश्रमिकम्, एतेषां द्वन्द्वे भृतिभक्तवेतनानि, दत्तानि भृतिभक्तवेतनानि यैस्ते तथोक्ता पुरुषाः 'तालायरकम्मं' तालाचरकर्म=नटादि सम्बन्धिकं गीतवादित्रादिकर्म कुर्वाणाः विहरन्ति=तिष्ठन्ति स्म। अथ च-राजगृहविनिर्गतः=वायुसेवनार्थं राजगृहनगराद् बहिर्निर्गतश्च बहुजनो=जनसमुदायः 'जत्थ' यत्र चित्रसभायामागत्य तेषु पूर्वन्यस्तेषु=पूर्वस्थापितेषु आसनशयनेषु कश्चित् 'संनिसण्णाय' संनिषण्णः=उपविष्टः, कश्चित् 'संतुयट्टो य' संत्वग्वृत्तश्च शयितः, कश्चित्

कारकों को यावत् भृति, भक्त एवं वेतन देकर तालचर कर्म करने वालों को भी नियुक्त कर रखा था। जो गान नृत्य कर्म करते हैं वे नट हैं। जो केवल अंग विक्षेप मात्र से ही नृत्य क्रिया प्रदर्शित करते हैं वे नृत्त हैं। धान्यादि रूप पारिश्रमिकका नाम भृति, ओदनादिरूप पारिश्रमिक का नाम भक्त एवं नगदी पैसा रूप्य आदि रूप परिश्रमिक का नाम वेतन हैं। नटादि सम्बन्धी गीतनृत्य वादित्र आदि कर्म को जो करते हैं उनका नाम तालचर है। तबले आदि बजाने वाले व्यक्ति तालाचरों में हैं। (रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य सतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ) राजगृह नगर से वायु सेवन-घूमने-के लिये निकले हुए अनेक जन उस चित्र सभा में आते उनमें कितनेक जन वहां पूर्वन्यस्त उन आसन शयनों पर बैठ जाते, और कितनेक जन सो जाते, कितनेक जन गीतवादित्रों को सुनते, कितनेक

ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ બીજા પણ તાલચર કર્મ કરનારાઓની નીમણુંક કરી હતી. જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે. જેઓ ફક્ત અંગ વિક્ષેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે. મહેનતાણાના રૂપમાં ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૃતિ. મહેનતાણાના રૂપમાં ઓદન (રાંધેલા ચોખા) વગેરે આપે. તે ભક્ત અને રોકડા નાણાં ચાંદી વગેરેના સિક્કા મહેનતાણા બદલ આપે તેને વેતન કહે છે. નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાદ્ય વગેર કર્મ કરનારાઓ 'તાલચર' છે. તબલા (નરધા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલચરો છે. (रायगिह विणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ) રાજગૃહ નગરના હરવા ફરવા માટે નીકળેલા ઘણા માણસો ચિત્રસભામાં આવતા અને તેઓમાંથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૂકાવડાવેલા આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઇ જતા, કેટલાક ગીત,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'सुणमाणो य' शृण्वंतश्च गीतवादित्रादिकं कर्णविषयी कुर्वन् कश्चित् 'पेच्छपाणो य' प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिकं पश्यन् 'साहेमाणो य' कथयंश्च=परस्परं कथां कुर्वन्-श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वकं सानन्दं विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं णंदे दाहिणिल्लेवणसंडे एगं महं महाणससालं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं४ उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा२ विहरंति, तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य माहणाणय अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाणय दुब्बलाणय अलंकारियकम्मं करेमाणा२ विहरंति । तएणं तीए णंदाए पोक्ख-

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत करते हुए बड़े आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

વાજીંત્રોને સાંભળતા, કેટલાક નૃત્યો વગેરે જોતા અને કેટલાક પાસે પાસે બેસીને ગપસપ કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરતા હતા. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य करोडिया य कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहाराय अप्पेगइया ण्हायंति अप्पेगइया पाणियं पियंति, अप्पेगइया पाणियं संवहंति अप्पेगइया विसज्जियसेय जल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहं सुहेणं विहरंति । रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरय अणेग सउणगणरुयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो २ विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएणं णंदे ' इत्यादि । ततः खलु नन्दः श्रेष्ठी दाक्षिणात्ये वनषण्डे एकां महतीं महानसशालां=पाकशालां कारयति । कीदृशीम् ? इत्याह—' अणेग ' इत्यादि–अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां यावत्प्रतिरूपाम् । तत्र खलु बहवः पुरुषा दत्तभृतिभक्तवेतनाः=पारिश्रमिकदानेन नियुक्ताः पाककर्मकराः विपुलम्

'तएणं णंदे दाहिणिल्ले'–इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (णंदे) नंद श्रेष्ठी ने (दाहिणिल्ले) दक्षिणदिशा संबन्धी (वणसंडे) वनषंड में (एगं महं) एक बड़ा भारी (महाणससालं) रसोइघर–भोजन शाला (करावेइ) बनवाया । (अणेग खंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं,तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्त वेयणा विपुलं असणं४ उवक्खडेंति बहूणं समण–माहण–अतिहि–किवणवणीपगाणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणाविहरंति) यह रसोइघर सैकड़ों खंभो के ऊपर खड़ा किया गया था। बड़ा ही रमणीय था । इस में अनेक पुरुष रसोई बनाने का काम करने के लिये नियुक्त किये गये थे। उन्हें

'तएणं णंदे दाहिणिल्ले' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यार पछी (णंदे) नंद शेठे (दाहिणिल्ले) दक्षिण दिशाना (वणसंडे) वनषंडमां (एगं महं) એક બહુ વિશાળ (महाणससालं) रसोइ घर–भोजनशाળા–(करावेइ) બનાવડાવી. (अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं तत्थणं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं ४ उवक्खडेंति बहूणं समण–माहण–अतिहि–किवण वणिपगाणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति) આ ભોજનશાળા સેંકડો થાંભલાઓની હતી. તે ખૂબ જ રમણીય હતી. તેમાં રસોઈ તૈયાર કરવા માટે ઘણા માણસો નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તેઓને

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अशनम् ४ चतुर्विधमाहारम् उपस्कुर्वन्ति । बहूनां श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीपकानां-परिभाजयन्तः २=विभागं कुर्वन्तः, परिवेषयन्तश्च विहरन्ति ।

ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी 'पच्चत्थिमिल्ले' पाश्चात्ये=पश्चिमदिग्भागस्थे, वनषण्डे एकां महतीं 'तेगिच्छियसालं' चिकित्साशालां=रोगापनयनशालां 'कारावेइ' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां यावत्-प्रतिरूपां, तत्र=तस्यां

पारिश्रमिक रूप में भृति, भक्त और वेतन दिया जाता था। ये ४ चारों प्रकार का आशनादि रूप आहार उसमें बनाया करते थे। अनेक श्रमण ब्राह्मण, अतिथि एवं वनीपकोंको-याचकोंको यहांसे भोजन दिया जाता था। कोई २ वहीं खाते थे और कोई कोई अपने विभाग को ले जाते थे। (तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेणिच्छियसालं करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणु य पुत्ता य कुसला य कुसल पुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं हियाणाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा २ विहरंति) इस के बाद उस नंद मणिकार श्रेष्ठी ने पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनषंड में एक बड़ी भारी चिकित्साशाला-औषधालय-बनवाई। यह भी सैंकड़ों खंभों के ऊपर खड़ी की गई थी। बहुत ही सु-

પોતાના ભરેનતાણા બદલ ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપવામાં આવતું હતું. ચારે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમાં બનાવતાં હતા. ઘણા શ્રમણો બ્રાહ્મણો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ ને ત્યાંથી ભોજન આપવામાં આવતું હતું. તેઓમાંથી કેટલાક તો ત્યાં જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક પોતાનું ભાણું લઈ જતા હતા. (तएणं णंदे मणियार सेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेणिच्छियसालं करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थणं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ताय जाणुयाय जाणुयपुत्ताय कुसलाय कुसलपुत्ताय दिन्न भइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति; अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियार कम्मं करेमाणा२ विहरंति) त्यारબાદ તે મણિકાર શેઠે પશ્ચિમ દિશાના વનષંડમાં એક બહુ વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા (દવાખાનું) બનાવડાવી. એ પણ સેંકડો થાંભલાઓથી ઊભી કરવામાં આવી હતી તેમજ ખૂબ જ રમણીય

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिकित्साशालायां, खलु बहवो चिकित्सकाश्च वैद्याः=वैद्यपुत्राश्च, 'जाणुया य' ज्ञायकाः=चिकित्साशास्त्रमनधीत्यापि वैद्यप्रवृत्तिदर्शनेन व्याधिनिवारणविधिज्ञाश्च, ज्ञायकपुत्राश्च= चिकित्सावेदिनां सुताश्च, तथाकुशलः-स्वकीयतर्कतश्चिकित्सादौ प्रवीणाश्च, कुशलपुत्राः=तेषां पुत्राश्च दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूनां 'वाहियाणं' व्याधितानां विशिष्टदुःखजनककुष्ठादिरोगवतां. 'गिलाणाण य' ग्लानानां 'रोगियाणं य' रोगिकाणां दुर्बलानां=शक्तिहीनानां च 'तेइच्छंकरेमाणा' चिकित्सां= व्याधिप्रतीकारं, कुर्वन्तः, विहरन्ति । तस्यां शालायां अन्ये चात्र बहवः पुरुषाः दत्तभृतिभक्तवेतनास्तेषां बहूनां व्याधितानां च ग्लानानां च रोगिकानां च दुर्ब-

---

न्दर थी। इस में अनेक वैद्य, वैद्यपुत्र ज्ञायक ज्ञायकपुत्र, कुशल, कुशल पुत्र, भृति, भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे। ये वहां अनेक व्यधियुक्त मनुष्यों की ग्लान मनुष्यों की, रोगी मनुष्यों की, दुर्बल मनुष्यों की, चिकित्सा करते थे। वहां और भी परिचारक मनुष्य भृति भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे-जो इन व्याधित ग्लान, रोगी और दुर्बल मनुष्यों की औषध, भैषज्य, भक्त और पान से सेवा किया करते थे। चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किये विना ही जो वैद्यों की प्रवृत्ति देख २ कर व्याधि को दूर करने का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं ऐसे व्यक्ति यहां "ज्ञायक" शब्द से गृहीत हुए हैं। जो अपनी तर्कणा के बलपर चिकित्सा आदि में निपुण होते हैं वे यहां "कुशल" शब्द से गृहीत हुए हैं। विशिष्ट दुःखोत्पादक कुष्ठादिरोग से जो पीडित हो रहेहैं ऐसे मनुष्य यहां व्याधित शब्द के वाच्य हुए है। एक

હતી. તેમાં ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તે બધા ત્યાં ઘણા માંદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરતા હતા ત્યાં બીજા પણ ઘણાં પરિચારકજનો ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તેઓ માંદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા. ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્યો કેવી રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે?-આ બધું જોઈને બીમારને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમાં પ્રયુક્ત થયો છે. જે પોતાની તર્કણાશક્તિના આધારે ઈલાજ વગેરેમાં નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશળ' શબ્દના રૂપમાં ગૃહીત થયા છે. વિશિષ્ટ દુઃખોત્પાદક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लातां च 'ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं' औषध भैषज्यभक्तपानेन=औषधमेकद्रव्य-साध्यं, भेषजं=अनेकद्रव्यसंयोगनिष्पन्नं भक्तपानम्-आहारः, पानम्=पानीयं, तेन, 'पडियारकम्मं' प्रतिचारकर्म=सेवारूप कर्म कुर्वन्तो विहरन्ति ।

ततस्तदनन्तरं खलु नन्दः नन्दनामामणिकारश्रेष्ठी, 'उत्तरिल्ले' उत्तरस्मिन् वनखण्डे एकां महतीं 'अलंकारियसभं' अलंकारिकसभां=नापितकर्मशालां कारयति, कीदृशीम् ? अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां यावत्-प्रतिरूपाम्, तत्र तस्यां नापितकर्मशालायां बहवोऽलङ्कारिकपुरुषाः=नापिताः, दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूनां

द्रव्य साध्य दवाका नाम औषध है और जो अनेक दवाओंके संयोगसे दवाई तैयार की जाती है वह भैषज्य है (तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य माहणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा२ विहरंति तएणं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया य कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायंति, अप्पेगइया पाणियं पियंति, अप्पेगइया पाणियं संवहंति, अप्पेगइया विसज्जिय से य जल्लमल्लपरिस्समनिद्दं खुप्पिवासा सुहं सुहेणं विहरंति) इस के बाद उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने उत्तर दिशा संबन्धी वनखंड में एक बड़ी भारी नापित कर्म शाला बनवाई । यह भी सैकड़ों खंभों से निर्मित की गई

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે. એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનું નામ 'ઔષધ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામાં આવે છે તે ભૈષજ્ય છે. (तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थणं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य, माहणाण य, अणाहाण य, गिलाणाण य, रोगियाण य, दुब्बलाण य, अलंकारियकम्मं करेमाणा २ विहरंति तएणं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य, पहिया य करोडीया य कप्पडिया य तणहारा य, पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायंति, अप्पेगइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति, अप्पेगइया विसज्जिय से य जल्लमलपरिसमनिद्दं खुप्पिवासा सुहं सुहेणं विहरंति) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે ઉત્તર દિશાના વનખંડમાં એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હજામ શાળા) બનાવડાવી. તે પણ સેંકડો થાંભલાઓ ઉપર બાંધવામાં આવી હતી. જોવામાં તે ખૂબ જ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रमणानां च ब्राह्मणानां च सनाथानां च ग्लानानां च रोगिकाणां च दुर्बलानां चालङ्कारिककर्म कुर्वन्तः २ विहरन्ति।

ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां नन्दायां पुष्करिण्यां बहवः सनाथाश्च अनाथाश्च पान्थिकाश्च पथिकाश्च करोटिकाश्च कार्पटिकाश्च तृणहारकाश्च पत्रहाराश्च काष्ठहारकाश्च 'अप्पेगइया' अप्येकका:=अप्येके-केचन, 'ण्हायंति' स्नान्ति=स्नानं कुर्वन्ति, अप्येकका:-पानीयं पिबन्ति, अप्येकका:-पानीयं संवहन्ति, भरन्ति, अप्येकका:= केचन 'विसज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा' विर्जितस्वेदजल्लमल्लपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासाः विसर्जिता अपनीता दूरीकृताः स्वेदजल्लमलरूपाः शरीरमलास्तथापरिश्रमनिद्राबुभुक्षापिपासाश्च यैस्ते तथाविधा मनुष्याः 'सुहं सुहेणं' सुखं सुखेन अतिसुखेन विहरन्ति। 'किते' किमधिकं तद्वर्ण्यते-राजगृहविनि-

थी। देखने में बड़ी सुहावनी थी। इस में अनेक नापित (नाई) भृति भक्त एवं वेतन देकर नियुक्त किये गये थे। ये वहां अनेक श्रमणों के ब्राह्मणों के, सनाथ अनाथ जनों के, ग्लानों के, रोगियों के एवं दुर्बलों के बाल बनाया करते थे। उस नंदा पुष्करिणी में कितनेक सनाथ कितनेक पान्थिक, कितनेक पथिक, कितनेक करोटिक, कितनेक कार्पटिक, कितनेक तृण हारक-घास ढोने वाले कितनेक पत्र हारक कितनेक काष्ठ हारक-लकड़हारे-स्नान करते पानी पिया करते और कितनेक उस में से पानी भरा करते। कितनेक स्वेद, जल मल रूप शरीर के मैल को उस के जल से दूर करते और कितनेक परिश्रम, निद्रा बुभुक्षा एवं पिपासा को उस वापिका के सहारे से शांत किया करते। इस तरह अनेक जन उस पुष्करिणी से बहुत आनंदित रहते। (रायगिह विणि

મનોરમ લાગતી હતી. તેમાં ઘણા નાપિતો (હજામો) ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તેઓ ત્યાં ઘણા શ્રમણોના, બ્રાહ્મણોના, સનાથ તેમજ અનાથજનોના, ગ્લાનોના, રોગીઓના અને દુર્બળ માણસોના વાળ કાપતા હતા. તે નંદા પુષ્કિરિણી (વાવ) માં કેટલાક સનાથ, કેટલાક પાંથિક, કેટલાક પથિક, કેટલાક કરોટિક, કેટલાક કાર્પટિક, કેટલાક તૃણહારક (ચારના ભારાઓ ઉચકનારા) કેટલાક પત્રહારક, કેટલાક કાષ્ઠહારક, (લાકડાં વગેરે વેચવાનો ધંધો કરનારા) સ્નાન કરતા હતા, પાણી પીતા હતા. અને કેટલાક તો તેમાંથી પાણી ભરતા રહેતા હતા. કેટલાક માણસો તો સ્વેદ, જળમાં ઉપર તરી આવત શરીરના મેલ ને પાણીમાંથી બહાર કાઢતા હતા. અને બીજા કેટલાક માણસો પરિશ્રમ, નિદ્રા, ભૂખ અને તરસ તે પાણી પીને મટાડતા હતા. આ રીતે ઘણા માણસો તે પુષ્કરિણીમાં આનંદ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतोऽपि यत्र बहुजनः ' जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरयअणेग सउणगणरुयरिभितसंकुलेसु ' जलरमणविविधमज्जन कदलीलतागृहककुसुमशस्त-रजोऽनेकशकुनगणरुतरिभितसंकुलेषु=तत्र जलरमणैः- जलक्रीडादिभिः, विविधम-ज्जनैः-बहुविधैः स्नानैः, कदलीनां लतानां च गृहकैः कुसुमशस्तरजोभिः=कुसु-मानां पुष्पाणां, शस्तैः=सुगन्धयुक्तैः, रजोभिः=परागैश्च, अनेकशकुनगणरुतैः= बहुविधपक्षिगणानां रुतैः-शब्दैश्च, रुतैः कीदृशैरित्याह-रिभितै स्वरयुक्तैः-मधुरै-रित्यर्थः, संकुलेषु=युक्तेषु वनषण्डेषु, सुखं सुखेनाभिरममाणः २ विहरति । सू०४॥

मूलम्-तएणं णंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वयासी-धण्णे णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सणं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्सा णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सठवं चउसु वि वणसंडेसु जाव रायगिहे विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु

गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमण विविहमज्जणकयलिलया घरय कुसुम सत्थरय अणेगअभिरममाणो २ विहरइ) और अधिक क्या कहें-राजगृह नगर से बाहिर निकले हुए प्रायः सभी जन विविध प्रकार की जल क्रीडाओं से नाना प्रकार के मज्जनो से, कदली और लताओं के घरों से, पुष्पो की सुगंधित रज से, और अनेक विधपक्षी गणों के मधुर शब्दों से युक्त इन वनषंडों में आनंद से इठलाते हुए विचरण किया करते थे । सूत्र ॥ ४ ॥

પૂર્વની પેાતાને વખત ગાળતા હતા. (रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलया घरय कुसुम सत्थरयअणेगसउणगणरुयरिभित संकुलेसु सुहं सुहेणं अभिरममाणो२ विहरइ) અને બીજું તેા વધારે શું કહીએ. રાજગૃહ નગરની બહાર આવનારા ઘણા માણસેા ઘણી જાતની જળ-ક્રીડાઓ અને ઘણી જાતના મજ્જનો (સ્નાન) કરીને તેમજ કદલી અને લતાગૃહોથી, પુષ્પોની સુગંધિત રજથી અને ઘણા પક્ષીઓના મધુર કલરવથી યુક્ત આ વનખંડોમાં આનંદથી મસ્ત થઈને લહેર કરતા હતા-વિચરણ કરતા હતા. સૂ. "૪"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ, तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए। सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले नंदस्स मणियारस्स, तएणं रायगिहे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ । तएणं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंबगंपिव समूसियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएणं णंदाए ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायां पुष्करिण्यां बहुजनः ' ण्हायमाणो य ' स्नानं कुर्वन् ' पीयमाणोय ' पिबन् पानीयं च संवह-

' तएणं णंदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (णंदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियंच संवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्णं एवं वयासी-धण्णे णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सणं इमेया रूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साणं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसु वि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ) उस नंदा पुष्करिणी में स्नान करने वाला पानी पीनेवाला और उस में से पानी

' तएणं णंदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारथाद (णंदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य, पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्णं एवं वयासी धण्णे णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सणं इमेयारूवं णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साणं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसु वि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ) ते नंदा पुष्करिणी (वाव) मां स्नान ४२नार, पाणी पीनार, अने तेमांथी पाणी भरनार, ६रेके ६रेक माणस ५२२५२ आ प्रमाणे वातो ४२वा लाग्या के हे भाई ! मणियार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानः=घटादिभिर्नयन् चान्योन्यमेवमवादीत्-धन्यः खलु हे देवानुप्रियाः नन्दो-मणिकारश्रेष्ठी कृतार्थो यावत्-सुलब्धजन्मजीवितफलं, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा=नन्दानाम्नी, पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् प्रतिरूपा वर्तते ' जिस्साणं ' यस्यां खलु पुष्करिण्याः पौरस्त्ये तदेव सर्वं चतुर्ष्वपि वनषण्डेषु यावत्-राजगृह-विनिर्गतो यत्र बहुजन आसनेषु च शयनेषु च संनिषण्णः=सम्यक्प्रकारेणोपविष्टश्च ' संतुयट्टो ' संत्वग्वृत्तः=शयितः कृतपार्श्वपरिवर्तनश्च, ' पेच्छमाणः ' प्रेक्षमाणः वनषण्डश्रियं पश्यन् 'साहेमाणो' कथयन्=तद्विषयककथां कुर्वन् श्लाघयन् वा सुख-सुखेन=अतिसुखेन विहरति। तत्-तस्माद् धन्यः कृतार्थः कृतपुण्यः कृतानन्दो नन्दमणिकारश्रेष्ठीलोके सुलब्धं मानुष्यकजन्मजीवितफलं यस्य नन्दस्य मणिका-

---

भरने वाला प्रत्येक जन आपस में इस प्रकार से बात चीत किया करता कि हे भाई! मणिकार श्रेष्ठी नंद को धन्यवाद है। वह कृतार्थ हो गया। उसने अपने जन्म और जीवनका फल अच्छी तहर से पा लिया कि जिसमें यह चारकोनों वाली यावत् प्रतिरूप नंदा नाम की सुन्दर वापिका बनवाई है। और उसके चारों ओर चार वनखंड बनवाये हैं। पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड में एक विशाल चित्रसभा बनवाई है इत्यादि रूप से पहिले का कहा गया सब संबन्ध यहाँ समझ लेना चाहिये। इन चार वनषंडोंमें यावत् राजगृह नगरसे निर्गत प्रत्येक जन बिछे हुए आसनों पर शयनों पर बैठ कर, लेट कर, वनषंड की शोभा का निरीक्षण करता हुआ, तद्विषयक कथा-वार्ता-करता हुआ बड़े आनंद के साथ विचरण करता है। (तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स तएणं

શ્રેષ્ઠી નંદને ધન્યવાદ છે. તે કૃતાર્થ થઈ ગયેા છે. તેણે પેાતાના જન્મ જીવ-નનું ફળ સારી રીતે મેળવી લીધું છે. કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણેાથી યુક્ત એવી નંદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે. અને વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનષંડેા બનાવડાવ્યા છે. પૂર્વ દિશા તરફના વન-ષંડમાં એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવું જોઈએ. એ ચારે વનષંડેામાં રાજગૃહ નગરથી આવીને માણસેા આસનેા તેમજ શયનેા ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનષંડની શેાભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનષંડ સંબંધી વખાણેા) એટલે કે ચર્ચાઓ કરતાં સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે. (तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए। सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स तएणं रायगिहे सिंघा-डग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया! णंदे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रस्य श्रेष्ठिनः, अत्र सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । एवं राजगृहविनिर्गतो बहुजनस्तत्रस्थितो वदतीत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु राजगृहे नगरे 'सिंघाडग जाव बहुजणो' शृङ्गाटकादियावन्महापथपथेषु बहुजनः, अन्योन्यस्य=परस्परं, एवमाख्याति, भाषते, प्रज्ञापयति, प्ररूपयति । किमाख्यातीत्याह-हे देवानुप्रिय ! धन्यः खलु नन्दो-मणिकारः 'सो चेव गमओ' स एव गमकः=अत्र पूर्वोक्त एव पाठो वाच्यः, कृतार्थः कृतपुण्यः, यावत्-सुलब्धं जन्मजीवितफलं, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् मतिरूपा वर्तते, यावत्-बहुजनः-सुखंसुखेन विहरति । ततः

रायगिहे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहं सुहेणं विहरइ, तएणं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंबगं पिव समूसिय रोमकूवे परं साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) इस लिये नंद मणिकार श्रेष्ठी विशेष रूप से धन्य वादार्ह है । विशिष्ट पुण्यशाली है । और विशिष्ट आनंद का भोक्ता है । इस लोक में मनुष्य जन्म और जीवन का फल इस ने प्राप्त कर लिया है । इसी तरह की राजगृह नगर के शृंगाटक आदि महा मार्गों पर खड़े होकर अनेक जन परस्पर में बात चीत किया करते, परस्पर में संभाषण करते, प्रज्ञापना करते और प्ररूपणा करते रहते-वे कहते-हे भाई ! नंद मणिकार श्रेष्ठी को धन्यवाद हैं, वह कृतार्थ है, कृत पुण्य है । उसी ने अपने मनुष्य भव संबंधी जन्म और जीवन को पा लिया है-जिस ने यह इतनी सुन्दर चार कोन वाली नंदा पुष्करिणी बनवाई है । जहां अनेक जन सुख पूर्वक विचरण करता है । इत्यादि पहिले का

मणियारे सोचेव गमओ जाव सुहं सुहेणं विहरइ, तएणं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंबगं पिव समूसिय रोमकूवे परं साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) એથી નંદ મણિયાર ખરેખર સવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે. તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને વિશિષ્ટ આનંદનો ઉપભોગ કરનાર છે. આ લોકમાં મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ તેણે સંપૂર્ણપણે મેળવી લીધું છે. આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વાતો કરતા હતા. સંભાષણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા હતા. તેઓ કહેતા કે હે ભાઈ ! નંદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે ખરેખર કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સંબંધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યાં છે. તેણે કેટલી સરસ નંદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બંધાવી છે. ત્યાં ઘણા માણસો સુખેથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टः ' धाराहय-कलंबगंपिव ' धाराहतकदम्बकमिव=मेघधाराभिराहतं यत्कदम्बकुसुमं तद्वत्-' समूसियरोमकूवे ' समुच्छ्रितरोमकूपः समुल्लसितरोमरन्ध्रः संजातरोमाञ्च इत्यर्थः, परम=उत्कृष्टं ' सायासोक्खमणुभवमाणे ' शातसौख्यमनुभवन्=बहुजनकृत-स्वात्मप्रशंसाश्रवणजनित शातगौरवोदयेनामन्दमानानन्दोल्लसितचित्तः सन् विह-रति=आस्तेस्म ॥ सू० ५ ॥

मूलम्–तएणं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नयाकयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया तं जहा–" सासे १, कासे २, जरे३, दाहे४, कुच्छिसूले५, भगंदरे ६। अरिसा ७, अजीरए८, दिट्ठिमुद्धसूले' ९-१० अरोअए ११"॥१॥ अच्छिवेयणा १२, कन्नवेयणा १३, कंडू १४, दउदरे१५, कोढे ? १६। तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वदह–एवं खलु देवाणुप्पिया ! णंदस्स

सब वक्तव्य यहां लगा लेना चाहिये। मणिकार श्रेष्ठी नंद अनेक जनों के मुख से इस अपनी प्रशंसा रूप अर्थ को सुनता तो सुन कर बहुत अधिक आनंदित एवं संतुष्ट बन जाता। मेघ की धारा से आहत कदंब पुष्प के समान उस के शरीर भर में रोमांच हो आते। इस तरह अनेक जन कृत अपनी प्रशंसा के श्रवण से जनित शातगौरवोदय से अनन्द आनंद उल्लसित बना रहता। सूत्र ॥ ५ ॥

વિચરણ કરે છે-વગેરે અહીં પણ પૂર્વવત્ વર્ણન સમજી લેવું જોઈએ. મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદ ઘણા માણસોના મોંથી પોતાના વખાણ સાંભળતો ત્યારે બહુ જ આનંદિત અને સંતુષ્ટ થઈ જતો હતો. મેઘની ધારાઓથી આહત કદંબ પુષ્પની જેમ તેનું શરીર રોમાંચિત થઇ જતું હતું. આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી પોતાનાં વખાણ સાંભળીને તે શાત ગૌરવોદયથી ખૂબ જ આનંદમાં મસ્ત રહેતો હતો. ॥ સૂત્ર " ૫ " ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायंका पाउब्भूया तं जहा-
'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्ज-
पुत्तो वा जाणओ वा२ कुसलो वा२ नंदस्स मणियारस्स तेसिं
ण णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामेत्तए
तस्स णं देवाणुप्पिया ! मणियारे विउलं अत्थसंपयं णं दलयइ
त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाणत्तियं
पच्चप्पिणह, तेहिं तहेव पच्चप्पिणंति, तएणं रायगिहे इमेयारूवं
घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुस-
लपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलि-
याहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य
सएहिं२ गिहेहिंतो निक्खमंति निक्खमित्ता रायगिहं नयरं
मज्झं मज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवा-
गच्छंति उवागच्छित्ता णंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोगायंकाणं
णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य
उवट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहिय विरेयणेहि य सेयणेहि य
अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि
य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य
सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य
मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य
सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं
सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं
संचाएंति उवसामेत्तए, तएणं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो
संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एवमवि रोगायंकं उव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामित्तए ताहे संता तंता जाव पडिगया। तएणं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे णंदा पोक्खरणीए मुच्छीए गिद्धे गढिए अज्जोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासेकालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दरीए कुच्छिंसि दद्दरत्ताए उववन्ने ॥सू०६॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनः, अन्यदा कदाचित्-प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोदयेन शरीरे षोडश रोगातङ्काः तत्र रोगाः=स्वल्पकालस्थायिनो ज्वरादयः, आतङ्काः=चिरस्थायिनः कुष्ठादयः, प्रादुर्भूताः, तद् यथा—

सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६।
अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठिमुद्ध ९-१० मूले अरोअए ११ ॥ १।
अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंडू १४ दउदरे १५ कोढे १६ ?॥

(१) श्वासः=ऊर्ध्वश्वासः, (२ कासः=श्लेष्मविकारः, (३) ज्वरस्तापः, (४)

'तएणं तस्स नंदस्स' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया तंजहा-उस मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रबलतर शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क प्रकट हुए-स्वल्प कालतक जो बिमारी शरीर में रहती है-जैसे ज्वर आदि-वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती है जैसे कुष्टादि-वे आतंक कहलाते है। वे सोलह ये हैं-१ श्वास -उर्ध्वश्वास, २ कास-खांसी, ३ ज्वर-ताप, ४ दाह-दाहज्वर, ५ कुक्षि-

'तएणं तस्स नंदस्स' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं)त्यारपछी(तस्स नंदस्स मणियार सेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया-तं जहा તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમાં કોઈ એક વખતે પ્રબળતર શાંત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬રોગો અને આંતકો પ્રગટયા. થોડા વખત સુધી શરીરમાં જે માંદગી રહે છે જેમ કે તાવ વગેરે તે રોગ અને જે માંદગી શરીરમાં કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોઢ વગેરે તે આંતક કહેવાય છે. તે સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે-(૧)શ્વાસ-ઉર્ધ્વ શ્વાસ,(૨)કાસ-ઉધરસ,(૩)જવર-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाहः,=दाहज्वरः, (५) कुक्षिशूलः, (६) भगंदरः, (७) अर्शः=गुदाङ्कुररोगः, (८) अजीर्णः=आहारस्यापरिणतिः, (९) दृष्टिमूर्धशूलम्, दृष्टिशूलं-नेत्रशूलम् (१०) मूर्धशूलं=मस्तकशूलम्, (११) "अरोअए" अरोचकः=भोजनादावरुचिः, (१२) अक्षिवेदना(१३)कर्णवेदना (१४)कण्डूः=खर्जूः,(१५) दकोदरं-जलोदरं (१६)कुष्ठं।

ततः खलु स नन्दो मणिकारः षोडशभीरोगातङ्कैरभिभूतः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियः! गच्छत खलु यूयं राजगृहे शृङ्गाटक यावद्-महापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्तः २ एवं-हे देवानुप्रिया! एवं खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनः शरीरके षोडशरोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद् यथा श्वासो यावत् कुष्ठः। तत्=तस्माद् यः खलु इच्छति हे देवाणुप्रियाः! वैद्यो वा, वैद्यपुत्रो वा, ज्ञायको वा, ज्ञायकपुत्रो वा कुशलो वा, कुशपुत्रो वा, नन्दस्य मणिकारस्य तेषां च खलु षोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि

शूल, ६ भगंदर, ७ अर्श-बवासीर ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिशूल, १० मस्तक शूल ११ अरोचक-भोजनादि में रुचि का अभाव, १२ अक्षिवेदना १३ कर्णवेदना १४ खाज १५ जलोदर १६ कुष्ठ (तएणं मणियारसेट्ठी णंदे सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया! णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायंका पाउब्भूया-तं जहा-सासे जाव कोढे "तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगम वि रोगायंकं उवसामेत्तए

तावे, (४) दाह-दाहज्वर, (५) कुक्षिशूल, (६) भगंदर, (७) अर्श-हरस, (८) अजीर्ण-अपचो (९) दृष्टिशूल (१०) मस्तकशूल (११) अरोचक भोजन वगेरे तरफ अणगमो थवुं, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना, (१४) खाज-खरजवुं, (१५) जलोदर (१६) कोढ (तएणं मणियारसेट्ठी से णंदे सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे, सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह एवं खलु देवाणुप्पिया! णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोगयंका पाउब्भूया-तं जहा-सासे जाव कोढे तं जोणं इच्छइ देवाणुप्पिया! वेज्जोवा वेज्जपुत्तो वा जाणओवा २ कुसलोवा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमविरोगायंकं उवसामेत्तए तस्स णं देवाणुप्पिया!

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोगातङ्कमुपशमयितुम् इच्छतीतिपूर्वेण सम्बन्धः, तस्य खलु हे देवानुप्रियाः ! नन्दो-मणिकारश्रेष्ठी विपुलां=बहुलाम् , " अत्थसंपयं " अर्थसंपदं खलु ददाति= दास्यति, इतिकृत्वा=एवमुक्त्वा द्वितीयवारमपि तृतीयवारमपि घोषणां घोषयत। घोषयित्वा एताममाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, तथैव प्रत्यर्पयन्ति=यथा नन्दमणिकार-श्रेष्ठिना कौटुम्बिकपुरुषा आदिष्टास्तथैव ते कृत्वा निवेदयन्ति स्मेत्यर्थः।

तस्स णं देवाणुप्पिया ! मणियारे विउलं अत्थसंपयं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह) इन १६ प्रकार के रोगातंकों से व्यथित हुए उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने कौटुंबिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ-और राजगृह नगर के शृंगाटक आदि बडे २ मार्गों में जोड़ जोड़ से इस प्रकार की घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रियों ! मणिकार श्रेष्ठी नंद के शरीर में सोलह रोगातंक उत्पन्न हुए हैं-वे श्वास से लगा कर कुष्ठ तक हैं-इस लिये हे देवानुप्रियों ! सुनो-चाहे वैद्य हो या वैद्य पुत्र हो ज्ञायक हो या ज्ञायक पुत्र हों कुशल हो चाहे कुशल पुत्र हो कोई भी क्यों न हो-जो इन १६ प्रकार के रोगातंको में से एक भी रोगातंक उपशमित कर देगा-हे देवानुप्रियों उसके लिये मणिकार श्रेष्ठी नंद. विपुल मात्रा में अर्थ संपदा प्रदान करेगा। इस प्रकार की घोषणा को तुम लोग २-३ बार घोषित करना। (घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणंति) घोषित कर फिर हमें इस की खबर देना। इस प्रकार नंद की आज्ञा प्राप्त कर उन

मणियारे विउलं अत्थसंपयं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह) સોળ જાતના રોગ અને આતંકોથી પીડાએલા મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર આ પ્રમાણે મોટેથી ઘોષણા કરીને કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદના શરીરમાં સોળ રોગાતંકો ઉત્પન્ન થાય છે. તેઓ શ્વાસથી માંડીને કુષ્ઠ સુધી સોળ રોગ અને આતંકોપર્યન્તછે. માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, વૈદ્ય હોય કે વૈદ્યપુત્ર હોય, જ્ઞાયક હોય કે જ્ઞાયકપુત્ર હોય, કુશલ હોય કે કુશલપુત્ર હોય, ગમે તે હોય, જે આ મણિકાર શ્રેષ્ઠિના સોળ રોગ અને આતંકોમાંથી એક રોગ અથવા તો એક આંતક પણ મટાડી શકશે. હે દેવાનુપ્રિયો ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદ તેને પુષ્કળ પ્રમાણમાં ધન સંપત્તિ આપશે. આ પ્રમાણેની ઘોષણા તમે વારંવાર બે ત્રણ વખત ઘોષિત કરો. (घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, ते हि तहेव पच्चपिणंति) ઘોષણા કરીને તમે અમને ખબર આપો. આ રીતે નંદની આજ્ઞા મેળવીને તે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तदनन्तरं खलु राजगृहे नगरे इमामेतद्रूपां घोषणां श्रुत्वा निशम्य बहवो वैद्या यावत् कुशलपुत्रा 'सत्थकोसहत्थगया य' शस्त्रकोशहस्तगताश्च हस्ते क्षुरादि-शस्त्रभाजनधारकाः, 'कोसगपायहत्थगया य' कोशकपात्रहस्तगताः चर्ममयोप-करणधारिणः, 'सिलियाहत्थगया य' शिलिकाहस्तगताः=किराततिक्ताद्यौषध-धारिणः 'गुलियाहत्थगया य' गुलिकाहस्तगताश्च हस्ते द्रव्यसंयोगनिर्मितवटिका-धारिणः, औषधभैषज्यहस्तगताश्च स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो निष्कामन्ति=निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य राजगृहं मध्यमध्येन यत्रैव नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनो गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगों ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और बाद में आकर नंद को इसकी खबर दे दी। (तएणं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थको सहत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया यि सलियाहत्थ गया य गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं २गिहेहिं तो निक्ख-मंति, निक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झे णं जेणेव नंदस्स मणि-यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति) इस प्रकार की घोषणा सुन कर और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत् कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनों को, चर्ममय उपकरणों को किरात तिक्त औषध को गोलियों को, औषध भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले। और निकल कर राजगृह नगर के बीच से चल कर जहां मणिकार श्रेष्ठी नंद का घर था वहां

કૌટુંબિક લોકોએ શેઠની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા (ઢંઢેરો) કરી અને ત્યાર પછી નંદને તેની ખબર આપી. (तएणं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ-गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव नंदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति) આ રીતે ઘોષણા સાંભળીને અને તેના વિશે વિચાર કરીને રાજગૃહ નગરમાંથી ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્યપુત્રો, યાવત્ કુશલો અને કુશલપુત્રો પોતપોતાના હાથોમાં ક્ષુરા વગેરે શસ્ત્રો અને ભાજનો, ચર્મમય ઉપકરણો એટલે કે ચામડાના સાધનો, કિરાતક (કરિયાતું) ઔષધોને, ગોળીઓને, ઔષધ ભૈષજ્યને લઈને પોતપોતાના ઘરોથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता नंदस्स

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपागत्य नन्दस्य शरीरं पश्यन्ति, दृष्ट्वा ते तेषां रोगातङ्कानां 'णियाणं' निदानम्-उत्पत्तिकारणं पृच्छन्ति, नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनस्ते वैद्या बहुभिः=बहुविधैः 'उव्वलणेहि य' उद्वलनैश्च=देहोपलेपनविशेषैश्च, 'उव्वट्टणेहि य' उद्वर्तनैश्च=मलापकर्षकद्रव्यसंयोगविशेषेण शरीरोपमर्दनैश्च, 'सिणेहपाणेहिय' स्नेहपानैश्च=औषधपरिपक्वघृतादिपानैश्च, वमनैश्च, विरेचनैश्च सेचनैश्च=उष्णजलाभिषेकैः 'अव-

---

पहुँचे। (उवागच्छित्ता नंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहिं य उव्वट्टणेहिं य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य, विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदंसणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहिय वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेढेहि य तप्पणाहि य, पुढपागेहि य, छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य, कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य, फलेहि य, बीएहि य, सिलियाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए) वहां पहुँच कर उन्हों ने नंद सेठ के शरीर को देखा देख कर उन रोगातंकों के निदान को-मूल कारण को-पूछा। बाद में उस मणिकार श्रेष्ठी नंद का उन वैद्यो ने अनेकविध उद्वलनों से देहोपलेपन विशेष से, स्नेहपानों से-औषधियों में पकाये गये घृतादिके पिलाने से, वमन कराने से,

---

सरीरं वासंति तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य, वमणेहि य, विरेयणेहि य, सेयणेहि य, अवदंसणेहि य, अवण्हाणेहि य, अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य, सिरावेहेहि य, तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेढेहि य, तप्पणाहि य, पुढपागेहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य, मूलेहि य, कंदेहि य, पत्तेहि य, पुप्फेहि य, फलेहिय, बीएहि य, सिलिमाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए) त्यां जईने तेओओ नंद श्रेष्ठिना शरीरने तपास्युं, तपासीने ते रोग अने आतंकोना निदान (रोगनुं मूळ कारण) विशे पूछपरछ करी. त्यारबाद वैद्योओ मणिकार श्रेष्ठिनी घणी जातना उद्वलनोथी-शरीरना लेप विशेषोथी, उद्वर्तनोथी-मलापकर्षक द्रव्य संयोग विशेषने शरीर उपर चोळवाथी, स्नेहपानोथी-औषधीओमां परिपक्व थयेला घी वगेरे ते पीवडावाथी, वमन (ओकारी) करावाथी विरेचन करावाथी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दहणेहि य ' अवदहनैः दग्धनैः-तप्तलोहकोशादिना शरीरावयवविशेषे दाहकरणैश्च ' अवण्हाणेहि य' अवस्नानैः=शरीरे कण्डूयनादिवारणार्थं तदनुकूलद्रव्यमिश्रितजलस्नानैश्च, ' अणुवासणेहि य ' अनुवासनैः=विरेचनविशेषैः-यन्त्रद्वारेणापानमार्गेण तैलादीनामुदरे प्रवेशनरूपैश्च, ' वत्थिकम्मेहि य ' वस्तिकर्मभिः=मलनिर्गमार्थं गुदे वर्त्यादिप्रक्षेपैः, ' निरूहेहि य' 'निरूहैः '=द्रव्यपक्कतैलप्रयोगेण विरेचनविशेषैश्च ' सिरावेहिहेहि य ' शिरावेधैः=विकृतरूधिरनिस्सारणार्थं नाड़ीवेधैश्च, ' तच्छणाहि य ' तक्षणैः=क्षुरप्रादिना त्वक् छेदनैश्च, ' पच्छणाहि य ' प्रतक्षणैः=क्षुरप्रादिनाहस्तलाघवेन त्वचः प्रतनूकरणैश्च, ' सिरावेढेहि य ' शिरावेष्टैः=नाड़ीवेष्टनैश्च, तप्पणाहि य ' तर्पणैश्च=स्निग्धद्रव्येण शरीरसंवाहनैश्च, ' पुडपागेहि य ' पुटपाकैः=पाकविशेषनिष्पन्नौषधविशेषैश्च,'छल्लीहि य' छल्लीभिश्च=निंबादित्वग्भिः,

विरेचन कराने से, उष्णजल से स्नान कराने से तकुआ आदि को अग्नि में तपा कर उसका शरीर के किसी अवयव विशेष में डाम देने से अवस्नानों से-खाज-आदि मिटाने के लिये शरीर पर तदनु कूल द्रव्य मिश्रित जल से बार २ स्नान कराने से अनुवासनों से-यंत्र द्वारा अपान मार्ग से उदर में तैलादिकों के पहुँचाने से, वस्ति कर्मों से-मल को निकालने के लिये गुदा में वर्त्यादि के प्रवेश कराने से, निरूहों से द्रव्य पक्क तैल के प्रयोग से विरेचन करवाने से, शिरावेध से-विकृत खून को निकालने के लिये शिरा-नस के काट देने से-नाडीवेध से-तक्षण से क्षुरा आदि द्वारा चमड़ी के काट देने से, प्रतक्षण से क्षुरा आदि द्वारा हस्तलाघव पूर्वक चमड़ी के छील देने से, शिरावेष्ट-नाडी वेष्टन से, स्निग्ध द्वारा शरीर की मालिश कराने से, पुट पाक से-पाक विशेष से तैयार की गई औषधियों से, छालों से-निम्ब आदि की

ગરમ પાણીએ સ્નાન કરાવવાથી, લોખંડ વગેરેને અગ્નિમાં તપાવીને શરીરના કોઈ વિશેષ અવયવને ડામવાથી અવસ્નાનોથી-ખરજવું વગેરે મટાડવા માટે શરીર ઉપર તદનુકૂલ દ્રવ્યમિશ્રિત પાણીમાં વારંવાર સ્નાન કરાવવાથી, અનુવાસનોથી-યંત્ર વડે ગુદા-માર્ગથી પેટમાં તેલ વગેરે પહોંચાડવાથી, વસ્તિકર્મોથી-મળને બહાર કાઢવા માટે ગુદામાં વર્ત્યાદિને પ્રવિષ્ટ કરાવવાથી નિરુહોથી-દ્રવ્યમાં પરિપકવ થયેલા તેલના પ્રયોગથી, વિરેચન કરાવવાથી, શિરાવેધથી ખરાબ લોહીને બહાર કાઢવા માટે શિરા-નસને કાપવાથી-નાડીવેધથી, પ્રતક્ષણથી છરા વગેરેથી બહુ જ કુશળતાથી ચામડીને છોલવાથી, શિરાવેષ્ટથી-નાડી વેષ્ટનથી, સ્નિગ્ધ પદાર્થ વડે શરીરના ઉપર માલીશ કરવાથી, પુટપાકથી-પાક વિશેષથી તૈયાર કરવામાં આવેલી ઔષધીઓથી, છાલો (છોડાં) થી-નિંબ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लीहि य ' वल्लीभिश्च=गडूच्यादि–लताभिश्च, तथा मूलैश्च, कन्दैश्च पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, बीजैश्च, शिलिकाभिश्च=किरातिक्तैःचिरायता इतिप्रसिद्धैरोषधिविशेषैः गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च इच्छन्ति तेषां षोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम् । ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च ' जाहे ' यदा नो शक्नुवन्ति तेषां षोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम् , तदा श्रान्ताः=श्रमातुराः, तान्ताः=खिन्नाः= परितान्ताः=सर्वथाखिन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थाः इत्यर्थः यावत्–प्रतिगताः= स्वस्व स्थानं गतवन्तः ।

ततः खलु नन्दस्तैः षोडशभीरोगातङ्कैश्चाभिभूतः सन् नन्दा पुष्करिण्यां ' मुच्छिए ' मूर्च्छितः=मूर्छां प्राप्तः आसक्तः ग्रथितः=बद्धात्मपरिणामः, ' अज्झोववन्ने ' अध्युपपन्नः=सर्वथा निरन्तरं तद्भावतया तन्मयात्मपरिणामश्चन् तिर्यग्

अन्त २ छाल से, गुडु ज्यादि–गिलोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, बीज, शिलिका–चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातंकों में से एक भी रोग को शांत करने की चिकित्सा की । परन्तु वे उसके एक भी रोगातंकको उपशमित नहीं कर सके । (तएणं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति ते सिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता जाव पडिगया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातंको में से एक भी रोगातंक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एवं तान्त होकर अपने २ घर चले आये । (तएणं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्ध-

વગરેની છાલોથી, ગુડુ જ્યાદિ–ગળો વગેરે લતાઓથી તેમજ મૂળ, કંદો, પત્ર, પુષ્પ ફળ બી શિલિકા–ચિરાયતા, ગોળીઓ, ઔષધ, ભૈષજ્યથી તે સોળ રોગ અને આતંકોમાંથી એક રોગ અને એક આતંકને મટાડવા માટે ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરી પણ તે લોકો તેના એકે ય રોગ અને એક ય આતંકને પણ મટાડવામાં શક્તિમાન થઈ શકયા નહિ, (तएणं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता जाव पडिगया) જ્યારે બધા વૈદ્યો ૬, તે સોળ રોગાંતકોમાંથી એકેય રોગ અને આંતકને પણ મટાડવામાં સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે શ્રાંત અને તાંત થઈને પોતપોતાને ઘેર પાછાજતા રહ્યા. (तएणं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनिषु निबद्धायुष्कः, बद्धप्रदेशिकः प्रदेशबन्धापेक्षया, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्त्तदुःखार्तवशार्त्तः=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्त्तः=देहेन, वशार्त्त=पुष्करिणीसमासक्तेन्द्रियवशेन तत्सुखवियोगसम्भावनया पीडितः=एतेषां कर्मधारये आर्त्तदुःखार्तवशार्त्तः=आर्त्तध्यानोपगतइत्यर्थः कालमासे कालं कृत्वा नन्दायां पुष्करिण्यां 'ददुरीए कुच्छिंसि' दर्दुर्याः कुक्षौ=मण्डूकीगर्भे 'ददुरत्ताए' दर्दुरतया मण्डूकतया, उपपन्नः संजातः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्–तएणं णंदे दद्दरे गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे२ विहरइ, तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहूजणे ण्हायमाणो य पियइय पाणियं च संवहमाणो अन्न-

पएसिए अट्टदुहट्ट वसट्टे काल मासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए ददुरीए कुच्छिंसि ददुरत्ताए उववन्ने) उन सोलह रोगातंकोसे अत्यन्त व्यथित हुआ वह नंद नंदा पुष्करिणी में मूर्च्छितमति एवं अत्यन्त आसक्त मन होता हुआ तन्मय आत्मपरिणामवाला बन गया-सो इस कारण उसने प्रदेश बंध की अपेक्षा से तिर्यञ्च आयु का बंध कर लिया। मन से दुःखित देह से, व्यथित एवं पुष्करिणी में समा सक्त अन्तः करण से उसके सुखके वियोग की संभावना करके अत्यन्त पीडित बने हुए अर्थात् आर्तध्यान के वशवर्ती हुए उसने मृत्यु के समय देह का परित्याग किया सो मर कर वह उस नंदा पुष्करिणी में एक मेंढकी के गर्भ में मेढक की पर्याय से उत्पन्न हो गया। सूत्र ॥ ६ ॥

एहिं, निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुट्ठ हट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए ददुरीए कुच्छंसि ददुरत्ताए उववन्ने) સોળ રોગ અને આતંકથી ખૂબ જ કંટાળેલો તે નંદ શ્રેષ્ઠિ નંદા વાવમાં મૂર્છિત મતિ એટલે કે અત્યંત આસક્ત મનથી તન્મય આત્મપરિણામ યુક્ત થઈ ગયો. એથી તેણે પ્રદેશબંધની અપેક્ષાએ તિર્યંચ આયુનો બંધ કરી લીધો. મનથી દુઃખી, શરીરથી વ્યથિત અને પુષ્કરિણી (વાવ) માં આસક્ત અન્તઃકરણથી એટલે કે તેના સુખના વિયોગની સંભાવના કરીને ખૂબ જ પીડિત થઇને–આર્તધ્યાન કરતાં તેણે મૃત્યુના સમયે દેહ છોડયો. દેહ છોડીને નંદ શ્રેષ્ઠિ તે નંદા પુષ્કરિણીમાં જ એક દેડકીના ગર્ભમાં દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ ગયો. સૂત્ર ૬

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्नस्स एवमाइक्खइ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवे णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा । जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले, तएणं तस्स दद्दरस्स तं अभिक्खणं अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए५–से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ, तएणं तस्स दद्दरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे णंदे णामं मणियारे अड्ढ० जाव अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव पडिवन्ने, तएणं अहं अन्नया कयाइं असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विपडिवन्ने, तएणं अहं अन्नया कयाई गिम्हकालसमयंसि जाव उपसंपज्जित्ताणं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदा पुक्खरिणी वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए दद्दरत्ताए उववन्ने, तं अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं आरुहेइ आरुहित्ता इमेयारूवं अभिग्गहं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिगिण्हइ-कप्पइ मे जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणोल्लोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तएणं नंदे' इत्यादि, ततः खलु नन्दो दर्दुरो गर्भाद्=गर्भवासात् विनिर्मुक्तः=निर्गतः सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीत बाल्यवयस्कः, 'विन्नायपरिणयमित्ते' विज्ञातपरिणतमात्रः दर्दुरजातीयकूर्दनादिविज्ञानसमन्वितः, नन्दायां-पुष्करिण्याम् अभिरममाणः २=क्रीडन् २ सुखसुखेन विहरति=कालं यापयतिस्म।

ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायां पुष्करिण्यां राजगृहविनिर्गतो बहुजनः स्नानं कुर्वन्, जलं पिबन्, पानीयं च संवहमानः, अन्योन्यं=परस्परम्, आख्याति-

'तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (णंदे दद्दुरे) वह नंद सेठका जीव दर्दुर (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भावास से बाहिर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे दर्दुर जाति को कूंदना आदि आ गया-तब वह यौवन अवस्था संपन्न होकर नंदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने समय को व्यतीत करने लगा। (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणे

'तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (णंदे दद्दुरे) નંદ શેઠનો જીવ દેડકાના (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) ગર્ભમાંથી બહાર આવીને જ્યારે મોટો થઈ ગયો એટલે કે બચપણ વટાવીને જુવાન થઇ ગયો અને બીજા દેડકાંની જેમ કૂદવાનું, વગેરે આવડી ગયું ત્યારે તે જુવાન થઇને નંદા પુષ્કરિણીમાં જ વારંવાર ક્રીડા કરતાં સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગ્યો. (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणे ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवह-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषते प्रज्ञापयति प्ररूपयति-धन्यः खलु हे देवानुप्रिय ! नन्दो मणिकारश्रेष्ठी यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दापुष्करिणी चतुःकोणा समतीरा यावत् प्रतिरूपा वर्तते, यस्याः खलु नन्दायाः पुष्करिण्याः पौरस्त्ये वनषण्डे चित्रसभाऽनेकस्तम्भशतसंनिविष्टा तथैव चतुर्षु वनषण्डेषु चतस्रः सभा अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टाः सन्ति, यावत् तस्य नन्दमणिकारश्रेष्ठिनः सुलब्धं मानुष्यकं जन्मजीवितफलम्।

ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) उस नंदा पुष्करिणी में जब राजगृह नगर के लोग आकर स्नान करते, पानी पीते, उसमें से पानी भरते तो उस समय वे परस्पर में इस प्रकार से बात चीत करते, भाषण करते प्रज्ञापना एवं प्ररूपणा करते कि (धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) हे देवानुप्रिय ! मणिकार श्रेष्ठी नंद को धन्यवाद है कि जिस की यह चतुष्कोण वाली तथा समतीर वाली नंदा पुष्करिणी बहुत ही सुरम्य बनी है। (जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले-तएणं तस्स ददुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) जिस के पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड में अनेक सैकडों खंभो से विराजित चित्र सभा बनी हुई है। इसी तरह की चारों वनषंडों में चारों सभाएँ है। यावत् उस मणिकार नंद श्रेष्ठी के मनुष्य

माणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) નંદા વાવમાં જ્યારે રાજગૃહ નગરના લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાંથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માંડતા, સંભાષણો કરવા માંડતા, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરવા માંડતા કે (धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्सणं इमेयारूवा णंदी पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદને ધન્યવાદ છે. કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ સરખા કિનારાવાળી નંદા વાવ બહુ જ રમ્ય બંધાવી છે. (जासणं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभाअणेग खंभ० तहेव चित्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले-तएणं तस्स ददुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) વાવના પૂર્વ દિશાના વનષંડમાં સેંકડો થાંભલાઓથી શોભતી ચિત્રસભા બનાવી છે. આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનષંડોમાં ચાર સભાઓ તૈયાર કરાવડાવી છે. ખરેખર તે મણિકાર નંદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततः खलु तस्य दर्दुरस्य तदभीक्ष्णं=पौनः पुन्येन, बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः आत्मगतोविचारः, यावन्मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत। किं स्वरूपः ? इत्याह-' से कहिमन्ने ' इत्यादि। ननूहं मन्ये-कुत्रापि मया अयमेतद्रूपः शब्दः 'णिसंतपुव्वे ' निशान्तपूर्वः श्रुतपूर्वः पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धाध्यवसायेन यावत्-जातिस्मरणं समुत्पन्नम्, स दर्दुरः ' पुव्वजाइं '=पूर्वजन्मवृत्तान्तं सम्यक् समागच्छति = स्मरति। ततः खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः ' अज्झत्थिए ' आध्यात्मिकः यावन्मनोगतः संकल्पः = स्मरणरूपः ' समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत-संजातः, तद् यथा-एवं खलु अहं इहैव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल हैं। उस ने अपने मनुष्य जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है। इस प्रकार अनेक जनों के मुख से बार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें हृदय में अवधृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे त्ति कट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ तएणं तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले सुना है-इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। इससे उसने अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया। इस के बाद उस दर्दुर को इस प्रकार-वक्ष्यमाण रूप संकल्प उत्पन्न हुआ। (एवं खलु अहं इहेव

બંને સફળ થઈ ગયાં છે. તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી પેઠે મેળવી લીધું છે. આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારંવાર પોતાનાં વખાણ સાંભળીને અને હૃદયમાં અવધૃત કરીને દેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યાત્મિક વિચાર યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે-(से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ तएणं तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए) મને એમ થાય છે કે આ શબ્દો પહેલાં મેં સાંભળ્યા છે. આ જાતના વિચારોથી તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું. એથી તેણે પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત જાણી લીધી. ત્યારબાદ તે દેડકાને આ રીતે વક્ષ્યમાણ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे जाव अपरि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम मणिकारः आढ्यो यावदपरिभूत आसम् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः, ततः खलु श्रमणस्यभगवतो महावीरस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपन्नः, ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् असाधुदर्शनेन च यावत्–मिथ्यात्वं विप्रतिपन्नः,ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् ग्रीष्मकालसमये यावत्–पौषधशालायां पौषधमुपसंपद्य खलु विहरामि, 'एवं यथैवचिन्ता, आपृच्छना, नन्दापुष्करिणी, वनषण्डा, सभाः तदेव सर्वम्' तथैवचिन्तादिकं दर्दुरेण पूर्वभूवे कृतं तथैव तत् सर्वं स्मृतं, तद् यथा–मम तत्राष्टमभक्ते

रायगिहे नयरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे जाव अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव पडिवन्ने) मैं इसी राजगृह नगरमें नंद नाम का मणिकार श्रेष्ठी था । विशेष रूपसे धन धान्यादि संपत्ति शाली एवं जन मान्य था। उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर वहां आये–सो मैंने उनसे पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत रूप श्रावक धर्म अंगीकार करलिया था । (तएणं अहं अन्नया कयाई असाहुदंसणेणय जाव मिच्छत्तं विपडिवन्ने) किसी एक समय असाधु के दर्शन से तथा और भी कई निमित्तो से मैं मिथ्यात्व भाव रूप से परिणत हो गया–(तएणं अहं अन्नयाकयाई गिम्ह कालसमयंसि जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्खरिणी वनसंडा, सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने, तं अहोणं अहं अहन्ने, अपुन्ने, अक-

ભૂए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव पडिवन्ने) હું પહેલાં આ રાજગૃહ નગરમાં જ નંદ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ હતો. હું વિશેષ રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમાં પૂછાતો) હતો. તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યાં પધાર્યા હતા. મેં તેઓશ્રી પાસેથી પાંચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારી લીધો હતો. (तएणं अहं अन्नया कयाई असाहु दंसणेण य जाव मिच्छत्तं विपडिवन्ने) કોઈ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ બીજાં પણ ઘણાં કારણોથી હું મિથ્યાત્વભાવ રૂપમાં પરિણત થઈ ગયો. (तएणं अहं अन्नया कयाई गिम्हकालसमयंसि जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणं नंदा पुक्खरिणा वनसंडा, सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने, तं अहोणं, अहं अहन्ने, अपुन्ने, अकयपुन्ने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिणम्यमाने पिपासया क्षुधया चाभिभूतस्येत्थं चिन्ता संजाता "धन्याः खलु ते लोका येषां जलाशया विद्यन्ते, तस्मात् कल्ये श्रेणिकं राजानमापृच्छ्य राजगृहस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नन्दानाम्नीं पुष्करिणीं खनयितुं श्रेय इति"। अथैवं विचिन्त्य श्रेणिकं प्रत्यापृच्छनां कृत्वा तदाऽज्ञया मया नन्दापुष्करिणी कारिता,

यपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए) किसी समय में ग्रीष्मकाल में यावत् पौषधशाला में पौषध धारण कर बैठा हुआ था-इस प्रकार मुझे वहां ऐसी चिन्ता हुई आपृच्छना हुई, नंदा पुष्करिणी कराने का विचार हुआ, बनषंडों, सभाओं के बनाने का विचार हुआ-यह सब विषय पूर्वभव का उसे स्मृत हो आया-अर्थात् उसे यह बात याद आई-कि जब मैं अष्टम-भक्त की तपस्या का नियम धारण कर पौषध शाला में बैठा हुआ था तब मेरी वह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी-उस समय मुझे पिपासा और क्षुधा की बाधा ने आकुलित परिणाम वाला बना दिया। सो मुझे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-कि वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्हों के बनवाये हुए जलाशय विद्यमान हैं। इसलिये मैं भी प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह के बाहिर ईशान कोण में नंदा नाम की एक बावड़ी खुदवाऊँगा। इस प्रकार विचार कर फिर मैंने श्रेणिक राजा से पूछा तो उन्हों ने मुझे इस की आज्ञा देदी मैंने

निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वं पडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरत्तिए) કોઇ એક વખતે ઉનાળામાં યાવત્ પૌષધશાળામાં પૌષધ ધારણ કરીને બેઠો હતો ત્યારે મારા મનમાં એવો વિચાર ઉદ્ભવ્યો એવી આપૃચ્છના થઇ, નંદા પુષ્કરિણી તૈયાર કરાવવાનો વિચાર થયો, વનષંડો તેમજ સભાઓને બનાવવ નો વિચાર થયો, એ રીતે પહેલાંના જન્મની બધી વાત યાદ આવી એટલે કે તેને આ જાતનું સ્મરણ થયું કે જ્યારે હું અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યાનું વ્રત લઈને પૌષધશાળામાં બેઠો હતો. મારી અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યા પૂરી થવાની હતી તે વખતે તરસ અને ભૂખની પીડ એ મને વ્યાકુળ બનાવી દીધો. ત્યારે મને વિચાર આવ્યો કે તે લોકો ધન્યવાદને લાયક છે કે જેમના વડે બંધાયેલા જળાશયો અત્યારે પણ હયાત છે. એથી હું પણ સવાર થતાં જ શ્રેણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઇશાન કોણમાં નંદા નામે વાવ બંધાવડાવું. આ રીતે વિચાર કરીને મેં શ્રેણિક રાજાને જ્યારે પૂછયું ત્યારે તેમણે મને તેની આજ્ઞા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तस्याः पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु वनषण्डा आरोपिताः संरक्षिताः संवर्धिताः, ततस्तेषु वनषण्डेषु पौरस्त्ये चित्रसभा, दाक्षिणात्ये महानसशाला, पाश्चात्ये चिकित्साशाला, औदीच्ये वनषण्डेऽलंकारिकसभा मया कारिता, इति । 'यावत्–नन्दायां पुष्करिण्यां दर्दुरतयोपपन्नः' ततो राजगृहविनिर्गतो बहुजनस्तत्र पुष्करिण्यां स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पानीयं घटादिभिर्नयन् परस्परमेवमवादीत्–भो देवानुप्रियाः ! धन्यः कृतार्थः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दापुष्करिणीत्यादि, तत् प्रशंसावचनमहं बहुजनस्यान्तिके श्रुत्वा हृष्टतुष्टः सातगौरवसुखमनुभवन् आसम् । ततः खलु मम मणिकारश्रेष्ठिभवे प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोदयेना-

नंदा नाम की पुष्करिणी उन्ही की आज्ञा से बन वाई ! उस की चारों दिशाओं में चार वनषंड लगवाये वे संरक्षित होकर खूब अच्छी वृद्धि-गत हुए उन वनषंडों में से जो पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड था उसमें मैंने एक चित्र सभा बनवाई दक्षिण दिशा संबन्धी वनषंड में एक महानस शाला,पश्चिमदिशा संबन्धी वनषंड में चिकित्सा शाला और उत्तर दिशा संबन्धी वनषंड में अलंकारिक सभा बनवाई । राजगृहनगर से निर्गत अनेक जन उस पुष्करिणी में स्नान करते–पानी पीते और उस में से पानी भी भरते–तब परस्पर मिलकर वे इस प्रकार से बात चीत करते कि भो देवानुप्रिय ! मणिकार नंद श्रेष्ठी धन्यवाद का पात्र है, कृतार्थ है–जिसने इतनी अच्छी इस नंदा पुष्करिणी को बनवाया है । इस तरह के प्रशंसात्मक वचन सुनकर मैं हर्षोत्फुल्ल गात्र हो जाता, मेरा चित्त संतुष्ट हो जाता । मैं उस समय शात गौरव के

આપી દીધી. તેમની આજ્ઞાથી જ મેં નંદા નામે પુષ્કરિણી બંધાવી છે. તેની ચારે દિશાઓમાં ચાર વનષંડો રોપાવ્યા. સુરક્ષિત થયેલાં વનષંડો ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા પૂર્વ દિશા તરફના વનષંડમાં મેં એક ચિત્રસભા બનાવડાવી હતી દક્ષિણ દિશાના વનષંડમાં એક વિશાળ મહાનસ શાળા (રસોઇ ઘર), પશ્ચિમ દિશાના વનષંડમાં ચિકિત્સાલય (દવાખાનું) અને ઉત્તર દિશાના વનષંડમાં અલંકારિક સભા બનાવડાવી. રાજગૃહ નગરના ઘણા માણસો પુષ્કરિણીમાં સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને તેમાંથી પાણી ભરતા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાતચીત શરૂ કરવા માંડતા કે હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ ધન્યવાદને લાયક છે. કૃતાર્થ છે, કેમકે તેણે કેવી સરસ નંદા પુષ્કરિણી બનાવડાવી છે. આ રીતે પોતાનાં જ વખાણ સાંભળીને હું ખુશ ખુશ (હર્ષોત્ફુલ્લ) થઈ જતો અને મારૂં હૈયું સંતુષ્ટ થઈ જતું હતું. હું તે વખતે શાત ગૌરવના ઉદયથી ખૂબ જ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यदा कदाचित्-षोडशरोगातङ्काः प्रादुर्भूताः। बहवो वैद्यास्तत्रागताः परंत्वेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुमसमर्थाः सन्तः प्रतिगताः। ततस्तैरोगातङ्कैरभिभूतः खलु नन्दापुष्करिण्यां मूर्च्छितोऽहं तत्सुखवियोगसंभावनयाऽऽर्तध्यानोपगतः सन् कालमासे कालं कृत्वा अत्रैव नन्दापुष्करिण्यां दर्दुरतया संजातोऽस्मि। इत्थं जातिस्मरणं प्राप्य स दर्दुरः स्वात्मनि विचारयति-' तं अहोणं अहं अहन्ने ' इत्यादि, तत्=तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमधन्यः, अपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वमतिपन्नानि=पूर्वभवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसंपद्य विहर्तुम् इत्येवं संप्रेक्षते=

उदय से अतिशय आनंद का अनुभव करने लग जाता। किसी एक समय मुझे मणिकार श्रेष्ठी के भव में उस प्रबलतर ज्ञान गौरवजनित कर्म के उदय से १६ रोगातंक शरीर में प्रकट हुए। अनेक वैद्य आये, परन्तु वे मेरे एक भी रोगातंक को शमित करने में समर्थ नहीं हो सके। सो वापिस चले गये। इस तरह उन रोगातंकों से अभिभूत हुआ मैं नंदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की संभावना से आर्तध्यान में पड़कर मृत्यु के अवसर में मरा सो इसी नंदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ। इस तरह जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया देखो यह कितने खेद की बात है-मैं कितना अधन्य हूँ कितना पापी हूं कितना अकृत पुण्य हूँ जो मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इसलिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मैं स्वयं अब पूर्व भव में अंगीकृत किये गये पांच अणुव्रतोंको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लूं।

આનંદમાં મગ્ન થઈ જતો હતો. કોઈ એક સમયે મણિકાર શેઠના ભવમાં મારા શરીરમાં પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી સોળ રોગ અને આંતક પ્રકટ થયા. ઘણા વૈદ્યો આવ્યા પણ તેઓ મારો એક રોગ પણ મટાડી શકયા નહિ. વૈદ્યો પણ નિરાશ થઈને પાછા જતા રહ્યા હતા. આ રીતે રોગ અને આતંકોથી પીડિત થઈને હું નંદા વાવમાં બેભાન થઈને સુખના વિયોગની સંભાવનાથી જ આર્તધ્યાન કરતો છેવટે મૃત્યુના સમયે મરણ પામ્યો. મૃત્યુ બાદ હું એ નંદા વાવમાં જ દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો છું. આ રીતે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતાં તે દેડકાએ પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે-અરે ! અરે ! હું કેટલો બધો અધન્ય છું. પાપી છું અને અકૃતપુણ્ય છું. નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનથી ભ્રષ્ટ થઈને જ મારી આવી દશા થઈ છે, એથી હવે હું પૂર્વભવમાં સ્વીકારેલા પાંચ અણુવ્રતો, અને શિક્ષાવ્રતોને સ્વીકારી લઉં. (एवं संपेहेइ संपे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचारयति, संप्रेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति=कारयति स्वीकरोतीत्यर्थः। आरुह्य=द्वादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूपं=वक्ष्यमाणस्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीवं 'छट्ठंछट्ठेणं' षष्ठषष्ठभक्तेन, 'अणिक्खित्तेणं' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणाऽऽत्मानं भावयतः=आत्मनः शुभपरिणामं वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। अथ-षष्ठस्यापि--षष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दायाः पुष्करिण्याः 'परिपेरंतेसु' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुकेन=अचित्तेन, स्नानोदकेन 'उम्मद्दणोल्लोलियाहि य' उन्मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्वर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्वर्तने कृते सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यच्चूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः, वृत्तिं कल्पयतः शरीरयात्रानिर्वाहं कुर्वतः विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेणान्वयः। इममेत-

---

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पं मे जाव जीवं छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया। विचार करके पूर्व प्रतिपन्न पंच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वयं धारण कर लिया। धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं अब जीवन पर्यंत अन्तर रहित षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से अपने आत्मपरिणामोंको बढाता रहूँगा। (छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणोल्लोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हित्ता पुव्व पडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पं मे जाव जीवं छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए) આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમાં સ્વીકારેલાં પાંચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા. ધારણ કરીને તેણે એ જાતનો નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પળ સુધી અન્તર રહિત ષષ્ઠ ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ. (छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए, परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणोल्लोलियाहिय वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) અને છઠ્ઠ ભક્તની પારણાના દિવસે નંદા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन=षष्ठषष्ठभक्तेन यावत्-स दर्दुरोऽभिग्रहग्रहणपूर्वकं स्वीकृतेन तपः कर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्तेस्म। सू० ७॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो पहायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी–देवाणुप्पिया ! समणे३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ, तएणं तस्स दद्दरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ पच्चोरुहइ २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दरगईए वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया

पारणा के दिन में नंदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से तथा लोकों के द्वारा दोहोद्वर्तन करने पर शेषभूत इधर उधर पतित यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह करूँगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया। इस करह अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह दर्दुर घृत षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

વાવના કિનારાની ચારે બાજુના અચિત્ત સ્નાનોદકથી તેમજ લોકો વડે દેહોદ્વર્તન કર્યા પછી વધેલા અને અમતેમ વેરાઇને પડેલા જવના લોટ વગેરેથી પોતાના પિંડનો શરીરનો નિર્વાહ કરીશ. આ રીતે તેણે અભિગ્રહ લઈ લીધો. આમ અભિગ્રહ ધારણ કરીને દેડકો ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા કરવા આત્મશુદ્ધિ કરવામાં તલ્લીન થઈ ગયો. સૂત્ર " ૭ "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भंभसारे पहाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगर-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ, तएणं दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था, तएणं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-परिग्गहियं सत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोऽत्थु णं समं धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवं, सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावजीवं जंपि य णं इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएणं दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने, एवं खलु गोयमा ! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयकालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, से णं भंते ! दद्दुरे देवे ताओ देवलो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ य। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि॥ सू०८ ॥

॥ तेरसमं णायज्झयणं समत्तं॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीरः स्वामी कथयति-'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा स दर्दुरः षष्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहंगुणशिलके चैत्ये=गुणशिलकनामकोद्याने समवसृतः=प्राप्तः। परिषद्=राजगृहनगरनिवासिनां जनानां समूहः, निर्गता=मां द्रष्टुं वन्दितुं नगराब्दहिर्निःसृता। ततः खलु नन्दायां पुष्करिण्यां बहुजनः स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पनीयं च संवहन् अन्योन्यमेवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीरः स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृतः, तत्=तस्माद् गच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमणं भगवन्तं महावीरस्वामिनं वन्दामहे नमस्यामः वन्दित्वा नत्वा यावत्-पर्युपास्महे=सेवां कुर्मः, अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्-सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, 'अणु-

---

'तेणं काले णं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेणं काले णं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (अहं गोयमा! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो, एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

टीकार्थ-तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (अहं गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो, एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गामिकत्ताए ' अनुगामिकतायै परभवेऽनुगमनार्थं भविष्यति, इति परस्परमवदत् ।

ततः खलु तस्य दर्दुरस्य बहुजनस्यान्तिकाद् एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः

गौतम ! मैं में विहार करता हुआ गुणशिलक नाम के उद्यान आया। राजगृह नगर निवासी मनुष्यों का समूह मेरी वंदना करने के लिये तथा मेरे दर्शन के लिये अपने २ स्थान से आये-उस समय नंदा पुष्करिणी में अनेक मनुष्य स्नान करते हुए जल पीते हुए और पानी भरते हुए परस्पर में इस प्रकार से बात-चीत कर रहे थे-भो देवानुप्रियों ! श्रमण भगवान् महावीर यहीं पर गुण शिलक चैत्य में पधारे हुए हैं-इसलिये हे देवानुप्रियो ! चलो-आओ चलें श्रमण भगवान महावीर को वंदना करें नमस्कार करें। वंदना नमस्कार कर फिर उन की पर्युपासना-सेवा करें। यही बात इस भव में, परभव में हमारे लिये हितकारक होगी, यावत् सुखविधायक होगी, क्षेमकारक, निश्रेयस्कारक एवं अन्यभव में साथ जाने वाली होगी। (तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) तो इस प्रकार की बात चीत जब उस दर्दुर ने उन अनेक मनुष्यों के मुख से सुनी-तो सुनकर और उसे हृदय में धारण कर उसके मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-(एवं खलु समणे

હે ગૌતમ ! ગુણશિલક નામના ઉદ્યાનમાં હું વિહાર કરતો કરતો આવ્યો. રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો મને વંદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી મારી પાસે આવ્યા. તે સમયે નંદા વાવમાં ઘણાં માણસો સ્નાન કરતાં, પાણી પીતાં અને પાણી ભરતાં આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહીં ગુણશિલક ચૈત્યમાં જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી પધારેલા છે, એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ. આ ભવ તેમજ પરભવમાં એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયરૂપ થશે યાવત સુખ વિધાયક થશે. ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને બીજા ભવમાં પણ સાથે રહેશે. (तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म, अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) તે માણસોની એ વાતો દેડકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી. ત્યારપછી તેનાં મનમાં આ જાતનો વિચાર સ્ફુર્યો કે (एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि, जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृतोऽस्ति । तत्=तस्माद् अहमपि गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे नमस्यामि. एवं संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य नन्दायाः पुष्करिणीतः शनैः शनैरुत्तरति=बहिर्निः सरती, उत्तीर्य यत्रैव राजमार्गस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तया (१) 'उक्किट्ठाए' उत्कृष्टया, अत्रेदं बोध्यम्-(२) "तुरियाए (३) चवलाए, (४) चंडाए, (५) सिग्घाए, (६) उद्धुयाए, (७) जयणाए, (८) छेयाए," इति । तत्र-उत्कृष्टया-दर्दुराणां गतौ य उत्कर्षस्तेन युक्तागतिरुत्कृष्टा तयेत्यर्थः । त्वरितया-मनस औत्सुक्येन युक्ता त्वरिता तया,

भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं ३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ, संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु यहां गुण शिलक उद्यान में आये हुए हैं तो चलूँ श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करूँ यावत् उनकी पर्युपासना करूँ। ऐसा उसने विचार किया-विचार कर के फिर वह उस नंदा पुष्करिणी से धीरे २ बाहिर निकला-(उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुर गइए वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बाहिर निकल कर फिर वह जहां राजमार्ग था, उस ओर चल दिया। वहां पहुँच कर फिर वह उस उत्कृष्ट दर्दुर गति से चलता हुआ मेरी ओर बढा। यहां "तुरियाए, चवलाए, चंडाए, सिग्घाए, उद्धुयाए, जयणाए, छेयाए" इन पदों का भी संग्रह कर लेना चाहिये उस दर्दुर की गति को उत्कृष्ट इसलिये कहा है कि दर्दुरो की गति में

संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ અહીં ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે. ત્યારે હું પણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન યાવત્ તેમની પર્યુપાસના-સેવા કરું. આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કર્યા પછી તે નંદા વાવમાંથી ધીમે ધીમે બહાર નીકળ્યો. (उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुर गइए वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) બહાર નીકળીને તે જે તરફ રાજમાર્ગ હતો તે તરફ ચાલવા માંડયો. ત્યારપછી તે પોતાની ઉત્કૃષ્ટ (શીઘ્ર) દેડકાની ગતિથી ચાલતો ચાલતો મારી તરફ આવ્યો. અહીં (तुरियाए, चवलाए, चंडाए, सिग्घाए, उद्धुयाए, जयणाए छेयाए) આ પદોને પણ સંગ્રહ કરવો જોઈએ. તે દેડકાની ગતિ ઉત્કૃષ્ટ એટલા માટે વર્ણવવામાં આવી છે કે દેડકાઓની ગતિમાં જે ઉત્કર્ષ હોય છે તે ગતિ તેનાથી યુક્ત

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-अशेष शरीरावयवकम्पवत्या, जयिन्या अन्यदर्दुरगतिजेत्र्या, छेकया-अपायपरिहारे निपुणया, दर्दुरगत्या-मण्डूकगत्या 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन् २-महावेगेन गच्छन् २, यत्रैव ममान्तिकं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः। अस्मिन्नेव समये उद्यानरक्षकमुखान्ममागमनं श्रुत्वा श्रेणिको राजा भंभसारः = भंभसारापरनामकः, स्नातः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चितः सर्वालंकारविभूषितः,

जो उत्कर्ष होता है वह उस उत्कर्ष से युक्त थी। उस मेंढक के मन में बड़ी भारी उत्सुकता थी-सो उस उत्सुकता से वह गति भरी हुई थी-इस कारण वह उस की गति त्वरित थी। शरीर की चपलता से युक्त होने के कारण, तीव्र होने के कारण, शीघ्रता से युक्त होने के कारण, समस्त शारीरिक अवयवों के कंपन से युक्त होने के कारण अन्य साधारण दर्दुरों की गति की अपेक्षा विशिष्ट होने के कारण, और अपायों को बचा २ कर चलने के कारण वह गति क्रमशः चपल चण्ड, शीघ्र उद्धुत, जयनी, और छेक इन विशेषणों वाली थी। इमं च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थि खंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के मुख से मेरा आगमन सुनकर "भंभसार" इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी वंदना

હતી. તે દેડકાના મનમાં ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમાં ઉત્સુકતાને લીધેજ ત્વરા આવી ગઈ હતી. શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કંપનથી યુક્ત હોવા બદલ, બીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતાં વિશિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશઃ ચપળ, ચંડ, શીઘ્ર, ઉધ્ધુત, જયની અને છેક આ વિશેષણોવાળી હતી. (इमं चणं सेणिएराया भंभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर चामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकालियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના મુખથી મારા આગમનની વાત સાંભળીને 'ભંભસાર' એ બીજા નામવાળા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारूढः, सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टकुसुममालया, छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः, हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकरः समूहस्तेन कलितया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृतो मम पादवन्दको हव्यं-शीघ्रम्, आगच्छति, ततः खलु स दर्दुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसकिसोरएणं' अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अक्कंते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः देहोपरिपाद-निपाताऽऽघातं प्राप्तः सन् 'अंतनिग्घाइए' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'आँत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवट कर और कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित विधि समाप्त कर गज पर चढे हुए जल्दी २ आ रहे थे। उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज, रथ, एवं महा भटों के समूह से युक्त चतुरंगिणी सेना से वे घिरे हुए थे। (तएणं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आस किसोरएणं वाम पाएणं अक्कंते समाणे अंत निग्गाइएकए यावि होत्था तएणं से दद्दुरे अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्ज मित्ति कट्टु एगंतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

શ્રેણિક રાજા મને વંદન કરવા માટે તૈયાર થયા. તેઓ સ્નાનથી પરવારીને કૌતુક, મંગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ પૂરી કરી અને હાથી ઉપર સવાર થઇને ઝડપથી આવી રહ્યા હતા. તે વખતે તેઓ બધી જાતના અલંકારોથી વિભૂષિત હતા. તેમના ઉપર કોરંટ પુષ્પોની માળાથી શોભતું છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલું હતું. ચમર ઢોળનાર નોકરો તેમના ઉપર શુભ્ર ઉત્તમ ચમરો ઢોળી રહ્યા હતા. હય (ઘોડા) ગજ, રથ અને મહાભટોના સમૂહથી યુક્ત ચતુરંગિણી સેનાથી તેઓ વીંટળાયેલા હતા (तएणं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइएकए यावि होत्था तएणं से दद्दुरे अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु एगंतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी) કૂદકા મારતો તે દેડકો શ્રેણિક રાજાના કોઈ એક ઘોડાના ટચૂના ડાબા પગથી આક્રાંત થઈ ગયો એટલે કે તેનો ડાબો પગ તેના ઉપર પડી ગયો. તેથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति प्रसिद्धस्य, निर्घातः-अन्त्रनिर्घातः, स संजातोऽस्येति अन्त्रनिर्घातितः-त्रुटितान्त्रः कृतश्चाप्यभवत् ।

ततः खलु स दर्दुरः ' अत्थामे ' अस्थामा=हीनपराक्रमः गमनशक्तिरहित इत्यर्थः अबलः=मनोबलरहितः-खिन्न इत्यर्थः अवीर्यः-हतोत्साहः, ' अपुरिसकार-परक्कमे ' अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषकारः पराक्रमश्च न विद्येते यस्य सोऽपुरुषकार पराक्रमः । पुरुषार्थहीनइत्यर्थः ।' अधारणिज्जमितिकट्टु ' अधारणीयमिति कृत्वा= अधारणीयमिदं शरीरमिति विचार्य, एकान्तमवक्कमति=एकान्तं-जनसंचाररहित-स्थानं मार्गस्य प्रान्तभागं कथंचिद् गच्छति, अवक्रम्य करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽ-ञ्जलिंकृत्वा, एवमवादीत्-एवं वक्ष्यमाणस्वरूपेण स्वमनस्युक्तवान् ' नमोऽत्थुणं जाव संपत्ताणं ' नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेभ्यः, " नमोऽत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स ' नमोऽस्तु

समय उस की आंते टूट गईं । आंतों के टूटते ही वह दर्दुर गमन शक्ति से रहित हो गया, मानसिक बल उस का जाता रहा-उत्साह उस का इकदम छिन्न भिन्न हो गया, पुरुषार्थ और पराक्रम मानों उस में हैं ही नहीं ऐसा वह हो गया । जब उसने यह देखा कि यह शरीर अब टिक नहीं सकता तब वह बड़ी कठिनताइसे जन संचार रहित एकान्त स्थान में चला गया । वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार मन ही मन में कहा (नमो-त्थुणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउ-कामस्स पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं

દેડકાનાં આંતરડાં તૂટી ગયાં. આંતરડાં તૂટતાં જ તે દેડકો હાલવા ચાલવામાં અસમર્થ થઈ ગયો. તેનું આત્મબળ નષ્ટ થઈ ગયું. તેનો ઉત્સાહ મંદ થઈ ગયો. તે પુરૂષાર્થ તેમજ પરાક્રમ રહિત થઈ ગયો. જ્યારે તેને એમ લાગ્યું કે હવે એ શરીર ટકવું મુશ્કેલ છે, ત્યારે તે બહુ જ પ્રયત્નથી એક તરફ જ્યાં માણસોની અવર જવર હતી નહિ ત્યાં જતો રહ્યો. ત્યાં જઈને તેણે પોતાના બંને હાથોની અંજળિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને મનમાં જ તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—(नमोत्थुणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव संपा-विउकामस्स पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणा-इवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवं, सव्वं असणं ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलु मम धर्माचार्याय श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तुकामाय, पूर्वमपि=पूर्वभवेऽपि च खलु मया श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः, यावत्-स्थूलः परिग्रहः प्रत्याख्यातः, यावत्करणात्-स्थूलः मृषावादस्थूलादत्तादान-स्थूल-मैथुन-प्रत्याख्यानं बोध्यम्, तदिदानीमपि=अस्मिन् भवेऽपि तस्यैवान्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, यदपि च खलु इदं शरीरमिष्टं कान्तं यावत् मा स्पृशन्तु रोगातङ्काः, एतदपि शरीरं खलु 'चरिमेहिं' चरमैः=अन्तिमैः 'ऊसासेहिं' ऊच्छ्वासैः=प्राणनिर्गमैः 'वोसिरामितिकट्टु' व्युत्सृजामिति-

---

पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवं सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जाव जीवं जं पि य णं इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयं पि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हत भगवंतों को मेरा नमस्कार हो, यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामना वाले मेरे धर्माचार्य, श्रमण भगवान् महावीर को मेरा नमस्कार हो। पूर्वभव में भी मैंने स्थूल रूप से प्राणातिपात का परित्याग श्रमण भगवान् महावीर के समीप किया था। इसी तरह स्थूल मृषावाद का स्थूल अदत्तादान का स्थूल मैथुन का, एवं स्थूल परिग्रह का भी प्रत्याख्यान किया था। ये स्थूल मृषावाद आदि यावत् शब्द से यहां गृहीत हुए हैं तो अब इस भव में भी उन्हीं के समीप सर्व प्राणितिपात यावत् सर्व परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ। तथा अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप से चतुर्विध आहार का भी जीवन पर्यन्त परित्याग करता हूँ। तथा जो इष्ट, कान्त यह मेरा शरीर

पच्चक्खामि जावजीवं जं पि य णं इमंसरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) यावत् सिद्धिगति नामक स्थानने प्राप्त करेला अर्हंत भगवंतने मारा नमस्कार छे, यावत् सिद्धि गति नामक स्थानने मेळववानी इच्छा करनारा मारा धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीरने मारा नमस्कार छे. पहेलांना भवमां पण मे स्थूल रूपथी श्रमण भगवान महावीरनी नजीक प्राणातिपातनो परित्याग कर्यो हतो. आ रीते ज स्थूळ मृषावादनुं, स्थूल अदत्तादाननुं, स्थूल मैथुननुं, अने स्थूल परिग्रहनुं पण मे प्रत्याख्यान कर्युं हतुं. स्थूल मृषावाद वगेरे अहीं 'यावत्' शब्द वडे संगृहीत थया छे. त्यारे हवे हुं आ भवमां पण तेमनी नजीक सर्व प्राणातिपात यावत सर्व परिग्रहनुं मृत्यु सुधी प्रत्याख्यान करूं छुं. तेमज जे इष्ट, कांत आ माहं शरीर छे-के जेना माटे मारा मनमां आ जातना विचारो हता के एने कोइ पण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृत्वा=शरीरं व्युत्सृजति-परित्यजति, भगवानाह-हे गौतम ! ततस्तदनन्तरं खलु स दद्दुरः कालमासे कालं कृत्वा यावत्-सौधर्मे कल्पे 'ददुर वडिंसए विमाणे' दर्दुरावतंसके विमाने=दर्दुरदेवतया 'उववन्ने' उपपन्नः-उपपातं-जन्म प्राप्त इत्यर्थः ।

दर्दुरचरितमुक्त्वा-भगवान् महावीरः स्वामी प्राह-'एवं खलु गोयमा !' इत्यादि । हे गौतम ! एवं खलु दर्दुरेण सा दिव्या देवर्द्धिर्लब्धा उपार्जिता प्राप्ता स्वयत्तीकृताऽभिसमन्वागता-सम्यक् सेविता । गौतमः पृच्छति-'ददुरस्स' इत्यादि । दर्दुरस्य खलु देवस्य हे भदन्त ! कियत्कालपर्यन्तं स्थितिः प्रज्ञप्ता ?

है कि जिस के प्रति मेरी यह धारणा रहती थी, कि इसे कोई भी रोगातंक स्पर्श न करें उसको भी मैं अन्तिम श्वासों तक ममत्व भावसे रहित होकर छोडता हूँ । इस प्रकार करके उसने सब का परित्याग कर दिया । (तएणं से ददुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए उववन्ने-एवं खलु गोयमा ! ददुरेणं सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ताअभिसमन्नागया) इसके बाद वह दर्दुर काल अवसर काल करके यावत् सौधर्म कल्प में दर्दुरावतंसक विमान में उपपात सभा में दर्दुर देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गया । इस प्रकार दर्दुर का चरित्र कहकर भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम से कहा-कि हे गौतम ! इस प्रकार से उस दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि उपार्जित की है, अपने आधीन की है और उसे अपने भोगके योग्य बनाई है। अब गौतम श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से पुनः पूछते हैं कि-'ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयकालं ठिईपण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई

રોગ અને આંતક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્વ વગર થઇને છેલ્લી પળ સુધી ત્યજું છું. આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી. (तएणं से ददुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए, उववन्ने एवं खलु गोयमा ! ददुरेणं सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया) ત્યારબાદ તે દેડકો કાળના સમયે કાળ કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમાં દર્દુરાવતંસક વિમાનમાં ઉપપાત સભામાં દર્દુર દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો. આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર દેવે તે દિવ્યદેવર્ધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગવવાને લાયક બનાવી છે. હવે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમ ફરી પૂછે છે કે (ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगवानाह-हे गौतम! दर्दुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। पुनर्गौतमःपृच्छति-'सेणं' इत्यादि स खलु हे भदन्त! दर्दुरो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चयं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपातं-जन्म प्राप्स्यति?। भगवान् कथयति-'गोयमा!' इत्यादि। हे गौतम! स खलु दर्दुरोदेवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वास्यति सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति च।

पण्णत्ता, से णं भंते! ददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ?) हे भदंत! दर्दुरदेव की वहां कितनी स्थिति हुई है? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम! चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहां हुई है। पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त! वह दर्दुर देव वहां से-उस देवलोक से-आयु के क्षय भवके क्षय एवं स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का-देव संबन्धी शरीर का-परित्याग कर कहां जावेगा (कहिं उववज्जिहिइ) कहां पर जन्म धारण करेगा? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया-(गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइय) गौतम! वह दर्दुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एवं स्थिति के क्षय से देवलोक से चयकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्तकर वहां से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं भंते! ददुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ?) હે ભદન્ત! ત્યાં દર્દુર દેવની કેટલી સ્થિતિ થઇ છે? પ્રભુ કહે છે કે હે ગૌતમ! તેની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ થઇ છે. ગૌતમ ફરી તેઓશ્રીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત! તે દર્દુર દેવ ત્યાંથી-તે દેવલોકમાંથી-આયુષ્યના ક્ષય, ભવના ક્ષય, તેમજ સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ શરીરને-દેવસંબંધી શરીરને ત્યજીને ક્યાં જશે? (कहिं उववज्जिहिइ) ક્યાં જન્મ પ્રાપ્ત કરશે? ભગવાને આ પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે આપ્યો કે (गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाणं अंतं करेहिइ य) હે ગૌતમ! તે દર્દુર દેવ આયુષ્યનો ક્ષય થયા બાદ, ભવનો ક્ષય થયા બાદ, અને સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ દેવલોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ પ્રાપ્ત કરીને ત્યાંથી જ સિદ્ધ થશે. વિમલ-કેવલ લોકથી

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामीनं माह–' एवं खलु समणेणं ' इत्यादि, हे जम्बूः ! एवं खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य, अयम्=उक्तस्वरूपः, अर्थ प्रज्ञप्तः, ' इति ब्रवीमि '–अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥सू० ॥ ८ ॥

इति श्री–विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री–घासीलाल–व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशमध्ययनं संपूर्णम् ॥१३॥

होगा, समस्त कर्मकृत विकार से रहित होने के कारण स्वस्थ होगा और इस प्रकार समस्त दुःखों का वह अन्त करने वाला हो जावेगा। (एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) इस प्रकार जंबू स्वामी को समझाकर अब गौतम उन से कहते हैं हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीरने इस तेरहवें ज्ञाताध्ययन का उक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। मैंने जैसा उनके मुख से इसे सुना वैसा ही यह तुमसे कहा है। अपनी ओरसे मिलाकर इसमे कुछ नहीं कहा है॥ सूत्र ८ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका तेरहवां अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

તે સકલ લોકાલોકને જાણનાર થશે, સમસ્ત (બધા) કર્મોથી મુક્ત થશે, સમસ્ત કર્મકૃત વિકાર વગર થયા બદલ તે સ્વસ્થ થશે અને આ રીતે બધા દુઃખોનો તે અન્તકરનાર થઈ જશે (एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) આ રીતે જંબૂ સ્વામીને સમજાવીને ગૌતમ તેમને કહે છે કે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. મેં જેવો તેમના મુખથી સાંભળ્યો છે તેવો જ તમને કહ્યો છે. મેં આમાં પોતાની મેળે ઉમેરીને કંઇજ કહ્યું નથી ॥ સૂત્ર "૮" ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું તેરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૩ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



For Private And Personal Use Only